

**DUE DATE SLIP**

**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DATE	SIGNATURE

# वंश भास्कर

( सप्तम खण्ड )

[ बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित ]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकर्म आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

एकाधिकारी वितरक

**बाफना बुक डिपो**

चाँड़ा रास्ता, जयपुर-३

मुद्रक

**प्रताप प्रेस**

जोधपुर ।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ उम्मेदसिंहचरित्रप्रारम्भः ॥

॥ बूलिका पैशाची भाषा ॥

॥ गीतिः ॥

तुमटकतनपलपञ्जो हवति सता एवेव पीतपङ्कगुरनो ॥

सा पउमाण सन्तलपामङ्को शां नमिप्यते तेवो ॥ १ ॥

सम्भुं कन्तप्पहलं चण्डीसं कजमुहं कनाथिपतिं ॥

तन्तून फारतिं मं करेमि अथउत्तलत्थकं कंथम् ॥ २ ॥

गोर्वाणाभाषा ॥ अनुष्टुप्पुग्मविपुला ॥

वन्देऽस्मदीयवप्पारं चण्डीदानं महामतिम् ॥

त्रैगुण्यतिमिरव्वधनं विद्यावाग्भूषिताननम् ॥ ३ ॥

बुधसिंहेऽथ बुन्दीद्रे प्रयाते पञ्चतत्त्वताम् ॥

सूनुहम्मेदसिंहोऽस्याऽभिषिक्तोऽभून्महामनाः ॥ ४ ॥

पणनवादीन्दु १७६६ संख्याभुद्विक्रमाब्दोत्तरायणे ॥

वसन्ताऽर्जुनवैशाखे त्रयोदश्यां १३ नरेन्द्रता ॥ ५ ॥

दुष्टकदनवरप्राज्ञो भवति सदा एव पीतमावरणः ॥ स पश्यया सुन्दरवामाङ्गो  
ननु नम्यते देवः ॥ १ ॥ शंभुं कन्दर्पहरं चण्डीसं गजमुखं गणाधिपतिम् ॥  
नत्वा भारतीं अहं करोमि अथोत्तरस्थकं ग्रन्थम् ॥ २ ॥

लक्ष्मी सहित सुन्दर है वाम अंग जिनका और सदैव पीत वस्त्रवाला,  
बुद्धिमान् निश्चयही दुष्टों के नाश में तत्पर होता है, उस देव को मैं नमस्कार  
करता हूँ ॥ १ ॥ चण्डी के पति, कामदेव को नाश करने वाले, शिव को और  
गज के मुखवाले गणपति (गणेश) को और सरस्वती को, मैं नमस्कार करके  
जिस पीछे ग्रन्थ करता हूँ ॥ २ ॥ विद्या और वाणी से शोभायमान है सुख  
जिनका, त्रिगुण स्त्री अन्धेरे के सूर्य, बड़े बुद्धिमान्, मेरे पैदा करने वाले  
(पिता) चण्डीदान को नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥ अब बुधसिंह का देहांत होने पर  
उसका पुत्र महात्मा उम्मेदसिंह अभिषिक्त (राजा) हुआ ॥ ४ ॥ विक्रम के  
सत्रह सौ छिनवे १७६६ के संवत् के जाने पर उत्तर अयन में वैशाख सुदि  
तेरस के दिन वह उम्मेदसिंह राजापन को प्राप्त हुआ ॥ ५ ॥ (उपोतिप्र में



प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ प्रलम्बकम् ॥

\*पानिग्रहन चउ४हि करि पाये। सुत पंचक५ उम्मेद१९८।४सधीर  
उभय२खवासि तहाँ इक ९ औरस सुत दुव२दुव२हि ॥ सुतासम सीरे  
प्रथम१०पाह भल्ला दलपतिकी तनयाँ गर्गराटपुर थान ॥  
कमन वरात पहुँचि अभिधा करि चिमनकुमारि१९८।१परन्योँ चहुवान६  
दूजी२रासि नगर पति दुहितो नव बय कुंदनकुमारि१९८।२सनाम ॥  
ऊदाउति रठोरिं बरी इम करि बखतेस स्वसुर जस काम ॥  
चखतकुमारि१९८।३ईडरेची बलिं जुग२कर जुग२ अंचल जुग२जोरि  
परनी ईडर भूप पितुं०पक राभसुता तीजी३ रठोरि ॥ ७ ॥  
अजितसिंह ईडर पैहु पुत्री क्रमचोथी४ तिम उदयकुमारि१९८।४ ॥  
विजैय नरेस जोधपुर बुल्लि रु व्याही नृपहिं सनेह बिथारि ॥  
तनयें बडो१इनमें तीजी३मेंव सैजव मरयो सु१९९।१न भो तस नाम  
पुनि सुत हुव दूजी२ पतनीकै अजितसिंह१९९।२दूजो२अभिरामाटा  
तीजो३तनय बहादुर१९९।३ताँसहि क्रम सोदर ए दुव२हि कुमार ॥  
पुत्र दुव२हि चोथी४पतनीकै सुत चोथो४तिनमें सरदार१९९।४ ॥  
पुत्र त्रिलोकसिंह१९९।५हुव पंचम५ सिसु बय हुव तासहु अवसान ॥  
सुनहु खवासि रूपरसराय१ रु और२ गुमानराय२अभिधान ॥ ९ ॥  
दूजी२कै संतति चउ४विं०धि दिय सुत सिवसिंह१तथा संग्राम २ ॥

सम्बत् को गत मानते हैं, वर्तमान नहीं मानते) \* विवाह । पांच पुत्र पाये  
। धीरज बाले उम्मेदसिंह ने ९ विवाहिता स्त्री के उदर से ॥ दो पुत्रियें  
१ शक्तिवाली २ पुत्री १ सुन्दर ४ नाम (यश) करके ॥ ६ ॥ ५ पुत्री ६ नवीन  
अवस्थावाली ७ पुनि ८ दोनों हाथ ९ दोनों वस्त्र जोड़कर १० ईडर के पति के  
काका रामसिंह की पुत्री ॥ ७ ॥ ११ प्रभु (राजा) १२ राजा विजयसिंह ने  
जोधपुर बुलाकर १३ पुत्र १४ जन्मा सो १५ शीघ्र मर गया १६ स्त्री के १७  
सुन्दर ॥ ८ ॥ १८ उस सहित अथवा उसी स्त्री के १९ सहोदर (सगेभाई) २०  
अन्त २१ दूसरी २२ नाम ॥ ९ ॥ २३ ब्रह्मा वा भाग्य ने

अनिरदकुमारि१बडी१अरु\*अनुजा२सुता१भई ब्रजकुमारि२सनाम ॥  
 जेठी१जनक दई जयसिंह१हिं जामाता जदुकुल सम जानि ॥  
 सुन तस सप्त१राजसिंहा१दिक प्रकट भये कुल नियति प्रमानि१०  
 दूजी२सुता जैतसिंह१२हिं दिय तकि सम कुल रठोर सतेज ॥  
 चवलसिंह१ताकै इक१नंदन भयो प्रकट दहद१न भानेज ॥  
 दीपसिंह१९८१६इत भूप सहोदर दिय जिहिं थान कापरनिद्रंग ॥  
 भये बिबाह तास खट भावी सुव इक१दोइ२सुता बिधिसंग ॥११॥  
 अनुपमकुमारि१९८११बडी१ठकुराइनिसावर दीपसिंह१९८१६हित सत्थ  
 इंद्रसिंह तनया सगताउति सौल१चरित१गुन३रूप४समत्थ ॥  
 अरु उम्मेदकुमारि१९८१२गागरनी दूजी२अभय सुता रठोरि ॥  
 तीजी३तिय इंडरपति तनया गदित भवानकुमारि१९८१३गुन गोरि१२  
 जादव सोनपाल तनया जिम फतैकुमारि१९८१४चोथी४निज नारि ॥  
 नृप सामंत सुता रूपनगर क्रम पंचम५सु किशोरकुमारि १९८१५ ॥  
 परनाई जु पितृव्य बहादुर यह रठोरि कृष्णगढ आसु ॥  
 क्रैमि सीहोर छठी६अमरकुमारि१९८१६सगताउत्त अमान सुतासु१३  
 अजित सुता तीजी३ तिय इनमें अग्रजकी साली जुहि आस ॥  
 सुत जेठो१सुरतानसिंह१९९११हुव तनया चंद्रकुमारि१९९११हुव तास  
 तिय चोथी जहोनि जनी तिम दूजी२सुता त्रिचित्रकुमारि२ ॥  
 परिनाई जयनैर प्रतापहिं सो श्रीजित श्रुति बिधि अनुसारि ॥१४॥  
 अधिपति१को रु अनुज२को अकिखय इहाँ बिबाह१प्रजा२क्रम एस  
 \* छोटी१पुत्री२पिता उम्मेदसिंह ने३जयसिंह को४जमाई५समान (परायरीवाला)  
 ६राजसिंह आदि ७ भाग्य के अनुसार ॥ १० ॥ ८ पुत्र ९ उम्मेदसिंह का छोटा  
 भाई १० आगे आने वाले समय में ॥ ११ ॥ ११ नगर का नाम है १२ इंडर के  
 पति की पुत्री जिसका माम भवानकुमारी कहते हैं ॥ १२ ॥ १३ जिसका बिबाह  
 काका बहादुरसिंह ने किया १४ शीघ्र १५ जाकर ॥ १३ ॥ १६ उम्मेदसिंह  
 की साली १७ है १८ बुन्दी का राज्य छोड़कर वानप्रस्थ हुए पीछे उम्मेदसिंह  
 ने अपना पद (खिताब) श्रीजित (लक्ष्मी को जीतनेवाला) रक्खा था १९ वेद  
 की विधि के अनुसार ॥ १४ ॥ २० उम्मेदसिंह की

जो सब प्रभु भारी विधि जानहु वर्तमान अब सुनहु बिसेस ॥  
पाइ जनक पट्टहि दुर्गत पन करि जो जो दुष्कर रन काम ॥  
पुहविलई १६ दई २जिम पुत्रहि रोचक सकल सुनहु प्रभुराम २०३४

॥ दोहा ॥

पन १पटु रन २पटु बचन ३पटु, बार बरस दस १० वेस ॥

बैठि तखत बुधसिंहके, हुव उम्मेद नरेस ॥ १६ ॥

॥ हरिर्गतम् ॥

कोटेस दुर्जनसल्ल यह मुनि सोचि कछु हित हेरयो ॥

बखतेस पृथ्वीसिंह सुत बिज बंधु बेघम प्रेरयो ॥

तिहिं स्वर्ग निज कर बंधि ओ नृप भाल तिलकहु मंडयो ॥

नजरि रु निछावरि ठानिके निज थान परिखद बैठयो ॥ १७ ॥

तिमही पुगेहित व्यास चारन भट्ट नजरि निवेदई ॥

भट बर्ग पुनि कछु हे जिन्हें इम भय भूपतिता लई ॥

गोस्वामि गोपिपनाथ नृप तब लैन मंत्राहि बुल्लये ॥

करि नाहिं आयउ नाहिं जे जयसिंहके भय भुल्लये ॥ १८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुम्में दलेलैं कानि बैसु कामी, गोपिपनाथ नटिय गोस्वामी ॥

कहिय मैं न कोटापुग छोरो, दिन चैंउ ४ मास कितहु नहिं दोगैं १९

यह मुनि पुर बेघम नृप माता, बिपति स्वीय लखि नीति बिधाता

पुनि विन्नति पठई कोटा पुर, धारक तैंहँ रामानुज मत धुर ॥ २० ॥

द्विज नागर उपपद सहोदर, बेगागिम सनाम भट्ट बर ॥

पठयो दैल चुंढाउति तिन प्रति, तुम समदिधि गिनहु सेवक तैंति

१६ प्रभु रामसिंह २ दरिद्रपन में ३ रुचिकारक ४ हं प्रभु रामसिंह ॥ १५ ॥ ५ प्रतिज्ञा में

चतुर ॥ १६ ॥ ६ खड्ग ७ ललाट में दस भा में बैठा ॥ १७ ॥ उनने भी नजर न्याछावर की

१० राजापन ११ गुरु मंत्र लेने को बुलाया ॥ १८ ॥ १२ कछवादा (जयसिंह) १३ बुन्दी

का वर्तमान राजा दलेलसिंह के भय में १४ धन की कामनावाला १५ चौमासे के

दिनों में ॥ १६ ॥ २० ॥ १६ पत्र १७ समदृष्टि १८ सेवकों की पंक्ति में ॥ २१ ॥

मम सुत कलिह सत्रु निज मारहिँ, बुंदिय अप्पन आन बिथारहिँ॥  
जो यह नियति जोग नहिँ पावहिँ, तोपै तुमहिँ सदा सिर लावहिँ२२  
जो तुम मंत्र दैन हित हेरहु, तो आवहु पुत्रहिँ वा प्रेरहु ॥  
वेशियराम सोधि यह बँती, बिगचि अनुग्रह जानि विपँती ॥ २३ ॥  
दैन मंल पठयो वेधम द्रुत, श्री गोविंद नाम जेठो सुत ॥  
तिहिँ आय रु उपदेस मंल दिय, नृप उमेद साँनुज सिच्छा लिय २४  
चहिँ बुंदिय पति भक्ति धर्म चित, गेह रु देह निवेदिय गुरुहित ॥  
श्रद्धामय अर्पित गहिँ भूँसुर, पुनि कगि सिक्ख गयउ कोटा पुर २५  
गहिय जवहिँ बुधसिंह मरन गति, उदयनैर हो तब वेधमपति ॥  
अब ईस मास माँहिँ वह आयो, उर जामासै सोक अकुलायो २६  
नवन श्रैयत जलधार निरंतर, आँधि अतुल छिज्जत असु अंतर ॥  
बुद्ध भैसम पूजन मसान किय, अरु स्वर उच्चटेरि यह अक्खिय २७  
बिनु सेवक तुम त्वरी बिचारी, कगिहोँ मैं सेवन द्रुतकारी ॥  
इम कहि देवसिंह गृह आयउ, लालित जासित नय हिय लायउ २८  
अजितसिंह मरुईस अगग मृत, सुत सप्तक ७ हे तास कैलुख कृत  
हो दिलिलिय पट्टप नैय हीनोँ, तदनुजँ वखत जैनक जिय लीनोँ २९  
पंच ५ हुते तासोँ लघु भाई, उनकोँ कैद करन मति आई ॥  
भाजे सुनत कितेक महा भय, डारे कैद कितेकन निर्दय ॥ ३० ॥  
रायसिंह १ आनंद २ आत दुव २, ईडरपूर अधिराज जाय हुव ॥

१ भाग्य के योग से २ तोभी ॥ २२ ॥ ३ अथवा तुम्हारे पुत्र को भेजो  
४ यात्री ५ आपदा जानकर ॥ २३ ॥ ६ श्री ७ छोटे भाई सहित शिक्षा ली  
॥ २४ ॥ ८ अर्पण किया सो लेकर ९ वह ब्राह्मण ॥ २५ ॥ १० आश्विन मास  
में ११ महिन के पति के ॥ २६ ॥ १२ महती हुई १३ मन की पीड़ा से १४ प्राण  
१५ बुधसिंह की मरनी का ॥ २७ ॥ १६ शीघ्रता की १७ शीघ्रता करनेवाला अर्थात्  
मैं भी शीघ्र मरन तुम्हारे मन जाऊँगा १८ लाड का के १९ आनजे का  
॥ २८ ॥ २० पाव करनेवाले २१ बिना सीखेवाले २२ इसके छोटे भाई  
वसंतसिंह ने २३ पिता को मारा ॥ २९ ॥ ३० ॥ २४ ईडर के पति हो गये

इक ईँडर तजि मालव आयो, जोर मँहँदपुर अमल जमायो ॥३१॥  
 यह सुनि आनि लगे दक्खिन देल, काढयो वह गडोर बंधि बल ॥  
 आतुर पुर बेघम तब आयो, देवसिंह अति मोद दिखायो ॥ ३२ ॥  
 रूपय पंचपनित्य तँहँ दैकरि, धन्वप आत रक्खि लिय हित धरि ॥  
 तदनंतर सक खट नव सत्रह १७९६, अगहन मास बिसद पंचमि

५ अह ॥ ३३ ॥

बेघमपति देवहु वपु छोरयो, जिहिँ जसहेत कपद न जोख्यो ॥  
 पट सु दुनियसिंह तस पायो, रान सुनत हिय लोभ रचायो ॥३४॥  
 ताके सिर दुवलकख २००००० दम्म किय, बलि लिय तवहिँ उदै-  
 एर बुल्लिय ॥

रस नव सत्त इक १७९६ मित बच्छर, बिसद माघ मासगँ पंचमि  
 ५ पर ॥ ३५ ॥

दुनियसिंह गय रान सभा जब, अहरि रान समुख आयउ तब ॥  
 दंड लियउ वहँ दोस दबावन, अक्खिय रान कियउ मैँ पावन ३६  
 इम कहि तिलक भाल तस कीनौ, अँच्छत मुत्तिय मंडि नवीनौ ॥  
 निज हत्यहि तरवारि बँधाई, सयनँ जोरि कहि मेघसिबाई ॥३७॥  
 ॥ दोहा ॥

नाम सिवाईमेघ तस, कहिय रान कर जोरि ॥

पुर बेघम करि सिक्ख पुनि, वह आयउ मन मोरि ॥३८॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः अंशः शुभ-

॥ ३१ ॥ १ सेना ॥ ३२ ॥ २ मारवाड़ के पति के भाई को ३ जिसपीछे  
 ४ शुक्ल पक्ष ५ दिन ॥ ३३ ॥ ५ देवसिंह ने भी शरीर छोड़ा ७ कोड़ी  
 भी इकट्ठी नहीं की ॥ ३४ ॥ ८ फिर ९ सम्बत १० सुदि ११ माघ मास में गई  
 हुई ॥ ३५ ॥ १२ दंड लिया जिस दोष को दवाने के लिये ॥ ३६ ॥ १३ मोतिघों  
 के आखे चढाकर १४ हाथ जोड़कर १५ सवाई मेघसिंह नाम रक्खा ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

श्री \* वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, प्रपति उमेद

\* यहां पर हमको उम्मेदसिंह चरित्र और अजितसिंह चरित्र के मयूखों की इतिथियें ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)

दुम्मेदसिंहऽभिपेचनवल्लभसम्प्रदायशिक्षानभिलनश्रीरामानुजशि-  
क्षाप्रापणवेधमपतिदेवसिंहमरणादुनीसिंहतत्पीठोपवेशनसिवाईमेघ  
नामभवनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ ॥ २३८ ॥

मायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहादिवृत्तोत्पादिनीचूलिआला ॥

इत बेघम बुंदीस अब, बप दस १० \*हायन भान बिराजत ॥  
हय बिद्या सिक्खत हुलसि, नय दमधर्म निधान बिराजत ॥ १ ॥  
तोमर असि पहिंस तुपक, चापन सायक चंड चलावत ॥  
खुरली बिनु बितैं खिन न, मन जाको ब्रह्मंड न मावत ॥ २ ॥  
ब्रह्ममुहूर्त जग्मि बलि, संध्या न्हावन आदि सुधारत ॥  
सावित्री जप इक सहस्र १०००, अरु हरि नाम अनादि उचारत ३  
व्रत संजम उपवास बिधि, इक १ न टारत अप्प इलार्पति ॥  
सच्चीमैं हित अनुसरैं, गिनैं न मूढन गप्प महामति ॥ ४ ॥  
स्वीयजनक बुधसिंह सठ, अति आसवैं अधिकार उपायो ॥  
सो मग करि उच्छिन्न सब, बैदशाव धर्म विचार बढायो ॥ ५ ॥  
हरिपूजन नैति जुन हुलसि, विधि सह खोड़स १६ अंगबनावैं ॥

सिंह का आभयंक होकर बल्लभसंप्रदाय की शिक्षा नहीं मिलने के कारण  
श्रीरामानुज संप्रदाय की शिक्षा लेना ? वेधमनगर के पति देवसिंह का मरना  
२ उसकी गद्दी पर बैठकर दुर्नीसिंह का सवाई मेघ के नाम से प्रसिद्ध होने  
का प्रथम ? मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियासी २८२ मयूख  
हुए ॥

\* दश वर्ष के प्रमाणवाली अवस्था १ नीति और दंड ? शोभायमान ॥ १ ॥  
१ कटारी ३ धनुषों से भयंकर बाण ४ शस्त्राभ्यास के बिना ॥ २ ॥ ५ चार  
घड़ी रात्रि बाकी रहे ६ माघत्री के ॥ ३ ॥ ७ इन्द्रियों का रोकना ८ ऋषिपति  
॥ ४ ॥ ९ अपने पिता १० मय का ११ उस मार्ग को उखाड़कर अर्थात् बुधसिंह  
के वाममार्ग को छोड़कर ॥ ५ ॥ १२ नम्रता सहित १३ सौलह अंगों सहित  
की कोई मिल गई है जिनका भाषानुवाद करके आगे विष्णुसिंह चरित्र और रामसिंह चरित्र की इतिश्री-  
ये नवी बनावेंगे ॥



पंचपूजा करवाय पुनि, लघुभोजी मन जंग लगावैं ॥ ६ ॥  
भारत स्मृति पुनि भागवत, बेद बचन धरि चेत बिचारैं ॥  
मृगया रस रत्नो मुदित, सिंहन स्वकुल समेत बिडारैं ॥ ७ ॥

॥ पञ्चाटिका ॥

उम्मेदनृपति बुधसिंह पट्ट, दस १० अब्द बेस अति छक उछट्ट ॥  
अरु मंजु बालससि जिम अनूप, भल बैन सबन मन हरत भूपाटा  
कर्कादि निसा मकरादि दीह, इम बढत रक्खि भुव लैनईह ॥  
तिम सारदूल सिसु निस रु द्यौस, हत्थीन हनन मन धरत हौस ॥  
इम नृपहि लैन बुंदिय उमंग, आयुध समस्त सढत अभंग ॥  
बुधसिंह सुतहि सुनि इम सैमथ, सब मिलिय आनि भैट सचिव  
सथ ॥ १० ॥

धरि सबहि महासिंहोत धर्म, भूत्या बिनु अहरि भृत्य कर्म ॥  
जे बीर रहे नृप पास जाय, पति आधिपैत्य चिंतत उपाय ॥ ११ ॥  
इम भुप बढत दिन दिन अमान, अवनी निज लैबेको उफान ॥  
इहि बेरहि दोलतसिंह रंच, हरदाउत दह्हा किय प्रपंच ॥ १२ ॥  
नृप अनुज दीपसिंहाभिधान, किय तास पृथक परिवंदविधान ॥  
बहु नरन फोरि अप्पिय बिसास, पुनि यह नृप माता हुव सत्रास १३  
सुखसिंह महासिंहोत बुल्लि, अक्खिय सुलाह गति समय खुल्लि ॥  
मम पुत्र दुवरहि अब बैय महंत, चैल सुभटइनहि फोरन चहंत १४

पूजन करता है ? लघुभोजन करना वीरता का सूचक है ॥ ६ ॥ २ शिकार  
के रस में प्रीति करके ३ उनके कुल सहित ॥ ७ ॥ ४ दश वर्ष की उमर में  
५ मनोहर ६ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ ७ कर्क संक्रांति के  
आदि से रात्रि बड़े जैसे ८ मकर संक्रांति के आदि से दिन बड़े जैसे  
९ इच्छा से १० जैसे सिंह का वचा ११ चाहना ॥ ९ ॥ १२ समर्थ १३ उत्साह ॥ १० ॥  
१४ तनखा अथवा जागीर (पैतन) बिना ही १५ भूपति होने का ॥ ११ ॥ १६ अमाप  
१७ अपनी भूमि ॥ १२ ॥ १८ नाम १९ उस दीपसिंह की जुदा सभा करने लगा  
॥ १३ ॥ २० बुलाकर २१ सलाह कही २२ अवस्था में बड़े होगये हैं २३ चंचल

राठोड़ अभयसिंहकी बीकानेर पर चढ़ाई] मसमराशि-द्वितीयमयूख(३२६७)

हम गेह हुती जो राजरीति, आपत्ति सु पै पलटी अनीति ॥  
छोटे रु बडे बैठे समस्त, अंजलि बिनु बुल्लत तिन्ह अत्रस्त ॥ १५ ॥  
दोलतसिंह सु बिग्रह बढात, दुवर्बन्धुन बिच अंतर दिखात ॥  
अैसे भट बहु बिरचत अकाज, तसमात हमहिं यह उचित आज ॥ १६ ॥  
धारत तुम नय जुत स्वामि धर्म, बिस्वासहु तुमरो भक्ति बर्म ॥  
यातैं समस्त अैसे निकासि, बलि लेहु सुद्ध हृदयन बिसासि ॥ १७ ॥  
रहिहैं समस्त जो राजरीति, तो हमहिं बढन वढैहैं प्रतीति ॥  
सुखसिंह महासिंहोत बीर, धरि हिय यहैहि किय धर्म धीरा ॥ १८ ॥  
दोलतसिंहादिक वे दुबुद्धि, सब दिष बिडारि किय रीति सुद्धि ॥  
नृप मातहिं पुनि अक्खिय निदान, स्वनिलय निबाह चिंतहु सु-  
जान ॥ १९ ॥

जयसिंह गिनहु अति उग्र जोर, दिल्ली रु दक्खिनहु सहत दोर ॥  
तसमात हमहिं इक मंत्र आय, नृप अनुज हेत बिरचहिं उपाय ॥ २० ॥  
जगतेस रान सन यह निवेदि, कछु लेहु पटा भट तास भेदि ॥  
सुनि यह नरेस जननी सुभाय, अब रान हितुं चितिय उपाय ॥ २१ ॥  
॥ दोहा ॥

इत मरूपति अभमल्ल नृप, सजि अनीक अमान ॥  
बीकानैर अधीस सन, चितिय लरन प्रयान ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप अनंद अभिधान अगग बीकानैर पै मृत ॥

तब काका सुत तास भटन गजसिंह भूप कृत ॥

॥ १४ ॥ १ हाथ जोड़े बिना २ निर्भय होकर बोलते हैं ॥ १५ ॥ ३ इस कारण  
से ॥ १६ ॥ ४ नीति सहित ५ हे भक्ति के कवच ६ पुनि ॥ १७ ॥ १८ ॥  
७ दुबुद्धि = निकाल दिये ९ उम्मेदसिंह की माता को १० अपने घर का ॥ १६ ॥  
११ फैलाव १२ इस कारण से १३ उम्मेदसिंह के छोटे भाई के अर्थ ॥ २० ॥ १४ उनके  
किसी उमराव को मिलाकर १५ से ॥ २१ ॥ १६ सेना १७ प्रमाण रहित ॥ २२ ॥  
१८ पति १९ उमरावों ने गजसिंह को राजा बनाया.



यह इक नव हय इंदु १७९१ भयउ जंगलधर भूपति ॥  
 अब हय नव मुनि इंदु १७९७ मरुप तिहिँ लारन किन्न मति ॥  
 यह सुनि नरेस गजसिंह अब कूरमपति प्रति पत्र दिय ॥  
 हैरि गज सहाय तिम तुम हुलासि मम सहाय रक्खहु महिये २३  
 सुनि यह नृप जयसिंह रान अरु अप्प इक्क बनि ॥  
 पठये दोउन २ पत्र सजव मरु देस क्रोध सनि ॥  
 इन्ह तुम गिनि अंकस्थ बिभव निज करन विगारत ॥  
 उचित नीति नन एह भूढबनि बंधुन मारत ॥  
 इत रूपनगर उत वहँ अतुल दुँरग जोधपुर पँच्छ दुव २ ॥  
 बिनु पच्छ गिह संपाति बिधि धरिहो नहिन उडान धुवा २४  
 यह कैंगर हुत बचि मरुप नैकनमनै मन ॥  
 अक्खी स्वसुर असंक रानजुत बनत किंति धन ॥  
 सुँभट मोर गजसिंह ताहि क्यों नहि समुभाऊँ ॥  
 मै गुँज्जर धर जैतवार अरि गरद मिलाऊँ ॥  
 यह कहि कबंध लै दलै अतुल बीकानैरहिँ बिंटी लिय ॥  
 तरकाव ताव तोपन तपिय मनहुँ दाव तैदुँन मचिय ॥ २५ ॥  
 जिम दंतन बिच जेहिँ ईच्छु जिम जंत्र अगोहितै ॥  
 इम आतुर गजसिंह मन्नि संकट हुव मोहितै ॥  
 सुनि आरति जयसिंह कुंच जैपुर सन किन्नौ ॥

१. मागवाड़ के राजा ने २. जयपुर के राजा जयसिंह के नाम ३. जिस प्रकार विष्णु भग-  
 वान ने गज की सहाय की तिस प्रकार मेरी सहाय करके ४. भूमि रक्खो ॥ २३ ॥  
 ५. महाराणा और आप एक बनकर ६. शीघ्र ७. क्रोध में भाँजकर ८. गोद बैठे  
 हुए जानकर ९. किसनगढ़ की प्राचीन राजधानी का नाम है १०. बीकानेर  
 ११. जोधपुर के गढ़ की १२. दोनों पाँखें हैं ॥ २४ ॥ १३. पत्र १४. मेरा स्वशूर (जयसिंह)  
 १५. उदयपुर के राणा सहित हुआ तो भी १६. क्या धन है १७. मेरा उमराव १८. गुज-  
 रात की भूमि को १९. जीतनेवाला है २०. सेना २१. तीव्र वृत्त विशेष जिसकी  
 लकड़ी जलाते समय अग्नि कण घटन उड़ते हैं ॥ २५ ॥ २२. जिह्वा २३. इच्छु  
 (गन्ना) २४. चरखी में चढ़ाया २५. मूर्खित (घबराया) हुआ २६. पीड़ा के बचन

बुल्लपो रानहु बेग लैन मरुधर पन लित्रौ ॥

दरकुंच चलिय कूरम दुसह खंड चउदह १४ खल भलिय ॥

सुरलोक वत फुटिय सहज किहिंसिर कूरम कोपकिय २६

नागराज फन फटिय कमठ रीढक बरगकिय ॥

वसुधा भर बिहारिय मनहुँ दारिम दरगकिय ॥

रवि लुक्किय रज मेघ दान दिग्गज गन सुकिय ॥

मग रुक्किय पवमान तान अच्छरि चकि चुकिय ॥

अतुलित अनीक जयसिंह इभ जाय रु बिटिय जोधपुर ॥

रानहु प्रमान यह सुनि रचिय प्रबल सेन हंकत प्रचुर ॥२७॥

दोहा-बिटयो कूरम जोधपुर, जोरयो तोपन जाल ॥

मनहुँ भगाली दच्छमख, किन्नौ समय कराल ॥ २८ ॥

सुनि भरुपति अभमल्ल यह, सत्य अलपतम सज्जि ॥

बस बदलि आधी निसा, पैठो निजपुर भज्जि ॥ २९ ॥

इत कूरम नागोर पुर, दिन्नौ पत्र पठाय ॥

बखतसिंह आवहु तुम्हैं, दैहैं तखत बठाय ॥ ३० ॥

हेरतहो बखतेस यह, भज्यो त्वैरित तजि भोने ॥

जिहिँ सठ जनक निपात किय, भ्राता तिहिँचित कौन ३१

सजवै आनि जयसिंहसौं, मिल्यो मूढ भुव लोभ ॥

भरुपति हिय यह सुनि अमित, छयो अनुज सिर छोभै ॥ ३२ ॥

जान्यो अगगहि कुंम यह, उभय लख २००००० चतुरंग ॥

पीछैं आवत गन पुनि, सहैम असी ८०००० दल संग ॥ ३३ ॥

॥ २३ ॥ १ शेष नाग के २ पीठ ३ भार से भूमि ऐसी विदीर्ण हुई  
४ मानों दाहिमवृत्त का फल फटा, राज रूरी मेघ से सूर्य ५ बिपा ६ पवन  
का ७ अतोल सेना से = बहुत ॥ २७ ॥ ८ शिव ने १० दल प्रजापति के  
यज्ञ में ॥ २८ ॥ ११ थोड़ा साथ सक्कर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १२ शीघ्र १३ घर  
छोड़कर १४ जिस दुष्ट ने पिता को मार डाला उसके लिये भाई कौन बात  
है ॥ ३१ ॥ १५ शीघ्र १६ काय ॥ ३२ ॥ १७ यह जयसिंह १८ सेना ॥ ३३ ॥

जितैं बिनु नहिं जीवनों, अरु जितन बहु दूर ॥  
 ध्रुवहि अनुज सिर छत्र धरि, जैहैं स्वसुर जरूर ॥ ३४ ॥  
 यातैं नतिही उचित अब, मंगैं सुहि दै दम्भ ॥  
 कूरम कुंच कराइये, कछुदिन जीवन कम्भ ॥ ३५ ॥  
 स्वसुर पितासम निर्गम मत, अरु सुत सम जामात ॥  
 यहै गौली अब कहिकैं, भुव रखहि निज हात ॥ ३६ ॥  
 कूरम प्रति कहि मुकलिय, इम बिचारि अभमल्ल ॥  
 वंदनीर्य तुम स्वसुरहो, हम करैं न रन हल्ल ॥ ३७ ॥  
 जो मंगहु सो दैहिंगे, लै जावहु निज गेह ॥  
 मम सोदर सठ फोरिकैं, अनुचित करहु न एह ॥ ३८ ॥

॥ पट्टपात ॥

नृप कूरम बाईस लकख २२००००० रूप्य तब मंगिय ॥  
 इक्खिं समय मरुईस अखिल रूप्य किय अंगिय ॥  
 रठोरन यह जानि बहुत बरज्यो मरु भूपति ॥  
 दम्भ इते क्यों देत मरन मंडहु निसंक मति ॥  
 सचिवन तथैपि अभमल्लसों दंड दैन अखिय उचित ॥  
 सो सब कबंध्य स्वीकार किय देस काल निर्वल दुचित ॥ ३९

॥ दोहा ॥

कूरम तब जामातकों, नमितजानि इम साफ ॥  
 निज तनयाकों चोले, तीनलकख ३००००० किय माफ ४०  
 सैं लकख गुनईस १९ गहि, तिनमें बहु भरि लिन्न ॥

॥ ३४ ॥ १ नम्रता २ रुपये ३ जीने के काम से; अथवा जीवन से काम है ॥ ३५ ॥ ४ वेद के मत से ५ जमाई ६ मार्ग ॥ ३६ ॥  
 ७ अभयसिंह ने = नमस्कार योग्य ॥ ३७ ॥ ९ मेरे सगे भाई को ॥ ३८ ॥  
 १० समय देखकर ११ मारवाड़ के पति ने १२ सब रुपये स्वीकार (मंजूर) किये १३ तोभी १४ अभयसिंह ने १५ निर्वल ॥ ३९ ॥ १६ जमाई अभयसिंह को १७ अपनी पुत्री को कांचली में ॥ ४० ॥ १८ चाकी के

अवमेसन हित ओलिमैं, निज प्रधान उन दिन्न ॥ ४१ ॥

रतनसिंह अभिधानै यह, मरुपति सचिव सुभाय ॥

दर्म के लखन दम्मलै, कूरम डेगन आय ॥ ४२ ॥

बढेके रूपय निरखि, पुनि किय कूरम रोस ॥

रतनसिंह तब उच्चरिय, देहु न नाहक दोस ॥ ४३ ॥

जैसे रूपय जोरकरि, हमतैं छिन्नत हाल ॥

तैसेही तुम दीजियो, हमको कोउक काल ॥ ४४ ॥

यह सुनि कुम्म सिराहि अरु, ओलिमाहिं तेहिं डारि ॥

करिय कुंच निज गेहको, बिनु रन बिजय बिचारि ॥ ४५ ॥

मिले स्वसुर जामात गिनि, लगी बैखत हिय लाय ॥

मुह बिगारि नागोरको, कुम्महि निंदत आय ॥ ४६ ॥

प्रत्यार्गम जयसिंह किय, अतिदल अतुल उछाह ॥

नगर नाम सरवाढ़ ढिग, मिलिय रान कछवाह ॥ ४७ ॥

रानहि कूरम कहिय हम, कियउ जोधपुर जेर ॥

अप्पहु अब अच्छे फिरहु, बढहिं खरब बिनु बेर ॥ ४८ ॥

कहिय रान आयउ निकट, पुसकर तीगथ एह ॥

घाँ न अबहि फिरनो उचित, न्हाय रु जैहैं गेह ॥ ४९ ॥

इम कहि गिनि न्हावन उचित, पुसकर रान पधारि ॥

कूरम आयउ आगरा, मूवा करन सम्हारि ॥ ५० ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पौ-  
गण्डकालोम्पेदखुरलीमाधनश्रोतव्यश्रवणमहासिंहोत्पत्तिमिसेव-

१ बाकी रहे जिसमें २ रूपयों के एवज की कैद में ॥ ४१ ॥ ३ नाम ४ दंड के  
लाखों रूपयों में ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ५ जमाई अभयसिंह ६ जयसिंह  
के हृदय में ७ जयसिंह की निन्दा करता हुआ ॥ ४९ ॥ ८ पीछा मगन ॥ ४७ ॥  
९ बिना समय ॥ ४८ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में दश वर्ष की अवस्था  
में उम्पेदसिंह का शस्त्राभ्यास करना सुनकर, महासिंह के वंशवालों का

नदोलतसिंहादिनिष्कासनयोधपुरराजाऽभयसिंहबीकानेरयुद्धकर -  
 शातन्त्रपगजसिंहजैपुरसहायपत्रप्रेषणाजयसिंहजामातृवारणाकूर्मक  
 टकयोधपुरवेष्टनदण्डद्रव्यानयनसरवाड़राणाजगत्सिंहाऽऽगरानग-  
 रगमनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ ॥२८३॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अगँ नादरसाहकै समय जयसिंह दिल्ली न गयो ॥

मुहुम्मदसाहनेँ किल्ला रनथंभोर दैनाँ करि बुलायो तथापि टरि-  
 बेकोँ बहानाँ लयो ॥

तदनंतरँ नादरसाह दिल्लीकी कतलकरि तमाम बादसाही वैभ-  
 व लूटि अपनैँ मुलक ईरान सिधायो ॥

अरु मुहुम्मदसाहनेँ सरवम्बके साथ अपनौँ तेजही गुमायो ॥१॥

अैसी अनेक बदफैली जयसिंहनेँ कीनी तथापि हिन्दुस्थानमें  
 बरजोरँ जान्यो ॥

अरु पहिलैँ याकोँ सूबा दयेहे ते रँजूही राखे रुबिनयसौँ बखान्यो ॥

राजाधिगराजराजेन्द्र सवाईजयसिंह अैसो उपटँक लिखायो ॥

अरु अगँ काहूको न भयो अैसो फरमानमें सतकार बिसेस  
 बढायो ॥ २ ॥

यातँ जयसिंह जोधपुरकी फतै करि दरकुंच आगराप्रवेस कीनाँ ॥

अरु रानाँ जगत्सिंह पुष्कर सेमहातीर्थके स्नान को लाह लीनाँ ॥

स्वामि की सेवा करना १ दौलतसिंह आदि को निकालना २ जोधपुर के राजा  
 अभयसिंह का बीकानेर से युद्ध करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का,  
 सहाय के अर्थ जयपुर पत्र भेजना ४ जयसिंह का अपने जमाई (अभयसिंह)  
 को मना करना ५ कछवाहों की सेना का जोधपुर को घेरना ६ दंड के रुपये  
 लेकर सरवाड़ में राणा जगत्सिंह से मिलकर जयसिंह का आगरे जाने का  
 दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तियासी २८३ मयूख हुए ॥  
 १ नादरसाह ने दिल्ली की लूट की तब २ तोभी ३ जिस पीछे ॥ १ ॥ ४ बल-  
 वान् ५ आधीन ६ खिताब ॥ २ ॥

तहाँ व्यास दोलतराम रानाँ सौं अरजकरि मेवारके उदकीनकी बेगारि मिटाई ॥

अरु अपने हाथ में उदक भेलि दोऊरनकी कीर्ति चोतरफ चलाई ॥ ३ ॥

अगँ राननकी बिपत्तिमें यह बेगारि जारी भई ॥

अब व्यासके आतंकसौं तमाम मेवार छोरि गई ॥

या रीति पुष्करमें पाप धोय रानाँ जगत्सिंह उदैपुर प्रविष्ट भयो ॥

अरु रठोर बखतसिंहनेँ पछिताय हाथ जोरि अपने अग्रज जोधपुरके राजा अभयसिंहको प्रसाद लयो ॥ ४ ॥

कही स्वामिसौं हरामी भयो सो अपराध मेरो माफ कीजिये ॥

अरु अपने घरके बिगारे कछवाहके ऊपर फोजबन्धीको हुकम दीजिये ॥

राजा अभयसिंह यह बात बिचारमें लीनी ॥

अरु अधर्मी अनुजके बिगारबेकी सारे रठोरनकाँ एकांतमें सुनाय फोज जयसिंहपै जंगकाँ सज्जीभूत कीनी ॥ ५ ॥

अठ नव सत्रह १७९८के साल मारवारमें नर तुरंग न माये ॥

नव९ कोटी नाथके सेनाके संभार हजारही भोग भोगीसके अमाये ॥

बैठे हथीनपै लंबी लालरंगकी पताका फँरकानेँ लगी ॥

मानौं रक्तबीजके समय कालिका जिह्वाकाँ थरकानेँ लगी ॥

१ उदक झुमिवालों की २ पानी ॥ ३ ॥ ३ भय से ४ प्रवेश किया ५ अभयसिंह की ६ प्रसन्नता ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भार से ८ फण ९ शेषनाग के १० ध्वजा उड़नेलगी (जोधपुरवालों का निशान लाल रंग का है) ११ रक्तबीज नाम राजस को वरदान था कि तुम्हारे रुधिर की जितनी वृद्ध भूमि पर गिरेंगी उतने ही शरीर उठकर शत्रु से युद्ध करेंगे, सो कालिका से रक्तबीज का युद्ध हुआ तब, उसका रुधिर भूमि पर नहीं गिरने देने के अभिप्राय से अपनी जिह्वा को फैलाकर रक्तबीज का सम्पूर्ण रुधिर

कैधों पिंगल नागराज गरुड़के आतंक बचिबेकों बड़े मात्राछं-  
दकी पताकों बनाई ॥

कैधों अंधकके ऊपर त्रिलोचनके त्रिसूलकी तीखी नौख न-  
जरि आई ॥

कैधों चंद्रनके दंडपै पलैटा डारि रक्तराग राजमान नागराज  
पहरानों ॥

कैधों दुग्सासनके भुजदंडतैं सैंग्रोंकी साँटीको समूह लहरानों ७

कैधों प्रचंड पवनके पाँतसों होरीकी स्फार बढनै लगी ॥

अरु भद्रकी मेघमालामें इंद्रके रोहित चापसों लागि चंचला  
की चलाकी कढनै लगी ॥

कैधों सुमेरुके शृंगतैं संभुसेखरास्त्रवंतीके सीधे श्रोतैं छूटे ॥

अरु कल्पकारस्करके कंधतैं साखाके समूह फैल फूटे ॥ ८ ॥

असैं अनेक फँतूहें फीतैनपैं फहराय छोनिछाई ॥

अरु राजा रठोर जयसिंहकों जीतिबेकों जैपुपैं चंड चैतुरंगिनी  
चलाई ॥

या गति सोदंर बखतसिंह सहित राजा अभयसिंह बड़ी धकसों  
मेरता नगर आय मुकाल दानैं ॥

अरु बागनके गितासकी मरजी मानि मालीकारननैं प्रसूननैके

चाटलिया, जिसकी कथा मार्कंडेय पुराण आदि ग्रंथों में चिह्नित है, वही उपमा यहाँ दी है ॥ ६ ॥ १ गरुड़ के अंग में बचने के अर्थ पिंगल नागराज ने मात्रा छंद की इतनी बड़ी २ पता का (छन्दों के पौड़श कर्मों के अन्तर्गत एक कर्म है) बनाई जो समुद्र के तट तक पहुँच गई तब, पिंगल गरुड़ की कंद से भागकर समुद्र में कूद पड़ा ३ अंधक नामक दैत्य के ऊपर ४ शिव के ५ लाल रंग वाला सर्प ६ शोभायमान ७ द्रौपदी की ८ साड़ी का ॥ ७ ॥ ९ प्रचंड पवन के पड़ने से १० इन्द्र के सीधे धनुष से (जिसको लौकिक में मच्छ कहते हैं) ११ चिजुली थी १२ शिव के मस्तक से बहनेवाली (गंगा नदी) के १३ प्रवाह १४ कल्पतरु के १५ मूल से ॥ ८ ॥ १६ राजा १७ दाधियों पर उड़ कर १८ भूमि को, मरुत १९ सेना २० सहोदर (सगे भाई) २१ मालियों ने २२ पुष्टों के

पूर नजरि कीनै ॥ ९ ॥

ते प्रसून राजा रठोर अपनै उमरावनको बखसीस बंदि दये ॥  
अरु रठोर उमराव अनेक अँडी बँडी तरह लपेटेनपै धारत भये ॥  
तहाँ आउवानगरके अधिराज चाँपाउत रठोर कुसलसिंहराजा  
सौ प्रसून नाँहि लीनौ ॥

अरु कारनके पहुँ अहंकारके उफान अँपुव्व उत्तर दीनौ ॥ १० ॥  
अज्ञानत आपको प्रसूननके पैसारिबेम् लज्जाको लेसहू हमै न  
जान्यौ परै ॥

रठोरनके पाघ अरु नासिका कछवाहननै छीनिर्लानै यातै  
अज्ञानके प्रसून लैकै कोन ठाम धारन करै ॥

यहै सुनतही राजा अभयसिंहको सोदरानुजनागोरको अधिराज  
रठोर बखतसिंह खिसाय उठि बुल्लयो ॥

अरु मेरे मिँ लै यह भई अँसै अँग्रजसौं अँकखी अरु जुदोही  
जुद्ध करिबेको जयसिंहपै जँनूनसौं चँड चँदँहास तुल्लयो ॥ ११ ॥

अरु यातरफ जोधपुरसौं फोजबन्धी करि रठोरनके चलायवेकी  
सुनि बडे विस्तारकी बँरूथिनी लै जयसिंह आगगासौं कुंच कीनौ ॥

अरु जोधपुरकोही सीमामें जाय सज्जीभूतवहै निसाननपै निर्हाव  
को हुकम दीनौ ॥

वातरफसौं रठोर बखतसिंह अपनै पाँचहजार ५००० पखरैतौं सँ  
बागै उठाई ॥

अरु धूलीकी धुंधिमें धकाय संजोगी चँक चक्कीनके चाहकी चाँपै  
मिटार्ई ॥ १२ ॥

१ पुड़े (समूह) ॥ ६ ॥ २ पगड़ियों पर ३ पति ४ अपूर्व ॥ १० ॥  
५ पुछों के ६ फैलाने (देने) में ७ सगा छोटा भाई ८ राजा ९  
मिट्टा (लज्जित होकर) १० मैं जयसिंह से मिल गया तब ११ अभयसिंह से  
१२ कहकर १३ साथ के साथ १४ भयंकर १५ खड़ा उठाया ॥ ११ ॥ १२ सेना १३ नगा-  
रों पर १४ चल पूर्वक निरन्तर प्रहार (चकान) का १५ चक्का चकरी के २० लाख



मकराकर मेखला मही महानागके मस्तकके हजारों नचन लगी

अरु बागहकी तुंडोंमें मचकनकी मार मचनलगी ॥

अतल १ बिनल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६ पाताल ७ सातोंही धराके अधोभाग धूजिगये ॥

अरु भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ सहित ऊपरके आकाशी व्याकुलभये ॥ १३ ॥  
ऐरावत १ पुंडरीक २ बामन ३ कुमुद ४ अंजन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७ सुप्रतीक ८ आठोंही आसाके अनेकपन कांपके कातर कूक करी ॥  
अरु पुरुहूत १ पावक २ परेतपति ३ पुण्यजन ४ परंजन ५ प्रभंजन ६ पौलस्त्य ७ पिनाकपाणि ८ आठोंही लोकपालनको लोक रत्नमें विपत्ति विसेस जानिपरी ॥

लवणोद १ इक्षुगसोद २ मद्योद ३ आज्योद ४ क्षीरोद ५ दधिमंडोद ६ शुद्धोद ७ सातोंही समुद्रन लोभ पायो ॥

अरु अनूरुने अवर्नकी अवछेपनी अँचि आदित्यको अरजी अक्खि अपुब्ब आहव आलोकन उछाह लगायो ॥ १४ ॥

अष्टाँद अद्रिसौ अतिर्वर आय महानट मनोर्ज मुंडमालाको मिलाप मान्यो ॥

अरु डाकिनीन डिंडिम डमरुक डाहलौदिकनपे डंके डारि हल्ली-संक नच्च तान्यो ॥

गोदेनके गूँदनके आसको गिद्धि गन गैनेमें गरूरीसों गहकानें ॥

(इच्छा) ॥ १५ ॥ १ समुद्र की है २ कटिमखला (कर्धनी) जिसके ऐसी भूमि ३ हजार फणों पर ४ नीचे के भाग (लोक) ५ ऊपर के स्थानों में रहने वाले ॥ १६ ॥ ६ आठों ही दिशा के ऊपर कहे हुए नामोंवाले ७ हाथी ८ कापर (यहां कहे हुए दिग्गज और लोकपालों के नाम पूर्वदिशा से प्रारंभ करके पथाक्रम से हैं) ९ चलायमान हुए १० सूर्य के साराथि ने घोड़ों की ११ वाग खैव कर १२ सूर्य को १३ युद्ध देखने का ॥ १४ ॥ १४ सुवर्ण के १५ पर्वत (सुमेरु) से १६ गीघ १७ शिव ने १८ मनचाही (इच्छातुभार) १९ डाहल आदि घाजों पर २० घूमर का नाच २१ मस्तिष्क (भेजा) २२ सीजी २३ आकाश में दमंड

अरु कराल कलहके कोलाहल कातरनके कलाप डहकाने १५  
बावन ५२ बीर चउसठि ६४ जोगिनीनके जाले जुद्धकी जैलूसी  
जोयबेकोँ जारी भये ॥

अरु रठोर कछवाह दोहूरेसेनाके सरदार तत्काल तुमुँलयुद्धमें  
तीखे तोरसौँ तत्ते तुरंगन तोकिबेकोँ तयारी भये ॥

राजा जयसिंह जंगी होदेके हत्थीपै आरूढ होय संग्रामभूमिवी  
सीमाके समीप अपनी अनीकके अंतर अर्थात् उच्छाहसौँ उद्धत  
होय आनि खरो रहयो ॥

अरु रचनाबिसेससौँ सेनाको व्यूह बनाय बाई दाहिनी दोऊ २  
तरफ खवासीके हत्थी लगाय सूरवीरनकोँ श्रवन करायबेकोँ पं-  
डितनकोँ उच्चारनको आदेस कहयो ॥ १६ ॥

सो आदेस सुनिकेँ दोऊखवासीके हत्थीनपै पंडितराज रामा-  
यन लंकाकांड १ महाभागत दोनपर्व २ कहन लगे ॥

अरु बैडे बीरनकोँ बंदीजैन बीररसमें विरुदाय चतुरंगीकी चला-  
की चहन लगे ॥

कछवाहकी सेनाको संभार भेलिबेकोँ पुहवीहू वासमय सम-  
र्थ न भई ॥

अरु राजा जयसिंह ऐसे अनीकके उफानसौँ रठोरनपै अर्ब उ-  
ठायबेकी आज्ञा दई ॥ १७ ॥

जा सेनामें साहिपुराके अधिराज रानाउत उम्मेदसिंहसे बाईस  
२२ राजा सज्जीभृत खरे ॥

अरु ओरहू अधीन होय आहवपै उभाहे अनेक सूरवीरनके  
से प्रसन्नता की बोली बोले. कायरों के १ समूह चोंके ॥ १५ ॥ २ समूह ३  
शोभा ४ अघकाश रहित युद्ध में ५ चंचल घोड़े ६ उठाने को ७ सेना के  
८ भीतर ९ अत्यन्त १० अनग्र ११ दुष्ट ॥ १६ ॥ १२ भाट लोग १३ सेना की  
१४ भार १५ भूमि भी १६ सेना के बढ़ाव से १७ घोड़े ॥ १७ ॥ १८ पति १९ उत्साह

संघट्ट अरे ॥

वा समय रथोर बखतसिंह पाँचहजार ५००० पखरैतनसों बडे  
बेग बाजी बीच डारे ॥

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके समुद्रमें पार पूगिबेकों पोंतके  
प्रमान पधारे ॥ १८ ॥

दोऊ२ कंटकनके कंकटी क्रूर कालरूप बडेबीरकालिंग कुंटिल  
कोसँनतैं कालायस कराल करवालनके कलापँ काढि कज्ज-  
लसे कारे कुंजरनके कूटसे कुंभनपँ झारन लगे ॥

अरु धीर बीर धन्वदेसी बडौ धकसों धकाय धूपकी धारासों  
धपाय पंचपूरंगी ध्वजादंडनकों पारिडारन लगे ॥

पर्वतसों मयूरके माफिक कुंभीनके कलापनके कलापनतैं  
पताकानके पुंज उडन लगे ॥

अरु गाढे गरूरी रथोरनके गंजे गिरन लगे गजराज गुडन लगे १९

हयनकी हयछटाँ कबंधनके कराल करवालनतैं कटि कटि  
कैलहमें कूदते कबंधनके कंधनपँ फँहरन ठहरन लगी ॥

कैधों हयग्रीवावतारकी हजारन प्रतिमा लास्यके लालित्यसों छा-  
कि लहरन लगी ॥

दोऊ२ चमूके मजबूत मगरूरी महावीरनके मंडैलाग्रनकी मार  
असैं मचन लगी ॥

युक्त हुए १ समूह २ नाव क समान ॥ १८ ॥ ३ सेना के ४ कवच धारण  
कियेहुए (सिलहपोश) ५ काले और ६ टेढ़े ७ स्थानों से ८ भयंकर का-  
ल की आज्ञा के समान; अथवा काले लोहे के ९ खड्गों के १० समूह निकाल  
कर ११ हाथियों के १२ शिखर रूपी कुंभस्थलों पर प्रहार करने लगे १३ मार-  
वाड़ देशवाले १४ तरवार की १५ जयपुर की ध्वजा का रंग पंचरंगा है १६  
हाथियों के १७ समूह को १८ करधनियों (कणगनियों) से कसे हुए १९ ध्वजा-  
ओं के समूह उड़ने लगे २० वमंडी राठोड़ों के २१ मारे हुए ॥ १९ ॥ २२ घोड़ों के  
कंधे २३ राठोड़ों के भयंकर खड्गों से २४ युद्ध में २५ बिना मस्तक वाले क्रियावान  
शरीरों के कंधों पर २६ उड़कर ठहरने लगी २७ नृत्य की सुन्दरता से २८ तरवारों

मानों होलोके हुंलासपामरँ पुरुखनके पानितँ चञ्चरीकी डंडेहँरिरचनलगी  
तेगनकी तराकन पोँगरनके पलेटेदेत सिँधुरनके सुँडादंडभरन लगे  
मानों जन्मे जयके जिँहग जज्ञमें मंत्रनके मारे पन्नगनके पूर परनलगे  
गिरे टोपनकों ग्रहनकरि जोगिनीनकी जमाति वैँडें वीरनके  
बँपासों भरन लगी ॥

अरु लोहितँकी लालीमें कालीकूदि कूदि सोसँनीरंग धारनकरनलगी  
सञ्चे सूरनके सीस महेसकी मँनोज्ञ सुँडमालामें गुँफेगये तथापि  
देहु देहु यों दकालन लगे ॥

तिनको सोर सुनि अनेक अँध्रपिमाच आये मानि आतंकसों  
भालचंद्रके प्रान चालन लगे ॥

जावकके जँत्र जिम सोनितके स्रोतँकी छूँछूँ छूँटि छूँटि  
छोनीतल छावबेकों परन लगी ॥

तिनको साकिनीनकी सँहँति आँनन उबाय ऊपरही भेलि भे-  
लि पान करन लगी ॥ २२ ॥

कबंधनके कलापँ मानों अपने उत्तमागँकी अँखिनसों देखि  
देखि दाव दैबेकों दोरन लगे ॥

अरु पैने मंडलाग्रँ मारि मदमत मातंगँनके मँथ फोरन लगे ॥

सकँचुक पंच ५ फनके पन्नगके प्रमान बाँहुल समेत बाँहुल

का. १ उत्साह में २ नीच (ग्रामीण) लोगों के हाथ से ३ फाग (वसन्त  
की फीड़ा विशेष) की ४ मेहर (डंडों का खेल विशेष) ॥ २० ॥ ५ हाथी की  
सुँड के अग्रभाग (पुष्कर) के ६ हाथियों के ७ सर्प यज्ञ में ८ सर्पों के समूह  
९ गूद (चरबी) से १० रुधिर की ललाई में ११ लाल में काला रंग मिलाने से  
सोसनी रंग होता है ॥ २१ ॥ १२ मनोहर १३ गुंथेगये १४ राहु १५ शिव के ललाट  
के चन्द्रमा के प्राण (ग्रहण के) भयसे चलायमान होने लगे १६ फुहारे  
१७ रुधिर की पिचकारियें १८ समूह १९ मुख फाड़कर ॥ २२ ॥ २० राठोड़ों के समूह  
२१ मस्तकों की आँखों से (कटेहुए मस्तकों की आँखों से) २२ तीक्ष्ण खड्ग मस्त  
२३ हाथियों के २४ मस्तक २५ काँचली सहित पाँच फणोंवाले सर्पों के समान २६  
दस्ताने सहित २७ बहुत हात

बाहु तूटन लगे ॥

अरु अवमर्दके आतंक कातरनके गाढ़ छूटन लगे ॥ २३ ॥

वाग टल्लाके इसारै बेगवान बाजी जंगी होदनकी बरबबर  
अंप लैन लगे ॥

अरु सादीनके सख संपात करि नष्ट नूर होय निसादानके  
नैन नैन लगे ॥

वंके कमनैत कठोर कोदंडनकाँ गोसपेचीकी बरबबर तानि  
तानि तीर मारन लगे ॥

ते तीर कितेक आसमानमें उडान लैकै सरदकालके सलभन  
की सोभा धारन लगे ॥ २४ ॥

रठोर बखतसिंह जयसिंहकाँ जोपेवेकाँ घनै हथ्यानके होदे हेरिडारे  
अरु द्वैलाश्व २००००० सेनाके पार निकसि बचे वीरनसाँ बैरी  
की वैरुथिनीमें बड बेग बाजी फेरिडारे ॥

असै दूजावर पेलैकाँ पुँतनामै पैठत देखि राजा जयसिंह सा-  
हिपुराके अधिराज राजाउत उम्मेदसिंहसाँ राजा कहि बुल्लयो ॥

अरु बखतसिंहकाँ पैने लोह चखायवेकाँ सिद्धांत खुल्लयो ॥ २५ ॥

अगै राजा न कहतो रु अब कह्यो यातै साहिपुराके अधीस  
राजा उम्मेदसिंह बडी उम्मेदसाँ ओट होय कबंधनको लँकापभेल्यो  
अरु मारवनको मगरूर मारि खासी खग्ननको फाग खेल्यो ॥

वा जुद्धमें राजा रठोर बखतसिंहके च्यारि हजार सातसै ४७००  
पखरैत भरि परे ॥

अरु तीनसै ३०० पखरैतन सहित उम्मेदसिंहकी असिबग्माँ  
१ संकुलित युद्ध फेरभय से ॥ ३४ ॥ ३ घोड़ों के सवारों के ४ शस्त्रों के प्रहार से  
५ शोभा बिगड़कर ६ हाथियों के सवारों के नेत्र ७ नीचे होने लगे ८ कान की बराबर  
९ टाडियों की ॥ २४ ॥ १० देखने की ११ सेना में १२ घोड़े १३ शत्रुओं को १४ सेना में  
युद्ध देख कर १५ पति १६ तीखे शस्त्र ॥ २५ ॥ राठोड़ों के १७ समूह की १८ अष्ट खड्ग से

अछक छाकि मरिबोही मानि कछवाहके कादंबिनी रूप कटक  
सौं टरि परे ॥ २६ ॥

या रीति पलायन होय रहोर बखतसिंह नागोरका मार्ग लीनों ॥  
अरु राजा अभयसिंहहू याहीके बिगारिबेकाँ आयोहो यातैं प-  
च्छो जोधपुरकाँ कुंच कीनों ॥

असैं द्वै २ बेर कछवाहकी सेनाको समुद्र तरि तीजी ३ बेरकी  
ताकत न जानि बखतसिंह निकसि नागोर आयो ॥

अरु जाके इष्ट गिरिधर परमेश्वरके हाथी तथा पातुरिखानैं  
सहित डेरनकाँ कछवाहको कटक लूटि लायो ॥ २७ ॥

तब वह बखतसिंहको इष्ट परमेश्वरतो जयसिंहनैं नाहिँ पठायो ॥  
अरु पातुरिखानैंकाँ पच्छो भेजि कंगारमें कातरँ कहि लिखायो ॥

कहयो अंतहपुर हमारे भेट कीनों परन्तु हमकाँतो अभुक्तके  
ग्राहक जानों ॥

१ तुल्य होकर २ जयसिंह की मेधमाला लुपी सेना से ॥ २६ ॥ ३ भागकर ४ \*गो-  
वर्धननाथ की मूर्ति सहित ५ सेना ॥ २७ ॥ ६ पत्र में ७ कायर ८ जनाना ९  
जिसका भोग पहिले किसीने नहीं किया हांचे उसके

\*उम्मेदसिंह को जयसिंह का राजा नहीं कहना और इस समय राजा कहने के कारण उम्मेदसिंह का  
बखतसिंह से युद्ध करना लिखा सो यह बात समझ में नहीं आती क्योंकि शाहपुरा के राजा भारतसिंह  
को दिल्ली के बादशाह आलम (बाहादुरशाह) ने विक्रम संवत् १७६६ में राजा का खिताब देकर सादा  
तीन हजारों का मनसब दे दिया था सो कई प्रमाणों से सिद्ध है, और भारतसिंह के पुत्र राजा उम्मेद-  
सिंह ने बखतसिंह से गिरधारी की मूर्ति सहित सेवा की हथनी छीनली सो वह मूर्ति इस समय तक शाहपुरा  
में लक्ष्मीनारायण के मंदिर में विद्यमान है और इसी युद्ध में इस टीकाकार (वारहठ कृष्णसिंह) के वृद्ध प्रपे-  
तामह वारहठ देवसिंह बड़ी वीरता के साथ घायल हुए और नागों की जमात के एक वीर के हाथ से  
हाथी की सुंड कटजाने के कारण उस नागको मारकर देवसिंह ने वह तरवार छीनली जो इस समय  
शाहपुरा के शस्त्रागार (सिलहखाने) में नागावाली तरवार के नाम से विद्यमान है, इस खट्ट की लंबी  
चौड़ी कथा है सो विस्तार के भय से यहां नहीं लिखी जा सकती इस युद्ध की किंवदन्ती ऐसी प्रसिद्ध है  
कि शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह एक और खट्ट था जिनको हठजाने को राठोड़ों ने कहलाया जिनको  
उम्मेदसिंह ने पीड़ा कहलाया कि यदि वीरता का घनंड है तो युद्ध करके हटाकर आगे जाओ इसीपर  
इनसे युद्ध हुआ जिसमें राजा उम्मेदसिंह के छोटे भाई कुसलसिंह आदि बड़े बड़े वीर मारे गये ॥

यातैं तुमारो तुम अवेरि फेरि हुंडाहरसों लखिवेकी न \*हों  
आनों ॥ २८ ॥

या रीति अष्ट नव सत्रह १७९८ के साल राजा जयसिंह खोर-  
नसों जंग जीति आयो ॥

अरु या जंगको जस साहिपुराके †अधिराज रानाउत राजा  
उम्मेदसिंह पायो ॥

या तरफ बेघम नगर रावराजा उम्मेदसिंहकी माता चुंडाउति  
अपने निर्बाहको †अवलंब विचारत बरस तीन ३ निकारे ॥

अरु सुखसिंह महासिंहोतके †सम्मतसों अपने छोटे पुत्र दीपसि-  
हके अर्थ रानाँ जगतसिंहसों पटा लैवेकाँ पुरोहित दयारामको  
उदयपुर पठावनमें कारन विचारे ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ राणा  
जगतसिंहपुष्कररानान सोदकदत्तधुम्बिष्टित्यजनबखतसिंहस्वाऽअजमि-  
लानसेनासज्जीकरणा जयसिंहतदभिमुखाऽऽगमनगरराजानुजकूम-  
राजकलहकरणाबखतसिंहपराभवनं तृतीयोऽमयूखः ॥ ३ ॥ २८४ ॥

प्रायोजनदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहिय मास बाहुल्य बिसद, प्रतिपद १ दिन अति प्यार ॥  
सैत ७ रूप इकत करिय, कोटानृप श्रियद्वार ॥ १ ॥

\* इच्छा ॥ २८ ॥ † स्वाजी ‡ आधार § सलाह से ॥ २९ ॥

अविशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा जगतसिंह  
का पुष्कर स्नान करके उदकवालों की बेगार छोड़ना १ बखतसिंह का  
अपने बड़े भाई से मिलकर सेना सजना २ जयसिंह का इनके सम्मुख आना  
साराबाह के पति (अभयसिंह) के छोटे भाई (बखतसिंह) का जयसिंह से यु-  
द्ध करना ४ और बखतसिंह का पराजय होने का तीजा मयूख ३ समा-  
हृया और आदिसे दोसौ बारासी २८४ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक शुद्ध एकम के दिन कोटा के राजा ने ३ नाथद्वार में २ सात

विह्वल १ अरु नवनीत प्रिय २, बहुरि द्वारकानाथ ३ ॥  
 गोकुल ४ मथुराधीस गिनि, गोकुलचंद्र ६ \* सुगाथ ॥ २ ॥  
 मदनमोहन ७ हु सत्त ७ ामित, ए बल्लभकुल इष्ट ॥  
 कोटानृप इकत करिय, अप्पन दहन अरिष्ट ॥ ३ ॥  
 खरचि दम्म इक लक्ख १००००० मित, उच्छव रचिय अपार ॥  
 रानहिं तल ऽनिमंत्रदै, बुल्लयो विहित विचार ॥ ४ ॥  
 तैंहँ रानाँ कोटेस प्रति, बिरचि नेहभय वैन ॥  
 माधव निज भानेज हित, अस्खी जैपुर लैन ॥ ५ ॥  
 कोटेसहु तव रान प्रति, नय वैच अक्खिय नून ॥  
 जब मरिहै जयसिंह तव, अैंहैं पहुमि दुँरहूँन ॥ ६ ॥  
 बुंदिय मिलहिं उमेदकों, माधवकों जयनैर ॥  
 पै जोलग जयसिंह प्रभु, वदहु न तोलग बैर ॥ ७ ॥  
 कोटापति अरु रान दुवर, किय रहस्यै यह वत्त ॥  
 इंहिं तुम जावहु उदयपुर, रान करहु अनुरत्त ॥ ८ ॥  
 रानाउति पीइर समुतँ, रहत कुँम्मराँ रुटि ॥  
 इंहिं रानहु कूरम अहित, वप्पँ वहिनि हित बुटि ॥ ९ ॥  
 अप्पन पुव्वहि कुँम्म अरि, अव रानहु अरि आहि ॥  
 यातँ कछु दीपैहिं पटा, दैहिं तुँ दैहिं सिराहि ॥ १० ॥  
 यह विचारि निज विप्र वह, दयाराम संवोधि ॥  
 पठयो मतिगँति उदयपुर, समय देस हित सोधि ॥ ११ ॥

रूप इकट्ठे किये ॥ १ ॥ \* अष्ट कथा चाले ॥ २ ॥ † प्रमाण ‡ पाप जलाने के लिये ॥ ३ ॥ § नेना देकर उचित विचार से बुलाया ॥ ४ ॥ १ माधोसिंह ॥ ५ ॥ २ नीनि के गचन कहे ३ निअय ही ४ उमेदसिंह के बुंदी और माधवसिंह के जयपुर आवेगा ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ एकान्त में ९ इस कारण ॥ १० ॥ १ पुत्र (माधवसिंह) सहित ८ कलवाहा जयसिंह से रुट (कोधित हो) करः पिता की पहिनि (भुखा) पर हित की वृष्टि करके जयसिंह से रुट है ॥ ९ ॥ १० जयसिंह के ११ है १२ दीपसिंह को १३ तो ॥ १० ॥ १४ अपनी बुद्धि की गति से दया



तानै जाय रु \*तक्यो, नगर सलूमरि नाह ॥

जान्यौ या बिनु होय नहिँ, सब इहिँ इत्थ सलाह ॥ १२ ॥

अकखी केसरिसिंहसौँ, बत्त यहै तब बिप्र ॥

बुंदीपति लघु पुत्र हित, पटा चहत हम छिप्र ॥ १३ ॥

यह †उदंत कहि रानसौँ, §विहित दिवावहु बेग ॥

हैं हठे बाल न गिनहु, कलिह कसँग तेग ॥ १४ ॥

सुनि यह केसरिसिंह सठ, मानि लोभ निज मित्त ॥

संभरपर उपकृत समय, चाहयो नेह न चित्त ॥ १५ ॥

॥ पट्टपात् ॥

इहिँ चुंडाउत अगग मुख्य भुव लोभ सोधि मन ॥

सजि दलेल सन साम प्रकट अहरि किंकर पन ॥

रोर नाम लघु सुवन अप्प बुंदियपुर रक्खयो ॥

पटा सहँस पैतीस ३५००० लेरु अधिपति वह अकखयो ॥

तिहिँ लोभ अबहु उलटी तकत यह न पुरोहित अहरिय ॥

बिनु समय कछु न हम सन बनहिँ कहि यहै रु उपहास किय १६

॥ दोहा ॥

दयाराम यह सुनि दरित, इच्छि अवर आलंब ॥

दोलतराम सु व्यास हुत, सोधयो दुख गिरि संब ॥ १७ ॥

॥ पट्टपात् ॥

पहिलैही यह व्यास छोरि कोटा किहिँ कारन ॥

रहिय रान ढिग आय मंत्र नय चतुर महामन ॥

तबहि पुगेहित ताहि मिलि रु अक्खिय उदंत सब ॥

समयो दैन सहाय आहि बुधसिंह सुतहिँ अब ॥

राम को समझा क ॥ ११ ॥ \*देखा ॥ १२ ॥ †छिप्र ॥ १३ ॥ ‡वृत्तान्त ॥ १४ ॥

§ उचित १ लोभ को अपना मित्र मानकर २ चहुवाण पर उपकार करने के

समय ॥ १५ ॥ ३ रोड़सिंह नामक ४ दलेलसिंह को स्वामी कहा ॥ १६ ॥ ५

डरकर ६ अप्प आधार चाहा ७ दुख रूपी पर्वत का वज्र ॥ १७ ॥ १८ ॥ १६ ॥

बिनु धन निबाहि सकत न बिभव यातँ रानहिँ करि अरज।  
कछु देहु पटा लघु भ्रात हित गिनि बिपत्ति कहहु गरज।१८।

॥ दोहा ॥

द्विजवर दौलतराम सुनि, अकिखप रानहिँ एह ॥  
दीपसिंहहित दीजिये, कछुक पटा करि नेह ॥ १९ ॥  
सु सुनि रान जयसिंहको, चिंत्यो \*तहर प्रचंड ॥  
अकखी वह करम अतुल, दिय मरुपहु जिहिँ दंड ॥ २० ॥  
किपेँ अहित यह कुम्भ को, बिगरहिँ राज बिसाल  
यातँ तुम उनसौँ कहहु, कहहु कछु बिधि काल ॥ २१ ॥  
यह उत्तर जगतेस दिय, सो सुनि कुमर प्रताप ॥  
अकखी घर आयेन कौँ, क्योँ नहिँ रक्खत आप ॥ २२ ॥  
सत्रुकोहु आयें सदन, मानत अग्य महंत ॥  
सुपहु अप्प असे समय, कूरम त्रास कहंत ॥ २३ ॥  
यह कहिकुमर प्रताप न, पटा हजार पचीस २५००० ॥  
जनकहुसौँ बरजोर बनि, किय तयार बखसीस ॥ २४ ॥  
नगर पटा बिच मुख्य लिखि, लाखोला अभिधान ॥  
अवरहु वस्तु अनूप चउ ४, चित करिय पहुँचान ॥ २५ ॥  
इक कृपान हय २ खास इक, इक चामर ३ बर बेस ॥  
इक सिरुपेच ४ उमेद हित, किय तयार कुमरेस ॥ २६ ॥  
सगताउत सुरतेस सुत, निडर उमेद सनाम ॥  
किय तयार बुंदीस प्रति, बेघम भेजन काम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमार अति जोर बढ्यो जुब्बन बय उब्बट ॥

\* भयंकर प्रताप । मारवाड़ के राजा को भी ॥ २० ॥ १ जयसिंह का २ बड़ा  
॥ २१ ॥ ३ राणा जयसिंह के कुमर प्रतापसिंह ने कहा ॥ २२ ॥ ४ च ६ आघ  
६ आप श्रेष्ठ राजा होकर ॥ २३ ॥ ७ पिता से ॥ २४ ॥ अनाज ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

अंगमि जनक अमात्य भेदि कति लिय मिलाय भेट ॥  
 भिल्लाड़ा पुर भिन्न बंधि अप्पन रजधानी ॥  
 दखल राज बिच डारि रहैं उद्धत अभिमानी ॥  
 यह सोधि रान जगतेस अब पकरन पुतहिं किन्न मत ॥  
 तिन दिनन भूप बुंदीसको उदयनैर यह बिप्र गंत ॥ २८ ॥  
 ॥ दोहा ॥

नटत रान इस निंदि हुंत, उद्धत कुमर प्रताप ॥  
 संभर हित स्वच्छंद तब, लिखि पटा रु किय छाप ॥ २९ ॥  
 लखि सुतको यह मतपन; सोचि रान जगतेस ॥  
 हे भट निज अनुकूल ते, इक दिन बुझि असेसैं ॥ ३० ॥  
 कहिय कैद मम सुत करहु, अनर्य प्रचारत एह ॥  
 निज निज सुत या डिग रहत, तिनहिं पठावहु गेह ॥ ३१ ॥  
 ग्रह बिचही एते दिनन, करत गह्यो अपकार ॥  
 पै हम बिनु पैले नृपन, हुव अब रक्खन द्वार ॥ ३२ ॥  
 यातैं अब अज्ञान हुत, मेटहु गहि उमराव ॥  
 अरु जो नहिं तो अग्नि यह, सजलनदहन स्वभाव ॥ ३३ ॥  
 दृढ प्रपंच इम रान करि, भटन सिक्ख दिय भाय ॥  
 इन निज पुत्र अनेक मिस, दिन्नै घरन पठाय ॥ ३४ ॥  
 सगताउत दारूनगर, पति सुरतेसैं स नाम ॥  
 स्वसुतहिं अखिय ताहुनै, घरजावहु कछु काम ॥ ३५ ॥  
 यह उमेदासिंह सु कुमर, जो किय बेघम तयार ॥  
 ताहूसौं इम पितु कहिय, जावहु गेह कुमार ॥ ३६ ॥

१ पिता के सचिव को पकड़ कर २ उमरावों को ३ विचार कर  
 ४ मया ॥ २८ ॥ ५ शीघ्र ६ स्वतंत्र ॥ २९ ॥ ७ सबको बुलाए ॥ ३० ॥ ८  
 अनीति ॥ ३१ ॥ यह जलती हुई ९ अग्नि है जिसका १० जलाने का ही स्व-  
 भाव है ॥ ३३ ॥ ११ रीति पूर्वक ॥ ३४ ॥ १२ सुरतासिंह १३ अपने पुत्र से कहा

इहिँ कुमार मतिबल कछुक, जान्यौ रान प्रपंच ॥  
 अक्खिय स्वामि प्रताप अब, जानि न छोरोँ रंच ॥ ३७ ॥  
 तदनंतर इकदिन यहै, रान कुमार प्रताप ॥  
 अलपसत्थ रहि जनक की, परिखद पत्तो आप ॥ ३८ ॥  
 उपबन कृष्णबिलास नृप, बैठो गहन उपाय ॥  
 इहिँ विच कुमर प्रताप यह, डोढी पहुँच्यो आय ॥ ३९ ॥  
 प्रतिहारन अक्खिय अरज, लीजै दुवरचर पास ॥  
 लौ जानन अवर न हुकम, चतुर अप्पनय चांस ॥ ४० ॥  
 निज सत्थहिँ तँहँ रक्खि तब, लौ अनुचर दुवरसंग ॥  
 परिखद पंत प्रताप तँहँ, रानहिँ नमि रुचि रंग ॥ ४१ ॥  
 अप्प मिसल बैठिय उचित, रचि सैन रु तब रान ॥  
 सुभट च्चारि४ निज पुत्र सिर, डारिय भरत उडान ॥ ४२ ॥  
 नाथनामल्लछु आत निज, पुर बैंगोर अधीस ॥  
 रानाउत भारत बहुरि, नगर जाजपुर ईस ॥ ४३ ॥  
 चुंडाउत पुर देवगढ, पति जसवंत३ स एव ॥  
 देलवाड़पुर पति बहुरि, भल्ला राघवदेव४ ॥ ४४ ॥  
 ए भट रान अधीस की, सैन होत छल सोर ॥  
 चंड परे प्रतिमल्ल चउ४, जानि कुमार अति जोर ॥ ४५ ॥  
 तिनके परत प्रताप तब, जनक गहन मत जानि ॥  
 हो कितेक पै पितु हुकम, कहि छोरिय असि पानि ॥ ४६ ॥  
 इन तथापि मूढन चउ४न, गहि दिखाय बल दिष्टि ॥  
 नाथसिंह तस बाहु गहि, जानु सचक दिय पिष्टि ॥ ४७ ॥

॥ ३६ ॥ ३६ ॥ १ बुद्धि बल से ॥ ३७ ॥ २ पिता की ३ लभा में गया ॥ ३८ ॥  
 ४ पास ५ पकड़ने के उपाय से ॥ ३९ ॥ ६ द्वारपालों ने ७ सेवक = दूसरों  
 को लेजाने का हुकम नहीं है ९ नीति की खबर है ॥ ४० ॥ १० लभा में गया  
 ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ११ बागोर पुर का पति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १२ पिता पकड़ता है  
 यह जानकर १३ हाथ से तरवार छोड़दी ॥ ४५ ॥ १४ खुदने की ॥ ४६ ॥

कहिय पटा फैकत कुमर, मल्लन लरत \*उमाहि ॥  
 अज्ज कहाँ वह बल गयउ, होत निबल को ँचाहि ॥४८॥  
 कहि इस कुमरहिँ कैद किय, चउ४ भट कुबच प्रचार ॥  
 सक नव अंक९९ †सहस्य गत, ‡विसद तीजशरवि बारा ॥४९॥  
 अगँ अनुचित कुमर करि, इहाँ उचित अवधान ॥  
 पकरन जानत पहिल किय, खगग रु खेटकँ हान ॥ ५० ॥  
 गहत अचानक इस कुमर, फुट्टिग हक अपार ॥  
 डोढीपर निज सत्थ सुनि, भज्यो विकल भय भार ॥ ५१ ॥  
 कुमरँ जु कुमर तयार किय, वेघम भेजन बीर ॥  
 सगताउत उम्मेद सो, धँप्यो सभा बिच धीर ॥ ५२ ॥  
 असि भारत मारत अरिन, रान लियउ नियराय ॥  
 जिहिँ पिल्लितँ तिहिँ बपु जुगल २, करत खंड अतिकाय ॥ ५३ ॥  
 ताहीको काका तबहि पिल्लयो रान प्रचारि ॥  
 स नति पुब्व इक बार सहि, मरद सोहु लिय मारि ॥ ५४ ॥  
 सुरतसिंह तब तस जँनक, रोकन पिल्लयो रान ॥  
 तिहिँ लखि कुमर उमेद तजि, असिबँर नमिय अमान ॥ ५५ ॥  
 जानि धरम इहिँ असि तजिय, इहिँ मूरख किय एह ॥  
 नमत बेर निज पुत्र सिर, कट्यो नूँतन नेह ॥ ५६ ॥  
 कुमर प्रताप सु कैद करि, इस खिजि जनक अमान ॥

\* उत्साह करके † चाह कर कौन निर्वल होता है ॥ ४८ ॥ ‡ पौष § सुदि  
 ॥ ४९ ॥ १ सावधानी २ तरवार और ढाल का त्याग कर दिया ॥ ५० ॥ ३ हाक  
 फूटी ॥ ५१ ॥ ४ कुमर प्रतापसिंह ने जिस कुमर को वेघम भेजने को तैयार  
 किया था वह उम्मेदसिंह ॥ ५२ ॥ ५ समीप जिसको भेजते हैं उसी के श-  
 रीर के दूँदो डुकड़े करता है ॥ ५३ ॥ ६ नम्रता पूर्वक, पहिले उसका एक बार सहकर  
 ॥ ५४ ॥ ७ उस कुमर के पिता सुरतसिंह को ११ राना ने रोकने को भेजा  
 १२ अष्ट तरवार छोड़कर १३ मान रहित नमा ॥ ५५ ॥ १४ नवीन स्नेह का काट  
 दिया अर्थात् पुत्र उम्मेदसिंह को मार डाला ॥ ५६ ॥ १५ अमाप (प्रमाण रहित)

पकरन वारे चउ४नकाँ, मुख्य सचिव किय रान ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ को-  
टापतिदुर्जनशल्यश्रीद्वारगमनसप्त ७ स्वरूपैकत्रकरणाबुन्दीन्द्रपुरो-  
हितदयारामोदयपुरप्रेषणादीपसिंहार्थपटोपनामकनिर्वाहवसुप्रार्थन-  
तत्सलूमरीशकेसरिसिंहाऽपहसनव्यासदोलतरामवाक्सहायविरचन  
राणाजगत्सिंहाऽनङ्गीकरणातद्राजकुमारप्रतापसिंहस्वीकरणापटावे-  
धमप्रेषणाविचारणाद्यौद्धत्यधारणातद्राणाकुमारकाराक्षेपणातद्रटो-  
म्मेदसिंहकुमाररणमरणराणासोदरनाथादिसचिवचतुष्टयी ४ कर-  
णं चतुर्थो४मयूखः ॥ ४ ॥ ॥ २८५ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूलिकाआला ॥

नृप उमेद इत व्याह किय, मालव धर पुर गर्गराट पति ॥  
भल्ला दलपतिकी सुता, चिमनकुमरि अभिधान महामति॥१॥  
सक नव नव सत्रह१७९९समा, नवमी९राधें बलच्छ लगन किय॥  
गुर्न३बासर रहि स्वसुर ग्रह, बेधम आनि मिलान बहुरि दिय॥२॥  
पूतिदिन बुंदिय लैन पटु, बहत भूप उम्मेद बलापति ॥

॥ ५७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति  
दुर्जनसाल का नाथद्वारा में जाना सात स्वरूपों को इकट्ठा करना बुन्दी के  
राजा के पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना दीपसिंह के अर्थ पटा है  
उपनाम जिसका ऐसे निर्वाह (स्वर्च निवाह) की प्रार्थना करना उसका  
सलूमर के पति केसरीसिंह का हसी करना व्यास दोलतराम के बचन की  
सहायता करने को राणा जगत्सिंह का अस्वीकार करना उसको राणा के  
राज कुमार प्रतापसिंह का स्वीकार करके पट्टा बेधम भेजने का विचार करना  
आदि उद्धतता धारण करने से राणा का उस कुमार को कैद करना उस कुमार  
के वीर कुमार उम्मेदसिंह का युद्ध में मरना राणा का संग भाई नाथसिंह  
आदि चारों को सचिव करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से  
दोसौ पिछ्यासी २८५ मयूख हुए ॥

१ नास ॥ १ ॥ २ वैशाख १ सुदि ४ तीन दिन ५ सुकाम ॥ ३ ॥ ४ आना बला

सावन गत आसार कै, कै सित पक्खगं द्वैजकलापति ॥३॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बुंदिय यह सोर, चूक दलेल बिचारिकै ॥

चूडाउत वह रोर, मारन वेघम मुक्कलिय ॥ ४ ॥

भोपसिंह तस संग, हरदाउत हड्डा दियउ ॥

जो पति धोवड़ दंग, सालम सुत हितकर कुटिल ॥ ५ ॥

दोउरन वेघम आय, बिरद मत्त निज छोरि दिय ॥

जान्यो कोतुंक पाय, सिसु उभेद अहैं लखन ॥ ६ ॥

तबहि दगा बल ताहि, मारि रु बुंदिय मुक्कलहि ॥

इम सठ उभय उमाहि, पहर तीन गज संग फिरिय ॥ ७ ॥

सो सुनि लखन न आय, सानुकूल नृपकी निधति ॥

छत्र गये दुख छाये, मुह बिगारि दुवर सठ दुमन ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप जयसिंह इत, जित्ति मरुस्थल जुद्ध ॥

अद्वितीय अप्पहिं समुक्ति, मान गहिय बनि सुद्ध ॥ ९ ॥

मद्य पान हित गिनि मुदित, निस दिन रचत अनंत ॥

निधुवन रुचि धप्पत नहिन, दम हुव आगम अंत ॥ १० ॥

निस रु दीह आसव नसा, रक्खत हृदय अरुद्ध ॥

छोरत नहि कामुक छगल, मंजौ नारिन मूढ ॥ ११ ॥

ऐसी विधि अवसानके, आगम हुव कछवाह ॥

नामक पर्वत का पति बढ़ता है १ आवण की सेव धारा बहे जैसे २ किधों  
शुद्ध पक्ष के द्वितीया के चन्द्रमा की कला जहे जैसे ॥ ३ ॥ ४ वह सैलमर के  
रावत का छोटा पुत्र रोदसिंह ॥ ४ ॥ ५ सानुकूलसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) का  
हित करने वाला ॥ ५ ॥ ६ गन्त हाथी ७ तलाश जान कर ॥ ६ ॥ ८ भेजे-  
में ॥ ७ ॥ ९ भाग्य ॥ ८ ॥ १० सुख बन कर ॥ ९ ॥ ११ मैधुन से १२ अंत समय का  
आगम हुआ ॥ १० ॥ १३ हृदय पर चढ़ा हुआ १४ दम फारस नगरा १५ स्त्रियों स्त्री  
स्त्रियों (महारिषी) को नहीं छोड़ा ॥ ११ ॥ १६ कछवाह के अंत का ॥ १२ ॥

राजामल सिर राज्यकी, रक्खी निबहन राह ॥ १२ ॥  
 बैदन सैन औषधि बलन, अधिक ठानि आहार ॥  
 उभय २ धटी ओदन अदन, बढ्यो कुम्भ इहि बार ॥ १३ ॥  
 आर्गम सकल अंगक, सठ एकांत सुधाय ॥  
 मोहन मेहन वृद्धि मुख, सेय देवा दसाय ॥ १४ ॥  
 वरज्यो जदपि चिकित्सकन, मन्न्यो तदापि न मंद ॥  
 आगधत अदिरत अतुल, आसव सुरत अनंद ॥ १५ ॥  
 राजामल इक दिन कहिय, क्यों नृप करत कुजोग ॥  
 अक्खी तुम छत हम अभय, भुगत अव यह भोग ॥ १६ ॥  
 हुव प्रमत्त जयसिंह हम, मन लागि मोहन मय ॥  
 अवर कोन सम सम यहै, सोधि गरब गहि सँद्य ॥ १७ ॥

॥ रोला ॥

इकदिन आसव मत्त होय कछवाह मूढ मति ॥  
 उदयनैर लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥  
 मम आदेशैं अमोघैं चतुर जगतेस बिचारहु ॥  
 बेधम जे बुधसिंह नंद निज देस निकाहु ॥ १८ ॥  
 सुनि यह कूरम कथितैं रान जगतेस भीरु बनि ॥  
 दिय बेधम आदेश देस मम तजहु भूप भनि ॥  
 यह सुनि भूप उमेदसिंह अरु दीप भात दुव २ ॥  
 कछु दिन कठिन निकारि धरिय धरलैन चित्त धुव ॥ १९ ॥

१ वैद्यों से बल बढ़ाने की औषधियों के सेवन से बहुत भोजन करके दो दो घड़ी में २ अन्न ३ खाना ॥ १३ ॥ ४ सब शान्त्र ५ कामदेव के. एकान्त में दिखवा कर ६ मैथुन की और ७ लिंग की वृद्धि (बढ़ाना) ८ आदि ९ औषधी का सेवन करके दिखाया अर्थात् औषधिय खाकर मैथुन और लिंग की वृद्धि दिखाई ॥ १४ ॥ १० वैद्यों ने मना किया तो भी ११ वह मूर्ख नहीं जाना १२ निरन्तर, मद्य और मैथुन के अत्यन्त आनंद का आराधन (साधन) करता रहा ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ मैथुन १४ तुरंत (शीघ्र) ॥ १७ ॥ १८ मेरा हुकम १९ पीछा नहीं फिरने (खाली नहीं जाने) वाला ॥ १८ ॥ १९ जयसिंह का कहा हुआ १८ कायर ॥ १९ ॥



सक ख अन्न वसु सोम १८०० अस्मित पंचमिः असाढे गत ॥  
 कोटा जैनपद क्रमिय छोरि बेघम रन उद्धत ॥  
 सुनि यह दुज्जनसल्ल भीरु कूरम भय भाखिय ॥  
 निज ढिग बुल्लिय नाहिं दुहुँन मधुकरगढ राखिय ॥ २० ॥  
 रहिय तत्थ चउ४मास भूप उम्मेद अनुजँ सह ॥  
 मृगयादिक कोतुक अनेक रचि बीर महा मह ॥  
 घाँट रुक्मि गिर घेरि भुंड तुपकन नृप भारे ॥  
 अति प्रगल्भ आयुधन सद्धि मृगपति बहु मारे ॥ २१ ॥  
 ॥ रुचिग ॥

इत कूरम नृप रोग बिबसि हुव देह बिकसि कृमि पुंज परे ॥  
 मास बहुत यह दुख सहयो अरु गूँद पैलल तँनु बिकून गरे ॥  
 इक १ अंगुल परिमित लंबे कृमि स्याम लँगन सब देह धसे ॥  
 त्वर्च १ लोहित २ पैल ३ मेद ४ न खावत अस्थिं अंतर बिबिध वसे १२  
 भस्म तलपे सोवत दुख भोजन नैक न पीड़ित निंद लहै ॥  
 जिम बिकसत तरबूज पक्या इम बिग्रह गंचन गाढ गहै ॥  
 सुमहि मूत्र तथा मल मोचन निजैकृत दुरितन चितिकैरै ॥

१ कृष्णपत्त की २ देश में ३ गये ॥ २० ॥ ४ छोटे भाई  
 दीपसिंह सहित ५ शिकार आदि ६ बड़े उत्सव रचकर ७ घाटा रोक कर  
 ८ शस्त्रों में बुद्धिमान् अथवा उस बुद्धिमान् ने शस्त्रों का साधन करके बहुत  
 मिह मारे ॥ २१ ॥ ९ कछुवाहों का राजा जयसिंह रोग वश हुआ जिसका  
 शरीर फटकर उसमें १० कीड़ों के ११ समूह पड़गये सो कई मास तक यह  
 दुःख सहा और १२ चरबी व १३ मांस १४ शरीर से १५ ग्लानि युक्त होकर  
 मिरा १६ एक अंगुल के प्रमाण वाले १७ काले सुत्र के कीड़े सब शरीर में घुस  
 गये वे कीड़े १८ चमड़ी १९ रुधिर २० मांस २१ चरबी नहीं लाकर २२ हड्डियों के  
 भीतर घुसगये ॥ २२ ॥ २४ उस दुःख के पात्र (राजा जयसिंह) ने २३ भस्म की  
 शय्या पर शयन करके उस पीड़ा से नींद नहीं ली २४ शरीर २५ वह राजा  
 सोया हुआ ही मल मूत्र का त्याग करता था और २७ अपने किये हुए २८ पापों  
 को २९ याद करता था

अनुज विजय तिय मात सुनादिक मारिय ते सब दिँद्वि परै ॥ २३ ॥

इम अति कष्ट बिकल कूगम नृप संचित अघ भरँ भूरि भज्यो ॥

खखवसुससि १८०० बिक्रमसक इसगतँ बिसँद चतुर्दसि १४ देहतज्यो

हुव जैपुर घर घर हाहारँव अंतहपुर अति त्रास परयो ॥

ईस्वरिसिंह तबहि पट्टप सुत देखि निगँम विधि दाह करयो ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद नृप भाग बल, तजिग देह कछवाह ॥

यह उदँतँ दिस दिस उडिग, हुव अरि घग्न उछाह ॥ २५ ॥

यह कथ सुनि कोटा अधिप, खुँसिय मन्नि तजि खेद ॥

मधुकरगढतँ अनुज जुत, बुल्ल्या निकट उमेद ॥ २६ ॥

मधुकरगढ सामंत हर, हड्डा हरजन नाम ॥

किल्लापति कोटेसको, जु हो भुजिँया जाम ॥ २७ ॥

मुख्य सचिव बुंदीसको, कोटापति वह किन्न ॥

कोटा आय उमद नृप, हयन हेर चउ४लिन्न ॥ २८ ॥

लेत हँयन कोटँस लखि, अकखी भूपहिँ एहु ॥

तुम हित हम रक्खत कैटक, लगँ खगच सु देहु ॥ २९ ॥

सुनि नृप निज भूखन दये, मोल लक्ख दुव२ दम्म ॥

इक्क१ किलंगिये कैटक जुग२, करन जंग भुव कैम्म ॥ ३० ॥

लोभी दुज्जनसल्ल सठ, लखी विपत्ति न रंच ॥

इम भूखन बुंदीसके, लिन्नै कपट प्रपंच ॥ ३१ ॥

१ छोटे भाई विजयसिंह, माना और २ पुत्र आदि को मारे थे वे सप्तदीप्तिने लगे ॥ २३ ॥ ४ संचय किये हुए पाप के भार को ५ बहुत भोगा ६ आश्विन मास के ७ शुक्ल पक्ष की ८ शब्द ९ जनान में १० वेद विधि से ॥ २४ ॥ १ वृत्तान्त ॥ २५ ॥ २६ ॥ १२ पामवान स्त्री का पुत्र ॥ २७ ॥ १३ अच्छे हेर कर चार घोड़े लिये ॥ २८ ॥ १४ तुम्हारे लिये सेना रखने हैं जिसका खर्च लगे सो दो ॥ २९ ॥ १५ मस्तक पर लगाने की एक जड़ाऊ किलंगी और हाथों के १५ दो कड़े दिये पृथ्वी के लेने के अर्थ युद्ध का १६ कार्य करन को ॥ ३० ॥ ३१ ॥

तदनंतर दैल इक सहस्र १०००, पठयो बुंदिय सीम ॥

आय रु तिहिं लुटिय मुलक, भेद मचायउ भीम ॥ ३२ ॥

नृपति ईस्वरीसिंह हुव, इत जैपुर लहि पट्ट ॥

श्रद्धाजुन करि जनकको, प्रेतकर्म विधि बट्ट ॥ ३३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ भूष-  
दुस्मेदसिंहमालवगर्गराटपतिभल्लादलपतिसिंहपुत्रीप्रथमोद्वहनतन्मा-  
रणादलेलसिंहविचारणाकूर्मगजमयमदमजनललनालोलुपाभवनोद-  
यपुरदलप्रेषणाराणाहृद्वेन्द्रदेशनिष्कासनजयसिंहमरणातदुस्मेदकोटा  
ऽऽह्वयनकोटेशतद्रूपणमार्गणास्तेनासमुच्चयनबुन्दीदेशविग्रहकरणज-  
यपुरेशेश्वरीसिंहपट्टप्रापणां पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥ ॥ २८६ ॥

प्रायोजनजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दाहा ॥

कोटापुर इत मंत्र किय, दुज्जनसल्ल उमेद ॥

इकत करि हड्डे अखिल, भाखिय संगर भेद ॥ १ ॥

काह भट बेणीरामसौं, कोटापति कर जोरि ॥

गिनत तुम्हैं सब भूप गुरु, छल रु छोनिं छक छोरि ॥ २ ॥

यातैं जैपुर जाहु तुम, बुंदिय लैन उपाय ॥

१जिम पीछे २ सेना ३ भयंकर ॥ ३२ ॥ ४ पिना का ५ रीति के मार्ग से ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में भूपति उस्मेदसिंह  
का मालवे में गगर्ग के पति भल्लादलपतिसिंह की पुत्री से प्रथम विवाह  
करना १ उस्मेदसिंह को मारने का दलेलसिंह का विचारना २ कछवाहों के  
राजा (जयसिंह) का मय के नसे में डूबकर स्त्रियों का लोलुपि होना और  
उदयपुर पत्र भेजना ३ राणा का उस्मेदसिंह को देश बाहर निकालना ४  
जयसिंह का मरना और उस्मेदसिंह को कोटा में बुलाना ५ कोटा के पति  
का उस्मेदसिंह से भूपण लेना ६ सेना एकत्र करके बुन्दी के देश में उपद्रव  
करना ७ उ.यपुर के राजा ईश्वरीसिंह के पाट बैठने का पांचूवां ९ मयूख सं-  
माप्त हुआ और आदि से दोसौ छियासी २८६ मयूख हुए ॥

१ युद्ध का ॥ १ ॥ ७ भूमि का घमंड छोड़कर ॥ २ ॥

कूगमे जो यह स्वीकैरैं, तो लगनौ न हिताय ॥ ३ ॥

हम जावन श्रियद्वार पुनि, मिलहिं रानसौं तैत्थ ॥

करहिं न हित कछवाह तो, मज्जहिं उभय सैमत्थ ॥ ४ ॥

यह सुनि भट जैपुर चलिष, दुजनसल्ल श्रियद्वार ॥

अन्नकूट सहिय समय, अधिक भाक्त उपचार ॥ ५ ॥

॥ हीरकम् ॥

पुनि रानहिं पठयो दलँ अप्प मिलन आइये ॥

माधर्व निज भागिनेय हित हु हृदय लाइये ॥

बुंदिय पुर लेन कोहु मंत्र मिलि रू ठानिहैं ॥

हुंढाहर मंदिनि पर मज्जि सैमर तानिहैं ॥ ६ ॥

यह सुनि जगतेस रान कुंच करिष वेगही ॥

कोटापतिके मिलाप नीति राति के गही ॥

उदयनगरके ममीप सेनहिं फरमानदे ॥

नाहरमगराभधान थाँन तैंहें मिलानदे ॥ ७ ॥

कोटापति पाँप पास प्राति पत्र प्रेरयो ॥

आवहु मिलिहैं इहाँहिं जो तुम हित हेरयो ॥

कांटेमहु सुनत एह नाहरमगर गयो ॥

रानहिं मिलि रीतिसहित मंत्र सहितें मंडयो ॥ ८ ॥

अगैं अमगैं रानकी पुत्रिय व्याहिवे ॥

रौनाउ त दुर्लभ गिनि चिंतिन जस चाहिवे ॥

निजकर जयसिंह कुँम्म कगगर लिखा की सही ॥

१ कछवाहा इश्वरीसिंह २ स्वाकार करै तो लड़ना ३ हित नहीं है  
॥ ३ ॥ ४ तयां ५ समर्थ ॥ ४ ॥ ६ पूजना ॥ ५ ॥ ७ पत्र ८ आपके  
मानजे माधवसिंह के हित को ९ भूमि १० युद्ध ॥ ६ ॥ ११ नाम १२ सुकाम  
॥ ७ ॥ १३ पापी के पास (आगामि समय में कुंदी को दबावेगा इससे यह  
विशेषण दिया है) १४ हित के साथ मलाह की ॥ ८ ॥ १५ राणा की पुत्री  
को १६ कछवाहा जयसिंह ने पत्र लिखकर १७ सही की

रानाउति पुत्र होहिं ढुंढाहर ईस ही ॥ ९ ॥  
 पहिलैं इतनी लिखाय रानहु तनयाँ दर्ई ॥  
 चिन्हहु पट्टे नीति अप्प तथ्य न सब जो भई ॥  
 जिह्वाहि जयसिंह पुत्र राज्य अखिल अंगम्पौ ॥  
 माधव हित कछु दयो न नाँति जुत तुमसौं नम्पौ ॥ १० ॥  
 बुंदिय दुवश्दत्थर्न गाह छोरनहु न उच्चर्ग ॥  
 अप्पन इहिं कारन दुवर सज्जित दलकों करै ॥  
 दोउनर यह मंत्र थाप्प इकत पृँनना करी ॥  
 विप्र सु उत बेणिराम कूर्म प्रति उच्चगी ॥ ११ ॥  
 छिन्निय जयसिंह सोहि बुंदिय अव दीजिये ॥  
 कूर्म उपकार यहहि कांटा सिर काजिये ॥  
 राजामल जुत नगेसैं विप्रहिं तव अक्खई ॥  
 बुंदिय हमरे पिचंडे क्यौं करि कढिहै गड ॥ १२ ॥  
 अक्खिय सुनि एह विप्र तुंर कैतरि कछिहैं ॥  
 दुँदर दल हंकि हड्ड जैपुर सिर चह्छिहैं ॥  
 यह कहि द्विज आय बत्त हड्डनपति साँ कही ॥  
 सो सुनि चहुवान १ गन २ सज्जिय पृँनना सही ॥ १३ ॥  
 लंबित धुजदंड मत्त हत्थिन सिर खुल्लये ॥  
 वीरहु निज निज समस्त बंधन बँल बुल्लये ॥  
 त्रंबक डक बज्जि बेग सिंधुन स्वर लग्गये ॥  
 पव्वय डगमग्गि भोग भोगिये भैर भग्गये ॥ १४ ॥

१ इस रानावती के पुत्र हागा माही निश्चय जयपुर का पति होगा ॥ ९ ॥ २ पुत्री ३  
 आपनीति चतुर हो सो विचारो ४ वह मत्त नहीं हुई ५ जयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र  
 (ईश्वरीसिंह) ने ६ सब राज्य दवालिवा ७ नअना सहित ॥ १० ॥ ८ दोनों हाथों से  
 पकड़कर ९ सेना को १० सेना एकत्र करी ॥ ११ ॥ ११ ईश्वरीसिंह ने १२  
 हमारे पैद में है सो ॥ १२ ॥ १३ बड़े पैद को चीरकर १४ दुःख से धर्षण की  
 जावै ऐसी सेनाका १५ सेना ॥ १३ ॥ १५ सेना बांधने के लिये बुलाये १७ वीर  
 रस को बढ़ानेवाला राग विशेष १८ नाग के फण १९ भार से तूटे ॥ १४ ॥

\*संकुलि धर धूलि धुंधि रुंधि रु रवि ठंकयो ॥  
 †त्रिकार लखि चंड चेत दिग्गज गन संकयो ॥  
 दिकपालनके †कपाल नाटसालसे चुमे ॥  
 बार सु मगरूर मंडि हूरन हित के लुमे ॥ १५ ॥  
 सागर सब लै हिलोर ओर ओर उज्झले ॥  
 हाटकै गिरिके समस्त शृंग भंग ठहै हले ॥  
 कोटापति सेन रान सेन उभय२ यौ चली ॥  
 सो सुनि कछुवाह भूप इकत बैल कै बली ॥ १६ ॥  
 मंडिय दारकुंच रान सम्मुह मंगरूरतै ॥  
 मानहु घन भद्र मास पाय पवन पूरतै ॥  
 राजामल कग्गर लिखि रान निकट पिछयो ॥  
 हड्डनके पेचमाँहिँ मानस तुम क्यों दयो ॥ १७ ॥  
 जो हित हमसौं बनें सु आग्न सैन नां बनें ॥  
 आवत हमहूँ हजूर अप्पन सिग्ही मनें ॥  
 माधव निज जामिँज दिन बंदि पहूमि लाजिये ॥  
 हड्डन सन भिन्न होय नैकहु न पतीजिये ॥

॥ दोहा ॥

यह दैल अग्गहि मुकल्यो, राजामल सचिवेनै ॥  
 पुनि नृप ईश्वरिसिंह जुन, सम्मुह हंकिय सेन ॥ १९ ॥  
 इन गन रु कोटिम दुवर, बेग सु कैग्गर बचि ॥

\*भ्राम पर रज छाकरा इसमना का नात्रना दखकर चौसली करकेचिन सं दिशा-  
 ओ के हाथियो का समुह शंकायुक्त हुआ नही निकलने वाला साल. 'कि' से  
 मानों अथ समझा जाता है इसापकार 'के' से कितने यह अर्थ सब जगह जा-  
 नना चाहिये) ॥ १५ ॥ १ सुमेरु पर्वत क शिखर २ सेना इकट्ठा की ॥ १६ ॥ ३ घमंड से  
 १ पवन के समुह से ५ भेजा ६ मन ॥ १७ ॥ ७ आपको मस्तक पर दमानते हैं  
 ८ बहिन का पुत्र १० विश्वास मत करो ॥ १८ ॥ ११ पत्र १२ सचिवों का पति  
 ॥ १६ ॥ ११ वह पत्र बाँचकर

धाये सम्पुष्ट खगचि धन, सेना अतुलित संचि ॥ २० ॥

नगर जाजपुरके निकट, जामोली इक गाँव ॥

उत्तगि तैंहें भूपति उभय, किय चालीस मुकाम ॥ २१ ॥

सगताउत सावर अधिप, इंद्रसिंह अभिधान ॥

तिहिँ दळ्यो इक गनको, नगर देवली थान ॥ २२ ॥

ताहि तजन जगतस तब, बहुत कहाई बत्त ॥

सगताउत मन्नी न सो, सुररि रह्यो जिम मत्त ॥ २३ ॥

इहिँ रानी अव देवली, रचन लैन गढ गरि ॥

राजाउत भारी सहित, पठ्यो कटक प्रचारि ॥ २४ ॥

दलहिँ जात अव देवली, सुनि सावर पात पुत्त ॥

सालम नाम सु माँजत बनि, धम्यो लरन गढ धुत्त ॥ २५ ॥

दिन पंचक ५ पहिलें यहै, व्याह्यो सालम बाँग ॥

कंकन मोचन हू न किय, हुव जुझकन हमगार ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तगायण सप्तम ७ राशाबुम्मे-  
दसिंह १ दुर्जनशल्य २ मन्त्रशावेणीरामभट्टजैपुरभेपशाकोटेशश्रीद्वा  
रगमनराणासमावहयननाहरमगगंभय २ मिलनवंशीरामेश्वरीसिं-  
हविरसीभवनभट्टपत्यागमनराणासमावहयसेनाभिनिर्वाशातदभिमुख  
कूर्मगजाऽऽगमनदेवलीकुमारसालमभिदसज्जीभवनतद्राणाससैन्य

१ एकत्र करके ॥ २० ॥ २१ ॥ २ सावर का पान ३ नाम ॥ २२ ॥ ४ मस्त होवे  
जिमप्रकार ॥ २३ ॥ ५ इनकारण दक्कन नामक नगर लेने को ६ भारतसिंह  
७ सना भेंजी ॥ २४ ॥ ८ सेना को देवली जानी हुई सुनकर ९ पुत्र १० अन्ध  
॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तगायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह और  
दुर्जनसाल का मलाह करना १ भट्ट वंशीराम को जयपुर भेजना २ कांटा के  
पान का नाथद्वारे जाकर राणा को बुलाना ३ नाहरमगरा नामक स्थान पर  
दोनों का मिलना ४ वंशीराम और ईश्वरीसिंह का परस्पर विरस होना ५ भ-  
ट्ट के पक्ष आने पर राणा और महाराज का सेना सहित गमन करना ६ इन  
के सम्पुष्ट कछवाहा के राजा का आगमन ७ देवली में कुमार सालमसिंह का

भारतसिंहप्रेषणशंसनं षष्ठो ६ मयूखः ॥ ६ ॥ ॥२८७॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

गहयो जिहिँ अगग प्रतापे कुमार, वहै हुव भारतसिंह तयार ॥  
 दयो तस संग अभंग अनीकै, सजे भट उद्धत चाहि समीकै ॥१॥  
 सिगाहि कहयो सबसौँ इम रान, लहो गढ घोर रचो घमसाँन ।  
 चलयो सुनि भारतसिंह प्रचंड, उमंगत हंक्रिय सेन अखंड ॥ २ ॥  
 भयो दिक्पालन मोह भयान, प्रकंपत दिग्गज भुल्लिय प्रान ॥  
 मचक्रिय पन्नगवी फँनमाल, भचक्रिय पक्रिय सूकर भाल ॥३॥  
 छछक्रिय अद्रिनतँ कटि धातु, लचक्रिय लोक कहँ हरि पातु ॥  
 सरक्रिय एम उदैपुर चंक्र, फरक्रिय हत्थिनपँ बँहगक्र ॥ ४ ॥  
 करक्रिय कंकटकी कटिकाँलि, ढरक्रिय पँबव शृंगन ढालि ॥  
 खगक्रिय खप्पर जोगिनि संग, भगक्रिय नालन अगिँ दमंग ॥५॥  
 घुगक्रिय अकगर पकगर घोर, थगक्रिय अछगि अँवर ओर ॥

सज्ज होना ८ उस पर महाराणा का सेना सहित भारतसिंह को भेजने के  
 कथन का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यासी  
 २८७ मयूख हुए ॥

जिसने पहिले राणा के कुमार ? प्रतापसिंह को पकड़ा था वह भारतसिंह  
 तैयार हुआ २ सेना ३ युद्ध करना चाहकर ॥ १ ॥ ४ युद्ध ॥ २ ॥ ५ भयंकर  
 ६ धुजने हुए ७ शोषनाग का ( यहाँ फनमाल शब्द के योग से शोषनाग का  
 ग्रहण है ) भचक्र लगने से ८ बराह का ललाट पक गया ॥ ३ ॥ पर्वतों से धातु  
 की पिचकारयें छूटने लगीं और भूलांक आदि लचककर कहने लगे कि हे पर-  
 मेश्वर ९ रक्षा करो १० इसप्रकार उदयपुर की सेना चली और हाथियों पर ११  
 ध्वजायें उड़ीं ॥ ४ ॥ १२ कवच की १३ कड़ियों की पत्तियें तूटने लगीं और १४  
 पर्वतों के शिखर चलायमान होकर गिरने लगे और योगिनियों के साथ खप्पर  
 बजने लगे १५ घोड़ों की नालों के साथ १६ अग्नि के कण झड़ने लगे ( दिग्गल  
 भाषा में दमंग शब्द अग्नि और अग्निकण दोनों का वाचक है ॥ ५ ॥ घोड़ों  
 की पाखरों का आकाश में घोर शब्द हुआ; अथवा नहीं च्युत होने ( गिरने )  
 वाली पाखरों का भयंकर शब्द हुआ १७ आकाश की ओर अप्सराएं उहरीं



दरक्षिय छोनिय दारिम गीति, भरक्षिय खंड चउदह १४ भांति ॥ ६ ॥  
 घमंक्षिय घोरन घुग्घमाल, चमंक्षिय सेलन सोचि सचाल ॥  
 छमंक्षिय अचछरि नेउर गैन, ऊमंक्षिय भूखन लकखन लैन ॥ ७ ॥  
 टमंक्षिय त्रंबिय बंबिय बज्जि, ठमंक्षिय घंट मंतगन गज्जि ॥  
 डमंक्षिय डौहल डिंडिम लोल, ढमंक्षिय सेहल मँहल ढोल ॥ ८ ॥  
 द्रमंक्षिय दुँडुभि दिग्घ दमाम, धमंक्षिय धुज्जि रमातल धाम ॥  
 उलाट्टिय सेन कि सागर अँभ, पलाट्टिय जानि पुगँदर जंभ ॥ ९ ॥  
 चल्पो इम गन मदीपति चँकू, लग्यो उडि पावक तोप ललक ॥  
 लपो गढ देवलिका गरदाँय, धम्यो रन तोपन भुम्मि धुजाय ॥ १० ॥  
 कही तँहँ भागत सालम काज, मिनी गढ छोरिलहो अँसु आज ॥  
 यहै सुनि बीर न किन्न अँवर, कडाइय सालम जुज्जन केर ॥ ११ ॥  
 उदैपुगको दैल दुर्लभ लाय, इहाँ तुमसे भट पाहुन आय ॥  
 नैकै हम जो तुमरी मनुहारि, लजै पितु मान लगै कुल गारि ॥ १२ ॥  
 खगे तुमहू नैय जानत रुपाँत, करै सब स्वागत पाहुन आय ॥  
 अँवै इहिकारन धर्महि धारि, पधारहु म्वीकैरि मो मनुहारि ॥ १३ ॥  
 हुते हम सावरके पनि हँतै, कहाँ तिनकोँ सुख स्वर्ग मिलत ॥

और दाडिम की भांति १ मृमि फटी २ अथ सं चौदह ही लोक चौके  
 ॥ ६ ॥ ४ चपलता सहित १ भालों की कान्ति चमकी ५ आभास में अ-  
 पसराओं के नूपुर बजे और उन अपसराओं की लावों ६ पंक्तियों में भूषण  
 चमके ॥ ७ ॥ ताँसे और ७ नगारे बजने का शब्द हुआ ८ हाथियों पर  
 शोभायमान घंट बजे ९ डाहल और डिंडिम आदि देवी और भैरव के वाद्य  
 १० चपलता से बज ११ उस सेना के साथ अथवा शब्दायमान होकर १२  
 मँदल (मँदल जो मृदंग के आकार होता है) और ढोल बजे ॥ ८ ॥ १३ बड़े  
 नगारे १४ नोवतें बजी १५ मानां समुद्र के जल के समान सेना उलटी; मां जानों  
 जंभासुर पर १६ डद्र पलटा ॥ ९ ॥ १७ सेना चली १८ देवली के जह को घेर  
 लिया ॥ १० ॥ १९ भागतमिह ने कुमार सालमसिंह को कहलाया २० प्राण २१  
 विलंब नहीं किया और सालमसिंह ने युद्ध करने को कहलाया ॥ ११ ॥ २२  
 सेना लाकर २३ तुमारी मनुहार नहीं करै तो ॥ १२ ॥ २४ प्रसिद्ध २५ नीति जानने  
 हो २६ आये का सत्कार सभी करते हैं २७ स्वीकार करके पधारो ॥ १३ ॥ २८ खेद

परंतु कृपाकरिकैं तुम आय, ततो मम बिन्नति मन्नि हिताय ॥१४॥  
 गुरुं तुम आसिख अखखहु एहु, सुपुत्रक स्वर्ग सभा सुख लेहु ॥  
 कथा यह सालमसिंह कहाय, रूप्यो जिम अंगदकों रनराय ॥१५॥  
 रची सुनि भारत तोपन रागि, इनी इन सेन घनी हलकारि ॥  
 चलैं पबिपात कि गोल्क चंड, द्विपैं जिम मोर उडैं धुजदंड ॥ १६ ॥  
 गिरैं गृह मंडप फुटि लदाव, तप्यो पुर तोपनके तर्काव ॥  
 नठे चहुँकोद निवानन नीर, परी जलजंतुन दुस्मह पीर ॥ १७ ॥  
 घिग्यो पुर देवलिका दल घोर, जम्प्यो दुहुँओर प्रवीरन जोर ॥  
 जैयूज जावलि तोप तुपक, चलैं हुँत ज्वडैं मचैं धमचक ॥ १८ ॥  
 चुहड़न हड़न बड़ बजार, उडैं दैमकैं बहु तंड अंगार ॥  
 जगंत किंगंत बिजाजन पैट, गुँढी जनु लगिगय राल गंगट ॥१९॥  
 बनिक्कन आपन लगि अलाव, दहँ घन कानैन ज्यो तून दाव ॥  
 जगैं छून अर्धन नेल रु तैल, दिवागिय दीपक होत दुकूल ॥२०॥

के साथ १ दिन के अर्थ ॥ १४ ॥ २ तुम चंड हा सो यह आजीर्णद दो कि ३  
 हे पुत्र स्वर्ग की सभा का सुख ला, जिस प्रकार यह कथा कहाई तिसी प्रकार वह  
 ५ युद्ध का राजा; अथवा युद्ध ही है धन जिसके ऐसा सालमसिंह ४ शरीर  
 देने को खड़ा हुआ ॥ १५ ॥ ६ भारतसिंह ने ७ वज्र पड़ने के समान भयंकर  
 र गोले चलते हैं और मयूगों के समान उड़ने लगे ध्वजादंड शोभा पाते हैं  
 ॥ १६ ॥ ८ चारों दिशा के जलाशयों का जल नष्ट हो गया ॥ १७ ॥ देवली  
 नगर भयंकर ९ मेना से घिर गया और विशेष वीरों का बल दोनों आर  
 जमा १० भीष्म ११ भयंकर चलकर युद्ध हुआ ॥ १८ ॥ उन तोपों के चलने से  
 चौदटा, दुहानें १२ मार्ग और बजार में अग्नि के १४ अंगारों के बहुत समूह  
 उड़कर १५ चमकते हैं जिनसे बजाजों के १६ वस्त्र जलकर १७ गिरते हैं सो  
 मानों १७ पतंग कनकाया) अथवा रांछ के १८ समूह में अग्नि लगी (यहाँ अ-  
 ग्नि का अध्याहार ऊपर के प्रकरण से होता है) ॥ १९ ॥ इस प्रकार बनिगों की  
 १९ बराबर की गलिपा में २० अग्नि लगकर बहुत तृणावाले २१ वन को अ-  
 ग्नि लाय) जलावे तब जलाता है जिसमें धी २२ अन्न २३ रुई जलती है सो  
 मानों दीपक ही है वस्त्र जिसके ऐसी दीवाली होती है और उस ज्वाला में  
 काष्ठ के छपर और फूस की टपरियें अथवा टापरे (फूस के छाये घर जलते) हैं

जैरें कटछप्पर टप्पर ज्वाल, भगैँ जिम फग्गुन होगिय झाल ॥  
 छिकैँ बहु अट्टन कंगुर छुट्टि, तगकत पत्थर छत्रिन तुट्टि ॥ २१ ॥  
 परैँ प्रजैँ बहु मंच कपाट, धिरग्यो पुर पावकें दुग्मह घाट ॥  
 जैरें ससिसालन ज्वालन जूह दैगैँ गृह अंगन अग्नि दुरूह ॥ २२ ॥  
 द्रैँ जरि नार्गं रु बंगैँ अदब्बैँ, उडैँ लागि पावक पारद अब्ध ॥  
 मनौँ गढको अघ मेटन मान, करायउ सालम अग्नि सनान ॥ २३ ॥  
 घने दिन भो रन तोपन घोर, छिक्यो गढ गोल्हन मार दुरआर ॥  
 कढचोतव सालम खुल्लि कपाट, भुक्यो रन बीर बजावतभाट ॥ २४ ॥  
 वजी सगताउतकी हतबाहँ, चले कर ओदैन ज्यौँ सिसु चाह ॥  
 उडैँ हय खंधगिरैँ असवार, कटैँ भट छत्तिन छेदि कटार ॥ २५ ॥  
 तरकत टोपनपैँ तरवारि, दिपैँ मनु देवल झल्लारि झारि ॥  
 कटैँ फटि कैँकट बीरन अंग, तजैँ निरमोकैँ कि भीम भुजंग ॥ २६ ॥  
 चटककत टोप समस्तक चीर, किधौँ जगदीश प्रसाद कैँरीर ॥  
 उलटत अब्बनैँ तुटन तंग, पलटत के जिम एनैँ पलंग ॥ २७ ॥  
 सरैँ गज सुंठिन झंडन झुंड, रचैँ घन छुम्मत तडैँय रुंड ॥

सो जैसे फाल्गुन मास में होली की झाल जलै तैसे जलते हैं ? बहुत बुरजों के कांगरे छूटकर वे छिकती हैं और छत्रियों से तड़ककर पत्थर तूटते हैं ॥ २१ ॥ बहुत से २ मंचे और कंवाड़ जलकर गिरते हैं इसप्रकार नहीं सहन की जावे तिम रीति के ३ अग्नि से वह पुर धिरगया ४ चंद्रशालाओं (सप के ऊपर के मकानों) में ५ अग्नि का ६ समूह जलता है और घर के चौक में ८ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसा अग्नि ७ जलता है ॥ २२ ॥ वहाँ १० मीसा ११ रांगा जलकर १२ बहुत ९ वहता है और उसके अग्नि से पारा उडकर १३ आकाश में लगता है ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ १४ प्रहार १५ चावल खाने पर बालक के हाथ चले तैसे ॥ २५ ॥ १६ कवच फटकर बीरों के अंग निकसते हैं सो मानां १८ काला सर्प १७ कांचली छोड़ता है ॥ २१ ॥ १९ टोप कटकर मस्तक सहित चीरें होती हैं सो मानां जगदीश के प्रसाद का २० घड़ा फटता है (जगदीश के प्रसाद में अरेहुण घड़े का चौपाड़ होकर फट जाना प्रसिद्ध है) २१ तंग तूटकर घोड़े उलटते हैं और कितने ही घोड़े जैसे २२ हरिण पर २३ घीता पलटे तैसे पलटते हैं ॥ २७ ॥ २४ बिना मस्तक

पैरें दग \*रत्त फदक्कन पुंज, गिरैं जिम सीतसमै पकि गुंजा २८।  
 थरक्कहिं अंबर अच्छरि थट्ट, भरक्कहिं भीरुक्क उब्बट बट्ट ॥  
 पैरें कति पक्खर ऽवग पल्लान, मरैं भट छाकि रजोगुन माना २९।  
 उरज्झत ॥ अंबन गिह अनेक, तरप्फन घायल मूढ कितेक ॥  
 किलक्कहिं कालिय कूदिकगल, खलक्कहिं सोहित लोहित खाल ३०।  
 छुलक्कहिं घाय छुलक्कन रत्त, भलक्कहिं सुग्न ओज उमत्त ॥  
 न तक्कहिं कातर दूरहु नट्टि, ललक्कहिं वावन ५२ ओ चउसट्टि ६४ ॥ ३१ ॥  
 उलट्टत हाथिनतैं भट अाहिं, मनौ तिहरा नट भग्गल माहिं ॥  
 उछट्टहिं आयुध तुट्टहिं तोनैं, सुलट्टहिं कंतैं उचट्टहिं सोनैं ॥ ३२ ॥  
 दपट्टहिं वाजिनैं जुट्टहिं दाव, भपट्टहिं ज्यौं तरित्ता भमकाव ॥  
 भटक्कहिं इक्कहिं इक्क भैंभारि, पटक्कहिं भूतनको रन रांरि ॥ ३३ ॥  
 अटक्कहिं पाय रकावन केक, गटक्कहिं गोदैन गिह अनेक ॥  
 खटक्कहिं हड्डनपै लागि खग्ग, छटक्कहिं के उडि अंबरमग्गा ३४।  
 लटक्कहिं थक्कहिं रान अनीकैं, सटक्कहिं के मठ घोर समीकैं  
 बल्ल्या इम सालम वाजि उडाय, लपो हुंत भागतसिंहहिं जाय ३५।  
 कह्यो तुम मन्निय मो मनुहारि, अरे दल सज्जि बनैं उपकारि ॥

शरीर नृत्य करने हैं जिसप्रकार शब्द श्रुतु में पकीहुई † चिरमी गिरैं तिस प्रकार \* लाल नेत्रों के समूह उछलकर गिरते हैं ॥ २८ ॥ ‡ विना मार्ग ऽ याग (कुसा) ॥ २९ ॥ ॥ आंतां में १ कालिका २ रुधिर के नाले यहते हुए शोभित हैं ॥ ३० ॥ ३ रुधिर ४ उन्मत्त वीरों का पराक्रम ५ कायर नहीं देखते हैं ६ दूर से भागते हैं ७ जहां केवल चौसठ की संख्या आये वहां चौसठ जागनियें जानो, और वावन की संख्या से घायन मौर्य जानो ॥ ३१ ॥ ८ उलटने हैं ९ भागल में (हाथी को फांदने के लिये नट लोग लकड़ी (काष्ठ) बांधते हैं उस का नाम भागल है) १० भाये ११ ध्वजा गिरती है १२ रुधिर उडना है ॥ ३२ ॥ १३ घोड़ों को दौड़ाते हैं १४ बिजुली चमके जैसे १५ प्राणिमों को भयंकर युद्ध में गिराते हैं ॥ ३३ ॥ १६ मस्तिष्क (भेजा) १७ आकाश के मार्ग ॥ ३४ ॥ १८ राणा की सेना १९ भयंकर युद्ध से भागते हैं २० शीघ्र ॥ ३५ ॥ २१ हठ पूर्वक ठहरे ॥ ३६ ॥

पितामह मोहि गिन्यौं सिसु बर्ग, दयो करुणाकरि दुर्लभ स्वर्ग ३६  
 बच्यो \*खिल जो मम आयु बहोरि, मिलौं तुमको सु घटी पल जोरि  
 तज्यो तिहिं याबिधि अखिख कुमार, पग्यो भट औरनपैं रन प्यार  
 दुर हथन आगत खगन दाय, गयो बहु बैरिनके असु खाय ॥  
 घनी अरि नागिन कंकन आगि, घनै मदमत ममतंगन मागि ३८।  
 तज्यो पहिलो वह कंकन चाहि, नयो बैलि बंधिय अच्छि व्याहि  
 तज्यो इम सालम मानुजै देह, लयां सुर बिग्रह नूतनै नेह ॥ ३९ ॥  
 उदेंपुगके बड बीर पचास ५०, हनै अरु अल्प गिनै उपवास ॥  
 परे निज बीरहु सत्रह १७ संग, मरयो इम सालम स्वर्ग उमंग ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

रानाउत भागतै वहै, इम रन सालम मागि ॥

रान अमल किय देवली, अप्पन विजय उचारि ॥ ४१ ॥

सगताउत सावर अधिप, मंद सु सुतहिं मगाय ॥

जामोली जगतेमकै, पामर लग्यो पाय ॥ ४२ ॥

तदनंतर कछवाह नृप, आयउ कटक अमान ॥

ग्राम नाम पंडेर ढिग, दिने मुदित मिलान ॥ ४३ ॥

बुंदियतै यह सुनि विदित, करिय दलेलहु कुञ्च ॥

कूगम ईस्वरिसिंहसौं, उतहि मिल्यो छक उच्च ॥ ४४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो २ सप्तम ७ राशौ

अथार्का की जां मेरी ऊसर बर्चा है वह तुमको मिलो अर्थात् तुम जीते रहो मैं मरता हूँ यह कहकर सालमसिंह ने उस भारतसिंह को छांड दिया और वह वीर युद्ध में प्यार करके दूसरों पर गिरा ॥ ३७ ॥ † प्राण ‡ मस्त हाथियों को मारकर ॥ ३८ ॥ १ पहिले का डोहड़ा २ फिर ३ मनुष्य शरीर छाड़ा ४ देव शरीर लिया नखीन स्नेह से ॥ ३९ ॥ ५ छांटों को गिनने से हसी है ॥ ४० ॥ ७ भारतसिंह ॥ ४१ ॥ = सूर्य १ नीच जामोली नामक ग्राम में जाकर राणा जगत्सिंह के दरबार लगा १० जिसपरिच्छे? प्रमाण रहित १२ मुकाम ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा जगत्सिंह

राजाजगतिमहमेनानीभारतमिहदेवलीयुद्धकराशावगपतीन्द्रमिह —  
कुमारमालमसिंहमरातजनकराशाचरगपतनदेवल्युदयपुरकेत्वा  
रोपसाकूर्मगजेश्वरीसिंहपण्डेग्रामाशिविरस्थापनतद्वलेलसिंहमिलनं  
सप्तमो ७ मयुष्यः ॥ ७ ॥ ॥२२८॥

प्रायान्नजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा ॥

॥ गगनांगनम् ॥

राजासत्त कूर्मनृप सचिव \*नत्थ गो रानपैं ॥  
अकिखय कर जोरि चढन कौनकाज घमसानपैं ॥  
यह मुनि जयसिंह लिखित लै रु रान वंच्यो तहाँ ॥  
आकिखय इहि पत्रमाहिं जो लिखा सुं अब हैं कहाँ ॥ १ ॥  
बुद्धिप मुनि कुम्भ सचिव जवनईस यह जानिकैं ॥  
अकिखय लिखि पत्र भूप करहु जेष्ठमुत मानिकैं ॥  
यों यह नृपता भई सु जवनइंद फरमानसों ॥  
लोपन निहिं को समर्थ विरचि बैर बलवानसों ॥ २ ॥  
अपह नृप नीति चतुर समय देस हिय लाइये ॥  
किहिं विधि जवनेस हितुं समर साज्ज जय पाइये ॥  
नार्थ जु निज अनुज ताहि तुम दयो सु पुनि पेखिये ॥  
गृह गृह नवके चहैहि राजगति दृढ देखिये ॥ ३ ॥  
अनुज दृढते तथापि नृपसमेतें सब राखेर ॥

अप्पहिं बहिकाय लरन लैचले सु सठ बावरे ॥  
 अब मम बिनता बिचारि हुकम धर्मगाहि दीजिये ॥  
 माधव हित रीति रखि कहु सिवाय भुव लीजिये ॥ ४ ॥  
 रानहु सुनतहि इतीक गिनि बोल्लठ कछवाहकों ॥  
 राजामल इंद्रजाल बनि विमूढ तजि राहकों ॥  
 अकिखय सर लक्ष्म ५०००००० दम्म पहुमि माधवहिं दीजिये ॥  
 सुनतहि हुत कुम्भ सचिव लिखि पटा रु कहि लीजिये ॥  
 टोंक नगरको समस्त पगगनाँ सु लिखि योंदयो ॥  
 रानहु बनि मंद भागिनेय हेत वहही लयो ॥  
 तदनंतर यह उदंत सुनि अनिष्ट कोटेसहू ॥  
 रानहिं बहकयो बिचारि तजिय तत्थ मुँद लेसहू ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल कूम्भ सचिव, माया बचनन मंडि ॥  
 दिय माधव हित टोंक पुर, लरन रान मत खंडि ॥ ७ ॥  
 तदनु गन जगतेस अरु, कोटापति चहुवान ॥  
 हुवरभूपन कूम्भ सिविर, किन्नो मिलन प्रयान ॥ ८ ॥  
 हो पहिले आवन उचित, कुम्भहिं रान महीप ॥  
 पै तस पितु सुँच मेटनों, मन्थों प्रथम महीप ॥ ९ ॥  
 यों रान अगाहे अब, कानकें तखतरवान ॥  
 रतन छत्र छापरि चल्पा, जँह दल कुम्भ मिलान ॥ १० ॥  
 संग गमन कोटेसहू, कूम्भ डेगन कान ॥

सहित १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ४ ॥ २ बलवान् ३ सूर्व बनकर ४ रुपयों  
 की भूमि ५ ईश्वरीसिंह के सचिव ने ॥ ५ ॥ १ भागजे के लिये  
 ७ जिस पीछे ८ वृत्तान्त ९ प्रतिकूल १० हर्ष ॥ ६ ॥ ११ माधवसिंह के अर्थ ॥ ७ ॥  
 १२ जिस पीछे १३ कछवाहे के डेरों पर ॥ ८ ॥ १४ ईश्वरीसिंह को १५ जयसिंह का  
 शोक ॥ ६ ॥ १६ सवार होकर १७ सुवर्ण के खासे में १८ छादित (छाया हुआ)  
 १९ जहाँ कछवाहे की सेना के मुकाम थे ॥ १० ॥

निज निज भट अंदर लये, कैलह जई रु कुलीन ॥११॥  
 तँहँ कोटापतिके भटन, किय भटभोर बिसेस ॥  
 कीलनसहित सिरायचे, गिरे ठलाठल ठेस ॥ १२ ॥  
 पिक्खत यह कोटेस प्रति, कुम्म भयउ प्रतिकूल ॥  
 तिम रानहु अहितहि तक्रिय, मन फट्टिय सह मूल ॥१३॥  
 इम रान रु कोटेस दुवर, कूरम डेरन पत्त ॥  
 रान चित्त पलटयो समुक्ति, हुव कोटेस बिरत्त ॥ १४ ॥  
 तीन३ सहँस कँछवाह तँहँ, सज्जित पिक्ख सिपाह ॥  
 कोटापति सब सहि रह्यो, किन्नी ईन जु कुराह ॥१५॥  
 कहुँक काल रहि सिक्ख करि, इम दुवर डेरन आय ॥  
 रान पँटालय कूरमहु, पुनि आयउ हित पाय ॥ १६ ॥  
 अँह दूजे नृप रान अरु, मिलि कूरम अतिमोद ॥  
 विक्खयो मँरित बनास विच, बँरन जुद्ध विनोद ॥१७॥  
 बुल्ल्यो नहिँ कोटेस तँहँ, यातँ अनँखि बिसेस ॥  
 बिनुहि सिक्ख कोटा गयउ, लुट्टत बुंदिय देस ॥१८॥  
 इत रानहि कूरम अधिप, अदरि साम उपाय ॥  
 टाँकै नगर लघुभ्रात हित, अप्पि रु जैपुर आय ॥ १९ ॥  
 रानहु पत्तन बनहड़ा, महिमानी इक मानि ॥  
 किँतव कूरमनको ठग्यो, आयो गृह भय आनि ॥ २० ॥  
 षट्पात-मरुपतिसौं जयसिंह दँम्म गुनईस १९ लक्ख लिय ॥  
 ते अब ईश्वरिसिंह पिक्खि समय रु पच्छे दिय ॥

१ युद्ध जीतनेवाले ॥ ११ ईश्वरी की भीड़वा धक्काधक्का से खों सहित ४ डेरे १ उस भीड़ की टक्कर से ॥ १२ ॥ १ ईश्वरी सिंह ॥ १३ ॥ ७ विरक्त (प्राति रहित) ॥ १४ ॥ ८ ईश्वरी सिंह ने ९ सजे हुए सिपाही देखकर १० कोटा के पति ने जो कुरीति की यह सब सहन करके झुप परहा ॥ १५ ॥ ११ राना के डेरे ॥ १६ ॥ १२ दूजे दिन १४ बनास नदी में १५ हाथियों के युद्ध का कुतूहल १६ देखा ॥ १७ ॥ १८ कोटा के ईश को नहीं बुलाया १९ क्रोध करके ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ छली कछवाहों का ठगा हुआ ॥ २० ॥ १९ भारवाड़ के पति (अभयसिंह) से २० रुपये



इत कोटापति अनखि सेन बुंदिय सिर सज्जिय ॥  
 करि दहनुन एकत्त गुमर धरि उच्च गरजिय ॥  
 वज्जिय निसान डाहल बिसम यह उदंत जग उज्जलिय ॥  
 संभर उमेद कोटेस सह क्रमत लैन बुंदिय बलिय ॥ २१ ॥  
 ॥ दोहा ॥

नागर द्विज गोविंद निज, सेनापति कोटेस ॥  
 तवहि जोधपुर मुक्कलपो, लैन मदति बैल वेस ॥ २२ ॥  
 ॥ षट्पात् ॥

द्विज नागर गोविंदराम, कोटेस सेनपति ॥  
 पठयो तव जोधपुर मंडि कैंगर सहाय मति ॥  
 यहै समय मरुईस लैन बुंदिय दल पिछहु ॥  
 सिर दहनुन आसान करहु कूरम अहि किल्लहु ॥  
 गोविंद विप्र यह पत्र गहि अभयसिंह अंतिक गयउ ॥  
 बहुदिन बिताय अवसर उचित भूपति प्रति हाजरि भयउ ॥ २३ ॥  
 ॥ दोहा ॥

कछुक टंयाज मरु भूप कहि, सेन दयो नहि संग ॥  
 तरकि विप्र अजमेर तव, आयो मुरारि अभंग ॥ २४ ॥  
 फकरुद्दोला नाम इक, सबल नवाव सिपाह ॥  
 पठयो जो गुजरात प्रति, सूबापति करि साह ॥ २५ ॥  
 जवन पीर जारति करन, आयो वह अजमेर ॥  
 तासों मिलि गोविंद तव, किय रहैस्य हित केर ॥ २६ ॥  
 कहिय विप्र इक लख १००००० तुम, हमसन रूपय लेहु ॥  
 संगचलहु चतुरंग सजि, लारि बुंदिय लै देहु ॥ २७ ॥

१ घमंड २ चहुवाण लम्मेदासिंह, कोटा के पति सहित ३ बुन्दी लेने को जाता है ॥ २१ ॥ ४ सेना की अधिक सहायता लेने को ॥ २२ ॥ ५ पत्र ६ सेना भेजो ७ उपकार ८ कलवाहे रूपी सर्प को कीलो ९ समीप गया ॥ २३ ॥ १० मिस ११ मोय करके ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ १२ एकान्त वार्ता ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

यह अंगीकैरि मिच्छ वह, भयउ सहाय अभंग ॥

साहिपुरप सीसोद पुनि, सजि उमेद हुव संग ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्विज तब लिखि कोटा पठयो दलै, इततैं हम आवत रन उज्जल

गुज्जर धर सूबापति संगति, पुनि उमेद नृप साहिपुरापति ॥ २९ ॥

उततैं तुम दोऊ नृप आवहु, चंड लारन चतुरंग चलावहु ॥

दुज्जनसल्ल उमेद भूप-दुव २, हड्डनपति सुनि लारन सज्ज हुव ३०

॥ दोहा ॥

खुरली पटु नय धिँज्ज खम, बरस चउदह १४ बेस ॥

निडर सज्यो उम्मेद नृप, दुपहर जेठ दिनेस ॥ ३१ ॥

रंसा रसातल बोरि दिय, कैनकनैन बुध कूर ॥

अब उमेद किरिरीज इहिं, सज्यो उँधारन सूर ॥ ३२ ॥

स्वसा दीपकुमरी सहित, कोटा मातहिं रक्खि ॥

सानुजै भूपति सज्ज हुव, अँवनि लैन निज अक्खि ॥ ३३ ॥

सक इक नभ बसु ससि १८०१समाँ, मिलि द्वादसि १२सुँचि मास

कोटापुर सज्जिय कटकै, निडर करन अरि नास ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ रा-

णाशिविरकूर्मसचिवागमनमाधवसिंहार्थपंचलक्षरौप्यकाऽऽर्घटोङ्कन

१ अंगीकार (मंजूर) २ शाहपुरा का पति ॥ २८ ॥ ३ पत्र भेजा ४ साथ ॥ २९ ॥ ३० ॥

५ शस्त्रविद्या में चतुर ६ नीति चतुर ७ धीरजवाला ८ क्षमा रखनेवाला

९ ज्येष्ठ मास के दुपहर का सूर्य ॥ ३१ ॥ ११ बुधसिंह रूपी हिरण्याक्ष (हिरणा-

कुस) ने १० भूमि को पाताल में डुबो दी थी जिसको फिर १२ बाराह अवतार

की भाँति उम्मेदसिंह १३ उद्धार करने (निकालने) को सजा ॥ ३२ ॥ १४

याहिन १५ छोटे भाई सहित १६ अपनी भूमि लेना कह कर ॥ ३३ ॥ १७ सम्भवतः

१८ आषाढ १९ सेना सजी ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा के डेरे पर कछवाहे के सचिव का आना और माधवसिंह के अर्थ पाँच लाख रुपयों के मूल्य

गरदेशलिखनराणानिवेदनतन्मायाजगत्सिंहमोहनतत्पूर्वजयपुरशि-  
विरागमनकोटेश्वरदुर्मनीभवनबुन्दीदेशधाटिपातनाऽनुकोटाऽऽग—  
मनकूर्मराजजनकनीतमरुदगडद्रव्यप्रत्यर्पणमहारावसहायार्थगोविं-  
दरामयोधपुरप्रेषणसाहिपुरेश्वरादिसहिततत्प्रत्यागमनबुन्दीविजया-  
र्थहृद्वेन्द्रसेनसंचयनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥ ॥ २८९ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

सटा धूनि कै सिंह उम्मेद सज्ज्यो, गदा लै कि दुज्जोधेपै भीम गज्ज्यो  
बिडोजा मनो जंभेपै छोह छायो, लग्यो लंक कै अंजनीको लडायो  
किधो कुंडेलोपै बली पन्नगासी, रिसानो कि अंधारपै तेजरासी ॥  
किधो सिंधुके सूंनुपै संभु तंडयो, मनो चंडपै कालिका कोप मंडयो २  
जटाजूटै वीरभद्रसे जग्ग्यो, महासेन कै क्रौंचको लैन लग्यो ॥  
फटाटोप कै रागपै नाग किन्नो, कुबेलाश्व कै धुंधुपै दाव दिन्नो ॥ ३ ॥

(हाँसिल) का टांकनगरका देश लिखकर राणा की नजर करना १ उसकी इन्द्र-  
जाल में राना का ठगा जाना २ राणा जगत्सिंह का पहिले ईश्वरीसिंह के डेर  
आना ३ और कोटा के पति का उदास होकर बुन्दी का देश लूटे पीछे कोटे जाना  
४ ईश्वरीसिंह का, पिता (जयसिंह) के लिये हुए मारवाड़ के दंड के रुयं  
पीछे देना ५ महाराव का सहाय के अर्थ गोविन्दराम को जोधपुर भेजना ६  
शाहपुरा के पति सहित उसका पीछा आना ७ बुन्दी को विजय करने के  
अर्थ हाडों के इन्द्रका सेना संचय करने का आठवां ८ मयूख समास हुआ  
और आदि से दोसौ निवासी २८६ मयूख समास हुए ॥

१ उम्मेदसिंह लुपी सिंह गरदन के केस धुजाकर सज्जित हुआ, किनां गदा  
लेकर २ दुर्योधन के ऊपर भीमसेन ने गर्जना की ३ मानों जंभासुर पर इंद्र को  
धित हुआ किनां लंका के ऊपर ४ अंजनी का पुत्र (हनुमान) लगा ॥ १ ॥ किनां  
५ सर्प के ऊपर बलवान् ६ गरुड़ किधुं ७ अंधेरे पर ९ सूर्य ने ७ क्रोध किया  
किनां समुद्र के १० पुत्र (कामदेव) पर शिव ने ११ गर्जना की, मानों चंड नाम-  
क दैत्य पर कालिकाने कोप रचा ॥ २ ॥ १२ मानों शिव की जटा के जूट से १३ वीर  
भद्र उठा किनां १४ स्वामिकार्तिक १५ क्रौंच नामक पर्वत को लेने लगा अथवा  
पहा सिखाण पच्ची क्रौंच पच्ची को लेने लगा किनां गिरनारी राग पर सर्प ने १६  
फख का आटोप (झुंझ) किया किनां १७ कुबलयाश्व नामक राजा ने १८ धुंधु राक्षस

किधौं हैहपाधीसपै रामकुप्यो, किधौं राम लंकेसके आंजि उप्यो ॥  
 रच्यो चाप गांडीव टंकार रंज्यो, गज्यो कै गुंडाकेस राधेय गंज्यो ॥ १ ॥  
 सज्यो कन्ह कै साहगोरीस सत्थैं, मुग्यो लंगरी जानि जैचंद मत्थैं ॥  
 धक्यो सोखिबे सिंधु वातापि ध्वंसी, अरयो द्वंद्वपैं बालि ज्यौं इंद्रअंसी ॥  
 बलाधीस भूलैन यौ भूप बह्यो, चमू संकुली भूह ज्यौं मेघ चह्यो ॥  
 लगे सान भंभान धागल धारी, भ्रमासक्त दज्भैं भरैं फूल भारी ॥  
 लौरो गौय नोबतिपैं घाय लगैं, भराक्रांतव्है सर्पके दर्प भगैं ॥  
 पताका खुली मत्त हत्थीन मत्थैं, संजे डाकिनी प्रेत बेताल सत्थैं ॥  
 धुरी टोप सन्नाह बिक्रांत धारैं, इच्च चाप घाँघाँ निसानाँ उतारैं ॥  
 दर्गबीन आरूढ के तोप दगैं, जैटा ज्वालकी माल ज्यौं उँज जगैं ॥  
 समै कैल्पको भो डिग्यो रत्नमानू, भयो दीहके भेसके बेस भानू ॥

पर दाव दिया ॥ ३ ॥ किधौं कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) पर १ परशुराम ने क्रोध किया किनां रावण के २ युद्ध में रामचन्द्र शोभायमान हुए किनां गांडीव धनुष की टंकार करके शोभायमान ३ अर्जुन ने ४ कर्ण को मारा अथवा दबाया ॥ ४ ॥ ५ किनां गोरीशाह के साथ पृथ्वीराज का काका कन्ह सज्जित हुआ ६ किनां पृथ्वीराज का सामंत लंगरीराय कन्नौज के राजा जयचंद्र पर मुड़ा किनां समुद्र को सुखाने के अर्थ ७ वातापि गच्छस को मारने वाला (अगस्त्य ऋषि) क्रोधित हुआ अथवा ८ इंद्र के अंशवाला बालि नामक वंदरों का राजा द्वंद्व गच्छस से अड़ा ॥ ५ ॥ इसप्रकार ९ आडाबला नामक पर्वत का पति भूमि लेने को बड़ा और जैसे ११ भादवा का मेघ चढ़े तैसे सेना १० भरगई १२ सकलीगर साण को भनकाने लगे जिस से अग्निकण भड़कर १३ साण को फेरनेवाला सकलीगर जलने लगा ॥ ६ ॥ १४ लड़ी लगकर (निरंतर प्रहारों से) नोबत पर घाई लगी १५ अथवा लड़ो ऐसा कहकर नोबतों पर घाई लगी १६ भार से पीड़ित होकर १७ शेषनाग का घमंड भगा (यहां भार से पीड़ित होने के संबंध से शेषनाग का ग्रहण है) ॥ ७ ॥ १८ युद्ध का धुर खींचनेवाले वीर टोप, कवच धारण करने लगे १९ दिशा दिशाओं में धनुषों को खेंचकर निशाना उतारने लगे २० चरखों पर चढ़ीहुई कितनी ही तोपें दगती हैं सो मानों ज्वालमाला की २१ शिखा २२ कार्तिक मास में जगती है ॥ ८ ॥ २३ प्रलय का समय होकर २४ सुमेरु पर्वत ढिगा और दिन के २५ नक्षत्रेश (चंद्रमा) के रूप से २६ सूर्य होगया, कितने ही शस्त्रधारी

धरै कुंकुमी चैल के सखधारी, नचै मोद कै व्याहिबे स्वर्गनारी ॥ १ ॥  
 वनै पिठि बेनड होदे बिसाली, रचै जीन बाजीन के पक्खराली ॥  
 धुजादंड हत्थीनपै बैसु बह्ने, मनौ सैलके शृंगपै ताल ठहै ॥ १० ॥  
 लची मैदनी राग सिंधून लग्गे, भ्रमै भुम्मियाँ भुम्मिकौ छोरि भग्गे  
 परी त्रास मेवास आवास पँती, बढी यौ बलाधीसँकी जोर बँती ॥ ११ ॥  
 घुरै गज्ज दँती खुलै सज्ज घोरै, डकेती रचै चारके हत्थ डोरै ॥  
 जरी ओपकँ तोप जंजीर जाली, करै पिक्खि उच्छाह काली कैपाली  
 ॥ दोहा ॥

जंगर टोप बाहुलै जटित, हुलसि सूर अँसि हत्थ ॥  
 सजिय सेन बुंदिय सुपहु, सह कोटिस समत्थ ॥ १३ ॥  
 ॥ पट्टपात् ॥

गज मत्तन गँदाय मिलिग बिरुदाय महाउत ॥  
 पालकाप्य आगम प्रभाव जैव पाव दाव जुत ॥  
 नट कछनी कछि निडर मल्ल रन निपुन महाबल ॥

१ केसर के रंग के रक्ख करते हैं और हर्ष करके ४ अप्सराओं को व्याहने के लिये नाचते हैं अथवा वीरों को विवाहने को हर्ष करके अप्सराएं नाचती हैं ॥ ९ ॥  
 ५ हाथियों की पीठ पर बड़े होदे कसते हैं और घोड़ों पर जीण और ६ पाखरों की पंक्ति लगाते हैं, हाथियों पर ध्वजा दंड के ७ बांस बड़े सो मानों पर्वत के ८ शिखर पर ताड़ के वृक्ष ९ खड़े हैं ॥ १० ॥ वीर रस का सूचक सिंधवी राग लगकर १० भूमि चलायमान हुई भोमिये अस्कर भूमि को छोड़कर भागे ११ लुटेरे और चोरों के स्थानों में त्रास पड़कर वह त्रास उनके घरों में १२ प्राप्त हुई, इस प्रकार १३ आडाबला के पति के जोर की १४ घाती बढी ॥ ११ ॥  
 १५ हाथी गरजना करके घूमे और घोड़े सज्जित होकर खुले जो १६ चाकरो के हाथ में १७ डोरों से बंधे हुए कूदने लगे १८ शोभा युक्त करके तोपों को जंजीरों की जाली में जड़ी जिनको देखकर कालिका और १९ शिव उत्साह करते हैं ॥ १२ ॥ २० कवच (जगड़) टोप और २१ बाहुआण (दस्तानों) से जड़े हुए वीर २२ तरवारों के हाथ में लेकर हर्ष युक्त होते हैं ॥ १३ ॥ मस्त हाथियों को २३ घेरकर उनको बिरुदाकर महावत मिले २४ पालकाप्य मुनि के किए दृष्टे शास्त्र (हस्त्यायुर्वेद) के प्रभाव से उन महावतों के पग दाव और २५ शीघ्रता से युक्त

आडपेच रचि अतुल अंग भसमी धरि उज्जल ॥  
 त्रयरेख अलिक नांगज तिलक कारे मनहुँ पिसाच कुल ॥  
 इमपाल गयउ बिकराल इम बोरिन ढिग डंकत बड्डल १६  
 लागि दुकच्छ लंगोट कठिन बजरंग तंग कसि ॥  
 बंड अँचि दस बीस फँकि सुद्धर बिद्या बसि ॥  
 अंपन विविध बनाय अंग उछटाय अँड भरि ॥  
 प्रान प्रान कारन पुकारि केसव प्रनाम करि ॥  
 गंजबाग हत्थ निबंभर गुमर आयउ सिर गौरँव अलप ॥  
 मौरुत प्रजात बंदर मनहुँ मंदर पर लिन्निय मलप ॥ १५ ॥  
 इम कलौप हुँत आय अखिख बिरुदन आधोरन ॥  
 फोजों नौयक फील फते अप्पहु जस जोरन ॥  
 जय व्यंजक भंजक कपाट बंके गढ गंजक ॥  
 अब तेरे सिर पार भार रक्खिय रन रंजक ॥  
 आरुहि मलंगि बिरुदाय इम अट मिलाय लिय मदभरन ॥  
 कहि जैनक नाम बुल्लिय कुसल कुंभत्थल थप्पलि करन १६  
 फुरत अंग फटकारि रंग रज आरि रुमालन ॥  
 अति मेचक आमलन जाल मंडिग जंगालन ॥

हैं १ ललाट में तीन रेखावाला २ सिंदूर का तिलक किये हुए ३ महावत  
 ४ हाथियों के ठाणों में “वारी तु गजबंधने त्यमरः” ५ कूदते हुए ६ बहुत  
 गये ॥ १५ ॥ ७ घमंड भरकर = प्राणों की रक्षा के लिये परमेश्वर को प्रणा-  
 म करके ८ बड़ा अंकुश हाथ में लेकर १० घमंड से भरे हुए ११ थोड़े भार  
 से हाथी के मस्तक पर आये सो मानों १२ पवन के १३ पुत्र (हनुमान्) ने १४  
 मंदराचल पर मलंगली ॥ १५ ॥ १५ हाथी के कलावे पर १६ शीघ्र आकर  
 १७ महावतों ने उन हाथियों की स्तुति की १८ सेनाओं के पति १९ हे हाथी!  
 यश को जोड़ने के लिये विजय देना २० जयके प्रकाश करने वाले २१ कूँबाड़ों को  
 तोड़ने वाले २२ युद्ध में प्रीति करने वाले २३ चढ़कर २४ हाथियों को २५ पिता का  
 २६ हाथों से ॥ १६ ॥ २७ शोभायमान शरीर को २८ अत्यंत काले २९ आस-  
 लों से और ३१ जंगल से ३० जाली (चित्रविशेष) रची

कंट विचित्र कुरुचंद बहुरि हरिताल विथारिय ॥  
 जंगी अंडुक जोरें दोर डुंगेर पय डारिय ॥  
 त्रिपदीन गंत नद्धिप अतुल लागि कलाप जेवर लसिय ॥  
 कुंथ डारि गुंडन सैन्नद्ध करि क्रम बैरत होदन कसिय ॥ १७ ॥  
 सकल हेति सिर सज्जि छिप्र आलाँन छुरायउ ॥  
 दैदै बिरुद दुंरूह घोर धन गज्ज छुरायउ ॥  
 वारी बाहिर बाक ढाँक बल अचल डगाये ॥  
 बढि चरखिन बारूद ज्वाल विकराल जगाये ॥  
 हिंजीर लंब अँचत हुलसि बल अँमान हरवल बढिय ॥  
 मानहुँ अपुव्व मेवँक मुँदिर कज्जलगिरि जंगँम कढिया ॥ १८ ॥  
 भद्रै १ मंद २ मृग ३ भव्य मिश्र ४ चउ जाति महाबल ॥  
 वसौं लोभ अति वेग सैरत उछटावत शृंखल ॥  
 बाल पोतै अरु विकै कलँभ मक्कुन अतिकायक ॥  
 जूहनाई जव जोर सज्ज हुव समर सहायक ॥  
 गज्जित अनेक उद्धत गुमर बहु सज्जित मँदकल बलिय ॥

१ कपालों पर विचित्र रेहिंगलू और हरिताल फैलाया ३ बड़े जंजीर ४ जोड़ कर १ पर्वत  
 के समान फैलाव वाले पगों में डाले ५ रस्सों से तुलना रहित ७ शरीर को ८  
 बांधा और ९ कलावा लगाकर जेवर से भूषित किया १० झूल (गदरा) डा-  
 लकर ११ पाखरों से १२ सज्जित करके क्रम पूर्वक १३ रस्सों से होदे कसे  
 ॥ १७ ॥ उन होदों में सब १४ शस्त्र सजकर १५ शीघ्र १६ खंभों से खोले और  
 १७ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी स्तुति करके १८ मेघ के समान भयंकर  
 गर्जना करने हुए हाथियों को १९ ठाणों से बाहर २० छोटे घावों से क्रोध दि-  
 लाने के बल से निकाले २१ लंबी जंजीरों को २२ अप्रमाण बलवाले २३ अपूर्व  
 काले २४ मेघ अथवा २५ चलते हुए कज्जल के पर्वत निकले ॥ १८ ॥ २६ भद्र  
 आदि चारों जातिके बलवान् शुभ हाथी २७ हथिनियों के लोभ से २८ सांकल  
 को उछाते हुए वेग से २९ चलते हैं उन हाथियों में कितने ही ३० छोटे ३१ बड़े  
 ३२ तुरत के पैदा हुए ३३ पाठा ३४ मुकने (विना दांतवाले) ३५ बड़े शरीरवाले  
 ३६ जूधनाथ (यूध के पति) वेगवाले और बलवान्, युद्ध में सहायता करनेवाले  
 सज्जित हुए, निरंकुश घमंड से गर्जना करनेवाले अनेक बलवान् ३७ मस्त

गंभीरवेदि परिष्ठात गजव चतुंगन रच्छक चालिय ॥ १९ ॥  
 कतिक वंषाल अतिकोप कतिक उपबाह्य कुलाचल ॥  
 ईसादेत अनेक बढिग घुम्मत समोर बल ॥  
 भरत प्रवृत्ति पटान भोर करटन मननंकत ॥  
 अरु कंदुक जिम उडत भाट अंदुक भननंकत ॥  
 फटाकरि सुंडि बमथुन फुहरि पच्छिन नभ छिरकत प्रकट ॥  
 बुंदीस सेन अंग ति बढिग कमठानन तजि पीनकैट ॥ २० ॥  
 अहि फन जिम आटोप रचत पुक्खर सिर रक्खत ॥  
 दग लघु दीरघ दिंढि चलत मोचाफल चक्खत ॥  
 वंगर कनक बिखान जटित अति जेव जवाहर ॥  
 आधोरन आसनन बीत मारत हंकत वर ॥  
 चूलिका हरित चित्रित रुचिर अछिक्कूट पीत रु अरुन ॥  
 बुंदीस हुकम हंकिय विविध तोर जोर बोरन तरुन ॥ २१ ॥  
 नील हरित निज्जान कतिक कैरटन कलमासन ॥  
 कतिक अवग्रह कपिस अधिक रोहित कति आसन ॥  
 अति कडार आरच्छ बिसद बाहिस्थ विराजत ॥

हाथी सज्जित हुए १ अंकुश नहीं माननेवाले और गजव करनेवाली  
 निरखी घात करनेवाले सेना के रक्षक हाथी चले ॥ १९ ॥ २ कितने  
 ही दुष्ट हाथी ३ सवारी के पर्वत ४ लंबे दांतों वाले ५ पवन के समान  
 बलवाले ६ पटों से ढाण का प्रवाह भगता हुआ ७ गंडस्थलों (कपोलों) पर  
 अमर उडते हुए ८ गैंद के समान उडती है ९ जंजीर १० सुंड के जलकणों की  
 फुहार से आकाश में पक्षियों को छिड़कते हैं ११ पुष्ट (मोटी) कमरवाले खं-  
 भाओं (खंभों) को छोड़कर १२ आगे बढे ॥ २० ॥ १३ सर्प के फण के समान  
 १४ सुंड के अग्रभाग का मस्तक पर छत्र किये हुए छोटे नेत्र और लंबी  
 १५ दृष्टिवाले १६ कलवृक्ष के फल को चखते हुए १७ सुवर्ण के वंगड १८ दांतों  
 में जड़े हुए १९ महावनों के २० अंकुश लगाने और पैरों से झूलने से अष्ट चल-  
 ते हैं २१ कानों के मूलभाग हर रंग से रंगे हुए २२ नेत्रों के भाग पीले और  
 लाल रंग से रंग हुए २३ बड़े प्रताप और बलवाले तरुण हाथी ॥ २१ ॥ २४  
 नेत्रों के पास नीला और हरा रंग २५ कपोलों पर काला रंग २६ ललाट पर  
 काला और पीला मिला हुआ रंग २७ पीतवान पर पीला २८ कुंभस्थल के



पीत अरुन प्रतिमान लखत \*सुरगुरु ॥ कुज लाजत ॥  
 बिदुदेस हरिन पालास बनि ईवातकुंभ नील रु बिसद ॥  
 बुंदीस संग हरवल बढिग ॥ मातंगप इम भरत मद ॥ २२ ॥  
 तलपन पीन रु तुंग छजत रीढक पर छादित ॥  
 कच्छा रेसम कठिन नई होदन धन नादित ॥  
 भुकि कतिकन झंडाल कतिन मेघाडंगर कसि ॥  
 सिंहासन कति सज्ज लंब हिंजीर अवर लसि ॥  
 डाकन अमान निहिन डगत अगत जंग अमरख झलक ॥  
 उम्मेद हुकम घुम्मत अतुल इंकिय इम इत्थिन इलका ॥ २३ ॥  
 मिलि अनेक मंदुरन प्रीति मंडिय हय पालन ॥  
 झलक खेह झटकारि देह फटकारि दुसालन ॥  
 दै खलीन विरुदाय अंस थप्पलि कर ओपित ॥  
 जंगी पक्षखर जीन अचि तंगन आरोपित ॥  
 गजगाह मंडि चित्रित गहर लहरदार लूमन ललित ॥  
 आनिय तुरंग कंपन अरिन कृत कैजाक अपन कलित ॥ २४ ॥  
 गैरुत रूप गजगाह उडत मानहुँ उरगासन ॥  
 पय नेउर रव प्रचुर ललित मंडत बहु लासन ॥  
 खुगसान ताजिक तुखार भाडेज भुम्मि भवे ॥

नीचे का भाग स्वतः \* पीले रंग से बृहस्पति और † लाल से मंगल लज्जित  
 होता है ‡ कुंभस्थल के बीच का भाग काला और हरा § कुंभ का अधोभा-  
 ग, नीला और स्वतः ॥ हाथियों के पति ॥ २२ ॥ + बिछोने मोटे और ऊँचे  
 - पीठ पर छाये हुए शोभा पाते हैं, रेसम के गुच्छे १ दृढ़ बंधे हुए २ झंड़े ३  
 छायावाले होदे ४ लंबी जंजीर ५ दूसरे हाथियों के शोभायमान है ६ साँटमा-  
 रों के क्रोध दिलानेवाले प्रहारों से कठिनाई से दबने हैं ७ क्रोध की ॥ २३ ॥  
 ८ हथशालाओं में ९ लगाम देकर १० कंधे थापल कर ११ शोभायमान करके  
 १२ आरोपण किये १३ युद्ध करनेवाले अंग में १४ प्रसिद्ध ॥ २४ ॥ १५ पां-  
 खों के रूप से गजगाव उडते हैं १६ सो मानों गरुड़ उडता है १७ बड़ा  
 शब्द १८ नृत्य १९ उत्पन्न

वनायुज रु बालहीक जात कांबोज महाजव ॥

केकान गोजिकानहु कतिक मोढहार धावन प्रबल ॥

हाजरि हइंद नृप अगग हुव पलटत पल न लगात पला २५।

आजानेय अनेक पारसीकहु बिनीत पथ ॥

पंचभद्र जय पूर अष्टमंगल सुलाभ अंथ ॥

चक्रवाक जंबवपल मलिलोचन अछेइ मन ॥

कति किंघाह काकाह पीत खुंगाह सुद्ध मन ॥

आलाल कपिल बोल्लाह अरु हलक सोन हलाह हय ॥

पंगुल कुलाह उकनाह पुनि बैरखान अति रय सु बय २६।

सुलभ लाट अरु सीस कंध मणिबंध कथित क्रम ॥

देस नांभि हिय देस भांति मुख त्रिक उत्तम भ्रम ॥

१ उत्पन्न २ बड़े वेगवाले ३ कितने ही गोजिकान के घोड़े ४ बल पूर्वक दौड़ने में निपुण ५ पलटने में नेत्रों के पलकों की भांति ६ क्षण भी नहीं लगाते ॥ २५ ॥ ७ मार्ग में शिला पाये हृष्टे कितने ही सुंदर घोड़े ८ चारों पैर और ललाट जिसका श्वेत होवे उन घोड़े को पंचमंगल कहते हैं ९ चारों पैर, ललाट कोसवाली मदद और बालछा जिस घोड़े का श्वेत होवे उसको अष्टमंगल कहते हैं और मतान्तर से मदद के स्थान में श्वेत छाती को अष्टमंगल मानते हैं १० लाभ के अर्थ ११ पीले रंग के घोड़े के, नेत्र और पैर श्वेत होवे उसका नाम चक्रवाक है १२ वेग में चपल १३ महुवा रंग के घोड़े के चरण और मुख श्वेत होवे उसको मलिलोचन अथवा मल्लिकाक्ष कहते हैं १४ क्रुमेत १५ श्वेत (जुकर) और पीले १६ श्याम वर्ण के (लक्खा) १७ नीले १८ नीले पीले मिले हुए रंग के अवलख १९ पीला और श्वेत अवलख २० पीले और हरे रंग के अवलख २१ सुवर्ण के अथवा कमल के रंग के २२ चित्र विचित्र रंगवाले अर्थात् अनेक मिले हुए रंगवाले २३ काच के समान कान्तिवाले २४ काले घुटनोंवाले २५ पीले और लाल रंग के अवलख २६ समदे २७ अत्यन्त वेगवान् और अष्ट अवस्थावाले ॥ २६ ॥ २८ गले का मणियां २९ कहे हुए क्रम से ३० नाभी के स्थान पर और ३१ हृदय के स्थान पर ३२ शोभायमान है सुन्न पर तीन ३३ भवरी जिनके

रंध्र जंठर गँल रुचिर बिहित्त आवर्त विराजत ॥  
 चन्द्रकोस जुत चपल लखत नञ्चत मन लाजत ॥  
 कति इन्द्र पदम लच्छन कतिक चक्रवर्ति चिंतामनिक ॥  
 हुव सज्ज दबत छानिय हयति' फवत माल यालन फैनिक २७  
 इक बिजय आवर्त बँहत इक सुँकल महाबल ॥  
 इक कुसुम आमोद इकक चंदन भँव उज्जल ॥  
 इक लोहित इक असित इकक सारंग सँत इक ॥  
 पिंग इकक इक पीत इकक पालास ऐत इक ॥  
 खुरग्रग भुम्मि सज्जित खँनत बलि गज्जत ऊरध बैदन ॥  
 चहुवान राज आयँस चलिय सहँसन हय जव जय सँदन २८  
 दिपत पैरुख चउ४ दह रंग कालिकै रँद बारह २२ ॥

१ घोड़े के कुच्छि (कुँव) और नाभी के मध्य प्रदेश कानाम रंध्र है २ पेट पर गले पर  
 सुन्दर और ४ उचित ५ घालों की भवँरियें शोभा देती हैं ६ जिस घोड़े के  
 ललाट में दो भवँरियें होती हैं उसको चन्द्रकोस कहते हैं ७ जिस घोड़े के  
 कंठ में दक्षिण तरफ दो भ्रमरीयां होवें उसको इन्द्र कहते हैं और जिसके कंधे  
 के एक ओर एक भ्रमरी होवै उसको पद्म कहते हैं ८ जिस घोड़े की नासिका  
 पर एक अथवा दो भ्रमरी होवै उसका नाम चक्रवर्ति है ९ कंठ के मणि-  
 यें पर भ्रमरी होवै उसको चिन्तामणि अथवा देवमणि कहते हैं १० भूमि को  
 दबाते हुए ११ ते (धे) घोड़े १२ सपों की माला के समान जिनकी केसवाली  
 शोभा देती है ॥ २७ ॥ ॥ १३ बिजयमणि नामक भ्रमरी (भँवरी) चाला  
 जो थापे पर होती है १४ धारण करना है १५ भ्रमरी विशेष १६ मुख में पुष्प  
 की गन्धवाला, जिसका ब्राह्मण वर्ण मानते हैं १७ मुख में चंदन की गंधवाला  
 जिसका क्षत्रिय वर्ण मानते हैं १८ लाल रंग वाला १९ काले  
 रंगवाला (लकड़ी) २० अनेक (चित्र विचित्र) रंगवाला २१ श्वेत (तुकरा) रंग  
 वाला २२ पीतल के समान पीले वर्णवाला जिसका नाम विशेषकर सोवन  
 कलश रक्खा जाता है २३ सामान्य पीले रंगवाला २४ हरा रंगवाला २५ क-  
 रुर (अबलख) रंगवाला २६ सज्जित हुए पीछे अगले खुर से भूमि २७ खोद  
 नेवाला २८ ऊँचा मुख करके गाजनेवाला २९ आज्ञा से ३० बंग के और जय  
 के घर ॥ २८ ॥ (ऊपर के दोनों छन्दों में शुभदायक घोड़ों के लक्षण कहे हैं  
 १ एक पुरुष (ऊबदा, परस) ऊँचे शोभायमान हैं ३ काले रंग की चार दाढ़ें ३ दाँत

अंगुल सत१००बंपु उच्च कुच्च संगैर जयकाग्रह ॥

बीससत्त२७ मुख निहित कंगन अंगुल खट६ केतक ॥

चाप उपम चालीस अट्ट४८ मित कंध उपेतक ॥

चउबीस२४पिठि आयत रुचिर कलित तीस३०अंगुल कमर

वालाधि प्रलंब चालीस वसु४८चैल धुनाय ढारत चमर।२९।

चउ४दीर्घ चउ४रत्त च्यारि४ सुच्छमें चउ४उन्नत ॥

च्यारि४ हंस नैत च्यारि४च्यारि४आयत मुनीन मत ॥

मुख१ भुज२केस३निगाल४ मेकै१ जीह२रु ओठ३ कंकुद ॥

कैरन२पुच्छ३पयकोष्ठ४प्रोर्थ१ सँफर२गोधि३तथा गुँद४ ॥

दुवर२कान बंस३अंतर दुहुन४ कैल१उदर२ जानुक३ कंकुद ॥

मुख१खंध२जानु३पंसुलि४महित लच्छन हयन मचात मुँद ४॥३०॥

कति किसोर अति जोर कतिक जुबन छक डंकत ॥

१सौ अंगुल का ऊँचा शरीर२युद्ध में ३जय करनेवाला ४ सत्ताईस अंगुल लंबा

उचित मुख२७: अंगुल के कान३केतकी की कली के समान७ धनुष की उपमा

वाले अड़तालीस अंगुल के प्रमाणवाले लंबे कंध८ सहित१चाँबीस अंगुल लंबी

पीठ १० विदिन११बालछा लंबा१२चपलता से अथवा चलता हुवा, बालछे को

हिलाकर चमर करनेवाला ॥ २९ ॥ शुभदायक घोड़े के १३ चार अंग लंबे१४

चार अंग लाल १५ चार अंग पतले १६चार अंग उठेहुए १७ चार अंग छोटे

१८चार अंग झुकेहुए१९चार अंग मोटे चाहिये सो २० गालिहोत्र बनानेवाले

मुनियों के मत से कहे हैं "इन अंगों को आगे यथाक्रम से स्पष्ट बताते हैं"

मुख, भुज, केस२गला ये चार तो लंबे होने चाहिये और२श्लिग, जीभ,

ओठ२३तालुचा ये चार अंग लाल होना शुभ है२४दोनों कान, बालछा,२५पैरों

के गाले (मोदे) ये चारों अंग पतले चाहिये२६फुरणा (नामिका) २७ खुर (सम)

२८ ललाट २९ गुदा ये चार अंग उठेहुए होयें ३० दोनों कान ३१ बाँसे का

हाड (पीठ) की लंबी हुई। ३२ दोनों कानों के बीच का अंतर (छेदी) ये चार

अंग छोटे होयें सो उत्तम है ३३ कूँव (बाखी, तार) पेट ३४ छुटने१५मट्ट, ये

चार अंग झुके हुए और मुख, कंधा, छुटना, पाँसली ये चार अंग बड़े (लंबे)

होना ३५ पूज्य है और ये उपरोक्त घोड़ों के लक्षण ३७ हर्ष कराते हैं ॥ ३० ॥

घोड़ों के कितने ही पद्ये यौवन अवस्था के छक में बड़े बल से कूदते हैं

प्रोथे वजन पवमान हुलसि अंदर बढि इंकत ॥

धोरित<sup>१</sup> बलिगत<sup>२</sup> धाव इमहि प्लुति<sup>३</sup> अरु उत्तेरित<sup>४</sup> ॥

उत्तेजित<sup>५</sup> पुनि अटत पंचधारन मग प्रेरित ॥

भारत फुलिंग नालन अपटि अतुल प्रसारत उहुयन ॥

चातुरि मलंग धारत चपल पातुरि गति डारन पयन ॥ ३१ ॥

रजत पत्त खुर रजत ललित अंघं पक्क नाल लागि ॥

थित जिम देवल थंभ चरन अति दृढ लगैं न चंगि ॥

पुढे गरद प्रपीनै रुचिर छतिय परिखाहित ॥

कंध कुटिलै कोदंड सँजव धँज कसत समोहित ॥

मारत मलंग सेनन मुकुट एननै जव पारत अलप ॥

उम्मेद नृपति अगलै अटत मानहु नट भगल मैलप ॥ ३२ ॥

१ फुरण २ पवन के जांर मे बजने हैं और प्रमन्न होकर ३ आकाश में बढ कर चलते हैं ४ ऊपर कही हुई घांड़े की पांचों गतियों का नाम धारा है उन पांचों धाराओं में प्रेरणा किये हुए ४ फिरते हैं "उपरोक्त पांचों गतियों की संक्षेप व्याख्या यह है कि चतुराई युक्त सीधी गति (आदम और दुइकी) को धोरित कहते हैं और खाटे स्थलों में अगले शरीर को सवेद कर मुख देहा करके चलता है उसको बलिगत कहते हैं शरीर के अगले और पिछले दोनों अंगों को उछाल कर (चौकड़ी भर कर) दौड़ना है उसको प्लुन कहते हैं उत्तेरित जिसका दूसरा नाम आसकंदित है, इसमें घांड़ा बगंध होकर न ता कुछ सुनता है और न कुछ देखता है जिसको लौकिक में पट्टी या सरपट कहते हैं, उत्तेजित जिसका दूसरा नाम रोचन है जो मध्यवेग से गोलाकार फिरने का गोलकुंडा कहते हैं" वे घोड़े दौड़ कर मालों से ६ अग्निकण उछाते हैं और तुलना रहित ७ उछान फैलाते हैं ॥ ३१ ॥ ८ चांदी के पत्रों से ९ शोभायमान खुरों में सुंदर पक्क १० लांहे की नाल लग्या हुई और ११ मंदिर के थंभ के समान जिनके चरण जो दृढ़ता के कारण कभी १२ झुक कर (फिसल कर अथवा टोंकर खाकर) नहीं लगते जिनके १३ पुष्ट और गोल पुढे १४ सुंदर चाँदी छाती १५ घनुष के समान १६ देहा (मुक्ता हुआ कंधा १७ समाधित (एकाग्रचित्त) होकर १८ वेग के साथ १९ शोभा बनाते हैं २० सेनाओं के मुकुट से घोड़े मलंग लगाकर २१ हरियों के वेग को न्यून करते हैं २२ आगे बढ़ते हैं २३ जैसे भागल में नट मलंग लगावे तैसे उगाते हैं ॥ ३२ ॥

नव \*चेरिन नखगल घलत घुम्भर नचि घेरिन ॥  
 फेट लगत जिन फाल फिगत हथिय चकफेरिन ॥  
 तीय कनीनिय तरल सरल सच्चे मुख सोहत ॥  
 मंजु पसम मखतूल मुकुर \*विग्रह छवि मोहत ॥  
 रथ जोर लैन संगर रचक भचक पाणि अहि भुम्भ भर ॥  
 चरनन नमाय मारत मचक लचक जानि हिंडोल लर ३३  
 चखन तोप चढाय चित्र मंडिग तिन चारन ॥  
 सनि आनन सिंदूर पूर सज्जिय गढ पारन ॥  
 दिपत लव धुजदंड जाह अंतक जिम हल्लत ॥  
 इक निमेन अनेह अट्टनव९फैर उगल्लत ॥

विधुरात ज्वाल लालिय बिखम आर छतिन सालिय उपित ॥  
 आलिय अनेक नालिय अतुल कालिय जिम चालिय कुपित ३४  
 कुंभीनस आनत कितीक मकर रु मइंदे मुख ॥  
 करम सरम कति कोल बदन धारत रीस रुख ॥  
 हंकत खिन हरवल्ल हात दुहर नर हल्ले ॥  
 अचत वृख गन अगग पिठि मारत गज टल्ले ॥  
 अयपिंड गिलत धटिका उभयवलि दगै न पव्वय वचत ॥

\*नवीन लौहियां के समान नखरे करनेवाले † मलग में ‡ स्त्रियों के नेत्रों की  
 पुतली के समान चपल § मुख सच्चे आर सीधे शोभायमान ॥ रंमम के  
 समान सुंदर जिनके शरीर के रंग और काच की छविवाले × शरीर से  
 १ मोहित करते हैं २ रंग के बल से ३ गुल में ४ टक्कर लेते हैं और भूमि औ-  
 र शय पर मचक (टक्कर) पाड़ने हैं ५ होंदे की लड़ ॥ ३३ ॥ ६ तापों के चाक-  
 रों ने ७ तीपों के मुख को सिंदूर में भिजाकर ८ यमराज की जिव्हा जैसी ९  
 नेत्रों के पल लगने जितने समय में अग्नि की नहीं सहन योग्य लताई १०  
 फैलाती है ११ शांभन १३ तुलना रहित तापों की १२ अनेक पंक्तियां ॥ ३४ ॥  
 १४ फण किये हुए सर्प के मुखवाली १५ सिंहमुनी १६ ऊँट के मुँहवाली १७  
 केसरीसिंह के मुखवाली १८ सूवर के मुख को धारनेवाली १९ आगे से बैलों  
 का समूह खेंचता है २० लाहे का गोला ३१ दस सेर के (शास्त्र में पाँच सेर

हंक्रिय दलैल उप्पर हलक रव चट्ट चक्रन रचत ॥३५॥

सब अनीक इस सज्जि अप्प हयगज अरोहिय ॥

लिय कोटेसहिं लार सार अकिखिय रन सोहिय ॥

घुरि नोवति घनघाय कलह त्रैवक जय कारन ॥

बजि कजाक वड बाक द्वार प्रतिहार हजारन ॥

संक्रमि अनेक उद्धत सुभट तरिन बैठि चम्मलि तरन ॥

बुधसिंह सुवन आदेस बस लागिय मगग बुदिय लरन ॥३६॥

चम्मलि तट मिलि चक्र पंति छादित जल पोतन ॥

कोडा बहुविध करत सूर छकत जव स्रोतन ॥

उडुपेन कति आरुढ तिरत कति भेलै तरंडन ॥

कतिक झारि बंदूक रचत कुंभीरैन खंडन ॥

दल भीर नीर बढि बढि दुर दिस मरजादन लोपत महत ॥

सजि सेतु मनहुं दमकंध सिर बंदर जल अंदर बहत ॥३७॥

अवधिगोज उम्मेद दीप सोदर लछमन दुति ॥

कोटापति कपिराज निडर सुग्रीव रचत नुति ॥

सजि अंगद सिवसिंह बैगिसल्लोत देव सुव ॥

पैवन पुत सुखसिंह महासिंहोत धीर ध्रुव ॥

तोक रु प्रयाग नल नील तिम मिलि हंक्रिय जय जंग मन ॥

बुदिय बिदेहैतनया अरथ हठि दैलेल रावन हनन ॥ ३८ ॥

का नाम धटी है) १ पहियों के शब्द रचती हुई ॥ ३५ ॥ २ आप (उम्मेदसिंह) घोड़े पर चढ़ा ३ युद्ध के बड़े वचन ४ द्वारपालों की ५ नावों में २६ चामल नदी को २७ उम्मेदसिंह के हुकम के आधीन ॥ ३६ ॥ ८ नावों से ९ पानी के प्रवाह को १० कितने ही छोटी नावों पर चढ़ ११ भैले नाव विशेष १२ नाव विशेष १३ मगरों का १४ सीमा [नावों] को ॥ ३७ ॥ १५ उम्मेदसिंह है सोतो रामचन्द्र है १६ छोटा भाई दीपसिंह लक्ष्मण है १७ कोटा का महाराव सुग्रीव निडर होकर १८ स्तुति करता है १९ वैरीमालोत देवसिंह का पुत्र अंगद के समान सजा २० हनुमान २१ बुन्दी रूपी सीता के अर्थ २२ हठवाले दलैलसिंह रूपी रावण को मारने के लिये ॥ ३८ ॥

तरि इम चम्मलि तोय कटक आरुहि केकानन ॥  
 हंकिर रन हुसियार बीर बेधत खंग वानन ॥  
 चौलुक कति चहुवान जोध कूरम कति जहव ॥  
 कति सीसोद कबंध भटन मंडिय घन भदव ॥  
 कोतुक अनेक खुरलिय करत रन दुरूह पंडित रजियं ॥  
 बुधसिंह सुवन अतिजोर बल सठ दलेल उप्पर सजिय ॥३९॥  
 चलात रेनु रवि ठंकि चक्र चक्रिन वियोग बनि ॥  
 कुंभीनैस कसमसत भोग फटंत हंतं भनि ॥  
 दिग्गज गन डगमगत जगत संकर समाधि जिम ॥  
 उदधि नीर उच्छलत तुंग गिरि हलत शृंग तिम ॥  
 जिम फल अनार कैन रद जंगध इम भीरुन जल उत्तरिग ॥  
 दिस दिस जिहान मंडिग हुमन प्रलयकाल संभ्रम परिग ४०  
 प्रत्यागम राचि पवन फिरत लागि लागि बैल फेटन ॥  
 झुंड गजन झंडाल झुकत फदरात झपेटन ॥  
 बन जंतुव हतबेग रहत थकि थकि जिहि अंतर ॥  
 चलिंग चक्र इम चंड दब्बि निज ओर्ध दिगंतर ॥  
 भय सुनि अपार गन भुम्मियन जित तित बढि भज्जन जिकर ॥  
 पक्षर न मात गेलैन पहुमि नभ न मात सेलन निकैर ४१

१ चामल नदी का जल उतर कर २ सेना ३ घोड़ों पर चढ़ कर ४ बाणों से पक्षियों को  
 बधन करते हुए ५ कितने ही सोलंखी ६ यादव ७ राठोड़ ८ शत्रु ९ पास के खेल  
 ९ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे युद्ध के पंडित १० शोभायमान हुए ११  
 बलवान् सेना ॥ ३६ ॥ १२ सर्प (शेष) १३ फण फटने से खेद के वचन [हाथ]  
 कह कर १४ ऊँचे पर्वतों के १५ शिखर १६ दाने का १७ दांतों से कुचलने से पानी  
 उतरना है ऐसे १८ कायरों का जल (पराक्रम) उतरा ॥ ४० ॥ १९ उल्टा गमन  
 २० सेना की फट से २१ झंड़े २२ घन के जीवों का वेग दृढ़ होकर २३ इस प्रकार  
 भयंकर सेना बली २४ अपने समूह से २५ भूमि के भागों में पाखरें नहीं  
 समाती हैं और २६ आकाश में भालों के समूह नहीं माते हैं ॥ ४१ ॥



निज हठ कच्छप निंदुर इत्थ बासुकि छवि छावत ॥

तिम मंदरै तँक्राट भिंदुर कैगवाल अमावत ॥

दल कोटापति दितिज अदिति संभवं दल अप्पन ॥

उद्यम गति अनुसार थोक सम्मलि फल थप्पन ॥

जागरै बिथारि गंद अरि जनन कहि कहि गुन आगर कथन  
चहुवान इंद्र नौगर चढिय मनु बुंदिय सागरै मथन ॥ ४२ ॥

प्रलय पौन परमान दिपत हंकि य दैल दुद्धर ॥

मिलिय आनि मग मध्य कतिक परै भट निवेदि कर ॥

सक इक नभ बसु सोम १८०१ मास आसाढ पक्ख सितै ॥

तिथि द्वादसि १२ दल तुंग इलिय रन मत्त लरन हित ॥

छिंति अप्प लैन रस बीर छकि द्रुत मुकाम इक बीच दिय

बड अंतरीपे जलजाल विधि नृपवर बुंदिय बिंदि लिया ॥ ४३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमऽराशौ कोटेश  
सहितहृद्रेन्द्रावगाडुम्मेदसिंहसज्जीभवनसेनासौभाग्यविजयाभिनि-

१ अपना हठ है सोही कठोर कच्छप है २ हाथ है सोही बासुकि सर्प की शोभा  
पाते हैं ३ वज्र रूपी दंतरवार को अमाता है सोही ४ मंदराचल रूपी ४  
मंथनदंड (रई) है कोटा का पति है सोही ७ दैत्य है "कोटा का पति शत्रुशा-  
ल उम्मेदसिंह से छीनकर बुंदी को अपने वश में करलेवैगा इसकारण उसको  
दैत्य लिखा है" ८ उम्मेदसिंह की सेना है सोही अदिति के पुत्र (देवता) हैं  
खबने के अनुसार (बुंदी पर खलता है सोही) समुद्र के मथने का उद्यम है  
और सेना का शामिल होना ही मथन के स्थल का स्थापन करना है, शत्रुओं  
में ९ आगरण रूपी १० रोग फैलाकर ११ गुणों के समूह का (अपनी सेना  
के गुणों का) कथन कहकर चहुवाणों के इंद्र (उम्मेदसिंह) रूपी १२ परमेश्वर  
बुंदी रूपी १३ समुद्र के मथने को खड़ा ॥ २४ ॥ १४ कठिनाई से धर्षणा की  
जाये ऐसी सेना चली १५ शत्रु (दलेलसिंह) के उमराव खिराज देकर १६ शत्रु  
पक्ष १७ अपनी भूमि लेने के अर्थ, जल के समूह में १८ बड़े टापू के समान  
बुंदी को घेर ली ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे के सप्तमराशि में कोटा के पति सहि-  
त दांडों के इंद्र रावराजा उम्मेदसिंह का सज्जित होना १ विजय करने वाली

यागजहयनालीयन्त्रसुभटादिवर्णनचर्मगवतीलंघनमार्गैकप्रपा-  
तकरणादिगन्तरातङ्कप्रसरणाबुन्दीवेष्टननालीयन्त्ररणाप्रारम्भणानव  
मो ९ मयूखः ॥ ९ ॥ ॥ २९० ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात ॥

धकि पावकं धमचक जाल तोपन जंजीरित ॥

जपि जपि क्रंदनं जाप पुर सु तपि तपि हुव पीरित ॥

परत बैप्र प्राकार गिरत कपिसिर उडि गोहन ॥

वरत द्वार बाजार भार मारुत भक भोलन ॥

बिखरत गंवात्त जालिय बंहुल भरत सौध मंडप भपट ॥

मानहुं बिनास भावक मचिग लंकापुर पावक लपट ॥ १ ॥

डिगि पब्बय कटि कूट तपिग उन्नत तारागंड ॥

बडिग भाल बिकराल रचिग संगर रावन रंड ॥

नैर परिग हटनारि सकल पुरजन अति त्रासित ॥

जरत गेह बडि ज्वाल प्रबल बारूद प्रकासित ॥

छिज्जत निवान पानिय छिनकि हुव धूमित दस१०मित हैरित ॥

सौभाग्यवती सेना का निकलना २ हाथी, घोड़े, तोपें, सुभट आदि का वर्णन  
३ घामल नदी लांघकर बीच में एक मुकाम करना ४ दिगन्तों तक भय फैला  
कर बुन्दी को घेरना ५ तोपों के युद्ध का प्रारंभ होने का नवमा ९ मयूख स-  
माप्त हुआ और आदि से दो सौ निव्वै २६० मयूख हुए ॥

जंजीरों से जड़ी हुई तोपों की जाल (समूह) से १ युद्ध में १ अग्नि जला १  
रोने के बचन कह कहकर ४ पीड़ा युक्त हुआ और गोलों से ५ धूलकोट धूना  
से बना हुआ पक्षा कोट ७ कांगरे उड उड कर गिरने लगे ८ पवन के झकोलों  
से ९ झरोखे १० बहुत जालियें ११ महल और घुमटे अग्नि की झपेट से गिर-  
ते हैं सो मानों १२ प्रलय का भाव मचकर लंका में १३ अग्नि की ज्वाला लगी  
॥ १ ॥ १४ पर्वत के शिखर कटकर ढिगे और १५ कंबा १६ तारागड (बुन्दी के  
गड का नाम तारा गड है) तप गया १७ राक्षस के समान हठ से १८ नगर में  
१९ दश ही दिशाएं धूम युक्त होगई.

रुकि जीह दंत\*संकट रहत इम बुंदिय दला आवरित ॥२॥  
 कटि गोलन परि कूट गिरत जित तित पुनि ऽगोपुर ॥  
 गृह ॥ चत्वर शृंगाट प्रचुर प्रासाद तप्यो पुर ॥  
 सिंहद्वार संजवन जरत कुट्टिम घन ज्वालन ॥  
 बीथी बिपेणि बजार दहत अंगार द्वालन ॥  
 अपवरक कोस अवसधि अटज जगत चंद्रसालन ज्वलन ॥  
 होत्रीय काय मानन दहत छवि अलात रचि उच्छलन ॥३॥  
 आथरवन आताप मचत फुल्लिंग महानस ॥  
 तपि कटाह जिम तेल मनुज कुकत दुख मानस ॥  
 आवेसन बैपनी अनेक सिलगत प्रतिश्रय ॥  
 पाकपुटिन भलपटु लगत जिम अग्नि महालय ॥  
 गतिंका बहुल गोसालगृह गंजां पंकवशा घोखंगन ॥  
 मंदिरा चतुर सिलगत अमित जगत द्वार बेदिन ज्वलन ॥४॥

\*जैसे दांतों के घेरे से जीभ रुकजाती है तैसे सेनासे बुंदी † घिरगई ॥ २॥ † दरवा-  
 जों के ऊपर के शिखर गिरकर ऽशहर के द्वार गिरते हैं ॥ घर का चौक १ चतुष्पथ  
 (चौहटा) २ बहुत ३ महल और नगर तपगया ४ प्रथम प्रवेश करनेका द्वार (सिंहपोछ)  
 ५ सम्मुख चार द्वारवाली चौपाइ ६ छोटे घर ७ बहुत अग्नि से जलते हैं ८ गलियें  
 ९ व्यापार की गलियें, बाजार १० दीवारें बहुत अंगारों से जलती हैं ११ बीच  
 का घर १२ भंडार १३ औषधिशाला में १४ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाला अ-  
 ग्नि जलता है इसीप्रकार १५ सब से ऊपर के मकानों में भी १६ अग्नि जल-  
 ता है १७ होमालय (अग्निशाला) के शरीर के १८ प्रमाण (सदृश) १९ शोभा  
 के साथ अग्नि उछलता है ॥ ३ ॥ अथर्ववेद सम्बंधी (अथर्ववेद में मारण  
 मोहन आदि संताप होता है तैसे) अथवा शान्तिगृह में २१ रसोई में २० अ-  
 ग्नि कण मचे अथवा रसोई में अग्नि कण उड़ते हैं जैसे शान्तिगृह में उड़ने  
 लगे २२ दुःख के मन से कूकते हैं २३ शिल्पशाला (कारीगरों के घर) २४  
 नाइयों के घर २५ सभा का स्थान २६ कुंभशाला अर्थात् कुम्हार के आव(भ-  
 ट्टी)में भाँलें उठें ऐसी २७ बड़े स्थानों में भाँलें उठती हैं २८ तुशाला (जुलाहों  
 के घर) २९ गडवां रहने के घर ३० मदिरागृह (कलालों के घर) ३१ भीलों के  
 घर ३२ अहीरों के घर ३३ हथशाला ३४ गजशाला (फीलखाना) ३५ द्वार

गृह अरिष्ट यंत्र गृह बेस मंडप अंगन बट ॥

लगी बासोके अलाव चवत एडूक चटचट ॥

उत्तरंग पुनि अरर थंभ छत्रिन थहरावत ॥

परिध बिटंक प्रघाश लमत पावक लहरावत ॥

नासा रु पटल बेलभिन निकर इन्द्रकोस दंतक अतुल ॥

प्रघाव बहुरि जालक प्रथित प्रजरत इम गेहन बिपुल ॥५॥

कति सह अन्न कुंसूल निकर सोपान निसैनिन ॥

जरत सालभंजीन उडत बनि छार सु नैनिन ॥

पेटा पुनि संपुटक कतिक बर सिलप करंडक ॥

कंडन मुसल कलिज भंति बाहुल चंय भंडक ॥

इत्यादि सकल गृह उपकरण दगि अलाव पावक दहत ॥

दंग जन त्रसित यह लखि दुर्ग तदखानन कानन चहत ॥

के बाहर के सबूतरे अग्नि में जलते हैं ॥ ५ ॥ १ स्तिकागृह (जापा का घर)  
२ तेख का घर, उत्तम मंडप और आंगने का ३ मार्ग ४ शयन के घर में ५  
अग्नि जगकर ६ भीतें (दीवारें) चटचट करती हैं ७ द्वार के बाहर लगी  
हुई काष्ठ की घोंड़ियें (काष्ठ जलते हैं और छतरियों के धंभे धुजते हैं ८ कवा-  
लों के गोकने का काष्ठ अर्गला (आगल अथवा भागल) १० घरों में पक्षियों के  
पाखने के अर्थ काष्ठ के बनाये हुए घरों में ११ बाहर के द्वार में १२ अग्नि ल-  
गकर लहराती है "अग्नि शब्द पुल्लिङ होने पर भी लोफखंडी से स्त्रीलिङ लि-  
खा जावे तो अशुद्ध नहीं है" १३ बारसोत (चोकट) अथवा छावणा १४ छजे  
(छाजे) १५ खपरेखों के आधार वक्र काष्ठों (मियालों) १६ के समूह अथवा कू-  
टागार (सब के ऊपर के मकानों के समूह) १७ मांचा १८ खूंटियें १९ झरोखे  
वा खिड़कियें २० जालियें, घरों में इसप्रकार बहुत २१ प्रसिद्ध जलती हैं ॥ ५ ॥  
२२ अन्न के भरे हुए कोठे २३ लीडियें (जीने) २४ नीसरनियों के २५ समूह २६  
काष्ठ की बनी हुई पुतलियें जलकर २७ ओष्ठ नेत्रवाली स्त्रियों के नेत्रों में उड-  
ती हैं अथवा उन ओष्ठ नेत्रवाली पुतलियों की भस्म होकर उडती है २८ पेडियें  
(संदूकें) २९ दिब्बे ३० कितने ही ओष्ठ कारीगरी के टोकरे (झबले) ३१ ऊँची  
मुसल ३२ चटाइयें ३३ बहुत प्रकार के ३४ भांडों [मिट्टी के पात्रों] के समूह ३५  
इनको आदि लेकर घर की सब ३६ सामग्री को अग्नि का समूह जलकर बह  
अग्नि जलाती है ३७ नगर के लोक दरकर ३८ घुसने के लिये तहखाने और ३९ बन

तरु देवल पुग तौल काल कचमाल कंदंबित ॥  
 जरत बिपंचिन जाल नागदंतन अवलंबित ॥  
 मंचं बहुरि प्रतिमंचं सुघट बिष्टेर सिंहासन ॥  
 बिखरत बोथिन बीच परत आलय चहुँ पासन ॥  
 त्रैपु नाग देवत अतिसय तपित पारद उडत अकास पथ  
 जुत तूल राल गंधक जरत करत तोप कल कल अकथं ॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन आताप अति, बुंदिय नगर बिहाल ॥  
 सठ दलेल अति भय सहित, कैलि वह मन्थ्यो काल ॥ ८ ॥  
 तागगढ चढिगय त्वरित, अंतहपुर जुत एह ॥  
 इम उमेद भूपति अतुल, मंडयो गोलन मेह ॥ ९ ॥  
 साहिपुरप जुत सेनपति, इततै वह द्विज आय ॥  
 जंग कठिन लखि तिहि जवन, लिय गुजरात पलाय ॥ १० ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

यारीति रावराज उम्मेदसिंह बैरिनके बिडारिवेको बुन्दी बि

को चाहते हैं ॥ ६ ॥ वृत्त १ दंडालय [मंदिर] २ नगर और मलाव ३ कास-  
 मर्द [वृत्तविशेष] अथवा राज ४ केसों के समूह "यहां यदि कालक समा-  
 ल, एक पद किया जावे तो इसका अर्थ अश्लील होजाता है क्योंकि केसों  
 साथ काका शब्द लगाने से गुह्य स्थान के केसों का बोधक होजाता है जैसे राजा  
 रात्रि, निद्रा, पण्डित आदि शब्दों के साथ महा शब्द के लगाने से विरह  
 अर्थ होजाता है सो ऐसा प्रयोग उत्तम कवि नहीं करते हैं" ५ उपरोक्त वस्तु-  
 ओं का समूह और ८ खूंदियों पर ६ लटके हुए ६ बीणाओं के ७ समूह १०  
 मांचे ११ बड़े मांचे (डैला) १२ अष्ट घड़े हुए बाजोड जलकर १३ गलियों में  
 बिखरते हैं १४ धरों के चारों ओर १७ बहुत तपने से १५ कथीर १६ सीसा  
 बहता है और १८ पारा आकाश के मार्ग उडता है १९ रुई सहित राल,  
 क जलता है और २० कहा नहीं जासके जैसा तोपें कोलाहल करती हैं  
 ॥ ७ ॥ २१ वस युद्ध को ॥ ८ ॥ २२ जनाना सहित ॥ ९ ॥ २३ सेनापति  
 गोविंदराम ब्राह्मण २४ वस गुजरात के सूबेदार यवन ने २९ भागकर गुजरात

तीनी ॥

अरु ताकदार तोपनकों लगाय महाप्रलयके माफिक मार दीनी ॥

अच्छे बारूदके उडान बज्रपातसे गोले गिरन लगे ॥

अरु तारागढके \*प्राकारकंगुरेनकों कलाप † किरन लगे ॥ ११ ॥

जिन तोपनके § कलाप कुलटानायिकाके समान सोभित भये ॥

अरु गोलंदाजनकों जार जानि पूर्वनुरागके प्रभाव समीप लगे ॥

जिनके अद्भुत अनंगकी आगि ऐसी कि उदरमें नभावैं यातैं

ननकी ओर उफनाय कडैं ॥

सो समीपके सबनकों बचाय दूरके दुर्ग दाहिबेकों बडैं ॥ १२ ॥

जिनकों आहार पचेतैं अपनै रवामीकों आनंद नाहि आवैं ॥

अरु बमन कियेतैं बिट बिदूसकन सहित नायक मोदपावैं ॥

जे खिन खिनमें गर्भाधान धारिकैं प्रसूतिकालको बिलंब

हिं करैं ॥

परन्तु जिनके बालक कुपुत्र यातैं होतही जनक जननीकों छोरि

नके वृंदमें बसिबेकों कूदिपरैं ॥ १३ ॥

जिनकों बत्तीस बत्तीस ३२ जार भोगैं तथापि अल्प साधन जानि

जंगके बिजयकी पताका उडावैं ॥

अरु तृप्तिके अभाव बडे बैलनके जोट जीति बँडे हत्थीनके

देखावैं ॥

आंगि देबेवारोही जनाइबेवारी दाई ताकों जलदीसू जनाइबेमें

धरैताकी बखसीस करैं ॥

ऐसी उनमत्त जानि कितनेक दरितै रदाईनके संदोह जनायबे-

॥ १० ॥ \* कोट † कांगरों के समूह ‡ गिरने लगे ॥ ११ ॥ § समूह

लगे ? पहिले की प्रीतिरकामदेव की अग्नि ३ मुख की तरफ ॥ १२ ॥

कांड (के) ५ कामी पुरुष के सखा ६ बालक जनने के समय में ७ पिता =

ता को ९ समूह में ॥ १३ ॥ १० अग्नि देने (बत्ती बताने) वाला ११ बह-

रुकी १२ डरनेवाले १३ समूह ॥ १४ ॥

की हाँस न धरें ॥ १४ ॥

जिनके \*आननां आरक्तमानों बन्धिके वमनहीसों यह रंग धरें  
अरु आलस ऐसे कि अपनी सज्जापर सूताही आहार बिद्वान  
रादिक कर्म करें ॥

जे बलिष्ठ ऐसी कि जंगी कारतूस बिनाईसहर्षा होय जावें ॥  
अरु जंगी कारतूसकरि जरायुथेलीसों जुदेही पुत्र उपावें ॥ १५ ॥  
जिनकी तीखी नजरिके कटाक्ष लागें गढ पर्वत आदि जंगम  
हू लोटी पैं ॥

अरु चंडवेगं चिरवेग ऐसी कि संप्रयोगं सूरिनतें कामकल  
हकों जीति जीति गर्जना करें ॥

ऐसी तोपनके फैर पर फैर जारी भये ॥

अरु पत्तनके प्राकारकों दुर्बाजू छेकि छेकि गोले आडअद्रिके  
अंतर बिहार करन गये ॥ १६ ॥

तारागढके प्राकार कपिसिरं बंप्रन समेत थहराय तूटन लगे ॥

कैधों आखंडेलके असिनिमों उत्तुंग अद्रिनैके कूट फूटन लगे ॥

या रीति तोपन बुन्दीके बैरणाकों बेधि घनै घंटोंपथनके समा  
न पंथ कीनै ॥

अरु रावराजा उम्मेदसिंह महाराव दुर्जनसाल हल्लेको हुकम दे  
बारिबाँह बीजुरीसे खेटक खँग लीनै ॥ १७ ॥

\* मुख † जाल ‡ अग्नि के उगलने से § गर्भ पटकनेवाली १ उत्क  
(आवळ) रूपी थेली से ॥ १५ ॥ २ जड़ भी ३ अंधकर वेग ४ बहुत ठहरने  
वाली ५ रत करनेवाले ६ चतुरों से ७ नगर के कोट को ८ आडाबला ना  
मक पर्वत में ॥ १६ ॥ तोपों के इस रूपक में कुलटा नायिका के साथवाले श  
ब्दों में श्लेष है परन्तु अच्छीछ होने के कारण हमने उनका अधिक विवरण  
छोड़ दिया है और यथार्थ में इनका अर्थ भी सीधा है ९ कंगुरे १० कोट सहि  
त ११ इन्द्र के १२ वज्र से १३ ऊँचे पर्वतों के शिखर १४ कोट को १५ चौड़े मा  
र्ग (राजमार्ग) १६ मेघ और पिजुली के समान १७ डाल १८ तरवार ॥ १७ ॥

दक्खिनकी तरफसों सज्जीभूत सेना समेत दोऊ२ नरस पत्तन में पैठि चन्द्रहास चलाये ॥

अरु पच्छिमकी तरफसों साहिपुराके \*अधिराज उम्मेदसिंह कोटा के कटकेस गोबिंदराम † तोरनकों तोरि हमगीरहरोलनके भुंड हलाये दोऊ२ तरफसों ‡ वरूथिनी दडि भीतरके भटनपैं महाकाल रूप ॥ मंडलाग्रनकी मार दीनी ॥

तिनकों दबते देखि दलेलसिंह तारागढ सों एक हजार १००० सच्चे सूरवीर भेजि सहरके स्वकीय सिपाइनकी भीर कीनी ॥ १८ ॥

तिनमाँहिंसों कितेक बंदूकनके चलाक गृहस्थनके गेहनके ऊँचे अट्टनकों अरोहि पैलेनको पहिचानि गोलीनतैं गजब करन लगे ॥

अरु सेस जे असेस धाराँधरहीसों धापिवेको संकल्प सच्चे करि पैलेनकी छूतनामैं पैठि अश्वमेध अध्वरके फलके उपमान आपुनैं अडोल अग्रिनकों अंगदकी रीति धरन लगे ॥

चिरकालसों बिछुरे मित्रनके माफिक कितनेक अछूती अनीके लाडा छातीसों छाती भिराय मिलन लगे ॥

अरु परस्परके प्रहरन प्रपात असित अंबुंदसे अजभैलनपैं भिलन लगे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

ससि अंबर वसु इक १८०१ सैमा, बिक्रम सक गत बेर ॥

बुंदिय पुर बाजार बिच, भरिग बाढ आसि भेर ॥ २० ॥

॥ सुकतादाम ॥

अमावसि सावन मास अनेहैं, मच्यो इम बुंदिय खग्नन मेह ॥

\* पति † सेनापति ‡ नगर के द्वार को § सेना ॥ तरवारों की १ अपने २ सहायता ॥ १८ ॥ १ छूतों पर चढ़कर २ तरवार से ३ सेना में ४ घड़ के ५ पैरों को ६ बहुत समय से ७ शत्रुओं के प्रहार १० काले मेघ जैसे ११ हातों पर झेलने लगे ॥ १९ ॥ १२ सत्त्वत् ॥ २० ॥ ११ समय



छई नभ गिहनि चिल्हनि छैति, घुमंडत गूदन चंचुव घैति ॥२१॥  
 लगी लुभि घुम्मन अच्छरि लैन, गुथ्यो रस भाव विभावनगैन ॥  
 रच्यो इत तंडव नारद रारि, झुक्यो झूषि वहाँ महती झनकारि २२  
 उडे सिर झेलत उँदहि ईस, वहाँ इत चंडियके भुज बीस ॥  
 चटक्किहँ रक्त खिलै चउसहि ६४, बचक्किहँ बावन ५२ गावन गंडि ॥२३॥  
 चुरैलिनि मंडत फौलन चाल, लगावत डाइनि घुम्मरताल ॥  
 वजैँ लगी खगगन खगगनैँ बाढ, गिरैँ भट भीरु भजैँ तजि गाढ ॥२४॥  
 उमेद दिनेस रच्यो खग खेल, दुरयो सठ घुग्घुव दुँग दलेल ॥  
 फवैँ असि खुप्परि टोपन फारि, बहैँ जनु सब्बुव तंति बिदारि ॥२५॥  
 किरैँ कटि हड्डन खंड करकि, झरैँ उडि धारन बूर झरकि ॥  
 कटैँ सह सत्येन जानुव जंघ, सु ज्यौँ गज सुंडिन खंडन संघैँ ॥२६॥  
 फदक्किहँ कड्किहँ कालिकैँ फिफ, भचक्किहँ टोप कपालन भिफ ॥  
 उडे सिर फुटत भेजन ओघ, मनौँ नैँवनीत मटकिय मोघ ॥२७॥  
 मचक्किहँ रीढक बंकेँ अमाप, चटक्किहँ ज्यौँ मिथिलापुरैँ चाप ॥  
 धसैँ कडि लोचन सौँनित धार, चढैँ सिसु मच्छ बिलोम कि बैर २८  
 कटैँ गल ग्वास वजैँ विकगार, धमैँ धमनी जनु लगि लुहार ॥

१ छत्री २ चांच घाल कर ॥२१॥ ३ शृंगार रस के भाव अनुभाव गुणे (रस के अनुकूल मन का विकार होवै उसको भाव और भाव के जननेवाले को अनुभाव कहते हैं, यहाँ अमरकोशकारने (विकारो मानसो भावो) लिखा है जिसका रसतरंगिणी कार खंडन करता है) विभाव उद्दीपन को कहते हैं ४ आकाश में ५ नृत्य ६ नारद की घाणा का नाम है ॥ २२ ॥ उडे हुए मस्तकों को शिव ७ ऊपर ही झेलते हैं ८ रक्त पीकर ९ चौसठि योगनियें प्रफुल्लित होती हैं १० एकप्र होकर (गांठ बंधकर ॥ २३ ॥ ११ मलंगों से (कांदने, कुदने से) १२ तरवारों का तरवारों पर लगकर घाट यजता है ॥२४॥ १३ गढ़ में छिप गया ॥२५॥ १४ जाड़ी जंघा को सक्थि (माथल) और पतली को जंघा कहते हैं मं साथल, घुटना और जंघा कटती हैं १५ समूह ॥ २६ ॥ १६ कलेजे और फेंकरे १७ कपालों को भेदन करके १८ कल्पन की मटकी फूटी ॥ २७ ॥ १९ पीठ का हाड २० जनक राजा की पुत्री (तिरहुत देश) के धनुष २१ छोटी मच्छी पानी में उलटी चढ़े जैसे ॥ २८ ॥ २२ धमनी (धमन)

कहैं हिय छतिय फटि किवार, सु ज्यों न्हद लोहित कंज सुंदार २९  
पैं कहि अंत अपुर्ब प्रकारि, फनी गन जानि टिपारन फारि ॥

पैं छुटि संधित प्रान अपान, मनौ पय पानिय लोन मिलान ॥३०॥

बनै फटि डींच कहे रद बड्ड, किधौ घृत डब्बिय रंक कंवड्ड ॥

गिटै रसना कहि अगगन ग्राम, चहैं नचि नागिनि ज्यों पय आस ३१

लगै दृग मुच्छ फरकत लीन, मनौ उरझी बँनसी मुख मीन ॥

छलै छैत रत छछकन छुटि, फवै जनु गंगगरि जावक फुटि ॥ ३२ ॥

भुकै आसि मत्त दुदत्थन आगि, मनौ रँजकालि सिला पट मारि ॥

छुटै फटि पेटिय लोटिय लंब, तनै पट जानि कुँबिंद कदंब ॥ ३३ ॥

मचै रव टोप उडै फटि मत्थ, अलाबुव जानि अतीतन हत्थ ॥

कहैं दृग लगि कनीनिय काल, मनौ कुँब लोहित भौरन माल ३४

चलै फटि ढाल बकतर चीर, सु ज्यों तरु ताडन पत्त सँमीर ॥

धमै हिय गोलिए गावत गित, मनौ पटवा बटवा बिच बित्त ॥ ३५ ॥

रटै फटि कोचै करी रननंकि, झरै धैन वादन ज्यों अननंकि ॥

घटै दम मत्त वकै छकि घाय, मनौ मद पामर जीह जडाय ॥ ३६ ॥

कहैं बैपु छकि बरच्छिन ब्रात, तँसाध्वज अगग कि गँजज प्रपात ॥

लगै निकसै छकि पँटिम लाल, मनौ परतीयनके कर जाल ॥ ३७ ॥

१ जलाशय (दह) में रत्नाल कमल ३ अष्ट रानि मे ॥ २९ ॥ ४ अपूर्व रीति से ५ सर्पों का समूह ६ मिले हुए श्वास और तःश्वास की संधि छूटता है ७ लवण (नमक) मिलाने से दूध और पानी फट जावें जैसे ॥ ३० ॥ ८ मुख फटकर बड़े दन्त दीखते हैं सो मानों दरिद्री ने डिब्बे में ९ कोडियें रखी हैं १० आगों के समूह को जभि निगलती है सो मानों सर्पियों ११ कच्चा दूध पीती है ॥ ३१ ॥ १२ मच्छी पकड़ने का कांटा मच्छी के मुख में डलकर १३ घावों में रुधिर १४ जावक का घड़ा ॥ ३२ ॥ १५ धोबियों की पंक्ति १६ लंबी पड़ी हुई १७ जुलाहों के समूह वस्त्र फैलाने हैं ॥ ३३ ॥ मानों जोगियों के हाथ ल १८ तूँब गिरने हैं १९ नेत्रों की काली पुतली २० लाल कमल में ॥ ३४ ॥ २१ पवन से ताड़ वृक्ष के पत्र फटें जैसे ॥ ३५ ॥ २२ कवच की कड़ी २३ कांसी या त्रिधातु का चाच ॥ ३६ ॥ २४ रागीर को २५ समूह २६ घाँस दूध का अग्र मेय की २७ गर्जना से भूमि से निकलै जैसे २८ कटारी २९ परकीया नायिकाओं के हाथ जालियों से कहें जैसे (परकीया नायिका अपना

सुहैं फाटि हड्ड चटचट संधि, चटकत प्रात गुलाब कि गंधि ॥  
 उठैं विनु मत्थ किते तनु \*तुंग, थेइ थेइ नच्चत थुंगत थुंग ॥ ३८ ॥  
 बबकत ांढाच किते कन बैन, मनौ बड बकर टकर मैन ॥  
 गिरैं वररकत पंसुलि गात, मनौ कठछप्पर पत्थर पात ॥ ३९ ॥  
 छुटैं ऽपल जानु कटैं ॥ नल हड्ड, मनौ रद बवारन बंगर बड्ड ॥  
 लटकत पाय रकावन रुक्कि, मनौ तप सिद्ध अधोमुख भुक्कि ॥ ४० ॥  
 मलंगत छत्तिनके क्रम मप्पि, मनौ नट पट्टरि पाय मल्लप्पि ॥  
 छुटैं घन घोयक सायक सोक, उडैं सरघा गन ज्यौं तजि ओक ॥ ४१ ॥  
 छके कति वृत्तं फिरे सुधि छोरि, वनैं जनु बालक भंभैह भोरि ॥  
 गिरैं सर बिद्ध घनैं सिर तत्त, मनौ सरघान तजे मधुछत्त ॥ ४२ ॥  
 सरैं घन संगिन भिन्न सरीर, कुमारिनके जनु उज्ज कंरीर ॥  
 वकैं बहु पेत मिल गल बत्थ, किधौ रन मल्ल अपूरव कत्थ ॥ ४३ ॥  
 जगावत हाक रचावत जंग, लगावत भैरव नट्ट मलंग ॥  
 घसैं चडि डाकिनि के भूत छत्ति, मनौ कि बिदूसक कौं तिय मत्ति ॥ ४४ ॥  
 अटैं पय इक १ किते छक ओप, किते इक १ नैन लखैं भरि कोप ॥  
 करैं कटि जीह किते अँअ कूक, मनौ कि परांगिर प्रेरित मूक ॥ ४५ ॥  
 महुँदी का हाथ दिवा कर लाल रंग के संकेन से जार को अपना रजस्थ  
 ला होगा जनाकर उसके आने का निषेध करनी है ॥ ३७ ॥ \* ऊँचे ॥ ३८ ॥  
 † १ कतनों के मुख से अवाच्य शब्द निकलते हैं सो ‡ बड़े कामी बकरे की ट-  
 क्कर लें, अथवा बड़े बकरे की टक्कर में भी नहीं होवें ऐसे बकाई खाने के बच-  
 न कहते हैं ॥ ३९ ॥ § मांस छूटकर छुटने सहित ॥ नली की हड्डियों नि-  
 कलती हैं सो मानों = हाथी के बड़े दन्त वंगडों सहित हैं ॥ ४० ॥ १ घाव  
 करने वाले घाय २ मधुमक्खी ३ घर छोड़कर ॥ ४१ ॥ ४ चक्राकार (गोल)  
 ५ आंखोंवाली, भमल (चक्कर) खाने का बालकों का खेल विशेष ६ मधुम-  
 क्खियों के छोड़े हुए ७ सुवाल के छाते हैं ॥ ४२ ॥ ८ बरछियों से बहुत छि-  
 दे हुए शरीर चलते हैं सो मानों ९ कार्तिक मास में लड़कियों के बहुत छिद्र  
 वाले १० घड़े हैं ॥ ४३ ॥ ११ मरे हुए की छातियों को डाकिनियें घिसती हैं १२ कामी  
 पुरुष को मस्त ली ॥ ४४ ॥ १३ बकाई खाकर स्पष्ट नहीं बोले जानेवाले अवाच्य  
 शब्द का अनुकरण है १४ वृंसे का घायी से प्रेरणा किया हुआ गूँगा अनुप्य ॥ ४५ ॥

क्रमै इक<sup>१</sup> ओठ किते इक<sup>१</sup> कान, घनें मुख अद्ध रचै घमसान ॥  
 किते इक<sup>१</sup> हथ किते गत केस, बनें बहुरूप मनो नव बेस ॥ ४६ ॥  
 मिलै रसना कठि नक्कुटे मूल, फवै भुजगी कि लगी तिलफूल ॥  
 किते कर टेकि उठै रन रत्त, मनो मदछाकन पामर मत्त ॥ ४७ ॥  
 रहै कति गिद्धनको गल लाय, कहै कति हू रंव अचत हाय ॥  
 बकै कति मात पिता तिय बैन, गिरै कति मोहित उच्छलि गैने ४८  
 भव घन सावनको इत तुँडि, बैरूथ घटा इत आयुध बुडि ॥  
 बहै पुर बुंदिय सोन बजार, धँपा जनु जोहि सरस्वति धारा ॥ ४९ ॥  
 गिरै जल बहल गंग सु माथ, पुर स्त्रिय असुव जासुन पाथ ॥  
 बही इम बेनिय पत्तन बीच, मिनै बहु मुक्ति जहाँ लहि मीचै ॥ ५० ॥  
 बन्यो रन बुंदिय सावन अद्ध, दुँरघाँ असि ज्वाल भयो पुर दँड ॥  
 चुहटन लगिय लुथन लुथि, बिथारिग हटन बटन बुथि ॥ ५१ ॥  
 समाकुँल रुंड परे खिलि खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड ॥  
 डडकत डौहल के डमरूक, घुरावत घाय घने जनु धूँक ॥ ५२ ॥  
 रटै सिर मार अटै कति रुंड, मिटे कति जोर फटै कति मुंड ॥

१ फिरते हैं २ कई आधे मुखवाले युद्ध करते हैं ३ भाँड ४ नवीन स्वांग करै जैसे ॥ ४६ ॥  
 ५ जीभ कटकर घनासिका के मूल से मिलती है मां मानों ७ तिल के फूल से लगी हुई सर्पिणी शोभा देती है ८ युद्ध में प्रीति करनेवाले ॥ ४७ ॥ ९ गले से लगा कर १०  
 शब्द ११ मूर्छित होकर १२ आकाश में उछल कर गिरते हैं ॥ ४८ ॥ १३ इधर  
 आवण मांस का मद्य १४ प्रसन्न होकर वर्षा करता है १५ सेना रूपी घटा इध-  
 र शस्त्र बरसाती है १६ रुधिर बहता है सो १७ वही मानों सरस्वती की लाल  
 धारा वही ॥ ४९ ॥ बादलों से जल गिरता है सोही ओष्ठ यशवाली गंगा है  
 पुर की स्त्रियों के कल्लल युक्त नेत्रों से आंसु बहते हैं सोही श्याम वर्णवाली  
 १८ यमुना नदी का १९ जल है २० इसप्रकार नगर में प्रविष्टी वही २१ मृत्यु लेकर  
 जिस त्रिवेणी में मुक्ति मिलती है ॥ ५० ॥ २२ दोनों ओर की तरवार की  
 ज्वाला से पुर २३ दग्ध होगया ॥ ५१ ॥ मस्तक रहित शरीरों के टुकड़े होकर  
 २४ अवकाश रहित (भर) पड़े सो मानों २५ टांडा (बालध) पड़ी है २६ भैरव  
 और देवी आदि के साथ पजने हैं २७ घुघुओं (उलूकों) के समान कितने ही

बरैं सिर मंगि भरैं हर बैल, छकैं कति छोड़ दकैं रन छैल ॥५३॥  
 लगैं कति कंठ लारथर पाय, जगैं कति प्रेत ठगैं भट जाय ॥  
 लखैं कति हूर चखैं मिलि लाह, नखैं नभ फूल रखैं गिनि नाह ५४  
 किरैं कहूँ कोच खिरैं लागि खग्ग, फिरैं कति मत्त भिरैं जनु फग्ग  
 चिरैं सिर बाढ गिरैं अति चोट, धिरैं नद सोन तिरैं कहूँ घोट ५५  
 जरैं उडि अग्गि भरैं असि जोर, ढरैं भट केक टरैं जिम ढोर ॥  
 दंरैं कति कुप्पि धरैं धक दाव, भरैं कति भूरि करैं मृत भाव ५६  
 मरैं थकिं स्वास परैं कहूँ मूढ, अरैं कहूँ हूर बरैं नवऊढ ॥  
 रंरैं हरि केक लरैं धकिं रौस, हरैं जिय केक सरैं तजि दोस ५७  
 फटैं धर प्रेत वंटे सिर फाँक, लटैं मन केक कटैं उर लाँक ॥  
 खुलैं कहूँ नैन डुलैं कहूँ खग्ग, झुलैं कहूँ उँड फुलैं मुख भाग्ग ५८  
 छुलकन घायन न्त छछक, उरजकत केस बनैं अकवक ॥  
 अहकत तंतिन सिंधुव तार, दहकत भूतल देत दरार ॥ ५९ ॥  
 अनंकत पक्खर बेधित बंट, घमंकत घुग्घर घंटन घंट ॥  
 बढी कुण्णपावलि उग्र बखान, मनौ बड पैंतन दिग्घ मसान ॥६०॥

घाव बोलते हैं ॥ ५२ ॥ कितनेही मस्तकों को शिव १ अपनाकर (घरणीकर-  
 के) मांगकर बैल भरते हैं २ रणरमिक क्रोध में छककर भाग बढ़ते हैं ॥ ५३ ॥  
 उनमें कितने ही ३ लुढ़कते हुए चरणों में शत्रुओं के कंठ से लगते हैं, कि-  
 तने ही प्रेत उठते हैं और वीरों को ठगते हैं ४ आकाश से पुष्प डालकर ५  
 उनको अपना पति मानकर रखती हैं ॥ ५४ ॥ तरवारें लगकर कहीं पर क-  
 वच ६ गिरते हैं ७ रुधिर की नदी में धिर हुए कहीं पर = घोड़े तिरते हैं  
 ॥ ५५ ॥ बल पूर्वक तरवारों के पड़ने से अग्नि उड़कर जलती है जिससे कि-  
 तने ही वीर गिरते हैं और कितने ही ९ पशु (गड) के समान टलने हैं, कितने  
 ही क्रोध करके धक के साथ दाव देकर १० विदारण करते (काटते) हैं "द्वि-  
 दारणे" इस धातु से यह शब्द बना है. ११ बहुत ॥ ५६ ॥ १२ मूर्छित होकर  
 कितनी ही अप्सराए हठ करके १३ नवीन वर करती हैं १४ कितने ही वीर वि-  
 ष्णु भगवान् को रटते हैं १५ चेत को छोड़कर चलते हैं ॥ ५७ ॥ १६ धड़ १७ घाँटते हैं  
 १८ मन मुड़कर १९ लंक (कमर) २० ऊपर झूलते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २१ मुरदों  
 की पंक्ति २२ बड़े नगर के २३ बड़े श्मशान ॥ ६० ॥

गवाक्षेन जालिनके पट डारि, रही रन बुंदिय नागि निहारि ॥  
 बढी घन मार मची हथबाह, रुक्यो रवि जंपत बाह सिराह ॥६१॥  
 अरयो नृप छोनिय लैन उमेद, खिज्यो इस देत दलेलहिं खेद ॥  
 बढे गढ सम्पुह छेकि बजार, मिली तह सत्रु हजारन मार ॥६२॥  
 चले सर चंडे चटवृत चाप, मचावत पंखन सोक अमाप ॥  
 बहै बरछी असि तोमर तोम, बनें नरकातर लोमबिलोम ॥ ६३ ॥  
 उरज्झत अंत्र कटारन तारि, गही जलुं नागिनि अंकुस डारि ॥  
 लगै खैर खंजर पंजर लीन, मनौ प्रतिलोम धसै जल मीन ॥६४॥  
 चलै फटि पात गदा सिर चीर, मनौ तरबूज हनें कर कीर ॥  
 चलै तजि म्याँन छुरी पैल चाह, मनौ पिचकारिनि बारि प्रवाह ६५  
 झरफर चिलहनि गिहनि झुंड, मंगरत चंचुन अँचत मुंड ॥  
 किलोलत रुपार सिंवाँगन कँक, नचै बहु डाकिनि प्रेत निसंका ६६  
 धनै हननंकत घोटैक घुम्मि, भिरै कति भिन्न गिरै छकि भुम्मि  
 कुसाँ गल छुटत तुटत तंग, भभक्कत मारुत प्रार्थन भंग ॥ ६७ ॥  
 परै प्रजरै जर जीन पलान, किते कविकै बिनु लेत उडान ॥  
 बहे पुर तदिनै रैत रु बार, धपी बढि बाथिनै बीथिन धार ॥ ६८ ॥  
 मनौ यह दुगग छुधातुर पाप, दये बलि मानव संभर राय ॥  
 समाकुल लुत्थिन बुत्थिन वैट, चढै पैल चिककन हट चुट्ट ॥६९॥  
 सहयो घन चोरनको दुख जीय, लगै अब बुंदिय भूपति हाय ॥

१ झराखों की जालियों पर वस्त्र डालकर प्रशंसा का वचन कहता हुआ ॥ ६१ ॥  
 २ भूमिलेने को ४ क्रोध करके ॥ ६२ ॥ ३ भयंकर बाण ४ धनुष खैच कर ५ आलों  
 का समूह ॥ ६३ ॥ ६ आँतों में ७ कटारी की ताड़ियें ८ मानों खपिगी  
 को अकुशल डालकर पकड़ी है ९ तीक्ष्ण खंजर शरीर में लीन होता है सो  
 मानों १० छलटा ॥ ६४ ॥ ११ मांस की चाह से ॥ ६५ ॥ १२ गीहड़ियाँ १३ दीख  
 (पत्ती विशेष) ॥ ६६ ॥ १४ छोड़े १५ याग १६ कुम्हों को चीरता हुआ ॥ ६७ ॥ १८  
 लगाम बिना २० उस दिन २१ रुधिर और जल २२ गली गली में ॥ ६८ ॥ २३ गढ़  
 को भूख से पीड़ित २४ मनुष्यों का बलिदान २५ भर गये २६ मान २७ अस्त्र  
 और चरघी ॥ ६९ ॥

घनें दिन भुगि बियोगेज भार, कियो जनु सोनित रंग सिंगार ७०  
दलेल लखी तपकी तरवारि, धुज्यो छत दुग्ग पलायन धारि ॥

सुन्यौ यह जैपुर जामिप भार, कियो निज मंत्रिय आत तयार ७१

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायण सप्तम ७ राशौ पूर्व-  
नालीयन्त्रयुद्धकरणातदनुगोपुराऽऽरविदारणाबुन्दीप्रवेशनतुमुलर-  
आरचनदलेलसिंहतारादुर्गाऽऽरोहणातदुदन्तजैपुरश्रवणां दशमो १०

मयूखः ॥ १० ॥

॥ २६१ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप ईस्वर जबहि, सुनि यह बुंदिय सोर ॥

सजि दल दुहर मुकल्यो, दैन सहाय सजोर ॥ १ ॥

राजामलको इक अनुज, आत नाम सिवदास ॥

सेनापति खत्री सु करि, पठयो समर प्रयास ॥ २ ॥

राजामल निज अनुज सन, किय तब मंत्र इकत ॥

कहिय अगग जयसिंह नृप, मोसन भयउ बिरत ॥ ३ ॥

यह लखि मंद दलेल इहिं, मत्रैं हमहिं निकम्म ॥

अब्द लार देतो अयुत १००००, दिन्नैं ते नहिं देम्म ॥ ४ ॥

तीन ३ बरस पाई तबहि, अप्पन बिपति अछेह ॥

१ बियोग से उत्पन्न हुआ भार २ लाल रंग का ॥ ७० ॥ ३ गड के होते हुए आगना  
विचार कर धूजा ४ बहिर्नोई पर ५ अपने मंत्री राजामल के भाई को ॥ ७१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, प्रथम तोपों से  
युद्ध करने पीछे शहर के द्वार के कवाड़ तोड़ना १ बुंदी में घुसकर भयंकर  
युद्ध करना २ दलेलसिंह का तारागढ़ पर चढ़ना ३ जयपुर में इस वृत्तान्त के  
सुनने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ इकानवे  
२९१ मयूख हुए ॥

४ ईश्वरीसिंह ने ॥ १ ॥ ७ युद्ध के परिश्रम ॥ २ ॥ ८ युद्ध से ९ प्रतिकूल  
(नाराज) ॥ ३ ॥ १० प्रतिवर्ष (सालियाना) ११ रुपये ॥ ४ ॥



भंगेहू दम्भ न मिले, अपटु नट्यो सठ एह ॥ ५ ॥

यातैं अवहि दलेल कोँ, दैन सहाय न अच्छ ॥

पहिलैं तुम बरवाड़ पुर, प्रबिसहु मारि बिपच्छ ॥ ६ ॥

॥ सौरठा ॥

सुनि खत्रिय सिवदास, अग्रज-हिंतु निदेस यह ॥

आनि प्रथम जय आस, लरन लैन बरवाड़ लगि ॥ ७ ॥

॥ षट्पात ॥

अगैं पुर बरवाड़ वीर इक भयउ महाबल ॥

रामसिंह रठोर जाहि अक्खत जग रुटल ॥

ताके कुल सिवसिंह भयो रन दान धुरंधर ॥

हड्डन मुहुकमहैन सजिय तासन बहु संगर ॥

इन हनि अनेक रठोर भट ग्राम च्यारि४ तस दबि लिय ॥

यह लखि कबंध सिवसिंह इहि कलह घोर प्रारंभ किया ॥

॥ दोहा ॥

जो मुहुकमसिंहोतको, ग्राम परैं डग तास ॥

ताहि प्रंजारत लुटितो, बहुतन बिगचि बिनास ॥ ९ ॥

१ मूर्ख ॥ ५ ॥ २ शत्रुओं का ॥ ६ ॥ ३ रोटला कहते हैं (इस रामसिंह के नियम था कि भोजन के समय नगारा बजवाना उसका शब्द सुनकर जितने दोन इकट्ठे होते तिनको भोजन कराये \* पीछ आप भोजन करता इसी कारण से उसका नाम रामसिंह रोटला प्रसिद्ध होगया था और यह उदयपुर के महाराणा बड़े जगतसिंह के समय मेवाड़ का सेनापति था) ॥ ७ ॥ मोखमसिंह के ४ चंशवालों ने ५ उस शिवसिंह से ६ युद्ध ॥ ८ ॥ ७ जलाकर ॥ ९ ॥

रामसिंह के इस कार्य की प्रशंसा का एक दोहा राजपूताना में प्रसिद्ध है वह नीचे लिखा जाता है

रामे भूजई रंची, मारुधर मेवाड़ ॥

रोट भटके तेषरज, पही धूधला पहाड़ ॥ १ ॥

इसमें कवि उपेक्षा करता है कि राठोड़ रामसिंह ने मेवाड़ की भूमि में रसोई (रसोवड़ा) की रचना की जिसमें रोटी के भटके के साथ जो रज्ज उड़ी उससे मानों प्रभात के समय पर्वत धुंधले आँखने हैं ॥



हड्डन तब मुहुकमहरन, अति साहस इहिँ जानि ॥  
 बेटी अप्पहिँ बैरमें, मंत्र सबन यह मानि ॥ १० ॥  
 जाई जुगियरामकी, जड़ सालमकी जाँमि ॥  
 सिवमिहहिँ व्याही सबन, दोऊर दिस हित धामि ॥ ११ ॥  
 नृप कूरम जयसिंह पुनि, अतुल कपट रचि आइ ॥  
 दिपउ कहि सिवसिंह यह, लियउ छिन्नि बरवाड़ ॥ १२ ॥  
 जयसिंहहिँ अब जानि मृत, इहिँ सिवसिंह कबंध ॥  
 लिन्नोँ पुर बरवाड़ लारि, बसि करि कुम्भ प्रबंध ॥ १३ ॥  
 राजामल यातै अनुर्ज, रोक्यो बुंदिय जात ॥  
 पठयो इत सिवसिंह पर, बुल्लयो तैहँ यह बात ॥ १४ ॥  
 तुम सिवदास तयार हुव, बुंदिय दैन सहाय ॥  
 मगहि मध्य बरवाड़ पुर, जावहु ताहि छुराय ॥ १५ ॥  
 इहिँ कागन सिवदास अब, सजि दल प्रबल सिपाह ॥  
 गो पहिलै बरवाड़ गढ, दिन्नोँ तोपन दाह ॥ १६ ॥  
 इत बुंदिय संगर अतुल, सज्ज्यो संभरवार ॥  
 नगर जिति लिन्ने निकट, प्रासादन प्राकार ॥ १७ ॥  
 दक्खिन दिस महलन निकट, भैरव नामक द्वार ॥  
 तासौं कछु पच्छिम तरफ, कोटा दल रखवार ॥ १८ ॥  
 द्विज नागर गोबिंद वह, लरत हुतो दूठ लगि ॥  
 कनपट्टिय गोलिय लगिय, परयो स्वामि हित पग्गि ॥ १९ ॥  
 मरत बिप्र खिजि नृप उभय, लंब निसैनिन लाय ॥  
 घटिय इक्क१ जावत रजनि, लिन्नै महल छुराय ॥ २० ॥  
 अब इक तारागढ बच्यो, जैहँ दलेल भय जानि ॥

१ हठी २ देवै ॥ १० ॥ ३ बहिन ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ४ छोटे भाई का  
 ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ५ युद्ध ६ चहुवाण उम्मेदसिंह ७ महलों का कोट  
 ॥ १७ ॥ १८ ॥ ८ सेनापति ॥ १९ ॥ २० ॥

उमेरा सिंह का जय और दलेल सिंह का भागेना] सप्तमराशि- एकादशमयूख (३३७१)

तिहिं सिर पुनि हल्ला त्वरित, पृथुल रच्यो असि पानि ॥२१॥

॥ पट्टपात ॥

लैलै खेटक खग कटक पव्वप पर हंक्रिय ॥

नृप उमेद रहि मध्य समुख हनुमत जिम डंक्रिय ॥

अधिरोहिनि दिय जाय भये कंगुर कंगुर भट ॥

सु लखि दलेल शृगाल भज्यो नारिन जुत लंपट ॥

नैनवा मग आतुर लगिय खुल्लि द्वार पच्छिम अरर ॥

अंधार मास सावन अमा भुकि पुनि लगिय मेघभर २२

जिन नारिन सतखनन अकक पिक्कखन अकुलावत ॥

जिन नारिन जैव जोर पवन परसन नहिं पावत ॥

इकक सहल सन अन्य जात जिनकों श्रम लागहि ॥

कुचन आट लचकात भार मानहुं कैटि भगहि ॥

जिन पय प्रसून पंखुरि गडन रस बिलास मूंदुपन रजिग ॥

ते तिय दलेल नायक सहित भारन विच फटत भजिग ॥२३॥

॥ दोहा ॥

मेक सरित दुबलानपुर, जिम तिम लंघि दलेल ॥

प्रात होत लहि नैनवा, मन्थ्यो वपु जिय मेल ॥ २४ ॥

पतनी इकक दलेलकी, दासा जन दस १० मान ॥

बन विच भजत थकि रहिय, गय दूजेरदिन थान ॥ २५ ॥

दुजजनसल्ल उमेद इत, बुंदिय अमल बिथारि ॥

भंडे अप्पन गडि दिय, विजय पंताका धारि ॥ २६ ॥

कोटापति अब लोभ करि, अनुचित जो किय अंत्य ॥

१ घडा ॥ २१ ॥ २ हाथे तरवारें ३ कूदा ४ नीसैनियें ५ गीदड़ ६ कपाट ७ अमावास्या का अंधेरा ॥ २२ ॥ ८ सात खंड के महलों में ९ सूर्य भी १० देखने को ११ पवन भी बेग से चल से स्पर्श नहीं करने पाता १२ कमर १३ फूल की पांखड़ी १४ कोमल पन १५ दलेल सिंह पति सहित १६ झाड़ों के कांटों में ॥ २३ ॥ १७ नदी ॥ २४ ॥ १८ स्त्री १९ प्रमाण ॥ २५ ॥ २० ध्वजा ॥ २१ ॥ २१ यहाँ

सो पिकखहु नृप\*राम सब, अधरम अनेय अनत्य ॥ २७ ॥  
 पहिलें इहिं कोटापुरहिं, भूपतिसौं छल मिन्न ॥  
 मुल्लदम्म दुवलख २०००००के, कटैक किलंगि<sup>१</sup> लिन्ना २८  
 तेसीही अब तक्कि<sup>२</sup>, अंगमि बुंदिय अ<sup>३</sup>न ॥  
 नृप उमेद प्रति यह कहिय, तुमतेँ राज देवें न ॥ २९ ॥  
 पुर लोहितको परगनाँ, इमकहि भूपहिं अप्पि ॥  
 अवर देस लिन्नाँ अखिल, थानाँ अप्पन थप्पि ॥ ३० ॥  
 केसव पुर पट्टनि पाँम, बहुरि वरुंधनि नाम ॥  
 ए दुवर पुर ब्रजनाथ हित, करिय भेट छल काम ॥ ३१ ॥  
 बुद्ध नृपति किय पुण्य ते, ग्रामादिक दिय नाहिं ॥  
 इम बिसासघातक भयउ, कोटापति छल माहिं ॥ ३२ ॥  
 जरन अंत लुट्टिय सहर, इक<sup>४</sup> पहर धनवंत ॥  
 साहिपुरप उम्मेद लिय, दुवर गज द्रव्य अनंत ॥ ३३ ॥  
 देवें सुवन सिवसिंह वह, बैरिसल्ल कुल जात ॥  
 लरि जिहिं पंच<sup>५</sup> दलेलैके, गज लुट्टे वडगांत ॥ ३४ ॥  
 कोटापति सिवसिंहसौं, छिन्ने ते गज पंच<sup>५</sup> ॥  
 आदर बिनु सठ सिकख दिय, रक्खी कानि न रंच ॥ ३५ ॥  
 साहिपुरप कोटेससौं, इक दिन अक्खिय एह ॥  
 तुम निलज्ज अनुचित तकत, नीति धरम तजि नेह ॥ ३६ ॥  
 हम जानी बुंदीस सिर, करहिं छत्र कोटेस ॥  
 इम विचारि आये इहाँ यह जस सुनन असेस ॥ ३७ ॥

शुद्धजदेशीयाभाषा ॥

\* राजा रामसिंह सब १ अनीति आर अनर्थ देखो ॥ २७ ॥ २ हाथों में पहन-  
 ने के कड़े और १ मस्तक पर लगाने की किलंगी ॥ २८ ॥ ३ बुंदी के स्थान को दबा  
 पर ॥ २९ ॥ ४ उम्मेदसिंह को देकर ६ मय ॥ ३० ॥ ५ उत्कृष्ट (उत्तम) ॥ ६ कुल  
 करके ॥ ३१ ॥ ७ राजा बुधसिंह ने ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ १० देवसिंह के पुत्र ११  
 दलेजसिंह १२ यह शरीरवाले ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ १३ संपूर्ण ॥ ३७ ॥

मनोहरम्—दोस निज तातको उतागिबेकी बेग तुम,  
लीने मंगि कटैक किलंगी यातैं बालहो ॥

तिनहिं बिकाय फोज राखी सो तुमारी नाहिं,  
जातैं जंग जीति मन मानत निहाल हो ॥

प्रति उपकारक उमेद नृप जानों नैर,  
कोटा निज खोबहु कहावत नृपालहो ॥

जो तुम कहैंहुँ स्वामि धर्म न धरोगे तो बं,  
दुर्जनके साल नाहिं सज्जनके सालहो ॥ ३८ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृर्तामिश्रितभाषा ॥

दोहा—सुनि यह कोटापति सचिव, चारन भूपतिराम ॥

बुल्लयो साहिपुंगस सौं, कैसें करहु कुनाम ॥ ३९ ॥

सेनानी गोविंदसे, लगगे बुंदिय अर्थ ॥

खाय दम्भ लखखन परयो, कपौं तुम बदेत अकथ ॥ ४० ॥

यह सुनि साहिपुरेस तब, गो निज नगर रिसाय ॥

कोटापति बुंदिय बिभव, लुट्यो अखिल अघाय ॥ ४१ ॥

भट मोहनमिहोत निज, नगर पलहायत नाह ॥

तारागढ रखयो तबहि, रूपसिंह हित राह ॥ ४२ ॥

पुनि किसोगसिंहोत भट, अनतापुर पै अजीत ॥

ए दुवरे किल्लादार किय, पैटु रन धरम प्रतीत ॥ ४३ ॥

अवरहु निज रखे सचिव, निबहन राज्य असेस ॥

अपेन लै बुंदिय बिभव, कोटा गय कोटेस ॥ ४४ ॥

१ दुर्जनसाल के पिता भीमसिंह ने बुंदी छान ली थी उस दोष को उतारने के समय २ कड़े और किलंगी मांग ली ३ उम्मेदसिंह को पीछा उपकार करने वाला जानो ४ जिन कोटा के कारण राजा कहलाते हो उस कोटे को मत खोओ ५ इस कहने पर भी ६ अर्थ ॥ ३८ ॥ ७ शाहपुरा के पति से जोला ॥ ३९ ॥ ८ सेनापति ९ अर्थ १० झूठ बोलते हो अथवा नहीं कहने योग्य बातों कहते हो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ११ पति १२ युद्ध चतुर ॥ ४३ ॥ ११ अपना बुंदी

इत खत्रिय सिवदास लिय, पुर बरवाड़ छुराय ॥

दियउ कहि रहोर वह, जैपुर अमल बिधाय ॥ ४५ ॥

पञ्चटिका ॥

बरवाड़ समर सिवदास ठानि, जैपुर नरेश यह उचित जानि ॥

धूलापुर पति कूरम दलेल, बुल्लयो राजा उत मंत्र मेल ॥ ४६ ॥

कहि उचित ताहि बुंदिय सहाय, पठयो दलेल ढिग समय पाय ॥

वह तबहि नैनवा नगर पत्त, भिंटयो दलेल हित बिबिध बत्त ॥ ४७ ॥

अकखी पुनि ईश्वरिसिंह राज, दिल्लीपुर जावत कछुक काज ॥

जवनेस हिंतु काम सु सुधारि, बुंदीपर अहैं दल बिथारि ॥ ४८ ॥

वहैं हैं तब अप्पन अमल तत्थ, हड्ड सु उमेद गहि करहिं हत्थ ॥

पै जोलौ आवैं न कछवाह, तोलौन उचित अब समर चाह ॥ ४९ ॥

पूगै न अबहि हम बीर होय, दुस्सह उमेद कोटेस दोय ॥

दाऊ दलेल यह मंत्र चाहि, बहु मास रहे पुर नैनवाहि ॥ ५० ॥

इत जैपुर पति दिल्लिय प्रपत्त, सेयो सुरतान जु बिबिध बत्त ॥

बुंदिय पुर विग्रह बहुरि अक्खि, लिय साह हुकम करि सबन सक्खि ॥

इम रहत कुम्ह दिल्लिय अभंग, सेवंत साह अवनिय उमंग ॥

इत अभयसिंह मरु देस राय, किय चिर निवास अजमेर आय ॥ ५१ ॥

मम जनक पुब्ब यह नगर लिन्न, यह चिंति मरुप तहैं बास किन्न ॥

कूरम इत दिल्लिय कपट धारि, इक मंत्र साह छुन्नै विचारि ॥ ५२ ॥

राजामल मंत्रिय निज सिखाय, दक्खिन दल लावन दिय पठाय ॥

यह तबहि पत्त दक्खिन अनीक, किय साम बिगचि हितकथ कितीक ॥

का वैभव लेकर १ जयपुर का अमल करके ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ २ दलेल

सिंह हाडा के पास ३ मिला ॥ ४७ ॥ ४ बादशाह से ॥ ४८ ॥ ५ पान्तु ॥ ४९ ॥

६ कछवाहा और हाडा दोनों दलेलसिंह ॥ ५० ॥ ७ जाकर ८ सार्जी

॥ ५१ ॥ ९ कछवाहा ईश्वरसिंह १० मूमि के उत्साह से ११ मारवाड़ देश का

राजा १२ बहुत दिन तक ॥ ५२ ॥ १३ पहिले मेरे पिता ने ॥ ५३ ॥ १४ दक्षिण (मरहठों) की सेना लाने को १५ सेना में ॥ ५४ ॥

लिय रामचंद पंडित मिलाय, संध्या राखांजिय पुनि सुभांय ॥  
माहद उभयर इम लियउ फोरि, करि नेह दैन किय दैम्म कोरि

१००००००० ॥ ५५ ॥

इत नृप उमेद बुंदिय बिचारि, कोटेस लुब्ध अनुचित अकारि ॥  
हमरेहि द्रव्य सन रचिय जुद्ध, लिय बहुरि भुम्मि रचि कपट लुब्ध ५६  
तसमांत उचित नहिं पर सहाय, लौहैं बँहमहिं भुजबल दिखाय ॥  
उम्मेदनृपति यह मंत्र लाय, अजमेर गयउ बुंदिय बिहार्य ॥ ५७ ॥  
मरुधर नरेस सैन किय मिलाप, माहिपाल उभय रहि हित अमाप ॥  
इत उदयनैर जगतेस रान, बुंदी छुटी सु निरंख्यो निदान ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ दलेल-  
सिंहसहायार्थजैपुरपतिसचिवखन्धुपटङ्गगजामल्लाऽनुजशिवदासस-  
ज्जीकरणात्तदग्रजसम्मतिवरवाड़पुरयोधनतान्नदानकथनहड्डेन्द्रबुन्दी  
विजयकरणाकोटेशसनापतिमरणातारादुर्गाऽधिरोहणपारोपणपला-  
यमानदलेलसिंहनयनपुरगमनकोटेशबुन्दीवैभवलुगटनसर्वाधिकार  
स्वीकरणनृपार्थलोहितप्रान्तसमर्पणात्प्रतिसाहिपुरेश्वररुशन्धुपाल  
म्भदानमहारावकोटागमनाशवदासवरवाड़ावजयनकूर्मगजधूलाधि

१ श्रेष्ठरीति से ॥५५॥ २ रुपये १ लोभी ने४किया ५ लाभ ॥५६॥ ६ इसकारण  
७ अब ८ बुन्दी छोडकर ॥ ५७ ॥ ९ से १० कारण देखा ॥५८॥

आवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, दलेलसिंह की स-  
हाय के अर्थ जयपुर के पति (ईश्वरसिंह) का अपना सचिव, खत्री उपटंकवाले  
राजामल के छोटे भाई शिवदास को तयार करना १ उसके बड़े भाई की  
सलाह से वरवाड़ युद्धकरने का कारण कहना २ हाडों के राजा का बुन्दी विज-  
य करना और कोटा के पति के सेनापति का काम आना ३ तारागढ़ आदि  
पर नीसरनियें लगाना और दलेलसिंह का भागकर नैणवे जाना ४ कोटे के  
पति का बुन्दी का वैभव लूटकर सब पर अपना अधिकार करना ५ उम्मेदसि-  
ंह के अर्थ लोहितपुर का परगना देना ६ जिस के प्रति शाहपुरा के पति (उमेद-  
सिंह) का खिजकर उपालम्भ (ओलम्भ) देना ७ महाराव का कोटे जाना  
शिवदास का वरवाड़ को जीतना ८ कछवाहों के राजा (ईश्वरसिंह) का भूला

पतिदलेलसिंहनयनपुरप्रेषणसालम्याश्वासनजायसिंहिदिल्लीगमनम  
रूपत्यजमेरा ५५ गमनेश्वरीसिंहगजामलदक्षिणप्रेषणरजतमुद्राकोटि  
निवेदनप्रतिज्ञानश्रीमन्तसचिवराणाञ्जि १ रामचन्द्र २ मेलनहृद्वेन्द्र-  
कोटासहायलज्जापापणतद्बुद्धीत्यजनाजमेरगमनधन्वेशसमागम-  
नमेकादशो ११ मयूखः ॥ ११ ॥ ॥ २९२ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभषा ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जगतेस इत, जान्यौ समय नवीन ॥  
बुंदिय दहून छिन्नि लिय, है जैपुर बल हीन ॥ १ ॥  
यातैं भुव उद्यम करन, उचित काल अब आय ॥  
भागिनेयें हित दीजिये, ढुंढाहर बटवाय ॥ २ ॥  
यह बिचारिं कोटेम प्रति, पुनि पठये लिखि पैत ॥  
जीतैं जैपुर जंग जुरि, अब हम तुम अनुरैत ॥ ३ ॥  
सोधी दुर्जनसल्ल तब, उनकै गाढ न रंच ॥  
पहिलैही फीके परे, परि परि रान प्रपंच ॥ ४ ॥  
यह बिचारि पछी लिखिय, रचहु कुंच तुम रान ॥  
पीछैही हम आतहैं, जुगि जितहिं घमर्मान ॥ ५ ॥  
यह दल बंचि बिचारि तब, निज भट रान बुलाय ॥

के पति दलेलसिंह का नैणवे भेजना सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) को  
आश्वासन देना (विमासना) ९ जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का दिल्ली  
जाना १० मारवाड़ के पति का अजमेर आना और ईश्वरीसिंह का राजामल को  
दक्षिण में भेजना ११ फौड़ रुपये देने की प्रतिज्ञा का बोधकराना १२ श्रीम-  
न्त के सचिव राणाजी और रामचन्द्र को मिलाना २१ हाडों के इन्द्र (उम्मेद-  
सिंह) का कोटा की सहायता से लज्जा पाकर उसका बुंदी छोड़कर अजमेर  
जाकर मारवाड़ के पति से मिलने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और  
आदि से दोसौ बानवै २९२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ भानजे (माधवसिंह) के अर्थ ॥ २ ॥ ३ पत्र ४ प्रीतियुक्त हो-  
कर ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ मुद्रा ॥ ६ ॥ १ पत्र बांचकर

महाराणा और माधवसिंहकी जैपुर पर चढ़ाई] सप्तमराशि-द्वादशमयूख (३३७)

मरहठन ढिग मुकलन, दुवर तयार किय \*दाय ॥ ६ ॥

इक सलूमरि पुर अधिप, केसरि सुवन कुबेर ॥

बखतसिंह काका बहुरि, किय तयार हितकेर ॥ ७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकर हित कगगर लिखवाये, कोटि १००००००० दम्म तिहिं  
दैन कहाये ॥

लिखिय मल्लार भरोस तिहारैं, अब हम जैपुर विजय निहारैं ॥ ८ ॥

रामचन्द पंडित इम फोरहु, रागांजी सन पुनि हित जोरहु ॥

कूरम तुमहिं दैन जो करिहैं, तासों द्विगुन द्रव्य हम भरिहैं ॥ ९ ॥

कगगर इम लिखवाय दये कर, बखतशकुबेरदोहुपठये बर ॥

दोऊरतब दक्खिन दल पत्ते, अवसर पाय मिले अनुरतै ॥ १० ॥

रागांजी संध्या सुत तत्थह, जया नाम सब रीति समर्थह ॥

बदलि पग्घ तासों बखतेसह, मित्र भयो जिम धनद महेसह ॥ ११ ॥

यह सुनि रान सेन सजि दुद्धर, माधव जुत हंकिय जैपुर पर ॥

नागोर पै बखतेस कबंधह, अप्पन पुत्रिय स्वसुर हुतो वह ॥ १२ ॥

विजयसिंह वांको सुत व्याहो, स्वीय सुंता तातैं हित चाहयो ॥

इहिं कारन जगतेस रान अब, सत्थ लैन नागोर कटक सब ॥ १३ ॥

कनक मुल्ल रूपय दुवर लखन २०००००, पठयो बखतसिंह  
पहैं हितपन ॥

अक्खिय खरच एह अवधारहु, पृतनों निज मम भीर प्रचारहु ॥ १४ ॥

दुमति लुब्ध बखतेस बंछि दल, पुरै लयो रु नाहिं पठयो बैल ॥

\*रीति पूर्वक ॥ १॥ १ हित के लिये ॥ १॥ २ पत्र ३ रूपये ४ हे मल्लार ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० अष्टसेना में  
गये ११ अलुक्कल ॥ १० ॥ ८ समर्थ [यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो अन्य

स्थानों में भी ऐसाही जानना] ९ कुबेर १० शिव से ॥ ११ ॥ ११ माधवसिंह स-

हित १२ नागोर का पति बखतसिंह राठोड़ १३ महाराणा जगतसिंह की पु-

त्री का श्वशुर था ॥ १२ ॥ १४ बखतसिंह का पुत्र १५ राणा जगतसिंह की पुत्री १६

सेनासहित ॥ १३ ॥ १७ सुवर्ण १८ धारण करो १९ अपनी सेना मेरी सहाय पर २० भेजो

॥ १४ ॥ २१ खोटी बुद्धिवाला २२ लोभी २३ सुवर्ण तो लोलिया और २४ सेना नहीं भेजी



गज हय सिपाह उड्डिय गरद प्रबल अचानक भय परिग ॥  
भंपत सिचान खेरकोन गति मेवारन मद उत्तरिग ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

आय अचानक अरध निस, मरहठन दिय मार ॥  
भीत रान व्याकुल भयउ, बैलि किय साम बिचार ॥ २८ ॥  
यह उदंत मरहठ सुनि, रुचि बस छंडिग रीस ॥  
साम बिरचि किय रान सिर, दम्म लक्ख बाईस २२००००००  
नृप क्रूरम अरु रान पुनि, मरहठन मित्तवाय ॥  
कियउ साम दोऊ २ नकै, रस हित कछुक रचाय ॥ ३० ॥  
माधवहूके मिलनकी रामचंद्र किय बत्त ॥  
सो हुलकर मन्नी नही, रक्खपो पृथक बिरत्त ॥ ३१ ॥  
माधवहु यह सुनि कहिय, मै दुंढाहर राज ॥  
कैसै ईश्वरिसिंहसौं, सबै मिलन समार्ज ॥ ३२ ॥  
माधव रान बिगारि सुंह, तदनु उदैपुर पत्त ॥  
मरहठन जुत कुम्म नृप, घल्ली बुंदिय घत्त ॥ ३३ ॥  
सहर दैस लै किय सकल, अमल दलेल अधीन ॥  
तारागढ भो नहिं तबहि, बिंटयो जाय बलीन ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

धमि तोपन धमचक्क कोट तारागढ कंपिग ॥  
दुव २ कोटा भट देखि जानि परबल यह जंपिग ॥  
हम हड्डे बड बीर कढहिं फहरात फतूहैन ॥  
भग्गे जिम निकसै न प्रबल लगगत कलंक पन ॥  
जो जानदेहु संजुत रखैत तो कवि कीरति पहिहैं ॥

१ तीतर पत्तियों की आंति २ मेवाड़ बालों का ॥ २७ ॥ ३ पुनि ॥ २८ ॥ ४  
रूपये ॥ २९ ॥ ५ मरहठों ने दोनों राजाओं को मिलाकर ॥ ३० ॥ ६ जुदा रक्खा  
॥ ३१ ॥ ७ माधवासिंह ने भी ८ राजा ९ समा में ॥ ३२ ॥ १० मुख ११ जि-  
स पीछे १२ ईश्वरिसिंह ने ॥ ३३ ॥ १४ कहा १५ ध्वजा उड़ाते हुए १६ सामग्री सहित

नांतरि कठैँ न हड्डे मरद अड्डे पंजर कट्टिहैं ॥ ३५ ॥  
 सुनि हुलकर दिय बचन रैखत संजुत तुम जावहु ॥  
 कछुदिन कूरम जोर नाहिं बुंदिय तुम पावहु ॥  
 अजितसिंह अरु रूप तबहि कोटेस सुभट दुवर ॥  
 साजि बल खुल्लि निसान निकसि कोटा अध्वग हुव ॥  
 लुट्टिय दलेल बुंदिय सकल बुद्धसुतहिं चाहत निरखि ॥  
 कूरम समेत दक्खिन कटक दिन दुवररखिय लुद्ध लखि ३६  
 जुत दलेल कछुवाह तंदनु लौ दल मरहठन ॥  
 कोटा बिंटिय जाय रुड्डि लुट्टत मग रँहन ॥  
 ग्राम सगत पुर जाय अप्प उत्तरि चम्मलि तट ॥  
 लिय पत्तन गरदाय सेन संकुलि बट उब्बट ॥  
 बज्जिय निसान त्रंवरक बिखम दुसह फेर तोपन दगिय ॥  
 अंदर अलाव मच्चिय मनहुँ लंकापुर बंदेर लगिय ॥ ३७ ॥

॥ हीरकम् ॥

दक्खिन दल लौ दुँरूह कूरम दठ हेरयो ॥  
 कोटापुर जाय घोर धँतन घन घेरयो ॥  
 द्वेबट दल बंदि अप्प चम्मलि दिस तंडैयो ॥  
 अद्ध सु दल पुब्बओर जाय जोर मंडयो ॥ ३८ ॥  
 तोपन धर्मचक्र कोट लोपन पुर लगगयो ॥  
 गोलन गजवीन सोर संकुलि देव दग्गयो ॥

१ शरीर पड़े पीछे ॥ ३५ ॥ २ सामग्री ३ रूपसिंह ४ मार्ग ५ चम्मे-  
 दासिंह को देखना चाहते थे ६ लोभ देखकर ॥ ३६ ॥ ७ जिस पीछे = मार्ग  
 के बुंदी और कोटा के दोनों राष्ट्री (राज्यों) को ८ पुर को घेर लिया ९ मार्ग  
 और बिना मार्ग में सेना भरकर १० अग्नि ११ हनुमान् की लगाई हुई ॥ ३७ ॥  
 १२ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसी सेना लेकर १३ घातों से १४ गर्जना की  
 ॥ ३८ ॥ तोपों के १५ युद्ध में कोट और पुर का लोप होने लगा १६ गजब करनेवाले  
 गोलों ने १७ बारूद भरी हुई १८ अग्नि लगाई

कच्छप फटि पिट्टी नाग रीढक बररकयो ॥  
 दंतुलि तुटि कोल भोल भंभूट भुकि भूकयो ॥ ३६ ॥  
 अतल रु बितलादि लोक ओदँकि भय भग्गये ॥  
 दिग्गज डगमग्गि सोच मोचन मद लग्गये ॥  
 फोजन घन फेर भुम्मि जोजन दुवर हंकई ॥  
 ओजन भट भीर जंग मोजन इठि हंकई ॥ ४० ॥  
 टोलन पँवि पात डोल गोलेन गढ बिगोरें ॥  
 गज्जन पुर सोधं गोख छज्जन छटके परें ॥  
 मंडप फटि के लदाध खंभन गन उच्छटें ॥  
 थंभन थहराय ओक ओकेन अति उप्पटें ॥ ४१ ॥  
 उड्डत गढ खंड फेर गोलेन लागि बिक्खरें ॥  
 वज्जन कटि पँच्छजानि पब्बय फटि के परें ॥  
 कोट रु कपिसीस ओट उड्डत छवि गैँनमें ॥  
 चोटन पर चोट लोट लग्गत पुर लैनमें ॥ ४२ ॥  
 गोपुर परिकूट अट्ट पट्टन परि बँट्ट के ॥  
 कापथ अतिपँथ होत चम्मलि तट घँट्टके ॥

१ शेषनाग की पीठ (सांकल की हड्डी) तूटी २ वराह की दंतुली तूटकर ३ वह उस भग  
 डे (युद्ध) के झालों से झूटकर ४ गिरा (बैठ गया) ॥ ३६ ॥ ५ भय से डरकर भागे ६ शौच  
 (बिष्ठा, लाद) और मद छोड़ने लगे, फौजों के अधिक फैलाव से आठ कोस भूमि  
 ढक गई और वीरों की भीड़ पराक्रम के साथ युद्ध की लहरों में हठ करके चली  
 ॥ ४० ॥ पर्वतों पर ७ वज्र पड़ने की ८ तरह गोलों से गढ बिगड़ने लगा उन  
 तोपों की ९ गर्जना से नगर के १० महल, झरोखे और छाजे तूटकर पड़ते हैं  
 कितने ही लदाव के गुंमज फटकर खंभों का समूह उछड़ता है और ११ घर घर  
 में धंभे धुज धूज कर उपड़ते हैं ॥ ४१ ॥ फिर गोलों से गढ के टुकड़े हो  
 कर उड़ते और बिखरते हैं सो मानों वज्र से १२ पांखें कटकर पर्वत फटकर गिर  
 ते हैं कोट और १३ कांगरों की आड उडकर १४ आकाश में शोभायमान हो  
 कर उड़ते हैं ॥ ४२ ॥ १५ नगर के द्वार के आगे का कोट (पड़कोटा अथवा घू-  
 वस) और १६ बुरजें गिरकर कितने ही १७ मार्ग होते हैं २० चामल नदी के  
 किनारों के घाटों में १८ पगडांडियें (छोटे मार्ग) और १९ बड़े मार्ग होते हैं

द्विपथ रु त्रिक ओ चतुष्क रीति सु सब लुप्पई ॥  
 कुट्टिमं द्विग छति आनि छत्तिनं मिलि उप्पई ॥ ४३ ॥  
 अंगन घर अंगि सोर संगर अति उच्छरै ॥  
 जंगन अतिजोर दोर दंगन गढ विगगरे ॥  
 अंदर अकबकि लोक बंदर भय ज्यों दुरे ॥  
 मांदिरे पुर तूटि आनि चम्मलि जल के धुरे ॥ ४४ ॥  
 डंबर उडि खेह अंक अंबर सब लुक्कये ॥  
 ध्यान सु सिव छुटि तान अच्छरि गन चुक्कये ॥  
 चम्मलि जल छिजि मीन सम्मलि घन आवटे ॥  
 डुंगर डगमग्गि पक्क उंवैर गति के फटे ॥ ४५ ॥  
 सागर जल सेतु छोरि लोपन भुव लग्गये ॥  
 कोपन इम कुंम्म सेन तोपन दव दग्गये ॥  
 संगर दुव मास मंडि क्रूरम इम अंकुरयो ॥  
 सत्थहि मरदठ पिक्खि दुज्जनसल संकुंरयो ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

राशंजी संध्या सुवन, जया नाम अति जोर ॥

नगर में १ दो मार्ग, तिरपटा और चौहटे (चोपड़ के चजार) की सब रीतियें मिटगई ३ ऊपर की छन नीचे की छत से मिलकर २ नौव (बुनियाद) में मिलकर ४ शोभित हुई ॥ ४३ ॥ ५ धारुद की वह अग्नि उस युद्ध में घरों के चौकों में अत्यन्त उछली और उस बलवान् युद्ध के फैलाव में ६ आश्रय युक्त गढ विगड़ने लगा, भीतर के लोक घबराकर जिसप्रकार लंका में हनुमान् के भय से छिपे थे तिसप्रकार छिपने लगे ७ कितने ही मकान तूटकर चामल के जल में ८ घुल (मिल) गये ॥ ४४ ॥ खेह के उडकर ९ छाजाने से आकाश में १० सूर्य छिपगया अथवा सूर्य और आकाश सब छिपगये, शिव की समाधि छूटकर अप्सराओं का समूह तान चूकगया, चामल का जल छोड़ कर मच्छियों के साथ बहुत जीव ११ उषले १२ पर्यंत हिलकर पके हुए ऊमर वृक्ष के फल के समान फटे ॥ ४५ ॥ १३ मर्यादा छोड़कर १४ कोप के साथ कदवाहे की सेना ने इसप्रकार अग्नि जलाई १५ खड़ा हुआ १६ दुर्जनसाल स-कृपा ॥ ४६ ॥ राशंजी नामक सिंधिये का १७ पुत्र

ताकै इक१ गुटिका लगिय, घन रन मंडत घोर ॥ ४७ ॥  
 यह लखि कुम्भ दलेल सौं, चवि दक्खिन हितचाहि ॥  
 पंचप ग्राम जुत कापरनि, दंग दिवायउ ताहि ॥ ४८ ॥  
 दक्खिन जोर दलेल लखि, दियउ कापरनिदंग ॥  
 पुर पट्टनि पुनि सौंकमैं, अप्पिय राज्य उमंग ॥ ४९ ॥  
 तब पट्टनि लिप दक्खिनिन, क्रिय त्रिभाग बनि कैंत ॥  
 इक१इक१ हुलकर संधिपा, इक१विभाग श्रियमंत ॥ ५० ॥  
 संवत दुव नभ धृति समय १८०२, मेचक माधव मास ॥  
 पट्टनि यम कोटा प्रधान, गिल्यो गिनीमन घास ॥ ५१ ॥  
 ग्वाल सुरभि गजपाल गज, चक्कि रंजक पर चेलें ॥  
 जमी देत कर्षुकैं जिमहि, दिय यह दंग दलेल ॥ ५२ ॥  
 मरिगैं याहि रनके समय, चुंडाउति नृप मात ॥  
 कोटा मध्यहिं दाह किय, पैर भय जानि प्रपात ॥ ५३ ॥  
 मृतक कर्म निज मातको, किन्नौं लघु सुत दीप ॥  
 हो पुढकर मरुभूप सह, मिलि उम्मेद महीप ॥ ५४ ॥  
 दीपकुमरि अरु दीप दुवर, सोदर भगिनी भ्रात ॥  
 सह भालिय रानी सहयो, पुर कोटा दुख पात ॥ ५५ ॥  
 कोटा इम कूरम दई, मरहठन जुत मार ॥  
 महाराव सठ भीत मन, सम्मुह भो नहिं स्वार ॥ ५६ ॥  
 रूपय सोलह लख १६००००० लिय, मरहठ रु कछवाह ॥

१ गोली ॥ ४७ ॥ २ डस जया को ॥ ४८ ॥ ३ नगर ॥ ४९ ॥ ४ पति बनकर उस के ४ तीन  
 बंट किये ॥ ५० ॥ ५ वैशाख बदि ७ कोटा के युद्ध में ॥ ५१ ॥ जिसप्रकार  
 ८ गड का ग्वाल ९ हाथी को महावत ११ पराये वज्र को १० धोबी १२  
 भूमि का कर्सा, भूलकर और को और की देदेयै तिसप्रकार यह १३ नगर दले-  
 ल सिंह ने दिया ॥ ५२ ॥ १४ मरी १५ उम्मेदसिंह की माता १६ शत्रुओं के भय  
 का पड़ना जनाकर ॥ ५३ ॥ १७ दीपसिंह ने १८ मारवाड़ के राजा के साथ ॥ ५४ ॥  
 ॥ ५५ ॥ १९ गीदड़ ॥ ५६ ॥

च्यारि१००००००लक्ष पुनि बरस प्रति, लौ नैं किय दम राह॥

इस कोटा करि राजको, मद दिय कुंम्म उतारि ॥

कियउ कुछ निज निज घरन, दुवदल विजय विचारि ॥५८॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमऽशशौ समा-  
धवसिंहराणा जगत्सिंहजयपुरविजयार्थनिस्सरणादिह्नीत ईश्वरीसिंहा-  
ऽऽगमनसराजामल्लदक्षिणसैन्यराणावेष्टनदण्डद्रव्यनयनकूर्मराजबु-  
न्दीविजयकरणाकोटेश्वरसुभटानिकासनाऽनन्तरकोटायुद्धकरणा-  
राजिपुत्रजयाऽभिधानगुटिकाक्षतप्रापणातच्छुल्कीभूतपट्टनिपुरप्रभू-  
तिनिवसथनिवेदनहृद्देन्दमातृमरणाकोटातोदमद्रव्यग्रहणातच्चतुर्थांश-  
हायनिकरस्थापनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ २९३ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत पुक्खर उम्मेद नृप, माता मरन उदंत ॥

सुनि सब सखिय बेदविधि, मन्नि धरम दढ मंत ॥ १ ॥

खरच भीरु नृपकै बहुत, बिपति सकै न निबाहि ॥

प्रभु संभर तउ धरम पटु, करै सु अनुचित काहि ॥ २ ॥

मिलै जवहि सब सत्थकौ, अप्प असन तब लेत ॥

१ दंड के मार्ग से ॥ ४७ ॥ २ बड़े हाथी का ३ ईश्वरीसिंह ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में माधवसिंह सहित  
राणा जगत्सिंह का जयपुर को विजय करने के अर्थ निकलना १ दिल्ली  
से ईश्वरीसिंह का आना २ राजामल सहित दक्षिण की सेना का राणा को  
घेरकर दंड के रुपये लेना ३ ईश्वरीसिंह का बुन्दी विजय करके कोटा के पति  
को उमरावों को निकालने पीछे कोटा में युद्ध करना ४ जया नामक राखजी  
के पुत्र के गोली लगना और उसके खूंक (रिसवत) में पाटणपुर आदि ग्राम देना  
५ उम्मेदसिंह की माता का मरना ६ कोटा से दंड के रुपये लिये जिसके चतु-  
र्थांश का वार्षिक कर (खिराज) स्थापन करने का बारहवां १२ मयूख सम्पूर्ण  
हृष्मा और आदि से दोसौ तिरानवें २६३ मयूख हुए ॥

४ पुष्कर में वृत्तान्त ॥ १११ तंगी (सकड़ाई) उम्मेदसिंह ॥ २॥ ८ सब साथ को ६ भोजन

दुवर दुवरदिन लंघन बनै, दुल्लै तदैपि न चेत ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

असन बैर सह सत्थ पंति चोसर परिजावत ॥

जो व्यंजन सब अत्थ सोहि निज अत्थ लगावत ॥

मोहते सुभटन चित्त बिँत अप्पत हित जोरत ॥

स्मेरै सुमहिँ जिम भृंग सुभट इम नृपहिँ न छोरेत ॥

सब रतन फुट्टि घन घात जिम सूचीमुख कछु उब्बरिय ॥

ते भट उमेद भूपहिँ अतुल रहत बिँटि सट्टि६०हि घरिया ॥

भट प्रयाग अरु तोक बहुरि कल्यान भ्रात त्रय ॥

बीर भवानीसिंह तिमहिँ मजबूत धरम मय ॥

सूर धीर सिवसिंह बैरिसल्लोत महाबल ॥

इत्यादिक बड बीर नृपहिँ सेवत मन उज्जल ॥

सब धन निवेदिँ सद्धत हुकम बातजाँत जिम राम तट ॥

पिक्खै न हानि अप्पन प्रथित रक्खै हिय पतिकाम रट ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

अैसे भट नृप ढिग रहिय, अवर न बिपति प्रैपात ॥

तदपि भूप धीरज अतुल, सूर धरम सरसात ॥ ६ ॥

पर सहाय अनुचित परखि, तजि बुंदिय चहुवान ॥

सूर निकसि अैसे समय, बंधत लैन बिधान ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मरुपतिहू अजमेर भिँटिँ भूपहिँ करि अहर ॥

१ तोभी मन नहीं डुलता ॥ ३ ॥ २ भोजन के समय ३ सब के अर्थ ४ धन देता है ५ सुगंधि के कारण पुष्प को अमर नहीं छोड़े जैसे समराध राजा को नहीं छोड़ते हैं ६ हीरा घण की छोट से बच जाता है जैसे कुछ सुभट राजा के पास बच रहे ॥ ४ ॥ ७ भेट करके ८ जैसे हनुमान रामचन्द्र के पास ९ प्रसिद्ध १० स्वामी के काम का ही स्मरण है ॥ ५ ॥ ११ आपदा पड़ने से अन्य नहीं रहे, तोभी ॥ ६ ॥ ७ ॥ १२ मिलकर

उमैदसिंहका कुंदनकुमरी को व्याहना] ससमराशि-अयोदशमयूख (३३८७)

समुख जाय सनमान बिरचि आन्यो डेरन बर ॥  
सहै भोजन सह बास बिदित रचि हेत बढायउ ॥  
उभय२ मिलन आनंद पुण्यँ जस जगत पढायउ ॥  
बय अप्प जदपि सोलह १६ बरस अक्खि तदपि छोरन अलस ॥  
सिखयो चुहान खुरली सु घर रठोरहिँ मृगयाँदिरस ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मरुपतिकै उमराव इक, उदाउत रठोर ॥  
बखतसिंह रन पट्टु बिदित, रासि नगर सिर मोर ॥ ९ ॥  
अक्खी तिहिँ मरुईस सौँ, कन्या सुभ मम गेह ॥  
बुंदीसहिँ व्याहन उचित, अप्प करहु हित एह ॥ १० ॥  
अभयसिंहँ अक्खिय सुनत, तनयाँ बुल्लहु अत्थ ॥  
बुंदीसहिँ हम व्याहिँहँ, सुभ मुहूर्त हित सत्थ ॥ ११ ॥  
बखतसिंह सुनि बुल्लई, तनया अप्पन तत्थ ॥  
परिनाई कहि धन्वर्पति, संभर नृपहिँ समत्थ ॥ १२ ॥  
संवत दूग नभ धृति १८०२ संमा, रांध तीज ३ अवदात ॥  
इम रानिय कुंदनकुमरि, व्याहयो नृप बिख्यात ॥ १३ ॥  
इत दलेल कूरम उभय२, दै मरहठन सिक्ख ॥  
गुमर जोर जैपुर गये, तोर बिजय रन तिक्ख ॥ १४ ॥  
सुत खत्रिय सिवदासको, नंदराम अभिधान ॥  
वीरन जुत मेटन बिघन, रक्खयो बुंदिय थान ॥ १५ ॥  
इत संभर यह व्याह करि, आयो नगर भनाय ॥  
माता सन हित जुत मिल्यो, करन जोरि नत काय ॥ १६ ॥

१ अष्ट २ साथ ३ उचित ४ पवित्र यश ५ उसने घर में वाँ उस सुघड़ (चतुर) ने शस्त्र  
बिधा सीखी थीं सो ६ शिकार में राठोड़ को दिखलाई ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ पुत्री की  
यहां बुलाओ ॥ ११ ॥ ८ मारवाड़ के पति ने ॥ १२ ॥ ९ विक्रम के शक में  
१० वैशाख सुदि तीज के दिन ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ नामा ॥ १५ ॥ १२ उमैदसिंह ॥ १६ ॥



सस्मू यह जयसिंहकी, नृप बुधसिंह कलत्र ॥  
 पलटी जो नैय तजि प्रथम, तिहिं मंड्यो हित तत्र ॥ १७ ॥  
 दुलहनि दुल्लह अंग अति, लिन्नै निलैय वधाय ॥  
 कछुदिन रक्खे मोद करि, मेटन वह अंग माय ॥ १८ ॥  
 तदबुं मात सन सिक्ख किय, बुंदिय सिर नृप सज्जि ॥  
 दुलहनि रक्खिय तत्थही, रस उज्जल हित रज्जि ॥ १९ ॥  
 कोटाधीस सहाय सन, पहिलै बुंदिय पांय ॥  
 यातै नृप बिक्रम अबुल, सज्ज्यो पृथक रिसाय ॥ २० ॥  
 हिंडोली दरकुंच करि, दिन्नै आनि मिलान ॥  
 मैना बारह १२ खेटके, आनि मिले छक आन ॥ २१ ॥  
 दुव २ जीवाँ धनुही करन, दुव २ दुव २ पिठि निखंगै ॥  
 काँटि कटार बँलि वंसुरिय, सिर धवपत्त किलंग ॥ २२ ॥  
 बाँयुहिँ बा अरु किमहिँ का, अँकहिँ बुलत आँक ॥  
 भजत लरत लरि पुनि भजत, लँफि उडि बित्रक लाँक ॥ २३ ॥  
 संगके अरु सल्लहके, गुंगाके बल गात ॥  
 दामाँके अरु देवके, जग्गूके कुल जात ॥ २४ ॥  
 मैनाँ कुल इत्यादि मिलि, इम हुव हाजरि आनि ॥  
 पहुमी सिर सज्ज्यो नृपति, मन रन उच्छव मानि ॥ २५ ॥

१ स्त्री २ नीति छोड़कर ३ किया ॥ १७ ॥ ४ आघ (आदर) ५ घर में ६ बुधसिंह से  
 बदल गई थी वह पाप मेटने के लिये ॥ १८ ॥ ७ जिस पीछे ८ माता से  
 ९ शृंगार रस से शोभायमान दुलहन को वहीं छोड़ी. अथवा दुलहन को वहाँ  
 छोड़कर शृंगार रस की तर्जना की ॥ १९ ॥ १० बुन्दी पाई थी ११ जुदा ॥ २० ॥  
 १२ मुकाम १३ बारह खेड़ों के मैने ॥ २१ ॥ १४ हाथों में दो प्रतपंचा के धनुष  
 (धुर्रि) १५ भाथे (तरकस) १६ कमर में कटारी १७ और बंसी १८ एवं मस्तक  
 पर धोकड़ा (वृक्ष विशेष) के पत्तों की किलंगी ॥ २२ ॥ १९ पवन को २० आँक  
 के वृक्ष को २१ नीचे झुक कर उड़ते हैं २२ चीते के समान कमरवाले ॥ २३ ॥  
 २३ ऊपर कहे शृंगे पुरुषों के कुल में उत्पन्न ॥ २४ ॥ २५ ॥

हिंडोली पुरकी प्रजा, जुगल स्वामि सिर जोय ॥

सैन्य दम्भ सोलह सहस्र १६०००, नजरि किन्न नैत होय २६

नयपटु सबन बिसासि नृप, किय बुंदिय सिर कुच्च ॥

बजि सिंधुव डाहल बिसम, इम हं किय मन उच्च ॥२७॥

नंदराम इततैं निकसि, सहस्र पंच ५००० सिख संग ॥

पहुमी दबत पकखरन, अबभैं घसत उतैमंग ॥२८॥

बियदल आवत बीचड़ी, मिलिग आनि ताजि मोह ॥

गज्जरके घरियार गति, लग्ग्यो बज्जन लोह ॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः प्राशौ भूभृदु-  
म्मेदसिंहश्रीपुष्करद्वितीयो २ द्वाहकरणादलेलसिंहसहितकूर्मरा-  
जजयपुरगमनखत्रिशिवदाससुतनन्दरामबुंदीस्थापनहङ्गेन्द्रभणायन-  
गराऽऽगमनसपत्नजनन्यभिवादनतलैवराज्ञीनिवासनस्वयंबुंदीविज-  
यार्थसज्जीभवनहिंडोलीनगरसेनाप्रपतनद्वादश १२ खेटमैणासार्थ  
स्वामिचरणपतनविजयार्थप्रस्थानबीचड़ीग्रामसीमाशत्रुसैन्यमिलनं  
त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥ ॥२९४॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१ माथे पर दलेलसिंह और उम्मेदसिंह दो स्वामी देखकर २ नीति सहित रूपये  
३ झुककर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ आकाश को ५ मस्तक से घिसता हुआ अर्थात्  
जिसका मस्तक ब्रह्मांड से लगा हुआ ॥ २८ ॥ ६ ग्राम का नाम है ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, श्रृपति उम्मेदसिंह  
का पुष्कर में दूसरा विवाह करना १ दलेलसिंह सहित ईश्वरीसिंह का जय-  
पुर जाना २ शिवदास खत्री के पुत्र नन्दराम को बुंदी में रखना ३ उम्मेदसिंह  
का भणायन नगर में आकर अपनी सोतेली माता को नमस्कार करना ४ वहां  
राणी को रख कर अपनी बुंदी को विजय करने को सज्ज होना ५ हिंडोली  
में सेना का पड़ाव होकर चारह खेदों के मीनों का स्वामी के चरणों में गिरना  
६ विजय के अर्थ गमन करके बीचड़ी नामक ग्राम में शत्रु सेना से मिलने  
का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौरानवें २९४  
मयूख हुए ॥

॥ चटकप्लुत ॥

दुव२ सेन बग लीनी, \*कलि कोप अंख कीनी ॥

फन सेसनाग फुट्टे, दिगदंति दंत तुट्टे ॥ १ ॥

बरकी बराह दह्या, गिलि अंग कुम्म ठह्या ॥

दिगपाल कंफ लग्गे, पुट इन्द्र१४ भीति भग्गे ॥ २ ॥

सब सिंधु सेतु लुप्पे, कलि जानि बीर कुप्पे ॥

सिवकी समाधि जग्गी, नवमाल आस लग्गी ॥ ३ ॥

कइलास छोरि काली, चढि सिंह संग चाली ॥

चउसठि६४ चौंकि आई, घन मंडि नच्च घाई ॥ ४ ॥

दुवपंच५२ बीर दोरे, जेव डाकिनीन जोरे ॥

कलिंकार मोद पग्गे, महती बजान लग्गे ॥ ५ ॥

गुन अच्छरीन गाये, अति मोद भुंड आये ॥

नभ गिद्धनीन छायो, रवि रेनुमें लुकायो ॥ ६ ॥

चहुवान बाजि नक्खे, लखि आंखु जानि तंक्खे ॥

किलकार बीर बज्जी, समसेर मार सज्जी ॥ ७ ॥

कटि टोप जात भीके, जिम पत्र जोगनीके ॥

तरवारि धार धप्पे, अरि केनै स्वर्ग अप्पे ॥ ८ ॥

कर धूप भूप धायो, इत नंदराम आयो ॥

बिथुरी कैजाक बानी, मिलि बीर धीर मानी ॥ ९ ॥

बिबि२ ओर तीर बज्जे, लखि भीरु नीर लज्जे ॥

\* युद्ध में † दिशाओं के हाथियों के ॥ १ ॥ १ भूमि के चौदह पुट (लोक) डर कर भागे ॥ २ ॥ २ ससुद्रों ने मर्षादा छोड़ी ३ युद्ध जानकर वीर कोपे ४ नवीन मुंहमाला की आशा लगी ॥ ३ ॥ ४ वेग ६ युद्ध करानेवाला (नारद) हर्षित हुआ और ७ बीणा बजाने लगा ॥ ५ ॥ ८ आकाश ॥ ९ ॥ ९ घोड़े डाले (उठाये) १० चूहे को देख कर ११ ताखा नाग ॥ ७ ॥ १२ ठोके जाते हैं (निरन्तर प्रहार को डिंगल भाषा में भीकना कहते हैं) १३ कितने ही शत्रुओं को ॥ ८ ॥ १४ खड्ग विशेष हाथ में लेकर १५ युद्ध की बाणी (डिंगल भाषा में युद्ध का नाम जिपा है जिस संबंधी) ॥ ९ ॥ १६ दोनों ओर

बरछीन बेध लगैँ, परि सूर \*मुक्ति पगैँ ॥ १० ॥

घट के कटार कटैँ, मुख सूर नूर बटैँ ॥

फवि सेल पार फुटैँ, छक लोह प्रान छुटैँ ॥ ११ ॥

फटि घाय छिछि हलैँ, जलजंत्र जानि चलैँ ॥

सिख नंदरामके जे, लखि अदकैँ कलेजे ॥ १२ ॥

फटि ऽकोच गात फटैँ, जिम कोलि गब्भ कटैँ ॥

गहि कुंत नाभि गेरैँ, धमनीन मूल हेरैँ ॥ १३ ॥

उलटंत सांदि आली, हय होत केक खाली ॥

मग ओर खेह डुल्ले, जम स्वर्ग बैट खुल्ले ॥ १४ ॥

गजमत्थ फेट फुटैँ, जिम गोत्र कूट तुटैँ ॥

परि भीरु सोक कूई, परभोग ज्यो असूई ॥ १५ ॥

गंति हीन केक फोके, मन जानि संजमीके ॥

तजि प्रान जात सच्छी, तरु डुंड जानि पच्छी ॥ १६ ॥

मुधि भुल्लि केक बकैँ, जड़ जानि सीधु छकैँ ॥

कटि जात अंत हीसों, जिम पाप जैन्हवीसों ॥ १७ ॥

तरवारि भाँ चलकैँ, जिम संपिका सलकैँ ॥

हुव रत्त रत्त अंगे, रजतत्व जानि रंगे ॥ १८ ॥

दबिजात केक श्रेनी, नैर अस्व ती कि ऐनी ॥

\*मुक्ति पाते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ कुं हारा डरे ॥ १२ ॥ ऽकवच फटकर शरीर फटते हैं मानों ॥ केल वृक्ष का गर्भ कटता है - भाला लेकर नाभि में घुसेड़ते हैं सो ? मानों नाड़ियों (नसों) का मूल हेरते हैं कि कहां से निकली हैं ॥ १३ ॥ २ सवारों की पंक्ति ३ यमराज ने स्वर्ग का मार्ग खोल दिया ॥ १४ ॥ ४ पर्वतों के शिखर ५ कूप (कुए) में ६ जैसे दूसरे के ऐश्वर्य भोगने से असूया करनेवाला पड़े तैसे ॥ १५ ॥ ७ इन्द्रियों को रोकनेवाले का सच्छी (घृणा के साथ) अर्थात् शरीर की घृणा करके प्राण जाते हैं ८ टूट (बिना पत्तों के वृक्षमूल) को पछी छोड़े जैसे ॥ १६ ॥ जड़ मनुष्य ९ मय में छके जैसे १० हृदय से ११ गंगा से ॥ १७ ॥ १२ क्रान्ति १३ विद्युत (बिजुली) १४ रंगरेज ने अथवा रजो गुण में रंगे हैं ॥ १८ ॥ १५ अस्व जाति के पुरुष से १६ मृगी जाति की स्त्री

मिलि प्रेत डाकिनीसों, हिय मँडि गाढ हीसों ॥ १९ ॥  
 कुच तिकख तांस गड्डें, जिम बिदकैं सु बँड्डें ॥  
 कति जोगिनीन छीकैं, बढि जीत लोभ हीकैं ॥ २० ॥  
 सुहि पुँव्व भिँटनेमैं, जनु देत पुष्टि प्रेमैं ॥  
 कैति लै रु संडँ लेटैं, प्रतिसेभ जानि भेटैं ॥ २१ ॥  
 उदघृष्ट केक सजैं, कति पीड़िते न रज्जैं ॥  
 इम मत्त प्रेत सोहैं, मिलि च्यारि४भाँति मोहैं ॥ २२ ॥  
 भुव गाम बीचडीकी, हुव रत्त रत्त हीकी ॥  
 भिरि नंदराम भज्ज्यो, लखि खत्रि नीर लज्ज्यो ॥ २३ ॥  
 सिख तास संम्मुहाये, सँलभा कि दीप धाये ॥  
 तिन्ह तक्कि भूप 'नीरे, परि बीच खग्ग 'पीरे ॥ २४ ॥  
 हठ लगि हह मारैं, दुव हत्थ खग्ग भारैं ॥  
 कटि बग्ग बाजि फेरैं, हठि नंदराम हेरैं ॥ २५ ॥  
 भजिकैं छिप्पो सु खत्री, जिम सेन लाव पंत्री ॥  
 सिख हड्ड दोहु२सज्जे, बिकराल बाढ बज्जे ॥ २६ ॥  
 अति जंग संकुँल्यो वहाँ, अवमर्द दोन२क्यो वहाँ ॥  
 तरवारि केक तुटैं, घरियारि जानि फुटैं ॥ २७ ॥

दब जावे (जैसे काम शास्त्र में शश, मृग, अश्व इन तीन प्रकार के पुरुष और  
 मृगी, बड़वा, हास्तिनी ये तीन प्राकर की छिपें लिखी हैं जिन की व्याख्या  
 दूजी और तीजी राशि में विस्तार पूर्वक कर दी गई है) १ मसल (कुचल) कर  
 ॥ १९ ॥ २ उस डाकिनी के ३ बडा बेधन करते हैं ४ केवल लोभ करके  
 अथवा हृदय में जीतका लोभ करके ॥ २० ॥ ५ प्रथम मिलाप में ६ नपुं-  
 सक ७ शय्या पर ॥ २१ ॥ ८ घर्षण (रगड़ना) ९ पीड़ा देतेहुए तृप्त नहीं होते  
 उन उद्घृष्ट और पीड़ित आदिका विषय तीजी राशि में लिख आये हैं अस्थी-  
 क्षता के कारण अधिक लिखना नहीं चाहते ॥ २२ ॥ २३ ॥ १० सन्मुख हुए  
 ११ मानों दीपक पर पतंग दौड़े १२ समीप १३ तरवार से पीड़ित किये ॥ २४ ॥  
 ॥ २५ ॥ १४ शिकरे से लबा पची ॥ २६ ॥ दोनों ने १५ अवज्ञाशरहित, पीड़ाकरि

निकसंत नैन गोटे, फदकैँ कि भेक छोटे ॥

कति चाप अँचिँ आरँ, जिम काल डाँच फारँ ॥ २८ ॥

बिच तास भाल ठह्रा, सुहि जानि तिकख दह्रा ॥

फटि पेट अंत दीसी, पलटी कि पन्नगीसी ॥ २९ ॥

चउ ४ फार हीय मन्ने, जिम कंज च्यारि ४ पन्ने ॥

फटि कालखंज खुल्ले, फवि ज्यो पलास फुल्ले ॥ ३० ॥

सर लीन तुंद कूपी, बिल जानि नाग रूपी ॥

इम भूप जंग मंड्यो, सिख ब्रांत खगग खंड्यो ॥ ३१ ॥

अवसिद्ध केक लज्जे, मुख अगग भीत भज्जे ॥

तिन पिठि हड्ड धाये, त्रय ३कोसलों भजाये ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल सोदर सुवन, नंदराम गय भज्जि ॥

सिख कितेक सम्मुह मरे, नँद्रे कति जँल लज्जि ॥ ३३ ॥

सानुकूल नृपकी नियँति, लग्गे लोह न अंग ॥

अरि आहव भज्जे भरकि, जिम लखि वाज कुलंग ॥ ३४ ॥

नागर द्विज नृप भृत्य इक, नंदराय अभिधान ॥

सोहु सूर सम्मुह भयो, किन्नो हद घमसाँन ॥ ३५ ॥

मारे सिख बिक्रम अमित, जुरयो विविध जँयकार ॥

लग्गे बंभन वीरकैँ, सत्त७कूपान समार ॥ ३६ ॥

युद्ध किया ॥ २७ ॥ १ मैडक २ धनुष को ३ खँचकर जैसे ४ यमराज ५ मुख  
काड़ता है ॥ २८ ॥ ६ उस धनुष के बीच में तीर लगा है सोही मानों यम-  
राज की तीखी दाढ़ है ॥ २९ ॥ ७ कमल है ८ कलेजा ॥ ३० ॥ ९ पेट की ना-  
भी में बाण घुसते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है १० तिकखों के सज्जह  
को काटा ॥ ३१ ॥ ११ अवशिष्ट (बाकी के) ॥ ३२ ॥ १२ राजामल के भाई का  
पुत्र १३ नाठे (भाग) १४ पराक्रम को लजाकर ॥ ३३ ॥ १५ भाग्य १६ युद्ध  
से १७ चमक कर १८ सिखाण को देखकर कुलंग पत्नी भगैँ जैसे ॥ ३४ ॥ १९  
युद्ध ॥ ३५ ॥ २० जय करनेवाला २१ तरवार २२ मार (ग्रहार) सहित ॥ ३६ ॥

सोधि खेत नृप घायलन, लये नृजानन डारि ॥  
 बुंदिय आप रु भटन जुत, प्रविश्यो अररन फारि ॥ ३७ ॥  
 उदयराम पकरयो बनिक, लये अयुत दैम दम्म ॥  
 वैठो नृप बुंदिय तखत, करि निज हथ्यन कैम्म ॥ ३८ ॥  
 संवत दुव नभ धृति १८०२ समय, सावन तीज ३ बलच्छे ॥  
 असिबैर बल किन्नौ अमल, अधिपति बुंदिय अच्छ ॥ ३९ ॥  
 सुनि कछवाह दलेलसौं, अक्खी मम दैल संग ॥  
 मारहु जाय उमेदकौं, जुरहु बडे बल जंग ॥ ४० ॥  
 सटि दलेल सुनतहि नटयो, किन्न अरज करजोरि ॥  
 मंडहु तुम अप्पन अमल, मै बुंदिय दिय छोरि ॥ ४१ ॥  
 ताके कैर लिखवाय तब, कैंगर कैरम लीन ॥  
 नैनवा रु करउरनगर, रखे तौस अधीन ॥ ४२ ॥  
 अवर देस अप्पन करन, गिलैन अजीरन ग्रास ॥  
 बुंदियपर पिल्लियँ विकट, पैंतना सदैस पचास ५०००० ॥ ४३ ॥  
 नाम नरायनदास इक, खत्री रन हमगीर ॥  
 राजामल सिवदासको, भ्रात सज्यो बरबीर ॥ ४४ ॥  
 तिहिं करि कूरम सेनपति, पठयो बुंदिय लैन ॥  
 संग दये उमराव सब, उद्धत जे रन औनै ॥ ४५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः पद्यः

१ डोलियों में २ कवाड़ तोड़कर ॥ ३७ ॥ ३ दंड के दश हजार रुपये ४ अपने हाथों से कार्य करके ॥ ३८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष की ६ अष्टमि तरवार के बल से ॥ ३९ ॥ ७ मेरी सेना साथ लेकर ॥ ४० ॥ ८ अपना अधिकार ॥ ४१ ॥ ९ दलेल-मिह के हाथ से १० पत्र लिखाकर ११ कछवाहे ईश्वरीसिंह ने लिया १२ दलेलसिंह के अधीन रखे ॥ ४२ ॥ १३ अजीरन के ऊपर ग्रास (निवाला) गिटने के लिये भेजकर १४ सेना १५ भेजी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ युद्ध के स्थान में अनग्र ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा चतुर्थियों

सपत्नसैन्यबीचड़ीयुद्धकरणाखत्रिनन्दरामपलायनविजयिरावराट्स्वपु  
रप्रवेशनदत्तेलसिंहबुन्दीत्यजनपुनःकूर्मराजपुतनाप्रेषणां चतुर्दशो १४  
मयूखः ॥ १४ ॥ ॥२९५॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

सज्यो अब कूरम भूपति सैन, लगे भट घुम्मन बुंदिय लैन ॥  
बन्यो समयो यह दुस्सह आय, जहाँ फटि बाल तजै निज माय ॥१॥  
पिता सुतकों पतिकों निज नारि, तजै वह बैत बनी भयकारि ॥  
जनै जननी जु गिनै सब ठीक, वहै नर आहि न मध्य १००००००  
०००००००००० अनीक ॥ २ ॥

वहै नर आतम संबिंद धन्य, वहै नर जो न ततो मृग बन्य ॥  
वहै नरही गुन तीनन ३ ईस, वहै अवनीसनको अवनीस ॥ ३ ॥  
वहै जिम कूट तथा इक सार, वहै सब ओर न सुद्ध अपार ॥  
वहै नर तीन ३ अवस्थन एक, वहै सबघाँ सित धारन तेक ॥४॥

के इन्द्र का शत्रु सेना से बीचड़ी नामक ग्राम में युद्ध करना १ नन्दराम का  
भागना २ जयपाये हुए रावराजा का अपने नगर में प्रवेश करना ३ दत्तेल-  
सिंह का बुन्दी छोड़ना ४ फिर कछवाहों के राजा का सेना भेजने का चौद-  
हवां मयूख १४ समाप्त हुआ आदि से दोसौ पिचानवें २९५ मयूख हुए ॥  
१ सेना २ अपनी भाता को ॥ १ ॥ ३ वार्ता ४ भयंकर, माता के जन्म दिये हुए  
सभी मनुष्यों की गणना कीजाये तो वह ठीक मूल में लिखी हुई संख्या  
होती है (पुराणों के मत से इस संसार के सम्पूर्ण मनुष्यों की यह संख्या है)  
सो तो सभी इस सेना में नहीं ५ है (यदि उक्त संख्या के सभी मनुष्य  
एकत्र होते तो वह ब्रह्मज्ञानी पुरुष भी मिल जाता) ॥ २ ॥ ६ वह आत्मज्ञा-  
नी पुरुष धन्य है और जो वह आत्मज्ञानी पुरुष नहीं है तो उसके बिना अन्य  
पुरुष तो ७ वन के पशु हैं ८ वही आत्मज्ञानी पुरुष सत, रज, तम तीनों गुणों  
का पति है ९ वह राजाओं का राजा है ॥ ३ ॥ १० इस माया की रचना में  
११ सार (तत्व, स्थिर संज्ञा) रूप वही है १२ वह सय ओर व्याप्त है १३ भूत,  
वर्तमान, भविष्यत्, तीनों अवस्थाओं में वह एक रूप है १४ वह सय ओर  
स्वेत धारा का १५ खड्ग है ॥ ४ ॥



वहै नरही सब कृत्रिम सखिख, वहै यह मोघे रह्यो बिच रखिख ॥  
 वहैहि वहै गुनको नहिं जोग, वहै बिखई यह अन्न्य सु भोग ॥५॥  
 वहै अँज इष्ट अनादि अनंत, गुनत्रय ३ नारियको वह कंत ॥  
 वहै नहितो भव नाहक पाय, बिगारत बालिस जुब्बन माय ॥ ६ ॥  
 वहै इक १ रुंधंत नाहक नारि, वहै सठ अन्नदिको खंयकारि ॥  
 वहै पैय मात बिगारनहार, वहै रहि व्यर्थ करै भुँव भार ॥ ७ ॥  
 भयो नर नारि न लँछन एह, नहीँ कुच मुच्छन सुंदर देह ॥  
 हुते नहिं पाबिधि के भट हाय, बडे मरनीक तथापि बँलाय ॥८॥  
 कह्यो हम हाँ कछु बोधे बिचार, सुपौ वह बीर गिनै सब सार ॥  
 कहा मरनो अरु जीवन ताँस, कहा सुख दुख सब इक १ भाँस ९  
 वहै हि गिनै निजही सब वत्त, यहै रन तो भल होवहु अँत ॥  
 परंतु न हे इम कूरम बीर, गिने सुख अँछरि स्वर्ग सरीर ॥ १० ॥

वही मनुष्य १ इस जगत् का साक्षिरूप है यही इस रनाशवान् (मूठे) संसार को रख  
 रहा है १ वह ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्मस्वरूप आप ही आप (स्वयं ज्योति) है, उसमें किसी  
 गुण का योग नहीं है ४ वह भोग करनेवाला है और यह अन्य जगत् उसका  
 भोग है ॥५॥ ५ अजन्मा [जिसका कभी जन्म नहीं होता है] ६ तीन गुण रूखी  
 स्त्रियों का वह ७ पति है = वैसा ब्रह्मज्ञानी नहीं है तो यह संसार वृथा पाकर  
 १ वह मूर्ख माता का पौधन वृथा पिगाड़ता है ॥ ६ ॥ वह मूर्ख वृथा एक स्त्री  
 को १० रोकता है ११ वह मूर्ख अन्न का नाश करनेवाला है १२ वह मूर्ख माता  
 के दूध को पिगाड़नेवाला है १३ भूमि पर व्यर्थ भार करता है ॥ ७ ॥ यह नर  
 होगया है १४ स्त्री का चिन्ह नहीं है, नहीं तो स्त्री ही है, इसके कुच नहीं हैं १५  
 मूर्खों से देह सुन्दर है परन्तु पुरुष नहीं है खेद की बात है कि १६ इस सेना में  
 इसप्रकार के आत्मज्ञानी वीर नहीं थे १७ तो भी बडे मरनेवाले १८ बँलाय थे  
 (वन पशु विशेष जिसका अत्यन्त कोधी होना प्रसिद्ध है और राजपूताने में  
 उसको घूट और बागड़ भी कहते हैं और फारसी में आफत (आपदा) का ना-  
 म पलाय है) ॥ ८ ॥ १६ ज्ञान २० सब में सार रूप २१ उस आत्मज्ञानी के मरना  
 जीना क्या है २२ एक सरीखे हैं ॥ ९ ॥ २३ वह सब बात को अपनी ही जा-  
 नता है तो यह युद्ध भी २४ यहां भले ही होवै २५ कछवाहा ईश्वरीसिंह के  
 वीर इसप्रकार के नहीं थे २६ अप्सराओं के साथ स्वर्ग में शरीर का सुख

रु एहहि केवल सून धर्म, सुही तिन्ह रक्खि कसे दृढ बर्म ॥  
 सजे भट कूरम मानज सूर, खंगारज नाथज पानिप पूर ॥ ११ ॥  
 कल्याणज पूरनमल्ल कुलीन, द्वितीयरहु कुंभज आजि अदीन ॥  
 जथा बनबीर चतुर्भुज जात, धनै सिव ब्रह्मज इष्टप्रधात ॥ १२ ॥  
 सजे बलिभद्रज सेखैज सत्थ, धनै सुरतानुज संघ समत्थ ॥  
 नरुजै रु कुंभज अच्छरि नाह, कडे इन्ह आदि बडे कछवाह ॥ १३ ॥  
 सज्यो दलईसै नरायनदास, लये सब संग जग्यो बल जास ॥  
 चलयो दल जैपुरको तजि तैत, बढी रन जितहिं जितहिं बत्त ॥ १४ ॥  
 खुली गजपिठि धुजा पचरंगै, चले हय मप्पत छोनिं मलंग ॥  
 भई सह आलिपै कालिय गैल, बडे हित उग्र चडे चलि बैल ॥ १५ ॥  
 चलयो महती गहि नारद लार, चले गन बावनपुस्त्यो पैल प्यार ॥  
 चली चउसठि ६४ मलंगत चाल, चलयो गहि खप्पर खित्तरपाल ॥ १६ ॥  
 चले गन डाकिनि जैच्छ चुरेल, पिसाच रु रक्खस गुह्यक गैल ॥  
 चले कति डंकैत इक्कहिं पाय, चले कति दोउनभू धमकाय ॥ १७ ॥  
 चले कति मंडत नट कुलट, चले कति चौंकि इसे अटअट ॥  
 चले गन गिद्धनि चिल्हनि घोर, शृगाल रु कंक महा रन सोर ॥ १८ ॥  
 गहक्किं सेन सिवा किय गोण, चलयो दल कुम्भ प्ररुद्धत पोण ॥

माननेवाले थे ॥ १० ॥ अरु १ वीरों का केवल यही धर्म है, सो ही उनने रख  
 कर दृढ २ कवच कसे ३ कछवाहे वीर ४ मानसिंहोत (राजावत) ५ पूर्ण परा-  
 क्रमवाले ६ खंगारोत ७ नाथावत ॥ ११ ॥ ८ कल्याणोत ९ पूर्णमल्लो-  
 त १० दूसरे कुंभावत ११ युद्ध में दीनता रहित १२ चतुर्भुजोत १३ कितने ही  
 शिव ब्रह्म पोते जिनको युद्ध ही इष्ट है वे उस युद्ध में सजे ॥ १२ ॥ १४  
 बलिभद्र के वंश के बलिभद्रोत १५ सेखावत १६ सुरताणोत १७ समर्थ ससूह  
 १८ नरुके १९ कुंभावत २० अप्सराओं के पति ॥ १३ ॥ २१ सेनापति २२  
 तहां ॥ १४ ॥ २३ जयपुर की ध्वजा पांच रंग की है २४ भूमि को २५ सखियों  
 सहित कालिका साथ हुई २६ शिव ॥ १५ ॥ २७ महती नामक वीणा को २८ मांस के  
 प्यार से ॥ १६ ॥ २९ यत्न ३० एक पैर से कूदते हुए ३१ दोनों पैरों से ॥ १७ ॥ ३२ कुलांड  
 ॥ १८ ॥ ३३ प्रसन्नता की बोली बोल कर ३४ स्थाननिये ३५ पवन को रोकती

अटैं कति मंडि बरच्छिन वार, करैं कति लच्छिन बेध कटार १९  
 किते खुरलीपट्टु सद्धत खगग, मिलैं रचि केक तुपकन मगग ॥  
 बनैं कमनैतन पच्छिन बेध, सजैं कति कुंतन केलि सुमेध ॥२०॥  
 दिपैं रसबीर गिनैं तन देह, छुहे निज साहस देत न छेह ॥  
 छलैं छक हूर चहै कति छैल, चलैं द्रुत मंडित कुंकुम चैल ॥२१॥  
 मलप्पत बाजिन के मचकाय, धरातल दब्बत बेग धुजाय ॥  
 चल्यो दल दुहर यौं दरकुच्च, उठावत दुगनको छक उच्च ॥२२॥  
 लग्यो भर भोग पलटन सेस, भयो गिलिअंगदरी कमठेस ॥  
 तुटी लखि दह दयो किंरि तुंड, भौरैं रैद कपिम दिग्गजभुंड ॥२३॥  
 उडे खुलि केतन कुंभिने कंध, डिगे डर डंकन भीरुन बंध ॥  
 छिप्पो निस चंद रु बासर अक, चहैं निस घूक तथा दिन चैक २४  
 सुपै सुधि नां निस बासर संधि, बन्यो तम तोमं प्रैमा घन बंधि ॥  
 चले इत सँदल मँदल चाँस, मिले इत बदल भँदल मास ॥ २५ ॥  
 छल्यो इत पानिपै ओ उत नीर, सहायक त्यों रसबीर सँमीर ॥  
 घुरैं इत नोबति ओ उत गँज्ज, इतैं भुव पाय उतैं नभ सज्ज ॥२६॥

हुई कछवाहों की सेना चली १ निशानों (चिन्हों) को ॥ १९ ॥ २ शस्त्रा-  
 भ्यास में चतुर ३ भालों से क्रीड़ा करते हैं ४ श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ २० ॥ ५  
 क्रोध में आये हुए ६ रसिक ७ केसरिया वस्त्र ॥ २१ ॥ ८ कितनेही घाड़ों  
 को उड़ाते हैं ॥ २२ ॥ ९ भार से शेषनाग फणों को १० पलटने लगा ११ क-  
 मठ अपने अंगों को गिट (ममेट) कर कंदरा रूप होगया १२ बराह ने १३ दन्त  
 तृट कर दिग्गज धूजे ॥ १३ ॥ १४ हाथियों के ऊपर १४ ध्वजा खुल कर उड़ी १५  
 भय से १७ कायरों के बंध डिग कर डरे, रात्रि में चंद्रमा और १८ दिन में सूर्य  
 छिपा, घूघू (उलूक) रात्रि को और १९ चक्रवा दिन को चाहने लगे ॥ २४ ॥ परं-  
 तु दिन और रात्रि की संधि (संध्या) की सुधि नहीं रही इसप्रकार २० अंधेरे  
 का समूह २१ मेघ की क्रांति बांध कर रही २२ इधर तो शब्दायमान होकर २३  
 मर्दल (वायु विशेष) २४ युद्ध की खबर देकर चले और इधर २५ भाद्रपद मास  
 के बदल मिले ॥ २५ ॥ २६ सेना रूपी घटा में पराक्रम और मेघ की घटा में  
 पानी घटा और इनके सहायक सेना में बीर रस और मेघ में २७ पवन हुआ  
 इधर नोबत का शब्द और उधर २८ गर्जना हुई और सज्जिन होने को इधर

इन्हें न चहैं रु उन्हें जग आस, वनैं इत शस्त्र उतैं जलबाँस ॥  
 इतैं बहुरंग उतैं सित स्याम, लसैं इत ओ उत बेग ललाम ॥ २७ ॥  
 लसैं इत अग्र उतैं लहरून, दिपैं मुद सूर मयूरन दून ॥  
 इतैं गजदंत उतैं बक ब्रांत, इतैं उत दोरत अग्र दिखात ॥ २८ ॥  
 इतैं उत पक्खर दंडुर बुल्लि, इतैं उत गिद्ध रु चातक फुल्लि ॥  
 इतैं उत खग रु बिज्जुन ओघ, इतैं उत होत धरा नभ मोघा ॥ २९ ॥  
 इतैं उत ओज ईरम्मद भास, रजोगुन बूढनि ब्रात बिलास ॥  
 अरैं सर यौ उत ऊँसर जुत, इतैं उत भूपन भंभन पुत ॥ ३० ॥  
 कहैं इत लैन मही कछवाह, कहैं उत पिक्खि हमैं वह चाह ॥  
 कहैं यह नीति बिथारन कथ, कहैं वह अन्न प्रचारन अथ ॥ ३१ ॥

भूमि प्राप्त हुई और उधर आकाश प्राप्त हुआ ॥ २९ ॥ १ इस सेना को कोई नहीं चाहता था और मेघ की आशा संसार करता था, इधर शस्त्रों का और उधर जल का २ निवास है अथवा जल ही वस्त्र है सेना में अनेक रंग हैं और उधर ३ स्वेत और काला रंग है और इधर उधर दोनों ओर ४ सुन्दर वेग शोभायमान है ॥ २७ ॥ इधर सेना का ५ अग्र भाग और उधर लहरें शोभित हैं, सेना में वीरों को और मेघ में मयूरों को ६ इन दोनों का हर्ष शोभा देता है अथवा इन को दुगुना हर्ष शोभा देता है, सेना में हाथियों के दंत और मेघ में बक (बुगला) पक्षियों का ७ समूह है जो दोनों ओर आगे दौड़ते दीखते हैं ॥ २८ ॥ इधर पाखरों और उधर दादर (मैंडक) बोलते हैं और इधर ओघ और उधर चातक फूलते हैं ९ इधर तरवारों का और उधर बिजुलियों का समूह है, इधर सेना से ढक कर पृथ्वी नहीं दीखती और उधर मेघ से ढक कर आकाश नहीं दीखता ॥ २९ ॥ इधर १० पराक्रम और उधर ११ मेघज्योति का प्रकाश होता है और इधर १२ रजोगुण (रजोगुण का रंग लाल है) और उधर १३ वीरबहूटी (सावण की डोकरी) का विलास है इधर वाणों की वर्षा होती है और उधर १४ ऊँसर भूमि में बरसता है १५ इधर राजाओं के पुत्र हैं और उधर १६ ब्रह्मा का पुत्र (इन्द्र) है ॥ ३० ॥ इधर कछवाहा भूमि लेने को कहता है और उधर इन्द्र पृथ्वी १७ देखने की चाह कहता है अथवा हम को देखते ही वह भूमि चाहना करता है, यह (कछवाहा) तो नीति १८ फैलाने की वार्ता कहता है और वह (मेघ) अन्न का प्रचार करने के १९ अर्थ कहता है ॥ ३१ ॥ इधर तो भूमि को ये अपनी कहते हैं और उधर बहुत घुमंड कर

कहैं इत है सब अप्पन भुम्मि, कहैं उत अप्पन है घन घुम्मि ॥  
 कहैं इतहैं रवि ठंकन द्वार, कहैं उत बहल ज्यों न विधार ॥ ३२ ॥  
 कहैं इत चाप चढावन बत्त, कहैं उत सज्जित आयत अत्त ॥  
 इतैं रज अद्रि उडावन बाद, कहैं उत रक्खहि संबर साद ॥ ३३ ॥  
 कहैं इत मंडहिं गोलीन गान, कहैं उत भूक करैं करकान ॥  
 कहैं इत बानन छावन देस, कहैं उत बुंदनतैं न बिसेस ॥ ३४ ॥  
 कहैं इत आयुध बुद्धि अनल्प, कहैं उत बुद्धि करैं हम कल्प ॥  
 इतैं प्रभु कुम्म उतैं सुरईस, इतैं उत सज्जित छोनियैं सीस ॥ ३५ ॥  
 बढे दैल बहल यों रवि बाद, सु सोनित संबर मंडन साद ॥  
 दिपे" प्रविसे इत बुंदियदेस, अरे बिथुरे उत भुम्मि असेस ॥ ३६ ॥  
 बन्पाँ इम कूरम सेन प्रयान, सुन्याँ नृप बुंदिय धर्म सयान ॥  
 उँपो रनपैं जिम व्याह उछाह, सजे मनबंछित जानि सनाह ॥ ३७ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बु-

मेघ अपनी कहता है सेना कहती है कि मैं खेह से सूर्य को ढकनेवाली  
 और मेघ कहता है कि तुमारा १ विस्तार बादलों के समान नहीं है ॥ ३२ ॥  
 इधर २ धनुष चढाने की बात कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि यहाँ ह-  
 मारा धनुष ३ लंबा है, इधर तो ४ पर्वतों की रजी करके उडाने का बाद (हठ)  
 करते हैं और उधर ५ जल का कीचड़ करके उनकी (पर्वतों की) रक्षा करना  
 कहते हैं ॥ ३३ ॥ सेनावाले कहते हैं कि गोलीयों का गान करेंगे और मेघ  
 कहता है कि ६ गड़ों (ओलों) से बाधिर कर देंगे, इधर देश को बाणों से छा-  
 दित करना कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि वे बाण बुंदों से विशेष नहीं  
 हैं ॥ ३४ ॥ इधर ७ बहुत शस्त्रों की वर्षा करना कहते हैं और उधर वृष्टि क-  
 रके ८ प्रलय करदेना कहता है, इधर तो ९ कछवाहा (ईश्वरीसिंह) स्वामी है  
 और इधर १० इन्द्र स्वामी है, इधर उधर दोनों ११ पृथ्वी पर सज्जित होते हैं  
 ॥ ३५ ॥ इसप्रकार १२ सेना और बादल दोनों बाद करके रुधिर और पा-  
 नी का १३ कीचड़ करने को चढे १४ सेना तो बुंदी के देश में प्रवेश करके  
 शोभित हुई और मेघ हठ करके संपूर्ण भूमि पर १५ फैल गया ॥ ३६ ॥ १६  
 युद्ध पर उदय हुआ (उठा) १७ कवच ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तम राशि में, बुन्दी विजय करने

न्दीविजयार्थकूर्मराजकटकनिस्सरशास्तनयित्सुसहाऽऽधिकयाभीऽ -  
 मननतद्बुंरीशअवशात्साहवर्द्धनं पञ्चदशो १५ मयूखः॥१५॥२६६॥  
 प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लौ बुंदिय नृप प्रसभ लागि, खमगै पताकन खुलि ॥  
 अवलौजुत अनुजा अनुज, कोटा सन लिय बुलि ॥ १ ॥  
 दीपकुमारि अरु दीपहरि, तव बुल्ले छक तोर ॥  
 रानी झल्लिय सह रुचिर, जय रन जुव्वन जोर ॥ २ ॥  
 कोटापति नृप बित्त लौ, दूनों गरव दिखाय ॥  
 मन अरि उप्पर मित्र बनि, लिय बुंदिय छक लाय ॥ ३ ॥  
 सो लखि नृप कृतधन समुक्ति, उदासीन रहि अर्थ ॥  
 भुजदंडन लिय अप्प भुव, सजि असु त्याग समत्थ ॥ ४ ॥  
 गजव कार्र कोटेस गनि, भयकारक अब भूप ॥  
 सिर उठाप मूढ न सकत, रद तोरे अहि रूप ॥ ५ ॥  
 अंतहपुर संजुत अनुज, बुल्ले नृप इहिं बेर ॥  
 कोटापति कहहु न कहयो, संकित मन गिनि सेर ॥ ६ ॥  
 तिनहु आय भिट्यो त्वरित, निज प्रभु आत निसंक ॥  
 रुचि उपेत भूपति रहयो, आतपन्न धरि अंक ॥ ७ ॥  
 अह सोलह १६ भुग्यो अधिप, रहि सूरन गति राज ॥

के अर्थ कछवाहों के राजा की सेना का निकलना १ उसका सेव के साथ  
 अधिकता का अभिमान २ उस को बुन्दी में सुनने से उत्साह बढ़ने का पन्द्र-  
 हवा १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छिनवे २०६ मयूख हुए ॥  
 १६ ठ लग कर २ आकाश मार्ग में ३ छी सहित ४ छोटी बहिन और छोटे भाई ॥ १ ॥  
 ५ दीपसिंह के ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ यहाँ ७ प्राण छोड़ने को ॥ ४ ॥ ८ गजध कर-  
 नेवाला ९ दन्त लूटे हुए सर्प के सदृश ॥ ५ ॥ १० जनाना सहित ११ बुलाये १२  
 सिंह रूप जानकर ॥ ६ ॥ १३ मिला १४ रुचि सहित १५ छत्र सहित १६ भाई  
 को गोदि में लिया ॥ ७ ॥ उस राजा ने वीरों की गति से रह कर १७ सोलह

सबल सज्यो दिन सत्रहम १७, सञ्जुन विसम समाज ॥ ८ ॥  
 असित भद्र पंचमि ९ दिवस, चल्ल्यो अरि चतुरंग ॥  
 सत्तमि ७ दिन भूपति सुन्यो, जामिनि सुतै जंग ॥ ९ ॥  
 रहसि निवेदिय नाजरन, दासिन जुत दुत दाय ॥  
 जगि पहिलै रानिय जैप्यो, जग्गे अदिन लाय ॥ १० ॥  
 सिंहनि अखिय सिंहसों, कित सोवहु अब कंत ॥  
 जिन हथिन कुंभन जलज, ते आवत धुमडंत ॥ ११ ॥  
 जिनहित लंघन लंघिकें, खड्गो ओर न मंस ॥  
 सहजै ते आवत सुनै, बरन भद्रन वंस ॥ १२ ॥  
 लंबी हथल लंकै तनु, उछट परखहु आज ॥  
 भूख न कहहु भावते, रोसिल्ले मृगराज ॥ १३ ॥  
 जिन कुंभन नख नाहके, बनै घटा जिम बाज ॥  
 हम कोतुक वह पिकिखैं, खुल्लहु रंचैक खीज ॥ १४ ॥  
 ईतर मृगन अपराधपै, नयन उधारत नाहिं ॥  
 त्योंही जो यह तकिहो, योंही तौ नह आहिं ॥ १५ ॥  
 भूख निकासहु भोनैतै, गंजि गंजन बल गह ॥

दिन तक राज्य भोगा और सत्रहवें दिन शत्रुओं के विषम समूह पर सजा  
 ॥ ८ ॥ १ सेना २ रात्रि में सोते हुए ने ॥ ९ ॥ ३ एकान्त में ४ शीघ्र  
 रीति पूर्वक ५ रानी ने कहा ॥ १० ॥ ६ रानी रूपी सिंहनी ने राजा रूपी  
 सिंह से कहा ७ हे पति ८ जिन हाथियों के कुंभस्थलों में मोती हैं वे  
 ड कर आते हैं ॥ ११ ॥ जिन भद्र जाति के हाथियों के कारण उपवास कर  
 के अन्य ९ मांस नहीं खाया है वे भद्र जाति के १० हाथी सहज में आते  
 हैं ॥ १२ ॥ लंबी हाथल और पतली ११ कमर की १२ फुरती और दान  
 आज परीक्षा करनी है सो १३ हे प्यारे कोधवाले सिंह अब भूखे मत  
 ॥ १३ ॥ जिन हस्तिओं के कुंभस्थलों में पति के लख घटा में विद्युत् के समान  
 न बनते हैं वह खेह हम १४ देखेंगी सो १५ कुछ कोध करो ॥ १४ ॥ जिस प्रकार  
 तुम १६ अन्य मृगों के अपराध पर नेत्र नहीं खोलते हो उसी प्रकार जो  
 १७ देखोगे तो वे वैसे ही तो नहीं १८ हैं ॥ १५ ॥ बड़े बलवान् २० हों  
 को मार कर १९ घर से भूखे को निकालो,



कुंभ सांन तिकखी करहु, देहारे घसि दह ॥ १६ ॥  
 एक तरच्छु चित्रक बहुल, इत सिंव स्वान अधप्प ॥  
 सरभ भरोसैं जियत सब, अब दग खुल्लहु अप्प ॥ १७ ॥  
 रमनीके सुनि बैच रुचिर, अँड गुंमर अलसात ॥  
 सिंह कह्यो जगि सिंहनी, होवन देहु प्रभात ॥ १८ ॥  
 होत होत यह बत्त हुव, कूकवाँकुन ध्वनि कान ॥  
 उठयो तजि गलबाँह अब, चंड सरभ चहुवान ॥ १९ ॥  
 इत रानिय बज्जत सुनै, गँरुत गिद्धनिन गैरै ॥  
 बुल्ली अब देर न बहिनि, चित तुम रक्खहु चैन ॥ २० ॥  
 दैनद्वार गज कालिकन, गूँद पलन अब गाँह ॥  
 तिहिँ मम कंतहिँ नैक तुम, सज्जन देहु सनाह ॥ २१ ॥  
 बीरनके बहुविधि बैपा, लाभ जथारुचि लेहु ॥  
 असिमुष्टि रु हयपिष्टि अब, पतिकौ पावन देहु ॥ २२ ॥

और रहे सिंह कुंभस्थल रूपी सांण पर डाढों को घिस कर ताखी करो ॥ १६ ॥ बहुत  
 ३ भेड़िये (व्याली) ४ अदबेसरे (घघरे) अर्थात् छोटे सिंह ५ चीते १ गीदड़, कुसे प्रुखे हैं  
 और ये सब ७ केसरी सिंह (बबरी नाहर) के भरोसे पर जीवित रहते हैं इसकारण  
 अब ८ आप नेत्र खोलो ॥ १७ ॥ ९ प्यारी (छी) के ऐसे रुचिकारक १०  
 वचन सुनकर ११ अँड और घमंड में आलस्य करते हुए (यहां अँड और गु-  
 मर ये दोनों घमंड बाधी पर्याय शब्द हैं जो अत्यन्त घमंड दिखाने को एकार्थ  
 याची दो शब्दों का प्रयोग किया है जो काव्यों की शैली है कि जिसकी अ-  
 धिकता दिखानी होवे वहां एकार्थवाची दो शब्द देते हैं और व्याकरण का भी  
 यही मत है कि 'वीप्तायां द्वे' वीप्ता में एकार्थवाची दो शब्द होते हैं यथा  
 ॥ श्लोकः ॥

शैले शैले न माशिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे ॥

देशे देशे न विद्यासश्चन्दनं न वने वने ॥ १ ॥

सिंह ने कहा कि हे सिंहनी प्रभात होने दे ॥ १८ ॥ १२ सुगों के बोलने का  
 ११ शब्द हुआ १४ चहुवाण (हमेश्वरसिंह) रूपी भयंकर सिंह वठा ॥ १९ ॥ रा-  
 नी ने १६ आकाश में गीधनियों के १५ पंख बजते हुए सुने १७ चरबी (मीजी)  
 और मांस को १८ मधकर भोजन के अर्थ कालिकाओं को हाथी देनेवाले रैर  
 पति को कवच पहनने दे ॥ २१ ॥ १९ चरबी का ॥ २२ ॥



इम रानिय इत गिदनिन, अकरूपो विहित बिमास ॥  
इत कर अँची मुच्छ नृप, पैंगि रसबीर प्रकास ॥ २३ ॥

॥ षट्पात ॥

गहत मुच्छ चहुवान फाँक दारिम भुव फटहि ॥  
भुव फटत अति भार अतल बितलादि उलटहि ॥  
अतल आदि उलटत पान कच्छप अहि छोगहि ॥  
पान तजत पाताल वारि उच्छलि जग बोरहि ॥  
जल तल उफान बुद्धत जगत भग्निहि लोक प्रपंच भुव ॥  
प्रकटहि कैटाह भग्गत प्रलय भगहि मुच्छ बुधसिंह सुव २४

॥ निशशाखी ॥

कान भनक तबतै परी चढि कुँम्म चलाया ॥  
तबतै संभर तंडि कै सिर अँवभ लगाया ॥  
लाइ जरूरी लगि कै संध्या क्रम लाया ॥  
सौवित्री जप इक सहस्र १००० रस भक्ति रचाया ॥ २५ ॥  
नित्य निवेद्यो प्रातको धन बिप्र धपाया ॥  
सेनासँ रन सज्जकों आदेशँ लगाया ॥  
सोर नकीवों संकुले चहुँओर चलाया ॥  
फटे कैंगर देसमें फिरि दूत फिराया ॥ २६ ॥

? उचित विश्वास रबीर रस में प्राप्त हो (भीज) कर ॥ २३ ॥ अग यहाँ कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि उम्मेदसिंह के सूख ग्रहण करते ही दाहिम की फाँक के समान भूमि फटेगी और भूमि के फटने से अतल बितल आदि नीचे के लोक उलटेंगे उनके उलटने से शेषनाग और कमठ पराक्रम छाँड़ेंगे जिससे पाताल से ५ जल उछल कर ६ संसार को डूबोवेगा ७ नीचे का जल बटने से संसार डूबकर भूमि की लोक रचना मिटजावेगी ८ ब्रह्मांड के नाश होते ही प्रलय होवेगा इस कारण हे बुधसिंह के पुत्र सूख को मत पकड़ो ॥ २४ ॥ १० कछबाहा ११ उम्मेदसिंह ने १२ गर्जना करके १३ आकाश में मस्तक लगाया १४ लाभ १५ गायत्री के ॥ २६ ॥ १६ ब्राह्मणों को १७ हुकम दिया १८ शब्द भरा १९ पत्र बंदे २० वृत्तों ने फिरकर उन पत्रों को फिराये ॥ २६ ॥

भंडे बाहिर गडिकैं धुजदंड \*भुकाया ॥  
 फूल भराया सानपैं असि बाढ चिराया ॥  
 सिल्लहखानाँ खुल्लिकैं बर हेति बढाया  
 टोप बकत्तर ओप के दसतान दिपाया ॥ २७ ॥  
 कंतौँ छ्छादन कुंकुमी रन मोद रंगाया ॥  
 केतौँ अछ्छरि चाहिकैं सिर मोर बनाया ॥  
 ब्रंव ब्रह्मके ॥ कल्लरे बर बंव बजाया ॥  
 सहनाइन लग्गी ललक सिंधू सुनवाया ॥ २८ ॥  
 हड्डोती हाजरि भई कटिबंध कसाया ॥  
 हूँ सूरौँ सत्यही बर साज बनाया ॥  
 यौँ जावक लग्गेचरन यौँ लंगर लाया ॥  
 यौँ नेउर पग अँकुरे यौँ मक्कुन आया ॥ २९ ॥  
 यौँ अद्धोरक उल्लसे यौँ दंस दिपाया ॥  
 यौँ आहुँत बिमान के यौँ बाँजि मँगाया ॥  
 यौँ रागौँ पाया प्रमुद यौँ सिंधुन छाया ॥  
 यौँ कोनैन लाया करन यौँ मुँटि मिलाया ॥ ३० ॥

\*खड़े क्रिये (डिगल भाषा में अधिक ऊँचे करने को भुकाना कहते हैं) तरवार के बाह चौरते समय अग्निकण डडै उसको फूल कहते हैं सिलहखानह खोलकर श्रेष्ठ गल्ल बाँटे ॥ २७ ॥ कितनों के छेखर के रंग के बल्ल युद्ध के तासे बजे १ वीर रस को बढानेवाला जिधवी राग सुनाया ॥ २८ ॥ यहाँ अजहत् स्वार्था लक्षणा से हाडोती के वीर जानना चाहिये ३ कमरबंधा बांधा ४ अप्सराओं और वीरों ने साथ ही ५ श्रेष्ठ साज बनाये (यहाँ 'यौँ' शब्द से इधर अर्थ जानो) ६ इधर हूँ के चरणों में जावक लगाया और इधर वीरों ने पैरों में युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने इधर अप्सराओं के पैरों में नेवरलगे (बजे) और इधर वीरों के ८ जंधाघाण लगा (यहाँ प्रथम अप्सरा और पीछे वीरों का संजना यथाक्रम से जानना चाहिये) ॥ २९ ॥ इधर ९ लहंगा (घागरा) और इधर १० कवच शोभित हुए ११ इधर बिमान मंगवाये और इधर १२ घोड़े मंगवाये १३ रागों से १४ हर्ष पाया १५ सिंधवी राग (बडा राग) १६ हाथों में सितार बजाने की तन्त्रियें (मजराफ) लगाई १७ खड्ग की मुँठ ॥ ३० ॥

यों बीणा गन अगगहे यों तेग तुलाया ॥  
 यों रंसना आरोप यों कटिबंध कसाया ॥  
 यों कुंकुम कुच लगि यों दूढ़ छत्तिन छाया ॥  
 यों कंचुक मंडे कुचन यों बच्छ बनाया ॥ ३१ ॥  
 यों बलयावलि हथ यों दसतान दिपाया ॥  
 यों मंहल भुजबंधसों सँप सज्ज सुहाया ॥  
 हार दवाली दोउंरघाँ उर अंतर आया ॥  
 यों मुख बीरी आप यों गंगोद अचाया ॥ ३२ ॥  
 यों मंडे नथ नैक यों धकि कोप धमाया ॥  
 यों दृग रेखा अंजनी रंजगुन यों छाया ॥  
 पिंजूसन ताँटक यों यों कुंडल पाया ॥  
 सोभा सिर सीमंत यों यों टोप लगाया ॥ ३३ ॥  
 यों कैवरीन प्रसून यों तुररेन झुकाया ॥  
 यों लग्गे मन मोहँ यों मन मोहँ बिहाया ॥  
 नेउर पक्खर नाद त्यों बिबिँर और बढाया ॥  
 तिकख कँडच्छा सज्ज यों सितँ भल्ल सजाया ॥ ३४ ॥

१ आग्रहे (ग्रहण किये) २ कटिमेखला (कर्धनी) लगाई ३ कुचों पर कंसर लगाई  
 ४ छातिपों पर कयच छाये ५ अप्सराओं ने कुचों पर कंचुकी (कांचली) रबी  
 और इधर बीरों ने बच्छ (छाती) का बनाव किया ॥ ३१ ॥ ६ चूड़ियों (कंकणों) की  
 पंक्ति ७ मादलिया (स्त्रियों के भुजों का भूषण विशेष) ८ हाथों में भुजबंध  
 सुहाये (यहाँ सामान्य हाथ शब्द के कहने में भुजबंध के योग से भुज जानो)  
 ९ पकतला १० दोनों ओर छाती पर आये अर्थात् अप्सराओं की छाती पर  
 पतले लगे ११ गंगाजल पिया ॥ ३२ ॥ १२ नासिका में, इधर बीरों ने क्रोध  
 युक्त होकर श्वास प्रश्वास सेना के फुलाये १३ काजल की १४ रंजगुन १५ टो-  
 टाँदी १६ कर्णफूल ये दोनों स्त्रियों के कानों में भूषण हैं इधर बीरों ने कुंडल  
 पहने १७ माथा गुथवाकर (केशपाश कराकर) शिर शोभा लगाई और बीरों  
 ने टोप लगाये ॥ ३३ ॥ १८ केशपाश में फूल लगाके १९ इधर अप्सराओं ने  
 बीरों को घरने का मन में मोह (स्नेह) लगाया २० और इधर बीरों ने घर से  
 स्नेह छोड़ा २१ दोनों ओर २२ तीखे कटाक्ष २३ तीखे भाले ॥ ३४ ॥

यों खोड़स १६ शृंगार यों \*उपचार विधाया ॥  
 यों मन छाया भैंन यों रनपै उफनाया ॥  
 यों छक पाया उरवसी यों नृप उमगाया ॥  
 यों रंभा हुलसी इतैं बल पित्थल पाया ॥ ३५ ॥  
 यों मन फुलली भैंनका यों अमर उम्हाया ॥  
 यों सु घृताची यों प्रयाग सुराग रचाया ॥  
 एत्थ सुकेसी सज्ज यों मरजाद मुदाया ॥  
 यों बरघोसा नच्चि यों खग तोकें तुकाया ॥ ३६ ॥  
 यों हरखादत अच्छरिन बल भूप बनाया ॥  
 गज बँडे ईशपाल गन बिरुंदार मिलाया ॥  
 अंग गरही मंजिकैं रन रंग लगाया ॥  
 थप्पे कुंभ सुबोल दै कुरुबिंद चढाया ॥ ३७ ॥  
 मंडि कलम जंगालकी हरिताल मिलाया ॥  
 जंग हवड़े डारिकैं गुंड साज सजाया ॥  
 बंधि बँरतों सिर सिंरी धरि धूप धुमाया ॥  
 मोदक गंज मिलायकैं जल देगन पाया ॥ ३८ ॥  
 इभ चाकर माँकर उछट उडि आसन आया ॥  
 बौरी बाहिर लैनको आलान छुराया ॥  
 करि अगैं करिहीनको रचि डौंक डगाया ॥

\*सौलह प्रकार से देवपूजन किया। इधर अप्सराओं के मनमें कामदेव छाया  
 और १ इधर वीर युद्ध पर बड़े १ उमैदसिंह २ पृथ्वीसिंह ॥ ३९ ॥ ३ अमरसिंह  
 ४ अष्ट प्रीति ५ मुरजादसिंह ६ हर्षित हुआ ७ तोकसिंह ने ॥ ३९ ॥ ८ हर्षित  
 (प्रसन्न) ९ सेना १० महायतों के समूह ने ११ स्तुति करके १२ अष्ट वचन कहकर  
 हिंगुल लगाया ॥ ३७ ॥ १३ हाथों की पाखर १४ रस्सों से १५ मस्तक का प्रयोग  
 बांधकर १६ धूप देकर धूम युक्त किया १७ लहडुओं के ॥ ३८ ॥ १८ हाथियों  
 के चाकर बंदों की भांति कूदकर १९ टाण के बाहर लेने को २० खंभों से  
 लोले २१ हथिनियों को आगे करके २२ छोटे घावों से क्रोध दिखा कर डिगाये

थों बुंदीस अनीकैमें गजराज चलाया ॥ ३९ ॥  
 मिलि हयपालक मंदुरन तिम हयन तुकाया ॥  
 खेह गरही कहिक्कै दुति देह दिपाया ॥  
 कबिका देत कुरंग गति छबिका छक छाया ॥  
 रविका मन रिक्कवायकै पबिका जव पाया ॥ ४० ॥  
 मीनन पलट मिटायकै जर जीनन भाया ॥  
 खीन न गति पीन न पैसम जैव हीन न जाया ॥  
 पक्खर अंग प्रसारिकै क्रम तंग कसाया ॥  
 राह पैरोंके लाहकों गजगाँह झुकाया ॥ ४१ ॥  
 वाह चहुँ धौं उच्चरी गति थाह न गाया ॥  
 दीप कनोती चाप दुति खंधों बलखाया ॥  
 काले व्यालें गति जालके लटियाल लगाया ॥  
 कटोरे खुर तारके खुरतार सुहाया ॥ ४२ ॥  
 दसमी १० के द्विजराजतैं जिम राहु जुराया ॥  
 हाटकके गल हल्लरे झल्लरि झहनाया ॥  
 छोरि दुबगों मोरिकै करडोरि झिलाया ॥  
 नक्खी पायन नेउरी मग सोर मचाया ॥ ४३ ॥  
 बाजी ए नृप बंटिकै सब बीर सजाया ॥  
 अप्प चढे हय हंजपै करकंज तुकाया ॥

१इसप्रकारसेनामें ॥३९॥घोड़ों के चाकरों में ४हयशालाओं में ५लगाम देते ही  
 ६ हरिण की भांति ७शोभा के सूर्य का मन प्रसन्न करके ९वज्र का वेग ॥ ४० ॥  
 १०जिन की गति क्षीण नहीं है ११शरीर के बाल मोटे नहीं हैं १२जिसका वेग  
 हीन नहीं है ऐसे (पवन) के पुत्र १३पंखों का लाभ लेने के राह से १४ गजगाव  
 लगाये ॥ ४१ ॥ १५चौतरफ दीपक के समान कनोती और १६ धनुष की टेढ़ के  
 समान झुका हुआ कंधा १७काले सर्पों के समान अयाल १८ कटोरे के समान  
 खुरों पर चांदी के १९खुरताल शोभित हुए ॥ ४२ ॥ २०चन्द्रमा से ॥ ४३ ॥ २१  
 हंज नामक घोड़े पर उम्मेदसिंह चढे २२ कमल रूपी हाथों में ॥ ४४ ॥

नाथाउत पित्तल अरथ मृगडान मिलाया ॥  
 अमरसिंह रहोरकों नटराज चढाया ॥ ४४ ॥  
 सूर भवानीसिंहकों दिलियार दिवाया ॥  
 महरनकाज प्रयागकों खगराज खुलाया ॥  
 तोक महासिंहोतकों भूपटैत भिलाया ॥  
 मुहुकमहर मरजादकों जयनाद दिखाया ॥ ४५ ॥  
 इत्यादिक हय दंठिकै नृप बीर बढाया ॥  
 सोदरजुत सुद्धांतकों कोटा पहुँचाया ॥  
 हुंठारे दल ठाहिवे दल अप्प बनाया ॥  
 बेरबेरतुंगस बंधिकै कमनैत कसाया ॥ ४६ ॥  
 बेरबेर खग बलग कसि कर धूप धुनाया ॥  
 बेरबेर चाप बजायकै सिर अम्भ लगाया ॥  
 केक तुपकों धारिकै अणु मारि उढाया ॥  
 सेल बरच्छी सज्जिकै अच्छी गति आया ॥ ४७ ॥  
 अच्छे बाँजि उढायकै मन आजि मिलाया ॥  
 बैडाराग अलापिया अँडा छक छाया ॥  
 बंदीजैन रसबोरमें भट छाक छकाया ॥  
 ज्याँ गिरिनारी गानपै सिर नाग उठाया ॥ ४८ ॥  
 कै जुव्वन वय व्याहपै नायक हरखाया ॥  
 जानि मितपंच रंककों नवही निधि पाया ॥  
 अँक उदैगिरि आत कै बाँरिज विकसाया ॥  
 पिदिख अंतगज थूलै कै सबूल चलाया ॥ ४९ ॥

१. महार करने (शत्रुओं का मारने) के अर्थ ॥ ४५ ॥ २. जनाने को रत्नकम (आये)  
 ॥ ४६ ॥ ४. सुन्दर अथवा देवे खड्ग कसकर पहाथ में खड्ग लिया अथवा काश में अस्तक  
 लगाया ॥ ४७ ॥ ५. घोड़े युद्ध में कालराराग (सिधवीराग) १० भाद लोगों ने ॥ ४८ ॥  
 १. कृपण दरिद्री को २. सूर्य के उदय होने पर मानों ३. कमल फूले ४. मानों हाथियों

उत्तरके पवमानतैं घन जानि घुराया ॥  
 जानि दिवाकरं जेठमें बहु ओज बढाया ॥  
 इक्षवत जिम हिमकर उदै अंबुधि उफनाया ॥  
 सोलह १६ बेर कि सुक्रमें तपनीय तपाया ॥ ५० ॥  
 पावक मारुत पायकैं हेतिनं हुलसाया ॥  
 कामंदक मग लगिकैं बल भूप बढाया ॥  
 ज्यों करिणीके जालपैं सुंढाल सुहाया ॥  
 अंधक अगौं आनिकैं सिव जानि सजाया ॥ ५१ ॥  
 गोवर्धन कर लैनकों जिम कैह कसाया ॥  
 जानि जटासुर जंगपैं भुज भीम बजाया ॥  
 कै गजकेतन कदनकों कपिकेतु कुपाया ॥  
 ज्यों लंघन जैलरासिकों हंशुमा हुलसाया ॥ ५२ ॥  
 कै रावन बध काजपै रघुराज रिसाया ॥  
 कै बाहर प्रह्लादकी नैरनाहर आया ॥  
 जिमें एका १ इक १ बिंदुतैं दस १० गुन दरसाया ॥  
 बढि असैं रसवीरमें चढि भूप चलाया ॥ ५३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमः श्लोकः संभारः

का समूह देखकर सिंह चला ॥ ४९ ॥ १ उत्तर दिशा के पवन से २ सूर्य ने ३ प्रताप ४ चन्द्रमा को उदय हुआ देखकर ५ समुद्र बढा ६ अग्नि में ७ सुवर्ण को (सुवर्ण को सोलह बार तपाने से कुंदन होता है) ॥ ५० ॥ ८ अग्नि ९ पवन को पाकर १० ज्वालाओं से प्रसन्न हुआ ११ कामंदक सुनि की कीर्ति नीति के मार्ग लगकर राजा ने सेना बढाई १२ हथिनियों के समूह पर हाथी शोभित हुआ १३ अंधक नाम असुर को आगे लेकर ॥ ५१ ॥ १४ गोवर्धन पर्वत को हाथ में लेने के लिये १५ कृष्ण सज्जित हुए १६ भीमसेन ने १७ कर्ण का नाश करने को १८ अर्जुन को धित हुआ १९ समुद्र का उल्लंघन करने को २० हनुमान उत्साहित हुआ ॥ ५२ ॥ २१ सहाय २२ वृद्धि २३ जिस प्रकार एक के अंक पर एक बिंदु लगने से दश गुना होजाता है ऐसे ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमः श्लोकः में, बहुवाचों के राजा

उभेदसिंहके निकट वीरोंका आना] ससमराशि-सप्तदशमयूख (१४११)

नेरेशसज्जीभवनवाहिनीवीरवानिवारणावर्णनं षोडशो १६ मयूखः  
॥ १६ ॥ ॥ २९७ ॥

प्रापोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कुम्भ कटक जयही सुन्यौ, हठि हंकत हमगीर ॥  
आ तवही पित्थल अमर, भट आये नृप भीर ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जय कूरम जयसिंह दई बुंदिय दलेल कँह ॥  
तवहि नगर निम्मान छोरि पित्थल रानौ पँह ॥  
उदयनैर आते धर्म गयो निज बल नाथाउत ॥  
सुपहु रान संग्राम जाहि रक्ख्यो सनेह जुत ॥  
उमराव स्वीय पंद्रह १५ अधर पालसोलि उप्पर प्रथित ॥  
बैठारि उच्च आदर बिरचि हरख्यो नृप चालुक्य हित ॥ २ ॥  
इक समय चालुक्य निडर पित्थल नाथाउत ॥  
रहत सभाविच रान जप्यो बुद्धहि अधर्म जुत ॥  
रंघ प्रभु निंदा सुनन भीम उठ्यो पित्थल भट ॥  
पटा सहस्र पंचास ५०००० छोरि हँक्यो बंछित बट ॥  
हुँत रान पहुँचे नैति जुत कदिय माफ करहु अपराध मम ॥  
मन्त्री न तदपि पित्थल सुमति अकखी तुम अकुसल अधम ३

का सज्जित होना? सेना के वीर और घोड़े और हाथियों के वर्णन का सौलह-  
शो १६ मयूख समाप्त हुआ और अदि से दोसौ सित्यानवै २९७ मयूख हुए ॥  
कछवाह की सेना २ शीघ्र ३ उम्मेदसिंह की सहाय ॥ १ ॥ ४ राणा के पास  
उदयपुर) ५ अत्यंत धर्मवाला ६ अपने पंद्रह उमरावों के नीचे और पारसो-  
लिके ऊपर (इस समय सब से नीचे की बैठक आसींद के रावत की है पर-  
उस समय आसींद का ठिकाना नहीं बन्धा था तब से नीचे की बैठक पा-  
सोलि के रावकी थी) ७ प्रसिद्ध = सोलंखी को हित सहित रक्खा ॥ २ ॥ ९  
सिंह को १० अपने स्वामी की ११ चाहे हुए मार्ग से चला १२ शीघ्र १३ नज्जत



\*दुजनसल्ल कोटस सुनत यह सचिव पठायो ॥  
 लिखि कग्गर अति ललित बहुत सतकार बढायो ॥  
 लिखी नगर निम्मान नाह इतही तुमगो घर ॥  
 आवहु मिलहिं सु अन्न बंदि खैं हैं बीरनबर ॥  
 पित्थल सु बंदि उत्तर लिख्यो क्यों तुम हठ मंडत घनै  
 मम जनक हन्यो आटोनि रन बलि बुंदिय बैरिय बनै ।  
 अगग नगर आटोनि भीम सालम जब जुष्टिय ॥  
 चालुक देवीसिंह तबहि असि धारन तुष्टिय ॥  
 कोटापति पुनि कितव बैर बुंदिय पर लायउ ॥  
 दुवर कारन दल बीच मंडि पित्थल पहुँचायउ ॥  
 सुनि दुजनसल्ल उत्तर लिखिय जानहु नहिं मम दोख  
 मम जनक हन्यो तुमरो जनक बुंदियसन पुनि बैर किय  
 ॥ दोहा ॥

नहिं रुचि तो आवहु नहिन, परिखद बिच मम पास ॥  
 रहिये घर लहिये रुचिर, पटा सहस पंचास ५०००० ॥ ६  
 इत्यादिक उत्तर लिखि रु, दुजनसल्लहित दिष्टि ॥  
 सचिव भेजि निज साम करि, बुल्लयो पित्थल निष्टि ॥ ७  
 अमरसिंह रठोर इत, रुदल राम कुलीन ॥  
 कछवाहन बरवाड़ लिय, निकस्यो तब छिंति छोन ॥ ८  
 निज सुत पंचक जुत निडर, स्त्रीजन अंगुग समेत ॥

सहित ॥ ३ ॥ \* कोटा के पति दुर्जनशाल ने १ मनोहर २  
 स्माण के पति ३ मेरे पिता को आटोण ग्राम के बुद्ध से मारा था और ४  
 बैर किया था ॥ ४ ॥ २ कोटा का महाराज भीमसिंह और मालसा  
 छली ४ पत्र में ५ मेरे पिता ने तुम्हारे पिता को मारा था और बुद्ध से भी  
 उन्हीने किया था ॥ ५ ॥ ६ समा में ॥ ६ ॥ ७ स्नेह दिखाकर अश्व  
 की दृष्टि से ८ पृथ्वीसिंह को बुलाया ॥ ७ ॥ ८ रामसिंह रोदला के  
 वाला १० शूनि छिनजाने से ॥ ८ ॥ ११ सेवकों सहित ॥ ९ ॥

उमैदसिंह के पास खुशियों का आना] सप्तमराशि-सप्तदशमयुक्त (१४१३)

सहि बिपत्ति कोटा सहर, आयो नीति \*उपेत ॥ ९ ॥  
पटा सहस्र पैतिस ३५००० मित, करि हित दिय कोटिस ॥  
इम रखे पित्तल अमर, दुवरे छल तिमिर दिनेस ॥ १० ॥  
ते भट दुवरे बुंदीसपर, कूरम इल सुनि आत ॥  
तजि कोटापतिके पटा, आधे रन उमडात ॥ ११ ॥  
जोधपुर पं गजसिंह सुवं, कुमार अमर रडोर ॥  
मरन आगरा मंडयो, तोरि साहको तोर ॥ १२ ॥  
अमर भीर आधे तबहि, बलू १ रु भाऊ २ बीर ॥  
पातसाहके तजि पटा, हठि जुझन हमगीर ॥ १३ ॥  
तिमहि रान अमरेस सुत, करन अनुज भट भीम ॥  
रखिख खुशम सरनै रच्यो, संगर कासी सीम ॥ १४ ॥  
सगताउत भान सु सुनत, छिपे उदैपुर छोरि ॥  
पहुंच्यो कासी भीम पँह, मर्यो साह दल मोरि ॥ १५ ॥  
इमहि बीर पित्तल अमर, कोटा सैन करि कुञ्ज ॥  
सैमर बेर बुंदीससों, आनि मिले छक उच्च ॥ १६ ॥  
अमरसिंह रडोरकी, पतनीकै गँद पूर ॥  
दुख हुतो बहु दिननतै, संकयो तँदपि न सूर ॥ १७ ॥  
उतरत चम्पलि आपगा, प्रिया भई गतप्रान ॥  
सोहु अमर रडोर सुनि, न मुरयो जंग निर्दान ॥ १८ ॥  
अभयसिंह जेठो तनय, पच्छो गेह पठाय ॥  
अप्प च्यारि सुत जुत अडर, अमर स बुंदिय आय ॥ १९ ॥  
सुहुकसहर त्योही मरन, मेटन अँध मरजाद ॥

\*नीति सहि ॥ ९ ॥ छल रूपी अन्धेरे के लक्ष्य ॥ १० ॥ सेना ॥ ११ ॥ १ पतिरगजसिंह का पुत्र ३ अमरसिंह ४ बादशाह के प्रताप को लोडकर ॥ १२ ॥ ५ सहाय ॥ १३ ॥ ६ करवांसिंह का छोटा भाई ७ भीमसिंह ८ युद्ध ॥ १४ ॥ ९ मानसिंह १० जीत ११ भीमसिंह के पास ॥ १५ ॥ १२ से १३ युद्ध के समय ॥ १६ ॥ १४ रोग १५ तोभी ॥ १७ ॥ १८ नदी १९ युद्ध के कारण ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ पाप

सूर तुपक साजि पंचसत ५००, आयो \*नहन नाद ॥ २० ॥

सब भट हिय लाये सुपह, बहु अद्वरि बुंदीस ॥

साहित प्रीत बंटी सिलह, सज्ज्यो जैपुर सीस ॥ २१ ॥

नाथाउत पित्थल निडर, सज्ज्यो न वपु सन्नाह ॥

अकखी इच्छहु जो मजियन, लेहु वहै यह लाह ॥ २२ ॥

सत बारह १२०० इम सेन सजि, साँदी पैदग समेत ॥

उडहानिके तट अमरपुर, खजि चित्यो रन खेत ॥ २३ ॥

सजि बुंदिय उत्तर तरफ, हंक्यो नृप हुसियार ॥

पहुमी छाई पकखरन, सेलन गगन प्रसार ॥ २४ ॥

कोस तीन ३ उत्पर कटक, भिले उभय रन मोद ॥

उत्तर दक्खिनके अरे, पाउस जानि पयोद ॥ २५ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमऽाशौ बुन्दी-  
न्द्रसहायार्थचालुक्यपृथ्वीसिंहकबंधाऽमरसिंहहड्डमर्यादसिंहाऽऽगम  
नसेनाऽभिनिर्घाणां सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥ ॥ २९८ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

॥ सुक्तादाम ॥

उयो रसबीर छयो नृप अंग, चलयो अब सम्मुह लौ चतुरंग ॥

चलयो भट पित्थल संकित सेस, चलयो सुत च्यारि ४ नतै अमरसं ॥ १ ॥

चलयो भैरजाद नमावत नाग, चले भट सोदर तौग १ प्रयाग २ ॥

\* गर्जना करता हुआ ॥ २० ॥ २१ ॥ † शरीर में कवच नहीं पह-  
ना ‡ जो जीना चाहो सो कवच पहनने का लाभ लो ॥ २२ ॥ १ सवार २  
पैदलों सहित ३ नदी का नाम है ३ क्रोध करके ॥ २३ ॥ ५ आलों के फैलाव  
से आकाश छाया ॥ २४ ॥ ६ सेना ७ वर्षा समय में ८ मेघ ॥ २५ ॥

अविंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे के सप्तमराशि में, बुन्दी के इन्द्र की  
सहाय के अर्थ सोलंखी पृथ्वीसिंह, राठोड़ अमरसिंह और हाडा मरजादसिं-  
ह का नाम और सेना के सम्मुख जाने का सप्तहवां १७ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि स दोसौ अठानवै २९८ मयूख हुए ॥

९ बीर रस उदय होकर १० पृथ्वीसिंह ११ अमरसिंह ॥ १ ॥ १२ मरजादसिंह

भवानियगिंह चल्पो भट भूप, खुमान चल्पो रन रावन रूप ॥२॥

चल्पो हरदाउत देविमृगेस, चल्पो सगताउत त्यौ अचलेस ॥

चले भट भारत अर्जुन चंड, उदैहरि चालुक ओज अखंड ॥ ३ ॥

चल्पो नर नाहर नाहर बीर, चल्पो नवलेस हठी हमगीर ॥

चल्पो भट कर्ण महारन चाहि, अजीत चल्पो कछवाह उमाहि ४

चले इन्ह आदि बडे बर बीर, धपावन सत्रुन खगगन धीर ॥

चल्पो इम बुंदिय भूपति चक्र, बितंडन पिडि खुली बहरक ॥ ५ ॥

अहंवर भो रज अंवर ओधं, मच्यो बडि ध्वांत बन्यो रवि मोधं ॥

भयो निरंचारन आनंद भुलि, डरे डिगि चक्रियं चक्रहु डुलि ॥ ६ ॥

चले इत बारहसे १२०० रन रीस, पिले उत गजिज हजार पचीस

२५००० ॥

तज्यो भैव मोह भैज्यो कर तेग, उठे भट राजिय बाजिय बेग ॥ ७ ॥

धमंधमि भुमि धुजी हय धार, धमंधमि धुगधर पक्षर भार ॥

ढमंडमि डाहल डिंडिम डक, ठमंठमि सिंधुर घंट ठमक ॥ ८ ॥

नरायन पिक्खिय बुंदिय नाह, कहो जुरि याहि गहो कछवाह ॥

इती कहतें दुहुंघां उमराव, मिले ति मिले पैय सकर भाव ॥ ९ ॥

१ राजा का उमराव खुमासिंह ॥ २ ॥ २ देवीसिंह ४ बदरसिंह ॥ ३ ॥ ५ मनुष्यों

में सिंह रूप, नाहरसिंह ६ चक्र (सेना) ७ हाथियों की पीठ पर ८ ध्वजा खुली

॥ ५ ॥ ६ आकाश में १० रज का समूह छागया जिससे ११ अंधेरा होकर सूर्य १२

हटगया और उस अंधेरे से भूलकर १३ निशाचरों को आनंद हुआ १४ चक्रवा

चक्रवी झूलकर डरे और पास पासके हटगये ॥ ५ ॥ १५ ईश्वरीसिंह ने भजे

१६ संसार से मोह छोड़ा और हाथों में १७ खड्ग लिये १८ घोरों की और घोड़ों

की पक्तियें वेग के साथ उठीं ॥ ७ ॥ १९ घोड़ों की गति से भूमि धूजी, डाहल

आदि बैताल और योगिनियें आदि के बाह्य बजे २० हस्तियों पर घंट बजे यहाँ

ठमंठमि धमंधमि आदि अनुकरण के शब्द हैं जिनकी व्याख्या करना अना-

वश्यक है किन्तु ये शब्द ही व्याख्या है ॥ ८ ॥ २१ नारायणदास खत्री ने २२

घुड़ी के पति (उम्मेदसिंह) को देखते ही कहा कि २३ वे दोनों ओर के उमरा-

व जैसे २४ दूध और सकर मिले तिस रीति से मिलगये ॥ ९ ॥

वज्रयो असि दहून अहून बाढ, गजयो भय भीरुन बीरन गाढ ॥  
 दपट्टत लकखन भकखन दाप, अपट्टत लकखनको कमकाय ॥२०॥  
 लकल्लकि छुट्टिय वान विथार, धकल्लकि घायन सोनित धार ॥  
 अगज्जगि आयुध भा अगमगि, धगल्लगि उट्टिय खगगन अगि ॥२१॥  
 कटकटि कंकट वंकट बाढ, खटकखटि खावन डाकिनि डाढ ॥  
 चटच्चटि उच्छटि दहून संधि, गटग्गटि गिद्ध बपा चंय बंधि ॥२२॥  
 खनकखनि टोपनपै खुगतार, मनवमनि मोल्लिन ध्यान भयार ॥  
 अपज्जपि सेनन पच्छैति अंड, लपल्लपि लुट्टत सिंधुर सुंड ॥२३॥  
 कमकमि मार दुधारन भाट, धमधमि सेलन ठेलन घाट ॥  
 लसै असि कुंभनै फांक चलाव, बढे रदै सब्बुवै तंति बनाव ॥२४॥  
 भुजांतरे होत कटाग्न भिन्न, खिचै परि पंजर खंजर खिन्न ॥  
 कटै खर तोमर दंसन दारि, फवै पृथुगोम कि जालिय फारि ॥२५॥  
 चलै चमकै असि ओज अपार, छपाकरै बाल कला छविदार ॥  
 लटकहिं लुत्थिनपै लागि लुत्थि, उच्छटहिं कट्टहिं बुत्थिन बुत्थि ॥२६॥

हड्डियों के ऊपर तरवारों का आडा बाढ चजा और कायरों पर भय और वीरों पर गाढ़ने गर्जना की, खाने के लिये लाखों दौड़ते हैं और घोड़ों को रुकना कर दौड़ाते हैं ॥ १० ॥ ३ कांपते हुए बाघों का फैलाव छूटा और घाघों से धक धक रुधिर बहने लगा. ४ राज्यों की क्रान्ति चमकने लगी और तरवारों की ५ अग्नि प्रज्वलित होकर लूठी ७ तरवारों के बाढ से ६ कवच कटकट करने लगे, खाने के लिये डाकूनीयों की डाहें खटकने लगीं और हड्डियों की जाड़ खुलने लगीं ८ चरवी का समूह जोड़कर अधिनियें खाने लगीं ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ गोलियों का भयंकर शब्द होने लगा १० सेन (स्त्रियाँ) पक्षियों के ११ पंखों के समूह भग्न भग्न करने लगे और हाथियों की छुंड़ें लप लप करने लगीं ॥ १३ ॥ दुधारे खज्जों की मार मची और भालों के धकेलने से घाव हुए १२ हाथियों के कुंभस्थलों की चारों तरफ तरवारों का चलना शोसा देता है और तांत से १४ सावुन कट्टे जैसे १५ दांत कटते हैं ॥ १४ ॥ कटारों से १६ छालिय फटती हैं और खंजरों से जीण हुए अस्थिपंजर खिचते हैं १७ तीखे आले १८ कवचों को फोड़कर निकलते हैं सोसानों जाल को चीरकर १९ मच्छी शोसा देती है ॥ १५ ॥ २६ तीखा के चंद्रमा की कला को विदारण करनेवाले खज्जों का ओज चमकता है ॥ १६ ॥

उलझहिं घोरनतैं भट आय, खमें ग्रह जानि कबूतर खाय ॥  
 घुलकहिं छिछि हवकहिं घाय, छुटैं जलजंत्रं कि जावक छाय ॥१७॥  
 चलैं टिकि जानुन के पयभिन्न, स्तनंधय केलि कि अंगन किन्न ॥  
 किते भुव लुटत जात अचेत, खिचैं जनु कोटिस डैलन भेत ॥१८॥  
 परे कति ऊरध हथ प्रसारि, किधौ हरि मंदिर बंदन कारि ॥  
 बबकत के गिरि बँकर वेस, मनौ नमि गाँत रिझात महेस ॥१९॥  
 अटकत पाय रकावन डूँढ, लटकत जानि अधोमुख सिद्ध ॥  
 कटैं सिर अँधभ फिरैं भ्रमकारि, कुलाल कि चँकहिं भंड उतारि २०  
 थरथर कातर कंप कुठार, बिना तिय ज्यो नर पास तुँसार ॥  
 उडैं फटि पेट फटकत अंत, करंडनतैं कि भुजंग कढंत ॥ २१ ॥  
 बनैं बटके भट के रन बाद, सु ज्यौ अँटके जगदीश प्रसाद ॥  
 रचैं दुव २ हथनके असि वार, किधौ कर खतिरैं कैठ कुठार २२

१ आकाश में कबूतर २ कुलांड खाये तैसे ३ जावक का फुँहारा चले जैसे ॥ १७ ॥ कितने ही कटे हुए चरणोंवाले ४ छुटनों के बल चलते हैं सो मानों घर के चौक में ५ दुध पीनेवाला बालक कीड़ा करता है, कितने ही अचेत होकर भूमि पर लोटते जाते हैं सो मानों खेत के ढकलों (ढेलों) पर ७ चावर (लोष्टभेदन) लिचती है ॥ १८ ॥ कितने ही ९ ऊँचे हाथ करके पड़े हैं सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में १० नमस्कार करते हैं ११ बकरे की भांति कितने ही गिरकर अवाच्य शब्द बोलते हैं सो मानों १२ नमस्कार करके शिव को प्रसन्न करते हैं (यज्ञ विध्वंस करके दक्ष के धड़ पर बकर का मस्तक रखकर फिर जीवित किया तब दक्ष प्रजापति ने बकरे के मुख से शिव की स्तुति करके शिव को प्रसन्न किया था इस कारण अब भी लौकिक में बकरे की बोली से शिव की स्तुति करते हैं) ॥ १९ ॥ १३ नीचे लटकते हैं सो मानों १४ नीचा मुख करके सिद्ध लटकते हैं कटे हुए मस्तक १५ आकाश में १६ चक्र के आकार फिरते हैं सो मानों १७ चाक के ऊपर से १८ कुम्हार भांडा (मिट्टी का पात्र) उतारता है ॥ २० ॥ बुरी भांति कायर ऐसे कांपते हैं जैसे बिना स्त्रीवाला पुरुष पौष मास की १९ ठंड में कांपता है, पट फटकर आंति उछलती हैं सो मानों २० टिपारों से सर्प निकलते हैं ॥ २१ ॥ युद्ध में हट करके डुकड़े डुकड़े होते हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद का २१ कलश फटता है, कितने ही दोनों हाथों से तरवार का बार करते हैं सो मानों दोनों हाथों से २२ खाती २३ काष्ठ पर कुठार चलाता है ॥ २२ ॥

सैरै क्षतजात छिदे उर सैंकि, नैमात रजोगुनकी लहरैं कि ॥  
 गुटी दृग ओर कटैं दृगलै रु, किधौं अलि कामल कोरक लै रु ॥  
 धसैं कटि के दृग सोनित धार, बनैं पृथुरोमन बारि बिहार ॥  
 सिंचानक अंतहि लै नभ जात, अचानक गोत गुठी सम खात ॥  
 दिसा बिदिसान निसानन नह, भनैं जनु घोर बलाहक भद ॥  
 तुटी लागि टोप बजैं तरवारि, मनौं हरि मंदिर भल्लरि भारि ॥  
 भई हलमल्ल चलचल भुम्भि, घटयो बल नाग निसासन घुम्भि ॥  
 रचैं धनु सिजिनि बेग बिसाल, किधौं रन अंभत जंभत काल ॥  
 मचैं धन लोहित फुटत मत्थ, हसैं लखि जुगिनि खप्पर हत्थ ॥  
 समप्पतैं हेरि सबै गन सीस, अपूरब हार बनावत ईस ॥ २७ ॥  
 थेइत्येइ घुम्मत डाकिनि मत्त, तमासन प्रेत मलंगत तत्त ॥  
 किते रंस पान पिसाच करंत, रमैं कति लोहित तुंद भरंत ॥ २८ ॥  
 करैं कति आमिल्लैं अनुराग, बनावत के मुख मेदै बिभाग ॥

वरछी से छानी छिद कर २ रुधिर चलाता है सो मानों शरीर में रजोगुण लहरें नहीं ३ समाने के कारण बाहर निकलती हैं ४ गोली नेत्रों में नेत्र निकालती है सो मानों ५ अंगर ६ कसल की ७ कली को लेकर लाता है ॥ २३ ॥ नेत्र फटकर रुधिर की धार में ऐसे घुसते हैं जैसे ८ मच्छी बिहार जल में होवे ९ बाज पक्षी आंत लेकर आकाश में जाता है और ग (कनकौवा) के समान अचानक गोत खाता है ॥ २४ ॥ दिशा दिशा १० नगरों का शब्द होता है सो मानों भादवा के महीने में ११ मेघ का भंकर शब्द होता है, टोप के ऊपर लगकर लूटी हुई तरवार बजती है सो नों विष्णु भगवान् के मंदिर में भालार बजती है ॥ २५ ॥ १२ अत्यन्त से अधवा बहुत लोगों के मिलकर चलने से भुम्भि १३ चलायमान हांगड़ र निश्वासां से घूमकर १४ शेष नाग का बल घट गया, धनुष से खिचकर प्रत्यंचा चढा बेग रचती है सो मानों यमराज युद्ध में खड़ा होकर १५ (जमुहार्द) लेता है ॥ २७ ॥ मस्तक फूटकर अत्यंत लोहू मचता है जिस को खकर डाकिनियें हसती हैं और शिव के सब गण मस्तक हरकर शिव को देते हैं ॥ २७ ॥ कितने ही प्रेत १८ स्वाद लेकर रुधिर पीते हैं और कितने रुधिर से १९ पेट भरकर खेलते हैं ॥ २८ ॥ कितने ही २० मांस से २१ प्यार करते और कितने ही २२ चरबी आदिका घंट करते हैं,



करै मृदु\*कीकस जिम्मन केक, अहारतां कोशिक ग्रास अनेक २९  
 खरे कति धरमर शुक्रहिं खातु, भये रन दुर्लभ सत्त ७हि धातु ॥  
 रचै सिव हास नचै भयकार, जचै जिप बुद्धियको जयकार ॥३०॥  
 ब्रह्मब्रह्म तंतिन सिंधुव सह, मचपो रन अंगन यौ अवमह ॥  
 गहकहिं चकखहिं गिहनि गोद, बपा लहि मंडत कंक बिनोद ॥३१॥  
 निकासत चिलहनि चंचुन नैन, गहै हिय सेन गहकत गैन ॥  
 किलोलहिं स्यार सिंवा किलकारि, चखै पल मंडल मंडल चारि ॥३२॥  
 उठी रन अंगन खगन अग्नि, लसी अटवी नव उपौ दव लगि ॥  
 जरै गजढालन तालन जूड, जरै गजमुंडि तमालन जूड ॥ ३३ ॥  
 कटे पप कुंभिं न तिहुव तत, जरै गज उन्नत पडव जत ॥  
 बरै हय बालधि तेजन तव, लगै लटियाल कि दर्भ कंदब ॥३४॥  
 सिखा बलि सूरनकी तैन गुच्छ, मलीमैस कांस सुडहिय मुच्छ ॥

\*कितने ही कोमल हड्डियों का भोजन करते हैं अनेक घृघु निवाले खाते हैं ॥२९॥  
 कितने ही † भक्षण शील (बहुत खाने वाले) खड़े खड़े ही ? वीर्य ही खाते हैं  
 इस युद्ध में उन घस्मरां को सातों ही धातु दुर्लभ होगई, वैद्यक के मत से वे  
 धातुयें हैं "स्नन्धं रजश्च नारीणां काले भवति गच्छति ॥ शुद्धमांसभवःस्नेहो  
 य सा संकीर्त्यते वसा ॥ स्वेदो दन्तास्तथा केशास्तथैवोजश्च सप्तमम् ॥"  
 १ भयंकर रीति से नाचते हैं और जीव सं बुंदी का जय होना ३ भांगते हैं  
 ॥ १० ॥ ४ इसप्रकार का पीड़ाकारी युद्ध मचा ॥३१॥ ५ गीदड़ और गीदड़णियों  
 किलोल करती हैं ६ कुत्ते ७ चारों ओर फिरकर मांस खाते हैं ॥ १२ ॥ युद्ध के  
 चौकमें तरवारों से अग्नि लगी सो धन में लाय लगने के समान शोभायमा-  
 न हुई जहां ८ हाथियों के झंडे जलते हैं सोही ताड़ वृक्षों का समूह जलता है  
 और हाथियों की सुंड जलती है सोही ९ तमाल वृक्षों का समूह जलता है  
 ॥ ३३ ॥ १० हाथियों के कटे हुए पग जलते हैं सोही ११ तींदू वृक्ष हैं १२ ऊं-  
 च हाथी जलते हैं सोही जलनेवाले पर्वत हैं १३ घोड़ों का बालछा जलता है  
 सोही १४ बांसों का १५ बड़ा (समूह) है और घोड़ों की यालें (केशबालियें) जलती  
 हैं सोही १६ लाभका समूह जलता है ॥३४॥ १७ वीरों की चोटियाँ जलती हैं सो  
 १८ घास के पूल हैं, डाढ़ी सूँछें जलती हैं सोही २० कांस (तृणविशेष) का २९  
 कचरा जलता है



जरैं छंगणावलि खेटंक जाल, बरैं असिकोमै पृथग्विध व्याल ॥ ३५ ॥  
 दहैं हुँ मृदुच्छद छलि दुँकूल, किरैं चिनगी सुहि पान कुकूल ॥  
 जरैं तहैं तोमैर ते त्वचिसैर, तैचैं गैवलावलि रूप तुखारैं ॥ ३६ ॥  
 प्रजारिय भूपति यागति अग्नि, मिली रनरंग मिली भगमग्नि ॥  
 अपूरव फैलिय ज्वाल अलात, बचैं तैनके जलके जरिजात ॥ ३७ ॥  
 अनूरुहिं आतुर अक्खिय अँक, चढे रन बुंदिय जैपुर चैक ॥  
 तुरंगम रुक्कहु खंचि खलीनैं, कुतूहल पिक्खहु वीर बलीन ॥ ३८ ॥  
 दिसा विदिसान कँसानु दिखाहिं, मच्यो दव ग्रीखम भँदव माहिं ॥  
 निहारहु हात अनीकँन नास, तपैं भुव तक्कहु चक तमास ॥ ३९ ॥  
 ॥ प्रतिलोमाऽनुलोमादम् ॥

तुँदे नर रीस रवीसँम लाल, तुले हर्यै जेम हले सु कराल ॥  
 लराँकँ सुलेहँसजे यह लेतु, ललामँ स बीर सराँगन देतु ॥ ४० ॥

२ ढालें जलनी हैं सोही जलने वाले १ छाणों ( बहों ) की पंक्ति है ३ तरवारों के स्थान जलते हैं सोही ४ नाश प्रकार के सपे जलते हैं ॥ ३९ ॥ ७ बख्त जलते हैं सोही मानों ६ भोजपत्र के ५ वृक्ष का जलना है और पवन से अग्निकण ८ गिरते हैं सोही ९ तुष की अग्नि उड़ती है १० यहां भाले जलते हैं सोही मानों ११ बांस जलते हैं और वन की अग्नि में जलनेवाली १२ रोजों की पंक्ति के समान १३ घोड़े १४ जलते हैं ॥ ३९ ॥ राजा उम्मेदीसिंह ने इस प्रकार की अग्नि लगाई सो १५ उस रणरंग में चमकती हुई आनंद पूर्वक ठहरी अपूर्व रीति से उस ज्वाला के १६ अंगार फैले जिनसे १७ तृण (मुल में तृण लेने) वाले बचते हैं और १८ जल (पराक्रम) वाले जलते हैं ॥ ३७ ॥ १९ सूर्य के साराधि अनुरूप से २० सूर्य ने कहा कि २१ सेना २२ लगाम खँच कर घोड़ों को रोक, बलवान् वीरों का तमासा २३ देखेंगे ॥ ४० ॥ दिशा दिशाओं में २४ अग्नि दीवती है सो २५ ग्रीष्म ऋतु के समान भादवा के महीने में अग्नि लगी २६ सेनाओं का नाश होता है सो देखो और भूखि तपती है जिसका और सेना का तमासा देखो ॥ ३९ ॥ (आधे छंद को सीधा पढ़कर उसीको उल्टा पढ़ने से पूर्ण छन्द हो जाता है और उसका अर्थ बदल जाता है सो आगे बताते हैं) मनुष्य २७ पीछा युक्त होकर शोध में २८ सूर्य के समान लाल हुए और जैसे २९ घोड़े उठाये तैसे ही भयंकर जले ३१ सो (ये) ३० लड़नेवाले ३२ स्वाद लेकर यह आनंद लेते हैं और ये ३३ सुन्दर ३४ शरीरों को देते हैं इस छन्द में "तुद व्यपने" इस धातु से

अरुमत्सजातीयेष्वेव प्रसिद्धं गीतनामकं मरुदेशीयं छंदोनाम्ना  
त्रिकूटबद्धम् ॥

उम्मेद भूपति अंगमै रसबीर संकुलि रंगमै बरबीर बारहसै १२००  
प्रबीरन चँक लै चहुवान ॥

जयनैर सम्मुह जोरसों भिल्लि खगग आरिय भोरसों बर गुमर  
अमिवर संसर लागि अँर कुनर छरंतर हुनैर हत कर जबर खँर सर  
गजैर जय धर अडर भैर मिलि कचगधन कर अमरपुर मचि देवर  
दरवर उदर पर मिलि मुखर पलवर खँवर चय और खपर खरभर  
पहर इक वजि टकर धरपर घोर इम धँमसान ॥

कैर वाम लोक प्रयागव्हे अमरेस दक्खिन भाग व्हे मरजाद  
पित्तल अँग मंडिय बीच अप्पन बाजि ॥

बिरुदालि बंदिनै बित्थरे अतिवेग सम्मुह उप्परे वजि कैटक

तुदा शब्द बना है जिसका अर्थ पीड़ित होना है और "लिह आस्वादने" इस  
धातु से लेह शब्द बना जिसका अर्थ स्वाद लेना है ॥ ४० ॥ "ग्रंथकर्ता  
(सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमारी (चारण) जाति ही में प्रसिद्ध ऐसा मरुभा-  
षा का गीत नामक त्रिकूटबद्ध छंद है" राजा उम्मेदसिंह अपने शरीर में १  
चौरस २ भरकर ३ युद्ध में बारह सौ वीरों की ४ सेना लेकर उस चहु-  
थाण ने ५ जयपुरवालों के सम्मुख ६ भिड़कर ७ प्रभात से तरवार चलाई  
जहाँ ८ अष्ट घमंड के साथ ९ युद्ध में १० झंड लगकर खोट मनुष्यों के ११  
अत्यन्त छल को १२ हुनर (इलम) से मिटाकर १३ बड़े तीक्ष्ण बाणों के १४ नि-  
रंतर प्रहार से जय की धारण करके निर्भय १५ वीरों से मिलकर १६ शत्रु-  
ओं का कवच धारण किया १७ अमरपुरा के युद्ध में १८ दड़बड़ (शीघ्रदौड़)  
मचकर और उदर के ऊपर १९ शब्द करते हुए मांस खानेवाले मिलकर २० आ-  
काश में विचरने वालों का समूह २१ अढ़ा और देवी के खप्परो की खड़भड़  
धोकर भूमि पर एक पहर टकर वज्रकर इस प्रकार कार २२ युद्ध हुआ राजा के २३  
शाम हाथ को तोकसिंह और प्रयागसिंह हुए और अमरसिंह २४ दाहिनी  
और रहा, इसी प्रकार मरजादसिंह और पृथ्वीसिंह २५ आगे रहकर बीच में  
२६ अपना (उम्मेदसिंह का) घोड़ा रहा २७ भाटों की बिरुदावली फैली और  
गर्ब से सम्मुख उठ २८ सेना को दगड़ देनेवाली रचक (टकर) हुई

दमनक रचक धमचक अटक दंक तक मुलक अकवक अछक  
छक भट ललक अति धक तुपक चलि हक सलक इक टक  
गरक रंग मक फरक बहरक चमक खुर सुचि कमक चकर्मक  
किलक डक लागि अजक चउ४ चंक पुलक सक कर घमक प-  
खरक अरक रज डक आजि ॥

अतिमोद जुगिनि उँल्लसैं हर देवि नारद त्यों हसैं डरदेत लेत  
डकार डाकिनि प्रेत हेत प्रसार ॥

कमनेत तीरन तानिकैं पखरेत वेधत पानिकैं बुधतैनय हित  
जय प्रणय नय वय छपई रनसुमै अभय अतिसंय विषय चैय भुव  
वलयै विसमय प्रलय मय भय समय निरदय उदय रवि नयनि-  
लपै अतिरंय अजय खैपकर अखय जय अँय उभय सँय पय हद-  
य अपचय कटय भट संय निचय हय गय मार दीन सुमार ॥

१ युद्ध में अटक नदी के जल पर्यंत का देश घबराकर अर्थात् बादशाही देश तक घब-  
राहट पहुँचकर, और आर्यावर्त की सीमा भी अटक ही है अछक छकेहुए बीरों  
ने ललकार करके ३ अत्यन्त क्रोध से बढ़कर ४ पंदूकों की निरन्तर सलक की  
(पहुन पंदूकों के एक साथ चलाने को सलक कहते हैं) ५ गहरे रंग में कूधी  
हुई ६ ध्वजाएँ उड़ी और ७ चमक के समान घोड़ों के खुरों से ७ अग्नि ज-  
मती और कालिकाओं की किलकारी होकर उनके वाद्य धजे, प्रसन्नता में  
संदेह करके अथवा प्रलय का संदेह करके रोमांच होकर १० चारों दिशाओं  
में ९ अचैन फैला और घोड़ों की पांखरें बजकर ११ युद्ध की रज से सूर्य टक  
गया, योगिनियों अत्यन्त हर्ष से १२ फूलती हैं इसीप्रकार महादेव, पार्वती  
और नारद मुनि हसते हैं, डाकिनियाँ भय देनेवाली डकारें लेती हैं और प्रेतों  
से स्नेह १३ फैलानी हैं १४ बाण चलानेवाले तीरों को खैपकर १५ पराक्रम  
करके १५ पांखरोंवालों को बेधन काते हैं १७ बुधसिंह के पुत्र (उम्मेदसिंह)  
को विजय प्राप्ति कराने के अर्थ नीति के वचन कहते हैं और १८ युद्ध रूपी  
गुण के १८ अमर २० अत्यन्त निर्भय होकर २१ देशों के समूहवाले २२ शक्ति  
संचल पर प्रलयमई निर्दय मनय का संदेह कराकर सूर्य के समान उदय हुए  
ये चार २३ नीति के घर २४ बड़े बेगवान २५ पराजय का नाश करनेवाले और  
२६ आगे आनेवाले शुभ भाग्य से २७ अक्षय विजय करनेवालों ने २८ दो-  
नों हाथ, पग और हत्यारी २९ हानि (नाश) करके धीरों के ३० समूहों को

तुंगी रचै कति तेहरी किमु अद्रि लंघित केहरी फटि मत्थ भे-  
जन जुत्थ फैलत नूतन कि नवनीत ॥

छिकि टोप बाहुल उच्छटै कटिकालि कंकटकी कटै भट गरट  
मिलि थट पुरट छट पट कुघट घट परि अंवट कट कंट कपट  
तट अति अपट रन अंट उवट दट रट बिकट रहचट पलट नट  
गति उलट भटपट उछट खंगभट निपट अघ दट दपट दिय  
मिलि निकट प्रतिभट रपट मचि रन प्रकट रजबट जुरत चाहत  
जात ॥ ४१ ॥

॥ अन्त्यानुपासिनी गोला ॥

बुंदी जैपुर उलटि बीर आयै तिँ अखारै ॥

गायक सिंधू तौर ग्राम आलाप उचारै ॥

भुम्भि मचकै कटक भार फन नाग पसारै ॥

काटे और हाथी घोड़ों के समूह तो बिना गिनती (बेसुमार) मारे १ कितने  
ही घोड़े तीन तीन मलंग लेते हैं सो २ मानों ३ पर्वत को उलंघन करता हु-  
आ सिंह मलंग (छलांगें) भरता है और मस्तक फटकर भेजों (मस्तिष्क) का  
समूह फैलता है सो मानों नवीन ४ मक्खन फैलता है, टोप कटकर ५ दस्ता-  
ने (बाहुत्राण) उड़ते हैं ७ फव्व की ६ कड़ियों की पंक्ति कटती है = चारों  
के अत्यन्त समूह मिलकर (यहां अधिकता दिखाने के कारण गरद और थट  
दोनों एकार्थ वाची शब्दों का प्रयोग किया है) अथवा समूह की भीड़ मिल  
कर ९ सुवर्ण की कानिवाले (केसरिया) वस्त्र शरीर पर बुरे घाट से पड़े हैं  
११ हाथियों के कुंअस्थल कटकर १० खड्गों में गिरते हैं और कपट के किनारे  
से अत्यन्त झपटकर अर्थात् कपट से दूर भागकर युद्ध में मार्ग और बिना  
मार्ग निरंतर १२ किरते हैं १३ भयंकर दौड़ से नट की भांति पलटकर और  
चढ़कर १४ शीघ्र दौड़ से १५ तरवार की भाद से १६ बहुत पाप को दवानेवा-  
ली दपट देकर वे बीर समीप लेकर शीघ्रदौड़ मचाकर युद्ध में १७ रजोगुण के  
मार्ग को प्रकट करके विजय को चाहते हुए जुड़ते हैं ॥ ४१ ॥ १८ ते (वे) युद्ध के  
अलाड़े पर आये १९ गानेवाले सिंधवी रागनी के ग्राम में उच्चस्वर से आलाप  
लेते हैं "संगीत में स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं। यथा ॥ पट्टजग्रामो  
भवेदादौ, मध्यमग्राम एव च ॥ गान्धारग्राम इत्येतत्, ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥ १॥

ऐरावततैं सुप्रतीकें लग चीह चिकारैं ॥ ४२ ॥  
 दहकि दहकि दौलेय राज किरिराज पुकारैं ॥  
 लवणोदकसों सुद्धनारें लग बढन बिथारैं ॥  
 बल सुद्धनसों बामदेव लग अजक उसारैं ॥  
 बड़वामुखसों ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारैं ॥ ४३ ॥  
 इम हड्डे कूरम अभंग बल जंग बिथारैं ॥  
 बज्जैं आयुध निसिंत बाढ अरि गाढ उतारैं ॥  
 फूटैं सिर तरबूज फाँक कटि लाँक कुढारैं ॥  
 हथिन मथैं चन्द्रहास दुवर हथिन भारैं ॥ ४४ ॥  
 सुंढादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारैं ॥  
 के उद्धत संग्रहि कलापैं हठि दंत निकारैं ॥  
 सेकिम मालाँकार सोभ अति जोर उषारैं ॥  
 आधोरैन धुम्मैं अचेत कपि ज्यों द्रुम कारैं ॥ ४५ ॥  
 कुंभनतैं गजभद्र केक मुत्ताहल डारैं ॥  
 मानों मेघेक बारिबाह डिगि सीकर डारैं ॥  
 चउसठ्ठी ६४ मारैं मलंग बावन ५२ ववकारैं ॥  
 हाक हकारैं केक जानि गज मार गलारैं ॥ ४६ ॥

१ पूर्व दिशा के दिग्गज (दिशा को धारण करनेवाले हाथी) से लेकर २ ईशान  
 दिशा के दिग्गज तक (क्रम से, ऐरावत १ पुंडरीक २ वामन ३ कुमुद ४ अञ्जन  
 ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७ सुप्रतीक ८ दिग्गजों के नाम हैं) ॥ ४२ ॥ १ जल  
 जल कर कमठ ४ वराह ५ लवणोद से लेकर, शुद्धजल के समुद्र पर्यन्त समुद्र  
 के सात भेद (लवणोद, चीरोद, दधिमंडोद, घृताद, शुद्धोद, इक्षुरसोद, स्वादु  
 उद अर्थात् शुद्धोद) हैं ६ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र से लेकर ७ ईशान दि-  
 शा के स्वामी शिवतक [पूर्व दिशा से क्रम पूर्वक ईशान दिशा तक के स्वामि-  
 यों के नाम [इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर और शिव हैं] न पा-  
 ताल से ॥ ४१ ॥ ९ तीक्ष्ण १० लंक [कमर] ११ खड्ग ॥ ४४ ॥ १२ हाथी का  
 कलावा पकड़कर १३ मूले को १४ माली की भाँति १५ महावत १६ काले वृक्ष  
 से चंद्र गिरै तैसे ॥ ४५ ॥ १७ मोती १८ रयाम १९ मेघ २० जलकण (बुँद) २१ मर्जना ॥ ४६ ॥

फुट्टे बकतर \*सिंगिफेट बपु बेधि बिहारै ॥  
 टकरनतै नागोद टोप बैल खगन बिहारै ॥  
 रुके पाय रकाव जोर सादी सिसकारै ॥  
 सच्चे कच्चे लाखन मूर अति परख उधारै ॥४७॥  
 कर तुट्टै जैसै पृंदाकु फन पंच उफारै ॥  
 अंत्रावलि उरमै कटार जनु बड़िस बिसारै ॥  
 छुरिका छत्तिन छेदि छेदि मस्कर छबिमारै ॥

॥ ४८ ॥

बुंदी जैपुर लाज बाद परि उभय २ प्रहारै ॥  
 अमरपुरेकी सीम अंत नर कुशाप निहारै ॥  
 लोहित लंबी छछक छूटि प्रेतन जक पारै ॥  
 सांयक भय दायक दुसारे घायक घट सारै ॥ ४९ ॥  
 सरिता भो वह संपराय जल सौनित धारै ॥  
 बुंदी जैपुर तैट बिलंद घंट बिकट किनारै ॥  
 फुल्लि कुसेसंय हृदय फांक छवि अंतुल अपारै ॥  
 उत्पल गन लोचन अनूप हुव विकंच हजारै ॥ ५० ॥  
 इंदिदिरै उत्पर अनेक गुटिकै गुंजारै ॥

\* सींगवाले पशुओं की फेट से (यहां सिंगि की जगह सांग-  
 पाठ होता भरछी से बखतर के फूटने का संवेध अच्छा होता है) १ पेट का कवच  
 (पेटी) २ तरवारों के बल से ३ घोड़ों के सवार ॥ ४७ ॥ ४ सर्वप्रमच्छी पकड़ने  
 का कांटा ५ चांस की शोभा को ॥ ४८ ॥ ७ सुरदे ८ रुधिर की ९ चैन (आरास)  
 भय देनेवाले १० वाण ११ दोनों ओर फूटकर १२ घाव करनेवाले होकर श-  
 रीर को वेधन करते हैं ॥ ४९ ॥ १३ वह युद्ध नदीरूप हुआ जिस में १४ रुधिर  
 ने सोही जल हुआ जहां बुंदी और जयपुर ही लंबे १५ किनारे (ढाँचे) हैं और  
 वे किनारे ही भयंकर १६ घाट हैं अथवा कटे हुए शरीर हैं सोही भयंकर घा-  
 ट हैं और हृदय की चौरें हैं सोही १८ तुलना रहित अगार फूले हुए १७ शत-  
 पत्र कमल हैं, कटे हुए नेत्र हैं सोही २० उपमा रहित २१ फूले हुए हजारों  
 १९ नील कमल हैं (कितनों ही के मत से सामान्य कमल का नाम भी उत्पल  
 है) ॥ ५० ॥ उन कमलों के ऊपर २२ अमरों रूपी अनेक २३ गोलियों शब्द

गजन दंत कटि कटि गिरैं सु कैरहाट कितारैं ॥  
 तवेरम कुंभार तुल्लय बलवान बिहारैं ॥  
 वाजी गन अँवहार वेस मिलि तास मभारैं ॥ ५१ ॥  
 सुँडि पतितैं अंकुस समेत वनि बडिँस बिसारैं ॥  
 जिरह गिरी आनाय जानि पल कर्दम पारैं ॥  
 कटि कटि उड्डत कालखंज सुद्धि कमठ सिधारैं ॥  
 बुक्का चैप दहुर विँडवि बहु फदक बिधारैं ॥ ५२ ॥  
 अँत्रावलि अँलगर्द रूप संचर्य संचारैं ॥  
 जलनीली निभ सिंचय जाल इत तिरत अपारैं ॥  
 जत्थ जलौका जूहकी सु धर्मनी छवि धारैं ॥  
 गंडैक संचय अंगुलीन वनि चपल बिहारैं ॥ ५३ ॥  
 हत्थ निहँका निकर द्योय करि चलत कितारैं ॥  
 कटे तिलक बिचरैं कुलीरैं श्रुति सीप सुहारैं ॥  
 संख नख रु संबूँक संख कौंकस अनकारैं ॥

करता हैं और हाथियों के दंत कट कट कर गिरते हैं सोही १ कमल के  
 पंक्तियां हैं २ हाथी हैं सोही पलवान् ३ मकरों के रूप से बिहार  
 और घोड़े हैं सोही ४ घड़ियाल (मगर विशेष) के रूप से है ॥ ५१ ॥  
 सहित ५ पड़ी हुई हाथियों की सुँडें हैं सोही ६ मच्छी पकड़ने  
 भुजाती हैं ७ कयच हैं सो ही ८ मच्छी पकड़ने की जाल और  
 ९ कीचड़ है १० कलेजे कट कट कर उड्डते हैं सो ही फच्छप चलते  
 वृकों (गुड़दों) का समूह ही मैडक का ११ अम कर (छलांग)  
 आंतों की पंक्ति है सोही १२ जल सर्पों का १३ समूह चलता है  
 के अपार समूह तिरते हैं सोही १४ शैवाल (फाँजी) के सदृश हैं १५  
 धों की नाड़ियों (नख) तिरती हैं सोही १६ जलौक्यों (जोकों)  
 धारण करती हैं, कटी हुई अंगुलियों के समूह ही १७ छोटी मच्छियों चपल  
 कर चलती हैं ॥ ५३ ॥ कटे हुए हाथों के समूह ही २१ पंक्तियों करके २  
 (गोहीली) के समान चलते हैं और कटी हुई तिल्लियों (उदरस्थ  
 मानों २२ के कड़े फिरते हैं २३ कटे हुए कान तिरते हैं सोही सीपें हैं,  
 नख हैं सो ही २४ साँखूल्या और २५ हड्डियाँ हैं सोही शंख के २६



अंथि चूर सिकता अनूप नर सूर निहारैं ॥ ५४ ॥

आबरण क आबर्त रूप अटि चक्र उधारैं ॥

धूम लहरि उठैं अनेक अति बात इसारैं ॥

कुंभ करीके चक्रवाक ध्रुव पीतन धारैं ॥

छेदी गिरत हयच्छटा सु सारस संघारैं ॥ ५५ ॥

चामर बनि बैकांग रूप बैक टोप बिहारैं ॥

घन कारंडैव गोजन घंट गिरि गिरि गुंजारैं ॥

उंचूल सु आंटी कपाल मँगू किलकारैं ॥

गज अंगुलि कटि कटि गिरी सु सिंखरी ब सुडारैं ॥ ५६ ॥

कातर बीरंण तंब केक कठि लगि किनारैं ॥

शंगाटकें करसूकें संघ बिच देत बिहारैं ॥

ऊँरु पतित सिंभुमार आभ गैल उँद अपारैं ॥

घुँटैक घन सालूक सोभ धर पातितैं धारैं ॥ ५७ ॥

अथवा छोटे शाल, सांखूल्या और शखों का अनुकरण हड्डियों करती हैं  
 “चंद्रशेखरः शङ्खनखाः” इत्यमरः ॥ बीर पुरुष हैं वे ? हड्डियों के चूरे को ही  
 वपमा रहित २ रेत निहारते हैं ॥ ५४ ॥ ३ रुधिर में तिरती हुई ढालें ४  
 चक्राकार (गोल) फिरकर भ्रमि पड़कती हैं, ५ यहां धूम (धुवां) है सो ही ६  
 पवन के इसारे से लहरें उठती हैं ७ हरताल से रंगे हुए हाथियों के कुंभस्थल  
 हैं सो ही निश्चय ही पीलेपनको धारण करनेवाले ८ चक्रले हैं, उस युद्ध में  
 कटी हुई ९ घोड़ों की गरदनें गिरती हैं सो ही सारस १० चलते हैं ॥ ५५ ॥  
 चमर हैं सोही ११ इस वनते हैं और १२ गुणलों के रूप से टोप बिहार करते हैं  
 १३ हाथियों की घंटा गिर गिर कर बजती है सोही मानों १३ बतक (जलजं-  
 न्तु विशेष) बोलते हैं १५ ध्वजाओं के वल हैं सोही १६ आंटी नायक पक्षि  
 विशेष हैं और कटे हुए कपाल हैं सोही १७ जलमूर्ग बोलते हैं कटी हुई  
 हाथियों की अंगुलियों गिरी हैं सोही अष्ट रीति के १८ कांकड़े के डंक हैं ॥ ५६ ॥  
 कितने ही कायर १९ कांस (तृण विशेष) के समूह के समान इस युद्ध रूपी  
 नदी से निकल कर किनारे लगते हैं २० सिंघाड़ों के समान २१ नखों का  
 समूह २२ शोभा देता है २३ पड़ी हुई जंघा है सोही २४ खल (भगर विशेष) की  
 शोभा देती है २५ और कटे हुए गले (कंठ) ही अपार २६ जलमानस (जल माया सि-  
 या) है पृथ्वी पर २७ पड़े हुए २७ घुटने २८ कमल के मूल (कंद) की शोभा धरते हैं ॥ ५७ ॥



निडर पराक्रम पृथुल नाव नय मंगे निहारैं ॥  
 लंबे केतन बरदवान पवमान प्रसारैं ॥  
 प्यारे दुल्लभ प्राण रूप आंतर कर डारैं ॥  
 बीर निर्धामक रस बिसेस सुहि पार उतारैं ॥ ५८ ॥  
 उठ्ठ घायल लंपन भग्ग बुदबुद अनुकारैं ॥  
 मज्जा मेदं अनेक ओघ डिंडीरें दिकारैं ॥  
 ऐसी दुस्तर आपगां सु हुव स्रोतें हजारैं ॥  
 बुंदी जैपुर उभय<sup>२</sup> बीर तिहिं तिरन बिचारैं ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसी दुस्तर आपगा, बढे तिरन बर बीर ॥  
 इत उतके आइव अडर, धाराधरें कर धीर ॥ ६० ॥

॥ षट्पात ॥

इत पित्तल चालुक्य असह कूरम प्रताप उत ॥  
 इत कबंध अमरेस उत सु जइव दलेल द्रुत ॥  
 इत प्रयाग चहुवान सुरत उत कुम्म सुमंतह ॥  
 इत मरजाद असंक उत सु कूरम जसवंतह ॥

इत तोक बिजय कछवाह उत इत उत कुम्म अजीत दुव<sup>२</sup>

इस युद्ध रूपी नदी के तिरनेको निर्भय पराक्रम है वही १ बड़ी नाव है और नीति है सोही उस नाव का २ मस्तक है ३ सेना में लंथी ध्वजा है सोही उस नाव का बरदवान (मस्तूल) है जिसको ४ पवन फैलाता है अत्यन्त प्यारे प्राण हैं सोही उस नदी की उतराई के ५ रु में डालते हैं "आंतरस्तरपण्यंस्या" दित्यमरः॥ बीर रस ही उस नदी का खेवटिया है सोही उस नदी के पार लगाता है॥५८॥ घायलों के ७\*मुख से भाग उठते हैं सोही उस नदी में बुदबुदों के ८ अनुकरण करनेवाले हैं ९ अस्थिगत धातु और (मींजी, सार) १० चरबी का समूह ही ११ फेन (भाग) दीखते हैं ऐसी दुस्तर १२ नदी की हजारों १३ धाराएं हुई ॥ ५९ ॥ १४ खड्ग हाथों में लिये ॥ ६० ॥ १५ सुरतसिंह १६ ओछ बुद्धिमान् ॥ ६१ ॥

\* क्रिया आकर फिर विशेषण दिया जावे उसको समाप्तपुनरात्त दोष कहते हैं परन्तु क्रिया के पीछे फिर अनेक विशेषण व अनेक उपमा दी जावे वहां यह दोष मिटजाता है सोही यहां जानना चाहिये.

इत देव हड्ड हम्मीर उत हरखि कुम्म हमगीर हुव ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हड्ड भवानीसिंह इत, उत माधव कछवाह ॥

इत सगताउत अचल उत, संकर कुम्म सिपाह ॥ ६२ ॥

च्यारि \*अमर रठोर सुत, अब तिनको अभिधान ॥

इत भैरव अंगद अचल, उत कछवाह अमान ॥ ६३ ॥

इत कबंध नवल्लेस उत, भट कूरम भूपाल ॥

इत सन मान कबंध उत, अर्जुन कुम्म अचाल ॥ ६४ ॥

अडर सिवाईसिंह इत, रनपंडित रठोर ॥

अभयसिंह कछवाह उत, मिले उभय भट मोर ॥ ६५ ॥

इत सु भट्ट बुंदीसको, जुद्ध निपुन जगराम ॥

उदयसिंह परमार उत, कुपित भिरयो जय काम ॥ ६६ ॥

उभय उभय इत्यादि जुरि, अनी अमर उमराव ॥

किन्नौ रन रविमल्ल कवि, बरनै बिरुद बढाव ॥ ६७ ॥

॥ पञ्चटिका ॥

चालुक बर पित्थल जंग चाह, नाथाउत पुर निम्मान नाह ।

पैसठि ६५ पैदाति सादी पचीस २५, सजि चलिय कुम्म परताप सीस ६८

उततै प्रताप हय सत १०० उपेतै, खिजि आयो सम्मुह बीर खेत ॥

पित्थल उर मारिय बान पंच ५, रन बीर यहहु संकयो न रंच ॥ ६९ ॥

मारकै सिर मारिय मंडलंग, कटि टोप कछुक सिर खगिय खग

तस सुभट इहाँ इक वार किन्न, कर सव्य सांगद सु करिय भिन्न ७०

दे जात चलिय पित्थल कृपान, सिर भिन्न होय अरि भुव सयान

॥ ६२ ॥ \* अमरसिंह राठोड़ के चार पुत्र † नाम ॥ ६३ ॥ ‡ इधर से

॥ ६४ ॥ § मोड़ (मुकुट) ॥ ६५ ॥ १ सूर्यमल्ल कवि स्तुति को बढाकर वर्णन करते

हैं ॥ ६७ ॥ २ पैदल ३ सवार ॥ ६८ ॥ सौ घोड़ों ४ सहित यहाँ (अजहत्स्वार्थ)

लक्षणा से घोड़ों के सौ सवार जानना चाहिये) ॥ ६९ ॥ ५ मारनेवाले पर ६

खल्लाया ७ घुसा ८ मुजबंद सहित बाम हाथ काट डाला ॥ ७० ॥ ९ सोया

पुनि हनि प्रतापके सुभट सत्त७, आयो उडाय हय इत उमत्ता७१॥  
 हयखंधे लेग आरिय प्रताप, हय गिरत भयो पयचारै आप ॥  
 हय हीन तिमहि कर सव्य हीन, पुनि हनिय कुम्म भट नव ०  
 प्रवान ॥ ७२ ॥

इहिं बिच प्रताप आरिय कृपान, पित्तल कटयो सु तिल तिल प्रमान  
 सन्नोह लयो नहि प्रथम सूर, पानिप दिखाय तैसोहि पूर ॥ ७३ ॥  
 सत्रह१७अरी तेरह१३स्वभट सत्त, सजि इण्टलोक पहुँच्यो समत्त  
 रडोर अमर जहव दलेल, खिजि खिजि इत मंडयो बीर खेल ॥ ७४ ॥  
 तेतीस३३ पैदल इत कृति२० तुरंगं, उत सत १०० रु सद्धि६०अनु-  
 क्रम अमंग ॥

लखि कहिय परस्पर बाह बाह, बाहहु तुम बाहहु नव सिपाह ७५  
 भिरि प्रथम रचिय सेलन भचक्र, रैमि दाव धाव कावन रचक्र ॥  
 इम फिरत बाजि दोउन२ उडानि, दुवर भंड दंडभूतें चक्र जानि७६  
 ननुँ कै दिनेसँ अरु जामिनीस, गरदाय फिगत हाँटक गिरीस ॥  
 आवर्त उँदधि जिम दुवर जिहाज, बलि किँसु कपोत पर उभय  
 २ बाज ॥ ७७ ॥

दुवर पत्र बाँतचक्र कि घिरंत, कन्या कि उभय फुँदियँ फिरंत ॥  
 दुवरलेंदुव जानि नट सिर दिखाय, इम फिरिय बीर बाजिन उडाय ७८  
 अमरेस सुक्कि तोमैर अमंग, जहव हय बेधयो निडर जंग ॥

॥ ७१ ॥ १ घोड़े के कंधे पर २ पैदल ३ वाम हाथ से ॥ ७२ ॥ ४ कवच  
 ५ पराक्रम ॥ ७३ ॥ ६ अपने वीरों के साथ ७ चाहता था उस लोक में =  
 समर्थ ॥ ७४ ॥ ८ पैदल १० यहाँ लक्षणा से सवार जानो ११ सौ पैदल आर  
 साठ सवार इस अनुक्रम से १२ ननीन ॥ ७५ ॥ १३ दाव खेल कर १४ दौड़  
 १५ कुम्हार के चाक पर दो मटके होवें इस तरह ॥ ७६ ॥ १६ अथवा निश्चय  
 ही मानों १७ सूर्य और १८ चन्द्रमा १९ सुमेरु पर्वत को घेरकर फिरते हैं  
 २० समुद्र के अग्नि [चक्का] में दो जहाज मानों एक कवच पर दो बाज हैं  
 ॥ ७७ ॥ २२ पवन के गोद में दो पक्षी घिरे २३ नृत्य विशेष २४ गैद ॥ ७८ ॥ २५ भाजा

हय गिरत अं पर आरुहि दलेल, मारयो कबंध उर सुंभर सेल ७२  
 सहि सेल अमर हनि सत्रु सत्त७, मारयो दलेल असिबर उमत्त ॥  
 जहवहिं मारि अग्यै जगाम, भिंटयो भटेस सीसोद स्याम ॥ ८० ॥  
 दोउन२ कृपान आरिय दुःहत्थ, मूडमाल मध्य गय उभय२मत्थ॥  
 अरि नवै९पचीस२५निज भट उपेत, रहोर गयो निजैर्जर निकेत८१  
 इत भट प्रयाग इक्क१ हि अभंग, सुरतेस उत सु हय सद्धि६० संग॥  
 मिलि उभय२जंग मंडिय अमान, बदि वाह वाह सिव किय बखान॥ ८२  
 पटु प्रथम तुपक आरिय प्रयाग, अरि दोय२हनिय तिम आखु नाग॥  
 डकराय बाजि पुनि तुपक डारि, कटि हितु कालनीगिनिनिकारि ८३  
 सुरतेस निकट पहुँच्यो प्रयाग, फिरि मंडल खेल्यो हेति१ फाग ॥  
 जजे भट पिँल्ले सुरत जत्थ, तेते प्रयाग सब हनिय तत्थ ॥ ८४ ॥  
 इम फिरत हहु हैवर उताल, जिम अनिलँ अगितन बिपिन जाल  
 तिय मृगियँ सुरत जिम नर तुरंग, इम सुरतँ हहु दळ्यो अभंग८५  
 आघात खगग दैँ अनूप, किय बहुत कुम्म आलकत कूप ॥  
 खट६ सुभट सुरत पिँल्ले खिसाय, पँत्ते प्रयाग पर रन रिसाय ॥ ८६ ॥  
 अभिमन्नुलरयो खट रथिन औजि, बिफुरयो प्रयाग इम दपटि बाजि॥  
 दुव २ मारि च्यारि ४ घायल गिराय, खट६ असि प्रहार तिनकेहु  
 खाय ॥ ८७ ॥

सुरतेस सीस हंकिय सजोर, मानहु लखि जिहंग मत मोर ॥

१ दूसरे घोड़े पर बैठकर २ सुभट ने ॥ ७९ ॥ ३ अष्ट तरवार  
 से उन्मत्त होकर ४ चला ५ वीरों का पति शीपोदिया व्याससिंह से  
 मिला ॥ ८० ॥ ६ शिव की मुंडमाला में ७ स्वर्ग में गया ॥ ८१ ॥ ८२ ॥  
 ८ चतुर ९ धूँह को सर्प मारै तैसे १० घोड़े को ललकार कर ११ तरवार ॥ ८३ ॥  
 १२ शस्त्रों का फाग सुरतसिंह ने १३ भेजे ॥ ८४ ॥ १४ पवन से तूणों के वन में  
 अग्नि फिरै तैसे १५ मृगी जाति की स्त्री अश्व जाति के पुरुष से लैने दबजाती  
 है तैसे १६ सुरतसिंह को हाडाने दयाया ॥ ८५ ॥ १७ चलते के कूप कर दिय अख-  
 त का रंग लाल होता है १८ सिद्धाकर १९ पूगे ॥ ८६ ॥ २० युद्ध में ॥ ८७ ॥ २१ सर्प

इक १ जवन आनि इहिँ बिच उमाहि, बेधयो प्रयाग सित सँगि बाहि ८८  
 इहिँ सँगि सहित घोटैक उडाय, कट्यो सु मिच्छ पुनि पिहुल काय  
 यँहँ सुरतसिंह किय खग वाग, मारयो प्रयाग मूड जानि मार ॥ ८९ ॥  
 हुँडत जिहिँ हारे कँक ठँक, नहिँ मिलिय बुत्थि पलचरन नैक ॥  
 अवसिँठरहिय नहिँ लैन अगिग, लुत्थि सु प्रयाग गय असिर्न लगि ६०  
 हनि पंच ५ च्यारि ४ घायल बिधाय, पत्तो प्रयाग निँज र निकाय ॥  
 मरजाद सु मुहुकम अन्ववाँय, सतपंच ५०० पैदग सौदी सजाय ॥ ९१ ॥  
 इत चलिय पिक्खि जसवंत बीर, धुर धर भलायपति कुमार धीर ॥  
 वहहू सजि खट सय ६०० अश्ववार, हमगीर पैदिक त्यौही हजार  
 १००० ॥ ९२ ॥

मरजाद सीस धारत मरोर, आयो राजाउत रचत रोर ॥  
 मरजाद मत्थ तकि तोर तीन ३, दपटाय बाँजि कछवाह दीन ॥ ९३ ॥  
 मरजाद सुभट इक नाम मान, कूरम हय मारयो दै कृपान ॥  
 जसवंत अपर हय चढि जरूर, समसेर हन्यो वह मान सूर ॥ ९४ ॥  
 कूरम निज जहव सुभट दोय २, हड्डा सिर हूँले कूपित होय ॥  
 दै चक्र दुहुँन २ मरजाद बिटि, भालन प्रहार किय भिटि भिटि ॥ ९५ ॥  
 हुत हड्ड दुहुँन २ तोमर बिदारि, जहवन गयो मरजाद जारि ॥  
 रठोर बहुरि पिल्लयो रिसाय, खग भारि हड्ड लिय सोहु खाय ॥ ९६ ॥  
 पठये इम कूरम दस १० सिपाह, लिन्ने ति मारि लागि बिजय लाह ॥  
 हड्डा सुमेरु पठयो बहोरि, दिन्नो कृपान तिहिँ खंध दोरि ॥ ९७ ॥

को देखकर १ तीक्ष्ण बरछी खलाकर ॥ ८८ ॥ २ घाँड़ों ३ बड़े शरीर  
 वाले को ४ शिव ने कामदेव को मारा जैसे ॥ ८९ ॥ ५ दोनों माँसाहारी  
 पक्षि विशेष हैं ६ मांस खानेवालों को ७ जलाने को अवशिष्ट [ बाकी ] नहीं  
 रहा ८ तरबारों के लग गया ॥ ९० ॥ ९ करके १० देवताओं के ११ खान [ स्वर्ग ] में  
 गया १२ कुकमसिंह के वंश में १३ पैदल १४ मवार ॥ ९१ ॥ १५ पैदल ॥ ९२ ॥ १६  
 १७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ९३ ॥ १८ मानसिंह ने १९ दूसरे घोड़े पर ॥ ९४ ॥ २०  
 बढ़ाये या भेजे ॥ ९५ ॥ २१ हजम कर गया ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

उपबीत उतरि मरजाद \*अंस, बैठोंतनुत्र भिदिष्टृष्ठिबंस॥  
 इहिं घाय भयो संभर अचेत, खिन धरिय मोह ढरि परिय खेत ९८  
 तजि मोह बहुरि विनुही तुरंग, जसवंत हितु किय उठि जंग ॥  
 पुनि मारि अट्टक कूरम प्रवीर, सुतो सतल्प संगर सधीर ॥ ९८ ॥  
 इम खाय सत्रु एकोनबीस १९, बैलि करिय चेत घायल बतीस ३२  
 बिटिय तब अच्छरि डारि बाँहि, मरजाद पत इम नाकमाँहि १००  
 चोरासी ८४ निजभट रहिय खेत, सतदोय २०० भये घायल सु चेत ॥  
 इत तोकसिंह मिलि छोह अंग, उत बिजयसिंह कूरम अभंग १०१  
 दुव २ दपटि बीति रीतिन दिखाय, दुव २ करत वार असि घाय दाय  
 रन चँत्वर दुव २ जयखंभ रूप, दुव २ स्वामि धर्मधर भटन भूप १०२  
 दुव २ द्विरद इक धेनु क दिखात, दुव २ सिंह जानि इक बैस्त आत  
 यँह तोक चंड असिवर चलाय, गति वज्ज बिजय दिन्नो गिराय १०३  
 इत अजित अजित कछवाह दोय २, हथियार मार मिलि मत्त होय  
 गोलिन लागि दोउन २ हय गिरंत, व्है पदिकँ जुरे बलवत हंत १०४  
 आतोंपि उभय २ जिम जुरत जुद्ध, कैधों चँरनायुध उरभि क्रुद्ध ॥  
 जिम त्रोटि नखर खँरकोन जंग, दँक्षाय्य कंक जँनु अतुल दंग १०५  
 भिरि इम प्रवीर बनि छिन्न भिन्न, करि किति दुहुँन दिवँ बास किन्न  
 इत देवसिंह हडा उदार, हरदाउत सत्रुन गिलनहार ॥ १०६ ॥  
 हम्मीर कुम्म सिर विरचि हाक, जग कतल करत आयो कजाक

\* कंधे में कबच कट कट कर पीठ की हड्डी में चहुवाण मूर्छा ॥ ९८ ॥ २ घिना  
 घोड़े ३ से ४ रख शय्या ॥ ९९ ॥ ५ पुनि [फिर] ६ गया ७ स्वर्ग में गया ॥ १०० ॥  
 ८ क्रोध ॥ १०१ ॥ ९ घोड़ों को १० युद्ध के चौक में ११ उमरावों या वीरों के  
 राजा ॥ १०२ ॥ १२ दो हाथी एक १३ हथनी पर १४ एक चकरे पर १५ बिजयसिंह  
 को ॥ १०३ ॥ १६ दोनों अजितसिंह १७ पैदल १८ खेद है (घोड़े मर जाने से खेद  
 के वचन कहे हैं) ॥ १०४ ॥ १९ चालि पत्नी २० कुक्कुट (मुरगे) २१ बच्चू और नखों  
 से २२ तीतर पत्नी लड़े जैसे २३ ग्रीध २४ मानों ॥ १०५ ॥ २५ स्वर्ग में ॥ १०६ ॥  
 २६ युद्ध में

मिलि उभय<sup>२</sup>भाद्रपद मुदिर मान, आसार हेति वरखत अमान<sup>१०७</sup> ।  
 हम्मीर इहाँ करि असि प्रहार, वह देव न राख्यो अश्ववार ॥  
 तब पदिक होय रचि नट मलंग, सारसन भटकि अँच्यो सुसंग<sup>१०८</sup> ।  
 पयचौर<sup>१</sup> उभय<sup>२</sup> इम बनि प्रबीर, दठ पुब्ब जुरिग देव रु हमीर ॥  
 हलकारि खगग भारत दु<sup>२</sup>हत्थ, ललकारिहोत पुनिलुत्थि बत्थ<sup>१०९</sup> ।  
 तुट्टिय लागि दोउन<sup>२</sup> असि तनंकि, कटार तबहि भारिय भनंकि ॥  
 छम<sup>१</sup> मल्ल जुद्ध पुनि रचि अछेह, दुव<sup>२</sup> बीर गिरे इम छोरि देह ।<sup>११०</sup>

॥ षट्पात् ॥

सुभर भवानीसिंह महासिंहोत उमँडि इत ॥  
 उत माधव कछवाह हलिय, निज स्वामि बिजय हित ॥  
 खुरन अगग भुव खुंदि मुंदि पँन्नग सहस्र मुख ॥  
 तुमुल भारि तरवारि रारि मंडिय रावन रूख ॥  
 मिटि गुंमर पिट्टि कच्छप मुरकि दुरकि निट्टि सूंकर ढबिग  
 भीरुन भटेस धिक्करि भिरत दिक्करि गन चिक्करि दबिग <sup>१११</sup>  
 जिम आखंडेल जंभ सँव्यसाची राधासुंत ॥  
 स्वामी तारकें सूर भीम कीचक बल अद्भुत ॥  
 पुनि हलैहेति प्रलंब सूनसाँयर अरु संबैर ॥  
 अंजनिनंदन अँत्त बज्जतुंडें रु काकोदर ॥  
 मैनाँकस्वसा जित सुरमहिषें आजगवी अंधक अरन ॥

१ भादों के मेघ के समान २ शस्त्रों रूपी पानी ॥ १०७ ॥ ३ घोड़े को मार डाला ४ काट मँख-  
 ला (कर्धनी अथवा कमरबधा) ॥ १०८ ॥ ५ पैदल ॥ १०९ ॥ ६ समर्थ ॥ ११० ॥ ७ शेषनाग के द  
 रावण की भाँति ८ घमंड झिटकर १० बराह ठहरा ११ कायरों को धिक्कार देकर  
 १२ दिशाओं के हाथियों के समूह १३ चित्कार शब्द करके दबगये ॥ १११ ॥  
 १४ इंद्र और जंभासुर १५ अर्जुन और १६ कर्ण १७ स्वामिकार्तिक और १८  
 तारकासुर भीम और कीचक १९ बलदेव और प्रलंबासुर २० समुद्र का पुत्र  
 कामदेव और २१ शंकरासुर २२ हनुमान और २३ अक्षयकुमार २४ गरुड़ और २५ सर्प  
 २६ पार्वती (देवी) और २७ महिषासुर, जैसे २८ शिव और अंधक असुर अडे

इहिँ रीति भूपटि आहव अजिर बीतिँ दपटि लग्गे लरन ॥ ११२ ॥

कूरमको करवाल हड्ड भिल्लयो तोमर पर ॥

कटत कुंतँ असि कट्टि अनखि भाारिय इहिँ अवसर ॥

कूरमको सिर कट्टि निडर किय रुद्र निवेदन ॥

इम अँलत रहि अप्प अरिन मंडिय उच्छेदन ॥

वर वाजि नाव खेपक बलिय कुच्छेपक दिय बाँलि करट ॥

जय धारि फिरिग जानिय जगत भिरिग भवानिय सिंह भट ॥ ११३ ॥

इत सगताउत अचलसिंह कूरम उत संकर ॥

इत प्रवीर लँवअंस उत सु कुँस बंस भयंकर ॥

इत बुंदिय धर औरर उत सु दुँडाहर तालक ॥

उदयनैर इत ओप उत सु जैपुर उज्जालक ॥

त इक्क १ उत सु दस १० हय अधिप इत सिव रत्नक बिष्णु उत ॥

हलिकार फुरे हिय सुँम बिकासि निकसि जुरे कलिकार नुँत ॥ ११४ ॥

॥ दोहा ॥

दस १० दस १० भेलि प्रहार दुवर, रहे ति घायल रंग ॥

आयु भयो बलवान यहँ, मेटी त्रिदिव उमंग ॥ ११५ ॥

इत भैरव अमरस सुत, रनकोविंद रहोर ॥

और अमान कछवाह उत, जैवी जुरिग अतिजोर ॥ ११६ ॥

कूरम खगग कबंधकै, दिन्नो तमकि मदंध ॥

कटि बाहुलँ कर अद्व कटि, बैठो लागि मणिबंध ॥ ११७ ॥

तैसे १ युद्ध के आंगन (चौक) में २ घोड़े दौड़ाकर लड़ने लगे ॥ ११२ ॥ ३

खड्ग ४ भाले पर ५ भाले कटते ही ६ शिव के भेट किया ७ आप (रुद्र)

घाय रहित शत्रुओं को ८ काटना शुरू किया ९ कौशेयक (खट्वा) से १० बलि-

दान (भोजन) दिया ११ काक पक्षियों को ॥ ११३ ॥ १२ लव के वंश से (श्रीपों-

दिया क्षत्रिय) १३ कुश के वंशवाला (कछवाहा क्षत्रिय) १४ कपाट १५ ताला

१६ कलियों के आकार से हृदय फूलकर १७ पुष्प होगये १८ युद्ध करनेवाले धाना-

रद से १९ स्तुति योग्य ॥ ११४ ॥ २० स्वर्ग की ॥ ११५ ॥ २१ युद्ध चलुर २२ शीघ्र अभय आह

(लव) करके २३ वंशवान जुड़े २४ अतिबल से ॥ ११६ ॥ २५ स्नाना २६ पौंचे तक ॥ ११७ ॥



अैसेही इक अंस पर, खाय उभय२ तस खग्ग ॥  
 माख्यो कुम्भ अमानकों, इम रहोर उदग्ग ॥ ११८ ॥  
 पुनि कूरम भगवंत प्रति, जुरयो मलंगत मत्त ॥  
 दोउन२ असिबर छाक छकि, तजे कलेवर तत्त ॥ ११९ ॥  
 इत कबंध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥  
 अरै इच्छन जोरे उभय२, कर तिच्छन करवात्त ॥ १२० ॥  
 मानौ भद्व मेघमै, चपला जुग२ चमकाय ॥  
 भटके इम भमकाय दुव२, हुव बटके घन घाय ॥ १२१ ॥  
 इमहि बीर सनमान इत, उत अज्जुन कछवाह ॥  
 तिल तिल काटि पहुंचे तबिष, लै दुव२ अच्छरि लाह ॥ १२२ ॥  
 अडर सिवाईसिंह इत, मूर अभय उत सज्जि ॥  
 परे खेत घायल उभय२, रुहिरँ छछकत रज्जि ॥ १२३ ॥  
 इत भट्ट सु बुन्दीसको, जयगाहक जगराम ॥  
 उदयसिंह परमार सिर, धप्यो प्रसारत धाम ॥ १२४ ॥  
 कुंत इक्क१ परमारको, खाय प्रहारिय खग्ग ॥  
 किन्नौ प्रबल करोडियाँ, अरि सिर खंध अलग्ग ॥ १२५ ॥  
 उदयसिंहको मारि इम, बिंटयो जद्व बग्घ ॥  
 देह छोरि दिय पत्त दुव, अच्छरि मंडिय अग्घ ॥ १२६ ॥  
 ज्यौ संगर कनउज्जके, चंद लरयो असि चंड ॥  
 इम जुट्यो जगराम यँहँ, खंडन करि बपु खंड ॥ १२७ ॥  
 इत्यादिक इत उत लरत, बुंदी सुभट बिसेस ॥

१ कंधे पर ॥ ११८ ॥ २ शरीर ॥ ११९ ॥ ३ शीघ ४ नेत्र मिलाये ॥ १२० ॥  
 ५ तरवारें (यहां लक्षणा से तरवार का अर्थ है, नहीं तो एक बार में दो टुकड़े  
 होजाने को डिंगलभाषा में भटका कहते हैं) ॥ १२१ ॥ ६ स्वर्ग में ॥ १२२ ॥  
 ७ रुधिर की छडकों से शोभित होकर ॥ १२३ ॥ ८ तेज तथा अपना स्वरूप  
 ॥ १२४ ॥ ९ भाला १० भादों की एक जाति ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥

विव असि भारत बुद्ध सुव, दुपहर चंड दिनेस ॥ १२८ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

चल्यो इत भुपति भारत खग, भरैं अरि घायल डारत भग्न ॥

इतैंउत घोर मचैं अवमह, इतैंउत आवहिं आवहिं नह ॥ १२९ ॥

इतैंउत मुंडन छादित भुम्भि, इतैंउत डोलत घायल घुम्भि ॥

इतैंउत संकुलि लुत्थिन लुत्थि, इतैंउत बाह बिखरत बुत्थि ॥ १३० ॥

इतैंउत खंजर होत दुसार, इतैंउत फुटत पट्टिस पार ॥

इतैंउत होत तुपकन मग्न, इतैंउत बेधत सेलन अग्न ॥ १३१ ॥

इतैंउत तीरन ठंकत गैन, इतैंउत उद्धत संगितसैन ॥

इतैंउत उग्र रचैं रन रोर, इतैंउत पात गदा अति जोर ॥ १३२ ॥

इतैंउत चाप चट्टन चैक, इतैंउत धूपनकी धमचक ॥

॥ तचक्र १ मचक्र २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

इतैंउत या गति आयुध बुद्धि, इतैंउत मुठिनं मारत मुठि ॥ १३३ ॥

इतैंउत भोंदैन चुंबत मुच्छ, इतैंउत उडुत गोदैन गुच्छ ॥

इतैंउत अंबन लगगत लीह, इतैंउत कातर कछरि जीह ॥ १३४ ॥

इतैंउत तुटत संकुलि सीस, इतैंउत सूर रिभावत ईस ॥

इतैंउत डाकिनि खाजत खेत, इतैंउत पानि प्रसारत प्रेत ॥ १३५ ॥

इतैंउत डोलत अंबन व्याल, इतैंउत फुटत कंठ कपाल ॥

इतैंउत धावत सोनित धार, इतैंउत कीकंस वृंद अपार ॥ १३६ ॥

इतैंउत नैन उछटत कहि, इतैंउत बाहु फटकत बहि ॥

इतैंउत टोप बकतर टूक, इतैंउत हूँव हरव हूक ॥ १३७ ॥

१ बुधसिंह का पुत्र ॥ १२८ ॥ २ पीड़ाकारी युद्ध ॥ १२९ ॥ ३ भरगई ॥ १३० ॥ ४ कटारी ५ भालों के अग्र भाग से ॥ १३१ ॥ ६ आकाश को ७ धरास्त्रियों से सेना = भय ह प्रहार ॥ १३२ ॥ १० चक्र (सेना) ११ तरवारों की १२ मुक्कों से अथवा खड्ग की मुठों पर सूटी मारते हैं ॥ १३३ ॥ १३ मस्तिष्क (भेजों) के समूह १४ घोड़ों की पट्टी ॥ १३४ ॥ १५ अश्वकाश रहित १६ हाथ फैलाते हैं ॥ १३५ ॥ १७ अंतों के सर्प १८ हड्डियों के समूह ॥ १३६ ॥ १९ हूँ हूँ, शब्द अथवा हूँ (अप्सराओं) का शब्द

इतैउत बावन गावनहार, इतैउत जच्छ जपै जयकार ॥  
 इतैउत नारद अकखत बाह, इतैउत साकिनि देत सिराह ॥ १३८ ॥  
 इतैउत चौकि फिरै चउसद्विद्व, इतैउत सूरन सज्ज समष्टि ॥  
 इतैउत तंडव मंडत रुंड, इतैउत भुक्त भुडन भुड ॥ १३९ ॥  
 इतैउत बाहहु बाहहु बुल्लि, इतैउत तेगन भारत तुल्लि ॥  
 इतैउत बाजिन बग्ग तमाम, इतैउत कुदत गैवर ग्राम ॥ १४० ॥  
 इतैउत पक्खर घंटन घोर, इतैउत अग्नि सिलगगत सोर ॥  
 इतैउत बदलके अनुकार, इतैउत लोहित बुद्धत बार ॥ १४१ ॥  
 इतैउत चाप सु चासैव चाप, इतैउत गज्ज सु गज्ज अमाष ॥  
 इतैउत सीकर गोलिन गोट, इतैउत दंतिन दंत बंकोट ॥ १४२ ॥  
 इतैउत ओज इरम्मद धारि, इतैउत त्यों तड़ितों तरवारि ॥  
 इतैउत व्है लहरु हरयल्ल, इतैउत घुग्घर दंडुर गल्ल ॥ १४३ ॥  
 इतैउत बीर सु उत्तर बांत, इतैउत सूर मयूर सुहात ॥  
 इतैउत चातक घंटन आलि, इतैउत अतिथि किरै करकालि ॥ १४४ ॥  
 इतैउत कातर भोलि उदास, इतैउत दूर कूँपीबल आस ॥  
 इतैउत जीगनें व्है चिनगीन, इतैउत रूपाम घटा करटीनें ॥ १४५ ॥  
 रच्यो नृप यों रन पाँउसरूप, धपावत सत्रुनतै निज धूप ॥  
 लयो ढिग जाय नरायनदास, प्रहारन मार रची चहुँपास ॥ १४६ ॥  
 ॥ १३० ॥ १ गान करनेवाले बावन भैरव ॥ १३० ॥ २ समष्टि (समूह) ३  
 चतुष्टय ॥ १३९ ॥ ४ हाथियों के समूह ॥ १४० ॥ ५ अग्नि ६ सदृश ७ रुधिर वर-  
 मत्ता है सोही पानी है ॥ १४१ ॥ ८ इन्द्र धनुष, गोले और गोळियाँ चलती  
 हैं सोही ९ जलकण हैं १० हाथियों के दन्त हैं सोही चगुले हैं ॥ १४२ ॥ ११  
 पराक्रम है सोही मेघज्योति है १२ तरवारों की बिजुली है १३ सेना का अग्रभा-  
 ग है सोही लहरें हैं १४ घुग्घर हैं सोही मैडकों का शब्द है ॥ १४३ ॥ १५ बीर हैं  
 सोही उत्तर का पवन है १६ घटाओं की पंक्ति ही चानक है १७ अस्थि (हाड) बि-  
 खरते हैं सोही १८ ओलों की पंक्ति है ॥ १४४ ॥ १९ ऊँटों रूपी कायर उदास हैं  
 २० अप्सराओं रूपी खेती की आशा है २१ अग्नि कण ही जुगुन है २२ हाथी हैं  
 सोही काली घटा है ॥ १४५ ॥ २३ बर्षा रूपी युद्ध रचा २४ तरवार को ॥ १४६ ॥

मरे भट भूपतिके सत तीन ३००, भये सत पंचक ५०० घायन खीन ॥  
 भज्यो गज खत्रियको लखि भार, भयो तब कुहि रुहै असवार ॥  
 इते विच कूरम विक्रम आय, दई तरवारि घने करि दाय ॥१४७॥  
 भयो तिहि हंजक है षप भिन्न, तऊ भूपटाय हने अरि तिन्न ३ ॥  
 भिरयो वह विक्रम आनि बहोरि, लयो नृप कूरमको सिर तोरि १४८  
 यहै लखि कूरम भैरव आनि, जुरयो नृपते दल मारत जानि ॥  
 महीपति उपर खग मुमोच, खंग्यो कछु पंसुलिपे कटि कोर्च १४९  
 करी पुनि हंज हयच्छट चोट, कढ्यो कछुपै नरुख्यो नृप घोट ॥  
 चली नृपकी तपकी तरवारि, लयो वह भैरव मारत मारि ॥१५०॥  
 इतेविच कुम्भ मिलयो महताप, दये सर च्यारि छट छट चाप ॥  
 लगे नृपकै दुवर दारित दंसे, लगे हयकै दुवर दाहिन अंसे ॥१५१॥  
 रुख्यो नहि रंच तऊ नृप आज, चलयो अरि मारत फारत फोज ॥  
 तहाँ पुरपीलपती चहुवान, भिरे दुवर थान तथा सुरतान १५२  
 नरुहैर त्यों हरनाथ ३ तृतीय, इन्है नृप रुक्मिय गाढ गरीय ॥  
 उभै चहुवानन आरिय खग, करे तिनके सिर भूप अलग १५३  
 तथा सहि नारिकी तरवारि, लयो हरनाथहुको हय मारि ॥  
 घनी इम जैपुर बीरन नारि, करी नृप जोगिनि कंकन मारि १५४  
 जहाँ हरदाउत हू नगराज, लरयो नृपको भट बुंदिय लाज ॥  
 कहार हठी हु रह्यो नृप पास, लरयो सैह दोलतराम खवास १५५

१घोड़े पर चढ़ा २विक्रमसिंह ने ३दाव (पेच) ॥१४७॥ ४हंज नामक घोड़े का पैर  
 कटगया ५उम्मेदसिंह ने (इस चरित्र में जहाँ जहाँ केवल नृप, भूप, पट्ट, संभर,  
 चहुवाण शब्द आये तहाँ तहाँ बुंदी के राजा उम्मेदसिंह को जानना चाहिये)  
 ॥१४८॥ ६छोड़ा (खड्ग का प्रहार किया) ७घुसा (बैठा) ८कवच कट कर ॥ १४९ ॥  
 ९ हंज नामक घोड़े के कंधे पर १० राजा का घोड़ा ११ मारते हुए को मार  
 किया ॥ १५० ॥ १२ कवच फोड़कर १३ दाहिने कंधे पर ॥ १५१ ॥ १४पुर का  
 नाम है १५थानसिंह ॥ १५२ ॥ १६ नरु के वंशवाला १७भारी दृढ़ता से ॥ १५३ ॥  
 १८ नरुके की १९विधवा ॥ १५४ ॥ २० राजा का उमराव २१ साथ ॥ १५५ ॥

तथा सठ भीरु भजे सतच्चारि४००, रची इम जैपुरत नृप रारि॥१५६॥  
 तथा सतच्चारि४००मरे अरितत, परे पुनि घायल ठहै सतसत्त७००  
 नरायन खेत खरो अघ धोय, घनों दल क्यों न तहाँ जय होय १५७  
 कढयो नृप बुंदियपैं धक्र धारि, मरैं तब कोन करैं पुनि रारि ॥  
 इतैं कछवाहन खोजिय खेत, लरुयो रन अंगन चित्रं \*उपेत ॥१५८॥  
 कहीं तरफैं भट तुटत स्वास, लरैं कहूँ लुत्थि करैं कहूँ हास ॥  
 बकैं कहूँ घायल ठहै सुधि हीन, जिकैं कहूँ जानुन भुक्त भीन १५९  
 डरे कहूँ अत्रन डारत ग्रीव, फिरैं कहूँ नैन चलैं कढि जीव ॥  
 करैं कहूँ सुंढिनके उपधान, रैटैं हरिकौं रन तल्प सैयान ॥१६०॥  
 लरैं कहूँ मत्त परासुन ओट, डुरैं कहूँ लोत कबूतर लोट ॥  
 भरैं कहूँ बायु करैं उनमत्त, धरैं कहूँ सीस कलेजन छत्त ॥१६१॥  
 गिरैं कहूँ पाय पटकन भुम्भि, रहे कहूँ रुद्धि रकावन भुम्भि ॥  
 लरैं कहूँ भूतनतैं भरि बत्थ, झरैं कहूँ जावक जैत्रव मत्थ ॥१६२॥  
 परे कहूँ बीर अधोमुख भूरि, डुरे कहूँ गाफिल चट्टत धूरि ॥  
 दबे कहूँ कुकत हत्थिन हेठ, जरे कहूँ पन्वय ज्यौं दब जेठ ॥१६३॥  
 रहे कहूँ कुंजर कुंभन लागि, मनौं जुवतीन अनन्यर्ज जागि ॥  
 तिरैं कहूँ सोनित व्याकुल ब्रात, भिरैं कहूँ भेदत गिह्नन गात १६४  
 करैं कहूँ दंतनतैं कटकट, जरैं कहूँ जुगिनिपैं रंहपट्ट ॥  
 पढैं कहूँ कृष्ण कल्यो वह ज्ञान, भनैं कहूँ सांख्य बनैं भगवान् १६५  
 चखैं कहूँ लोहित ओठन चँब्वि, डुरैं कहूँ कंकन पंखन दब्वि ॥  
 अटैं कहूँ आतुर इक्कहि पाय, हटैं कहूँ पीड़ित जंपत हाय ॥१६६॥

॥ १५६ ॥ १५७ ॥ \* आश्चर्य सहित ॥ १५८ ॥ † गिरैं ॥ १५९ ॥ १ तक्रिया  
 २ रखगठ्या पर सोते हुए ॥ १६० ॥ ३ मृतक शरीरों की ओट में ॥ १६१ ॥ ४ जा-  
 वक के ऊँहारे के समान ॥ १६२ ॥ ५ ज्येष्ठ मासमें पर्वतों में अग्नि जलै जैसे ॥ १६३ ॥  
 ६ हाथियों के कुंभस्थलों से लेकर ७ स्त्रियों से ८ कामदेव के जगने से ९ समूह  
 ॥ १६४ ॥ १० धप्पड़ ११ गीता का ज्ञान १२ सांख्यशास्त्र के मत को कह कर  
 स्वयं ब्रह्म बनते हैं ॥ १६५ ॥ १३ होठों को चबाकर छोड़ चखते हैं ॥ १६६ ॥

कहैं कहूँ बैद्य बुलावन बत्त, चहैं कहूँ अच्छरि को रसरत्त ॥  
 भुलैं कहूँ घोरनपैं मृत झुंड, रुलैं कहूँ \*तंडव मंडत रुंड ॥ १६७ ॥  
 खिजैं कहूँ चिलहनिपैं पलखात, लसैं कहूँ फेरन मारत लात ॥  
 गहैं कहूँ सुवानन तोरत गूद, बनैं कहूँ साकिनिके हित सुंद ॥ १६८ ॥  
 नटैं कहूँ अंतक दूतन भीत, गिनैं कहूँ रोभत डाकिनि गीत ॥  
 मिलैं कहूँ प्रान अपानन मेल, सिटैं कहूँ प्रोत निहारत सेल ॥ १६९ ॥  
 लखैं कहूँ नाक जुरावन विक्रम, कटैं कहूँ कायन तोमर तिक्रम ॥  
 नयैं कहूँ दुल्लह चिंतत नारि, कहैं कहूँ पुत्रहि पुत्र पुकारि ॥ १७० ॥  
 डिगैं कहूँ निट्टि गहैं हय पुच्छ, मिलैं कहूँ उट्टि मरोरत मुच्छ ॥  
 जकैं कहूँ बाजि रत्नकत जीन, हलैं कहूँ हथिय सुंडि बिहीन ॥ १७१ ॥  
 डुरैं कहूँ आनक दुंदुभि फुट्टि, डरैं कहूँ केतन तेगन तुट्टि ॥  
 गिरे कहूँ पट्टिस खगग कमान, गिरे कहूँ खेटक तोमर बान ॥ १७२ ॥  
 गिरे कहूँ बाहुल कंकट टोप, गिरे कहूँ कोस उरंगम ओप ॥  
 गिरे कहूँ गंज क्रमेलंक खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड ॥ १७३ ॥  
 गिरे कहूँ पक्खर बग्ग खलीन, गिरे कहूँ तुंग खेर खग खीन ॥  
 गिरे कहूँ गुच्छ बनैं गजगाह, गिरे कहूँ प्रार्थ बजावत बाह ॥ १७४ ॥  
 गिरे कहूँ गैवर मोहि अमाप, गिरे कहूँ अंकुस घंट कलाप ॥  
 गिरे कहूँ पुंकर आसन कान, गिरे कहूँ पेचैंक ओ प्रतिमान ॥ १७५ ॥  
 गिरे कहूँ कुंतल मुच्छ कुघाट, गिरे कहूँ मुंड रु तुंड ललाट ॥  
 गिरे कहूँ नेत्र रदच्छदै लल्ल, गिरे कहूँ नक्र ध्वनिग्रह गल्ल ॥ १७६ ॥

\*नृत्य रचते हुए ॥ १६७ ॥ मांस खाने से १ गीदड़ों का लात मारते शोभा देते हैं ॥  
 कुत्तों को ॥ साकिनियों के लिये रसोईदार (बवरची) बनते हैं ॥ १६८ ॥  
 यमराज के दूतों को डरकर नटते हैं कि हम को मत लेजाओ ? भालों को शरीरों में घुसते हुए देखकर ॥ १६९ ॥ २ शरीरों से तीखे आले ॥ १७० ॥ ॥ १७१ ॥  
 ३ ध्वजा, तरवारों से कट कर पड़ी है ४ कटार ५ ढाल ॥ १७२ ॥ ६ दस्ताने  
 ७ कवच ८ तरवारों के म्यान ९ सर्पों की शोभा से १० ऊँटों के डुकड़े ॥ १७३ ॥  
 ११ लगामें १२ फुरणे बजाते हुए १३ घोड़े ॥ १७४ ॥ १४ पोंगर (सुंड का अ-  
 यभाग) १५ हाथियों के पूंछ का मूलभाग १६ हाथियों के दंतों के बीच का  
 भाग ॥ १७५ ॥ १७ मूँछों के केस १८ मुख १९ लाव होठ २० नाक, कान और

गिरे कहूँ \* काकुद जिम्भन जूह, गिरे कहूँ मल्लक दह समूह ॥  
 गिरे कहूँ शीतन त्यों ऽक फाटि, गिरे कहूँ काकल कंठ कंकाटि १७७  
 गिरे कहूँ कूर्पर खंडिक कंध, गिरे कहूँ जंत्रु मुजा मणिबंध ॥  
 गिरे कहूँ अंगुल अंगुलि टूक, गिरे कहूँ ज्यों करत्यों करसूक १७८  
 गिरे कहूँ पंसुलि रीढक तोम, गिरे कहूँ पुष्पस कालिक बलोम ॥  
 गिरे कहूँ नाभि पुंगितति गंज, गिरे कहूँ फुल्लि फवेहिय कंज ॥ १७९ ॥  
 गिरे कहूँ त्यों त्रिक सत्थिन संध, गिरे कहूँ जानु जुदे जुगर जंध  
 गिरे कहूँ पिंडिय गोहिरै फुट्टि, गिरे कहूँ एडिय घुंटकै तुट्टि १८०  
 लरूपो कछवाहन यों रन थान, धरे सब घायल खोजि नृजान ॥  
 निकाशिय सल्ल जथा सुखकार, चिकित्सक बुल्लि रच्यो उपचार १८१  
 मरे तिनके बिधिसों किय दाह, बनै तिम प्रेतक्रिया निरबाह ॥  
 दिवावत यों जय दुंदुभि डक, चल्पो अब बुंदिय जैपुर चक्र ॥ १८२ ॥  
 बिथारत बैटन अप्पन आन, उठावत सत्रुन सीम अमान ॥  
 जंयो नृप कूरम अखत जोध, कथंचित भोजु समावत क्रोध ॥ १८३ ॥  
 महाबल जो जयके छक मत्त, प्रसारत ओदक बुंदिय पत्त ॥  
 पुरी पुनि भंड रूपे पचरंग, दिसा बिदिसान सुन्यो यह दंग १८४  
 भयो मन मोदित कूरम नाह, स्वसेनैहिं अप्पिय बाह सिराह ॥

गला ॥ १७१ ॥ \* तालुआ और जीभों का समूह १ दन्त और दाढ़ों का  
 समूह २ गले के दोनों पसबाड़े ३ गला १ कंठमणि २ गरदन का ऊँचा भाग  
 ॥ १७७ ॥ ३ हाथ की कुहनी ४ गले की संधि (हसली की हड्डी) ५ पूंजा ६ अंगुठा  
 ७ नख ॥ १७८ ॥ ८ समूह ९ फेफरा १० कलेजा ११ तिल्ली १२ आंतों के समूह  
 ॥ १७९ ॥ १३ माकड़ी का हाड और साथलों का १४ समूह (घुटनों के ऊपर के  
 भाग को साथल और साथल के ऊपर के भाग को जांघ कहते हैं) १५ पिंडु-  
 लियों और पादग्रन्थि (गिरिये) १६ घुटने ॥ १८० ॥ १७ चैद्यों को बुलाकर  
 १८ इलाज ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८ मागों में २० ईश्वरीसिंह की जय हुई (जय  
 शब्द पुल्लिङ्ग है जिसको यहां लोक स्त्री से स्त्री लिंग लिखा है) २१ अत्यन्त  
 प्रयत्न से हुआ उस क्रोध को मिटाते हैं ॥ १८३ ॥ २२ भय फैलाते हुए बुन्दी  
 में गये २३ युद्ध ॥ १८४ ॥ २४ कछवाहों का पति (ईश्वरीसिंह २५ अपनी सत्त



करे गज बाजि पटा बखसीस, गिन्यो \* जयसिंह ज अप्पहिं ईस १८५  
 दपे सब भूपनको जयपत्र, लिखी वह हड्ड भज्यो तजि छत्र ॥  
 सु आवहिं जो तुमरी भुव माहिं, ततो हुत कहहु रक्खहु नाहिं १८६  
 लई इम बुंदिय कुम्म बहोरि, जिला गढ कोट सजे बलजोरि ॥  
 फिरयो सब देस नरायनदास, लग्यो कर लैन ससैन हुलास १८७  
 इतैं अब जो हुव भूप चरित्र, सुनौ नृप राम रचौ वह चित्र ॥  
 पचास सहस्र ५०००० नमैं असि कारि, कब्यो नृप पूरब फोजनि  
 कारि ॥ १८८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दी  
 न्द्रकूर्मकटककलहकरणाकूर्मप्रतापसिंहीयसप्तदश १७ स्वर्कापित्र-  
 योदश १३ सुभटसहितचालुख्यपृथ्वीसिंह १ शूरसप्तक ७ सहितया-  
 दवदलेलसिंह १ मारकस्त्रपुत्रप ३ सुभटपञ्चविंश २५ त्युपेतक-  
 वन्याऽमरसिंह २ सयवनशत्रुपञ्चक ५ सहितहड्डप्रयागसिंह ३ स्व-  
 चतुरशीति ८४ भूलायपुरीपैकोनविंशति १९ सुभटयुतहड्डमर्याद-  
 सिंह ४ तोकसिंहप्रहतकूर्मविजयसिंह ३ स्वनामसजातीय ४ सं-  
 युतकूर्माऽजितसिंह ५ सकूर्महम्मीर ४ हड्डदेवसिंह ६ सम्भरभवा  
 नीसिंहाऽऽक्रान्तकूर्ममाधवसिंह ५ कावन्धत्रिकाक्रान्तकूर्माऽमान

को \* जयसिंह के पुत्र ने अपने को बुन्दी का पति जाना ॥ १८५ ॥ १  
 शशि ॥ १=६ ॥ २ हासिल ३ सेना सहित ४ प्रसन्न होकर ॥ १८७ ॥ ५ उन्मेषसिंह  
 का ६ राजा रामसिंह ७ उसका चित्राम रचता हूँ स्पष्ट सुनो ॥ १८८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे के सप्तमराशि में बुन्दी के इन्द्र का कछवाहे  
 की सेना से युद्ध करना, कछवाहे प्रतापसिंह के सन्नह और अपने तेरह सहित सो-  
 लेखी पृथ्वीसिंह का, और सात वीरों सहित यादवदलेलसिंह को मारने वाले  
 अपने तीन पुत्र और पन्चीस वीरों सहित राठोड़ अमरसिंहका, यवन सहित  
 पांच शत्रुओं के साथ हाडा प्रयागसिंह का, अपने चौरासी और भूलाय नगर के  
 उन्नीस वीरों सहित हाडा मर्यादसिंह का, कछवाहे विजयसिंह को मारकर तोक-  
 सिंहका अपने ही नामवाले और अपनी जातिवाले अजितसिंह का, कछवाहा ह-  
 मीरसिंह सहित हाडा देवसिंह का, कछवाहा माधवसिंह को मारने वाले चहु-



सिंह ६ भगवत्सिंह ७ भूपालसिंह ८ अर्जुनसिंह ९ प्रमारोदय  
 १० पादवठ्याग्रसिंह ११ सहितभट्टजगराम ७ बुन्दीद्राक्रान्त  
 विक्रम १२ भैरव १३ चाहुवाणस्थान १४ सुरतानाऽऽदिसप्तशत ७  
 सुभटमरणद्वादशशत १२०० सुभटक्षतप्रापणद्द्वजद्वयचरणकर्त  
 ऽनन्तररावरागिनस्सरणकूर्मकटकविजयीभवनबुन्दीप्रविशन  
 दशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥ २९९ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नर समुद्र तरि नृप कद्विय, अलप सत्थ रहि संग ॥  
 कोस तीन३ पहुँचत क्रमिय, तजि असु हंज तुंग ॥ १ ॥  
 अरि तुपकन बपु भिन्न अनि, बलि इक १ चरन बिहीन  
 नृप त्रप३ कोम निवाहयो, कठिन हंज हय कीन ॥ २ ॥  
 भूहु अंग विमल्य करि, सहिय अगि उपचार ॥  
 सस पल्लभोजी रति रहि, विरचिय प्रात बिहार ॥ ३ ॥  
 गिरिन संधि अंतर कियउ, पूरव ओर प्रयान ॥  
 ढँविय इंदगढ नगर ढिग, चित निडर चहुवान ॥ ४ ॥  
 इंदगढाधिप देव प्रति, कहि पठई नरनाह ॥

चाण भयानीसिंह का, कछवाहा अमानसिंह, भगवत्सिंह, अर्जुनसिंह,  
 मारनेवाले राठोड़ अमरासिंह के तीन पुत्रों का, पैवार उदयसिंह और  
 य पादसिंह को मारने वाले भाट जगराम का, तथा बुन्दीद्रा के मारे हुए  
 चाहे विक्रमसिंह, भैरवसिंह, चहुवाण स्थानसिंह और सुरतानासिंह आदि  
 त मों वीरों का मरना, और बारह सौ सुभटों का घायल होना, हंज ना  
 घोड़े का पैर कटे पीछे रावराजा (उन्मेषसिंह) का निकलना, कछवाहे की  
 का विजयी होकर बुन्दी में प्रवेश करने का अटारहवां सयूय समाप्त हुआ  
 आदि में दोसौ नयामनै २६ नयामनै ॥

१ हंज नामक घोड़े ने प्राण छोड़ा ॥ १ ॥ २ पुनि ॥ २ ॥ ३ खाल निकाल कर  
 अग्नि से सफाये (नयाने) का अटारह किया ६ रात्रि में मारगोम का भांस  
 कर रहा ॥ ३ ॥ ४ पर्वतों की संधि में ७ ठहरा ॥ ४ ॥ ८ उन्मेषसिंह ने ॥

हय हमरो गतप्रान हुव, हो जिहिँ लरन उछाह ॥ ५ ॥

तातैं पठवहु देव तुम, खासा हय इक खुलि ॥

अवर न चाहैं हमहु \*इन, भुजन कुमाई भुलि ॥६॥

सुनि यह देव सिटाय सठ, त्रिसित चुरायउ चेत ॥

यहै न जानी हम अनुम, तउ इक १ अश्वहि लेत ॥ ७ ॥

इम अधर्म अहरि अधम, जैपुर गिनि वरजोर ॥

पछी यों कहि मुकलिय, मूढ तजहु भुव मोर ॥ ८ ॥

जिम तुम खोई निज पहुमि, बिनु मति दर्प बढाय ॥

तिम हमरी खोवन तकत, अश्व लैन यँहँ आय ॥ ९ ॥

निडुर बैन सुनि सहि नृगति, लिखी अब न कहू लैहि ॥

जो तुम यह खापो जहर, दैहैं लहर कबैहि ॥ १० ॥

इम कहाय नृ वर करिय, कोटा सीम प्रपान ॥

चम्नलि लंघि मुकाम किय, ग्राम रानपुर थान ॥ ११ ॥

॥ पञ्चमटिका ॥

रन सिंधु तरिग चहुवानराय, कछवाह भटन असिबर चखाय ॥

गिरि पारियात्र द्रोनिन बिहारि, उपनहि घाय बपु सल्लप टारि ॥१२॥

इम होय इंद्रगढ पुर समीप, देवहिँ नटाय नृप बंसदीप ॥

उल्लंघि सरित चम्नलि अमान, कोटाग रानपुर दिय मिलान ॥१३॥

अरु सुभट अल्प नृप संग आय, रन दुसह कोन असु तजि रहाय ॥

अब मिलिय आनि सब अनुग अत्थ, अवरहु अनेक सुनि रन समत्थ १४

उत कुन्म भटन लहि विजय जंग, बुंदिय प्रवेस किय अति उमंग ॥

\* राजा तथा तुम्हारे पति हैं तोभी ॥ ६ ॥ † डर कर ‡ सेवक हैं तोभी

॥७॥८॥१४मंड बढा कर ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ २ जिस पर्वत के चारों ओर यात्रा

(परिक्रमा) की जावे उसको पारियात्र कहते हैं [इसी कारण चित्रकूट को

पारियात्र कहते हैं] ३ पर्वतों की संधि जिनको राजपूताने में खाद्रेय खोहले

कहते हैं ४ पाटा बांधने आदि धावों का इलाज ॥ १२ ॥ ५ कोटा के पर्वत में

॥ १३ ॥ ६ प्राण छोडने को कौन रहै ७ सेवक ८ युद्ध में समर्थ सुनकर ॥१४॥

जिन रचिय \* अग्घ थिर नृपहिं थप्पि, आयत्त बिरचितिन दमन थप्पि  
कोटेस ऽहिं तु पुनि यह कहाय, तुम चतुर नीति अदरि ॥ हिताय ॥  
बुधसिंह सूनु हित करुन लैहिं, सत दोय २०० दम्म इम नित्य  
देहिं ॥ १६ ॥

मध्यस्थ होय तुम साम जाय, तिहिं देहु कुम्म नृप पय लमाय ॥  
कोटेस लुब्ध सुनि पाप प्रीत, मंजार पाय पय होत सीत ॥ १७ ॥  
स्वीकारि यहैहु जड़ छन्न साम, दिनप्रतिलिय मासन द्विसत २०० दाम  
नृप अंतिके पठये तेहु नाहिं, उलटी खिल बंचेन बुद्धि आहिं ॥ १८ ॥  
कोटेस बहुरि किय यह कुकर्म, इम कोन कोन अस्वहिं अधर्म ॥  
इते सुनिय रान जगतेस वत्त, बुंदीस सूर रन रचिय रत्त ॥ १९ ॥  
दुवरे बेर कूरमन फोज फारि, बरछी गति प्रविश्यो बहु बिदारि ॥  
करवाले आरि हद रारि कीन, बलि कठिय जानि हैय पय बिर्हान २०  
अब ग्राम रानपुर धाम आहिं, छत छाम तदपि नीति नाम नाहिं ॥  
हय हंज जो किं पय भिन्न व्है न, छो रैं न हनत तो संनु सैन ॥ २१ ॥  
मन मित्र बांजि बिनु अब नरेस, बांछत कछु दुर्मन हय बिसेस ॥  
यह सुनत रान हिय मोद आय, भूपहिं सिराहिं बीरत्व भाय ॥ २२ ॥  
हय खास नाम जिहिं होनेहार, साखति चामाकर सजि सुहार ॥  
सिरुपाय उच्च इक १ रुचिर रंग, तरवारि खास इक १ तास संग ॥ २३ ॥  
उम्मेद नृपति हित दिय पठाय, स्वीकरिय नृपहु गिनि हित सुनाय  
इम होत सरदारितु मज्झ आय, दकै गगन उभय २ निर्मल दिलाय ॥ २४ ॥

\* आघ, उन उम्मेदसिंह के आघ करनेवालों को । अपने आधीन किये  
देड देकर ॥ १५ ॥ ऽ से ॥ हितार्थ १ बुधसिंह के पुत्र के अर्थ २ कर  
करके ३ रूपये ॥ १६ ॥ ४ ईश्वरीसिंह के पैरों लगादो ५ लोभी ६ चिह्नी को  
७ दूध ठंडा होता भिला ॥ १७ ॥ ८ संजूर करके उम्मेदसिंह के ९ पास १०  
ठगने की बुद्धि है ॥ १८ ॥ ११ तरवार चलाकर १२ घोड़े को बिना पैर  
जानकर ॥ २० ॥ २३ है १४ बावों से दुर्बल है तोभी १५ नाम मात्र भी नम्रग  
नहीं है १६ घाद ॥ २१ ॥ १७ घोड़े बिना ॥ २२ ॥ १८ जिसका नाम आगे होने  
वाला है १९ सुवर्ण की ॥ २३ ॥ २० स्वीकार किये २१ जल और आकाश ॥ २४ ॥

॥ पट्टपात् ॥

भरजि मेघ उगघरिय भरिय नेत्र नीरं निवानन ॥  
 पितरन कैव्य पंजोय धिरचि नृप निर्गम विधानन ॥  
 पुनि कुलदेविय पूजि सद्धि कर्त्तिष ब्रत संजम ॥  
 अब आगम हेमंत किन्न अगहन मृगया क्रम ॥  
 आखेट थान कोटेसके कति मृगरांज विहीन क्रिय ॥  
 सद्धि परस्त्रिख आयुध सकल रानपुर सु इम नृप रहिय ॥ २५ ॥  
 ॥ दोहा ॥

ईडरिया उपटंक इत, रामसिंह रठोर ॥  
 हो जो तब पुर बनढड़ा, सुनि नृप विक्रम सौर ॥ २६ ॥  
 ताके ही इक १ पुत्रिका, वखतकुमरि अभिधान ॥  
 ताको रचि सगपन त्वरित, संभर हितुं सैयान ॥ २७ ॥  
 पठयो डोला रानपुर, सचिव सुभट दै संग ॥  
 उपपन्न करन उमेदसौं, जानि बीर बर जंग ॥ २८ ॥  
 सचिव भटन तब प्रीति सह, अरहि रानपुर आय ॥  
 कन्या वह बुंदीस कहैं, प्रथित दई परिनाय ॥ २९ ॥  
 कन्याके काकाहुकी, विर सुता रूप बिसाल ॥  
 रान १ रु माधव २ एहु दुव २, व्याहे पूरब काल ॥ ३० ॥  
 सगे उचित यातैं समुक्ति, परनि नृपहु मुद पात ॥  
 सक गुन नभ धृति १८० ३ लगन सुभ, दोजि रसैहा अंघदात ॥ ३१ ॥  
 रंगो नहिं शृंगार रस, अवहि बीर अनुसारि ॥  
 बहुनि बहयो मन वप्पकी, धरनी पर धक धारि ॥ ३२ ॥

१ नवीन राणी ३ आका का अन्न ४ पट्टपात् कर ५ धेद विधि ६ कार्तिक मास में,  
 ७ निग्रहों के रोकने का जन ८ शिकार ९ शिकार के हथान १० सिंहों के बिल ॥ २५ ॥  
 ॥ २६ ॥ १० नाक ११ नहुवाण से १२ बुद्धिमान् ॥ २७ ॥ १३ विशाह ॥ २८ ॥  
 १४ जीत ही १५ मस्तिष्क ॥ २९ ॥ ३० ॥ १६ मृगसिंह १७ मुक्ति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

दुलहनि कोटा मुकलिय, जत्थ अनुजश्रितिय रजामि ॥  
अप्पन मन रन उम्महचो, इच्छत जय आगामि ॥ ३३ ॥

॥ पट्पात् ॥

बुंदियपुर बुधसिंह सुतहिं सुनि बहुरि चलावत ॥  
कोटापति लागि लोभ कहिय इम भुम्मि न आवत ॥  
हम उद्यम यह करत हेत मरहठन सम्मलि ॥  
त्रिनु बल जैहो लाल निहि लैहो यह चम्मलि ॥  
दे इष्ट सौह इम अक्खि हुत बुंदीसहिं रक्खपो बराजि ॥  
सतदोय २०० दैम्म कछवाह सैन भेट होत यह लोभ भजि ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

बंधु वर्ग उमगाव निज, अजवसिंह अभिधान ॥  
कोइलपुर पति भोजि करिं, अटकपो नृप प्रस्थान ॥ ३५ ॥

॥ पट्पात् ॥

माधानी अजवेस आय भूपहिं इम अक्खिय ॥  
गिनत अप्प रन सुगम चंडे असि बर नहिं चक्खिय ॥  
अप्पन परिकर अलप दुसह जैपुर वह दाइत ॥  
सिंहन आगसं सैसहिं चिन्ह अनुचित असु चाहत ॥  
यातैं न तुमहिं जावन उचित कोटापति यह हित धरत ॥  
ढढ मंत्र बुद्धि दक्खिन दैलन जतन लेन बुंदिय करत ॥ ३६ ॥  
सुनत एह गिनि सत्य भूप कोटेस भरोसैं ॥  
जान्यों काका करत महत उद्यम यह मोसैं ॥  
तो इनकी अब देखि बहुरि बनिहैं सु विचारहिं ॥

१ जहां घहिन र्था २ आगे आनेवाली जय की इच्छा करता हुआ ॥ ३३ ॥ ३  
है लाल ४ भगकर यह चामल नदी कठिनाई से लोभ ५ रूपये ६ से ॥ ३४ ॥ ७  
वस्मेदसिंह के गमन को रोका ॥ ३५ ॥ ८ भयंकर खड्ग ९ परगह १० सिंहों का  
अपराध काफे ११ आगोस १२ जाना चाहै सो अनुचित है १३ सेनाओं को  
॥ ३६ ॥ १४ मुझ से बड़ा उद्यम

उमेदसिंहका चारण को दान देना] सप्तमराशि-एकोनविंशमयूख (३४४६)

सुमिरी यह न सपान कुहकं निज काम निकारहिं ॥  
नृप रहिय होत उद्योग लखि मास सत्त७बिनु भुव जतन ॥  
मृगया प्रसक्त कोटा मुलक गंजत सिंह बराह गन ॥३७॥

॥ दोहा ॥

मधुकरदुर्ग सुकाम किय, ग्रीखम अंत नरेस ॥  
महँडू चारन दान तँहँ, बरनी कित्ति बिसेस ॥ ३८ ॥  
अमरपुराके जंगको, काव्य जथामति ठानि ॥  
गीत छंद मरु बानि गत, नृपहिं सुनायो आनि ॥ ३९ ॥  
सुनत भूप बखसीस किय, रीक्ति तरल हयराय ॥  
खास जरिय पोसाक पुनि, कुंडल कटर्क सुभाय ॥ ४० ॥  
सनमान्यो कविराव कहिं, डेरा तास पधारि ॥  
भयो बहुरि हथिय हुकम, नूतन काव्य निहारि ॥ ४१ ॥  
सो गज बुंदिय तखत जब, अप्प बिराजे आनि ॥  
तब दिन्नो यह अंत्य हम, भावी लिखिय बखानि ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात ॥

सक बेद ख वसु सोम १८०४ मास सावन तदनैतर ॥  
भैसरोरगढ सीम रमिग आखेट भूप वर ॥  
पुनि भद्व सित पच्छ आय बेघम एकादसि ११ ॥  
भयो जानि दुरभिच्छ विपति चिंतत दिन दुव२बसि ॥  
दरियाव नाम गजराज निज उदयनैर विक्रय करन ॥  
मुकलपो पुरोहित स्वीय तब दयाराम द्विज धर्मधन ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

जाय पुरोहित उदयपुर, गज विक्रय तँहँ ठानि ॥

छोटी (दम) शिकार में आसक्त ॥ ३९ ॥ मधुकर गढ ४ चारणों की एक शाखा का नाम है ५ उस चारण का नाम है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ चपल घोड़ा ७ सोती ८ कड़े अच्छी रीति से दिये ॥ ४० ॥ ९ नवीन ॥ ४१ ॥ १० यहाँ ॥ ४२ ॥ ११ जिस पीछे १२ बेधने को १३ धर्म ही है धन जिसके ॥ ४३ ॥

दम्प सहस्र दुव २००० सुल्लके, पठये समय प्रमानि ॥ ४४ ॥  
 बिलु भुव सोलह १६ वरसतैं, भुक्तैं आपति भार ॥  
 अब अर्बुद्धि कति दिन टिकहिं, दम्प तैं दोय हजार २००० ॥  
 ॥ षट्पात ॥

सावन सूको गयउ बेर दुव २ अलप छुट्टि घन ॥  
 ज्योही भदव जात घोर हाकार उट्टि घन ॥  
 हड्डातिय मेवार तंग ओदन दुव देसन ॥  
 बनिय आनि इहिं बेर निट्टि निरवाह नरेसन ॥  
 नृप तबहि चिति आपति धरम स्वीय भटन संजुत साजय ॥  
 मन जोर पैठि बुंदिय सुल्लक गैनोलीपुर लुट्टि लिय ॥ ४६ ॥  
 ॥ दोहा ॥

गैनोली बसु लुट्टि इम, अति बिपत्ति चहुवान ॥  
 तदनु दुग्ग रनथंभकी, सीमा करिय प्रयान ॥ ४७ ॥  
 नगर नाम खंडारि ढिग, कछुदिन बिरचि सुकाम ॥  
 कोटापतिको लोभ सुनि, ठग मन्थ्यो अघ ठाँम ॥ ४८ ॥  
 उत सु पुरोहित उदयपुर, दयाराम अभिधान ॥  
 पुंवाहि रान अधीनहो, लौनिदेस चहुवान ॥ ४९ ॥  
 आत जात नृप ढिग रहयो, स्वामि धरम भनि भाव ॥  
 तातैं बेचन संग तस, दपो हुतो दरियाव ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ रासौ बु-  
 न्दीन्द्रहयमरणाष्टदुचरणाविचरणाकृदिन्द्रगच्छाऽऽगमनाऽव्ययाचनदव-

॥ ४४ ॥ १ अनाट्टि (दुर्बिच्छ) में २ ते (ये) ॥ ४५ ॥ ३ अलप बिना ॥ ४६ ॥ ४ घन  
 ५ जिस पीछे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ६ पहिले से ही ७ उम्मेदसिंह की आज्ञा लेकर  
 ॥ ४६ ॥ ८ दरियाव नामक हाथी ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के पति का घोड़ा  
 मरने से कोमल चरणों से चलकर इन्द्र गढ़ आना घोड़ा मांगना और देवासिंह

सिंहनेतिकथनहइन्दुराणापुरनिवसनतदनुकूलबुन्दीजनकूर्मकर्तक  
नियमनबुन्दीन्रनिमित्तमुदाशतद्वय२००महारावपापगारावराजाऽर्थ-  
राणाहय १ पट २ खड्ग ३ मेपणाघनाऽत्यय १ हेमंतऽर्वागमनभूभृ-  
तृतीयो ३ दहनकोटेशनृपोद्यमवारसम्भरमधुकरदुर्गकालक्षेपणास  
म्प्रदानकविदानचारणादानप्रभुमैसरोडदुर्गप्रान्ताऽऽखेटक्रीडनतघद्व  
मपुराऽऽगमनदुर्भिक्षपतनविक्रपाऽर्थदरियावगजोदयपुरमेपणाविपद-  
र्मधरधरेशगैशोलीपुरलुण्टनरणास्तम्भदुर्गप्रान्तखण्डारिपुरकिश्चि  
त्रिवसनकोटेशकौहकषविबोधनमेकोनविंशोमयूखः ॥ १९ ॥३००॥

॥ प्रायोजनदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ पटपात् ॥

दयाराम द्विज सहित राने इकदिन रहस्य किय ॥

साहिपुर पै सीसोद बीर उम्मेदहु बुल्लिय ॥

स्वीय सुमट पुनि च्यारि४ प्रथम भारत१ सेनापति ॥

दुरंग अगग देवलिय हठन जिहि किय सालम हाति ॥

देवगढ अधिप जसवंत२ पुनि संगउत चौडा जनन ॥

का नदना २ हाडों के राजा का राणपुर में निवाल करना ३ उम्मेदसिंह के  
अनुकूल बुन्दी के लोकों को कछवाहों का कैद करना ४ उम्मेदसिंह के कारण  
दोसौ रुपये रोज कोटा के सहागव का पाना ५ रावराजा के अर्थ महाराणा  
का घोड़ा, बल्ल और खड्ग भेजना ६ मेघों के मिटे पीछे हेमंतऋतु के  
आगम में श्रृपति का तीसरा विवाह करना ७ कोटेश के उग्रम  
के सस्य में चहुवाण (उम्मेदसिंह का मधुगढ में समय बिताना ८  
दान नामक चारण को दान देकर राजा का मैसरोड गढ के प्रान्त में शि-  
कार खेलकर वहाँ से बेचनपुर आना ९ दुर्भिक्ष पड़ने से दरियाव नामा हाथी  
को बेचने के अर्थ उदयपुर भेजना १० आपद्धर्म को धारण करके श्रृपति का गै-  
शोलीपुर का लूटना ११ रणस्थंभ गढ के प्रान्त में खण्डारपुर में कुछ ठहरना १२  
कोटा के पति का ठगपन जनाने का उन्नीसवाँ १३ मयूख समाप्त हुआ और  
आदि से तीनसौ मयूख ३०० हुए ॥

महाराणा जगत्सिंह ने २ एकान्त सलाह को ३ पति ४ उम्मेदसिंह को भी  
बुझाया ५ अपने उमराव ६ नाश ७ वंश में



पतिदेलावाड़ भल्ला \*मथित राघवदेव निसंक रन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रायसिंह\* भल्ला बहुगि, नगर साबड़ी नाह ॥

इन जुन रान रहस्य किय, चित जैपुर जय चाह ॥ २ ॥

॥ पदपात ॥

कहिनि रान कोटेस किंतव हुबशेर बदलि गय ॥

अब पुनि इकत होन चवैहि पठवाय दूत चय ॥

बंचकको विसवास करन काको चित चाहत ॥

दयाराम सुनि करिय अरज करजोरि उमाहत ॥

प्रतिअब्द आत श्रियद्वार वह अन्नकूट सहन समय ॥

तव चलन तथ अप्पन उचित माधव सहित निहारि नय ॥

हरि प्रतिमाके अगग तवहिं कोटेसहिं अकखहिं ॥

तुम बंचक चलबुद्धि मित्र भावहिं हम रकखहिं ॥

जो अब इकत होत ततो हरि इष्ट सपथ करि ॥

सदा साम लिखि देहु अब न डरपहु क्रूरम अरि ॥

छदै इम लिखाय कोटेसको पुनि प्रसन्न मरहट्ट करि ॥

खेहुव मलार हुलकर तनय बुल्लहु समर सहाय धरि ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

दयाराम इम अरज करि, थप्पो यह दह मंत्र ॥

सुपहु रान सुनि स्वाकरिय, सुभटन सहित स्वतंत्र ॥ ४ ॥

॥ सौरहा ॥

तदनंतर नृप राँत, देवकरन काँह दूर करि ॥

पंचोत्ती सु प्रधान, नाम भवानीदास किय ॥ ५ ॥

\*प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ षट्पात् ॥

इत जैपुर पहिलैहि मरिग खत्रिय राजामल ॥

\*कोविद केसवदास हुतो सुत तास मंत्र बल ॥

तब नृप ईश्वरिसिंह किन्न वह सचिव सिरोमनि ॥

पिसुन नरन तिहिँ पिठि भूप प्रति इम चुगली भनि ॥

हेनृप अमात्य केसव कितव मंत्र तुमहिँ न मंत्र मद ॥

याके उमेद माधव अरथ छन्नै आवत जात छंद ॥ ७ ॥

सुनि यह ईश्वरिसिंह मूढ तत्व न पहिचानिय ॥

काकन कथित विधाय हंस मारन मत मानिय ॥

खत भूटे लिखि खलन नृपहिँ दिन इक बताये ॥

सूरख सञ्चे मन्नि गडे ओगुन बहु गाये ॥

केसव सु मंत्रि बुलवायकेँ कुनृप तास अपदास करि ॥

अकखी कुमलि ए दल जखहु सुनि केसव लिय नैन अरि ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अकखी केसव अबहि नृप, निश्चय करहु निर्दान ॥

जो ए दल मेरे लिखे, लेहु ततो मम प्रान ॥ ९ ॥

कूरम तब निश्चय करिय, निकसे पत्र असत्य ॥

बिनु आगस जो मारतो, होतो ससचिव हत्य ॥ १० ॥

तदपि कुम्म लिय सचिवपन, केसव करिय वकील ॥

पठयो दक्खिन नन्द पँहँ, सिखई मन्नि कुसील ॥ ११ ॥

नैटानी उपटंक इक, हरगोविंद स नाल ॥

कियउ मुसाहब बनिक बह, कूरम नृप हित काम ॥ १२ ॥

\* चतुर १ उम्मेदसिंह और माधवसिंह के लिखे २ पत्र ॥ ७ ॥ ३ कहना करके ४ दुष्टों ने ५ वे पत्र ॥ ८ ॥ ६ इनका कारण ॥ ९ ॥ ७ बिना अपराध ८ सचिव सहित मारा जाता ॥ १० ॥ ९ तोही ईश्वरीसिंह ने १० सिखाई ॥ ११ ॥ १२ नाटकी उपटंक (पदवी) वाला जैसव ॥ १२ ॥

## ॥ षट्पात् ॥

पुत्ती इक१ तिहिँ गेह रूप जुब्बन गुन मँती ॥  
 बँती बय छबि तास पास कूरम नृप पँती ॥  
 कँती सम सुनि कढिग छेकि पंच५ हिँ सर छती ॥  
 दुँती दासिय भेजि प्रेमपासिय गर घँती ॥  
 लंपटहिँ काम जुती लगत रत उँती चिर चंड रँय ॥  
 सुती समीप चाही सुनक कुती जिम कँती समय ॥ १३ ॥

## ॥ दोहा ॥

मगन पुब्ब अँनुरागमें, लगन मिलन द्रुत लगिग ॥  
 कुम्म पुरंदरँके किरी, अंदर बम्महँ अगिँ ॥ १४ ॥  
 दूतीजन पठवाय द्रुत, साम उपाय प्रसारि ॥  
 आनी नृप ढिग अंगना, बानी बिनेय बिथारि ॥ १५ ॥  
 राजकाज भुल्लयो रसिक, छई मदन सिर छाँइ ॥

१ उस हरगोविंद के घर में उसकी पुत्री रूप, यौवन और शृणों में २ मस्त थी उस की अवस्था और शोभा की ३ वार्ता कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) के पास ४ प्राप्त हुई (पूजी) ५ वह वार्ता सुनते ही तरवार के समान कामदेव के पांचों बाण [यथा “द्रवणं शोषणं बाणं तापनं मोहनाभिधम्॥ उन्मादनं च कामस्य बाणाः पंच प्रकीर्तिताः”] छाती को छेदकर निकल गये ७ दूती दासी का भेजकर प्रेम की पासि गले में चाली इस लंपट के ८ कामदेव की जुती लगते ही ९ रत क्रीड़ा में उस चिर वेग (बहुत समय तक दललित नहीं होनेवाला) और ११ अयंकर बेगधाले ने जैसे १२ कुत्ता, कुत्ती को १३ कार्तिक मास के समय में चाहै तैसे उस हरगोविंद की पुत्री को समीप सुलानी चाही ॥ १३ ॥ १४ पूर्वानुराग (मिलने से पहिले की प्रीति) में मस्त होकर १५ कछवाहों के इन्द्र के १६ गिरी १७ जैसे अहल्या के कारण इन्द्र और ब्राह्मण (गौतम ऋषि) में गिरी थी तैसे अथवा अहल्या के कारण इन्द्र के और सरस्वती के कारण ब्रह्मा के आप की अग्नि पड़ी थी वही अग्नि ईश्वरीसिंह के पड़ी अर्थात् उस दोनों स्त्रियों से व्यवहार करने के कारण दोनों देवों को आप से खिन्न होना पड़ा था तैसे ही ईश्वरीसिंह को भी इसी कारण प्राण देना पड़ा १८ अग्नि ॥ १४ ॥ १९ मिलने का २० उस स्त्री को २१ पिशोप नम्रता की बाणी फैलाकर ॥ १५ ॥

कूरम डारी कंठ अब, बनिक सुताकै बाँहँ ॥ १६ ॥  
 राँति जु तिय नृपढिग रहत, प्रात जात निज गेह ॥  
 दिन बिच तिहिँ देखैं विनाँ, दुमनँ रहैं थकि देह ॥ १७ ॥  
 प्यारीकोँ दिन बिच प्रकट, जो बुल्लै निज पास ॥  
 जैनक तास तो जानिकैँ, बिरचै राज्य विनास ॥ १८ ॥  
 बिनु देखैं निमिख न बनैँ, देखन दुल्लभ दीहँ ॥  
 याँतैँ बिरचि उपाय इक१, लोपी लज्जा लीहँ ॥ १९ ॥  
 जैपुर पिक्खन व्याज करि, प्यारी पिक्खन काज ॥  
 बनवाई महलन बुरज, तुंगनकीँ सिरताज ॥ २० ॥  
 जाँतैँ सब जैपुर नगर, दिट्ठि परत अध आय ॥  
 तक्कैँ प्यारिय जाय तँहँ, छन्न मदन इम छाया ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

सक कृत नभ बसु सोम१८०४ बिसद बाहुल पड़िवा१पर ॥  
 दरसन हित कोटेस गयउ श्रियँद्वार उमँगि और ॥  
 करन रान अनुकूल पँत लिखि भेजि उदैपुर ॥  
 बुल्लिय माधव सहित धरा संगैर थंभन धुर ॥  
 सुनि पँत रान माधव सहित सुदित होय आयहु मिलन ॥  
 गुन३ कोस एह सम्मुह गयउ मिलिय प्रीति अनुकूल मन२२  
 ॥ दोहा ॥

तीन३हि नृप नयैरीति तकि, रचि मिलाप पटु प्यार ॥  
 हरिमंदिर एकतँ हुव, करन मंत्र श्रीद्वार ॥ २३ ॥  
 कहिय रान कोटेस प्रति, बचन तुमारो मोघ ॥

॥ १६ ॥ १ रात्रि में यह स्त्री २ उदास ॥ १७ ॥ ३ उस स्त्री का पिता ॥ १८ ॥ ४  
 दिन में ५ सीमा ॥ १९ ॥ ६ मिस ७ ऊँचापन की ॥ २० ॥ ८ नीचे ॥ २१ ॥  
 १ कार्तिक सुदि एकम १० नाथद्वारै ११ शीघ्र १२ पत्र १३ युद्ध करके १४ पत्र ॥ २२ ॥  
 १५ नीति की रीति को देखकर १६ इकट्ठे ॥ २३ ॥ १७ झूठा



उभयर् वकीलन भोजि इम, आये निज निज दंग ॥ ३५ ॥

॥ पट्टपात ॥

रान वकील खुमान १ प्रेम १ माधव वकील दुवर ॥

नगर कालपी जाय सेन दक्खिन सम्मलि हुव ॥

दुवहि लक्ख २०००००० दै दम्म तुष्ट हुलकर मल्लार किय ॥

जैपुर समर सहाय तनय खंडुव तस मंगिय ॥

सुनि यह मल्लार सुत सज्ज करि रन सहाय लागि मुक्कलन

राणांजि रामचंद्र सु तबहि अक्खिय उचित सहाय नैन ३६

रामचन्द्र इम कहिय धरहु श्रुति कथ मल्लार धुव ॥

अपपन पति श्रीमंत अग्ग जयसिंह मित्र हुव ॥

जैपुर सन हित करन बचन तिन दिय कूरम कर ॥

वह तुम मेटत अज्ज धनिय कूंत भुल्लि लोभ धर ॥

ईस्वरीसिंह सम्मलि सबहि हैं पति किंकर तुम रु हम ॥

समुक्काय रान माधव सबन दब्बहु अरिन प्रचंड दम ॥ ३७ ॥

धकि हुलकर यह सुनत मुडि असिबर कर मंडिग ॥

अधर कंप अंकुरिग तानि मुच्छन घन तंडिग ॥

कहिय अग्ग जयसिंह लिखित हत्थन करि अप्पिय ॥

रानाउति भवै पुत्त थिर सु जैपुर पति अप्पिय ॥

जयसिंह बचन यह रक्खि हम माधव सिर छत्रहिं धरत ॥

लगगत यहै न अच्छी तुमहिं कुटिल लुब्धिं अनुचित करत ३८

राजामल कर कवली बहुत चक्खिय तुम स्वानन ॥

जातै अटकत जंग बिरचि नय हीन विधानन ॥

१ अपने अपने नगरों में ॥ ३५ ॥ २ रूपय देकर ३ प्रसन्न ४ सहाय देना उचित नहीं है ॥ ३६ ॥ ५ कहना सुनो ६ अपना ७ स्वामी के कार्य को प्रहल कर ८ भयंकर दंड से ॥ ३७ ॥ ९ क्रोधित होकर १० होठ में कंप होने लगा ११ गर्जना की १२ अपने हाथों का किया लेख १३ श्लाघति से उपजा हुआ पुत्र १४ लोभी ॥ ३८ ॥ १५ आस (निवाला) १६ कुत्तों ने १७ नहीं करने योग्य कार्य करके

तुम जावहु तिन संग हम सु माधव सहाय हुव ॥  
 कहि इम अक्खिय कुच्च धमकि आनक निसान धुव ॥  
 दल सुभट पंचप मरदठ मिलि दुहुँ २ दिस रिस मोचन करिय  
 परगनाँ पंचप माधव अरथ दैन अक्खि हित अनुसरिय ॥३६॥  
 रामचंद्र प्रति कहिय बहुरि हुलकर मल्लारहु ॥  
 बंटी दिवावत आवनि कछुक माधव हितकारहु ॥  
 तिम बुंदिय रहि है न लगि संभर हित लैहै ॥  
 अब बरजहु जो एस देस तिलमत्त न देहै ॥  
 यह मन्नि सबन पठये तबहि निज वकील जैपुर सजव ॥  
 साँहस मिटाय सामहिँ करन समुझावन कूरम कितव ४०॥

॥ दोहा ॥

रामराय १ मुनसी निज सु, रामचंद्र पठवाय ॥  
 निम्मराज २ कटक्या यह सु, पठयो हुलकर राय ॥ ४१ ॥  
 तिन जाय रु कूगम नृपहिँ, बुंदिय छोरन अक्खि ॥  
 पंचप परगनाँ अनुज हित, बंटीदैन रस रक्खि ॥ ४२ ॥  
 इत हुलकर अप्पन तैनय, खंडू नामक बीर ॥  
 पठयो माधव राँन प्रति, हित सहाय हमगीर ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सजि अनीकै दरकुंच चलिय खंडुव मल्लार सुव ॥  
 बजि आनक बंबीलै भचकि बिखरिय दरार भुव ॥  
 काकोदर फन फटिय कोल दंतुलि बररक्खिय ॥  
 सुररक्खिय वपु कमठ चोट गीठैक चररक्खिय ॥

१ नगार बजाकर २ दोनों ओर का क्रोध छड़ाया ॥ ३० ॥ ३ भूमि ४ चह  
 वाण (उम्मेदसिंह) के ५ तिल मात्र ६ शीघ्र ७ हठ छुड़ाकर मल्ल करन के  
 लिये ८ ईश्वरीसिंह ठग को समझाने का ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ९ अपने पुत्र को  
 १० माधवसिंह और राणा जगतसिंह के पास ॥ ४३ ॥ ११ सेना १२ मल्लार का पुत्र  
 १३ बंबी (नगार) १४ शोपनाग के १५ पीठ

गढगढन बत्त फुट्टिय सहज बढि विचार भूषन विदित ॥

मल्लार सुवन जावत लरन माधव रान सहाय हित ॥ ४४ ॥

इम खंडुव दरकुच्च आय कोटा मिलान दिय ॥

महाराव लखि समय जाय सम्मुह बधाय लिय ॥

चारन भूपतिराम मुख्य निज सचिव संग करि ॥

दिय अनीकै तिन सत्थ धीर सुभटन हरोल धरि ॥

पुनि मिलिय आय नृप गन पहुँ बुंदीसहु तँहुँ बुद्धि लिय ॥

साजि सेन लरन माधव सहित तजि मेवार प्रयान किय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दी  
शपुरोहितदयारामसहितराणाचतुर्म् ४ न्त्रिमन्त्रणासचिवदेवकर्णा १  
भवानीदास १ परिवर्त्तनजयपुरसचिवमरणापैशून्यप्रेरितप्रभुप्रज्ञाके  
शवदासगौणाऽधिकारप्रापणानद्यायुपटङ्गिवणिगघरगोविन्दमुख्यस  
चिवीभवनतत्पुत्रीश्वरीसिंहमतङ्गमिथुनपरस्त्रीपुरुषसङ्गदोषगर्तपत  
नधर्मनिगडत्रोटनराणा १ माधवसिंह २ कोटेश ३ श्रीद्वारसभागमननारा  
यणनिलयशपथशंसनमहाराष्ट्रसाधनसाधकजगत्सिंह १ माधवसिंहा  
२ऽधिकारिगमनतन्महाराष्ट्रसम्मिलनराणाञ्जि १ रामचन्द २ मल्लार  
॥४४॥ १ मुक्ताम २ सेना ३ बुला लिया ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, बुंदी के राजा के  
पुरोहित दयाराम सहित महाराणा का चार मंत्रियों से सलाह करना और  
देवकरण को दूर करके भवानीदास को प्रधान बनाया १ जयपुर के सचिव  
(राजामल) का मरना और चुगली करने वालों की प्रेरणा की बुद्धि से स्वामी  
का केशवदास को छोटा अधिकार देना और नाटानी पदवी वाले बनिये  
हरगोविन्द का सचिव होना २ उस हरगोविन्द की पुत्री और हाथी रूपी  
ईश्वरीसिंह इन दोनों का, परस्त्री से पुरुष के और पर पुरुष से स्त्री के संग  
के दोष से, धर्म रूपी जंजीर को तोड़ कर खड्के में गिरना ३ राणा जगत्सिंह,  
कछवाहा माधवसिंह और कोटा के पात का नाथद्वार में मिलना और ईश्वर  
के मंदिर में सौगन करना ४ मरहटों के साधन के अर्थ राणा जगत्सिंह और  
माधवसिंह के अधिकारियों का जाना और उन का मरहटों से मिलना ५



३ वाक्यविसरीकरणापुनरसम्मिलनपक्षद्वय २ दूतजयपुरप्रेषणाहुल  
करपुत्रखण्डूराणासहायगमनकोटासैन्यसहितबुन्दीन्द्रतरसम्मिलन  
विंशो २० मयूखः ॥ २० ॥ ३०१॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सक कृत नभ वसु सोम १८०४ मास फगुन पख उज्जल ॥  
नृप माधव उम्मेद सहित खंडुव चढि सैबल ॥  
रान कटक सब संग लहि रु दरकुच चलायउ ॥  
अति गरूर जनु गरूर अहिन उप्पर उफनायउ ॥  
उततैहु सुनत कछवाहको चंड कटक सम्मुह चलिय ॥  
दिस दिसन वत्त फुटिय दुसह खंड चउदह १४ खल भलिय ॥ १॥

॥ दोहा ॥

नहानी उपपद बनिक, हरगोविंद चमूप ॥  
चउ४ अवयव दल लौ चलयो, भिरन उदैपुर भूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

दगि तोपन लागि लाय भचिग दुवर दल मिलि संगर ॥  
इत मेवारन मुकुट इत सु ठंकन ठुंढाहर ॥  
राजमहल पुर सीम भीम प्रतिभट भिट भिंटन ॥  
इय उठाय हरवल्ल बढिग दुवर दिस अरि बिंटन ॥

राणजी, रामचन्द्र और मल्लार के वाक्यों का परस्पर भेद करना और फिर  
सामिल होकर सरहटों के दोनों पक्षों का अपने वकीलों को जयपुर भेजना १  
हुलकर के पुत्र खंडू का राणा की सहाय पर जाना और कोटा की सेना  
सहित बुन्दी के पति के सामिल होने का बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ  
और आदिसौर तीनस्तो एक ३०१ मयूख हुए ॥  
१ सेना सहित २ मानों गरुड ३ भयंकर सेना ॥ २ ॥ ४ सेनापति ५ हाथी,  
घोड़े, रथ, पैदलार, इस चार अंगोंवाली सेना को लेकर चला ॥ २ ॥ ६ युद्ध  
७ भयंकर शत्रुओं के = वीर मिलने को

जिम बिप्र निमंत्रन सुनि चलत इमहि अग्निं जाठर जगिय॥  
 साकिनी प्रेत खेचर सकति लाभ असन आवन लगिय ॥३॥  
 खेत्रपाल खिलखिलिय मिलिय नारद महती रैव ॥  
 काली गन किलकिलिय मिलिय बनि सैदूस आनि भव॥  
 पिलिय अग्र दुवर दलन मिलिय असि बाढ बाढ भरि ॥  
 गिलिय गोद गिद्धनिन खिलिय खूबिय हिय अच्छरि ॥  
 बढि अंधकार छादित बिपत व्यवहित बिरचि पतंग पहु ॥  
 लुट्टिय हरोल हुलकर भटन कूरम कटक बहीर बहु ॥ ४ ॥  
 हय उठाय हुलकर समेत हड्डनपति हंकिय ॥  
 अतिबल तेग उताल भरत टोपन भननंकिय ॥  
 कतिक मारि भुव छाया डारि ढंढर ढुंढारन ॥  
 पोखे नृप पलचरैन बहुल पल मेदै बिथारन ॥  
 असि बाढ चकिख इक बेर अरि लग्गे प्रतिमंग नीर लजि॥  
 मिलि मिलि सिचान आवत मनहु पारावत गन भरकि भजि ॥  
 जिम पारंद मिलि अग्नि पिक्खि निज कटक होत इम ॥  
 सेनापति गज सहित बनिक मंडयो अंगद तिम ॥  
 बुल्लयो रे निरलज्ज भजत मुच्छन मुँह धारत ॥  
 बनिक बैन यह सुनत फिरे कूरम अति आरत ॥  
 लिय सबन बिंदि पुनि बनिक गज पै न लगत अग्नि चरन  
 जोगिंद चित्त सविकल्प जिम रहिय रुक्मि पिक्खत मरन ॥६॥

[जाठराग्नि॥३॥महती नामक वीणा का शब्द करके ३ इन कहे हुआं के तुल्य  
 (वराधर) शिष्यधनराजों के बाढ पर तरवारें प्रफुल्लित हुए आकाश में सुख  
 प्रभु को लुपादिया॥४॥ १० अस्थिपंजर (हाडों के पिंजरे) ११ मांस खानेवालों को  
 १२ बहुत १३ मांस और चर्बी फैलाकर १४ उलटे मार्ग १५ कपोतों का समूह  
 ॥ ५ ॥ १६ अग्नि से पारा उडै जैसे १७ मुख पर १८ पीड़ित १९ परन्तु २० योग शा-  
 स्त्र में दो प्रकार की समाधि लिखी है जिन में एक तो सविकल्प समाधि है  
 जिस में अद्वैत का भाव होने पर भी द्वैत भासता है, जैसे किसी विष्णु, शिव  
 आदि देव का अधिष्ठान करके समाधि लगाई जाती है उस योगी का चित्त उत

तिमिर घोर तत मध्य पार अप्पन भट भान न ॥  
 माधवं के दलमाहिं पिक्खि पचरंग निसानन ॥  
 जैपुरके तिन्ह जानि रान दल भजिग भीत अति ॥  
 कोटा दल पुनि भजिग सहित चारन सेनापति ॥  
 तहँ भयउ सोर कोटा भजिग सुनि पित्थल बुल्लयो मुचहि  
 हम भुजन आहि कोटा अखिल तिन ठहँ भग्गो न कहि ७  
 कोकिलपुर पति कुमार भटन पित्थल चूड़ामनि ॥  
 महाराव उमराव विदित बुल्लयो अंगद बनि ॥  
 चारन मगगनहार भज्यो कारज अचिज्ज नहि ॥  
 पै हम हड्डन पपन आर्डडुंगर अवलंबहि ॥  
 यह अफिख सेन भज्जत मुरयो जिम अनिमिष उल्लटे उंदक  
 भपटाय बाजि पैवि जिम परयो हुंढाहर सिर धारि धक ८।  
 भजत सेन लखि सजव पिठि लगिगय जैपुर दल ॥  
 मुरि पित्थल तिम मध्य खग्ग आरिय रचि मंडल ॥  
 जिम बिरेकें औषधिय उदर इम मथिय सन्नु सब ॥  
 कतिक कं पि लकतकत कतिक छकत बकत बैब ॥  
 सँव्यापसव्य करि आद्व विच जजमानहिं जिम करत द्विज ॥  
 तिम किय अनेक परबस कुमार समर विथारिय नाम निज ९  
 जिम नर तिम सैलोट गिरत हैवर तिम गैवर ॥

देव को छोड़ कर आगे नहीं पढ़ता, और दूसरी निर्विकल्प समाधि है जो चेत-  
 न्य स्वरूप पर ब्रह्म में लगाई जाती है सोही मोक्ष का साधन है ॥ १ ॥ १  
 बिस्तार के २ माधवसिंह कछवाहे की सेना में ३ राणा की सेना ४ कोटा की  
 सेना भगी ५ पृथ्वीसिंह ६ सब कोटा हमारे भुजां पर है ॥ ७ ॥ ७ कोयला  
 पुर के पति का = आढायळा नामक पर्वत लटकता है ८ मच्छी १० उल्लटे  
 पानी में ११ बज्र के समान ॥ = ॥ १२ शक (गोलकुंडा) १३ दस्त लाने वाली  
 दवाई पेट को मथे जैसे १४ भुजकर देखते हैं १५ अयाच्य शब्द (कसराने का  
 शब्द) १६ सव्य और अपसव्य ॥ ९ ॥

जिम तोमर तिम खगग बिहसि भारत कुमार बर ॥  
 लटकत उरभि रकाव कतिक भटंकत प्रमत्त गति ॥  
 खटकत हड्डन बाढ मनहुँ चटकत गुलाब तैति ॥  
 घुम्मत अचेत घायन कतिक कतिक आय पायन परिय ॥  
 कछवाह कटक सब अजब सुवै गजबसिंह गड्डरि करिया ॥१०॥  
 तुष्टि तुष्टि सिर उडत कडत सर फुट्टि बकतर ॥  
 रुहिर छिछि नभ चढत बढत कलकल धर अंबर ॥  
 काली खप्पर भरत फिरत सिव नञ्च बिसारद ॥  
 महती तुंवा सिर लगाय घुम्मत इत नारद ॥  
 पित्थल अनीक फारत बढिग मरद उतारत गजन मद ॥  
 डाकिनि डरात फारत बदन किलकारत भैरव भयंद ॥११॥  
 घनै रिपुन रमनीन भारि कंकन कुबेसै किय ॥  
 घनै रिपुन रमनीन बिब बंटन पखान दिय ॥  
 घनै हयन घन घाय कियउ मँहगे सोदागर ॥  
 घनै गजन सिर फारि रंग मुत्तिन किय आंगर ॥  
 भुजदंड भीरि बासुकि उरग मंदर असि गहि उच्च मन ॥  
 पित्थल कुमार नागैर कियउ डुंढाहर सागर मथन ॥१२॥  
 पहर इक्कइम कुमर लरिग धारन धपाय धक ॥  
 फट्टिग सिर चोफार बदन चोफार लोह छक ॥  
 मनहुँ बीर बिधि परखि हरखि अद्वैत छाप दिय ॥

१ बावले होकर फिरने हैं २ पंक्ति ३ अजबसिंह के पुत्र ४ गजब करने वाले सिंह ने ॥ १० ॥ ५ बाण ६ रुधिर की ७ कोलाहल ८ नृत्य में निपुण ९ महती नामक नारद की वीणा का १० मुख ११ भयंकर ॥ ११ ॥ १२ स्त्रियों के १३ लोटा (विधवापन का) बेल १४ बहुत शत्रुओं की स्त्रियों को घावों पर बांधने के अर्थ नीच घांटने को हाथों में १५ पत्थर दिये युद्ध में १६ मोतियों के १७ डेर (समूह) १८ मंदराचल रूपी तरबार को लेकर १९ विष्णु ने ॥ १२ ॥ २० ब्रह्मा ने परीक्षा करके २१ ऐसा दूसरा वीर नहीं है ऐसी छाप दी

रायसिंह ३ फल्ला बहुरि, नगर सादही नाह ॥

पुनि बुंदीस पुरोहित सु, दयाराम चित चाह ॥ ३ ॥

॥ षट्पात ॥

इम च्यारिधन करि मुख्य रान\*पुतना पुनि पिल्लिय ॥

सजव साहिपुर आय मुदित निज दल सह मिलिय ॥

उततैं ईस्वरिसिंह पिछि दब्बत द्रुत आयउ ॥

भिल्लहड़ा पुर लुट्टि कहर मेवार मचायउ ॥

धनवंत बनिक कैरा पटकि कुप्पि नगर श्रीद्वैत करिय

बाटिका मनहुँ अहिबल्लरिन चपल आनि वस्तन चरिय ॥

मेवारन किय मंत्र सुनत यह वत नीति सह ॥

कटक प्रचुर कछवाह अलप अप्पन अनीक यह ॥

हुलकर १ कोटा २ एहु उभय २ बिस्तर विनु आपे ॥

चित रहित बुंदीस अवनि हित प्रसभ अभाये ॥

यातैं न संपैरायहि उचित रहिहै अवनि लैरैं न ॥

सकुटुंब सकल नृप जुत करहि कुंभिलमेरु निवास कि

तखतसिंह यह सोधि जान लगो कूरम प्रति ॥

सुनि यह खंडुव साम अनैखि कुप्प्यो हुलकर

बुल्ल्यो पुनि भुज ठोकि सजव आपे संगै भ्रम ॥

अब जो साम उपाय तयो तुम माहि नहिं हम ॥

सुनि तखतसिंह हुलकर कथित दयाराम तैं मुकलिय ॥

अकिखय वहै न नैय समयपेटु समुझावहु कहि प्रचुर प्रिय ॥

॥ ३ ॥ \* फिर सेना भेजी ॥ शीघ्र १ कैद में २ लक्ष्मी हान ३

(वर्षाची) में ४ नागरबेल को ५ बकरों ने चरी ॥ ४ ॥ १ अपनी सेना ७

विस्तार के ८ धन सहित ९ भूमि के अर्थ १० नहीं समाधै ऐसा हठ

युद्ध १२ लड़ने से भूमि तिलमात्र नहीं रहेगी १३ महाराणा सहित १४

य हो गहन प्रदेश कुंभलगढ़ में जाकर बसंगे ॥ ५ ॥ १५ ईश्वरीसिंह के

१६ क्रोध करके १७ युद्ध के भ्रम से १९ हे समयचतुर यह (युद्ध

१८ नीति नहीं है २० बहुत प्यारी बातें कह कर ॥ ६ ॥

सहाराणाका कछवाहोंसे संधि चाहना] सप्तमराशि-द्वाविंशमयूग (३४६७)

तवहि जाय \*भूदेव कहिय बुंदीस पुरोहित ॥  
तुम दिल्लिय तिय जार कुमर खंडुव चिंतहु चित ॥  
अवसर कोप इहाँ न स्वामि साहुव कुल रानाँ ॥  
लुरकनतैं तिन बेर खुट्टि सब गयउ खजानाँ ॥  
सज्जहिं जु अज्जरन कुम्भसह तो तुम ढिगहु अनीक मित ॥  
कछुदिन बिहाय दैल इक करि बहुरि सत्रु जितहि विदित ॥  
॥ दोहा ॥

बिरुदावत इम फुल्लि सठ, सुनि दिल्लिय तिय नाम ॥  
खुल्लयो हमहिं तटस्थ करि, करहु बिप्र सब काम ॥ ८ ॥  
॥ षट्पात् ॥

सुनि सैत्वर यह बिप्र आनि अक्खिय तखतेसहिं ॥  
हुलकर सम्मत आहि मिलहु तुम कुम्भ नरेसहिं ॥  
तवहि जाय तखतेस अरज कूरम प्रति अक्खिय ॥  
मरहठन आदेस कहहुं इहिं दिन किहिं नक्खिय ॥  
तसमांत धारि खंडुव कथित तुम भुव हम पैंते लरन ॥  
तिहिं हेतु आहि यह दोस तैस नृप लुटहु मेवार नन ॥ ९ ॥  
नैति पूरब यह सुनत कुम्भ अनुकंपै बिहसि किय ॥  
भिल्लहड़ापुर बनिक धनिक पकरे ति छोरि दिय ॥  
उपालंभ लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥  
किय पछो दरकुं च गरद रवि ठंकि मुदिर गति ॥  
सुचि पक्खचैत विक्रम सैकग पंच गगन वसु चंद्र १८०५ मित

\*आख्या ने दिल्ली रूपा स्त्री के उपपति तुम्हारे पति के कुल वाले राणा थे  
[कछवाहे के साथ] सेना थोड़ी है? सेना एकत्र करके ॥ ७ ॥ न किनारे (अलग) रखकर  
॥ ८ ॥ शीघ्र है ५ ईश्वरीसिंह से ६ हुकम ७ किसने डाला है ८ इस कारण ९ खंडू  
का कहना करके १० तुम्हारी भूमि में हम लड़ने को प्राप्त हुए ११ यह दोष  
खंडू का है ॥ ९ ॥ १२ नम्रता पूर्वक १३ दया १४ धनवान् बनियों को पकड़े  
छो छोड़दिये १५ आठ भा १६ मेघ के समान १७ शुक्ल पक्ष १८ विक्रम के शक

नृप किय प्रवेस जैपुरनगर मेवारन आक्रमि सुदित ॥

॥ रोला ॥

जगतसिंह इत रान खास इक रूपमल्ल १ हय ॥

साखति पुरट समेत रुचिर कुल जात मनोरथ ॥

इक खासा तरवारि १ भूप संभर हित भोजिय ॥

रान सचिव भट लौ रु पहुँचि बुंदिय अनीक प्रिय ॥ ११ ॥

भिंडरपुर पँ खुसाज १ तखत जयसिंहरान सुतर ॥

नगर सादड़ीनाह गयसिंह ३हु बिचार जुत ॥

दयाराम ४ पुनि द्विजनि हड्डबुन्दीस पुरोहित ॥

आये ए नृपअंग सचिव च्यारि ४हु नय सोदित ॥ १२ ॥

इन हय १ असि १ करि नजरि बीरपन विरुद विधारिय ॥

प्रीति सहित मुनि बचन लौन भूपति अवधारिय ॥

ग्वीकरि पुनि निज सुभट बीर बुंदिय दिस पिल्लिय ॥

तिन आय रु निज बिखय ठोकि कूरम चरं ठिल्लिय ॥ १३ ॥

हो हाकिम यँह वनिक सचिव जैपुर कुल बंधव ॥

थानसिंह थू उचित लौन पँटु दैनपटु न लौव ॥

सो निकस्यो करे लौन नियँति बल नृपदल पिकरयो ॥

लिन्नो पकरि निलज्ज सपर्ये बंदन तब सिक्खयो ॥ १४ ॥

कारा सहि कति काल दम्भ पुनि तीस सहस्र ३०००० ॥

तब छोरयो वह त्रसित जानि दुल्लभ मन्नत जिय ॥

में प्राप्त अर्थात् वैकमीय १ घरने से प्रसन्न होकर ॥ १० ॥ २

३ सुंदर कुल में उत्पन्न, मन के वेगवाला ४ उम्मेदसिंह के अर्थ ५ बुन्दा

की सेना में ॥ ११ ॥ ६ भीडर का पति कुशलसिंह ७ तखतसिंह ८

नमा (जायाग) उम्मेदसिंह के आगे १० शोभित ११ १२ विचार किया १३ भज

अपने देश में १४ नौकरों को ॥ १३ ॥ १५ जयपुर के सचिव के कुल का भाई १

धरने के (धिकार के) उचित १७ लेने में चतुर १८ देने में लेश मात्र भी

नहीं था १९ हासिल लेने को २० भाग्य के फल से २१ उम्मेदसिंह

ने देखा २२ सौगन करना और नमस्कार करना ॥ १४ ॥



बिन बुंदिय सब बिखय अमल बसु ८ मास अरोहो ॥

नृप भट बहुरि निकासिं मुलक कूरम दल मोहयो ॥ १५ ॥

॥ सोरठा ॥

इत पुनि रान बिचारि, गोवरधन गोस्वामि प्रति ॥

मुदित मंडि मनुहारि, पठये दल श्रियद्वार पहुँ ॥ १६ ॥

तुम बल्लभ कुल दीप, बुल्लहु यँहँ कोटेस अब ॥

मिलि हम उभय २ महीप, स्वमत धर्म मग संचरहिँ ॥ १७ ॥

गोस्वामिय लिखि पैत, बुल्लयो तब कोटेस द्रुत ॥

आयो निहिन अँत, जानि रान सम्मत बिफल ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

रान कहाई मिलनकी, नटयो तबहि कोटेस ॥

कहिय बढ़लि तुम सार्भ किय, सद्धिय कुम्म नरेस ॥ १९ ॥

मिलनमैहु रस नहिँ तुमहु, करत अल्प सतकार ॥

अरथी बिनु आदर रहित, मिलत कोन मतिदार ॥ २० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमऽराशौ शीर्षोद-  
तखतसिंह १ कुसालासिंह २ भालारायसिंह ३ द्विजदयाराम ४ सचिवचतु-  
ष्टय ५ सहितराणा सैन्यसहाया ६ रथसाहिपुरा ७ गमनकूर्मराजमेदपाटप्र-  
विशनमिल्लहड़ापुरलुगटनतद्वलविद्रुतोदयपुरसचिवसामविचारणाकु-  
पितहुलकरखण्डनुनयनजायसिंहिकुच्छामनतत्स्वपुरप्रतिप्रविशनहृद्दे

१ देश में ॥ १५ ॥ २ पत्र ३ राजा ने ॥ १६ ॥ ४ आप के धर्म के मार्ग में ५ चलेंगे ॥ १७ ॥

६ पत्र ७ यहाँ ॥ १८ ॥ = मेल करके ॥ १९ ॥ ९ धन की याचना करने वाले के बिना न्यून आदर से कौन १० बुद्धिमान् मिलता है ॥ २० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, शीर्षोदिया तख-  
तसिंह, कुसालसिंह, भालारायसिंह, ब्राह्मण दयाराम, इन चारों सचिवों के  
सहित, राणा की सेना की सहायता के अर्थ शाहपुरा में आना १ कछवाहों  
के राजा का मेवाड़ में प्रवेश करके भल्लहड़ा पुर को लूटना २ उस के सेना  
से डर कर उदयपुर के साचिव का साम उपाय करने से कोपे हुए खंडू की  
प्रार्थना करना और जयसिंह के पुत्र के क्रोध को मिटाना और उस का कूच



न्दोपायनीभूतावर्धरूपमल्ल १ कान्तकृपाणा २ पुरस्सरराणा चतुःसचि  
वबुन्दीशशिविराऽऽगमनगृहीतनिवेदितोपायनसम्भरस्वभटबुन्दीविष  
यध्वेपणानट्टाणिस्थानसिंहनिग्रहणातद्वदद्वयग्रहणाबुन्दीमात्ररहित  
देशस्वीकरराणाऽनुनीतश्रीद्वारगोस्वामिगोवर्धनमहारावाऽऽह्वयन  
कोटेशतन्मिलनाऽल्पसत्कारसूचनं द्वाविंशो २२ मयूखः ॥ २२ ॥ ३०३ ॥

॥ प्रायोजनदेशीयाप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

\* तसमात अब तुम रान भुंदि य तुल्य अदर जो करो ॥  
तबही मिलै रु बहोरि जो नहि साम कूरमसौ धरो ॥  
पहिलेहि दै हरि अग बचन रु फुटि जैपुरमें मिले ॥  
तसमात नाहि बिसासहै तुम इष्टसौहै सबै गिले ॥ १ ॥  
सुनि रान तब कछु घटि बुंदि य तुल्य अदर स्वीकरयो ॥  
अब अप्प सम्भुह इक १ गदिय बैठिहो १ यह उच्चरयो ॥  
हम मैथ हथ लगायहै २ लघु खास कर्गार मंडिहै ३ ॥  
अबत सनेह बढै जु अप्पन सो कदापि न खंडिहै ॥ २ ॥  
कोटेस तब सुनि एह रानहिं मेल स्वीकरि बुल्लये ॥

करके अपने पुर में प्रवेश करना ३ हाडा की भेट करने को रूपमल्ल नामक  
घोड़ा, सुन्दर तरवार, आदि सहित राणा के चार सचिवों का बुन्दीश के डेरे  
पर आना और नजर किये हुए नजराने को लेकर उमेदांसिंह का अपने वीरों  
को बुन्दी के देश में भेजना ४ नाटाखी धानसिंह को पकड़ कर उस से दंड के  
रूपये लेना और एक बुन्दी को छोड़ कर देश को अपना करना ५ राणा की  
प्रार्थना से नाथद्वार में शुमाई गोवर्धनलाल का कोटा के महाराव को बुलाना  
और राणा से मिलने में अल्प सत्कार होने की कोटा के पति की सूचना क-  
रने का वाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तीन ३०३  
मयूख हुए ॥

\* इस कारण से १ हे राणा ३ बुन्दी की बराबर आदर करो तो १ इस कार-  
ण से २ इष्टदेश के सौजन्य ॥ १ ॥ ३ बुन्दी से कुछ घटकर ४ आदर स्वीकार  
किया ५ आप ६ मस्तक के हाथ लगाकर मुजरा करेंगे ७ खास रुके में अपने  
को छोटा लिखेंगे ८ कभी नहीं तूटेगा ॥ २ ॥ ९ मिलना स्वीकारकरके बुल्लये

तब रान पुनि थियद्वार आय मिले रु मंत्रहु खुल्लये ॥  
 रु सदैव सम्मलि होनके पुनि पत्र दोउनर मंडये ॥  
 चढि गाम ढिकोला दुहूनर रकाव जाय रु छंडये ॥ ३ ॥  
 तब ही जु साहिपुरा चैमू सु समस्त जाय मिली तहाँ ॥  
 बुंदीस डेरन रानर खंडुवर भीमनंद ३ गये जहाँ ॥  
 तब इंदगढर खतोलि २ बलवानि ३ आदि तीन ३ मिलायकै ॥  
 पुनि रानसौं मिलि भूप बैठिय इक १ गहिय आयकै ॥ ४ ॥  
 घटिका उभैर हि सभा रही मनुहारि मोदमई भई ॥  
 पुनि पान गंध निवेदि सर्वन सिक्ख डेरनको दई ॥  
 खंडू १ रु माधवर तत्थही पलटाय पंग्घ सखाभये ॥  
 पुनि तत्थतैं चढि सर्वही गुलगाम पारहलौं गये ॥ ५ ॥  
 खारी नदी तट दैं मिलान सबैं घने दिन वहाँ रहे ॥  
 तब कुम्म बीरहु सज्जवहै दरकुंच सम्मुह उम्महे ॥  
 त्रय ३ कोस अंतर दैं मिलान यहै कहाइय रानपैं ॥  
 क्यों बैन चुकी करारके पुनि सज्जहुव धमसानपैं ॥ ६ ॥  
 तुम भ्रात नाथ पटा जु पावत सोहि माधवको मिलैं ॥  
 घर रीति चुकि रु अप्प क्यों अब कोल बैन कहे मिलैं ॥  
 तब रान अक्खिय अप्प जानत रीति घरघर भिन्नहै ॥  
 तुमरे पिता जयसिंह राज्य सबैहि याकैहँ दिन्है ॥ ७ ॥  
 हम किहू नाथ प्रसन्न ज्यों तुम त्योंहि माधवको करो ॥  
 निज तांत मंडित पत्र अक्खर लुपि लोभ न अहरो ॥  
 इहि रीति होत जबाब जानि रु कुपि खंडुव उचरो ॥  
 रन काज मोहि बुलायकै अब सामकी तुम जो धरो ॥ ८ ॥

१ घोड़ों से उतरे अर्थात् सुकाम किया ॥ १ ॥ २ सेना ३ भीमसिंह का पुत्र महाराज दुर्जनशाह ॥ ४ ॥ ४ दो घड़ी ५ इत्र ६ पगड़ी बदल कर ७ आ-मका नाम है ॥ ५ ॥ ८ सुकाम ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ नाथसिंह को हरन प्रसन्न किया जैसे तुम माधवसिंह को प्रसन्न करो १० तुमारे पिता जयसिंह के लिखे हुए

तुमतेहिं संगर सज्जि तो हम प्रीति रीति बिगारिहैं ॥  
 कछवाह \*हितु नतो लरो हरवल्ल हम असि भाँहि ॥  
 तैंह रान बत्त १ कुवेर १ ओ तखतेसर तैं यह अकखई ॥  
 अब अप्प साम करो न हयौ रन बुद्धि खंडुवकी भई ॥ ९ ॥  
 तब रान आदि समस्त फोजन सज्ज जुज्झनकी करी ॥  
 रननंकि तंतिन सिधवी झननंकि पक्खर घुग्घुरी ॥  
 सुनि कुम्म सत्रुन सज्ज होत बिचारि खंडुव भीरकों ॥  
 जय जानि संसय मुक्कल्यो हरनाथ नारव बीरकों ॥ १० ॥  
 कहि मास कत्तिप १ समग २ वा हमहू उदैपुर आयहैं ॥  
 अरु अप्प माधव १ ओ उमेद २ दुहून २ लाय मिलायहैं ॥  
 तैंह नम्रताजुत पिक्खि बुद्धिय हहु भूपहिं अप्पिहैं ॥  
 दसलक्ख १०००००० रूप्य देस माधव अत्थ दे थिर थप्पिहैं ॥ ११ ॥  
 यह बत्त नारव आयकैं नृप रान आदिनतैं कही ॥  
 कोटेस ताहि सिराहि बुद्धिय स्वीय हाकिमकी चही ॥  
 सुनि एह दुजनसल्लकों तब बीर खंडुव निंदयो ॥  
 इहिं रीति दोउनकै २ विरोध बिसेस बैनन व्है भयो ॥ १२ ॥  
 दुरभिच्छ कारन सेनमें मन १ घास रूप्य १ को बिकैं ॥  
 अरु अन्नकीहु महर्घतांकरि लोक निठिनकैं टिकैं ॥  
 वलि नित्य दम्म हजार बारह १२००० रानकै वयमें लगैं ॥  
 पुनि होत साम जवाब जो निमटैहि जावनकी थंगैं ॥ १३ ॥  
 कोटेसके दलकेन तत्थ अनीति मंडि मरोरतैं ॥  
 तन सकंट जाय रु रानके दल माँहि लुटिय जोरतैं ॥  
 तब कुम्म बैन कहे जु मन्नि रु रान अक्खिय है भलैं ॥

॥ ८ ॥ \* सो कुवेरसिंह ॥ ९ ॥ † नरुका ॥ १० ॥ § मार्गशिर सं १ माधवसिंह के  
 अर्थ ॥ ११ ॥ ‡ नरुके ने ३ अपना हाकिम रहने की ४ वपनों का ॥ १२ ॥ ५  
 महंगाई से खरच में ७ टहरे ॥ १३ ॥ ८ सेना वालों ने ९ घमेंड से १० घास के गाडे

तब देहु पै अबतैहि द्वाकिम तत्थ\*मामक मुकलै ॥ १४ ॥  
 यह बत कूरम स्वीकरी तब गान आयस त्यों दयो ॥  
 नगरी बसी पति चौडबंसिय मेघ १ बुंदिय भेजयो ॥  
 टोडा महाजन टेकचंद १ पठाय रान खुसीभयो ॥  
 यह जानि माधव १ मित्र खंडुव १ कुंच दोउन २ को ठयो ॥ १५ ॥  
 करि कुम्म इडुम्मन रानतै निज धाम रामपुरा लयो ॥  
 कति दीह खंडुव तत्थ रहि पुनि बप्पके ढिग पुग्गयो ॥  
 इत कुंच ईस्वरिसिंह हू निज धाम जैपुर त्यों किये ॥  
 कोटेस भेजि वकील अक्खिप मोहि बुंदिय दीजिये ॥ १६ ॥  
 तब लै वकीलहि संग कूरम स्वीय पत्तन संचरयो ॥  
 रु कही तजा अब रान संगत तो करै तुम उच्चरयो ॥  
 नहितो बै कत्तिय मासमै तुमतैहु संगर जोरिहै ॥  
 पहिलै करी जिम धूमि तोपन नैर चम्मलि बोरिहै ॥ १७ ॥  
 कोटेस १ रान १ रु भूप १ ए३ इत उप्परे गुलगामतै ॥  
 पुग्ग धुधरी तट दै मिलान रहै निसा सुख सामतै ॥  
 तह जा पुरोहित रानके ढिग हो सु संभर मंगयो ॥  
 तब दयाराम जु विप्र रानहु भूपको हिततै दयो ॥ १८ ॥  
 निज विप्र लै दुव २ हड्ड भूपति नंदगाम गये तबै ॥  
 बुंदीस चम्मलि वारही रहि सगतपुर गढमै जवै ॥  
 तह सचिव हरजन हड्डको सिविका समप्पिय संभरी ॥  
 अरु देसमै तहसील कारन सिक्ख ताहि दई खरी ॥ १९ ॥  
 अचलेस १ माधानी सहित तब देस हरजन १ संचरयो ॥  
 सीलोरपुर ढिग कुम्म सुभटन जाय रन तिनसों करयो ॥

\* हमारे ॥ १४ ॥ † हुम्म † मेघसिंह को ॥ १५ ॥ कछवाहे जयसिंह ने राणा  
 संग्रामसिंह को § उदास करके १ बाप (पिता) के पास ॥ १६ ॥ २ अपने पुर में  
 गया ३ राणा का साथ छोड़ दो तो ४ अथ ॥ १७ ॥ ५ उम्मेदसिंह ६ उम्मेदसिंह  
 ने पुरोहित दयाराम को मांगा ॥ १८ ॥ ७ कोटे का उपनाम है ८ उम्मेदसिंह  
 ने पालखी दी ॥ १९ ॥ ९ माधवसिंहोत हाडा

अचलेसके \*गुटिका लगी पर दोहु२ सत्रुन नाँजये ॥  
 पुनि फोज जैपुरतैं चली तब छोरि भूपतिपैं गये ॥ २० ॥  
 सक बेद नभ बसु सोम १८०४ भद्रव कृष्णअष्टमि ८ जंगमो ॥  
 पुनि भूप आन उठाय जैपुर सैन बुंदिय संगमो ॥  
 रन काज भूप बहोरि बीर दलेल १ नाहर मुकले ॥  
 रन आय बुंदिय किन्न पै वपु धाय दोउन२ कै छले ॥ २१ ॥  
 तबही सगतपुर बुलिकैं उपनाह दोउन२ कै कियो ॥  
 आसोजमें सुत ईडरेचिय कै भयो सु नही जियो ॥  
 इत ज्येष्ठ सालमनंद दिल्लिय छोरि जैपुर पुगगयो ॥  
 भट ताहि क्रूरम रक्खि बुंदिय सीम माँहि पटा दयो ॥ २२ ॥  
 पुनि मैगमें नृप कुम्भ बुंदिय आय दीह घने रहयो ॥  
 कोटेसकेर वकीलतैं यह बैन परिखदमें कहयो ॥  
 हम संग दुरजनसल्ल होय रु आत माधवपैं चलो ॥  
 यह नाँहि तो रन सज्ज होय रु लैन हम कँहँ मुकलो ॥ २३ ॥  
 कोटेस यह सुनि इकठो निज सेन पत्तनमें करयो ॥  
 लगवाय बाहिर मोरचे गढ जाल तोपनको जरयो ॥  
 उत एह माधवहू सुनी तब छोरि रामपुरा सँरयो ॥  
 दल संग लै निज भीत व्है कढि नैर कररावन परयो ॥ २४ ॥  
 इत कुम्भ बुंदिय दोहु२ भ्रातन माँहि हित बिसतारयो ॥  
 परताप १ काँ रु दलेल १ काँ इक १ थाल भोजन कारयो ॥  
 सु दलेल ठीक गिनी न छोरिय अन्न आमय व्याजतैं ॥  
 पुनि कुंच दुंदुभि वज्जयो नृप कुम्भको रन साजतैं ॥ २५ ॥

\*गोली लगी परंतु † नहीं जीते ॥ २० ॥ २१ ॥ १ इलाज ॥ २२ ॥ २  
 मृगशिर मास में ३ ईश्वरीसिंह ४ सभा में ५ हमारे आई माधवसिंह पर  
 व हम को युद्ध के अर्थ कोटे बुलाने को किसी को भेजो (इसकी नाँही  
 करने पर युद्ध करने को हम कोटे आवेंगे) ॥ २३ ॥ ७ चला ८ पुर का नाम  
 है ॥ २४ ॥ ९ कराया १० रोग के मिस से ॥ २५ ॥

सुनि ताहि फोज बहीरसो सब \*नंदगाम दिसा चली ॥  
 अरु कुम्भहू किय बिप्रा पुजन अपि पुष्पन अंजली ॥  
 तिहिबेर दिल्लिय साहके फरमान लगिय बेगही ॥  
 तुम कुम्भ आवहु छिप हयौ लरनो इराननतैं सही ॥ २६ ॥  
 इक साह अहमद है पठान जु साहनैदर मारिकैं ॥  
 ईरानपति बनि लंघि अटक रु आत इत धक धारिकैं ॥  
 तसमांत आवहु आतही रनथंभ दुग्गहि पायहो ॥  
 अरु जित्ति अहमदसाहकौं दिल्लीस तोरैं बढायहो ॥ २७ ॥  
 तजि नंदगामहिं बंघि जो हुंत कुम्भ दिल्लिय त्यों चढयो ॥  
 परताप १ ओर दलेल १ सोदर दोहु २ संगहि लौ बढयो ॥  
 मथुरा गये तब रोगको मिस कै दलेल तहाँ रहयो ॥  
 पहिलैंहि अन्न तज्यो हुतो अब प्रान छोरनही चढयो ॥ २८ ॥  
 गंगोद मिष्टिय पान कै रु बिभूति विप्रन दैदई ॥  
 भल रीति देह दलेलनैं तजि तत्थही गति सो लई ॥  
 परताप अग्रज तास जुत कछवाह दिल्लिय पुगयो ॥  
 अरजी निवेदि रु तत्थ हठ रनथंभ आवनको लयो ॥ २९ ॥  
 तब साह दैहिं नदैहिं यौ कछुहू न कुम्भहिं उचरयो ॥  
 तँहँ कुम्भ अखिख वजीरसौं हठ सोहि पावनको धरयो ॥  
 सुनि कुम्भहिंतु वजीर अखिख नाँहि अप्प भरोसहैं ॥  
 चलिहो न जो तुम तो कहा यह साहके सिर दोसहैं ॥ ३० ॥  
 यह अखिख अहमदसाह साहतनूज संग वजीरवहै ॥  
 किय कुच कुम्भहि छोरि जोरि अनीकैं जुजम्न वीरवहै ॥

\*कोटे का तर्फी पुष्पांजलि देकर अर्थात् पुष्प चढ़ाकर १ शीघ्र ॥ २६ ॥ २नादरशाह को मारकर ३ इस कारण ४ प्रताप ॥ २७ ॥ ५ शीघ्र ६ करके ॥ २८ ॥ ७ गंगाजल ८ पेश्वर्य ९ दलेलसिंह के बड़े भाई सहित ॥ २९ ॥ १० ईश्वरीसिंह से कुछ नहीं कहा ११ ईश्वरीसिंह से कहा कि युद्ध आप के ही भरोसे पर नहीं है ॥ ३० ॥ १२ दिल्ली के बादशाह के पुत्र अहमदशाह के साथ १३ सेना

तब कुम्म \*स्वीय अमात्य सों कथ गेह चालनकी कहा ॥

सुनि मंत्रि अक्खिय संग चल्हु गेहकी न अबै रही ॥३१॥

तब कुम्म संगहि कुच्चकैं दलै पिठि जावन अहरयो ॥

दरकुंच हंकि सुकाम यों सतलंजके तटपैं परयो ॥

तहँ कुम्म हितुं वजीर चितिय आदितैं मम बेरहै ॥

गहि याहि दंडहिं वेगही अब नाहिं यहँ जयनैरहै ॥ ३२ ॥

सुहि कुम्म भीरु निसीर्थमें सुनि छोरि डेरनकाँ भज्यो ॥

दरकुंच रति रु दीह कैं जयनैर लौ रु दुरयो लज्यो ॥

परताप सालामनंद संगहि आय जैपुरमें मरयो ॥

अरु जो नरायनदास खत्रिय लै हलाँदल सो मरयो ॥३३॥

यह बीर खत्रिय अगगही दुवबीस२२ संगर जित्यो ॥

संधा न भाजनकी हुती पर स्वामि संग भज्यो गयो ॥

तस लाज लैं विख आतही तिहिं बीर विप्रह छोरयो ॥

सुनि कुम्म सोच घनौं लयो पर काकतैं बल नाँ ठयो ॥३४॥

सुतसाह अहमदसाह साहइरानतैं इत संजुरयो ॥

यह जानि दिखिय ईसनैं निज इत्थ करंगर अंकुरयो ॥

सुनि पत्र दक्खिन देसमें श्रियमंत अंतिकें मुकलयो ॥

तुम भीरै आवहु ह्यौ इरानिन देस दिखियको दल्यो ॥३५॥

अयमंत नन्ह जु बंचिकैं इक लक्ख १००००० बाँहिनि लैं चढ्यो ॥

बजि बंन आनक त्यों अचानक घोरैं कोसनलौं बढ्यो ॥

हयकें चलाचल लैं तरारन व्योमें धारनकाँ धरै ॥

धुमडौ घटा अनुकौर वारैंन गज्ज डारन बिथरै ॥ ३६ ॥

\*अपने मन्त्रि से ॥ ३१ ॥ २ सेना के पीछे ३ से ॥ ३२ ॥ ४ आधी रात्रि में भाग्य  
वाकर ॥ ३३ ॥ ५ इस के युद्ध में नहीं भागने की प्रतिज्ञा थी परंतु यहां स्वामि  
के साथ भगा ७ शरीर को छोड़ा ॥ ३४ ॥ ८ बादशाह का पुत्र अजुड़ा (युद्ध किया)  
१० पत्र लिखा ११ अयमंत के पास भेजा १२ सहाय ॥ ३५ ॥ १३ सेना १४  
शाह १५ आकाश १६ घोड़ों की गति को १७ सदृश १८ हाथी ॥ ३६ ॥



उडि धूलि धोरनि अक्रे धंधरि चक्रचक्रिय बिच्छुरे ॥  
 लागि अद्रि घुम्मन भुंमिके गज जानि मैगल अंकुरे ॥  
 चढि संग गायकवाँल<sup>१</sup> ओ परमार<sup>२</sup> सज्जित संधिया-३ ॥  
 दठदार हुलकर<sup>४</sup> घुंसलपा<sup>५</sup> मतिवार कन्नलकी क्रिया ॥३७॥  
 तजि नैर पुण्ड्रिम सज्जि यौं श्रियमंत उत्तर हंकयो ॥  
 भुव भीर पदस्वर छाया सेलन ओघ अंबर ठंकयो ॥  
 दरकुंच उत्तरि नर्मदा तिमही अवंतिय लंघये ॥  
 अरु हे जु रामपुराहि माधव बुल्लि संगहि ते लये ॥३८॥  
 असवार पंचहजार<sup>५०००</sup> सौं तब कुम्म सम्मलि यौं भयो ॥  
 तँहँ कुम्म डेरनपै मलार प्रधान नन्हहिँ लौ गयो ॥  
 जयसिंह मंडित पत्रकी समुझाय बत्त निवेदई ॥  
 पुनि नैर बुंदिय लैनकी तिहिँ बुद्धि दुद्धरके दई ॥ ३९ ॥  
 गज<sup>१</sup> बाजि<sup>२</sup> माधव भेट किन्न सु लौ रु संगरपै छल्यो ॥  
 इन कुम्म केसवदास खत्रिय नन्ह समुह मुकल्यो ॥  
 तिहिँ साम ईस्वरिसिंहसौं श्रियमंत स्वीकृत कारयो ॥  
 दरकुंच कै पुनि लंघि चम्मलि सेन अगग प्रचारयो ॥ ४० ॥  
 इम जाय जैपुर सीममै नगरी निवाइय उत्तरे ॥  
 रु वकील बुंदियभूपके ढिग हे तिन्हैं चलतेकरे ॥  
 लिखि पत्र संग दये रु भूँहिँ बेग आनहु यौं कह्यो ॥  
 तब छिप्र<sup>१३</sup> चारन दान आय प्रयान भूपतिको चह्यो ॥४१॥  
 दल<sup>१४</sup> नन्हके रु मलारके सब पुँब प्रीति निवेदये ॥  
 तब चाहि भूप सिराहि चारनको रु चालनको भये ॥

१ सूर्यरदिग्गजगायकवाड (मरहठों की जाति विशेष) ४ युद्ध की क्रिया में च-  
 तुर ॥३७॥ ५ भालों के समूह से आक्रांश दकगया ६ उज्जैन ॥ ३८ ॥ १६ ॥ ७ बड़ा द-  
 मेल स्वीकार ८ कराया ॥ ४० ॥ १० चिदा क्रिये ११ उम्मेदसिंह को १२ शीघ्र  
 १३ दान नामक चारण ने ॥ ४१ ॥ १४ पत्र १५ प्रीति पूर्वक



सक पंच अंबर अट्ट इक्क १८०५ रु चैत उज्जल द्वादसी १२ ॥  
 रविवार नाडिय पिंगलार जलतत्वपै जब उल्लसी ॥ ४२ ॥  
 क्रम पंच दक्खिन अंधिके तब दे रु भूपति है चढ्यो ॥  
 तजि नैर मधुकरदुग्गको धक धारि बुंदियपै बढ्यो ॥  
 तहँ पोदकी १ तजि बाम दक्खिन ओर सुद्धहि उत्तरी ॥  
 करि उद्ध सुंढि रु कन्नपै धरि गज्जि सम्मुह भो कैरी २४३  
 दिस सांत बुल्लिय फिकरी ३ अनुकूल पिंगलिका ४ भाई ॥  
 इम सौन बुंदिय लैनके बनि प्रीति भूपतिको दई ॥  
 तब लंधि चम्मलि संभरी दरकुंच उत्तर हंकये ॥  
 सुनि आत तांत मल्लार १ खंडुव पुल १ सम्मुह द्वैरगये ॥ ४४ ॥  
 त्रय ३ कोस पै मिलि जाय प्रीति बढाय सम्मलि ले मुरे ॥  
 श्रियमंतहू मिलिके प्रबोधिये बंव जित्तनके घुरे ॥  
 सुंत साह अहमदसाहनै इत जंग सत्रुनतै रचयो ॥  
 हरिमंथ भाष्ट्रकै राव त्यों तरकाव तोपनको मचयो ॥ ४५ ॥  
 अतलादि भू पुट धुज्जिके फनमाल पन्नग चंपयो ॥  
 अति चंड गोलन तापतै ब्रह्मंड भोलन कंपयो ॥  
 रु वजीर संगैर होत माँहि निमाज कारन उत्तरयो ॥  
 मैनमूर तोपन स्वामिनै ईहँ स्वामिद्रोहँ रजू करयो ॥ ४६ ॥

॥४२॥ १ दाहिने चरण के २ घोड़े पर ३ शकुन चिड़ी (रूपारक्ष) ४ सुंढ को ऊँची करके  
 कान पर धरकर ५ हाथी गर्जना करके सामने हुआ ॥ ४३ ॥ १ शान्त दिशा में ७ फेकरी  
 (स्यालनी) बोली (इसके बोलने के शकुनों का यह क्रम है कि जिस वार में  
 बोले उस वार को पूर्व दिशा में रखकर दिशा दिशा प्रति लगे क्रम वार से  
 रखते जावें अर्थात् पूर्व से अग्नि, दक्षिण आदि सो जिस वार में जिस दिशा  
 में बोले वहाँ क्रूर वार का क्रूर फल और शान्त वार का शान्त फल मानते हैं  
 ८ कोचर पत्नी ९ शकुन १० लम्हेदसिंह ११ पिता महार और पुत्र खंड  
 ॥ ४४ ॥ १२ समझाया १३ बादशाह का पुत्र १४ चनों का १५ भाइ में तडकने  
 का १६ शब्द होवे तसे तोपों का शब्द हुआ ॥ ४५ ॥ १७ युद्ध होते समय  
 १८ मनमूर अली १९ तोपों के पति (दरोगे) ने ॥ ४६ ॥

बैल तोप स्वीय बजीरकों हनि अप्प तैत्थ बजीरभो ॥  
 सुतसाह अहमदसाह यह लखि काल चित रु धीरभो ॥  
 कहि माफ आगैसहै परंतु अबैं इरानिनकों हनों ॥  
 सुनि यों सहादत पुत्तहू मनसूर जंग रच्यो घनों ॥ ४७ ॥  
 बहु बार तोपन मार दै रु इरानको दल जित्तयो ॥  
 हुतही महानद लंघि अहमदसाह भीरु भज्यो गयो ॥  
 सुतसाह अहमदसाह तव जयपाय दिल्लिय संचरयो ॥  
 मनसूरकोंहि बजीर दिल्लिय ईसहू तबही करयो ॥ ४८ ॥  
 पुनि साह चिंतिय जै भयो मरहठ क्यो अब बुल्लनैं ॥  
 पठवाय कर्गार मंडि अक्खिय नाँ व आवहु इयाँ घनैं ॥  
 मिलनोहि होय हजूर तो दल तुच्छ लै यँह आवनों ॥  
 नहि तो लगे तुमरे ति दम्माहि लै रु दक्खिन जावनों ॥ ४९ ॥  
 श्रियमंत कर्गार बंघि जो दल तुच्छकी नहिँ स्वीकरी ॥  
 व्यय सेन दम्मा लगे ति लै करि देस जावन अदरी ॥  
 तव साहनैं दुववीस लख २२०००० लगे ति रूप्य मुक्कलै ॥  
 दलमाहिँ नन्ह निदेसैहू तव देस चालनके चले ॥ ५० ॥  
 तँहँ नन्ह हितुँ मल्लार अक्खिय वत्त बुंदिय भुल्लई ॥  
 अरु भुल्लि माधवकों कहा तुम सौँक जैपुरतैं लई ॥  
 सुनतैहि ईश्वरिसिंहपैं तव नन्ह कँगार मुक्कल्यो ॥  
 तुमनैं कहा सिँसु जानि पुव्व कुमार खंडुवकों छल्यो ॥ ५१ ॥  
 सुनि पैत्त ईश्वरिसिंह घुज्जि रु पुव्व वत्त सु स्वीकरी ॥  
 रु लिखी भई पहिलै सुही तबतैहि हे मम अदरी ॥

१ मोर्षों के बल से अपने बजीर को मारकर २ तहाँ प्राय बजीर हो गया. ममय  
 ३ बिचार कर ४ अपराध ५ सहादतनामों का पुत्र ॥ ४७ ॥ ६ पट्टी नदी को ७  
 गया ॥ ४८ ॥ ८ पत्र ९ अथ १० जितने रुपये खगे हों वे लेकर ॥ ४९ ॥ ११ ते  
 (५) ११ काता ॥ ५० ॥ १२ से १३ पत्र १४ यादक जान कर पहिले ॥ ५१ ॥ १५ पत्र

जु उमेद १ माधव १ सौ कही सु मही भलौ तुम लीजिये ॥  
 हरि सौहैं है मुहि अप्प मन्नि रु कुंच दक्खिन कीजिये ॥ ५२ ॥  
 सुनतैंहि यह तब नन्ह आयस कुंच दुंदुभिको दयो ॥  
 रु कही नैरेसहिं हंकि मंडहु आन देस मिल्यो गयो ॥  
 सु कही मलारहु भूप संभर भुम्मि चालतही लहो ॥  
 यह ठहै न तो हमसंगहैं जयनैर जितन उम्महो ॥ ५३ ॥  
 सुहि मन्नि मंत्र उमेद १ माधव १ नन्ह सम्मलिही चढे ॥  
 दल भार झोकन ओक ओकन लोक सोकनमैं बढे ॥  
 कुसलेसनाम झलायके पति खास हैं पठयो तबै ॥  
 पति जानि माधवको रु अक्खिय अप्पकै बसहैं सबै ॥ ५४ ॥  
 सु लयो रु सत्यहि सर्व हंकि य लंघि जैपुर गाम के ॥  
 लखि लख १००००० दक्खिन सेनको अरि आदके ढिग धामके ॥  
 दलके प्रपान अमान हत्थिन दान पैदति सिंचई ॥  
 बढि फैल गैलन भीति सैलन रीति कंदुककी लई ॥ ५५ ॥  
 दल भेट मारुत फेटलै प्रतिमग्ग हारुत भग्गयो ॥  
 बन जंतु घोरन ओर ओरन प्रान छोरन लग्गयो ॥  
 करि यौ प्रपान मिलान आनि बनासके तटपैं करयो ॥  
 तह भूप डेरन आय हुलकर नेह नूतन विस्तरयो ॥ ५६ ॥  
 सिरुपाव दोय मैहर्घ ओ हय खास दोय २ निवेदये ॥  
 पुनि भूप परिकर सर्वको सिरुपाव उच्च दये नये ॥  
 रु कही चलो हम सत्य संध स्वदेस आनि बिथारिहैं ॥  
 न बनें जु तोहु समर्थहैं ततकाल जैपुर मारिहैं ॥ ५७ ॥  
 पुनि कुंचकै कढि नैर बाबिपैं सीम बुदिय संचरे ॥

१ ईश्वर के सौगन ॥ ५२ ॥ २ उम्मेदसिंह से कहा ॥ ५३ ॥ ३ घर घर में घोड़ा ॥ ५४ ॥ ४ मस्त  
 हाथियों के डाय से मार्ग सींचे गये ६ पर्वतों ने ७ गैद की ॥ ५५ ॥ सेना की फेट से ८  
 पवन ६ हाहाकार शब्द करके भगा १० झुकाम ११ नवीन ॥ ५६ ॥ १२ महंगे  
 (बहुमूल्य) १३ सब परगह को १४ सत्य प्रतिज्ञा वाले हैं सो ॥ ५७ ॥ १५ नगर का

मरहठ लुट्टन इन्द्रगढ लाखि श्रील पूरब त्यों टरे ॥  
 दरसाल दम्म हजार सोलह १६००० बज्रधरगढपै करे ॥  
 ति चढे हि हायन पंचपतैं नहिं देव दक्खिनके भरे ॥ ५८ ॥  
 तसमात बांसवदुग्गकों मरहठ लुट्टन उम्महे ॥  
 सु उमेद १ माधव १ जानि द्वै २ तिन्ह अहु आनि खरेरहे ॥  
 श्रियमंत आन दई रु अक्खिय कोल दम्म दिवायहैं ॥  
 अरु नाहिं स्वीकृत एह तो हनिकैं हमैं दल जायहैं ॥ ५९ ॥  
 हम रोकि सर्वन दोहु २ सत्यहि आनि डेरन पुग्गये ॥  
 तहैं दम्म बांसवदुग्गके दसही हजार १०००० चढे दये ॥  
 रु कराय माफ हजार सत्तरि ७०००० भूप ताहि बचायकैं ॥  
 लक्खैरिका पुर सोम किन्न मुकाम सर्वन आयकैं ॥ ६० ॥  
 तबही तहाँ सन बाघ संतुव स्वीय बीर मल्लारनैं ॥  
 पठयो वहै पुर लैन भूपति आन फेरन कारनैं ॥  
 तहैं कुम्म हाकिम हे तिन्हैं जुरि जंग संतुवतैं करयो ॥  
 मुरि बाघ संतुव जो उँदंत मल्लारतैं सब उच्चर्यो ॥ ६१ ॥  
 सुनतैहि हुलकर खिज्जि बुंदिय भूपतैं कहि मुक्कली ॥  
 नहिं सिक्ख सुभटन देहु तुम हम सैन जैपुरपै इली ॥  
 यह अक्खिकैं श्रियमंतसौं हुत सिक्ख संगरकों लई ॥  
 सुनि निंदि कुम्महिं नन्हहू खिजि सिक्ख जैपुरपै दई ॥ ६२ ॥  
 अरु दैन सत्य बिसास नन्ह उमेद डेरनपै गयो ॥  
 बिसवास भूपहि प्रीति पूरब बैन मंजुल बुल्लयो ॥  
 बैल बीर बीस हजार २००००तैं तुम संग एह मल्लारहै ॥

नाम है १ धनवान् लोग पूर्व दिशा को चले गये २ प्रतिवर्ष ३ इन्द्रगढ पर ४ पां.  
 वर्ष से ५ देवसिंह ने ॥ ५८ ॥ ६ इस कारण ७ इन्द्रगढ को ८ रुपये ९ सेना  
 हमको मारकर जावेगी ॥ ५९ ॥ १० घृत्तान्त (हाल) ॥ ६० ॥ ६१ ॥  
 ११ ईश्वरीसिंह की निन्दा करके ॥ ६२ ॥ १२ मनोहर १३ सेना

सुहि लै रु अर्पेहिं भुम्मि अर्पेहिं कुम्म कैठ कुठारहै ॥६३॥  
 यह अर्खिख दै गज बाजि भूपहिं नन्ह हंकनकों भयो ॥  
 रु मल्लारहू तिय गोतमा जुत पुत्र दक्खिन भेजयो ॥  
 यह गोतमा मरहठ पुंगव भोजराज सुता हुती ॥  
 जाभातकों सुत हीन जिहिं सब द्रव्य दै रु रची नुती ॥६४॥  
 तब गोतमा सु मल्लार व्याहिय जो पतिव्रतमें रही ॥  
 तिहिं तास चूरिय चूनरी बल तै इती प्रभुता लही ॥  
 सु पतिव्रता१ अरु पुत्र खंडुव१ नन्ह संगहि मुक्कले ॥  
 पुनि लै हजार असी ८०००० चमू चढि नन्ह दक्खिनकों चले ॥६५॥  
 तब तीन३ हड्ड१ मल्लार१ माधव१ नन्हके पहुँचानकों ॥  
 हुव संग पट्टनि चम्मली तट दिन्न आनि मिलानकों ॥  
 तँहँ नन्ह केसवदास खत्रिय बुल्लि कुम्म अमात्यकों ॥  
 तस हत्थ हुलकर हत्थ दै कहियाहि ठिल्लि न ब्रात्यकों ॥६६॥  
 यह सूँद्र पै इहिं बुद्धि बिंप्रन बुद्धि दैन समर्थहै ॥  
 अरु तूहु पँज्ज तँतोपि यासन प्रीतिलायक अर्थहै ॥  
 सुनि यों मल्लारहु अर्खई हम स्वामि उक्त सचेतहैं ॥  
 इहिं भूप पै तिहिं कुम्म दैन कही सु मूढ न देतहैं ॥ ६७ ॥  
 तसमार्त तास अमात्य जो यह कुम्म सम्मति भिन्नहैं ॥  
 अबही ततो पतिके कहैं हम लाय छत्तिय लिन्नहैं ॥  
 परं पत्र यासन लेखि देहु समस्त बुद्धिय छोरिबे ॥

१आपको भूमि देवेगा २यह मल्लार कछवाहे रूपी काष्ठ पर कुठार है ॥६३॥ ३मल्लार  
 की स्त्री का नाम है ४उत्तम मरहठे ५जमाई को, जिस भोज पुत्रहीन ने ६स्तुति  
 ॥ ६४ ॥ १५ ॥ ७ कछवाहे ईश्वरीसिंह के सचिव को बुलाकर ८इ-  
 स संस्कार हीन (शूद्र) को ठेलना (हठाना) मत अर्थात् दूर मत करना  
 ॥ ६६ ॥ ६यह (केशवदास खत्री) शूद्र है परन्तु यह १०ब्राह्मणों को बुद्धि देने  
 में ११समर्थ है १२तू भी शूद्र है १३इस कारण भी १४इससे १५स्वामी के कहने में  
 १६ परन्तु इसका राजा १७ईश्वरीसिंह ने ॥६७॥ १८इस कारण १९परन्तु २०इससे

सुनि एह केसवदास लिखि दिय नेह नूतन जोरिबे ॥ ६८ ॥  
 सु मलार भूपहिं दिन्न ओ सब नन्हकों पहुँचायकैं ॥  
 लखखैरि पत्तनही बहोरि मुकाम मंडिय आयकैं ॥  
 लिखि दैल उदैपुर १ जोधपुर २ कोटा ३ हु हुलकर प्रेषये ॥  
 सब सेन भेजहु अत्थ छिन्नहिं श्रील जैपुर देसये ॥ ६९ ॥  
 लखखैरिका बिच रक्खि निज भट आन भूपति मंडई ॥  
 करि यों चढे सब कुंच कैं खुरघात छोनिय खंडई ॥  
 मग माँहिं बुंदिय ग्राम आयउ तेहु भूपतिके करे ॥  
 दरकुंच सज्जित सेन कैं जयनैर सम्मुह उत्परे ॥ ७० ॥  
 कइलासलों यह बतवहै सिवहू जरद्वं आरुहे ॥  
 डमरूकैं डाकिनि लै भजी सुनि प्रेत हंकि य सासुहे ॥  
 कलिकार मोदित वहै हसे किलकारि जुगिनि उछली ॥  
 गहकाय गिहनि गोदकों चहकाय चिल्हनिहू चली ॥ ७१ ॥  
 डगमगि सैलन सांनुतें बनजंतु गैलन बिखरैं ॥  
 फनमाल पंनग पट्टरी सन नच्चि भू नट उछरैं ॥  
 लहरैं हिंडोरन भोकं निंदत नीर सिंधुन सेतु भै ॥  
 बिथुरैं मवासन आसपासन बास नासन हेतु भै ॥ ७२ ॥  
 रु कबंध रक्खस नारि सन्निभ नारि कच्छपकी धसी ॥  
 कलिका अगर्थियकी फटैं तिम दंतुली किरिकी नसी ॥

॥ ६८ ॥ १ पत्र २ भेजे ३ धनवान् ॥ ६९ ॥ ४ श्रुति खुदी  
 ॥ ७० ॥ ५ बैल पर चढे ६ वाद्य विशेष ७ युद्ध करानेवाला (नारद) =  
 प्रसन्नता की बोली बोलकर ॥ ७१ ॥ ८ हिलतेहुए पर्वतों के शिखरों से  
 बनजंतु १० मागों में बिखरते हैं ११ शेषनाग की फणमाला रूपी नट नाचकर  
 उछलता है, हिंडोरे के भोकों की निन्दा करती हुई समुद्र की लहरें किनारों  
 को १२ भय करती है, आसपास के मेवासों (चोर और लुटेरों के घरों) में वा-  
 स के नाश करने का भय होता है ॥ ७२ ॥ और जैसे रामचंद्र के युद्ध में कबंध  
 नामक १३ राक्षस की गरदन शरीर में घुस गई थी तिसके १४ सदृश कमठ  
 की गरदन शरीर में घुस गई १५ अगस्त्य ऋषि की कली फटै तैसे १६ बराह की

भय बग्न कंपित छागें ज्यों दिगनाग त्यों मद मोचये ॥  
 भटभर्ग भासत आत्मभू भट सर्गनासत सोचये ॥ ७३ ॥  
 खुर धूलि धुंधरि नाहिं प्राचिय त्यों अवाचिय सुज्झई ॥  
 तिमही प्रताचिय ओ उदीचिय भान बीचिय उज्झई ॥  
 पंवमान थक्किय अक्क ठक्किय चक्क चक्किय बिच्छुरे ॥  
 पहुमी सुरक्किय सत्त७ खंड फिराव चक्किय त्यों फुरे ॥ ७४ ॥  
 सुरलोक कुक्किय रासैं रुक्किय तान चुक्किय अच्छरी ॥  
 जिय भीरैं मुक्किय क्यों बचैं सब नीर सुक्किय मच्छरी ॥  
 इम सेन हंकत सत्रु संकत केस कंकतके भये ॥  
 प्रतिभा भमंकत बाजि डंकत भुम्भि डंकत हल्लये ॥ ७५ ॥  
 भट कुंकुमी करि चैलैंके प्रभु गैल जित्तन उम्महैं ॥  
 कति बाजिराजन भारि तौजन भाजि आजिनकाँ चहैं ॥  
 कति उच्चरैं सिर कुंम्मको धनुँ खेत्र लोष्टैं विधायहैं ॥

दंतुली फटी, जैसे १ सिंह के भय से २ थकरी कपै तैसे दिशाओं के हस्ती  
 धुजकर मद छोड़ने लगे और वीरों का तेज देखकर ३ ब्रह्मा ४ संसार के  
 नाश का शीघ्र सोच (चिन्ता) करने लगे ॥ ७३ ॥ घोड़ों के खुरों की धूल से  
 धुंध होकर ५ पूर्व ६ दक्षिण ७ पश्चिम और ८ उत्तर दिशा नहीं दीखी  
 और इन दिशाओं ने सूर्य की ९ किरणों को छोड़ दी तथा सूर्य की किरणों  
 ने इन दिशाओं को छोड़ दी १० पवन थककर ११ सूर्य झिप गया और १२  
 चकवा चकवा बिछुड़ गये, भूमि के सातों खंड मुड़कर १३ घरटी के समान  
 फिरने लगे ॥ ७४ ॥ स्वर्ग लोक में कूक होकर १४ नृत्य रुक गया और अप्स-  
 राएं गाना श्रुत गईं, जिसप्रकार सम्पूर्ण जल सूख जाने पर १५ मच्छी नहीं  
 बच सकती इसप्रकार १६ कायरों ने जीव छोड़े, इसप्रकार सेना के चलने से  
 शत्रु डरकर जैसे १७ कांगसी (कंधी) में केस होयें तैसे होगये, उस सेना के  
 वीर १८ बुद्धि को चमकाते हुए, घोड़ों को कुदाते हुए और भूमि को ढकते हुए  
 चले ॥ ७५ ॥ कितने ही वीर १९ केसरिया २० वस्त्र करके स्वामी के साथ श-  
 त्रुओं को जीतने को उत्साह युक्त हुए, कितने ही २१ घोड़ों को २२ चायक  
 मारकर दौड़कर २३ युद्ध चाहते हैं, कितने ही कहते हैं कि युद्ध क्षेत्र में २४  
 कछवाहे (ईश्वरीसिंह) के मस्तक को २५ धनुष से २६ ढकल (झिटी के ढले) के  
 समान २७ करेंगे और कितने ही कहते हैं कि युद्ध रूपी अमर (अमि) में जय-



कति यों कहैं रन भौरमें जयनैर नाव भ्रमायहैं ॥ ७६ ॥

कहुँ उच्चरैं मम बैल ईश्वरिसिंह पिढि अरोहिहैं ॥

कहुँ सिंहको न कहंत ओगुन चित्रकारनकोहि ह ॥

कहुँ सिंहनी जयसिंहकीहु भज्यो तरच्छुहि यों वदैं ॥

कहुँ यों पलायन मांसदे बल जंत्र रुक्महिं दुर्मदैं ॥ ७७ ॥

इम बीर बुल्लत बीर खुल्लत सेन पिल्लत संचरे ॥

उनियार नागरचारमें गलवै नदीतट उत्तरे ॥

दखिनोन तँहँ सेन जे नरूकन गाम ते सब लुट्टये ॥

तिनमाँहिं फूलहता बच्यो नृपके प्रताप न वहाँ गये ॥ ७८ ॥

परिन्यौं नरेस अमात्य हरजन इह पुत्त दलेलवहाँ ॥

तसमात फूलहता बच्यो नृप कानि रक्खिय मेलवहाँ ॥

बनहटा जाय मुकाम क्रिय पुनि कुंच करि उनियारतैं ॥

राजाउतनके ग्राम लुट्टत बीर हंकि थियारितैं ॥ ७९ ॥

कति दंडि छंडत मान खंडत आन मंडत अप्पनी ॥

टोडा १ रु मालपुरा २ रु टाँक ३ छुराय माधव केपो धनी ॥

यह जानि ईश्वरिसिंह अक्खिय जे दये तिं दये सबैं ॥

मुनि यों मलार कहाय पच्छिय नाँ विसास रहयो अबैं ८०

पुर रूपा नाव को भ्रमायेगे ॥ ७६ ॥ कोई कहता है कि ईश्वरीसिंह को मेरे पैर को पीठ पर १ चढ़ाऊंगा, कहीं पर कहते हैं चित्राम का सिंह कुछ पराक्रम नहीं करता यह सिंह का दोष नहीं किन्तु यह दोष २ चित्तरे का ही है अर्थात् ईश्वरीसिंह केवल चित्राम का सिंह है, कहीं पर कहते हैं कि जयसिंह की सिंहनी ने ३ संघे (दोगले) सिंह का ही सेवन किया है, कहीं पर कहते हैं कि ४ मांसभोजियों को मांस देकर ५ सेना रूपा यंत्र से उस (ईश्वरीसिंह) को दुर्मद को रोकेगे ॥ ७७ ॥ इसप्रकार बोलने हुए और ६ बीर रस का खोलने हुए सेना को बढ़ाकर बीर ७ चले ८ नागरपाल देश में उणियारा नामक नगर में ९ नरों से दक्षिणियों ने ॥ ७८ ॥ १० उम्मेदसिंह की अदब से ॥ ७९ ॥ ११ माधवसिंह को वहां का स्वामी (मालिक) किया १२ चार परगने माधवसिंह को और बुरी का राजा उम्मेदसिंह को पाँचले दिये थे वे आज भी दिये



तब कुम्म \*कग्गर मुक्कले चहुवान भूपहिं फोरिबे ॥  
 ति उमेद बंघि रु नाँ मुरघो पट्ट जंग दुद्धर जोरिबे ॥  
 पुनि कुंच मंडि रु पिप्पलपुर जाय बाहिनि उत्तरी ॥  
 उमराव तीनइन आयकै तँहँ भीर माधव की करी ॥८१॥  
 जगतेस१ लंबपुरेस ज्ञाने२ तथा सिवापुरको धनी ॥  
 पुनि त्योंहि जालम२ डोढरीपति उल्लस्यो बढती अनी ॥  
 खंगार बंसिय कुम्मके उमराव बंधव तीनइये ॥  
 असवार पंद्रहसै१५०० लियै मिलि तत्थ माधवके भये ॥८२॥  
 पुनि पिप्पलू सन कुच्चकै बढि सैन जैपुर त्यों सरी ॥  
 तँहँ बोधिपादपके तरै इक घात संभरतै टरी ॥  
 तस छिन्न कल्प हुती जु साख सु तुष्टि भूपतिपै चली ॥  
 लखि ताहि हड्डनको सिरामनि बाजि फैंकि कढयोबली ८३  
 द्विज दान भोजन ता निमित्त अनेक आदरतै करे ॥  
 सब सेन सम्मलि हंकि कै पुनि जाय फागिय उत्तरे ॥  
 चढिकै तहाँ सन दूसरेदिन दब्बि जैपुरकी मही ॥  
 पुर नाम लावलदान जाय मुकाम मंडिय बेगही ॥ ८४ ॥  
 रहतै घनै दिन बितये तँहँ मंत्र जित्तनको भयो ॥  
 दल भीर च्यारि हजार४००० तत्थहि रानको हुत पुगयो ॥  
 तिहिं माँहि सालम रानबंसिय संभु१ भारत भ्रातहो ॥  
 २ भवानिदास प्रधान पुत्र गुलाब२ कायथ जातहो ॥ ८५ ॥  
 पुनि मेघ३ बेघम नाह भूप उमेद४ साहिपुरा पती ॥  
 जसवंत५ देधगडेस त्यों बिथुरात आहव उन्नती ॥  
 इम आदि लै दल रानके भट भीर हुलकरकी भये ॥  
 पुनि द्वैहजार२००० कबंधके भट आनि तत्थहि पुगये ॥८६॥

\* पत्र ॥ ८१ ॥ १ लांवा नामक पुर का पति २ ज्ञानसिंह ३ खंगारोत ४ ईश्वरीसिंह के ॥ ८२ ॥ ५ पीपल के वृक्ष नीचे ६ तूटी हुई ७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८ मेघसिंह ९ खुद में १० जोधपुर के राजा

तिनमौहिं मालिक दूदहर भर सेरै १ मेरतिषा जथा ॥

मनरूप २ सचिव रु ऊदहर कल्लयान १ सेर ४ उभै २ तथा ।

तैंहँ अप्प अप्प बिधारि आयस ढारि डेरन उत्तरे ॥

इम पिक्खिं सूरन आनि दूरन पुब्बही मनतैं बरे ॥ ८७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ रा-  
णा बुन्दीसत्कारदेश्यकोटासत्कारोररीकरणपुनःश्रीद्वारमहारावस-  
हितमिलनाऽनन्तरजगत्सिंह १ दुर्जनशल्य २ ढिङ्कोलानिवसथशिविर  
न्पसनखगडू १ पेतभूपद्वय २।३ रावराट्शिविराऽऽगमनतदनुखगडू  
१ माधव १ मैत्रीविधानाऽखिलसैन्यनिर्याणाखारीनदीतटप्रपतनतद-  
भिमुखकूर्मराजागमनश्रुतसामखगडूकोपकांशगतसम्ममतिर्वस-  
न्नदीभवनकूर्मराजाऽऽगामिकार्तिकसानुजविभाग १ बुन्दीशत्यजन  
लिखितहुलकरकरदापननिन्दितमहारावशीर्षोदसेनाऽन्तराट्गाशकट  
लुगटनराणाचुगडाउत्तमेघसिंह १ वणिकटेकचन्द्र २ बुन्दी १ टोडा  
२ प्रेषणरुष्टखगडू १ माधवसिंह २ रामपुरप्रतिगमनज्येष्ठजायसिंहि

॥ ८६ ॥ १ भद्र (उमराव) २ सेरासिंह १ अपना ४ हुक्म देकर ५ हसप्रकार वीरों  
को देखकर युद्ध होने से पहिले ही अप्सराओं ने आकर मन से उन  
को घरे ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा का बुन्दी  
के सत्कार के बराबर कोटा का सत्कार स्वीकार करना, जिस पीछे नाथद्वारे  
में महाराव से मिलने के अनन्तर राणा जगत्सिंह और महाराव दुर्जनशाल्य  
का ढींकोला नामक ग्राम में डेरा करना १ खंडू सहित दोनों राजाओं का  
रावराजा के डेरे पर आना और जिस पीछे खंडू और माधवसिंह का मिश्र  
होना २ सब सेना का वहाँ से निकलकर खारी नदी के किनारे मुकाम करना  
और उसके सम्मुख कछवाहों के राजा का आना ३ मिलाप होना सुनकर को-  
प की इच्छावाले खंडू की सलाह से सब का सज्जित होना ४ राजा ईश्वरीसिंह  
का आगे आनेवाले कार्तिक मास में अपने छोटे भाई का घंट और बुन्दी  
झोड़ने का लिखित (नहरीर) हुलकर के हाथ में देना ५ निन्दा युक्त महाराव  
का बदमपुर की सेना के भीतर घास के गाड़े लटना ६ राणा का चूड़ासन  
मेघसिंह और वैश्य टेकचंद्र को बुन्दी और टोडे भोजना ७ क्रोधित खंडू और

जयपुरप्रविशतन्महारावबुन्दीमार्गगाराणाभूपत्रयधुंधरीग्रामाऽऽ  
 गमनहृद्रेन्द्रपुरोधीदयारामाऽऽनयनग्रामसगतपुरसम्भरेशसचिवह -  
 रजनोपयोगिनीशिविकासमर्पणातत्स्वामिदेशरणाकरणावराडद्वि-  
 तीय २ राइयाऽऽत्मजोद्धमनसुभटीकृतसालमिप्रतापसिंहकूर्मराजबु-  
 न्द्यागमनकोटा १ रामपुर २ जयविचारणाप्रताप १ दलेल २ सौ-  
 हार्दकरणातदबुजान्नत्यजनप्राप्तयवनेंद्रपत्रेश्वरीसिंहदिल्लीगमनदलेल  
 सिंहमथुरादेहत्यजनकूर्मेशरणास्तंभदुर्गप्रार्थनतदनङ्गीभवनेरानोप-  
 मानप्रत्यन्तेन्द्राऽहमदशाहयुयुत्सुसपरिकरदिल्लीशकुमाराऽहमदशाहक-  
 रतोयाऽभिमुखनिर्वाणसरिच्छतद्गुशिविरसंस्थापनयवनसचिवकूर्मस-  
 वन्धनविचारणातद्व्यत्यक्तवाहिनीवैभवसहङ्गप्रताप १ खत्रिनाराय-  
 णदास २ प्रद्युतेश्वरीसिंहस्वपुरसमाविशनप्राप्तदिल्लीशदोर्लिविपत्रसि-  
 तारेश्वरसचिवराजनन्होत्तरदिगाऽऽगमनमाधवसिंहतत्सङ्गसाधनजय-  
 माधवसिंह का रामपुर पीछा जाना और जयसिंह के बड़े पुत्र (ईश्वरीसिंह)  
 का जयपुर में प्रवेश करना ८ उससे महाराव का बुन्दी मांगना और राणा  
 सहित तीनों राजाओं का धुंधरी नामक ग्राम में आना ९ उम्मेदसिंह के पुरो-  
 हित दयाराम को लाना और सगतपुर नामक ग्राम में उम्मेदसिंह का सचिव  
 हरजन के उपयोगी पालखी देना और उसका स्वामी के देश में युद्ध करना  
 १० रावराजा की दूसरी राणी के पुत्र होना ११ सालमसिंह के पुत्र प्रतापसिंह  
 को उसराव बनाकर राजा ईश्वरीसिंह का बुन्दी आना और कोटा व रामपुर  
 को जीतने का विचार करना १२ प्रतापसिंह और दलेलसिंह दोनों भाइयों  
 में मित्रता करना और दलेलसिंह का अन्न छोड़ना १३ जिसपीछे दिल्ली के  
 बादशाह का पत्र आने से ईश्वरीसिंह का दिल्ली जाना दलेलसिंह का मथुरा में  
 शरीर छोड़ना और ईश्वरीसिंह का रणथंभ नामक गढ़ मांगना और उसका  
 अस्वीकार होना १४ ईरान [म्लेच्छ देश] के पति अहमदशाह से युद्ध करने  
 की इच्छावाले उसके उपमान परगह सहित दिल्ली के पति के पुत्र अहमदशाह  
 का निकलकर शतद्रु नदी के पास डेरे करना और दिल्ली के बजीर का  
 कहनाहे ईश्वरीसिंह को कैद करने का विचार करना १५ उसके भय से सेना  
 को और धैर्य को छोड़कर हाडा प्रतापसिंह और खत्री नारायणदास सहित  
 आगेहुए ईश्वरीसिंह का जयपुर में घुसना १६ दिल्ली के बादशाह के हाथ का  
 लिखा हुआ पत्र पाकर सितार के पति के सचिव नन्ह का उत्तर दिशा में

पुरजनपदनिवाइनगरदक्षिणाष्टतनाप्रपतननन्ह १ मल्लार २ वर्णादूत  
 हूतबुंदीन्द्राऽऽगमनयवनद्वय २ शतद्रुयुद्धभवननालीयंत्राध्यक्षमनसूर  
 स्वसचिवमारणापरसैन्यपलायनयवनेशमहाराष्ट्रागमवारणाव्ययद्रव्य  
 द्रम्मद्वाविंशति २२ लक्षप्रेषणातिरस्कृतकूर्मराजनन्हप्रस्थानतत्परि-  
 करेन्द्रगढलुगटनविचरणाकुपितोस्मेदसिंह १ माधव १ दक्षिणात्य  
 वारणानृपदेशाध्यक्षशत्रुरणाकरणातन्नन्हबुन्दीन्द्रशिविराऽऽगमनतत्स  
 हायमल्लारप्रतिप्रेषणास्वयंदक्षिणागमनोस्मेदसिंह १ माधवसिंह २  
 सहायीभूतहुलकरोदयपुर १ जोधपुर २ कोटा ३ सैन्यसमाऽऽवहन  
 कूर्मजपनदलुगटनटोडा १ मालपुर २ टोङ्क ३ नयनसमाहूतसैन्यत्र  
 य ३ संमिलनं त्रयोविंशो २३ मयूखः ॥ २३ ॥ ३०४ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नगर लदानाँही सुन्यो, साह मुहम्मद नास ॥

सक सर नभ वसु ससि १८०५समा, मेचक सावन मास । १ ।

आना १७ उसके साथ माधवसिंह का आना और जयपुर के देश निवाई  
 नाम नगर में दक्षिण की सेना का मुकाम करना और नन्ह और मल्लार के  
 पत्र से बुलाये हुए बुन्दी के पति का आना १८ दोनों यवनों का शत्रू नदी  
 पर युद्ध होना और तोपों के अकसर मनसूरखली का अपने वजीर को मारना  
 और शत्रु सेना का भागना १९ बादशाह का सरहटों की सेना का आना  
 रोककर लगे हुए खरच के बाईस लाख रुपये भेजना २० ईश्वरीसिंह का  
 तिरस्कार करके नन्ह का गमन करना और उसकी परगढ़ का इन्द्रगढ़ को  
 छूटने को जाना और क्रोध युक्त उस्मेदसिंह और माधवसिंह का दक्षिणियों  
 को रोकना २१ उस्मेदसिंह के देश के अधिकारियों से शत्रु के युद्ध करने के  
 कारण नन्ह का बुन्दी के पति के डेरे पर आना और उसकी सहाय पर मल्लार  
 को भेजना २२ नन्ह का दक्षिण में जाना और उस्मेदसिंह माधवसिंह की  
 सहाय पर हुलकर का उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना को बुलाना २३  
 कछवाहे के देश को छूटना और टोडा, मालपुरा और टोङ्क को प्राप्त करके  
 बुलाई हुई तीनों सेनाओं के शामिल होने का तीसरा २३ मयूख समाप्त हुआ  
 और आदि से तीनों चार ३०४ मयूख हुए ॥

१ दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना २ कृष्ण पक्ष ॥ १ ॥

ताको सुत बैठा तखत, अहमदसाह अनूप ॥

वह मनसूरअली सचिव, रक्ख्यो पुनि अधरूप ॥ २ ॥

॥ पट्टपात ॥

तिनहि मुकामनतै मलार निज भट गंगाधर ॥

सहस्र अष्ट ८००० दल संग दै रु पठयो जैपुर पर ॥

तिहिं जाय रु जयनैर द्वार अररन तोमर हनि ॥

बुलवाये प्रतिबीर भीरु अब समुख होहु भनि ॥

कोटके निकट मालिन कुटिय बाटिन सहित प्रजारि दिय ॥

कूरमहु तुंग प्रासाद चढि यह चरित्र आतुर लखिय ॥ ३ ॥

तब नृप ईश्वरिसिंह कटक पिल्लयो तिन उपपर ॥

सेखाउत सिवसिंह विदित निकस्यो बीरनबर ॥

यह कूरम निज असन बेर दुंदुभि बजवावै ॥

लक्खन रंक जिमाय प्रीत ओदन तब पावै ॥

तिहिं खुल्लि अरर जयनैरके सजैव बाजि सम्मुह कियउ ॥

मरदठ भटन जयकार मिलि दुसह भार खगगनदियउ ॥ ४ ॥

सीकरपतिको लोह कटक दक्खिन सिर बज्ज्यो ॥

घरिय दोय २ घमसाँन भुक्ति गंगाधर भज्ज्यो ॥

पंच ५ कोस पहुँचाय मुख्यो प्रतिमंग सेखाउत ॥

जाय निवेदिय विजय नृपहिं बंदीन विरुद नुत ॥

अरु कहिय जो न आपुन चढहु तो सत्रुन सँन हारिहै ॥

नृप कहिय जँटु अप्पन मिल रु संगर बहुरि सुधारिहै ॥ ५ ॥

१ पापी को ॥ २ ॥ दरवाजे के किबाड़ों पर भाले मारकर ३ शत्रुओं को ४ हे कायरों ५ ब-  
गीचियों सहित मालियों की झूकहियें जला दी ६ जँच महल पर ७ गीदित होकर ॥ ३ ॥

८ अपने भोजन करते समय ९ भगारा १० अन्न ११ कपाट खोलकर १२ नीचे  
१३ जय करने वाला ॥ ४ ॥ १४ युद्ध १५ उलटे मार्ग (पीछा) आकर ईश्वरीसिंह को  
विजय निवेदन किया १६ भाट लोगों से स्तुति को सुनता हुआ १७ से १८  
भरतपुर के जाट ॥ ५ ॥

## ॥ दोहा ॥

पठये यह कहि भरतपुर, कग्गर जट्ट समीप ॥  
 आयहु सूरजमल्ल इत, मंडत जुद्ध महीप ॥ ६ ॥  
 गदिय ढिग लै बैठिहैं, तुमहिं बीर अति आघ ॥  
 हिम दक्खिन सिर होहु अब, दुपहर जेठ निदाघ ॥  
 इम कग्गर द्रुत बंचिकैं, चढिग जट्ट रविमल्ल ॥  
 जयपत्तन दरकुंच जँव, आयो कटक उमल्ल ॥ ८ ॥  
 नगर लदानाँतैं कियउ, इत सब दलन प्रयान ॥

सावन उज्ज्वल भूत १४ सक, मिलिसर नम धृति १८०५ मान ॥ ९ ॥

दठ पूरव हुलकर रचे, बगरू नगर सुकाम ॥

तैंहँ सन लियउ मल्लार तव, दसहजार १०००० दमदाम ॥ १० ॥

रानकटक अंतर गयउ, पुनि दक्खिन दलारय ॥

भिन्न भिन्न सब भट किये, मोदित डेरन जाय ॥

साहिपुरेसहिं आदिदै, सबहि रान उमराव ॥

इक १ इक १ हय नजरि करि, छुल्ले लरन बढाव ॥ १२ ॥

तदनंतर मरुधर कटक, पहुँच्यो हुलकर नाय ॥

अभयसिंह भट वर अखिल, संबोधे हित साथ ॥ १३ ॥

खासा दुव २ हय दुव २ हँयो, साखति पुरैंट समान ॥

चारु करैं सु विनीतें चउ ४, पीनैं रु रँजत पलान ॥ १४ ॥

त्पोहि क्रमेणैक दिग्ध तनु, भौरवाह पंचास ५० ॥

॥ ५ ॥ दक्षिणियों रूपी १ परत के ऊपर २ ताप (घाम) अधवा ग्रीष्म आतुका

॥ ७ ॥ १ सूर्यमल्ल ४ शीघ्र ॥ ८ ॥ ५ शल्ल पक्ष ॥ ९ ॥ ६ दंष्ट्र के रूपये ॥ १० ॥

७ राणा की सेना के भीतर गया देशी प्राकृत के मतानुसार 'प' और 'ड' को

'इय' और 'औ' और 'ब' को 'उव' होता है सो छंद रचना में उपयोगी होने के

कारण ग्रहण किया है ८ सेनापति महार ॥ ११ ॥ १२ ॥ १. जिसपीछे १०

सबको ११ निमंत्रित किये ॥ १३ ॥ १२ घोड़ियाँ १३ सुदग की १४ सुन्दर

ऊँट १५ भेंट भिक्षा पायेहुए १६ पुष्ट १७ चाँदी के ॥ १४ ॥ १८ बड़े शरीरवाले

कट १९ भारभरदारी के

मरुपंति एते ५८ मुकले, प्रिय सखं हुलकर पास ॥ १५ ॥

ते सब अंत्य निवेदये, सेरसिंह मनरूपर ॥

इक १ इक हय पुनि अप्पनै, अप्पे भेट अनूप ॥ १६ ॥

तिनहि मुकामन पंचसत ५००, कोटाके असवार ॥

आये सम्मलि आहुरन, चिंतत बिजय बिचार ॥ १७ ॥

अखयराम १ कायत्य अरु, नगर नागदह नाथ ॥

माधानी मोहन कुलज, जोधर मुख दल साथ ॥ १८ ॥

तिनहूको सनमान किय, हुलकर डेरन जाय ॥

इक १ इक घोटक अप्पये, प्रचुर प्रीति उन पाय ॥ १९ ॥

॥ रुचिरा ॥

तैंह माधव इक कपट बिथारिय अग्रज परिकर फोरनकों ॥

कन्ह १ वकील बहुरि गोगाउत २ मिलि कूरम मन मोरनकों ॥

प्रतिउत्तर समुझै तिस कंगर जैपुर सचिवन नाम रचे ॥

दैं चरै हत्य कहिय अग्रज चर इनहिं लखै तब मोदमचे ॥ २० ॥

यहसुनि चर दल लहि जैपुर गंत जानि परायनै हत्य परयो ॥

ईश्वरसिंह हु लखि तिन पत्रन व्है अति आकुल सोक करयो ॥

जिन अभिधान लिखे उन पत्रन तिन प्रति अखिय तुमहु पढो ॥

हरगोविंद प्रमुख सुनि बुल्लिय उन छल किय तुम लरन चढो ॥ २१ ॥

ईश्वरसिंह सु सुनि गहि मोन रु जट्ट सहित दल लरन सजे ॥

१ सखा (मित्र) ॥ १५ ॥ २ यहाँ निजर किये ॥ १६ ॥ ३ घुड़ करने को ॥ १७ ॥ ४ माधोसिंहात

हाडा ॥ १८ ॥ ५ घोड़ा ६ बहुत प्रीति पाकर ॥ १९ ॥ ७ बड़े भाई (ईश्वरीसिंह का

परगढ़ को कौड़ने के लिये माधवसिंह ने एक कपट रखा ८ कछवाहों का

मन मोड़ने के लिये ९ उनके पहिले के भेजे हुए पत्रों के उत्तर समझे जावें

ऐसे जयपुर के सचिवों के नाम १० पत्र रचे ११ हलकारे के हाथ १२ ईश्वरीसिंह

का नौकर देख लेवे तब दर्प होवे ॥ २० ॥ ११ गया १२ पैलों के हाथ में

१५ जिन के नाम १६ आदि ॥ २१ ॥ भरतपुर के जाट सहित लड़ने का

१७ सेना सजी



हेम हयन बारन गन वृद्धित बंबक बंबक बहुल बजें ॥

इत बगरुव बुधसिंह सुवन नृप समुद कबंधन सिविर गयो ॥

मारव मुदित मिले नति पूरब घोटक इकइक १ भेट भयो ॥ २२ ॥

इत पंडित पहुँच्यो गंगाधर पुनि पुर अररन सेल हनै ॥

पुरजन पकरि सहर बहिरागत विदित बिडारिय मुंडि घनै ॥

ईश्वरिसिंह सु सुनि सज्जित करि तीस सहस्र ३०००० निज क-  
टक बढ्यो ॥

संगहि जट्ट अघिप रविमल्लहु बाहिनि गाँहिनि हंकि बढ्यो ॥ २३ ॥

सक सर नभ बसु ससि १८०५ सम्मित सैम भद्र असित गत दो-  
जि २ दिनाँ ॥

किरि रई तुट्टि छुट्टि सत्व रु नृप बैसुमति छुट्टिय समय बिनाँ ॥

हाक प्रचुर दिस दिस प्रतिहौरन हयन हजारन जैहजुरे ॥

असह अचानक अनउपमानक घन रँव आनक निकर घुरे ॥ २४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ लदायापु  
रसम्बिहितशिविरसमस्तसैन्यदिल्लीशशाहमुहुम्मदमरगाशमनशूरस-  
चिवतत्कुमाराहमदशाहयवनेन्दीभवनमल्लाराष्ट्रसदस्त्र ८००० सैन्यसहि  
तसेनापतिगङ्गाधरजयपुरप्रेषणात्तत्तोरणाऽरतोमरमहारणाबाह्याऽऽर-

१ घाटों का हींसना २ हाथियों के समूह की गर्जना ३ नगारे और ४ ताछे बहुत  
बजे ५ हथ संहित ६ राठोड़ों के डेरे गया ॥ २२ ॥ ७ किवाड़ों पर भाँके  
मारे ८ गहर से बाहिर आयेहुए पुर के सलुप्यों को पकड़ कर प्रसिद्ध मुंडन  
कराके निकाल दिये ९ शूर्पमल्ल १० सत्रुओं को मर्दन करनेवाली सेना को लेकर  
॥ २३ ॥ १ समा (वर्ष) पराक्रम छुटकर २ पराह के दंत लूटे ३ श्रुति द्वारपालों की  
१४ बहुत हाक १५ हजारों घोड़ों के समूह जुड़े नहीं सहाजावे ऐसा १६ उमान  
रहित अचानक १७ मेघ की गर्जना के समान नगरों का १८ समूह बजा ॥ २४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में लदाना नगर में  
सब सेना का घेरा करके दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना सुनना और  
शूर व सचियों का उस के कुमर अहमदशाह को बादशाह करना १ मल्लार का  
आठ हजार सेना सहित सेनापति गंगाधर को जयपुर भोजना और उस का



मादिप्रज्वालनजायसिंहितत्सहायाऽर्थस्ववंशीयसेखाउतशिवसिंहनि-  
स्सारणातत्तुमुत्तरागङ्गाधरपत्न्यायनसेखाउत्तप्रतिगमनस्वयंनिष्कस-  
नौचितनिगदनकूर्मराजभरतपुरपत्रप्रेषणातदधीशजट्टेन्द्रसूर्यमल्ला-  
ऽऽनयनगहिकास्पृक्तदुपवेशनस्वीकरणाविदितवर्णादूतसूर्यमल्लजय  
पुरागमनसचमूमल्लार १ बुन्दीन्द्र २ माधवो ३ दयपुर १ जोधपुर २  
कोटा ३ सैन्यबगरूपुरप्रपतनतद्वशद्वयोद्धरणाहुलकरसर्वसार्थसै-  
न्यमुख्यसम्मननमित्रमरुजाजप्रेषितहयकरभादिद्रव्यमल्लाराङ्गीकर-  
णाभूतसिद्धभविष्यस्वागतोचितकोटाकटकाऽऽगमनमाधवसिंहपति-  
वचनव्यंजककौहक्यपत्रजयपुटभेदनप्रेषणातत्सदूतपरप्रत्यक्षीभव-  
जजायसिंहिवश्वकविवेचनमोहनहरगोविन्दादिपारवाञ्छक्यप्रकटीकरण  
समानकालाऽधिकरणाद्वेन्द्र १ गङ्गाधरसंगतमरुसैन्यशिविर २ जय  
पुरा २ ऽयाऽगमहयोपायनपुरकवाटध्वंसननागरमुगडनाक्रन्दन ३ ग्रहा

नगर के द्वार के कपाटों पर भाला मारना २ बाहर के बाग आदि को जलाना  
और जयसिंह के पुत्र का उनकी सहाय के अर्थ अपने वंशवाले सेखावत शिव-  
सिंह को भेजना ३ उसके भयंकर युद्ध से गंगाधर का भागना और सेखावत  
का पीछे आकर ईश्वरीसिंह के बाहर निकलने की उचित वार्ता कहना ४  
ईश्वरीसिंह का भरतपुर पत्र भेजना और वहाँ के पति जाटों के राजा सूर्य  
मल्ल को बुलाना ५ गादी को छूते हुए बैठने के स्वीकार के पत्र को जानकर  
सूर्यमल्ल का जयपुर आना ६ सेना सहित मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह और  
दयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना का बगरूपुर में मुकाम करना और वहाँ  
से दंड के रुपये लेना ७ हुलकर का सप के साथ सेना के मुख्य सरदारों का  
सन्मान करना और मल्लार का अपने मित्र मारवाड़ के पति के भेजे हुए  
घोड़े, ऊँट आदि द्रव्य को स्वीकार करना और आगे आये हुआँ का आदर  
सिद्ध करके आगे के उचित सत्कार के लिये कोटा की सेना में आना ८ मा-  
धवसिंह का, प्रति उत्तर जाना जावे ऐसा छल का पत्र जयपुर भेजना और  
वो उसके दूत से प्रत्यक्ष होकर जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का उस ठग के  
विचार से मोहित होना और हरमोहिद आदि का शत्रु का छल प्रकट करना  
९ एक ही समय में हाडाओं के राजा (उम्मेदसिंह) और गंगाधर के साथ  
मारवाड़ की सेना के डेरों में और जयपुर के आगे आना, हाडा के तो घोड़ा  
जजर होता और गंगाधर का पुर का कँवाड़ों को तोड़ना १० नगर के लोगों

श्रवण ४ जट्मूर्धमल्लाऽनूनेश्वरीसिंहाऽरात्यनीकाऽभिमुखनिस्सर  
गांचतुर्विंशो २४ मयूख : ॥ २४ ॥ आदितः ॥ ३०५ ॥

॥ शुद्धजदेशीयाप्राकृतभाषा ॥

॥ मनोहरम् ॥

बावन५२ बरनतैं सरस्वतीको सरवस्व,  
बेदिजाको बस्त्रज्यौं दुसासनके करतैं ॥  
छंद छप्पईतैं ज्यौं प्रपंचित प्रसर पुंज,  
बीज बसुधातैं बेरें बुंदैं बारिधरतैं ॥  
बारिधितैं बीचि मारतंडतैं मरीचि मित ॥  
तरल तरंगा स्रोत गंगा गिरिबस्तैं,  
गौतमतैं न्याय राजराजतैं ज्यौं रांय अंसैं.  
कूरम कटक कढ्यो जैपुर नगरतैं ॥ १ ॥  
आवतही पंडित प्रधान तंतै गंगाधर,  
फोरेसे चखाय लोह मुरयो तजि खेतुहैं ॥  
लागो पीठि कूरम बिनाश्रम विजय जानि,

का मुडन करना, उनका रोना और पकड़ना सुनकर जाट सूर्यसल्ल के साथ ईश्वरीसिंह का शत्रु सेना के सम्मुख निकलने का चौबीसवां २४ मयूख हुआ और आदि से तीनसौ पांच १०५ मयूख हुए ॥

अब आगे छोटी वस्तु से बड़ी वस्तु के निकलने की उपमा देते हैं कि बावन बगों (अक्षरों) से सरस्वती का सर्वस्व (संसार भर की सम्पूर्ण विद्या निकला जैसे और दुश्शासन के हाथ से १ व्रौपदी का वस्त्र निकला जैसे और छप्पय छंद से २ रथाहुआ प्रस्तार का लखूह निकला जैसे "छप्पय छंद का प्रस्तार बहुत बड़ा होता है" ४ पृथ्वी से सम्पूर्ण वस्तु का बीज निकला जैसे मेघ से ५ शरीर और जलकण निकले "जैसे मेघ से अच्छी मैड़क आदि असंख्य जीवों की वृष्टि होती है" समुद्र से ६ लहरें निकलें जैसे और सूर्य से ७ किरणें निकलें जैसे, हिमालय पर्वत से ८ चपल तरंगवाली गंगा की धारा निकली जैसे, गौतम मुनि से न्याय (न्यायशास्त्र) और जैसे, ९ कुबेर से १० धन निकला तैसे जयपुर नगर से कछवाहे ईश्वरीसिंह की सेना निकली ॥ १ ॥ बिना ही अश्रम विजय मिलना जानकर ११ कछवाहा ईश्वरीसिंह पीठ लगा

\* जट्टन समेतु सज्ज संगर सचेतुहैं ॥  
 बिड़िस बपाके लोभ लीन महामीन जैसे,  
 डोरि अँचिबेतैं नीर तीर आनि लेतुहैं ॥  
 जैपुरनरेस आनि डारयो यों मलारपैं ज्यों,  
 डाकिनिके डेरा डारको डारि देतुहैं ॥ २ ॥  
 आवत सुनत डुंढाहरको कटक इत,  
 अँपर अनीक हिय पंकज खिलतुहैं ॥  
 बुंदीपति १ माधव २ मलार ३ असवार होत,  
 सिसकतु सेस अंग कच्छप मिलतुहैं ॥  
 सिधू राग लागैं खँचि खागैं अनुरागैं आनि,  
 हाडे तानि बागैं बढि आगैंको मिलतुहैं ॥  
 नयन गुलाबी आबी छत्रननैं छाये भूमि,  
 एडिनकी दाबी नाँ अँगूठन मिलतुहैं ॥ ३ ॥  
 बान नभ अट्ट भू १८०५ समान सका विक्रमके,  
 भद्रव चउत्थी ४ स्याम भालन मिलनको ॥  
 नैर बगरूके खेत पंचों ५ सेन सज्ज करि,  
 मंडयो मंगरूर इंकि सम्मुह मिलनको ॥  
 आसिक अर्नाके बाँद अच्छरि बनीके फन,  
 फोरत फनीके धार धारन किलनको ॥  
 हाडा छत्रधार १ और माधव २ मलार ३ लागे ॥

\* जाटों सहित युद्ध पर सचेत होकर सजा सो १ कटि (कटिये) में लगाई हुई  
 चरबी के लोभ से लगनेवाला १ बड़ा मच्छ खँचने से जैसे जल के किनारे  
 आजाता है तैसे गंगाधर रूपी कटिये ने जयपुर के राजा को मलारके पास  
 ऐसे ला डाला जैसे डाकिनी के डेरे पर बचे को ला डाल देते हैं ॥ २ ॥ १ शत्रु  
 की सेना के २ प्रीति करके गुलाब से (लाल) नेत्रों की इशोभा ४ छाई हुई ५  
 जिस भूमि को एडी से दबाई वह अँगूठे को नहीं मिलती अर्थात् पीछे पसल  
 ही लगते ॥ ३ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ घमंड ८ ओपनाग के ९ छत्र धारण करनेवाला

राहुव्हेकै कूरम कैलानिधि गिलनकों ॥ ४ ॥

चढत चसूकै चोकि चंडी चहकाय गन,  
गिद्धि गहकाय खरे खेत्रपाल खिल्लैपैं ॥

तँरल तुखार सार पक्खर अपार नाद,  
प्रचुर प्रसार जो न अंतकार भिल्लैपैं ॥

घुमंडि घटाले हड्ड हलकरवाले बीर,  
क्काले भुज भाले चाले दीठि मन मिर्छैपैं ॥

कूदत कँलावा नागपेच लपटावा देत,  
कूरमपैं कावा देत दावा देत दिर्छैपैं ॥ ५ ॥

प्रथम मिलाप रचि तोपनको ताप,  
कपिलेसँ कँसो साप बाप कालको विधारयो त्यों ॥

करकि कराल सोरभाल विकराल फैलि,  
फौलन बिसाल ज्वालमाल जग जारयो त्यों ॥

गोलनके गोम पीलुँ मत्ते पोन पैत्ते करि,  
तीनों३ भौन तत्ते करि प्रलय प्रसारयो त्यों ॥

नालिनको नाद यों निहारयो बगरूके जंग,  
मंदैरको मारयो ज्यों पयोनिधि पुकारयो त्यों ॥ ६ ॥

॥ छनाल्लरी ॥

परत पत्तीते घोर जौम जुगर वाते छूटि,  
फैरनपैं फेर नर हैवैर सरत जात ॥

सिलगत सौर और और जातवेदें जोरि,

(राजा) १ कहवाहें रुपी चन्द्रमा को ॥ ४ ॥ २ फूलकर (प्रसन्न होकर) ३ चपल घोड़े ४ तरवार ५ हाथियों के कंधों पर हो हाँ कर कूदने हैं ६ गोक कुंवा ॥ ५ ॥ ७ कपिलदेव के आप के समान ८ काल का भी पिता "अधि-कता मताने में बाप को घताने की लोकोक्ति है" ९ भयंकर १० जंबी छलांगों से ११ मृत्यु हाथियों को पवन के १२ पत्तों के समान करके १३ तीनों का शब्द १४ मंद-राजों का मारा हुआ १५ महुड ॥ ६ ॥ १६ दो प्रहर १७ घोड़े १८ आग्नि के

जिलह जैलूसी जंबूदीपकी जरत जात ॥  
 जंग बगरूके घोस कोसन पहुमि रुंधि,  
 धूम धीरनीकी धुंधि धूसर परत जात ॥  
 सँक्खी करि सूर जँसमक्खी तोप लँक्खी गज,  
 मक्खीपर लैलै काल चक्खीसी करतजात ॥७॥  
 मान नँव गोले घमसानन उडानन लै,  
 धानन किंसानन त्यों प्रानन लुनत जात ॥  
 दाहन दुसह अवगाहन विजय वेद,  
 चंड कछवाहन सिपाहन चुनत जात ॥  
 दगि दगि दौव ताव अतुल अँलाव लागि,  
 भगि इकतौर झार भारसी भुनत जात ॥  
 तौकै तिन तोपन अवाजन सुनत त्योंही,  
 तोपनके ताकेहूँ अवाजन सुनत जात ॥ ८ ॥  
 प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

रची बगरू इम तोपन रारि, अगे अँय गोलेक पावक झारि ॥  
 भये कैचमाल मई सब भोन, गिरें बहु बौरन गोलन गोन ॥ ९ ॥  
 उडै बर हैवैर त्यों असवार, बहै जम मग्ग कि नैर बजार ॥

यल से १ गोला २ गोला की सामग्री (सजावट) ३ शब्द ४ सुरज को  
 लाची करके ५ समस्त (संयुक्त) ६ लाखों रुपयों के हाथियों को अथवा का-  
 ले हाथियों को "तोप, बंदूक का निशाना काले रंग का ही करते हैं" ॥ ७ ॥  
 ७ नवीन युद्ध में १००० से लोक धान को काटे जैसे १० प्राणों को काटती है ११  
 शीघ्रता से विजय का धाड़ लेती हुई १२ अग्नि १३ तुलना रहित अग्नि का समूह  
 १४ निरन्तर १५ उन तोपों को देखते हैं जो १६ उन तोपों को ताक (सिस्त) में आये  
 हुआ की आवाज (शब्द) मात्र ही सुनते हैं कि वह भी थे ॥ १७ लोहे के गोले  
 १८ लक्ष भर कचनार मय (लाल) होगये (कचनार का रंग लाल होता है अथवा  
 मरनेवाले मनुष्यों की अधिकता से सब भूमि केशों की मालामाल होगई) गोलों  
 के चलने से बहुत १९ हाथी गिरते हैं ॥ ६ ॥ इसी प्रकार अष्ट १० घोड़े और घोड़ों

उडै दगि तोर झल्लाझल अर्ध, गिरै सुनि गज्जत गैबिभिनि गैबभ १०  
 हलौ भुव पन्नग सीस हजार, मचै किंरि तुंड मचकन मार ॥  
 नचै जिम मारुत बारिधि नाव, भयो इम छोनिध तंडव भाव ॥ ११ ॥  
 भये जड़ जोगिय छुट्टि समाधि, बढयो सब ओर प्रजागर व्याधि ॥  
 भन्यो विधि लोक बनाने भार, करी हरिसों हुंत जाय पुकार १२  
 लगै भय गोलाक मंडत लोप, उडै ध्वजदंड मयूरन ओप ॥  
 धरत्थर भूजिम पोमि'नि नीर, सैरै जिम घीखम तप्त सैमीर ॥ १३ ॥  
 उडै हय अर्ध भूमै गति चक्र, मनो इन्द्र पच्छन कट्टिय सैक ॥  
 रचै बहु खेल मलंगत रुंड, बनै चतुरी परि मुंडन मुंड ॥ १४ ॥  
 छिक्कै गज मत्त चिक्कारिन मारि, दैरा गिरि सन्निभ होत दरारि ॥  
 उडै बहु मूर गरूर अधाय, बिना भ्रम हूरन लुंबत जाय ॥ १५ ॥  
 कडै जित गोलैक बेग बिथार, बनै तित आयतै पंथ बजार ॥

के सवार उडते हैं, जम का मार्ग बढ़ता है सो मानों नगर का पजार बहुत  
 है, मारुत झल्लाझल करके ? आकाश में उडता है सो गर्जना सुनकर २ ग-  
 विभक्तियों के १ गर्भ गिरते हैं ॥ १० ॥ शेष के मस्तक के हजारों पर भूमि हिलती  
 है और ४ बाराह की तुंडा पर मचकों की मार लगती है, जिस प्रकार ५  
 पवन से ६ सलुद्र में नाव नचै तिस प्रकार ७ भूमि के नचने का भाव हुआ  
 ॥ ११ ॥ समाधि छूटकर योगी खूब होगये (ज्ञान शक्ति नहीं रही) चारों ओर  
 ८ जागरण का रोग बधा "चित्त के कारण निद्रा नहीं आवै उसका नाम  
 प्रजागर है" ब्रह्मा ने ९ लोक बनाने का भार कहा और १० शीघ्र जाकर  
 विष्णु से पुकार करी ॥ १२ ॥ ११ लोहे के गोले लगकर नाश करते हैं और  
 मयूरों की शोभा से ध्वजा दंड उडते हैं, जैसे पानी में १२ पक्षिनी (कुमुदिनी)  
 धूँजे तैसे भूमि धूँजती है और श्रीराम में १३ चलै ऐसा १४ गरम पवन चलता  
 है ॥ १३ ॥ घोड़े उडकर १५ आकाश में गोलाकार फिरते हैं सो मानों १६  
 इन्द्र ने इनकी पांखें काटवाली हैं "इन्द्र ने घोड़ों की पांखें काटीं सो कथा  
 पुराणों में सविस्तर है" रुंड कूद कर कई खेल करते हैं और मस्तक पर मस्तक  
 पड़कर १७ चतुरीयें (चूतरीयें) बनती हैं ॥ १४ ॥ मस्त हाथी १८ सीस मार मार  
 कर छिदते हैं और १९ पर्वत की गुफा के २० सदृश दरारें होती हैं, अपार घमंड  
 वाले बहुत धीर उडते हैं और बिना ही परिश्रम अप्सराओं के जा लूमते हैं  
 ॥ १५ ॥ २ गोले जिधर वेग फैलाकर निकलते हैं उधर ही २२ घोड़े लंबे बजार बन-

गहँ भुव तोप चरखन \*चक्र, लगँ कढि गोलक देत ललक ॥ १६ ॥  
 जगँ कति पुंज पताकन ज्वाल, भगँ जिम माकत होरिय भाल ॥  
 मचपो बगरूपुर उलमुक मेह, गिरँ बहु सोध अटालक गेहा ॥ १७ ॥  
 इसँ नचि थेइन \*पन्नगहार, डरावत डाकिनि लेत डकार ॥  
 अनतँहिँ नागिनियोँ उचरंत, कहो किम सेक घमंकत कंत ॥ १८ ॥  
 नही परिरंभन स्पृष्टक आदि८, नही उपगूहन ओर अनादि ॥  
 ललाटक आदिक चुंबन८ नाँहिँ, नवीन बनँ रसना रन नाँहिँ ॥ १९ ॥  
 ॥ बननाँहिँ १ रननाँहिँ २ अन्त्यानुप्रासः ॥

नकखँहिँ लै८ नख अप्पत नाह, उठँ नहिँ क्यों रति केलि उछाह  
 न गढक आदि८ बनँ रदनोदँ, ननँ किम नाथ घनी तिय मोदा ॥ २० ॥  
 नवँहँ परिरंभन आदिहिँ च्यादि४, नक्यों तब दुख लहँ दम नारि  
 कही यह नागिनि सेसहिँ कथ, नयो तब नागँ दिया भरि बत्थ ॥ २१ ॥  
 इतँ भुव खुंदियको अधिराज १, उतँ दृढ जैपुर भूपति १ आज ॥  
 लरँ दुव २ सज्ज चमू रचि लाम, धुजँ इहिँ कारन अप्पन धाम २२  
 सुन्योँ इमनागिनि संगर सोह, रही चुप रुक्मिय मोहँन गोर ॥

कहँ रसना जिम दोय हजार २०००, परँ तिम नागिनिकोँ दुख प्यार  
 जाते हैं, तोपों के चरखों के \*पहिये मृमि में गडते हैं और ललकार करते हुए  
 गोले निकलते हैं ॥ १६ ॥ कितने ही ध्वजाओं के समूह जलते हैं सो मानों  
 पवन से होली की भाँति जगती है, बगरूपुर में १ खंगीरों (निधूम अग्नि)  
 की वर्षा हुई जिससे बहुत महल ॥ छतें और घर गिरे ॥ १७ ॥ \* शिष  
 नाचते हैं १ शेषनाग से सर्पिणियाँ कहती हैं ॥ १८ ॥ २ आलिंगन ३ वात्स्या-  
 यन कृत काम सूत्र में स्पृष्टक आदि आठ प्रकार के आलिंगन लिखे हैं जिस  
 का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोड़ दिया है ४ चुंबन भी वही पर  
 आठ प्रकार के लिखे हैं ५ कटिमेखला का बजना अथवा लहँग का नाड़ा खोलने  
 का युक्त ॥ १९ ॥ ६ नखचत भी काम शास्त्र में आठ प्रकार का लिखा है सो हे  
 पति काख में लेकर नखचत क्यों नहीं देते ७ चहीं पर गूँहक आदि आठ प्रकार  
 के दन्त चत हैं ८ हे पति आपकी बहुत जियें मोद कैसे मानें ॥ २० ॥ ९ भुजाँ  
 में भीड़ना ये परिरंभ भी काम सूत्र में चार प्रकार के लिखे हैं १० शेषनाग ने  
 कहा ॥ २१ ॥ ११ पंक्ति रच कर ॥ २२ ॥ १२ मैथुन का भय (अन्यसंभोगिता  
 का दुःख) मिटा अथवा मूर्छा का भय मिटा १३ प्यार के कारण ॥ २६ ॥



बराहहिं \*सूकरिका इत छुल्लि डिगै किम दंतुलि टारत डुल्लि ॥  
कह्यो तब तुंड टिकै नहिं कोल, बघ्यो सुहि कुम्भ दुली प्रति बोला ॥  
भये अधलोकहु यौं शर भीत, बनै ब्रह्मंड मनौ विपरीत ॥  
अरे इम द्वैर दल खगगन खेरि, लयो मरहट्टन कूरम घेरि ॥ २५ ॥

॥ षट्पात ॥

दगत छई दुहुँ और तोप पट मदन बितानन ॥  
आतप हुव तपि अकै चक हुव स्वेदित आनन ॥  
इहिं अंतर आसार मुदिर उज्जालि अति मंडिय ॥  
बाहि सुख सीतल बात खेद आतप भव खंडिय ॥  
दुव २ घटिय होय दाता जलद गाढ कृपनपन पुनि गहिय ॥  
पहुं राम तदिन बगरू पहुमि बाहि रुदिर सम्मलि बहिय ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

मरहट्टे रुकत मुदिर, जुरे बहुरि जुंझार ॥  
इक ऊँचे थल पर चढे, माधव ३ हट्ट २ मलार ३ ॥ २७ ॥  
तोप तहाँ सन त्रिगुन खंड ६।१८, माधवकी चलवाय ॥  
कूरमपतिके गज निकट, गोले लागिय जाय ॥ २८ ॥  
गो इतनै रवि चरमगिरि, सौर्य समय विधाय ॥  
भीमनिसौ आगम भयो, दिस दिस तिमिर दिखाय ॥ २९ ॥

बराह की स्त्री कमठने भी उसकी स्त्री (कमठी) से वही वचन कहा ॥ २४ ॥  
शर से ॥ २५ ॥ मोम के श्वलों के तने हुए डेरों में स्मृत तपकर राम (गरमी)  
हुई जिससे सेना के मुख पर पसीना हो गया इसी बीच में मेघ ने उभल कर  
६ बहुत मेघ धारा बरलाई जिस में शीतल पवन चलकर उताप से उत्पन्न हुए  
इसको मिटाया उस मेघ ने दो घड़ी तक दानीपन करके फिर कृपणता  
करी (बध हो गया) ६ हे प्रभु रामसिंह उस दिन बगरू की पहुमि में पानी  
और १० रुधिर सामिल ही रहा ॥ २३ ॥ ११ मेघ के रुकते ही ॥ २७ ॥ १२  
बराह (है) को तीन से गुना करने से (होते हैं) ॥ २७ ॥ २८ ॥ १३ सूर्य अस्त  
थल पर गया १४ संध्या समय १५ करके १६ अयंकर रात्रि का ॥ २६ ॥



फिर नकीब तब दुवरे दलन, अक्खिय रोकहु जंग ॥  
 मन सूरन सो सुनि मुरे, आयासित लाखि अंग ॥ ३० ॥  
 बुद्धि तिमिर करि सबन नहि, लखो डेरन राह ॥  
 लरत हुते तैयहि रहे, तजि तजि तुरंग सिपाह ॥ ३१ ॥  
 तीन३ तीन३ दिनको असन, रक्खयो कतिन लगाय ॥  
 तिहिं करि भूखे तृप्त हुव, सूर१ सपति२ समुदाय ॥ ३२ ॥  
 चगडोरि बाजीनकी, गहि गहि करन कराल ॥  
 सज्जहि रहि बैठे सबन, कट्यो जामिनि काल ॥ ३३ ॥  
 माधवहु इक ग्राममें, रहि कर्षुक गृह रति ॥  
 बदलि नाम तापैं बचे, बितई निंद बिपति ॥ ३४ ॥  
 कवच१सेभ१उपधान२कर२, पहुमि३पृथुल३ पल्लयंक३ ॥  
 सुतो तैं जयसिंह सुवै, असि४ काँमिनि४धरि अंक ॥ ३५ ॥  
 सोवन१ न्हावन१ असन१की, कहाँ केगिाँका तीन३ ॥  
 बुंदीसहु इक खेत बिच, खिनदा कीनी खीन ॥ ३६ ॥  
 हुलकरके पहुँची हठन, इक१रावटी आनि ॥  
 बित्ती कठिन बिभावरी, चटकन हुव चहकानि ॥ ३७ ॥  
 नित्य नियम मंड्यो नृपति, उठि सबन सन अंग ॥  
 एते बिच पिकख्यो अडर, माधव आवत मग ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक गुन नभ धृति१८०३समय मित्र माधव खंडुव हुव ॥

बदली दोउन पगध धरि सु रक्खी डब्बन धुवै ॥

१ परिश्रम सहित ॥ ३० ॥ २ वर्षा के अंधेरे से ३ तहां ही ४ घोड़ों से चतर कर  
 ॥ ३१ ॥ ५ भोजन ६ कितने ही लोगों ने ७ घोड़ों के समूह ॥ ३२ ॥ = हाथों में  
 ९ रात्रि का समय ॥ ३३ ॥ १० करसे के घर में रात बिताई ॥ ३४ ॥ ११ हाथ  
 है सो ही तकिया हुआ १२ भूमि ही बड़ा पलंग (सेभ) १३ सुत १४ खड्ग रूपी स्त्री  
 को अंक में लेकर ॥ ३५ ॥ १५ डेरा (तंबू) १६ रात्रि बिताई ॥ ३६ ॥ १७  
 ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ १८ निश्चय

इहिँदिन वह उग्लीस कुँम्म आयउ धारन करि ॥  
जपि नृप हिँतु जुहार इक तरु तर गय उत्तरि ॥  
द्विज दयाराम पठयो नृपति पुच्छन कछु कछवाह पँह ॥  
तिहिँ जाय लखिय जयसिंह सुव चव्वत दहँ मउठ तँह ॥ ३९ ॥  
॥ दोहा ॥

असोहू आवत समय, घोर मचत घमसान ॥  
भूपति हू निज भूखँकोँ, देत मोठ वलिदान ॥ ४० ॥  
इतहु दहू नृप नित्य करि, वैश्वदेव करवाय ॥  
जथालाँभ लै अन्न अरु, सज्ज्यो कवच सुभाय ॥ ४१ ॥  
इहिँ अंतर जैपुर अधिप, चढयो चमूजुत चंड ॥  
अभ्रमुपति पर इंद्र सम, बैठो सजि बेतंड ॥ ४२ ॥  
इत उमेद १ माधव २ अरहि, हय चढि सम्मलि होय ॥  
हुलकर ढिग आये हुलसि, दलहिँ प्रचारत दोय ॥ ४३ ॥  
नृप मलार हरवल्ल व्है, जयपुर सम्मुह जंग ॥  
कुँत भ्रमात असव्य कर, फेरत तरल तुरंग ॥ ४४ ॥  
परे पलीते तोप परि, अतुल दगी अरराय ॥  
बाँसव केँधौ वज्र लै, घल्लै अदिन घाय ॥ ४५ ॥

॥षट्पात् ॥

तोपन लगगत अग्नि व्यालै शिडक वररक्षिय ॥  
दररक्षिय किरि<sup>१</sup> दहू कमठ खुप्परि कररक्षिय ॥  
पुतनाँ विचकरि पंथ कलत गोले सक सक करि ॥  
मनहुँ संघ मीयूर धसत कानैँन केँकाधरि ॥

१ पगड़ी २ माधवसिंह ३ उमेदसिंह ४ से जुहार करके ५ सुने हुए  
मोठ आबता था ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ जैसा मिटा तैसा ॥ ४१ ॥ ६ ऐरा-  
वत पर इंद्र बैठे तैसे ७ हाथी पर बैठा ॥ ४२ ॥ ८ क्षीघ्र ही ९ सेना को ॥ ४३ ॥  
१० भाला ११ दाहिने हाथ में ॥ ४४ ॥ १२ मानों १३ इंद्र ने वज्र लेकर पर्वतों पर १४  
घोट लगाई ॥ ४५ ॥ १५ शेषनाग की पीठ १६ यराह की दाढ़ १७ सेना में १८ मयूरों  
का समूह १९ वन में २० कौता नामक बाघी को धारण करके

मल्लार पिठि कोटा चमुप हो मोहनसिंहोत भट ॥  
 वह जोध नागदहपुर अधिप गोला लागि गय बिहित बट ॥४६॥  
 ऐसे कठिन अनेह कहिय माधव मल्लार कहँ ॥  
 हम किहिंठोर रहै सु त्वरित सुनि दिय उत्तर तैं ॥  
 देखहु वह बुंदीस वीर किहिं ठोर बिहारत ॥  
 ललित सेभ नहिं लाल इहौ निकसत असु आरत ॥  
 मेरोहि कहै रहनौ जु मत आनि रहहु तो मम उँदर ॥  
 सुनि यह सिटाय माधव सलज हुव प्रदोष पंकज कहँ ॥४७॥

॥ दोहा ॥

इत तंते गंगाधर सु, दूजीर अनिय बनाय ॥  
 पैलीघाँ सन उडि परिय, जैपुर दल बिच जाय ॥ ४८ ॥

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर हय गरक करे कूरम दल अंतर ॥  
 रिठिन वज्जिग रिठ भीमं गज्जिग रज्जिग भर ॥  
 फटत टोप चो४फार कटत करिकी तरबूजन ॥  
 खरँ खुरतारन खुदत धरनि धारनँ लागि धूजन ॥  
 भयकार मुंड मुंडन भिरत रुंड फिरत बन बँहि रुख ॥  
 आमरी दसा भीरुन भई सिद्धा सूरन समर सुख ॥ ४९ ॥  
 तंतेकी तरवारि बिखम जैपुर दल बग्गी ॥

१ चर्चित मार्ग (स्वर्ग) को गया ॥ ४६ ॥ २ समय में ३ सुंदर४पीड़ित होकर प्रायः निकलते हैं ५ मेरे पेट में ७ सन्ध्या समय के जुलम से ८ कमल होवें तैसे ॥ ४७ ॥ ८ परली तरफ से ॥ ४८ ॥ ९ निरन्तर प्रहारों पर प्रहार १० भयकर गजर्ना करके वीर ११ शोभायमान या रजो शुभ युक्त हुए १२ तीली से खुद कर १३ घोड़ों की दौड़ से भूमि धूजने लगी १४ वन में अग्नि फिरे तिस प्रकार रुंड फिरते हैं १५ ज्योतिष में आमरी दशा दुखदाई मनी जाती है सो कायों की हुई और १६ सिद्धा दशा सुखदाई मानते हैं सो युद्ध में वीरों को

तड़िते जानि अति तेज मुदिर भद्व भगमग्गी ॥  
 घेरयो रवि घमसान तुमुल दुव २ पहर कहिर तप ॥  
 नैक डिगन नन दिपउ ईश्वरीसिंह अनेकप ॥  
 कूरमन तबहि यह छल करिय दल नकीब मुकलि हुँति  
 भंडे रुपाय दीरघ दपे करहु सुकाम सुकाम कहि ॥ ५० ॥  
 तहि १ कहि २ अन्त्यानुपासः ॥

॥ दोहा ॥

यह लखि हुलकर कटक अब, जानी कुम्भ न जाय ॥  
 सउचादिक बपु कर्म सब, भट सु निबेरहु भाँय ॥ ५१ ॥  
 तब तनाय इक १ रावटी, तजि कटिबंध मलार ॥  
 नित्य नियम बपु कर्म निज, बिरचन लागि तिहिं बार ॥ ५२ ॥  
 पौराणिक द्विज बुल्लि पुनि, इंद्रदत्त अभिधान ॥  
 व्यासासन बैठारि तिहिं, सुनत भागवत गान ॥ ५३ ॥  
 अपर भटन उतरन समय, अकिखय दूतन आय ॥  
 उतरयो नहिं कूरम अधिप, जानै हम भजिजाय ॥ ५४ ॥  
 हुलकर तब सुभटन कहिय, उतरहु कोउ न अज्ज ॥  
 कूरम हम जान्यो किंतव, लेस न बुल्लत लज्ज ॥ ५५ ॥  
 तंतेको मुकलि तबहि, रोक्यो जैपुर राह ॥  
 इतनै दुंदुभि वज्जि और, कठि चल्लिय कछवाह ॥ ५६ ॥  
 सुनत एह हुलकर सु पहु, हुतहि उघारे देह ॥  
 तुरग चढ्यो पँटगेह तजि, मंडत आयुध मेह ॥ ५७ ॥

सुखदाता हुई ॥ ४६ ॥ १ बिजुली २ भादवा के मेघ में ३ जुलम वा क्रोध  
 से तप कर के ४ ईश्वरीसिंह की सवारी के हाथी को ५ शीघ्र ॥ ५० ॥ ६  
 शरीर के कार्य ७ रीति पूर्वक ॥ ५१ ॥ ८ कमरबन्धा खोलकर ॥ ५२ ॥ ९  
 पुराण बाँधने वाले इंद्रदत्त १० नाम के ज्ञानेश को बुलाकर ॥ ५३ ॥ ११ अन्य  
 वीरों के ॥ ५४ ॥ १२ छली ॥ ५५ ॥ १३ शीघ्र ॥ ५६ ॥ १४ डेरा छोड़कर ॥ ५७ ॥

॥ नराचः ॥

चढ्यो मलार लौ तुखार नोहजार ९००० नच्यते ॥  
 धंपे प्रवीर तानि तीर जंग धीर जच्यते ॥  
 बजे निसान खान जे दिसा दिसान बित्थरे ॥  
 चमंकि पारि चिकरी डिगे रु दिक्करी डरे ॥ ५८ ॥  
 हजार पंच ५००० सेन देस क्लेश काज मुक्कली ॥  
 रुमापुंरी समीपलौं गये ति लूटते बली ॥  
 हजार अंक ९००० है लिये मलार उप्पस्यो इतैं ॥  
 जितैं जितैं चलात खात खगगैं तितैं तितैं ॥ ५९ ॥  
 बुलैं नकीब इक्कसै १०० हुलैं हरोल हक्कदै ॥  
 तुलैं तुरंग तक्खरे धरा धुजात धक्कदै ॥  
 उमेद १ माधवेस २ हू सजे दुखुह सत्थवहैं ॥  
 करिध्वजाभ कुंम्मपै पिले प्रचारि पत्थवहैं ॥ ६० ॥  
 करीनके कैलाप के कैलाप केतुके खुले ॥  
 चले सँमग खूब खगग सेन अगग संकुले ॥  
 खिचैं कमान बीच बान दंडितुंडें दंतवहैं ॥

नौ हजार नाचते हुए घोड़े लेकर मल्लार चढा और धैर्य के साथ युद्ध में जब  
 (ठहरे) हुए धीर दौड़े वहाँ नगरों के शब्द बजकर दिशा दिखाओं में फैल गये  
 जिससे ३ दिग्गज डरकर पीछे मार अपने स्थान से हट गये ॥ ५८ ॥ पाँच  
 हजार सेना हुंदाहुंदा देश में क्लेश फैलाने को भेजी गई जिसके धीर लूटते  
 हुए ४ सांभर पुर तक पहुँच गये और इधर मल्लार भी नौ हजार घोड़े लेकर  
 उठा सो जिधर जिधर चह गया उधर उधर तरवार से शत्रुओं को भक्षण ही  
 करता गया ॥ ५९ ॥ ललकार के साथ अगली सेना को वढाते हुए सौ नकी-  
 ब बोले और ७ ताते (चपल) घोड़ों को उठाकर भूमि को धक्के देकर धुजाने  
 लगे जहाँ उम्मेदसिंह और माधवसिंह भी = काठेनाई से तर्कना में आवे  
 इस प्रकार सज कर मल्लार की साथ हुए सो मानों १० ईश्वरीसिंह रुपी १  
 कर्ण पर ११ अर्जुन के समान ललकारते हुए वहे ॥ ६० ॥ १२ कितने ही हाथियों  
 के समूह पर १३ ध्वजाओं के समूह खुले १४ सभी खूब खूब चले और सेना  
 के अग्रभाग में भर गये जहाँ १५ यमराज के मुख के दंत होकर कमानों के

करै कटार केक पार \*देवदार कंतवहै ॥ ६१ ॥  
 भरै तुरंग फेट भंग पंचप रंग भंडके ॥  
 खिरै खलीन खगग खीन दुंदुभीन खंडके ॥  
 कटै कपाल भिन्न भाल अखि लाल उछटै ॥  
 बटै बिसाल घोव गाल जेनु जाल त्यों फटै ॥ ६२ ॥  
 कुकै हुकै फुकै कलेज कुम्म के रुकै लुकै ॥  
 सुकै करीन दान तान गान अच्छरी चुकै ॥  
 छिकै चिकै किरीट केक ओट घोटकी टिकै ॥  
 थकै जकै हकै कितेक बाढ बन्हिकै सिकै ॥ ६३ ॥  
 जगै प्रकोप अक ओप केक तोप त्यों दगै ॥  
 भगै बिसाल सोर भाल दीपमालसी लगै ॥  
 जचै सु मल्ल जंग के तुरंग तापमें तचै ॥  
 रचै बकारि रारि के डकारि डाकिनी नचै ॥ ६४ ॥  
 गजै गरूर पूर मूर कूर नूर के तजै ॥

बीच में घाण खिचते हैं और कितने ही बीर \*अप्सराओं के पति होकर  
 कटार पार करते हैं ॥ ६१ ॥ जयपुर के कई पचरंगे डंडे घोड़ों की फेट से तूट  
 कर गिरते हैं और खड्गों से कटकर कई छगामों और कई नगरों के दुकड़े  
 गिरते हैं, कपाल कटते और ललाट से भिन्न होकर लाल नेत्र उछलते हैं और  
 लंबी गर्दनो के दुकड़े होते हैं और इसी प्रकार गाल और १ हंसुली की हड्डी-  
 यें कटती हैं ॥ ६२ ॥ २ कई कछवाहे कूकते कई हूकते कई कलेजों को फूंकते  
 और कई छुपते हैं इस जगह ३ हाथियों के दान सुख कर अप्सरायें गाने में  
 तान चुकती हैं कई सुकुट छिद कर मस्तक से डिगते हैं और ४ घोड़ों की  
 आड़ में टिकते हैं कितने ही धककर गिरते हैं और कई आगे बढ़कर ५ तरवार  
 की भार रूपी अग्नि में सिकते हैं ॥ ६३ ॥ ६ सूर्य की छपमा के समान बीर  
 लोग कोप में जलते हैं त्योंही तोपें चलती हैं तहां बारूद की बड़ी ज्वाला  
 प्रज्वलित होती है सो दीपमाला के समान दीखती है कई मल्ल युद्ध की  
 याचना करते हैं सो घोड़ों की ताप में ७ जलते हैं अर्थात् पैदल होकर मल्ल  
 युद्ध करते समय घोड़ों की टाप से मारे जाते हैं अथवा ताप में घोड़े जलते हैं  
 कई धीर ललकार कर युद्ध करते हैं और डाकिनियां डकार लेकर नाचती

सजै रजै भजै न नीरके अनौरके भजै ॥  
 तनै प्रहार लुत्थि लार मार मार के भनै ॥  
 घनै घुमाय घोर घाय बाधमत्तसे बनै ॥ ६५ ॥  
 थपै प्रपान प्रान केक ज्ञान कानपै जपै ॥  
 बिसार ज्यौ अपार बेग धार सम्मुहै धपै ॥  
 छवै छलंगि छोनि है दुसार संगि गै दवै ॥  
 फवै अगोट चंड चोट ढाल ओट के डवै ॥ ६६ ॥  
 सनंकि चौंकि चिलहनी भनंकि गिद्धनी भूमै ॥  
 खंमैं घटाग खाग भोगैभाग नागके नमै ॥  
 करै अनेक दाव केक पाव अगही परै ॥  
 भरै प्रमून भूरि भीर वीर अच्छरी वरै ॥ ६७ ॥  
 मिलै अभीत जंपि जीत पीलु वीत दै पिलै ॥  
 खिलै सपान खेचरी भयान मूचरी मिलै ॥

हैं ॥ ६४ ॥ कई वीर पूर्ण घमंड से गर्जना करते हैं तहां कायर लोग नूर  
 छोड़ते हैं कई वीर सजेहुए १ शोभित होते हैं और २ पराक्रम वाले नहीं  
 भगते किंतु पराक्रम हीन भगते हैं प्रहारों को ३ फैलाकर लोथों के साथ  
 कई सुंड मार मार करते हैं [यहां लोथ के साथ सुंड का ऊपर से अध्याहार  
 होता है] बहुतेरे घोर घावों से घूमकर ४ पायड़े (बादी में आनेवाले, पवन  
 लगकर शीत में आनेवाले) के समान बकते हैं ॥ ६५ ॥ कितने ही प्राणों का  
 प्रयाण होते समय उनके ५ कानों में गीता शास्त्रोक्त ज्ञान सुनाते हैं इसी  
 प्रकार तरवारों के अपार वेग को झूलकर उन (तरवारों की ६ धाराओं के  
 सन्मुख ७ दौड़ते हैं, = घोड़े मलंग लगाकर भूमि को छाते हैं और चढ़ियों  
 से दोनों साजू फूट कर ९ हाथी दबते हैं, आगे की भयंकर चोट से शोभित  
 होकर कई ढालों की आड़ से ठहरते हैं ॥ ६६ ॥ चील्हे चौंक कर डडती हैं  
 और गिद्धनिये पंखों को बजा कर अमती हैं, घटा की अग्नि (विजुली) रूपी  
 तरवारें १० चमकती हैं और शेषनाग के ११ फूलों का भाग झुकता है, कई  
 वीर अनेक दाव करते हैं और उनके पैर आगे ही पड़ते हैं १२ फूलों की बहुत  
 भीड़ (बहुत फूल) बरसती है और अप्सराएं वीरों को बरती हैं ॥ ६७ ॥ कई वीर  
 विजय होना कहकर निर्भय होकर मिलते हैं तहां १३ हाथियों को १४ झूलकर

स्वसैं नसैं अनेक सूर केक हुल्लसैं हसैं ॥  
 घिसैं कितेक नाक केक नाक जायकैं बसैं ॥ ६८ ॥  
 थरत्थरी थिराहु पिक्खि तेगकी तरत्तरी ॥  
 वरब्बरी लगैं न जास फग्गकी चैरच्चरी ॥  
 छगच्छगी छछक डह कोल्लकी डगह्वगी ॥  
 भगज्भगी दवंगि दगि नाकलौं टंगटगी ॥ ६९ ॥  
 खरीखरी अर्घाय खाय के परे कैरी करी ॥  
 घरीघरी घुमाय जाय डाकिनी डरीडरी ॥  
 लजेलजे लुकैं लुभाय भीरु के भजे भजे ॥  
 सजेसजे सिपाह लेत मारदैं मजे मजे ॥ ७० ॥  
 बटेबटे पिसाच बुँक फिफरे फटे फटे ॥  
 कटेकटे गहैं कलेज नाँ गहैं नटेनटे ॥  
 सँचीसची भिरैं सम्हारि बाँहिनी बचीबची ॥  
 नचीनची फिरैं निहारि जुगिनी जचीजची ॥ ७१ ॥

घटाते हैं सोते हुआँ पर खेचरियाँ (देवा की मांस खानेवाली दासियाँ) प्रसन्न होती हैं और मृचरियाँ (देवी की दासियाँ विशेष) भयानक होकर मिलती हैं अनेक दूर सिसकते और मरते हैं और कई प्रसन्न होकर हंसते हैं कितने ही भूमि पर नासिका को घिसते और कितने ही १ स्वर्ग में जाकर बसते हैं ॥ ६८ ॥ तरवारों की तड़ातड़ को देखकर २ भूमि धुजने लगी जिस तड़ातड़ की बराबर फाग की ३ डंडेहर (गेहर) भी नहीं लगती रुधिर की पिचकारियाँ छिछकने लगीं और ४ पराह की दाढ़ हिलने लगी ५ दावाग्नि लग कर भगभगाहट करने लगी जिसको देखने को ६ स्वर्ग पर्यंत ७ टगटगी लग गई अर्थात् अनिर्घेय होकर देखने लगे ॥ ६९ ॥ योगिनियें खड़ी खड़ी गिरे हुए ९ बहुत हाथियों को खाकर = तृप्त होने लगीं घड़ी घड़ी में घूमकर मारे जाने के भय से डाकिनियें डरी डरी जाने लगीं कितने ही कायर जीने के लोभी होकर भगने लगे और कई लज्जित होकर छुपने लगे सजेहुए सिपाही मार देकर मजा लेने लगे ॥ ७० ॥ फटेहुए फेरों और १० बूकों (गुरदों) को पिशाच घांटने लगे और फटेहुए (बीरों के) कलेजों को लेने लगे किंतु देने में इनकार करनेवालों (कायरों) के कलेजे नहीं लेते १२ बची हुई सेना ११ इकट्ठी होकर



धकेधके लरात लोह छोड़मैं छकछके ॥  
 थकेथके गिरैं कुंथाल ढालतैं ढकेढके ॥  
 कढे कढे किरंत कलामैं बक्त्र के बढेबढे ॥  
 गढेगढे गढंत गिद्ध लुत्थिपैं चढेचढे ॥ ७२ ॥  
 मिचीमिची अनेक अंखि सोनमैं सिचीसिची ॥  
 मिचीमिची भुजा भ्रमंत अंतरी इचीइची ॥  
 कुपेकुपे जुरैं कितेक रंगमैं रुपेरुपे ॥  
 लुपेलुपे लखांत पाप धारतैं धुपेधुपे ॥ ७३ ॥  
 अनीअनी अरैं घटा किं घुम्मरी घनीघनी ॥  
 जनीजनी लुभात आत अच्छरी बनीबनी ॥  
 भईभई भनैं बिभिन्न कौ करैं दईदई ॥  
 नईनई रचंत शरि जोध जे जईजई ॥ ७४ ॥  
 मुरेमुरे मरैं कुमोति देखिबे दुरेदुरे ॥  
 बुरेबुरे बजंत बंब ढोलके दुरेदुरे ॥  
 हिलेमिले बैठैं कितेक खीजमैं खिलेखिले ॥  
 भिलेभिले भुक्क अनेक संगितैं सिलेसिले ॥ ७५ ॥

मन्थल कर भिड़ने लगी तहां याचना करती हुई योगिनियां नाचती हुई किर-  
 ने लगीं ॥ ७१ ॥ १ क्रोध में उफनेहुए वीर चढ़ चढ़ कर मरुत लड़ाने लगे और धके  
 हुए वीर ढालों से ढकेहुए २ बुरी तरह से गिरने लगे निकली हुई ३ तिलियां  
 और कटेहुए ४ मुख बिखरने लगे और लोथों पर चढेहुए गिद्ध गाढे गढने लगे ॥ ७२ ॥  
 सिचेहुए अनेक नेत्र ५ रुधिर में सिंचने लगे मिची हुई भुजाओं में भ्रमती हुई ६ आंठें  
 ७ निचने लगीं कई धीरे युद्ध में रुपकर कोप करके जुड़नेलगे तहां तरवारों की  
 धारोंओं से धुप कर पाप लुपेहुए देखनेलगे ॥ ७३ ॥ सेना की अणी से अणी  
 (अग्रभाग) अड़ती है सो सानों ८ घुमडी हुई घटाएं जोर से भिड़ती हैं प्रत्ये-  
 क अप्सरा ९ दुलहिन बन बन कर आती है सो विवाह की वार्ता हो चुकी ऐसा  
 कहती है और १० कड़े कटे हुए देव देव पुकारते हैं विजय पानेवाले वीर  
 नया नया युद्ध रचते हैं ॥ ७४ ॥ पीछे मुड़नेवाले कई ११ छुप छुप कर  
 देखने के लिये बुरी तरह से मरते हैं १२ लुडकतेहुए ढौल और नंगारे बुरे बुरे  
 बजते हैं कितने ही क्रोध में १३ फूले हुए वीर हिल मिल कर बढ़ते हैं और १४  
 बड़ियों से बिधे हुए कई धीरे ठहरते ठहरते झुकते हैं ॥ ७५ ॥ मन्थार रूपी

त्रैलोक्यसे फिरें मलार राहुके ग्रसेग्रसे ॥  
 लैसेलसें लखैं तमास धुंज्जटी हसेहसे ॥  
 कहेकहे जुरैं कितेक चंडिका चहेचहे ॥  
 बहेबहे फिरैं बप्पा सु गिद्धनी गहेगहे ॥ ७६ ॥  
 भटकि इक्क इक्कौ पटकि वज्रलौ परैं ॥  
 खटकि खगगं खुप्परी अटकि पंगघ उत्तरैं ॥  
 दरकि छति देखि यौ भरकि जैपुरे भजैं ॥  
 करकि संधि कंकटी बरकि बाढ के बजैं ॥ ७७ ॥  
 लचकि सेस संकुली भचकि भुम्भि बिखरैं ॥  
 मचकि पिठि कामठी गचकि पंकमें गिरैं ॥  
 सिलंगि सोरकी सिखा फुलिंग फैलते बमें ॥  
 मनोज्ञ मुंड मालिका रचैं रु कालिका रमें ॥ ७८ ॥  
 खिरंत दंत कर्त के करंत हंत दिग्गजी ॥  
 गिरंत शृंग मेरु की भरंत स्वास भाभजी ॥  
 कृपीट खीन के धुनीन कोपके कंसानुजै ॥

राहु के ग्रसेहुए कई पुरुष १ छरेहुए फिरते हैं. २ उल्लास युक्त होकर ३ शिव  
 हंसते हुए तमाशा देखते हैं चंडी के चांहे हुए ऊपर कहेहुए कई वीर जुड़ते  
 हैं गिद्धनियों से गहीहुई ४ मज्जा पड़ी पड़ी फिरती है ॥ ७६ ॥ एक दूसरे को  
 भटका देकर बज्र के समाने पड़ते हैं खोपरी पर पतरवार खटक कर उसके  
 अटकने से ५ पगड़ी चतरती है. इस प्रकार देखने से छाती फट कर जैपुरवाले  
 चमक कर भगते हैं ७ कंधे की संधि फड़क कर तरवार की धारा के बजने  
 से लूटती है ॥ ७७ ॥ शेषनाग के पीठ की ८ इड्डी लचक कर भयक लगने  
 से भूमि बिखरती है ९ कमठ की पीठ चमक कर १० कौचड़ में गिरती है.  
 बारूद की उवाला सिलंग कर फैलते हुए ११ अग्नि कणों को १२ उगलती है  
 १३ शिव के अर्थ सुंदर मुंडमाला रचकर काली झोड़ा करती है ॥ ७८ ॥ १४  
 पतियों के दंत खिरने से १५ दिशाओं की हथिनियां १६ खेद करती हैं स्वास  
 भर कर गिरते हुए वीरों ने मेरु पर्वत के शिखरों के गिरने की १७ क्रांति धारण  
 की अथवा सुमेरु के शिखर गिरने से उस सुमेरु की सभा (देवसभा) भगी  
 उस युद्ध में लगी हुई २० अग्नि के कोप से कई २१ नदियां २८ पानी से क्षीण

दुरघो बितान धुंधि भानु दीह सीतैभानुवहै ॥ ७९ ॥

रजोमई तमोमई भैटालि भीर भू भई ॥

बिमान जाल देवतान ताल रीभिकै दई ॥

धसैं छुरी दुसार बीर पार नीर धारसी ॥

स्वसैं उतंग के परे मतंगे भुल्लि सारसी ॥ ८० ॥

समुद्र सत्त७ लै हिलोर औरऔर उप्फनै ॥

भनै सिराह चंद्रभाल काल कल्पको बनै ॥

अनंत माँहिँ अंत लै उडंत चिल्ह चंगेवहै ॥

इनंत हत्थ अंग के अनंत मत्थ भंगवहै ॥ ८१ ॥

बितंडे बाँटिकान दंतै हस्तिदंत उप्परै ॥

किरे सु कुंभ कोहले पँलांडु घंट निक्करै ॥

कटंत सुडि ककैरी प्रवृत्ति पाँथ पीनके ॥

किंलासनास ईषिका रु आलु अंखि कीनके ॥

हागई, धुंधि के १ फैलने से सूर्य छुपकर दिन के २ चंद्रमा के समान हो गया ॥ ७९ ॥ ३ बीरों की पंक्ति की भीड़ से भूमि पर धूल और अंधेरा छा गया. बिमानों के ४ समूहों में से देवताओं ने प्रसन्न होकर ताली बजाई बीरों की छुरियां जल की धारा के समान दोनों तरफ पार होती हैं कितने ही पड़े हुए ऊँचे ५(\*) हाथी ६ प्रसन्नता की(†)बोली भूलकर सिसकने हैं ॥ ८० ॥ सातों समुद्र हिलारे लेकर चारों दिशाओं में उफनने हैं ७ शिव प्रशंसा करते हैं और ८ प्रलय का समय बनता है ९ आकाश में आँतें लेकर चीलें १० पतंग (गुदी) होकर उड़ती हैं. हाथ अंगों को काटते हैं अथवा कितने ही कायर छाती कूटते हैं और कई अस्तक कटे हुए भी बोलते हैं ॥ ८१ ॥ १ हाथियों रूपी १२ बगीचों में हाथियों के दन्त उखड़ते हैं सोही १३ मूले होकर उखड़ते हैं १४ कुंभस्थल गिरते हैं सोही १५ पानी (फोले) हैं १६ घंटा है सो ही काँदे हैं, सुडें कटती हैं सोही १७ पानी की पिलाई हुई पुष्ट १८ काकड़ियों हैं १९ कंकड़ों

(\*) लीलावती में गणेश को मतंगानन लिखा है और शारदी नाममाला में हाथी का नाम मतंग लिखा है. अथवा—'मतङ्गः कुंजरः करो' ॥

(†) डिंगल भाषा में हाथी को प्रसन्नता की बोली का नाम सारसी है और मतान्तर से सुंड के इधर उधर पड़ेटा लगाने को भी सारसी कहते हैं.

कटिल्ले करिणिकावली भटा हँदावली भये ॥  
 अरिष्ठके अपण्ठ वृंद क्लोम कंद उन्नये ॥  
 वनें अरी पलास कान अँडु नागबल्लरी ॥  
 कलेज पीलुपर्णिका कसेर तोरई करी ॥ ८३ ॥  
 वनात यों अनेक प्रेत साक व्यंजनावली ॥  
 कृपान या प्रकार मारकी मल्लारकी चली ॥  
 कहैं कितेक हाय माय गाय काय के गहैं ॥  
 लहैं कैपाय लाय के घुमाय घाय के सहैं ॥ ८४ ॥  
 चहैं वै आय जैपुरेस गैपुरेसैं साँकरैं ॥  
 मल्लार भीमसेनकी गल्लार गंजि को लरैं ॥  
 इतैं प्रबुद्ध रामभूप क्रुद्ध जुद्ध यों मच्यो ॥  
 सुनौं समस्त प्रीति कै उतैं जु रीतिकैं रच्यो ॥ ८५ ॥

(कर्त्तृविशेष) के समान हाथियों के नेत्रों के गोलों का नाश होता है और  
 आंख की पुतलियाँ ही आलू हैं ॥ ८२ ॥ १ सुंड के अग्र भागों की पंक्ति ही  
 करेणों की पंक्ति है २ हृदयों की पंक्ति है सोही धंगन हैं ३ लहसुन के  
 समान ४ अंकुश का अग्रभाग है ५ तिल्ली ही जमीरन्द है ६ हाथियों  
 के कान ही अरुह (अरवी) के पत्ते हैं ७ जंजीरें ही नागरघेलें हैं ८ कलेज ही  
 पीलुपर्णी (दाग की घेलें) हैं और हाथी की पीठ की लंपी हड्डी (रीठ वा चामे  
 का छोट) ही तोरही (तुरई, तोरमी वा तोरों) है ॥ ८३ ॥ इस प्रकार कई प्रेत  
 ६ भोजन के पदार्थों की पंक्तियाँ बनाते हैं. मल्लारका १० नर इस प्रकार की  
 मार के साथ पला तहाँ कितने ही 'हायमाना' और कितने ही 'मैं तेरी गत्र हूँ'  
 ऐसा कहते हैं और कई धार शरीरों को पकड़ते हैं और कई धार अग्नि के  
 ११ कलुषपन को सहते हैं और कितने ही घाय सहते हैं ॥ ८४ ॥ १२ हस्तिना  
 पुर के पति (दुर्योधन) स्वपी जयपुर के पति को १२ अथ सकहाट में लिया  
 गया वहाँ भीमसेन स्वपी मल्लार की गर्जना को दयाकर कान लहैं अर्थात् कोई  
 नहीं लक्ष मया १४ हे युधिमान राजा रामचन्द्र इधर तो क्रुद्ध होकर इस प्रकार  
 का युद्ध मया और उधर (दुमरी ओर) जिस प्रकार युद्ध मया सो प्रीति पूर्वक  
 सुनौं (इन दोनों में पाषाण: 'करीमरी गरीमरी, भकें भकें, भकें भकें' आदि मुका-  
 भ बानी हो हो शब्द बाधे हैं सो जयने जयने विषय की अधिकता बनाने के  
 लिये बीप्ता के अर्थ में हैं) ॥ ८५ ॥

॥ षट्पात ॥

उत जैपुर मगं रुक्मि त्वरित तंते गंगाधर ॥

उद्धत बग्गन औचि हंकि सम्मुह दिय \*हैवर ॥

मिंडलग्ग आरि मार लुत्थि पर लुत्थि बिलगिय ॥

मित्र मित्र मनु मिलिय बहुत सहि सहि बिरहगिय ॥

तरवारि तरकि बज्जत सुमुल भरकि मुंड भेजा कढत ॥

भीरुन अनार कन जिम ॥ उदक उतरि उतरि बीरन चढत ॥ ८६ ॥

पुनि पुनि कंपत पहुमि बाढ पुनि पुनि रन बज्जत ॥

पुनि पुनि छुटत प्रान गिरत पुनि पुनि भट गज्जत ॥

पुनि पुनि भिरत पटैत किरत पुनि पुनि आरि कंकट ॥

निज जय पुनि पुनि भनत बनत पुनि पुनि बट उव्वट ॥

पुनि पुनि कपाल फुटत पिहुल भरि आलुक पुनि पुनि भयउ ॥

आमेरनृपति अंधक उपम गंगाधर गंजन गयउ ॥ ८७ ॥

सीकरपति सिवसिंह तमकि आयउ हरोल तब ॥

मध्य जट्ट रविमल्ल ओट चंदोल कुंम्म अब ॥

सेखाउत सिर प्रथम धार आरिय गंगाधर ॥

अतुल तुमुल उल्लसिय हसिय नारद हर हरहर ॥

फुल्लिगै कुपित अखिन फुरत जुरत मत्त दुवर सिंह जिम ॥

असि आरि रचिय सेखाउतहु पुरुखारथ पारथ प्रतिम ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

\* घोड़े † मण्डलाग्र (खड्ग) ‡ बिरहाग्नि § भयंकर ॥ दाहिम के कर्णों के समान कायरों का पानी उतर कर घोरों को चढता है ॥ ८६ ॥ १ कथच गिरते हैं २ मार्ग और जिता मार्ग ३ बहुत कपाल ४ मार ५ सर्प (शेष) को ६ अंधक राजा रूपी आमेर के राजा ईश्वरीसिंह को मारने के लिये ७ शिष्य रूपी तात्या गंगाधर गया ॥ ८७ ॥ ८ कोष करके ९ सूर्यमल्ल जाट बीच में होकर १० ईश्वरीसिंह इन की आँख में चंदोल में (पीछे) हुआ ११ अट्टाट्टास्य करके १२ आग्निकण १३ अर्जुन के सदृश ॥ ८८ ॥

लगगी सीकर नाहकै, तीन३ कठिन तरवारि ॥  
 सुभर गिरे घायल त्रिसय३००, मरे सहि६० बहु मारि॥८९॥  
 न लखिसकयो घन अंतरित, अकहुं पहुँच्यो अस्त ॥  
 तब मुरि मुरि भर उत्तरे, सिविरैन निजन समस्त ॥ ९० ॥  
 कमलपत्रें लागि संकुचन, धूकन मंडिय धौर ॥  
 सायंकृत्य विधान सब, रचन लागे दुहुँ ओर ॥ ९१ ॥  
 हुलकर१ माधव२ इहुँ३हु, करि कालोचित कर्म ॥  
 उहि बहुरि लैलै असन, मिले कहन रन मर्म ॥ ९२ ॥  
 कति मरहुहु प्रसारकों, विचरे पुढ्यहि बीर ॥  
 मग जैपुर तिन कों मिला, आवत रसति अधीर ॥ ९३ ॥  
 ताकी संग जु हे तिनहिँ, आनै गहि बल अंत ॥  
 हुलकर सन अकख्यो हुलसि, आपन रसति उदंत ॥ ९४ ॥  
 जब हुलकर जे रसति जन, आनै अननि उतारि ॥  
 अवन१ नकर२ तिनके सरिसै, वहि रु दिन्न बिडारि ॥ ९५ ॥  
 करन बंध मग रसति क्रम, इत मलार किय एह ॥  
 पंच सहस५००० दल उत पिल्यो, खुरन विधारत खेह ॥ ९६ ॥  
 संभरपुर लग तिहिँ सजव, हुंढाहर लिय लुटि ॥  
 इम जैपुरं जनपद असह, फोजन हारव फुटि ॥ ९७ ॥  
 इत वगरु निसँ आगमन, हुलकर पर छल हेरि ॥  
 कूरम नहिँ कहिजानकों, दियउ छवीनाँ फेरि ॥ ९८ ॥

॥ ८९ ॥ १ मघ से छायाहुआ २ सूर्य भी वस चुन को नहीं देख  
 सका और अस्ताचल को पहुँचा ३ डेरों में ४ अपने सब लोगों सहित  
 ॥ ९० ॥ ११ ॥ ५ समय के उचित कार्य ६ भोजन ॥ ९२ ॥ ७ तृण काट  
 (घास लकड़ी) आदि लाने को ८ पहिले ही बचे थे ॥ ९३ ॥ ९ वृत्तान्त  
 ॥ १० ॥ ११ रसद लानेवाले लोकों को गाढ़ियों से उतार कर लाये १२ क्रोध सहित  
 त कान और नाक काट कर निकाल दिये ॥ ९५ ॥ खेना १२ भेजी ॥ ९६ ॥ १३ देश में  
 १४ हाहाकार शब्द ॥ ९७ ॥ १५ राजा के आने पर १६ शत्रु का छल देख कर  
 १७ ईश्वरीसिंह नहीं भागजाये इस कारण ॥ ९८ ॥

जामिक जन जागत रहे, सेन इतर रहि सोय ।  
 इहिं अंतर अमून उफनि, तूटन लग्गे तोष ॥ ९९ ॥  
 पानी बुद्धत उदयपुर, आनि चमखिय अक्क ॥  
 कालोदित उठि कृत्य करि, चढे बहुरि हुव चक्क ॥ १०० ॥

॥ षट्पात् ॥

हुलकर इत हय चढिय व्यूढ कंकट करि निज बल ॥  
 उत जैपुर अधिराज चढिग गजराज चलाचल ॥  
 ए उत्तर मुख अडर वे सु दक्खिन मुख ओपत ॥  
 खुंदि धरनि खर खुरन उरन आयुध आरोपत ॥  
 भरि बाढ बाढ दव गाढ भगि छिति उल्लुमुक लागि उच्छलन  
 गांडिव बजाय डारिय गजब जैनु पांडव खांडव ज्वलन ॥ १०१ ॥

॥ दोहा ॥

तंतेकोँ करि मुख्य तँहँ, समर भार धरि सीस ॥  
 इक्क अनी चंदोलँ पर, पठई हुलकर ईस ॥ १०२ ॥  
 जैपुरपति चंदोल जँहँ, हे नौरव कछवाह ॥  
 गंगाधर तिन बिच गरजि, प्रबिस्यो प्रँचुर सिपाह ॥ १०३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर धसि गयउ काटि चंदोल नरूकन ॥  
 किन्नै टूकन टूक कुंत असि सर बंदूकन ।  
 कतिक बचे भजि कढिय उँदधि कूरम दल अंतर ॥  
 मकर अगग जिम मानै त्रसित तिम लखत दिगंतर ॥

१ पहराचत २ अन्य ३ सेना बंद कर ४ जल गिरने लगा ॥ ९९ ॥ ५ उदयपुर पर ६ अक्क (सूर्य)  
 ७ उदय समय के कार्य ८ चक्र (सेना) ॥ १०० ॥ ९ व्यूह रचना करके १०  
 कषय युक्त की ११ चलते हुए पर्वत के समान हाथी पर १२ अंगारे (निर्धूम  
 अग्नि) १३ मानों अर्जुन ने खांडव वन में १४ अग्नि डाली ॥ १०१ ॥ १५ पीछे की  
 सेना पर ॥ १०२ ॥ १६ नरुका १७ बहुत सिपाहों से ॥ १०३ ॥ १८ कछवाह के  
 समुद्र रूपा सेना में मगर (घड़ियाल) से १९ मच्छी डर कर जाये तैसे.

मरहठोंका सूर्यमल्ल जाटसे युद्ध] सप्तमराशि-पंचविंशमयूख (३५१७)

कूरम हरोल केतन द्विरद जिहिँ अगँ कटिंगय सजवँ ॥  
तँते तुरंग तते तमकि भयो अरिन बिच प्रलय भवँ ॥१०४॥

॥ दोहा ॥

सेना अंतर व्यूह बिच, लुटे सकट सलील ॥  
मारे तोपन कानमै, कठिन अयोमय कील ॥ १०५ ॥  
मथ्यो कटक तँते मरद, मनु गोपी दधि मट्ट ॥  
कूरम लाखि बुँल्लयो चकित, जब हरोल सन जट्ट ॥१०६॥  
॥ पट्टपात् ॥

तबहि जट्ट रविमल्ल पलटि आयो सहाय पर ॥  
जिम गज संकट जानि चपल पन आनि चक्रधर ॥  
अडर भरतपुर ईस तिमहि हंकयो रन तँडत ॥  
मंडत आयुध मेद खूब खंडन अरि खंडत ॥  
अति जोर हरत मरहठ अंसु रोरेँ करत खगराज रँय ॥  
बिहँनन प्रहार लघु तूल बिधि गंगाधर सु पलाँय गय ॥१०७॥  
॥ दोहा ॥

सह्यो भलैही जट्टनी, जाय अरिष्ट अरिष्ट ॥  
जिहिँ जाठरँ रविमल्ल हुव, आमैरँनको इष्ट ॥ १०८ ॥  
॥ पट्टपात् ॥

सूरजमल्ल सजोर मुररि मारे मरहठे ॥  
मिलत बैधु फन मेदि नाँग आतुर गति नहे ॥

१ आगे की सेना में निशान के हाथी थे जिन से भी आगे पड़ गये रशीप्र ३ गंगाधर  
तँते के ताते घोड़ों को खींचकर ४ शिव ॥ १०४ ॥ ५ लीला (खेल) सहित ६ लो-  
हे की कीलें ॥ १०५ ॥ ईश्वरीसिंह ने चकित होकर सूर्यमल्ल जाट को हरावल  
से ७ बुलाया ॥ १०६ ॥ ८ विष्णु भगवान् ९ गर्जना करता हुआ १० प्राण  
११ भय १२ गन्ध के बेग से १३ पीतल के प्रहार से तुच्छ १४ रुई की भाँति १५  
भाग गया ॥ १०७ ॥ हे जाटनी तू ने १६ सुतिकागृह (जापे के घर) में जाकर भलै ही  
१७ दुःख सहा कि जिस के १८ उदर में १९ सूर्यमल्ल २० आमैरपातों का इष्ट हुआ  
॥ १०८ ॥ २१ जैसे कणों के साथ विष्णु भगवान् की फेट होते ही २२ काली नाग,



परे कुणाप पंचास ५० अठ उत्तर सत १०८ घायल ॥  
 दीनों दक्खिन ठेलि तुमुल कीनों रिस तायल ॥  
 भय टारि नरुकन थप्पि थिर पुनि कूरम चंदोल पर ॥  
 हरवल्ल अप्प आयउ हुलसि मिहिरमल्ल गहि जय गुंमर ॥ १०६ ॥  
 ॥ दोहा ॥

बहुरि जट्ट मल्लार सन, लारन लाग्यो हरवल्ल ॥  
 अंगद व्है हुलकर अर्यो, मिहिरमल्ल प्रतिमल्ल ॥ ११० ॥  
 रदन मध्य रसना रहत, इम संकट कछवाह ॥  
 अंतर चाहत साम अब, जेत न रन जय लाह ॥ १११ ॥  
 ॥ षट्पात् ॥

धरनि फेट धसमसत कंपि कसमसत कुंलाचल ॥  
 दिस दिस लोहित लिपत दिपत जुज्झत दोऊ रदल ॥  
 इहि अंतर आसार प्रचुर पुनि रचिय पयोदन ॥  
 चहलपहल चतुरंग देहल पानिय चहुँ ४ कोदन ॥  
 बुल्लयो मल्लार तहँ दुवर नृपन पर अप्पन नहि सुधि परत ॥  
 तुम अलप सत्य मम ढिग रहहु भटन भिन्न रक्खहु लारत ॥ ११२ ॥  
 ॥ दोहा ॥

बुंदियपति १ यह सुनि बचन, सत १०० सादियँ लिय संग ॥  
 हरजन २ इतर अनीकलै, रह्यो भिन्न रुपि रंग ॥ ११३ ॥  
 हयसत १०० रक्खे माधव २हु, लौ इतरन जय लीन ॥

आतुर होकर भागा तैसे भगे १ सुरदे २ भयंकर युद्ध ३ क्रोध में तपाहुआ  
 सूर्यमल्ल विजय का ५ घमंड करके ॥ १०९ ॥ ६ सूर्यमल्ल से प्रतिमल्ल के स  
 मान लड़ने लगा ॥ ११० ॥ ७ दांतों के घेरे में जीभ रहै तैसे ईश्वरीसिंह सेना  
 घेरे में रहा ८ मन में ९ साम जपाय (मिलाप) ॥ १११ ॥ १० पुराणों के  
 से जिस पर्वत का पृथ्वी के चारों ओर घेरा है उस का नाम कुलाचल है १  
 रुधिर से पोती हुई दीखती है १२ बहुत मेघ धारा १३ मेघों ने १४ सेना  
 से भीग कर तर होगई १५ पानी का भय १६ चारों दिशाओं में हुआ ॥ ११२ ॥  
 सवार १८ अन्य सेना को लेकर ॥ ११३ ॥

सिवाईरहु सिवब्रह्महर, कुम्भ पृथक रन कीन ॥ ११४ ॥

लैब१ सिवा१ अरु टोडरी१, अधिप मिले त्रय३ आनि ॥

तिन्ह गोगाउत प्रेम३ लै, पृथक जुरयो असि पानि ॥ ११५ ॥

एक१ दह कूरम उभय२, अनुक्रम बंदि अनीक ॥

स्वामिन हुलकर संग करि, मंझ्यो पृथक समीक ॥ ११६ ॥

ज्यौहिं उदैपुर२ जौधपुर१, कोटा३ के दल३ कुद ॥

भिन्न भिन्न रहिकै भिरे, जैपुरपाति सन जुद ॥ ११७ ॥

हुलकरढिग दुवर भूप रहि, तुमुल रच्यो गहि तेग ॥

पानी आयुध पैज करि, बुधन लग्गे बेग ॥ ११८ ॥

भीजी पग्य सु दूर करि, दै आबिक पट टोप ॥

हुक्का पीवत हुलकरहु, कलह खरो अति कोप ॥ ११९ ॥

॥ मतमृगेन्द्र ॥

खेल सतरंजकी सारि अनुकार मल्लार१ निज बीर अगै बढावै ॥

दह१ प्रतिमल्ल हरवल्ल रचि दल्ल हमगीर बरनीर बुंदी चढावै ॥

दह सामंतहर नाम हरजन२ सु नृप सचिव लै सेन इक ओर जुझै ॥

मेघ आसार भंगकार अंधार मिलि अप्पन रूपार नहि नैक सुज्झै १२०

सिवाईसिंह१ कछवाह सिवब्रह्महर माधवामात्य इक ओर जुटै ॥

१ शिवब्रह्म के वंश बाला ॥ ११४ ॥ २ लांबा और सेवा ये दोनों नगरों के नाम हैं

३ प्रेमसिंह ॥ ११५ ॥ जुदा ४ युद्ध रचा ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ५ होड (प्रतिज्ञा) करके

॥ ११८ ॥ ६ ऊन बल्ल का ॥ ११९ ॥ जैसे सतरंज के खेल में एक प्यादी के

दूसरी का जोर बना रहता है तब वह आगे बढ़ती है (जोर बना रहने से अगली

प्यादी मारी नहीं जाती) इसीके ७ सदृश मल्लार ने अपने चारों को आगे

बढाये हाडा उमेदसिंह ८ उद्धत मल्ल होकर इरोल में (आगे) हिम्मत के

साथ हल्ला करके बुंदी को भेष्ट नीर बढाता है और सामंतसिंह के वंश बाला

हरजन नामक हाडा उमेदसिंह का सचिव सेना लेकर एक ओर लड़ने लगा

६ मेघ धारा से १० भयंकर अंधेरा होकर अपना और पराया कुछ नहीं दीखा

॥ १२० ॥ ११ माधवसिंह का मंत्री शिवब्रह्मपोता सिवाईसिंह कछवाहा भी

तीन ३ कछवाह खंगारह लैरु इत गोगैहर प्रेमर करवाल कुट्टै ॥  
 रान जगतेस कटकेस इत संभु१ अरु साहिपुर भूप उम्मेदर रूपे  
 सांचिवि गुलाब३ अरु देवगढ कंत जसवंत४ पुनि बेघम पं मेघप  
 कुप्पे ॥ १२१ ॥

जोधपुर सेनपति सेर१ अरु सेर२ मनरूप३ कल्याण४ समसेर भारा  
 यों अखैराम१ कोटेस कटकेस रन मेस मन सेस फन पेसिं डारै ॥  
 कुंत असि हत्थ मिलि बत्थ कति सत्थ गति पैत्थ तैति मत्थ सि-  
 ब अत्थ अप्पै ॥

भीम अनुकौरि गज पारि धक धारि कति मारि तरवारि थिर  
 रारि थप्पै ॥ १२२ ॥

नीर अरु छीर निर्भ धीर कति बीर हमगीर मिलि तीरकरि भीरटारै  
 काल विकराल कति ज्वाल दग लाल अरि साल भरि फाल ग-  
 जदाल डारै ॥

भीरु भय देत गिलि गोदं पल जेत अति देत करि खेत बिच प्रेतनजै

एक आर लड़नेलगा तीन १ खंगारोत कछवाहों को लेकर २ इधर गोगावत  
 प्रेमसिंह ३ तरवार मारनेलगा राणा जगतसिंह के ४ सेनापति संभुसिंह और  
 साहपुरा का राजा ५ उम्मेदसिंह ये दोनों इधर खड़े हुए ६ राणा के सचिव का  
 पुत्र गुलाबसिंह और देवगढ का पति जसवंतसिंह ७ बेघम का पति मेघसिंह  
 ये सब क्रोधित हुए ॥ १२१ ॥ जोधपुर की सेना का पति शेरसिंह दूसरा  
 मनरूप और कल्याणसिंह ये सब तरवार मारने लगे इसी प्रकार कोटा के पति  
 का सेनापति अखैराम युद्ध में ८ झेंडे के समान होकर अपने मन से शेषनाग  
 के फलों को ९ पीसने लगा १० भाले और तरवारें हाथों में लेकर ११ कितने  
 ही बाथों के साथ मिलकर १२ अर्जुन की भांति १३ बाथों की पंक्ति १४ शिव  
 के अर्थ देते हैं और कितने ही भीमसेन १५ सदृश हाथियों को गिराकर क्रोध  
 करके तरवार मार कर स्थिर युद्ध को स्थापन करते हैं ॥ १२२ ॥ कितने ही  
 बीर हमगीर होकर पानी और दूध के १६ सदृश मिलते हैं और १७ बाणों  
 से भीड़ को हटाते हैं कितने ही भयंकर काल के और अग्नि के समान लाल  
 नेत्र करके प्रायुष्यों के साल होकर १८ मलंग लगाकर १९ हाथियों की ध्वजा-  
 यों को गिराते हैं अत्यंत स्नेह करके २० मज्जा और मांस लेकर प्रेत युद्धक्षेत्र

त्रास तजि आस जिय स्वास दिय लास करि खास रन रास न-  
र नास मच्चै ॥ १२३ ॥

रोर चहुँ ओर अति घोर बरजोर रचि सोर तैचि दोर भटमोर सज्जै  
रोहँ घलि द्रोह भलि कोह कैलि छोह छलि जोहँ संदोहँ बहु  
लोह वज्जै ॥

इहँ कहँ गिहँ बलि सिहँ लागि लिहँ बिनु संक पँल पंक बिच  
कंक कुहँ ॥

सैन दुव२ लौन जय लौन मुरै न रन औन कति बैन थकि नैन मुहँ १२४  
एह बिच लोहँ करि सेहँ भुव नेह पुनि मेहँ बिच मेह बिनु छेह बुड्यो  
बंधि घन पाज गुरु गाज खय काज बजराजपर जानि सुरराजँ रुड्यो  
लोह श्रुति धारि नृपरामँ दुरितारि अति बारि करि रारि तरवारिरुकी  
प्रोष्ठपद मास इम बारिद बिलास पँललास नव मास मय आस  
मुँकी ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

भरमैं यौ तँहँ प्रचुर भर, परयो अचानक आय ॥

मे नाचते हैं आस का छोड़ कर जीव की आशा से हृदय के भीतर आस १  
नृत्य करता है और युद्ध के खास नृत्य में मनुष्यों का नाश होता है ॥ १२३ ॥  
भयंकर बल पूर्वक २ चारों दिशाओं में भय रच कर ३ बारूद में जलकर  
वीरों के सुकुट दौड़ सजते हैं ४ घेरा घाल कर द्रोह को भेल कर ५ युद्ध में  
कोलाहल करके, क्रोध में उभल कर ६ जोधों (वीरों) के ७ समूह बहुत  
शस्त्र बजाते हैं ८ बहुत गिह तैयार हुए ९ पलिदान को हैं और १० मांस  
के कीचड़ में निडर कंक पत्नी कूदते हैं दोनों सेना की ११ पंक्ति जय लेने के  
अर्थ युद्ध से नहीं सुड़ती और कितने ही वीर १२ मार्ग में चचन थक कर नेत्रों  
को बंद करते हैं ॥ १२४ ॥ इतने में १३ स्वाद लेकर १४ मृसि की सेहत पर १५ शस्त्रों  
की वर्षा में अछेह मेह बरसा सो मानों मेघ की पाज बांध कर १६ बड़ी गर्जना  
से नाश करने को अजराज पर १७ इंद्र ने क्रोध किया सो हे १८ पाप के शत्रु  
राजा १९ रामसिंह सुनो कि अत्यंत २० पानी से तरवारों की लड़ाई रुक गई इस  
प्रकार २१ भादवे में मय के विलास से २२ मांस की आशावालों ने गरीब  
आस के समय आशा २३ छोड़ी ॥ १२५ ॥

सूरन सय अरु हयन पय, भये चलत जड भाय ॥ १२६ ॥  
 रोकि रँटक तब दुव<sup>२</sup> कटक, पत्ते सिविर<sup>१</sup>न निहि ॥  
 श्रमित भटन छोरी सजव<sup>३</sup>, असि मुठि रु हय पिठि ॥ १२७ ॥  
 छट्ठी<sup>४</sup> दिवस बिताइ इम, बहुरि बिताई रति ॥  
 दक्खिन दल सप्तमि<sup>५</sup> दिवस, सजन लागे पुनि सति ॥ १२८ ॥  
 एह सुनत आमैरपति, व्याकुल किन्न विचार ॥  
 मरहठन रोकी रसति, मंडयो प्रसभ मलार ॥ १२९ ॥  
 जनक लई संधा करि जु, देय सु बुंदी नाहि ॥  
 गंगाधरको सुलक<sup>६</sup> दै, मोरहु अप्पन माहि ॥ १३० ॥  
 कूरमपति यह मंत्र करि, खत्री केसवदास ॥  
 दम्म बहुत तस संग दै, पठयो तंते पास ॥ १३१ ॥  
 राजामलसुत जाय तँहँ, गंगाधर लिय फोरि ॥  
 दई सौँक छन्नै दुलभ, माया करि मन मोरि ॥ १३२ ॥  
 अरु अकखी तुमरे लागे, फोज खरच जे दम्म ॥  
 दैहँ नृपतिनतै द्विगुन, करहु साम हित कम्म ॥ १३३ ॥  
 बुंदीकी वत्त न बबहु, भरि धन सकट सुभाय ॥  
 कुंच करावहु कटकके, हुलकर पति समुभाय ॥ १३४ ॥  
 गंगाधर यह सुनि गयो, खर जैर जूती खाय ॥  
 कस्यो मलारहि कुम्म पति, बहु धन देत सिटाय ॥ १३५ ॥  
 अब न सुनहु उम्मेदकी, लेहु अतुल वैसु लाइ ॥  
 जग कहिहँ हुलकर जवर, दंड्यो जैपुर नाइ ॥ १३६ ॥  
 हुलकरकी यह सुनत हुव, बिगरि बुद्धि विपरीत ॥

१ हाथ ॥ १२६ ॥ २ युद्ध करना ३ डेरों में कठिनाई से प्राप्त हुए ४ शीघ्र ॥ १२७ ॥  
 ५ सति (घोड़े) ॥ १२८ ॥ ६ हठ ॥ १२९ ॥ पिता (जयसिंह) ने ७ प्रतिज्ञा करके  
 जी बह बुन्दी = देने योग्य नहीं है ८ रिसवत देकर ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १०  
 हितकार्य ॥ १३३ ॥ ११ अष्ट रीति से छकड़े भर कर ॥ १३४ ॥ १२ धन की  
 जूती खाकर बह गया गया ॥ १३५ ॥ १३ धन का लाभ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

धरन लग्यो गनिका धरम, जानी अप्पन जीत ॥ १३७ ॥  
 सो सुनि दैसत २०० सुमट पति, बालकृष्ण द्विज बीर ॥  
 हुलकर सपन निकाय को, जामिके जंपै धीर ॥ १३८ ॥  
 पुण्याके दलबिच प्रकट, करि करि गुंमर मलार ॥  
 किम कहि आये नन्हतै, लोभी कितव मलार ॥ १३९ ॥  
 कैसी संधा करि चलिय, कैसो मंत्र विधाय ॥  
 संधाकों तुमकों संतत, है धिक हुलकर राय ॥ १४० ॥  
 क्यों धन लक्ष्मन करज किय, रचि दल बीस हजार २०००० ॥  
 क्यों माधव उम्मेदकों, छुल्ले बिनुहि विचार ॥ १४१ ॥  
 चलि दक्खिन प्रभु नन्हसों, नीचै करिहो नैन ॥  
 तंते बंभन सठ तुमहिं, लोभ देत कछु लैन ॥ १४२ ॥  
 कातरपन ताको कह्यो, धारहु नन धरि धीर ॥  
 यह पूरबिया यह कहत, बलाहि सिराइयो बीर ॥ १४३ ॥  
 मन गो पलाटि मलारको, लगगत बचन प्रतोद ॥  
 तंतेकों छुल्लि रु त्वरित, बुल्लयो लारन बिनोद ॥ १४४ ॥  
 सुनि गंगाधर वह कितैव, तजिहैं छुंदिय देस ॥  
 च्यारि ४ अनुज हित परगनै, दैहैं कुम्म नरेस ॥ १४५ ॥  
 बुंदीसहिं बुलवाय पुनि, ताके डेरन जाय ॥  
 इक १ तखत दुव २ बैठिहैं ३, सैम सतकार विधाय ॥ १४६ ॥  
 टीका उचित निवेदिहैं ४, कहि कहि नृप उपटंक ॥  
 तो अप्पन दल कुंचहैं, नहि तो जंग निसंक ॥ १४७ ॥  
 सच्ची अंखि निहारि तब, तंते त्रसित बिसैस ॥

१ शयन के घर का २ पहरायत बोला ॥ १३८ ॥ ३ घमंड ॥ १३९ ॥ ४ प्रतिज्ञा  
 ५ सलाह करते हो ६ प्रतिज्ञा को ७ निरंतर ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ ८  
 कायरपन ९ सेना ने उस की प्रशंसा की ॥ १४३ ॥ वचन रूपी १० चाबुक  
 लगने से ११ बुलाकर ॥ १४४ ॥ १२ हे ठग १३ माधवसिंह के अर्थ ॥ १४५ ॥  
 १४ बराबर का १५ करके ॥ १४६ ॥ १४७ ॥

अकस्माँ केसवदाससों, कन्हू मल्लार निदेस ॥ १४८ ॥  
 सुनि खत्री निज स्वामिकों, जबहि सुनाई जाय ॥  
 हित भाधव१ उम्मेद२को, कर्नोही अब न्याय ॥ १४९ ॥  
 कोपत हुलकर पिनु करै, अखिन धकत अलाव ॥  
 रसति बंध पहिलें करी, अब प्रानन पर दाव ॥ १५० ॥  
 इन्द्रविभिह सिटाय सुनि, भयो अमाससि भाय ॥  
 गंधनकुल को घास करि, उरग जानि अकुलाय ॥ १५१ ॥  
 सबहि वन स्वीकृत करिअ, जेपुरपति भय जानि ॥  
 संधि विंधाय मल्लार सन, मिलन विचार प्रगानि ॥ १५२ ॥  
 अकस्माँ केसवदाससों, सब उनकी स्वीकार ॥  
 अब कहु अकस्माँ अप्पनी, मानहु वत्त मल्लार ॥ १५३ ॥  
 हुलकर१ अत्त हम२ लोभकी, वत्त समझ करैन१ ॥  
 जो कहनी सु वकील जन, बँदै परोक्षाहि वैन ॥ १५४ ॥

॥ पट्पात् ॥

अपर्ने देसन प्रथम हट्ट१ हुलकर२ दुव२ आवै ॥  
 पत्तट्टि पग्य मल्लार हमहि बड भित्र वनवि३ ॥  
 वृंथ करनके कान्त वंस पहिलें तिन्ह वज्जै४ ॥  
 पिच्छे हमहि चटाय चवहु इग वैजू न नैज्जै ॥

सुनि केसवदास मल्लार सन काटिग आनि कम्म कथिने॥

हुलकर समस्त स्वीकार काणि चाखो मिलन प्रमत्त चित ॥ १५५ ॥

सप्तमि७ अष्टमि८ नवमि९ दसमि१० एकादसि११ विंती ॥  
 द्वादसि१२के दिन मिलन थप्यो हुलकर करि किंती ॥  
 दल सन तंबू दूर तबहि इक१ कुम्भ तनायो ॥  
 मंत्र केणिका२ पृथक मंडि अप्पहु तँहँ आयो ॥  
 दै पिडि इक१ तकिया दरित पृथुल दिलीचा रुचिर पर ॥  
 परिखद बनाय जयसिंह सुव बैठो लौ ढिग सुभट बर ॥ १५६ ॥  
 ॥ दोहा ॥

इन हड्डि रु हुलकर२ उभय२, सुपहु भीरि सैनाह ॥  
 भिटन जैपुर भूपकों, विदित चले चढि बाँह ॥ १५७ ॥  
 लये उदैपुर१ जोधपुर३, कोटा३के भट संग ॥  
 उभय हथ्यँ हथ्यँ, जीति पधारे जंग ॥ १५८ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

तंते गंगाधर१ सेटू खइराड़१ संतू बाउला१ तीनों३ही हुलकरके  
 उमराव हरोल भये ॥

अरु विजयके मदमत चौतरफ आतंक डारत तमासगीर लोक-  
 नकों इटात गये ॥

प्रथमतो उदैपुर१ जोधपुर१ कोटा१की सेनाके सिरदार दोय२  
 दोय२ मल्लारनै मिलिबेकों अनुक्रमतै पठाये ॥

तब साहिपुराधीस रानाउत उम्मेदसिंह१ देवगढनाथ चुंडाउत  
 राउत जसवंतसिंह२ बेघमपति चुंडाउत राउत मेघसिंह३ सनवाड़  
 पति सेनानी भारतसिंहको कनिष्ठ सोदर रानाउत संभूसिंह ४  
 प्रधान भवानीदासको पुत्र गुलाबसिंह५ त्योंही रथ्याँ पति दूदाउत  
 मेरतिया रठोर सेरसिंह१ उद्दाउत रठोर सेरसिंह२ कल्याणसिंह ३

१ ईश्वरीसिंह ने २ सलाह करने का डेरा जुदा रचा ३ केवल ईश्वरीसिंह की  
 पीठ से दवाहुआ एक तकिया लगा कर ४ बड़े सुंदर दलीचे पर ५ सभा  
 ॥ १५९ ॥ ६ कवच फस कर ७ घोड़ों पर चढ़कर ॥ १५७ ॥ ८ मल्लार  
 और उम्मेदसिंह दोनों हाथ में हाथ देकर ॥ १५८ ॥ ९ अथ १० छोटा सगाभाई



भंडारी मनरूप४ तथा बखसी कायस्थ अखैराम१ इत्यादिक  
ईश्वरीसिंहतैं सत्कारसहित मिलि आये ॥ १५९ ॥

दोहा— तदनंतर नृप इह१ अरु, हुलकर२ करि इथजोरि ॥

प्रबिसे प्रतिसीरा बलजै, तरल तुरंगम छोरि ॥ १६० ॥

जुरत दिट्टि जै नृपतिहू, हुलसि उठ्यो करि हेत ॥

सम्मुह पायंदाज तक, आयो विनय उपेत ॥ १६१ ॥

मत्थै इत्थ लगाय मिलि, मोद परस्पर मानि ॥

इक दिलीचा ऊपरहि, इम बैठे त्रय३ आनि ॥ १६२ ॥

ईश्वरिसिंह१ प्रतीचि मुख, प्राची मुख ए दोय२ ॥

कछुक काल संलाप करि उठे ब्रह्म सब धोय ॥ १६३ ॥

मंत्र कैशिका माहि पुनि, प्रबिसे त्रय३ द्वय२ पास ॥

हुलकर१ कूरम२ इह३ अरु, तंते१ केसवदास२ ॥ १६४ ॥

बुंदीपति प्रति उच्चरिय, जैपुर भूपति जत्थ ॥

दूर रहो कछु कालतो, मंत्र रचै इम अत्थ ॥ १६५ ॥

तब नृप सुल्लयो करत तुम, मरहठी संलाप ॥

मैं अनोधे अनधीत मैं, निर्धरक मंत्रहु आप ॥ १६६ ॥

अखिख यहैं रू तत्थहि रह्यो, संभरराज रवतंत्र ॥

केसव१ कुम्म१ मलार१ किय, मरहठी बिच मंत्र ॥ १६७ ॥

तदनुं पगध निज कुंकुमी, लैकैं हुलकर ईस ॥

हीरनके सिरपेच जुत, धरी कुम्म नृप सीस ॥ १६८ ॥

॥ १५९ ॥ १ कनात के २ कोट में बुल ३ खपल घोड़ों को बोलकर ॥ १६० ॥

४ नज्जता सहित ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ ३ पश्चिम दिशा में मुख करके रहा

और ये दोनों पूर्व दिशा में मुख करके साम्हने बैठे वार्तालाप ॥ १६३ ॥ ७

मंत्र करने के डेरे में ८ तीन राजा और दो पासवान (पास रहने वाले)

॥ १६४ ॥ ९ यहाँ ॥ १६५ ॥ १० मरहठी भाषा में वार्ता करते हो जिस में ११

नहीं समझता १२ और इस भाषा को नहीं पढ़ा १३ निर्मय सलाह करो

॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १४ जिस पीछे १५ केसर के रंग की ॥ १६८ ॥

सरहठाँका कछवाहोंसे फिर बिगाड़ सप्तमराशि पंचविंशमयुक्त (३६२७)

हुलकर सिर अपनी धरी, त्योंही कूरम राय ॥

घरिय रक्खि दोउन दर्ई, डब्बन माँहि धराय ॥ १६९ ॥

मराय१ धराय२ अन्त्यानुपासः ॥१॥

इतर कुसुंभी१ कुम्म२ धरि, बिसेद१ पग्घ मल्लार ॥

मंत्र निलय बिच मित्र हुव, इम दुवर सुदित अपार ॥ १७० ॥

चपारि४ परगगन माधवहिँ, बुंदी नृपहिँ दिवाय ॥

हुलकर कूरम हत्थको, लिन्नो पत्र लिखाय ॥ १७१ ॥

बहुरि चत्ते उठि सिक्ख करि, हुलकर१ अरु चहुवान२ ॥

कूरम पापंदाज तक, चलयो तबहु पहुँचान ॥ १७२ ॥

इम प्रविसे दोऊ२ अडर, निज निज डेरन आय ॥

कहि पठई दूजे२ दिवस, कुम्महिँ हुलकर राय ॥ १७३ ॥

अब बुंदीपतिके, अरथ, भेजहु टौंका भूप ॥

सुनि यह लिय जयसिंह सुव, पुनि अभिमान अनूप ॥ १७४ ॥

पादाकुलकम् ॥

कूरम पच्छो एइ कहाई, भिटन तुम आये यँहँ भाई ॥

तबतो वे आये तुम पिच्छेँ अब उमेद आवन हम इच्छेँ ॥१७५॥

सुनि इह१रु हुलकर२इठ साइयो, बेर इह१आवन निरबाइयो

तुमहिँ उचित आवन अब तातैं, दिवस भायो इक१राह दिखातैं ॥

यह साइस दुहुँओर बढ्यो अति, पृथक तनाय थूल बुन्दीपति ॥

रहयो तहाँ कूरम मग हेरत, टरत जात दिन टेरत टेरत ॥१७७॥

बीच भयो तंते बिसटाली, घरबिधि बत्त कुम्म श्रुति घाली ॥

कुम्म कडी सुनिये गंगाधर, अब जो तुम आनहु यँहँ संभर १७८

तब भवदीर्घ हितूपन जानै, मल्लारहु उचितहि जो मानै ॥

॥१७९॥ईइवरीसिंह ने तो१कसूमल (कसुंवे के रंग की दूसरी पगड़ी धाँधी) रञ्जित

३ सलाह के स्थान में ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ ४हे भाई॥१७५॥

॥ १७६ ॥ ५हठ जुदा१डेर तनबा कर७बुलाते बुलाते ॥ १७७ ॥ ८आपका

गंगाधर दुहुँरघोर खिसानों, इत उतके संकुच अकुलानों ॥ १७९ ॥  
 अंबुज मनहुँ तराँनि अर्द्धोदय, अरध कपाट खुल्यो जिम आलय ॥  
 सोवत कछु कछु जगत स्वप्न सम, बानिक बैयससंधि बनितोपम ॥  
 तंते रह्यो पंच५ दिन अैसेँ, कहैं तोरि हित इत उत कैसेँ ॥  
 गंगाधर कर जोरि छठे६ दिन, अकखी नृपहिँ सुनहु संभर इर्न ॥ १८१ ॥  
 सेवक अरज मन्नि हित सत्यैं, इक आसान करहु मम मत्यैं ॥  
 जैपुरपति केवल हठ जानैं, प्रीति रीति नहिँ जड़ पहिचानैं ॥ १८२ ॥  
 बहुरि तुम्हैं निज सिविरं बुलावत, उत्तर ताको मोहि न आवत ॥  
 अकखी नृपति जाय हम आये, लुप्पि ताहि क्यौं पुनि हठ लाये ॥ १८३ ॥  
 उचित नाहि पुनि पुनि जीवन अब, बरजत हुलकर आदि सुंमति सब  
 यह सुनि विप्र नयन जल आयो, द्यूत ठग्यो सो दीन दिखायो ॥ १८४ ॥  
 निगैरनतैं श्रुति स्वपच निकासी, पग्यो कि हरिन किरातैंन पासी  
 तंतेकोँ इम देखि दुखित तब, अधिपति हृदय रादयतैर भो अब ॥ १८५ ॥  
 दयाराम१ निज बुद्धि पुरोहित, चारन महडू दान१ ज्ञान चित ॥  
 भेजे दुव२हुलकर ढिग भूपति, अकखी द्विज तंते सकुचत अति ॥ १८६ ॥  
 पुनि कूरम ढिग हमहि पठावत, यह द्विज नम्र दुखित अकुलावत ॥  
 कूरम हठ लखि हम हठ साहैं, दुखित द्विज लखि जावन चाहैं ॥ १८७ ॥  
 कहिय रुचत तुमहीं अब कैसी, तंते तकत दीनता औसी ॥  
 सुनि हुलकर उत्तर तब दिन्नोँ, जावहु जो कितैवन हठ किन्नोँ ॥ १८८ ॥

१ सकांच से ॥ १७९ ॥ २ आधा सूर्य उदय होत समय ३ कमल  
 होवै तैसे ४ घर ५ बनाव ६ बालपन के जाने और पौवन के आने की  
 संधि में अर्थात् वय संधि के बनने पर ७ स्त्री के समान ॥ १८० ॥ ८ हे  
 चण्ड्यालों के पति ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ ९ अपने डरे पर ॥ १८३ ॥ १० अछु बुद्धियाल  
 ॥ १८४ ॥ ११ गले से १२ वेद को १३ बांडाल ने निकाला अर्थात् जैसे बांडाल  
 अपने गले से वेद का उच्चारण करके (अधिकारी नहीं होने के कारण) अथवा  
 अन्धरत्नावली में होम के धूम को निगरक लिखा है सो बांडाल होम करके  
 संकट में पड़े तैसे १४ भीलों की पास में १५ अत्यन्त दयावान् ॥ १८५ ॥ १८६ ॥  
 ॥ १८७ ॥ १८८ ॥

मरहठोंका ईश्वरीसिंहसे संधि करना] सप्तनराशि-पंचविंशमयूखं (३५२०)

यह सुनि द्विज१ चारन१ जुग२ आयो, नृपकों हुलकर \* कथित सुनायो  
सुनि चहुवान सेन निज साजी, कसि कटिबंध चलयो चढि  
बाजी ॥ १८९ ॥

संग भये हुलकर भट सारे, बाढ़व पर दल सिंधु बिहारे ॥  
ढुंढारे पिक्खन जन आये, धन्न्य धन्न्य कहि बिरुद बढाये ॥ १९० ॥  
इम कूरम डेरन तोरैन मय, प्रबिसन लग्गे तत्थ चढे हँय ॥  
तबहि द्वारपालन कर जोरे, अक्खी अरज जात नहिं घोरे ॥ १९१ ॥  
यह तोरैन डोढी करि मानहु, अगग बहुरि डोढी नहिं जानहु ॥  
पाउसँ१रन२ कारन दुव२ पाये, यातैं रँखत पुखत नहिं लाये ॥ १९२ ॥  
अगँ ईश्वरिसिंह बिराजत, जवनी ओट बीच नहि राजत ॥

बिराजत१ हिराजत२ अन्त्यानुपासः १ ॥

जावत तुरग चढैं दग जुगि हैं, तो संकोच पररपर घुरिहैं ॥ १९३ ॥  
अंतर द्वार गिनहु इहैं यातैं, त्यागहु महाराज हय तातैं ॥  
सुनि नृप रीति निपुन तजि बाजी, प्रबिस्यो द्वार लिपैं भट राजी ॥ १९४ ॥  
जैपुरपति भट अलप सत्थ जँहँ, तक्कयो नृप सम्मुह परिखद तँहँ ॥  
इक१ जसवंत१ भलायपति कुमार, अरु दलेल२ धूलापुर ईश्वर ॥ १९५ ॥  
मरईश्वर१ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

तिम हरनाथ३ नरूका राउत, अजितसिंह४ कूरम सेखाउत ॥  
सुभट निकट इत्यादि छसातहि, जैपुरपति उठ्यो नृप जातहि ॥ १९६ ॥  
पायंदाज अवधि सम्मुह सँरि, रीति उचित दुव२ हत्थ मत्थ धरि  
सभा प्रबिसि अप्रतिहत सासन, बैठे उभय२ एकही आसन ॥ १९७ ॥  
\* कहना ॥ १८९ ॥ † शत्रु की सेना रूपी सङ्ग्रह पर बड़बाग्नि रूप से चला  
॥ १९० ॥ १ बाहर के द्वार पर १ घांड़े पर चढ़ा हुआ जाने लगा ॥ १९१ ॥  
३ इस द्वार को ४ वर्षा के और युद्ध के कारण ५ पुष्ट सामग्री ॥ १९२ ॥ ६  
कनात की आंख धीच में नहीं दीखती है ॥ १९३ ॥ ७ भीतर की डोढी ८  
वीरों की पंक्ति ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ ६ चल कर १० नहीं रुकनेवाले  
हुकम से ॥ १९७ ॥

पान१ रु अतर२ निवेदि परस्पर, किय संज्ञाप घटी इक१ हितकर  
उठि करि सिक्ख भूप पुनि आयो, पढ़िलैं जिम कूरम पहुँचायो ११८  
तंते तदनु पठायो हुलकर, कूरम प्रति अक्खी तिहिँ देरबर ॥

अब टाँका नृप कूरम पठावहु, पुनि बुंदीपति डेरन आवहु ॥११९॥  
सुनि टाँका पठयो तब कूरम, इक१महासृग इक१ तुरंगम ॥

इक१ सिरुपाव इक१मनि भूखन, पठये दै इम संग सचिव जन २००  
तिन टाँका नृप अत्थ निवेदिय, संभर नाथ बिहसि स्वीकृत किय ॥  
दैन लगे वसुँ कूरम दामन, सो नलयो रु गये जिम सासन ॥२०१॥  
दूजे२ दिन कूरम भूम बाँधन, संभर सिविर गयो हित साधन ॥

अगँ रीति मिलनकी अक्खी, पढ़ति सोहि अत्थ मिलि रक्खी २०२  
दुव२ सिरुपाव दोय२ हय दिन्नैं, इक१ इकही जैपुरपति लिन्नैं ॥

मानिकराम व्यास नृपको तब, दुल्लयो हित अर्पित रक्खहु सब २०३  
तोहु न इत्थ द्वितीयन२ छल्लयो, अतर१ पान२ लहि कूरम चल्लयो ॥  
हुलकर डेरन जाय मिल्यो पुनि, सुनत मत बुंदीन बिरुद धुनि ॥२०४॥  
हितपूर्व बैठे इक१ आसन, सुख सह होन लग्यो संभासन ॥

कूरम तत्थ कैरार न राख्यो, लोभ उदंतेँ समझैहि भाख्यो ॥२०५॥  
॥ दोहा ॥

कूरम नाम मलूक१ इक, पंचायण कुल जात ॥

आमैर पै अरधयो वहै, बखसि गाम बसुँ जात ॥ २०६ ॥

बुंदीपुर आयत्त पुर, गैनोली अभिधान ॥

सहित परगन सो दयो, थिर कूरम तिहिँ धान ॥ २०७ ॥

॥ ११८ ॥ १ जिस पीछे २ दहबड़ (श्रीधर) ॥ ११९ ॥ ३ हाथी ॥ २०० ॥ ४ धन  
१ कछवाहे के सेवकों को २ ईश्वरसिंह की आज्ञानुसार कुछ न लेकर पीछे  
गये ॥ २०१ ॥ ७ मिटानेवाला ॥ २०२ ॥ ८ स्नेह के साथ नजर किये हुए ॥ २०३ ॥  
॥ २०४ ॥ ९ स्नेह पूर्वक १० लोभ की आर्त सन्मुख नहीं करने का करार किया  
था सो नहीं रक्खा लोभ का ११ कृतान्त १२ स्वरूप ही कहा ॥ २०५ ॥ १३ आमैर  
के पति ने १४ धन का समूह ॥ २०६ ॥ १५ बुंदी नगर के अधीन पुर ॥ २०७ ॥

ताकी बत्त मलार सन, कूरम कहिय बहोरि ॥

रक्खी सोहि मलूक हित, अवनि ओर दिय छोरि ॥ २०८ ॥

सुनि मलार अक्खी कुपित, किन्नौ तुमहिं करार ॥

बत्त समक्षहि लोभकी, क्यों ब करत छलकार ॥ २०९ ॥

बसुमति बुंदिय देसकी, लेसहु तुमहिं मिलै न ॥

कोबिंद रहत करारमैं, ठेले दहू ठिलै न ॥ २१० ॥

अतर १ पान २ यह अक्खि दै, कूरमको दिय सिद्धख ॥

सुनहु राम नृप यौ रही, प्रपितामहकी तिकख ॥ २११ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ उम्मेदसिंहचरित्रे सजदसूर्यमल्लकूर्मराजपरसैन्याऽभिमुखनिस्सरणाकृतपलायनव्यासगंगाधरतहुलकरनिकटाऽऽनयनमहारणारचनमेघाऽऽसाराऽन्तराऽपिनालीयन्त्रचक्रनतद्दिन ४ निर्याणायथास्थितसर्वकालक्षोपणमाधवाऽऽदियथाप्राप्तमकुष्ठाद्यशनद्वितीय २ दिनयुद्धभवनकोटाभटपोधसिंह १ मरणागंगाधरयोधनप्रकटीकृतप्रपातमिषकर्मराजनिस्सरणाविदिततद्दृष्टमल्लारो १ म्मेद २ माधव ३ सज्जीभवनेश्वरीसिंहाऽवरोधनगंगाधरजैपुरमार्गाऽवरोधनतद्देशलुट्टनाऽऽर्यपंचसहस्र ५००० सैन्यप्रेषणाभटप्रतिभटवृहत्समिद्विरचनतन्त्रे १ सेखाउत १

॥ १०८ ॥ १ लोभ की चार्ता अब सम्मुख क्यों करते हो ॥ २०६ ॥ १ जूमि ३ चतुर ॥ २१० ॥ १११ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में उम्मेदसिंह के चरित्रमें, जाट सूर्यमल्ल और ईश्वरीसिंह का शत्रु की सेना के सम्मुख निकलना १ व्यास गंगाधर का भागकर उनको हुलकर के समीप लेजाना २ महा युद्ध का रचना और मेघ धारा में भी तापों का चलाना ३ इस दिन घोड़ों की डोरें लिये यथास्थित समय धिताना ४ माधवसिंह आदि का मिला गया जैसा मोठ आदि को भोजन करना ५ दूसरे दिन छल छंकार कोटा के भट पोधसिंह का मरना और गंगाधर के युद्ध प्रकट करने से सुखाम करने के मिष से ईश्वरीसिंह का निकलना ६ इस के विदित होने पर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का सज्ज होकर ईश्वरीसिंह को रोकना ७ गंगाधर का जयपुर के मार्ग को रोकना और ईश्वरीसिंह के देश लूटने के अर्थ पांच हजार सेना को भेजना ८ भट

मरहठोंना उमेदसिंहको हुंड़ी दिलाना।सखमराणि-घड्डीवसमयूज (३५३३)

मनिं जिम उरग गुमाय नम्यो न करै फन उन्नति ॥

खट बसु तुरंग ससि १७८६ सक गिल्यो जयसिंह सु पुंदिय जहर ॥

जिवरीसिंह तस सुत अलह लई, घुमि ताकी लहर ॥ १ ॥

दोहा-हुंठारे इम हुंठि रन, गजे प्रसभ गलार ॥

सत्य कियो संकल्प निज, माधव १ हठु २ मलार ३ ॥ २ ॥

॥ संचरणागदम् ॥

या सीति जूनक जयसिंहनै संधा करि स्वीय करी अचला ईश्व-  
रीसिंह आतंकते छोरि आयो ॥

अरै हुंड़ीके दुर्ग तारागढमें नरूके कछवाह सिपाह रत्नकर  
दखेहे तिनको कछापबेको तिनके स्वामि नारव लदाना नगर ना-  
थ कुमार १ तथा हरनाथसिंह २ इनके उभय २को अगै करि लेजा-  
यबेको उदंत हुलकरसों कहायो ॥

तब जैपुरपतिके प्रस्थानके समय ए दोऊ २ नरूके कछवाह  
लार लेबेको मलारनै बुलाये ॥

अरु वे आदेस अधीन होय न आयै तब सत्तसय ७०० सौदी  
स्वकीय सेनाके संगही पानिप करि घेरिबेको पठाये ॥ ३ ॥

जहाँ मरहठगको जोरदार जयी जानि जैपुरको जोध जुग २सा-  
हसी सूबेदारकी संग भयो ॥

जब जयके मदमत्त महिमंडल मंडन उम्मेदसिंह १ माधव ३ मल्ला-  
र ३ कुंच करि देवगाँव बघेरा आनि मुकाम दयो ॥

तहाँतें सेना रखत रसाखेको तो टोडानगरकी राह चल्लायो ॥

अरु इन तीन ३नके अभयसिंह धन्वधराधीस तीर्थगुरु पुष्कर  
राज हो तासों मिलिवेको उत्साह आयो ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ १ पिता २ प्रतिज्ञा करके ३ श्रुति ४ अरु ५ नरूका ६ वृत्तान्त ७

हुकूम के आधीन ८ सवार ९ पलात्कार से ॥ ३ ॥ १० देवगाँव और बघेरा  
दोनों जुदे जुदे गाँव हैं परन्तु दोनों एक ही स्वामी के अधिकार में होने के  
कारण दोनों का नाम शामिल होने हैं ११ स्वामी (सामान) १२ नारवाड़ का पति



॥ दोहा ॥

हुलकर<sup>१</sup> कूरम<sup>२</sup> इहु नृप<sup>३</sup>, सेन अलप लें संग ॥पैत्ते पुक्खर<sup>४</sup> तित्थगुरु<sup>५</sup>, मरुपति मिलन उमंग ॥ ५ ॥

अभयसिंह चिरकालतैं, हो पतनी जुत तत्थ ॥

मिलि तासों बगरू बिजय, अक्खुपो सबन समत्थ ॥ ६ ॥

सुता नृपति जयसिंहकी, नाम बिचित्रकुमारि ॥

लये परगनां अनुज<sup>७</sup> तस, किय मंगल हित कारि ॥ ७ ॥

महिमानी करि मुदित मन, रक्षोरन अधिराज ॥

हुलकर<sup>१</sup> सालक<sup>१</sup> इहुनृप<sup>१</sup>, बुल्ले<sup>३</sup> जिम्मन काज ॥ ८ ॥राजगढेस किसोर<sup>१</sup>निज, भ्रात सहित मरुपाल<sup>१</sup> ॥माधव<sup>१</sup> संभर<sup>१</sup> च्पारि<sup>४</sup> मिलि, किय भोजन इक<sup>१</sup>धाल<sup>९</sup>हुलकर<sup>१</sup>मरुपति<sup>१</sup>के हु हो, पंग्घ सखापन अम्म ॥सोहु जिमायो रक्खि ढिग, सम्मद<sup>६</sup> पूरि समग्ग<sup>१</sup> ॥ १० ॥

बिनेस्यो बाजेराय तब, मद्य तजो मल्लार ॥

अभयसिंह पायो इहाँ, प्रसभ मंडि अति प्यार ॥ ११ ॥

इक<sup>१</sup>इक<sup>१</sup>गज दुव<sup>२</sup>दुव<sup>२</sup>अरब, इक<sup>१</sup>इक<sup>१</sup> बैर सिरुपाव ॥इक<sup>१</sup> इक<sup>१</sup>भूखन नगजटित, दिय तीन<sup>३</sup>न करि चाव ॥ १२ ॥लैं तिन तीन<sup>३</sup>हि मरुप जुत, आये पुनि अजमेर ॥अभयसिंह निंदा इहाँ, किन्नी सोदर<sup>६</sup> केर ॥ १३ ॥वखतसिंह मामक<sup>६</sup> अनुज, पहिलैं दिल्लिय पत्त ॥जवनन<sup>६</sup> दल हमसन लरन, आनत सुनियत अत्त ॥ १४ ॥

२ पुष्कर १ गये ३ तीर्थगुरु ॥ ५ ॥ ४ बहुत समय से ५ स्त्री सहित  
 ॥ ६ ॥ ६ उसके छोटे भाई माधवसिंह के परगने ॥ ७ ॥ ७ राठोड़ों का पति =  
 अपने साले माधवसिंह ॥ ८ ॥ ९ पाय बदल भाई पन १० हर्ष से पुरित  
 होकर ११ समग्र अथवा मार्ग सहित (रीति पूर्वक) ॥ १० ॥ १२ बाजेराय मरा  
 तब १३ अत्यंत स्नेह से हठ करके ॥ ११ ॥ १४ छोटे १५ अष्ट ॥ १२ ॥ १६ स-  
 होदर (सगेभाई) की ॥ १३ ॥ १७ मेरा छोटा भाई १८ पक्षियों की सेना ॥ १४ ॥



मरहठोंका और उमेदसिंहका बूंदी आना] सप्तमराशि-बह्विंशमयूख (३६३९)

बनें जंग तो बेगही, हुलकर करहु सहाय ॥

खुनि मल्लार स्त्रीकार किय, बहु सतकार बढाय ॥ १५ ॥

तदनु तीन३ अजमेर तजि, लगगे बुंदिय राह ॥

विचतैं पलटि बनायपुर, गो संभर नरनाह ॥ १६ ॥

ही सपत्न जननी१ तहाँ, अरु उड़ाउति नारि२ ॥

मिलि तिनसों पच्छो मुखो, बुंदी बिलसन धारि३ ॥ १७ ॥

मिलि माधव१ मल्लार २ सन, पुनि किय सजव प्रयान ॥

तीन३न सरित बनास तट, दिनैं आनि मिलान ॥ १८ ॥

उज्ज्वल पख इसमास तैंहँ, बुढ़े जलधँ कराल ॥

चढी सरितकी ओट करि, पलटे पच्छे खाल ॥ १९ ॥

दल विच जल गलवर्त्त वढि, बिथरयो डेरन बाय ॥

पानी१पवन२ तुपारं३ करि, मरे मनुज सत दोय२००॥२०॥

दूजे२दिन आवाँ नगर, पत्ते जल भय पाय ॥

टांडा त्यों पठयो जु दल, मिल्यो सु तत्थहि आय ॥ २१ ॥

सुखतैं रहि नवरत्त९ सब, तीन३न बितये तत्थ ॥

अष्टमि८ दिन मल्लार इक१, मंगायो महमत्त ॥ २२ ॥

॥ पट्पात् ॥

दूतन दिस दिस दोरि हठन हेरयो इक१ कासर ॥

तीन३ तीन३ बल बक पँटल गति संग पिडिपर ॥

अरुन अंखि अतिकोप दिपत उँलमुक दमकावत ॥

स्वास नाँस सननंकि धरनितल पपन धुजावत ॥

॥ १५ ॥ १ जिस पीछे ॥ ११ ॥ १७ ॥ २ शीघ्र ॥ १८ ॥ ३ आइवन मास. मयंकर  
४ मेह वरसा ५ नदी के पानी की रोक से नाले पीछे मुड़े ॥ १९ ॥ ६ गले पर्यंत  
७ टंड से ॥ २० ॥ २१ ॥ ८ मदमस्त ॥ २२ ॥ ९ महिष (भैला) १० पीठ पर छाये  
हुए तीन तीन बलवाले टेंडे सींग ११ अंगीरे के समान आँखें चमत'का हुआ  
१२ नाकों से श्वास धजकर

नहि सहन सहन औरन नदन गैवल जानि उद्धत आरिय ॥  
मानहु निहाय कालहिं कुपित संजमनी सन उत्तरिय ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

आन्यों अहर लुत्ताय वह, देवी हित बलिदैन ॥  
आरी असि हुलकर भपटि, लगी जैनमत लैन ॥ २४ ॥

॥ षट्पात ॥

सिंगन लागि समसेर तरकि तुट्टी हुलकर कर ॥  
तब जरत गुन तोरि चलयो दारुन छुटि दुद्धर ॥  
देखत यह हय दपटि भपटि संभर असि आरिय ॥  
सिंगन जुगल समेत बंस सह पिट्टि बिदारिय ॥

अरराय मंह सु इम खाय असि पाय उलाटि कटि खुलि परयो ॥

हुय लखि अचिज्ज मरहट्ट दल इत देविय बलि अहायो २५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मे  
दसिहचरित्रे प्रस्थापितकूर्मराजमल्लारो १ स्मेद २ साधव ३ पुष्करा  
ऽऽगमनमरराजाऽभयसिंहमिलानाऽनन्तरत्रय ३ प्रत्यागमनदण्डभणाय  
पुरबुंदीन्द्र १ सहितहुलकर २ कूर्म ३ वाशिष्ठीतटप्रपतनाऽकाला-  
ऽऽसारवर्षाशिविरसंप्लवनमितमानवमरणासर्वसैन्याऽऽवापुर्निवस-

१ अपने से चडे किसी अन्य का नाद सहन नहीं करता इसी कारण मानों  
२ दोनों सींग ऊपर अडे हैं ३ यमराज को छोड़कर क्रोधित हो ४ यमराज  
की पुरी से उतरा है ॥ २३ ॥ ५ मैंसा ६ जैनियों के मत (अहिंसा धर्म) को  
लेने लगी अर्थात् उस मैसा का कंधा नहीं कटा ॥ २४ ॥ ७ वह मैसा रस्सी  
तुड़ा कर ८ दोनों सींगों सहित ९ बांसे के हाड सहित १० सहिय ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में चम्पेदसिंह के चरित्र  
में चम्पेदसिंह का प्रधान करार लक्षार, चम्पेदसिंह, साधवर्द्धिह का पुष्कर  
गाना १ अभयसिंह से मिले पीछे तीनों का पीछा आकर अवायपुर को  
देख कर बुन्दी के पति सहित हुलकर और कछवाहे (साधवर्द्धिह) का बनाम  
नदी के किनारे सुकान करना २ बिना समय में धारा के वर्ष ने से ढेरों में  
लज भर कर थोड़े मनुष्यों का मरना और सब सेना का आवां नामक नगर में

कछवाहोंका कार्तिके बुंदी छोड़नेका करार] सप्तमराशि-सप्तविंशमयूख(३५३७)

नाऽऽश्विनोत्तरनव ९ रात्रपूज्यपूजनविधानबुन्दीन्द्रतिरस्कृतमल्लारम-  
ण्डलाग्रमहामहिषनिपातनविश्वेश्वरीबलिनिवेदनं पङ्क्तिशो २६ मयूखः

॥ २ ॥ ॥३०७॥

प्रापोन्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

किन्नो बुंदिय तजनको, कतिथ विसेद करार ॥

धौ बहु दिन आवाँ रहे, माधव१ हड्डरननार३ ॥ १ ॥

॥ पट्पात ॥

कन्या६ कौ रवि भुगि अस तुल७के क्षिय पंद्रह१५ ॥

प्रतिदिन सीत प्रगल्भ होत बालन विनु दुस्सह ॥

आवाँपुर इहिँ काल हड्ड१हुलकर२ अरु माधव३ ॥

दीप अर्मा३० करि दान अन्नकूटक किय उच्छव ॥

धव१ छव२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

मिलि तत्थ विम गंगाधर१ सु खत्री केसवदास२जुत ॥

करि मंत्र आनि भूपहिँ कहिय सुनहु बत्तबुध सिंह सुत॥२॥

पादाकुलकम् ॥

कासी विच सूरजन नृप संभर, रचिय राजमंदिर निर्काय वर॥

सो पंडित सूरजनारायन, मंगत रहन काज द्विज भुति मन॥३॥

यन१ मन२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥

वह आलपेँ निज काम न आवैं, पुण्य बढैं जो वह द्विज पावैं॥

निवास करना १ आश्विन के शुरू पक्ष में जषरात्रि में पूजन योग्य (देवी)  
पूजन के वसित बुन्दी के पति का मल्लार के खड्ग का तिरस्कार करनेवाले  
महिष को मारना और देवी के बलि देने का बच्चीसवाँ २१ मयूख समाप्त  
हुआ और आदि से तीन सौ सात १०७ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक सुदि पक्ष में १ इस कारण ॥ १ ॥ सूर्य ने १ कन्या संक्रांति को भो-  
गकर ४ प्रयत्न ५ स्त्रियों के बिना ६ दीयाली की असायास्या का दीपदान करके  
॥ २ ॥ ७ चहुवाण ८ ओष्ट महल (मकान) ९ स्तुति के मत से ॥ ३ ॥ १० स्थाग

मुनि नृप कहिय पुण्य तीरथ थल, है नहिँ \*देष विचारि  
लखहु भल ॥ ४ ॥

सूरजनारायन द्विज उद्धव, अद्वितीय तिन दिनन हुतो यह ॥  
खट ६ नास्तिक प्रतिभट बनि खंडै, मत खट ६ आस्तिक दृढ  
करि मंडै ॥ ५ ॥

सौत्रांतिकन<sup>१</sup> समूज उम्हारै, वैभाषिकन<sup>२</sup> सजोर बिडारै ॥  
योगाचारन<sup>३</sup> लखत उडावै, माध्यमिकन<sup>४</sup> मिलि गरब गुमावै ॥  
जैनन<sup>५</sup> जाल राहु गति प्रासै, लोकायतिकन<sup>६</sup> मुंडि निकासै ॥  
व्यास<sup>१</sup> अरु वेदान्त विचारन, गोनर्दीप<sup>२</sup> योग अवधारन ॥ ७ ॥  
दूजो कपिल<sup>३</sup> सांख्य विच सोहै, मीमांसा जैमिनि<sup>४</sup> मति मोहै  
द्विज पर अपर न्याय विच गोतम<sup>५</sup>, वैशेषिक वादी कणाद<sup>६</sup>  
सम ॥ ८ ॥

कासी विच पंडित यह असो, करै बाद जासो बुध कैसो ॥  
अगै यह तंते गंगाधर, गोन्हावन कासी तीरथ बर ॥ ९ ॥  
जवनन जानि गहन दल प्रेरयो, पंच<sup>५</sup>कोसि अंतर तिन हेरयो  
तंते तब सूरजनारायन, रक्खपो सरन छिपाय प्रीति पन ॥ १० ॥  
पुनि छन्नै दक्षिण पहुंचायो, यह उपकृत तंते उर आयो ॥  
पुनि राजामल मित्र सु पंडित, अग्र रक्षो हित दुहुन<sup>२</sup> अखंडित ॥ ११ ॥  
जब जयसिंह नगर बुंदिय लिय, सालमसूनु अंत्य पुनि अप्पिय  
तबहिँ राजमंदिर तीरथ थल, मित्र द्विजहिँ दिन्नै राजामल ॥ १२ ॥

\* देवे योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ । आश्रम के कुछ में जन्म लेनेवाला । छः हों  
नास्तिकों का शत्रु होकर खंडय करता था, इन छहों नास्तिकों के नाम छठे  
छन्द में बताते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ १-दिगंबर, २-चार्वाक ये छहों वेद नास्तिकों के  
हैं, जय घाणे छः आस्तिक बताते हैं १ वेदान्त के विधारने में दूसरा वेदव्यास  
२ पतंजलि के समाज योग को धारण करता है ॥ ७ ॥ ८ ॥ ५ पंडित ॥ ९ ॥  
४ पकड़ने को सेना भेजी ५ काशी की पुण्य भूमि की सीमा पांच कोस की है  
॥ १० ॥ ८ उपकार १ वह पंडित राजामल का मित्र था ॥ ११ ॥ १२ साब-

तबतैं रही विप्रकौ वह भुव, अब उम्मेद लाई बुंदिय भुव ॥  
 केसव१ अरु गंगाधर२ पातैं, बुल्ले नृपहिं दिवावन बातैं ॥१३॥  
 पक्षपात इनको नृप जान्यौ, पुनि वह तीरथ थान प्रमान्यौ ॥  
 द्विज वह पात्र कहा बुंदीपति, पै किम होय \*अदेय दैन मति१४  
 तब दोउन२हुलकर प्रति अकखा, रहैं टेक यह प्रभु तब रक्खा  
 सुनि मलार, बुल्लयो जिनकी भुव, तिनके दयैं विनां न मिलैं  
 भुव ॥ १५ ॥

तब दोउन२ छन्नैं छन्न किन्नौ, हुलकर नाम पत्र लिखि लिन्नौ  
 ताहीकी मुद्रा मुद्रित करि, पठयो दल पंडित हित अनुसरि ॥१६॥  
 तिहिं बुध लखि हुलकर दल आपो, बहुरि राजमंदिर अपनायो  
 नृप यह कैथ चिरकाँज माँहि सुनि, जन् जानी तब छिन्निलयो  
 पुनि ॥ १७ ॥

भट सेटूखइगड़ सु हुलकर, बुंदियपुर अग्गहि पठयो वर ॥  
 तिहिं करार अवसेस न धारयो, क्रूरम झंडा तांरि बिडारयो ॥१८॥  
 संभर बहरक मंडि सुहाई, फेरी पुर उम्मेद दुहाई ॥  
 जेपुर सचिव तत्थहो जाकैं, धूजत सैतत परी उर धाकैं ॥ १९ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

झंडा तूटतही जेपुरके सूरवीर बुन्दी हे तिननैं अपनी चढी तल्ल  
 को लैवो बिचारयो ॥

अरु बनिक जादूदास नाटानोको भानेज आमैर अधीस ईश्वरी-  
 सिंह उहाँ अमात्य रक्खपोहो तापैं त्रास डारयो ॥

तब वह बनिक घरके सूरनतैं घबराय बनिताके वस्त्र धरि छन्नैं  
 मसिह के पुत्र दखेलसिह के अर्थ ॥ १२ ॥ १३ ॥ \* नहीं देने योग्य में देने की  
 बुद्धि कैसे होती है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ हुलकर की छाप लगाकर २ पत्र ॥ १६ ॥  
 उम्मेदविह ने यह शक्या ४ बहुत समय पीछे सुनी ॥ १७ ॥ १ करार के दिन आकी  
 हैं सो नहीं सोचा ॥ १८ ॥ १ चहुवाण की धकता २ निरन्तर ३ अर्थ ॥ १९ ॥ ६ स्त्री के

कठि आवाँनगर गयो ॥

अरु खत्री केसवदाससौ अपनी आपत्तिको उदंत कहत भयो ॥ २० ॥  
कही सेटूखइराड करारके दिन अट्ट ८ \*अवसेसहे तथापि आमेर  
ईसको अंडा तोरिडारयो ॥

अरु यह जानि अपने सूरदासन चढ्यो हक लेवेको मोमें आस पाखो  
यह सुनतही खत्री केसवदास मलारतैं छूठि चलयो ॥

तब नीठिनीठि पछो मनाय हुलकरनैं सुतर सवार तत्कालही  
बुन्दी मुकलयो ॥ २१ ॥

तानैं जाय नगरमें बहोरि कछवाइनको कैतन रुपायो ॥

यह देखि चोतरफके लोकनके बुंदी आपबे में संदेह आयो ॥

तदनंतर करारके दिन पूरे होत आवाँ नगरतैं छैतनाको प्रया  
न भयो ॥

अरु उज्ज अहर्गनके अवदांत अर्द्धकी अष्टमी ८ के अह दंग  
दुबलान मिलान दयो ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजे दिन दुबलानतैं, किन्नों सबन प्रयान ॥

संभरको हुव सकुन सुभ, थिर रक्खन निज थान ॥ २३ ॥

ग्राम-दिसा रहि राजसुक १, बुल्लयो मोदित बानि ॥

जावक १ कंकर २ चकोर ३ ए, अग्रेसर हुव आनि ॥ २४ ॥

॥ पह्पात ॥

ताम्रचूड २ हुव बाम बाम बुल्लिय प्रसन्न स्वर ३ ॥

गंधनकुल ४ पुनि खैनक ५ बाम हुव भोजि ६ मधुर स्वर ॥

गदकि बाम गोमायु ७ बाम सारस ८ पैलि बुल्लिय ॥

॥ २० ॥ \* बाकी हैं तांभी ॥ २१ ॥ १ अंडा २ सेना का ३ कार्तिक  
सास की ४ आषे शुक्ल पक्ष की ५ दिन १ सुवास ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥  
६ राजसुखा नामक पक्षि विशेष ७ जावा और तातर आग का बोले ॥ २४ ॥  
१ मुरगा २ छछुन्दरी ३ चूहा ४ ऊँट ५ जूगाव (जीदह) ६ पुनि

सवली९ टिह्रिभ१० सुखद बाम बुल्लि रु हित खुल्लिय ॥  
गोबैतस११पुष्पसूची१२ बहुरि एहु पच्छिं दुव२ बाम हुव ॥  
दिस सव्य भयो पौरावत१३हु बैन भूपहितधाम धुव॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बायस१४ बुल्लिय बाम पुनि, बुल्लिय बाम तुरंग१५ ॥  
बाम बगध१६ मृगराज१७बलि, हुव तरच्छु१८ हित संग॥२६॥

॥ षट्पात् ॥

फेट१ बिहंग अपसव्य भयउ अपसव्य कपिंजर२॥  
पिंगैलिका३ अपसव्य भैरवाज४हु बिहंग बर ॥  
दक्खिन हुव पुनि दहिक५ भौंस६ दक्खिन रैव भासत ॥  
सलिल पूर अपसव्य कलस७ अतिलाभ प्रकासत ॥  
दिस बाम हितुं दक्खिन सरल तारा उत्तरि पोदकि८य१ ॥  
सुभ सकुन होत इत्यादि सब चाहवान भूपति बलिया॥२७॥

॥ दोहा ॥

हुलकर१ माधव२ दड नृप३, हंके संत्वर तत्त ॥  
पुर बुंदिय प्राकारके, बाहिर डेरन पैत ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नृप तद्दिन भोजन निम्माये, बुंदिय विप्र सबहि जिम्माये ॥

१ टीटोडी २ पच्छि विशेष ३ पच्छि विशेष ४ पची ५ कपोत श्री वान  
दिशा में हुआ ॥ २५ ॥ ६ बाघ (सिंह विशेष बघेरा) ७ सिंह और चीत  
वांसा हुआ ॥ २६ ॥ ८ फेट नामक पची ९ दाहिना हुआ १० चातक (पाकीहा)  
११कोचर पची दाहिना हुआ १२भरडुल (पच्छि विशेष १३अग्नि (लांग) १४ओध  
१५शब्द से शोभित हुए १६दाहिनी ओर जल पूरित बड़ा १७वाम दिशा से द-  
क्खि दिशा में १८काली चिड़ी खाँधी उतरी और १९शकुनचिड़ी (रुपागेल) श्री  
दाहिनी उतरी तारा और पोदकी आदि जितने शकुन यहाँ लिखे हैं इनका  
वर्णन 'वसंतराज' नामक शाकुन शास्त्र में बड़े विस्तार से लिखा है उतना  
यहाँ नहीं लिखा जासक्ता इस कारण पाठक लोग वहाँ देखें वह सटीक ज्ञान-  
सा है ॥ २७ ॥ २० शीघ्र २१ डेरों में पहुँचे ॥ २८ ॥ २९निम्माये (वनवाये)

हुलकर पुनि नारव हरनाथहिँ, कहि कहहु किल्ला सन साथहिँ ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

नारव हिय चाही नही, भट कहनकी बत्त ॥

बाहिर प्रीति दिखाय बलि, पठयो अनुचर तत्त ॥ ३० ॥

ताकी संगहि बाउला, संतू दिय मल्लार ॥

तारागढ पर जाय ते, सुल्लो कठन विचार ॥ ३१ ॥

किल्लाके सुभटन कहिय, हम निकसन जब व्हैहिँ ॥

नारव हरनाथहिँ लखहिँ, बहुरि चढयो हँक लैहिँ ॥ ३२ ॥

तव संतू पच्छो मुरयो, कहिय मल्लारहिँ आय ॥

नारव यह बैचक निपट, भटनन कहत जाय ॥ ३३ ॥

दित्री संतुव संग तव, हुलकर तुपक हजार १००० ॥

इन जाय रु हरनाथ वह, लिन्नो पकरि लैबार ॥ ३४ ॥

तिनकी संगहि कैद तव, नारव किल्ला जाय ॥

भीतरके कहे सुभट, खल परतंत्र खिसाय ॥ ३५ ॥

माँहिँ बीर उम्मेदके, रखे बिजय बिथारि ॥

आयो संतुव पुनि अधर, संभर आन प्रसारि ॥ ३६ ॥

सित कतिप द्वादसि १२ दिवस, कह्यो कूरम सत्थ ॥

रखे हह नरेसके, सबठाँ सुभर समत्थ ॥ ३७ ॥

अँडे संभरके गडे, पर केतन करि पात ॥

आन फिरी उम्मेदकी, दिस दिस विजय दिखात ॥ ३८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तेरसि १३ दिन अभिषेक मुहूरत, मन्त्र्यो सवन श्रेय गंगाकन मत

वेशीराम भट्ट कोटा सन, आयो कर्मन बेद विधि सासन ॥ ३९ ॥

१-नरुके हरनाथसिंह को ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ २-चही छह तनखा ॥ ३२ ॥

बहुत ठग है ॥ ३९ ॥ ४-लमाळी (बहुत झूठ बकनेवाला) ॥ ३४ ॥ १५ ॥ नीचे

॥ ३३ ॥ ३७ ॥ १-शत्रु की ध्वजा को निराकर ॥ ३८ ॥ ७-ज्योतिषियों के मत से



सहित अथर्व त्रयी३के पाठक, आनै संग बिप्र बुध आठक ॥  
सम्भुद जाय भूप बंदन क्रिय, उन सिराहि मंगल आसिख दिय ४०  
॥ दोहा ॥

लौ गुरु डेरन आंध नृप, बारसि रति बिताय ॥

प्रात चढत रवि इक १ पंहर, प्रविश्यो नगर सुभाय ॥ ४१ ॥

हुलकर १ माधव २ संग हुव, जैपुर सचिव समेत ॥

बहुवानन पति इम चलयो, निज अभिषेक निकेत ॥ ४२ ॥

मंडयो बनि कैन नगर मनि १, बंसन २ कैनक ३ बिसतार ॥

बिरह टारि धृति १८ बरसको, क्रिय बुंदिय शृंगार ॥ ४३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राधाबुम्मे-  
दसिंहचरित्रे आवापुरसर्वनिवसनकार्तिकव्यत्ययनगंगाधर १ केश-  
वदास २ शास्त्रिशिरोमणि सूर्यनारायणराजमन्दिरदापनकथनतद्वु-  
न्दीन्द्राऽनूरीकरणातन्ते १ खत्री २ कौहकयतदर्पणमल्लारसेटूबुंदीप्रे-  
षणातदकालकूर्मकेतनत्रोटनबुन्दीन्द्रध्वजाऽऽरोपणापलाइतनट्टाणि  
भागिनेयोक्तकुपितकेशवदासनिस्सरणहुलकरतदनुनयनपुनःपुरज-  
यपुरपताकीकरणसमयान्तमर्वप्रस्थानदृष्टशुभशकुनबुन्द्याऽऽगमन  
॥ ३६ ॥ १ तीनों वेदों के ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ अपने अभिषेक के स्थान में ॥ ४२ ॥

३ वनियों ने ४ दखों और ५ सुबर्ह को फैला कर ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उमैदसिंह चरित्र  
में सबका आवां नगर में ठहर कर कार्ती बिलाना और गंगाधर केशवदास  
का शास्त्र शिरोमणि सूर्य नारायण के अर्थ राजमंदिर देने को कहना और  
बुन्दीपति के अस्वीकार करने पर तंते गंगाधर और खत्री केशवदास का उस  
को छल से देना ? मल्लार का अपने उमराव सेटू खैराडा को बुन्दी भेजना और  
उसका बिना समय कछवाहे की ध्वजा तोड़ कर बुन्दी के पति की ध्वजा  
रोपना २ भागे हुए नाटायी के भानजे के कहने पर क्रोध करके निकले हुए  
केशवदास को हुलकर का पीछा लाना और बुन्दी नगर को फिर जयपुर की  
ध्वजा युक्त करना ३ करार के समय के अंत पर सब के गमन समय शुभ श-  
कुनों को देखकर बुन्दी आना ४ मल्लार का बल पूर्वक नरुके को गड़ से

मल्लारबलात्कारदुर्गनारवनिस्सारशासूच्यूलसम्भरविजयकेतुस्थाप  
नसंप्रदायगुर्वागमनकार्तिकशुक्लत्रयोदशी १३ दिनद्वितीय २ प्रहर  
मुखसाहित्यसहितप्रभुपुरप्रविशनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥३०८॥  
प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद अधिपति लखत, निज पुर रुचिर निकेत ॥  
पहुँचपो अगग प्रजानकों, दिष्टि प्रसादहिँ देत ॥ १ ॥  
जहाँ समरखंधी हन्यौ, नृप नारायनदास ॥  
वहै थान अभिषेकको, राजमहल आवास ॥ २ ॥  
तिहिँ मंदिर नृप जायकैं, निज कटिवंध निवारि ॥  
किय विधान विप्रन कथित; वेद निकेत बिचारि ॥ ३ ॥

अथसंक्षिप्तोऽभिषेचनविधिः ॥

तिल सरिसव संभारतैं, पहिलैं नृपहिँ न्दवाय ॥  
अधिपति जय उच्चार किय, गणक १ पुरोहित राय २ ॥ ४ ॥  
तदनंतर द्विजवर उभय २, जीवन १ भित्तुवराम १ ॥  
ईतरासन बैठे नृपहिँ, स्वजन दिखाये ताम ॥ ५ ॥  
नृप तिन जनन बिसासि अरु, बंधन सुरभी छोरि ॥  
संभरपति बुल्लयो अभय, विप्रन उचित बहोरि ॥ ६ ॥

निकाल कर बहुवाण की ऊँची ध्वजा को स्थापन करना १ संप्रदाय के गुन के  
आगमन से कार्तिक छुदि तेरस के दिन दोपहर के आदि में सब सामग्री सहित  
राजा के पुर में प्रवेश करने का सत्ताईसवा २ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से तीन सौ आठ ३०८ मयूख हुए ॥

१ दृष्टि से प्रसन्नता देता हुआ ॥ १ ॥ जहाँ पर बुन्दी के राजा नारायणदास  
ने २ समरखंधी नामक यवन को पहिले समय में मारा था ॥ २ ॥ ३ वेद  
का स्थान ॥ ४ ॥ अथ संक्षेप से अभिषेक की विधि कहते हैं ४ सरसों (धान्य  
विशेष) ५ समृद्ध से ॥ ४ ॥ ६ दूसरे आसन पर ७ तहाँ अपने लोकों को दि-  
खाये ॥ ५ ॥ ८ गौ का बंधन छोड़ कर ९ बहुवाणों का राजा लम्पेदसिंह ॥३१॥

पुनि तँहँ साक्री सांति किय, पुरोहित स उपवास ॥  
 बिसद माल उपर्वात इहिँ, भूखन सोभित भास ॥ ७ ॥  
 उचित मंत्र करि बेदि लिखि, बिधिवत होम बिधाय ॥  
 पढँ पंच५ गन नाम तिन्ह, सुनहु राम नरराय ॥ ८ ॥  
 शर्मवर्म१ अरु स्वस्त्यपन२, आयुष्य३ अभय४ नाम ॥  
 स्वापराजित५ जु पंचम सु, ए पंच५हि प्रभु राम ॥ ९ ॥  
 ॥ पादाकुलकम् ॥

कलस बहुरि संपातवान किय, पुरट मय रु सुंदर दरसन प्रिय ॥  
 नृप सितभूखन लेप माल्य लहि, तंदनु वन्हि सन दक्खिन दिस  
 रहि ॥ १० ॥

देख्यो वन्हि निमित्त बिचारन, उठ्यो प्रसन्न सिंखा करि धारन ॥  
 स्नानसाल पुनि नृपहिँ आनि द्विज, सौरभतैल न्दवायो नृप निज ११  
 ॥ दोहा ॥

सोध्यो पर्वत अग्रको, मिट्टातैँ नृप मैथ ॥  
 नाँकु अग्रको मृत्तिका, लाई श्रवनन तथ ॥ १२ ॥  
 हरिमंदिरकी मृत्तिका३, नृप उमेद मुख लाय ॥  
 इंद्रध्वज थल मृत्तिका४, ग्रीवाँ दिन्न लगाय ॥ १३ ॥  
 राजर्षजिरकी मृत्तिका५, हिय लाई करि खंड ॥  
 गजरैद उहृति मृत्तिका६ सोधे दुवर भुज दंड ॥ १४ ॥

१ इन्द्र की शान्ति की ॥ ७ ॥ २ करके ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ ९ ॥  
 ४ घड़े को धारा युक्त किया (अर्थात् घड़े से राजा पर जल डाला) ५ सोने  
 का ६ हीरों का आभूषण ७ जिस पीछे ८ अग्नि से ॥ १० ॥ ९ अग्नि का  
 शकुन देखा १० ज्वाला धारण करके उठा ११ स्नान करने के महल में १२  
 सुगंधिवाले तैल (हज्र) से ॥ ११ ॥ १३ राजा के मस्तक को १४ उदेई के चाम-  
 ले की मिट्टी १५ कानों के लगाई ॥ १२ ॥ १६ वर्षा ऋतु में इन्द्रधनु खड़ा होवै  
 उस स्थल की अथवा वर्षा के निमित्त यज्ञ किया होवै उस स्थल की मिट्टी १७  
 गरदन के लगाई ॥ १३ ॥ १८ राज्य के आंगन (चोक) की १९ हाथी के दांत से

मिष्टी० चानि तैदागकी, सोधी मिहि समस्त ॥

नदि संगमकी मृत्तिका०, लाई उदर प्रसस्त ॥ ११ ॥

नदी कुल दुव० मृत्तिका१ पंतुलीन दुहुँ आर ॥

मिष्टी१० गनिका क्षारकी, लाई कटि नृप मोर ॥ १६ ॥

गजसाक्षाकी मृत्तिका११, ऊर्ध्व उभय० सुप्रसाप ॥

गोसाक्षाकी मृत्तिका १२, दुव० नलकालेन लाप ॥ १७ ॥

आनि मंदुगं मृत्तिका१३, पंटी जुगल० पखारि ॥

रथ अरिउद्धत मृत्तिका १४, लो दुव० चरन सुचारि ॥ १८ ॥

सर्व अंग पुनि सर्व ए१४, मिश्रित करि लिपटाप ॥

पंच१ गेठप घटत बहुनि, दीनों स्नान कराप ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

भट्टाभेन पैठो पुनि भूपति, लगे पटन दिज बेद महाभारि ॥

च्यारि ४ चरन भैव सचिव च्यारि ४ जैहँ, करन लगे अभिमिक्षत

भूपकैहँ ॥ २० ॥

पूरव१दिस रदि द्वायाम दिज, मँधूत कनक घट१मिच्यो नृप निज ॥

हाथाउत मोहर २ दिक्खन २ रदि, मिच्यो रोजन दुग्ध कलम २

गहि ॥ २१ ॥

एट् गोविंद३वनिक गदि पच्छिम३, मिच्यो मँदधि ताम्र घट३वे तिग

राई उमर ४ हरगत ४ दायाँ मुन, मिच्यो लो मिष्टी घट ४ जख

जल ॥ २२ ॥

कैहँ ॥ १४ ॥ १ लतापरी ॥ १५ ॥ २ लता के चिवासी (दायाँ) की कण्ठ के  
३ लता के १५ ॥ ४ लतापरी के १ पैठो की मलियों के लतापरी ॥ १७ ॥ ५ लता  
लाता की २ दायाँ पैठियों के १ लता के पच्छिम में उड़ी हुई ॥ १८ ॥ ६ मिच्यो  
का १२ घन, दुव, दरी, लाई और लता (सुपु) इन के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ १९ ॥ १ मिष्टीमय घट १४ लतापरी १५ लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ १६ ॥ १७ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ १८ लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ १९ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ २० लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ २१ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ २२ लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ २३ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ २४ लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ २५ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ २६ लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ २७ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ २८ लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥ २९ लता के चारोंपक्ष को चाम भैवला १२ ॥ ३० लता के चारोंपक्ष को चाम  
भैवला १२ ॥

रक्खहु\*बन्दि । सदस्यन उच्चरि, पुनि द्विज घटसंपातवान करि॥  
 राजसूय अभिसेक मंत्र कहि, सिंच्यो नृपहिँ पुरोहित हित चहि २३  
 पुनि व्है बेदीमूल पुरोहित, आय नृपति द्विग सुभ मति सोहित ॥  
 सत१०० छिद्रक संपातवान घट, लै पुनि सिंचिय नृपहिँ विहित  
 बेट ॥ २४ ॥

सर्वोपधि१ जल पुनि सिर सिंचिय, गंध उदक अभिसेक बहुरिकिय॥  
 तदनंतर बीजा३भिसेक हुव, पुष्पन४ सिंच फलान५सिंच्यो धुवर५  
 रतनन६ पुनि कुसजलन७ सिंचि द्विज, बहुरि कुस न मारिजत किय  
 नृप निज ॥

ऋग१वेदी पुनि विप्र मुदित मन, नृप सिर कंठ लगायो रोचन २६  
 चपारि४ वरन जल बहुरि रीति करि, सरित१ तड़ाग२ कूप३ जल  
 ४ घटभरि ॥

कल्पित ठानि चपारि४सागर जल, सिंच्यो नृपहिँ निर्गम मारग भल  
 भंगा१अरु जमुना२गिरि निर्भी३, इत्पादिक जल पूरि कलस वर  
 सिंच्यो नृपहिँ समोद समस्तन, दास भाव पुनि करन लागे जन२८  
 काहू सचिव छत्र१ गहि लिनो, काहू चमर२ सोरछल३ किन्नो ॥  
 वेत्र लैकुट४ कतिकन कर धारे, बंदिन नाना बिरुद विथारे ॥२९॥  
 भई सेख नउबत्ति गान ध्वनि, द्विजन सिराह्यो नृपहिँ वेद भनि॥  
 कनक कलस पुनि गैराक धारि कर, सिंच्यो भूपहिँ अखिख मं-  
 त्र वर ॥ ३० ॥

॥ २२ ॥ १ पशु करने पाले अश्वजों ने कहा कि \* अग्नि रक्षा करो यह  
 जलकण फिर ब्राह्मण ने १ घड़े को धारा युक्त किया ॥ २३ ॥ २ उचित मार्ग  
 से ॥ २४ ॥ ३ सब औपधियों से युक्त ३ नृपति के जल से ४ बीजों का अभिषेक  
 ॥ २५ ॥ ५ जल से ६ अभिषेक ७ गोरों के ॥ २६ ॥ ८ पारों समुद्रों  
 के जल की कल्पना करके ९ वेदमार्ग से ॥ २७ ॥ १० पर्वत के करने का ॥ २८ ॥  
 ११ घन की लकड़ी (छत्र) १२ गायों ने ॥ २९ ॥ १३ उपाधियों ने ॥ ३० ॥

प्रायःसंस्कृतशब्दमात्राभिधितभाषा ॥

ते कलु वृत्तन विविध वनाये, सुनहु राम नृप नृपन सुहाये ॥

सिंचहु सब सुर तोहि नरेश्वर, ब्रह्मा विष्णु२ तथैव महेश्वर ॥ ३१ ॥

रेश्वर१ हेडवर२ अन्त्यानुपासः१ ॥

वासुदेव१ अरु संकर्षण२ पदु, प्रद्युम्न ३ रु अनिरुद्ध ४हु सिंचहु ॥

इंद्र१ अग्नि२ यम३ निक्रंति४ पासी५, पवन ६ धनद ७ कैलासवि-  
लासी ८ ॥ ३२ ॥

ब्रह्मा९ सेस१० दस१०हि दिकपालक, रक्खहु तोहि भूप अरिसालक ॥

रुद्र१ धर्म२ मनु३ दत्त४ रु रुचि५ सुनि, श्रद्धा६ भृगु७ अत्रि ८ रु  
वशिष्ट९ मुनि ॥ ३३ ॥

सनक१० सनंदन११ सनतकुमार १२हु, पुलह१३ पुलस्त्य१४ मरी-

चि१५ तथा पदु ॥

कश्यप१६ अरु अंगिरा१७ प्रजापति, ए सिंचहु नृप तोहि महामति ३४

अग्निष्वात्त१ प्रभाकर२ ज्योही, पुनि क्रव्याद३ बर्हिपद४ त्योंही ॥

राज्यपा५ रु उपहूत६ सु काली७, अग्नि पितरसिंचहु माणिमाली१५

लक्ष्मी१ वेदी२ सर्वा३ रूपाति४ पुनि, अनसृपा५ स्मृति६ संभूति७

हु सुनि ॥

क्षमा८ प्रीति९ सन्नति१० स्वाहा११ तिम, रवधा१२ एहु मातरसि-

चहु इम ॥ ३६ ॥

लक्ष्मी१ क्रिया२ कीर्ति३ धृति४ पुष्टि५हु, मेधा६ बुद्धि७ सांति८ व-

पु९ तुष्टि१०हु ॥

लज्जा११ सिद्धि१२ तथा वसु१३ यामो १४, अरंधती१५ लेवा १६

नृप नामो ॥ ३७ ॥

मानु१ ७मुहूर्ता१८ विश्वा१९ साध्या२०, मरुत्वती२१हु चहुरि आसाध्या

संकल्पार्इत्वादि\*धर्मतिथि, सिंचहुसंभर तोहि सुजसप्रिय ॥३८॥  
दिति१ दनु२ अदिति३ अरिष्टो४ अरु मुनि ५, कद्रू ६ क्रोधवशा ७  
माधा८ शुनि ॥

विनता९ सुरभि१० रु कपिला११ काला१२, इतिमुख सिंचहु क  
इयप बाला ॥ ३९ ॥

पुनि बहुपुत्र सुपुत्रा भामा१, करहु विजय, तव बहुरि सयामा१ ॥  
विजय कृशाश्व बधू१ बिस्चहु उत, सुप्रभा१जया२प्रदर्शना३जुत ॥४०॥  
तिनको पुत्र१हु विजय बढावहु, सिंचहु भूप तोहि हित लावहु ॥  
भानुमती१रु विशाला२रुप्यो पुनि, मनोरमा३रु बाहुदाख्या४मुनि११  
सिंचहु इती अरिष्टनेमि तिय, पार्थिव तोहि बढावहु हित हिय ॥  
बहुला१ त्योहि रोहिणी२ राधा३, अनुराधा४ऐंदी५हतबाधा ॥४२॥  
मूल६ दु दुवर३आषाढा८ ज्योही, अभिजित९ श्रवणा १० धनिष्ठा  
११ त्योही ॥

वरुणा तारका१२ भाद्रपदा१४ दुवर, रेवती १५ दु दसम १६ भर-  
णी१७ ध्रुव ॥४३॥

विजय विथारन काज तोहि पहु, सुधामयूख प्रिया ए सिंचहु ॥  
सृंगी१हरि२रु मृगचर्मा३सुरभा४, पूता५कपिला६दंष्ट्रा७मुलभा८ ॥४४॥  
रवेतभद्रचरिका९ पुलस्त्य तिय, इती सोहि सिंचहु पुहवीपिय ॥  
इयेनी१अरु भासी२क्रौंची३तिम, धृतराष्ट्री४पंचमी सुकी५तिमा ॥४५॥  
दिनकर सूर अरुनकी ए तिय, सिंचहु हड तोहि करि हित हिय ॥  
आपति१नियति२रात्रि३निद्रापहु४, सव संस्थान हेतु ए सिंचहु ॥४६॥  
सेना१उमा२सची३रु वनस्पति४, धूमोष्णी५ गौरी६ शिवा७निरति८  
ज्योत्स्ना९ बुद्धि १० नंदिनी११बलया १२, आनृक्या१३हु तैरही १३

\*धर्म की छियां ॥ ३८ ॥ १ इत्यादि २ कश्यप की छियां ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥  
३ हे राजा ४ पीडा मिटानेवाली ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ५ चंद्रमा की छियां ॥ ४४ ॥  
॥४५॥ ६ सूर्य के सारथि ७ स्थिति के कारण ॥ ४६ ॥

सदया ॥ ४७ ॥

इती कालके अवयव जानहु, ते तव सिर अभिसेवन तानहु ॥  
 रवि१ ससि२ कुज३ बुध४ गुरु५ कवि६ सनि ७ तम८, सिंचहु ए  
 ग्रह नव६ आहिक९ सम ॥ ४८ ॥

स्वायंभुव१ स्वरोचिप२ औत्तम३, तामस४ रैवत५ चान्द्र६ छम  
 वैवस्वत७ सावर्णि८ दक्षसुत९, ब्रह्मसुत१० रु मनु धर्म सुत११हु  
 नुत ॥ ४९ ॥

रुद्रपुत्र१२ पुनि रौच१३ भौत्य१४पहु, ए मनु तोहि चतुर्दश१४सिंचहु ॥  
 विश्वभुक्१ रु विश्वप२ चित्र३हु सुनि, बहुरि सुशांत४ सुमुख विभु  
 ५ त्यों पुनि ॥ ५० ॥

मनोजव६ रु ओजस्वी७ बलि८ जुत, एकतम९ रु अंतिक१०पुनि  
 वृष११ नुत ॥

कृतिधामा१२ रु दिविस्पृक१३ सुचि१४ पहु, देवपाल ए चउदह१४  
 सिंचहु ॥ ५१ ॥

अरु रेवंत१ कुमार२ रु वच्चा३, बीरभद्र४ नंदी५ हु सुवच्चा ॥

रुवच्चा१सुवच्चा२अन्त्यानुमासः १ ॥

पुरोजवारुय६ विश्वकर्मा७पहु, सुरन मुख्य तोकाँ ए सिंचहु ॥ ५२ ॥  
 आत्मा१ रु असुमान२ दक्ष३हु जिम, हविष४ गविष्ठ५प्राणा६पटु७  
 अत८ तिम ॥

सत्य६रु आह्य१०नरसँ सुद्वजस, सिंचहु देर अंगिरस ए दस१०।५३।  
 क्रतु१ रु दक्ष२ वसु३ सत्य४ काल ५ मुनि ६, रोचमान७ धृतिमा-  
 न८ मनुज९ पुनि ॥

विश्वेदेव काम१०जुत दस१०मित, हड्ड नृपति सिंचहु ए करि हित५४  
 मृगव्याध१रु सर्प२रु निर्मृति३ जिम, अजैकपात४ रु अहिर्बुध्न्य५

॥४०॥ १समय क २ राहु ३ केतु ॥४८॥ ४ समर्थ ५ स्तुति योग्य ॥४६॥ ५० ॥

६ देवों की रक्षा करनेवाले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ७ शुद्ध वंशवाले राजा ॥ ५१ ॥ ५४ ॥



तिम ॥

पुष्पकेतु ६ बुध ७ भरत ८ मृत्यु ९ पशु, किंकिणि १० स्थाणु ११  
रुद्र ए सिंचहु ॥ ५५ ॥

भावन१—२सुजन्मसुजन४जिम, पाजरु ज्यसुत६सुवर्णावर्णा७तिम  
प्रसव८दल९आवय१०ऋतु११ए पशु, भृगु अभिधान देवता सिंचहु ॥ ५६ ॥  
मन१ मरु२ प्राणा३ अपान४ हंस५ हय६, नारायणा ७ रु जगद्धित  
८ रन६ नप१० ॥

दिविश्चष्ट११विभुचिति१२तोकोँ पैहु, इते साध्य संज्ञक सुर सिंचहु ५७  
धाता१मित्र२अर्यमा३दृगजग, पूषा४शक्र५अंश६वरुणा ७ रु भग८ ॥  
त्वष्टा ९ विवस्वान १०, सविता ११ पशु, विष्णु १२ बहुरि बारह १२  
रवि सिंचहु ॥ ५८ ॥

एकज्ज्योति१द्विज्ज्योति२जथा, त्रिज्ज्योति३चतुज्ज्योति४पुनितथा ॥  
पंचज्ज्योति५ एकशक्र६हुभल, इंद्र७द्विशक्र८त्रिशक्र९महाबल ॥ ५९ ॥  
प्रतिसकृत १० रु मित ११ सम्मित १२ अमित१३ हु, ऋतजित १४ स-  
त्यजित१५रु सुषेणा १६पहु ॥  
इयेनजित१७रु अतिमित्र १८ मित्र१९ जिम, पुरुजित २० धाता २१  
अपराजित२२ तिम ॥ ६० ॥

ऋत२३ऋतवान २४ विधूत २५ ध्रुव२६ज्योँहीँ, बरुणा २७ विदारणा  
२८ ईदृश २९ त्योँहीँ ॥

अन्यादृश३० एतादृश३१ जानहु, क्रीडन३२ मुनि३३ अमिताशन ३४  
मानहु ॥ ६१ ॥

शक्ति३५ महातेजा३६ हु सरभ३७ जुत, महायशा३८ क्षिप३९ धा-  
तुरूप४० नुतँ ॥

भीम ४१ सहव्युति ४२ अतिउक्त ४३ सुनयँ, अनाधृष्य४४ बपु४५

॥ ५९ ॥ १ नाम ॥ ५६ ॥ २ हे प्रभु ३ साध्य नामवाले ॥ ५७ ॥ ५८ ॥  
॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ स्तुतियोग्य ५ अष्ट नीतिवाले ॥ ६२ ॥

वास४६ काम४७ जय४८ ॥ ६२ ॥

गुनि विराट४९ इंद्र मित्र पट्ट, नव जलाधि४९मित मरुतगन सिंचहु,  
चित्रांगद१ रु चित्ररथ२ जैसैं, चित्रसेन ३ वीर्यवान तैसैं ॥ ६३ ॥

ऊर्णाशु४ अनघ५ उग्रसेन६ पुनि, सोम७ सूर्यवर्चा८ तृष्णाप९ मुनि  
दिविदिचित्र१० धृतराष्ट्र११ कर्ण१२ जिम, कलि १३ अंगिरा १४

दुराध१५ हंस१६ तिम ॥ ६४ ॥

नृपपत्नी१७ नारद१८ पञ्चर्जुन१९ हु, हाहा२० बूहू२१ विश्वावसु२२  
पट्ट ॥

ताम्रक२३ सुरुचि२४ हु गंधर्वन गन, ए नृप सिंचहु तोहि मोह  
मन ॥ ६५ ॥

आहूती१ रु शोभयंती२ जिम, वेगवती३ अरु आप्नुवती४ तिम ॥  
ऊर्क५ रु वैकरि६ वधु७ अमृतरुचि८, भू९ रुट१० भीरु ११ शोचयं

ती१२ सुचि ॥ ६६ ॥

भिन्न जाति एते अच्छरि गन, सिंचहु तोहि नरेस कित्तिधन ॥  
अनुत्तमा१ रंभा२ विश्वाची३, मनोवती४ मेनका५ घृताची६ ॥ ६७ ॥

सहजन्मा७ रु स्वरूपा८ जैसैं, सुकेसी९ रु पर्णाशा१० तैसैं ॥  
ऋतुस्थला११ पुंजिकस्थला१२ पुनि, प्रम्लोचा १३ रु पूर्वचिंती १४

मुनि ॥ ६८ ॥

सामवती१५ रु पंचचूड़ाख्या१६, अरु उर्वशी१७ अनुम्लोचाख्या १८  
चित्रलोखिका१९ विद्युत्पर्णा२०, तिलोत्तमा२१ रु सुगंधि २२ सुव

र्णा ॥ ६९ ॥

सुवपु२३ अदृश्यलक्ष्मणा२४ हेमा२५, मिश्रकेशि२६ अमिता २७  
आहेमा२८ ॥

आहेमा१ आहेमा२ अन्त्यानुमासः १ ॥

१ उनवास की गिनती वाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ २ यन्त्रियों का समूह ॥ ६५ ॥ १११३ कीर्ति  
ली है धन जिस के ॥ १७ ॥ ६८ ॥ ४ अष्ट वर्ष (रंग) वाली ॥ ६९ ॥ ७० ॥

रुचिका२९ सुवृता३० सुबाहु३१ जैसैं, सरस्वती३२ रु सुबोधा३३  
तैसैं ॥ ७० ॥

बहुरि पुंडरीका३४ रु सुदारा३५, सुगधा३६ रु सुगसा३७हु सुता ॥  
कामला३८रु सूनृतालया३९ज्यौं, वासोली४०रु हंसपादी४१त्यौं॥७१॥  
सुमुखा४२ रतीलात्तसा४३ इति पहु, अच्छी तोहि अच्छरी सिंचहु  
दैत्यराज पलदाद१ विरोचन२, धन्वी बाणा३तथा कीरतिधन ॥७२॥  
इत्यादिक लौ दैत्य दिव्य जल, सिंचहु तोहि हहुभूपति भल ॥  
बिप्रचित्ति१ आदिक सब दानव, सिंचहु तोहि मंत्रजित मानवा७३।  
हृत्प१ प्रहेसर२ वपास३ पुरुषादन४, पौरुषेय५ शैलेंद्र६वध७ रसनन्द  
विद्युत९ सूर्य१० सुकेशी११ मखदा१२, सिंचहु ए आद्यराक्षस  
तहा ॥ ७४ ॥

बलि सुसिद्ध१ मणिभद्र२ सुमन३ जिम, नंदन४ अरु कंडूति५ शंख  
६ तिम ॥

मणिमान७ रु बसुमान८ मंदार९, पिंगाक्ष १० रु प्रद्योत ११ म-  
हाजस ॥ ७५ ॥

चतुर१२ भीम१३सर्वानुभूति१४यम, पद्मचंद्र१५अरु मेघवर्णा१६सम॥  
भूतिमान१७ केतुमान१८ त्यौं वर, श्वेत१९ विपुल२० त्यौं भव्य२१  
प्रभाकर२२॥ ७६ ॥

मौलिमान२३ प्रद्युम्न२४ जपावह, कुमुद२५ बलाहक२६ यक्ष २७  
पक्ष सह ॥

विजयाकृति२८ बलाहक२९सु बीर३०हु, पद्मनाभ३१शतजिह्व३२  
सुगंध३३ हु ॥ ७७ ॥

रहु१ धहु२ अन्त्यानुपासः १ ॥

हिरण्याक्ष ३४ पहु पौर्णमास, सम सिंचहु राजवृद्ध ए सत्तम ॥

शंख१ रु पद्म२ मकर३ कच्छप४जिम, कुंद५मुकुंद६ रु महापद्म७  
१श्रेष्ठ नज्रोवाली ॥ ७१ ॥२ उत्तम ॥ ७२ ॥३मनुष्यों को सलाह में जातवय ला  
॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

७ ति

नीलखर्व९९ आय महानिधि, सिंचहु नव९हि  
 एकवक्त्र१सूचीमुख२ज्योही, छगल३विषाद४ उलूखल५  
 दुष्पूगा६ ज्वलनांगारक७ पुनि, कुंभमात्र८ उपवीर९  
 चक्रखध११ रु अकर्णा१२ महामन, पात्रपाशि१३

स्कंद

बहुरि वितुंड१६ प्रतुंड१७ इती पहु, तोहि  
 पुनि नाना मुख बाहु सिरोधर, दांत बिबुध अट्टाल  
 तेहु चतुष्पद पर शिवके गन१, सिंचहु तोहु दंड  
 महाकाल२ नरसिंह२ अग्ग करि, सब मातर३

ग्रहस्कंद१ नामक विशाख२ सह, नैगमेय३ ए सिंचहु  
 डाकिनि१योगिनि१खेचर१ भूचर१, सिंचहु तोहि  
 गंधकुमार१ विष्णु२ अरु अरुड३ हु, अरुणि४ महाखग्ग

गरुड६

संपाती७ जुत ए सुपर्णा सब, सिंचहु नृप उम्मेद तोहि  
 शेष१ अनंत२ बासुकि३ रु वामन४, कुंभ५  
 सुपर्णारि६ ऐरावत७अहिबर, महापद्म१०कंबल११  
 महानील१३ धृतराष्ट्र१४ बलादक१५, एलापत्र१६

महाकर्ण१९ गंधर्व२० सनस्विक२१, पुष्पदंत२०

२४ कुलिक२५

खररोमा२६ रु कुमार२७ धनंजय२८, शंखपाल२९ अरु

इत्यादिक सब आय नाग बर, सिंचहु तोहि महीप धर्मधर ॥८७॥  
ऐरावत१ अरु कुमुद२ पद्म३ जिम, पुष्पदंत ४ वामन ५ अंजन ६  
तिम ॥

सुप्रतीक७ अरु नील८ इते पहु, सुभठाँ तोहि महागज रक्खहु ८८  
विधिहंस१ रु शिवदृषभ२ प्रीति धरि, उच्चैश्रवा३ हय रु धन्यंतरि१  
कौस्तुभ१ शंख१ चक्र१ त्रिशिखाख्य२ हु, वज्र३ रु नंदक४ अस्त्र२  
समारूपहु ॥ ८९ ॥

अवनिप तोहि संचिकैँ ए सब, विजय बिथारहु तावकौन अब ॥  
वृद्धशाखा १ तप १ यश १ दम १, सत्य १ दान १ मख १ ब्रह्मचर्य१  
शम१॥ ९० ॥

आयु१ रु चित्रगुप्त१ ए जेते, सिंचहु तोहि कहे श्रुति तेते ॥  
दंड१ रु पिंगल२ मृत्यु३ काल४ पहु, अंतक ५ बालखिलप ६ जष  
मंडहु ॥ ९१ ॥

दिग्गो चपारि४ सुरभि१पुनि ज्यौंही, सब गायन जुत सिंचहु त्यौंही  
व्यास१ नाकुभैव२ शमन३ पराशर४, देवत्त५ पर्वत६ भार्गव७ तप  
पर ॥ ९२ ॥

जावालि८ जमदग्नि९ योगेश्वर१०, कण्व११ कुशारणि१२ वेदवाह  
१३ वर ॥

शुचिश्रवा१४ गाधेय१५ रु वर्द्धन १६, शूलकछप १७ अत्रि १८ रु  
कात्यायन१९ ॥ ९३ ॥

विदूरथ२० रु एकतर१ वत्ताक२२ द्वित२३, गौतम२४ भरद्वाज२५  
कुट्टिमृड२६ त्रित२७ ॥

शांडिल्य२८ रु मौद्वल्य२९ रु गालव३०, वृहदश्व३१ रु इभसुत ३२  
सारंगव ३३ ॥९४ ॥

चवक्रीत३४ जयजालु३५ घटोदर३६ रैवय३७ आत्मधामा३८ जैमि-  
नि३९ वर ॥

कुंभज४० दुंदु४१ रु मृदु४२ शुचि४३ तपमय, इधमबाहु४४ मृप४५  
बहुरि महोदय४६ ॥ ९५ ॥

एते मुनि अभिसेक रक्खि रति, सिंचहु तोहि उमेद मदीपति ॥  
पृथु१ दिलीप२ दुस्खंत३ भरत४ अथ, मुन५ ककुत्स्थ६ युवनाश्व७  
जयदूदथ८ ॥ ९६ ॥

अनेना९ रु मांधाता१० ज्यौंदी, शत्रुजित११ रु मुचकुंद१२ हु त्योंदी  
पुरुवरवा१३ इक्ष्वाकु१४ रु यदु१५ पुनि, अंवरीप१६ नाभाग तथा  
मुनि ॥ ९७ ॥

भूरिश्रवा१७ महाहनु१८ पुरु१९ जिम, वृहदश्व२० रु सुद्युम्न२१ भू-  
पतिम ॥

भूरिद्युम्न२२ तथा प्रद्युम्न२३हु, संजय२४ पुनि इतिमुख नृप सि-  
चहु ॥ ९८ ॥

परजन्यादि मेघ१ नाना तरु२, औपधि३ रत्न४ अनेक बीज५ वरु  
पुरुष अभ्रमैपांग१ भूत सरप५ भू१ जल२ तेज३ अनिल४ अरु अ-  
वर५ ॥ ९९ ॥

मन१ बुद्धि२ रु अव्यक्तात्मा१ पहु, एहु तोहि दहुन पति सिंचहु ॥  
रूपभौम१ अरु शिलाभौम२ जिम, पातालारूप३ नीलवृत्तिक-  
४ तिम ॥ १०० ॥

पीत५ रक्त६ सित७ असित८ भौम सब, अभिसिंचहु इत्यादि तो-  
हि अब ॥

जंबू१ शाक२ क्रौंच३ कुश४ पुष्कर५, प्लक्ष६ शाल्मली७ देहु  
स्वाम्य वर ॥ १०१ ॥

उत्तर कुरु१ ऐरावत२ अघहंत, केतुमाल३ भद्राश्व४ इलाहृत५ ॥  
 त्र्यो हरिवर्ष६ किंपुरुष७ भारत८, रम्भ्य९ खंड सिंचहु हित धारत १०२  
 इंद्रद्वीप१ कसेरु२ तथा पुनि, ताम्रवर्णा३ रु गभस्तिमान४ सुनि ॥  
 नागद्वीप५ सौम्य६ गंधर्व७हु, वरुणा८ अभय९ ए द्वीपहु सिंचहु १०३  
 हेमकूट१ हिमवान२ निपथ३ गिरि, नील४ श्वेत५ अरु शृंगवान६ फिरि  
 मेरु७ गंधमादन८ महेंद्र ९ जिम, माल्यवान १० अरु मलय११ स-  
 ह्य१२ तिम ॥ १०४ ॥

शुक्तिवान१३ गिरि ऋक्षवान१४ सुनि, विंध्याचल१५ गिरि पारियात्र  
 १६ पुनि ॥

इत्यादिक सब पुण्य गद्दीधरै, सिंचहु तोहि मद्दीपति संभरा ॥ १०५ ॥  
 ऋक१ यजु२ साम३ अथर्व४ च्यारि४ श्रुति, सिंचहु तोहि प्रसन्न  
 पाय नृति ॥

इतिहास१ धनुर्वेद२ आयु३ पहु, पुनि गंधर्व४ शिल्प५ उपवेदहु १०६  
 शिक्षा१ कल्प२ व्याकरण३ ज्योती, ज्योतिष४ छंद५ निरुक्त ६ हि  
 त्पौही ॥

सिंचहु अंग वेदके ए खट६, तोहि भूप उम्मेद बिहित बेट ॥ १०७ ॥  
 ए खट६ अंग रु वेद च्यारि४ १० पुनि, मीमांसा११ स्मृति१२ न्याय  
 १३ तथा सुनि ॥

अरु पुराणा१४ विद्याहु चतुर्दस१४, सिंचहु ए नृप तोहि महाजस १०८  
 पांचरात्र१ अरु वेद पाशुपत, कृतांत पंचक५ सांख्य४ योग५ मत ॥  
 विविध शास्त्र इत्यादि नरेश्वर, सिंचहु तोहि दिव्य जल घट कर  
 गायत्रो१ गंगा२ गांधारी३, जय बुल्लहु महाशिवा४ नारी५ ॥

सुर१ दानव२ गंधर्व३ यक्ष४ पुनि, राजस५ पन्नग६ मुनि७ मनु८  
 गो९ सुनि ॥ ११० ॥

देवनकी माता१० पुनि ज्यौंही, देवनकी पतनी११ सब त्योंही ॥  
 द्रुम१२ रु नाग१३ दैत्य१४ रु अच्छरि गन१५, अस्त्र१६ शस्त्र१७ रा-  
 जा१८ अरु बाहन१९ ॥१११॥

ओषध२० रत्न२१ काल२२ अवयव२३ जिम, स्थानक२४ पुराय आ-  
 यतन२५ सब तिम ॥

जीमूत२६ रु जीमूतविकार२७हु, उक्त अनुक्त बिजय विसतारहु११२  
 लवणोद१ रु दुग्धोद२ घृतोदक३, दधिमंडोद४ तथा मद्योदक५ ॥  
 त्योदक१ द्योदक२ अन्त्यानुप्रासः१॥

इक्षुरसोद६ रु सुदोदक७ वर, गर्भोदक८ सिंचहु ए सागर ॥११३॥  
 बहुरि चपारि४ सागर निज जल करि, सिंचहु तोहि कनक मय  
 घट भरि ॥

प्रपाग१ नैमिष२ प्रभास३ पुष्कर४, उत्तरमानस५ तथा ब्रह्मसर६ ॥११४॥  
 नंदकुंड७ गयशीर्ष८ पंचनद९, कालोदक१० रु स्वर्गमार्गप्रद११ ॥  
 त्योंहि अमरकंटक१२ शृगुतीरथ१३, कलिकालाश्रम१४ अग्निती-  
 र्थ१५ अथ ॥ ११५ ॥

गोतीर्थ१६ रु तृणाबिंदुकृताश्रम१७, जंबूमार्ग१८ रु तंडुलिकाश्रम१९  
 स्वर्ग२० कपिल२१ तीरथ अरु वातिक२२, त्यों आगस्त्य२३ महा-  
 सर२४ खंडिक२५ ॥ ११६ ॥

अंगद्वार२६ कुमारीतीरथ२७, कुशावर्त२८ विल्वक२९ अघहरकथ  
 नील१ रैवत२ रु अर्बुद३ पर्वत३०, शाकंभरी३१ सुगंधी३२ मुनि  
 मत ॥ ११७ ॥

कुब्जाम्रक३३ शृगुतुंग३४ रु कनखल३५, धारा३६ कुभा३७ क-  
 पिलाश्रम३८ भला ॥

अज्ञतुंग३९ अरु चमसोद्भेदन४०, अश्वगंध४१ कालंजर४२ बिन-  
 शन४३ ॥ ११८ ॥

१ देवताओं की ईश्वर्यांशुत्त ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥



रुद्रक४४ अग्नि४५ केदार४६ मोच४७ जिम, महालय४८ रुद्रदरीआ-  
श्रम४९ तिम ॥

नंदा५० ससित्तीरथ५१ रवित्तीरथ५२, वासवतीरथ५३ नासत्यक  
५४ अथ ॥ ११९ ॥

वरुणा५५ वायु५६ वैश्रवणा५७ तीर्थ पुनि, दुहिणा५८ ईश५९ यम६०  
अनल६१ तीर्थ सुनि ॥

विरूपाक्ष्यतीरथ६२ पवित्रजिम, धर्मतीर्थ६३ अक्षरित्तीर्थ६४ हुतिम १२०  
॥ रुचिरा ॥

ऋषि६५ वसुदेव६६ साध्य६७ मरुत६८ आदित्यक६९ रुद्र७० अगिरस  
७१ तीर्थ जिते ॥

विश्वेदेवतीर्थ७२ भृगुतीर्थ७३ रु प्लक्षप्रस्रवणा७४ सकल तिते ॥  
मानससर७५ वाराहसरोवर७६ सालिग्राम हरोवर७७ हू ॥

कामाश्रम७८ रु संपूर्व७९ सुपुत्रा८० त्र्योहित्रिकूट८१ महावरहू १२१  
चिद्रकूट८२ क्रतुसार८३ विष्णुपद८४ कापिल८५ वासुकि८६ तीर्थ  
महा ॥

सिंधूतम८७ सूर्यारक८८ कुंभक८९ पुंडरीक९० अविमुक्त९१ तद्वा  
तपोद्वार९२ सिंधूदधिसंगम९३ गंगासागरसंगम९४ हू ॥

अच्छोदक९५ रु बिंदुसर९६ मानस९७ फल्गुतीर्थ९८ सु मनोरमहू ॥  
लौहित्यक९९ कुंभावसुंद १०० पुनि धर्मारण्यक १०१ पुनि नमने ॥

वस्त्रापथ१०२ रु छागलेयक१०३ तिम वदरीपावन१०४ भव्यमने  
वन्दितीर्थ१०५ अरु मेषतीर्थ१०६ नृप हृष्ट सप्तऋषितीर्थ१०७ जुपै ॥

पुष्पन्यास१०८ कार्णश्व१०९ हंसपद११० अश्वतीर्थ १११ मणिमंथ  
११२ सुपै ॥ १२३ ॥

॥ हीरकम् ॥

दिविका ११३ अरु इंद्रमार्ग ११४ स्वर्णविंदु ११५ सिष्टजो ॥

॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

आहल्लक११६ ऐरावत११७ करवीर११८हु इष्ट जो ॥

भोगयश११९ वणिक१२० नागम१२१ नैराध्यामोचनकारुण्य१२२हु ॥

पापमोचनिक१२३ उद्वेजन१२४ संपूज्यारुण्य१२५हु ॥ १२४ ॥

कारुण्यहु१ ज्यारुण्यहु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

देवब्रह्मसर१२६ धृतसर१२७ दधिसरवर१२८ नाम जे ॥

सिंचहु इत्यादि सकल तीरथ सुख धाम जे ॥

मंडहु जय ए नरेस मेटहु अधसर्वकों ॥

तावक विथराय तेज खंडहु अरि बर्गकों ॥ १२५ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

गंगा१ रु न्हदिनी२ न्हदिनी३ सोता४ रु चक्षु५ नदी जथा ॥

तिम कांचनाक्षी६ सुप्रभा७ रेवा८ रु सिंधु९ न्हदा१० तथा ॥

अघओघ अंकुस पावनी११ विमलोदका१२ पुनि जानिये ॥

क्षिप्रा१३ रु शोण१४ रु तर्प१५ सरयू१६ चंद्रभागा१७ मानिये ॥ १२६ ॥

धूमा१८ सरस्वति१९ ओघनादा२० गंडकी२१ रु इरावती२२ ॥

पीता२३ विशाला२४ मानसी२५ रंभा२६हु सुद्ध सुहावती ॥

केशा२७ सुवेशा२८ देविका२९ रु सिवा३० विभागा३१ पावनी ॥

यमुना३२ देवन्हदा३३ वितस्ता३४ कौशिकी३५पुनि मुनि मनी१२७

चर्मवती३६ रु विदर्भिका३७ कुंती३८ रु अच्छोदा३९ धुनी ॥

तपती४० रु निर्विघ्ना४१ तृतीया४२ वंदना४३ श्रुतिमै सुनी ॥

सुरसा४४ रु इक्षुमती४५ अवन्ती४६ धूतपापा४७ गोमती४८ ॥

पुनि शोण४९ इक्षुकि५० वेदमाता५१ बाहुदारु५२सरस्वती५३॥ १२८ ॥

उपेनी५४ रु पर्णाशि५५ कुमुद्वति५६ वेदघुर्घुरदा५७ तथा ॥

पुनि सदानीरा५८ त्योंहिं बैराग्यमती५९ रु देवस्मृति६० तथा ॥

मंदाकिनी६१ रु पलाशिनी६२ रु पिसाचिकी६३ पुनि पिप्पली६४ ॥

तृपिका६५ दशार्णा६६ सिंधुरेखा६७ त्योंहिं करतोया६८ भली ॥ १२९ ॥

१ नामक ॥ १२४ ॥ २ तेरा ॥ १२५ ॥ ३ नदी ॥ १२६ ॥ ४ नदी ॥ १२७ ॥ ५ नदी ॥ १२८ ॥ ६ नदी ॥ १२९ ॥

दूजी२ कुमुद्वतिका६६ शिनीवाली७० कुहू७१ पुनि मंजुला७२ ॥  
 चित्रोपला७३ अरु चित्रवर्णा७४ शुक्ति७५ मोला७६ वाकुला७७ ॥  
 तापी७८ कपू ७९ अमला८० पयोष्णी८१ मंदग८२ निषधावती ८३  
 वेणा८४ सिता८५ दूजी२हु निर्विध्या८६ रु भोमा८७दुर्गती ८८१३०।  
 तोया८९ रु वैतरणी९० महामोरी९१ रु गोदा९२ मंगला९३ ॥  
 नृसमा९४ रु भीमरथी९५ रु जंबू६६ कृष्णवर्णा९७ सज्जला ॥  
 पुनि तुंगभद्रा९८हु तरंगिनि मंदगा९९ रु भयंकरा १०० ॥  
 वात्या१०१रु कावेरी१०२ रु कृतमाला१०३हु मुक्तिद संवरा ११३१।  
 पुनि ताम्रपर्णी१०४ पुष्पभद्रा१०५ उत्पलावति१०६ मद्रनी १०७  
 त्रिदिवाक्ष्या १०८ अरु वंशधोरा १०९ लांगुली११० सुभगा घनी  
 सुकुलावती१११ ऋषिका११२ रु ऋषिकुल्या११३ रु वरवेगा ११४  
 क्ष्या ११५ ॥  
 दूजी २ पयोष्णी ११६ मंदवाहिनि ११७ कालवाहिनि ११८ त्यों  
 दया ११९ ॥ १३२ ॥  
 व्योमा १२० रु देवी १२१ त्यों २ विशाला १२२ कंपला १२३ रु  
 सुवाहिनी१२४ ॥  
 दूजी२हु करतोया१२५ रु वेत्रवती१२६ सुभद्रा१२७हु गिनी ॥  
 ताम्रा १२८ रु अरुणा १२९ सुप्रकारा १३० अद्रिका १३१ रु हिर-  
 रामई१३२ ॥  
 पुनि२सुप्रकारा१३३दूसरी इषमा१३४रु अश्ववती१३५नई ॥१३३॥  
 आलोपला१३६ अरु आयगा१३७भासी१३८रु संध्या१३९भूप जे ॥  
 शाला१४० रु बड़वा१४१मालिका१४२वलयावती १४३हु अनूपजे  
 रु महेन्द्रवाणी१४४ बाहुदा१४५ दूजी२रु नीलोद्धतकरा१४६ ॥  
 वनवासिनी१४७ नंदा१४८ रु परनंदा१४९सुनंदा१५० अघहरा१३४।  
 वसुवासिनी१५१ पुनि आपगा इत्यादि सब यँह आयकें ॥

जल पाप नासक विविध निज निज दिव्य घट भरि लायकें ॥  
 उम्मेद नृप बर तोहि सिंचहु मंत्र इहिं गति बुल्लिकैं ॥  
 संपातवान हिरण्य घट गहि सिंचयो हित खुल्लिकैं ॥ १३५ ॥  
 वह कलस बर सब मिश्र जल जुत सर्व औषधि१ जल भायो—  
 सबगंध२ बीज३ प्रसून४ फल५ मणि६ नीर पूरित जो करयो ॥  
 सित सूत्र वेष्टित कंठ जो सितवस्त्र कर्त्तन चित्रयो ॥  
 पुनि छीर वृच्छलतातपत्रक सुद्ध हाटक जो भयो ॥ १३६ ॥  
 वह कलस लौ तब गणाक पुंगव उक्त मंत्र सुनायकैं ॥  
 सिंचयो नरेसहिं स्वस्ति पढि इम वेद सीति विधायकैं ॥  
 पुनि गंधतैलन अंग उब्बटि सुद्ध न्दानहु मंडयो ॥  
 सित वस्त्र धरि छवि मुकुर१ घृत२ बिच देखि जो द्विजकों दयो१३७  
 दधि१ दुब्बर२ चंदन३ कुंकुमा४ दिक द्रव्य मंगल भूपलै ॥  
 हरि पूजि हाटक मूर्तिमै उपचार अष्टि१६ अनूपलै ॥  
 मधुपर्क१ भूखन२ वस्त्र२कैं गणाक१७ पुरोहित२ पूजये ॥  
 पुनि बिप इतरहु पूजिकैं उनकेहु आशिष वहाँ लये ॥ १३८ ॥

॥ दोहा ॥

बिहित पट्ट१ बिप्रन तदनु, बंध्यो नृपति ललाट ॥  
 बंध्यो पुनि मनिगन जटित, नृप सिर मुकुट२ सुघाट ॥ १३९ ॥  
 वृष१ मार्जार२ तरलुकी, बहुरि सिंहकी खाल ॥  
 तर ऊपर क्रमतैं तबहि, डारी मंच बिसाल ॥ १४० ॥  
 तिन ऊपर उत्तम बसन५, दीनों बिसद बिछाय ॥  
 पुरोहित सु तिहिं मंच पर, दयो नृपहिं बैठाय ॥ १४१ ॥  
 द्वास्थ दिखाये पुनि नृपहिं, सचिव१ पौरजन२ ब्रात ॥  
 वनिक३ प्रकृति इत्यादि सब, कहि कहि कित्ति मुहात१४२

१धारायुक्त२सुवर्ण का घड़ा॥ १३५॥ ३वृक्ष की लताओं के छत्र सहित॥ १३६॥ ४काष्ठ  
 में॥ १३७॥ ५३८॥ ६१॥ ७चीते की॥ १३९॥ ८ध्वेत॥ १४०॥ ९द्वारपाल ने समझ ॥ १४१॥

ग्राम१ वसन२ गज३ हय४ कनक५, गो६ अज७ अवि८ गृह९ अपि  
गणाक१ पुशोहित२ उभय३ पुनि, पूजे नृप हित थप्पि ॥ १४३ ॥  
त्योहिं तीन३ कक१ साम२, यजु३, पाठक पूजे बिप्र ॥  
गोरस१ मोदक२ करि बहुरि, सबहि जिमाये छिप्र ॥ १४४ ॥  
रजत१ कनक२ गो३ वस्त्र४ तिल५, अन्न६ पुष्प७ फल८ हेम९  
भूमि१० दान इत्यादि सब, दिय बिप्रन हित छेम ॥ १४५ ॥  
पुनि करि अग्निं प्रदच्छिना, धनुस्त्र१ बान२ कर धारि ॥  
परति पिष्टि लृप१ धेनु२ की, गुरु वंदन उच्चारि ॥ १४६ ॥  
तदनु बिहित लच्छन ललित, जातिमान हय लाय ॥  
सर्वोपधि जल कलस करि, दीनों सुबिधि न्दवाय ॥ १४७ ॥  
वस्त्र१ कनक२ भूखन३ बितरि, पढे पुशोहित मंत्र ॥  
करहु श्रवन तिन अर्थ कछु, संभर राम स्वतंत्र ॥ १४८ ॥  
तू जय हय१ तू राजहय२, आय३ इंदिंराजात४ ॥  
जिम यह राजा१ नरनपति, तूर जिम हयन सुहात ॥ १४९ ॥  
आरोहैं गंधर्व जिम, नित्य तोहि नरनाह ॥  
तिम रक्खहु नरनाहको, सदा पूज्य बरवाह ॥ १५० ॥  
नृपहिं दिखावहु स्वप्नकरि, आवैं जबहि अरिष्ट ॥  
पुनि रक्खहु सब हय धरयो, यह भर तोपर शिष्ट ॥ १५१ ॥  
अबतैं यह नृप भक्ति करि, आवहिं तेरे अगग ॥  
गंध१ माल२ अनुलेप३ करि, पूजहिं प्रीति समगग ॥ १५२ ॥  
स्वस्तिवचन१ आशिप२ विविध, बिप्रनकेहु पढाय ॥  
तोहि हहु नृप पूजिहै, पटोचित हयराय ॥ १५३ ॥  
सैधवा१ रक्खहु पूर्व१ तैं, दाखिन२ तैं यम२ तोहि ॥

पच्छिम३ उत्तर४तैं सदा, बरुन३ संभुसख४ सोहि ॥ १५४ ॥  
 सब दिसतैं रक्खहु सबहि, पूज्यो हय इहिं राह ॥  
 गणाक१ पुरोहित२ भूपको, बहुरि चढायो बाह ॥ १५५ ॥  
 तदनंतर बैरन बिहित, आन्यों रचि, सनमान ॥  
 मंत्र सुनाये गणाक बर, ताके दक्खिन कान ॥ १५६ ॥  
 नृपको गजपति होहु तू, श्रीगज कीनों भूप ॥  
 गंधादिक पूजा सदा, लहिहै तू जयरूप ॥ १५७ ॥  
 नृपको रक्खहु नागपति, रन१ मगर गृह३ सब ठाम ॥  
 तजि पसुभावहिं दिव्यता, ले हुव पीलुललाम ॥ १५८ ॥  
 ऐरावतगजको तनय, नाम अरिष्ट सिराहि ॥  
 देवासुर रनमें सुन, कीनों श्रीगज चाहि ॥ १५९ ॥  
 तोबिच ताको तेज सब, आवहु नागन नाह ॥  
 नृपहिं चढायो पूजि इम, इम पर बिहित उछाह ॥ १६० ॥  
 गणाक१ पुरोहित२ सचिव३ भट४, भये गजन चढि संग ॥  
 होय महापथ निज नगर, फिरे अतीव उमंग ॥ १६१ ॥  
 देवालय जहँ जहँ मिले, तहँ तहँ पूजन कीन ॥  
 परिकर जुत प्रासाद पुनि प्रविश्यो भूप प्रवीन ॥ १६२ ॥  
 सचिव१ भटार२२२दिन विविध वसुं, दान१ मान२ सनमानि ॥  
 बिप्र जिमाये अयुत १०००० मित, आभनाय विधि आनि १६३  
 दीन१ अनाथ२ हिं दक्खिना, विविध उचित्त बहु दत्त ॥  
 सिक्ख सबन दिय स्वरित सुनि, भूप असन किय तत्त १६४  
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमःशराशावुम्मेदः

॥ १५४ ॥ १ घोड़े पर ॥ १५५ ॥ २ उचित्त हाथी ॥ १५६ ॥ १५७॥१५८॥  
 ॥ १५९ ॥ १६० ॥ ३ राज मार्ग (प्राजार) में ॥ १६१ ॥ १६२॥४ धन से वेदविधि  
 से ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम रश्मि में, उम्मेदसिंह परिश्र

मिहचरित्रेबुन्दीप्रविष्टहृद्देन्द्राऽभिषेकविधिवर्णनमष्टाविंशोमयूखः ॥  
॥ २८ ॥ आदितः ॥ ३०६ ॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पंच गगन धृति १८०५ सकसमय, बाहुलं पक्षव बैलच्छ ॥  
रतिपति तिथि १३ नृपकै भयो, अभिसेचन इम अच्छ ॥ १ ॥  
पुनि किन्नौ जिन जिन तिलक, अभिसेचनके अंत ॥  
क्रम संन तिन नामन कहाँ, सुनहु राम छितिकंत ॥ २ ॥  
प्रथम पुगोदित निज तिलक, किन्नौ किंतुव १ नाम ॥  
तदनंतर उपदेस गुरु, विरच्यो बेण्णिपराम ॥ ३ ॥  
तदनु तिलक मल्लार ३ किय, पुनि माधव ४ कछवाह ॥  
इहि दिन इन गदिय अधर, रहि किय रीति निबाह ॥ ४ ॥  
साहिपुरप उम्मेद ५ नृप, पुनि किय तिलक प्रवीन ॥  
रानाउत संभू ६ बहुरि, रान सेनपति कीन ॥ ५ ॥  
तदनु कहैं मल्लारकै, किय नारव हरनाथ ७ ॥  
खत्रिय केसवदास ८ किय, सुमति बहुरि हित साथ ॥ ६ ॥  
देवगढप जसवंत ९ पुनि, मेघ १० बेघमप तत्थ ॥  
कोटापति कटकेस पुनि, अखैरान ११ कायत्थ ॥ ७ ॥  
बहुरि करोलीपति सचिव १२, सोपुर भूप वकील १३ ॥  
किन्न तिलक इन हे उभय २, हुलकर संग सु लीन ॥ ८ ॥  
साहिपुरेसहि आदि लै, सोपुर सचिव समेत ॥

नै, बुन्दी में प्रवेश होने और हाडों के हन्त्र के अभिषेक की विधि के वर्णन का अष्टाईसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ नव ३०९ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक २ शुक्लपक्ष ३ ज्योतिष में कामदेव की तैरस तिथि का पनि मानते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ ४ मन्त्रोपदेश करनेवाले गुरु ने ॥ ३ ॥ ५ नदी से नीचे ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ६ जिल पीछे मल्लार के कहने से ७ नरुके हरनाथ ने तिलक किया ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

नजरि निछावरि किन्न इन, अतिहित विनय उपेत ॥ ९ ॥  
 तदनंतर नृप उठिकै, दम्भ निवेदि हजार १००० ॥  
 कुलदेवी१ पूजन कियउ, रचि खोड़स१६ उपचार ॥ १० ॥  
 पीतांबर हरि२ पूजि पुनि, भेट निवेदन ठानि ॥  
 गिरि नितंब खासा महल, तँहँ संसद किय आनि ॥ ११ ॥  
 दुवर हय दुवर सिरुपाव इक१, गज मनिभूखन एक१ ॥  
 किन्नै इम६ नृपकी नजरि, हुलकर१ विनय विवेक ॥ १२ ॥  
 याही मित६ जयसिंह सुव, माधव२ उच्छव मानि ॥  
 किन्न नजरि बुंदीसकी, प्रीति उचित पहिचानि ॥ १३ ॥  
 संतू १पुनि हुलकर सुभट, इक१ हय इक१ सिरुपाव ॥  
 कंटक इक्क१पुनि कनैकको, किन्न नजरि करि चाव ॥ १४ ॥  
 इक्क१ इक्क१ सिरुपाव हय, इक१ इक१ नजरि विधाय ॥  
 रामराव२ हुलकर सचिव, अरु तंतै२ द्विजराय ॥ १५ ॥  
 सेटू४ मुख हुलकर भटन, किन्न नजरि इहिं रीति ॥  
 प्रेम१ सिवाईसिंह२ मुख, माधव भट सप्रीति ॥ १६ ॥  
 इमहि नजरि निज भटनकी, लै नृप संभरवार ॥  
 पठये डेरन सिक्खदै, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ १७ ॥  
 उदयनै२ कोटार कटर्क, हुलकर आयस पाय ॥  
 पत्ते पुनि निज निज पुरन, तेरसि१३ रति बिताय ॥ १८ ॥  
 दिवस चउदसि१४ गोठि करि, विविध भंति बुंदीस ॥  
 उभय२ जिमाये कंटक जुत, माधव१ हुलकर ईस ॥ १९ ॥  
 सह कुटुंब पहिरावनी, हुलकरकी नृप कीन ॥  
 दुवर बाजी सिरुपाव दुवर, इक१ गज अप्पि नवीन ॥ २० ॥

॥ ६ ॥ १ जिस पीछे ॥ १० ॥ २ पर्वत के शिखर पर ३ सभा ॥ ११ ॥ १३  
 ॥ १३ ॥ ४ कड़ा (कंकण) ५ सुवर्ण का ॥ १४ ॥ ६ किया ॥ १५ ॥ ७ आदि ॥ १६  
 ॥ १० ॥ ८ सेना ९ आज्ञा पाकर ॥ १८ ॥ १० सेना सहित ॥ १६ ॥ २० ॥



## ॥ पादाकुलकम् ॥

नव९ हीरन सिरुपेच१ सुभाषक, रंग गुलाब जटित मधनायक ॥  
 बुधसिंह जु आलम सन लिन्नौ, सो नृप यहुँ मल्लारहिँ दिन्नौ॥२१॥  
 इक१ बारन तंते२ द्विजकोँ दिय, इक१ त्योंहीँ संतू२ हित अप्पिय  
 रामराव ३ मल्लार सचिव हित, गज रूपपय दिय पंच ५००० सहँस  
 मित ॥ २२ ॥

इतनेहीँ सेटू४ हित अप्पे, थिर ए च्यारि४ स्वीयै करि थप्पे ॥  
 रामराय सुत आनँदराव५हिँ, इक१ अब्बहिँ दिय इक१ सिरुपावहिँ२३  
 पूरबियाद्विज बालकृष्ण६हित, हय१ सिरुपाव१दम्म द्वैसत२००मित॥  
 हुलकर दून स्वामि७ हित दीनेँ१, इक१ इक१हय सिरुपाव नर्वानेँ २४  
 ॥ दोहा ॥

अश्वनके अनुचर सहित, सबको इम सतकार ॥

बुंदीपति करि करि विविध, क्रिय प्रसन्न मल्लार ॥ २५ ॥

## ॥ सचरणमयम् ॥

अगँ बल्लभ कुल दीक्षा ही सोतो गोस्वामि गोपीनाथनेँ मंत्र  
 दैवेकोँ न आय मिटाई ॥

तव रामानुज दीक्षा लै रु रनपंडित महारावराजा उम्मेदसिंह  
 अँसै आभैरके उदरतैँ बुंदी कढाई ॥

अब तखत बैठतहीँ देस १ मैँ जयश्रीरंगनाथ कहिवेकोँ हुकम  
 चलायो ॥

अरु पत्र २ महुरछापन ३ मैँ प्रीतिपूर्वक श्रीरंगनाथ नामधेयँ  
 लिखायो ॥ २६ ॥

अरु अगँ अपनेँ पिता पितामहादिकनकी दान करी पृथ्वी

समस्त संप्रदानकों खोजि खोजि बुलाय दीनों ॥

अरु अपनी आपत्तिमें सूरवीर सुभटादिक समस्त स्वामिधर्मों  
सेवामें रजू रहे तिनकों ग्राम १ गज २ बस्त्र ३ बाजिधनकी वस्त्र-  
सीस कीनों ॥

उनके अभिधान रावराजेंद्र रामसिंह सुनिबैकों सावधानी करिये ॥

अरु प्रपितामहके वितरण वारिधियों विद्वज्जन बानीके तरंग  
करि तरिये ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डा हरजन १ सचिव हित, दै सिविका गज दास ॥

हिंडोली पुगसों दपो, पटा सहेस पंचास ५०००० ॥ २८ ॥

देव नति सिवसिंह सुन, भारत २ हित बुंदीस ॥

पत्तन १ खेड़ा १ सों पटा, दपो सहेस चालीस ४०००० ॥ २९ ॥

अमरसिंह रडोर सुत, अभय ३ सिंह हित तत्त ॥

पटा सहेस छत्तीसको ३०००, पुर अलोद ३ जुत दत्त ॥ ३० ॥

नाथाउत पितृल तनय, जयसिंहहि ४ चहुवान ॥

पटा हजार पचीस २५००० जुत, नगर दपो निम्मान ॥ ३१ ॥

बंधु भवानीसिंह ५ भट, महासिंह हर हेत ॥

बीस हजार २०००० पटा दपो, धोवड़ २५ दंग समेत ॥ ३२ ॥

मेगसिंह ६ सामंतदंग, हड्डा अरथ अनूप ॥

पटा सहेस धृति १८००० जुत दपो, भजनेगी ६ पुर भूपा ३३

हरदाउत हिंदू सुतज, नाहर ७ को हित संग ॥

पटा सहेस पंद्रह १५००० सहित, दिवउ पगार्गी ७ दंग ॥ ३४ ॥

तोक ८ महासिंहोत हित, प्रथित दिखावत प्यार ॥

१ दान खेनचालों को २ नाम ३ दान रूपा ४ समुद्र को विद्या लोनों का  
पार्गी रूपा ५ नाय मे ॥ २७ ॥ २८ ॥ ६ देवसिंह का पौता ७ पुर ॥ ३१ ॥  
॥ ३० ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ८ विदित

दंग जैतगढ सौ दयो, पटासु पंति १० हजार १०००० ॥ ३५ ॥

दसरथसिंह ६ प्रयाग सुत, महासिंह सु कुलीन ॥

अठ सहेस ८००० को तिहि पटा, सुहरनि ९ पुर समदीन ॥ ३६ ॥

मुहुकमहर मरजाद सुत, भट नगराजन अत्थ १० ॥

पंच सहेस ५००० को दिय पटा, नगर मोठसम १० सत्थ ॥ ३७ ॥

बुल्लि सिवाईसिंह ११ भट, अमर कबंधज ताहि ॥

पंचसहेस ५००० को दिय पटा, चंद्रवाट ११ पुर चाहि ॥ ३८ ॥

पंचोली माथुर प्रथम, मयाराम १२ कायत्थ ॥

दियउ गाम बहु द्रव्य जुत, सह सिरुपाव समत्थ ॥ ३९ ॥

पटा स्याम धात्रेय १३ हित, दै मिति तीन हजार ३००० ॥

तारागढ निज दुग्गको, किन्न सु किल्लादार ॥ ४० ॥

महडू चारन दान ४१ हित, संभर प्रीति प्रकासि ॥

सहेस पंच ५००० के ग्राम दिय, ठीकरिया शबरवासि २ ॥ ४१ ॥

स्वीय भट्ट जगराम सुत, बुल्लि भवानी १५ गाम ॥

मुद्रा दोय हजार २००० मित, दयो सहेसपुर गाम ॥ ४२ ॥

इत्यादिक सब सेवकन, दै धन धाम उदार ॥

करन बिदा मल्लारकाँ, बलि किय चित्त बिचार ॥ ४३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-  
दसिंहचरित्रे पुरोधः १ सम्प्रदायगुरु २ मल्लार ३ माधव ४ आदिः  
रावराणामाङ्गल्यतिलकाऽऽदिकरणाहङ्गेन्द्रहरि १ कुलदेवी २ पूजन  
पूर्वकविहितप्रासादप्रवेशनहुलकर १ कूर्म २ प्रभृतिगज १ हय २  
भूषणा ३ बस्त्रा ४ ऽऽदिनिवेदनतत्स्वस्वशिविरप्रेषणासर्वसम्भोजन

॥ १५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उमैदसिंह चरित्र  
में पुरोहित और सम्प्रदाय गुरु, मल्लार, माधवसिंह आदि का रावराजा के मांग-  
लिक तिलक आदि करना १ हङ्गेन्द्र का विष्णु और कुलदेवी का पूजन  
आदि करके उचित महल में जाकर हुलकर और माधवसिंह कछवाहा आदि

गज १ हय २ भूपणा ३ वस्त्रा ४ ऽऽदिससैन्यमल्लारसत्करणासमान  
रामानुजसम्प्रदायव्यवहारमुद्रा ऽऽदिश्रीांगाभिख्योल्लेखनपूर्वपुरुषद-  
त्तसमर्पणास्वपणिकरसुभट १ सुसचिव २ सुभृत्या ३ ऽऽदिमेदिनीमुख  
वितरणातन्मननमेकोनत्रिंशो २९ मयूखः ॥ २९ ॥ ॥ ३१० ॥

प्रापान्नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इहिँ अंतर मरुपति अनुज, बखतसिंह छक छाय ॥  
दिल्ली सन लहि जवन दल, अग्रज दब्बन आय ॥ १ ॥  
अभयसिंह आतुर तबहिँ, पठये बुंदिय पत्र ॥  
संभरँ सहित सहायकों, आवहु हुलकर अत्र ॥ २ ॥  
हुलकर हड्ड नरेस प्राते, अखिखप पत्र उदंत ॥  
सुनि बुंदिय धँव सज्ज हुव, सह मल्लार हुलसंत ॥ ३ ॥  
जननिन १ रानिन २ हू तिहित, दिन्नै कटक पठाय ॥  
गंगराइ १ कोटानगर २, वंसबहाल ३ बनाय ४ ॥ ४ ॥  
सज्जि अप्प हुलकर सहित, किय बुंदिय सन कुच्च ॥  
मरुपतिसौँ सत्वर मिले, उभय २ करन जय उच्च ॥ ५ ॥  
रामपुर सु माधव गयो, बुंदियतँ इहिँ बेर ॥  
ए दुव २ मरुपति भीर इम, आये पुर अजमेर ॥ ६ ॥

का हाथी, घोड़े, आश्रुपण, वस्त्र आदि नजर करना २ उनको अपने अपने डरों में भेजकर सबको भोजन कराना ३ हाथी, घोड़े, श्रुपण, वस्त्र आदि से सेना सहित मल्लार का सत्कार करना ४ रामानुज सम्प्रदाय को ग्रहण करके व्यवहार की छापमें श्रीरंग का नाम लिखाना ५ अपने पुरुषार्थों के दान का देकर अपनी परमह के उमराव, श्रेष्ठ कामदार, श्रेष्ठ सेवक आदि को श्रुमि आदि देने का स्मरण कराने का उनतीसवाँ २९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ दश ३१० मयूख हुए ॥

१ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) का छोटा भाई २ दिल्ली से १ पढ़े भाई को बसाने आया ॥ १ ॥ ४ अष्टबाण उम्मेदसिंह सहित ॥ २ ॥ ५ पत्र का वृत्तान्त कहा १ पति ॥ ३ ॥ ७ उनको बुलाने का सेना भेजी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

बखतसिंह सम्मुह बंहुरि, तीनइन किन्न प्रयान ॥

रक्खि निकट पैर दल दयो, संभर नगर मिलान ॥ ७ ॥

तैंहें हुलकर कछु रीति कहि, गडोग्न समुझाय ॥

अग्रज१कै अरु अनुज२कै, दिनों साम कराय ॥ ८ ॥

दूजे२ दिन इक बत्त हुय, बुंदिय कटकविहान ॥

सुपहु राम दिज्जे श्रवन, नय मति धर्म निधान ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम्

अगै इक१ संकरगढ स्वामी, बुंदिय भट रानाउत नामी ॥

तिहि सिवसिंह मंडि रन राउत, बक्कर पुर ५ हन्यो कन्हाउत ॥ १० ॥

सो सिवसिंह हुनो नृप सत्यहि, अरिसुन राजसिंह गय तथहि ॥

करत प्रात संध्या बुंदियपति, सिवसिंह सु निजनाथ रक्खि रति ॥ ११ ॥

डेगसन संभर ढिग आवत, राजसिंह बह मिल्यो रिसावत ॥

हनि सिवसिंहहिं तुपक झारि खल, गो भजिराजसिंह मारबदल ॥ १२ ॥

साहिपुराधिप अनुज सहोदर, हो सिरदारसिंह मरुपति भंर ॥

कन्हाउत तस सरन गह्यो तब, यह उदंत बुंदीस सुन्यो अब ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

उठि उघारे देह नृप, संध्या तजि गहि संगि ॥

हय अरोहि हंकयो अनहु, अंग पर इंद्र उमंगि ॥ १४ ॥

चलन लगे भट संग निज, तिनको सपथ दिवाय ॥

अप्प पटी दै अश्वको, लिय कन्हाउत जाय ॥ १५ ॥

सत्य सहित पिक्खतरह्यो, रानाउत सिरदार ॥

राजसिंह कन्हाउत सु, माख्यो संभरवार ॥ १६ ॥

१ शत्रु की सेना को समीप रख कर २ संभर में मुकाम किया ॥ ७ ॥ ३ मिलाप

॥ ८ ॥ ४ प्रभात समय ॥ ९ ॥ ५ बाकरा नामक पुर के पति ६ कान्हावत शाखा

के शीषोदिया क्षत्रिय को ॥ १० ॥ ११ ॥ ७ उमदसिंह के पास ८ मारवाड़

की सेना में ॥ १२ ॥ ९ शाहपुरा के पति उमदसिंह का छोटा सगा भाई

१० मारवाड़ के पति का उमराव ॥ ११ ॥ ११ पर्वत पर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

इम रिपु हनि बगछी चुवत, आयो पुनि निज अैन ॥

रहयो लखत रहोरको, चित्र लिखयोसो सैन ॥ १७॥

॥ पट्पात ॥

यह कराल उद्घोष उठ्यो पृतना त्रय अंतर ॥

दुव २ दिस दुंदुभि बज्जि भीरु गय भज्जि दिगंतर ॥

हड्ड १ कबंध २ न हयन जंग पक्खर जब डारिय ॥

सुनि हुलकर यह सोर भयो उपदेसक भारिय ॥

नृप अभयसिंह १ उम्मेद १ नृप समुझाये दुव २ नीति सन ॥

कहि देसकाल आगभ कलित कियउ साम करि हित कथन १८

॥ दोहा ॥

तदनंतर दक्खिन गयउ, रचि दरकुंच मलार ॥

निज पतन बुंदिय तरफ, आयउ संभरवार ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हरदाउत नाहर मग अंतर, महिमानी मंडिय विधिसौं वर ॥

नगर पगगराँथंभि नृपति तव, जिम्मि गोठि आयउ बुंदिय अब २०

माघ बैलछ पच्छ जय मत्तो, दक्खिन द्वार होय पुर पत्तो ॥

घर घर मंगल गान भयो घन, लग्गे लोग बधाई बंटन ॥ २१ ॥

पिच्छै सन जननी दुव २ आई, पतनी तीन ३ सुहाग सुहाई ॥

यहरानिन पतिकी हित आवैरि, किन्नी विधिजुत नजरि निछावरि २२

अब उमेद नृप नीति जमाई, गई प्रजा सु बुलाय बसाई ॥

मैनन तैय उपद्रव मेटिय, बारह १२ खेट दबाय स्ववस किय ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ १७ ॥ १ भयंकर हाकस्तीनों सेनाओं में विदित ॥ १८ ॥ ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह)

हम ऊपर लिख आये हैं कि प्राचीन समय में सांभर नगर में राज्य करने के

कारण चहुवाणों को संभर, संभरी, संभरीक, संभरेश, संभरिया, संभरवार,

संभरवाल आदि कहते हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ शुद्धपक्ष ॥ २१ ॥ ६ स्नेह की

पंक्ति से ॥ २२ ॥ ७ मैनों का चोरी करने का उपद्रव ८ खेड़े (ग्राम) ॥ २३ ॥

बुंदिय नागर बिप्र इक१, सरबेश्वर अभिधान ॥

चोरे चोरन दम्भ तस, सहैस सत्त ७००० परिमान ॥ २४ ॥

कुतवाला सु बंसु चोर जुत, खोज्यो भूपतिराम ॥

छन्नें नृपहिं निवेदयो, छत्रमहल सुख धाम ॥ २५ ॥

सो धन संभर ख्यात करि, सरबेश्वर हित दीन ॥

श्रील सेठ यह नीति लखि, लगे बसन हित लान ॥ २६ ॥

चोरन१ जारन दुसह दुख, धर्म धरन१ सुख पूर ॥

राज्य बिगारे किंतव जन१, कंपनं लगगे कूर ॥ २७ ॥

जब बुंदिय जयसिंह लिय, कति सठ सेवक तैत्थ ॥

गसना रत ग्रासहिं रहिय, न हुव बुंद नृप सत्थ ॥ २८ ॥

ते अब दुद्धर नृपहिं तकि, लूम अराल हलात ॥

भीतें आय हाजरि भये, बुंदी मंडैल बात ॥ २९ ॥

मोरें वृद्ध प्रपितामहहु, मिलि आये तिन माहिं ॥

कहत सकुचि रविमल्ल कवि, इम सांगस हम आहिं ॥ ३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहुं राम महिपाल धर्मधन, स्मृति जाको वरजत अगौ सन ॥

पुरुषवनको अनुचित पद में दिय, करहु माफ अपराध यहैकिय ३१

हाजरि सब इम बसीभूत हुव, धामचंड उम्मेद तपत ध्रुव ॥

फगुन असित माहिं तदनंतर, कोटा गय उम्मेद धंगवर ॥ ३२ ॥

१ नाम रचारों ने उमके रूपये चोर लिये ॥ २४ ॥ २ चोर सहित धन को ४ हे

राजा रामसिंह ५ राजा की नजर किया ॥ २५ ॥ ६ धनवान् सेठ ॥ २६ ॥ ७

छत्री मनुष्य ॥ २७ ॥ ८ तहां कितने ही सूर्य सेवक ९ जिन्हा में ग्रास की

प्रति करके १० राजा बुयसिंह की साथ नहीं हुए ॥ २८ ॥ ११ चांसी (देही)

पूछ को हिलाते हुए १२ भय से १३ कुत्तों के समूह बुंदी में आकर हाजर

हुए ॥ २९ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ मेरे १५ सूर्यमल्ल कवि कहते

आरमाता है १६ इस कारण हम अपराध युक्त १७ हैं ॥ ३० ॥ १८ राजा राम-

सिंह १९ धर्मशास्त्र ॥ २१ ॥ २०, सूर्य २१ भूगति ॥ ३२ ॥

महाराव सन मिलि हित किन्नौ, बहुरि आय बुंदिय रस लिन्नौ ॥  
 दुज्जनसल्ल सु केहक असूई, बुंदिय लेत परयो दुख कूई ॥ ३३ ॥  
 जानी इन अकखी सुहि किन्नी, जैपुर दव्वि गहुमि निज छिन्नी ॥  
 अब उमेद बुंदिय भुगौ नन, औसे मंत्र रचहि मिलि अप्पन ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमःपराशावुम्मे-  
 दसिंहचरित्रेसहायीकृतादिल्लसैन्यज्यायोजयनिनीपुकबन्धवखतसि-  
 हाऽऽगमनतन्निरोधाऽर्थधन्वेशाऽभयसिंहाऽऽहूतदृष्ट १ हुलकरा २६-  
 जमेरगमनमल्लारवखतसिंहनिवारणाशातितसम्भरेशसुभटशंकरग-  
 ढस्वामिशीपांदिशिवसिंहवपुर्वैरोजिहीर्षुवर्करपतिकन्हाउत्तराज-  
 सिंहधन्वध्वजिनीशरणासम्पादश्रुतशात्रवसमात्तशक्त्येक॥क्रिबुन्दी-  
 न्द्रतन्मारणाशमितैतद्वादिनोद्वय २ विरोधहुलकरदीक्षणागमनरात्रा-  
 गिनजपुरप्रविशनचौराद्युपद्रवाऽपाकरणप्रस्थितप्रजाप्रत्यागमनमि-  
 लितमहारावपुनःप्रभुबुन्दीप्रविशनकोटेशकौहक्यकलनं त्रिंशो ३०  
 मयूखः ॥ ३० ॥ आदितः ॥ ३११ ॥

१. ठग २. असूया करनेवाला "गुणेन दोषारोपोऽसूया" अथवा "परगुणोपदोषावि-  
 पकारः" दूसरे के किये गुण में दोष लगाने को असूया कहते हैं ३. दुःख के  
 रूप में गिरा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्रमें  
 दिल्ली की सेना को सहायक करके बंदे आई को जीतने की इच्छावाले राठोड़  
 यमवतसिंह का आना १ उस को रोकने के अर्थ मारवाड़ के पति अभयसिंह  
 के बुलाने में हाडा (उम्मेदसिंह) और हुलकर का अजमेर जाना और मल्लार  
 का यमवतसिंह को मना करना २ चहुधाराओं के पति के उमराव शंकरगढ़ के  
 स्वामी शीबोदिया धिचसिंह को पिता के वैर की इच्छा से मारनेवाले याफा  
 के पति कान्हायत राजसिंह का मारवाड़ की सेना की शरण लेना सुनकर  
 राज्य को यश में करके परछी से अकेले बुन्दीश को उसको मारना ३ इन दोनों  
 सेनाओं के विरोध को मिटा कर हुलकर का दक्षिण में जाना ४ रायराजा को  
 अपने घर में प्रवेश करके चौरों के उपद्रव को मिटाना और गहईई प्रजा को  
 पीछा आना ५ महाराव से मिलकर फिर प्रभु उम्मेदसिंह का बुन्दी में आना  
 और कोटा के पति की इन्द्रजाल की रणना का भीसवां ३० मयूख समाप्त  
 हुआ और आदि से तीन सौ ग्यारह ३११ मयूख हुए ॥



कोटा के राजा का रामचंद्र को बहकाना] सप्तमराशि-एकत्रिंश मयूख (३१७५)

॥ गोवर्गशाभाषा ॥ इन्द्रवंशा ॥

एवं समालोच्य सधीसखैस्समं कोटेश्वरः सज्जनशाल्यभूपतिः ॥  
दालेलिकृष्णां प्रतिनैनवास्यितं प्रीतिच्छदम्प्रेषितवान्स्वदोर्लिविमः॥  
तस्मिन्नुदन्तन्नधमेन लेखितं कूर्मादयोऽनूनरहस्यकोविदाः ॥  
भा रावराजन्द्र तवाऽभिषेचनं कर्तुं समुद्युक्तधियो वयं स्थिताः ॥२॥  
श्रीमन्तनन्दाब्दकुमारिकेश्वरं घोराभिसम्पातशताङ्गधूर्वहम् ॥  
कार्यं पुरस्कृत्य कृपाणापाणयः श्रेयो गमिष्याम उपायषट्पत्ताः॥३॥  
सन्नह्य सेनां मदवन्मतङ्गनामुत्फुल्लसत्प्रोथलसत्तुरङ्गमाम् ॥  
राणाञ्जिसंघ्यासुनदण्डनायकां धूल्लयुत्करांतर्हितकञ्जबान्धवाम्४  
आकर्ण्यमाकर्णितकारण्डकार्मुकां विस्फारसन्त्रस्तसपत्नसञ्चयाम्५  
आनङ्कान्तायसवर्मयाहुतां चाकचक्यवच्चन्द्रकचन्द्रकाज्जलाम् ॥  
सन्देशहारोक्तिगृहीतनिश्चयां विरुपातयानाऽऽसन २सन्धि३विग्र-  
हाम्४ ॥

इस प्रकार मंत्रियों के साथ विचार काके कोटा के पति सज्जनों के शाल रूप राजा ने "कोटा के महाराय का नाम दुर्जनशाल था परन्तु उस्मेदसिंह के विरुद्ध कार्य करने से कवि ने सज्जनशाल्य लिखा है" नैखवा नगर में स्थित दालेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह को अपने हाथ का लिखा प्रीति पत्र भेजा ॥ १ ॥ उस अधम ने उस में वृत्तान्त लिखा कि हे रावराजेन्द्र तुम्हारे अभिषेक करने में कछवाहा आदिसब पूर्ण गुप्त भेद जाननेवाले हम, अच्छ प्रकार से दत्तचित्त होकर स्थित हैं॥२॥ कन्याकुमारिका क्षेत्र के पति नन्दा नामवाले श्रीमन्तको, कि जो भयंकर प्रहारोंवाले युद्ध रूप रथ की धुरा को धारण करनेवाला है कार्य में आगे करके, हाथ में तरवार धारण करके उपाय से कल्याण को प्राप्त होवेंगे ॥ ३ ॥ मस्त हाथियोंवाली और फूजेहुए फुरनों (नासिका)वाले उत्तम घोड़ों वाली सेना को सजकर, कि जिसमें सिंधिया का पुत्र राणाजि सेनापति है और जिसने धुलि के समूह से सूर्य को ढकदिया है ॥ ४ ॥ धनुष का कान तक खींचकर टंकार करने से भयभीत किया है शत्रुओं के समूह को जिसने फौलाद के कवच और दस्ताना बांधे सुवर्ण के चकाचौंधी देनेवाले चंद्रमा युक्त ढालोंवाली ॥ ५ ॥ हलकारों के कथन से निश्चय करनेवाली प्रसिद्ध यान, आसन, संधि, विग्रह, द्वैप और आश्रय इन नीति के छहों गुणों के विशाल

द्वेधाऽऽश्रयोऽल्ललासविलासवैभवां सङ्ग्रामवित्सदि१ निपादि २  
सौभगाम् ॥६॥

शौण्डीर्यसन्दानितशूरशात्रवां प्राप्तापडत्तीणाविविक्तमन्त्रणाम् ॥  
प्रेखोलदुच्चूलितवैजयन्तिकां धारारयोद्धूतसमस्तसागराम् ॥ ७ ॥  
शाकतीक१याष्टीक२विनोदबन्धुरां नैस्त्रिशिक ३ प्रासिक४धन्विपदु-  
र्द्वराम् ॥

प्रोद्वग्दुस्फोट१कुठार२पट्टिशं३जेढ्याम उम्मेद१मल्लार२यामल्लाम्  
॥ ८ ॥ इतिकुलकम् ॥

तूर्णा व्यतीत्येषद्वर्गणान्वयं निर्जित्य संरूपे बुधसिंहजाऽन्वयम् ॥  
दास्याम उन्मार्जितसर्वकण्टकं बुन्द्याऽऽधिपत्यं भवते निरंकुशम् ॥९॥  
ईर्ष्यापरः सालमनप्ररि च्छदं क्षिप्रं लिखित्वेति समीमनन्दनः ॥  
श्रीमन्तमन्त्रिणपथ रामचन्द्रकेऽलेखीद्वितीयं२दलमात्तकिल्विषः१०

॥ अनुष्टुब्धुगमविपुला ॥

पुण्येशाऽमात्ययोर्बाढं रामचन्द्र१मल्लार२योः ॥

वैभववाली और युद्ध को जाननेवाले घोड़ों के सवार और हाथियों के सवारों के ऐश्वर्यवाली ॥ ६ ॥ पराक्रम से वीर शत्रुओं के समूह का बाधनेवाली तीसरे के कान में सलाह को नहीं जाने देनेवाली कंपित वस्त्र की ध्वजावाली (विजय करनेवाली सेना का झंडा ही खुला रहता है) और अपने प्रवाह के वेग से समुद्रों को कंपायमान करनेवाली ॥ ७ ॥ धरती और लाठी से लड़नेवालों से सुंदर, तरवार, भाला और धनुष धारण करनेवालों से दुस्तर और उग्र घाव करनेवाले कुठार और कटारियोंवाली, ऐसी सेना से उम्मेद सिंह और मल्लार दोनों को जीतेंगे ॥ ८ ॥ थोड़े मास बिनाकर शीघ्र युद्ध में बुधसिंह के वंश और इनकी उपासना करनेवालों (सम्बन्धियों) को जीतकर सब कांटे उखेड़ कर अक्रुश रहित बुन्दी का स्वामीपन आपको देंगे ॥ ९ ॥ ईर्ष्या में तत्पर हांकर सालमसिंह के पोते को ऐसा पत्र शीघ्र लिखकर उस पाप को ग्रहण करनेवाले भीमसिंह के पुत्र ने इसके आगे श्रीमन्त के मन्त्री रामचन्द्र को दूसरा पत्र लिखा ॥ १० ॥ पूना के स्वामी के मन्त्रि रामचन्द्र और मल्लार में जैसे एक हथनी पर दो हाथियों के विरोध होवै तैसे पहिले इन दोनों

कोटा के राजाका रामचंद्र को बहकाना] सप्तमराशि-एकत्रिंश मयूख (३५७७)

अजायत पुरा धैरं करेणवामिभयोर्यथा ॥ ११ ॥

तदालोच्य महारावः पूर्वस्मिन्नलिखद्वलम् ॥

निन्द्यं कृतं मलारेणार्पितोम्मेदाय बुन्दिका ॥ १२ ॥

भवेद्यदि मदायत्ता तदायत्ता वयं तव ॥

कूर्मार्द्यखिलराजानः स्यामाऽऽज्ञाकारिणो वयम् ॥ १३ ॥

एतच्छ्रुत्वा दलोदन्तं कोटाऽधीश्वरलेखितम् ॥

लिलेख नन्द्मन्त्रीत्यं रामचन्द्रस्तदुत्तरम् ॥ १४ ॥

आत्मनोऽयं स्वतन्त्रत्वं पज्जः रूपापयितुं ननु ॥

अयुक्तमकरोन्नीचैर्मलारो मातृशासितः ॥ १५ ॥

न भोक्तुमुचितो बुन्द्याः स्कन्धवारम्मनोरमम् ॥

देवानांप्रिय उम्मेदसिंहानाम्भोग्यमस्थिभुक् ॥ १६ ॥

उदयद्रङ्गपृथ्वीभुजगत्सिंहमतं विना ॥

कार्येऽस्मिन्नाऽस्मदादीनां श्रीमंतोऽनुसरेद्वचः ॥ १७ ॥

राणेश्वरविभित्सुस्त्वं नन्दे लेखय तद्वलम् ॥

बुन्द्यां कोटेडधीनायां प्रीताः स्म इति सत्वरम् ॥ १८ ॥

भै हृत्वा ॥ ११ ॥ इस बात को विचार कर महाराव ने पहिले (रामचंद्र) को पत्र लिखा कि उम्मेदसिंह को बुन्दी देने का कार्य मलार ने निन्दा के योग्य किया है ॥ १२ ॥ वह बुन्दी जो मेरे आधीन होवे तो कछवाहे आदि इस सब राजा निश्चय ही तुम्हारे आज्ञाकारी होकर तुम्हारे आधीन होंगे ॥ १३ ॥ कोटा के पति के लिखे हुए इस पत्र के वृत्तान्त को सुनकर नन्द के भ्रात्रा रामचन्द्र ने उस का उत्तर इसप्रकार लिखा ॥ १४ ॥ उस नीच मूर्ख और शत्रु मलार ने अपना स्वतंत्रता प्रसिद्ध करने को निश्चय ही यह कार्य अयोग्य किया है ॥ १५ ॥ जैसे सिंहों के भोगने योग्य को कुत्ता भोगने योग्य नहीं होता तैसे रमणीय राजधानी बुन्दी को भोगने योग्य मूर्ख उम्मेदसिंह नहीं है ॥ १६ ॥ उदयपुर की पृथ्वी को भोगनेवाले राणा जगत्सिंह की सलाह के बिना उस कार्य में हम लोगों के वचन श्रीमन्त (नन्द) नहीं मानेगा ॥ १७ ॥ महाराणा को भेदने (कोटने) की इच्छावाले तुम वह पत्र नन्द के नाम लिखाओ कि यह बुन्दी कोटा के पति के शासन आधीन होने में हम प्रसन्न हैं ॥ १८ ॥ शीघ्रोद के पत्र से और

शीर्षोद्वर्गादूतेनाऽऽपस्माकं सम्मतेन च ॥

कणिष्यत्येव पुरापेशो बुन्दीन्दौर्जनशालिपकीम् ॥ १९ ॥

वर्गादूतं विदित्वैवं रामचन्द्रेण चालितम् ॥

राणादीन् सम्मते नेतुं तच्चक्रे भैमिरुद्यमम् ॥ २० ॥

॥ उपजातिः ॥

इतस्स बुन्दीपतिरात्तधर्मा चाणक्यः कामन्दकश्चाक्यवर्मा ॥

शर्माऽऽश्रयोऽर्थिव्रजदत्तभर्मा स्वाध्यायसाध्याऽयसहायकर्मा ॥ २१ ॥

वृद्धश्रवाः सन्वज्ज गोत्रपालस्तथा तपस्तत्तयाऽनुपेतः ॥

अशीर्षपादो ह्यपि धर्मराजो राजाऽपि दोषाकरताविहीनः ॥ २२ ॥

श्रीदोष्यस्वर्वः सबलोऽपि सौम्यः शिवोऽविरूपाक्षपुराऽध्वरत्रः ॥

हमारी सलाह से पूना के स्वामी बुन्दी का निश्चय ही दुर्जनशाल की (तुम्हारी) करेंगे ॥ १९ ॥ ऐसे रामचन्द्र के भेजे हुए पत्र को जानकर भीमसिंह के पुत्र ने महाराणा आदि को अपने पक्ष में लाने का वह उद्यम किया ॥ २० ॥ इधर वह बुन्दी का पति (उम्मेदसिंह) धर्म का ग्रहण करनेवाला, चाणक्य और कामन्दक के वचन रूपी कवचवाला, ब्राह्मणों के आश्रयवाला और याचकों के समूह को सुवर्ण देनेवाला, वेद और पुराणों के पढ़न पाठन से सिद्ध होनेवाला शुभदायी विधि की सहायता से कर्म करनेवाला ॥ २१ ॥ और वृद्धों की सुननेवाला (इन्द्र) होने पर भी बल और गोत्र का पालन करनेवाला था। पक्ष पक्ष और गोत्र शब्दों में श्लेष है, अर्थात् इन्द्र पक्ष में बल (दैत्य) और गोत्र (पर्वत) इन का वह भेदन करनेवाला है और बुन्दीन्द्र के पक्ष में बल (सेना) और गोत्र (कुटुम्ब अथवा जाति समूह) जिनकी यह पालना करनेवाला है और इसीप्रकार तप को काटने से अनुपेत [युक्त नहीं] है, अर्थात् तप करनेवाला है और वह इन्द्र तपस्वियों के तप को काटनेवाला है। अशीर्षपाद होकर भी धर्मराज है अर्थात् धर्म के चरण तो युग युग प्रति जय हाते जाते हैं और इनके चरण अक्षय हैं और राजा होने पर भी दोषाकर अर्थात् दोषों की खान नहीं है। राजा नाम चन्द्रमा का है सो दोषाकर अर्थात् रात्रि को करनेवाला है ॥ २२ ॥ कुबेर होने पर भी निधि रहित है अर्थात् कुबेर तो लक्ष्मी का संचय करनेवाला है और यह उडानेवाला है कुबेर पक्ष में स्वर्ग निधि और राजा पक्ष में स्वर्ग छोड़ मनवाला अर्थात् कृष्ण, बलवान होने पर भी सौम्य है, शिव होकर भी

कोटा के राजाका रामचंद्र को वहंकाना] सप्तमराशि-एकत्रिंशमयूख (३५७६)

अभीष्टमेनोऽपि निररतजाह्नयो दग्ध भेजे पुरुषोत्तमोपि॥ २३ ॥  
अनूनवाणः कमनोऽपि साङ्गः सत्यप्रियो भास्वदतीक्ष्णशाली १०॥  
यद्यप्युदागो दृढमुष्टिदण्डोऽपि विगोचनोऽप्यश्चदनन्तसप्तिः ॥ २४ ॥  
अनेकदंशोपि सपर्शुपाणिः सत्स्वर्णकायोऽपि न चक्रिशत्रुः ॥  
अनाश्रयाशः शुचिः परेव साक्षादजिह्मगो भूमिभुजङ्गभोगी १६॥२५॥  
प्रचण्डसहस्रजितारिपक्षः पाङ्गुपदशक्तित्रयस्तत्त्वदक्षः ॥

विस्वाक्ष [क्रूर दृष्टिवाला] नहीं है तीन नेत्र होने से शिव का नाम विस्वाक्ष है और पुर तथा यज्ञ की रक्षा करनेवाला है [शिव त्रिपुर के और दक्ष के यज्ञ के नाश करनेवाले हैं] अभीष्टमेन होने पर भी सूर्खता नहीं है अर्थात् इच्छा-पुसार माननेवाला सूर्ख होता है और यह इष्ट को माननेवाला बुद्धिमान् है पुरुषोत्तम होने पर भी दर का स्वेदन नहीं करता है. "पुरुषोत्तम" श्रीकृष्ण के पक्ष में दर [शत्रु] और पुरुषों में उत्तम उम्मेदसिंह के पक्ष में दर [भय] बाची है ॥ २३ ॥ कामदेव होकर भी अनून [बहुत] बाणोंवाला और अङ्ग सहित है. [कामदेव पंच बाणवाला और अंग रहित है. सत्यप्रिय होकर भी भासनशालि [अष्ट वक्ता] है और उधर युधिष्ठिर सत्यप्रिय होने पर भी अश्वत्थामा के वध के अर्थ झूठ बोलनेवालों था अथवा अप्रिय वक्ता था. उदार होने पर भी दंड देने में दृढमुष्टि (कृपण) है सूर्य होकर भी उत्तम अनेक घोड़ों वाला है (सूर्य केवल सात घोड़ोंवाला ही है) ॥ २४ ॥ पर्शुपाणि होकर भी अनेक कवचधारियों [क्षत्रियों] वाला है पर्शुपाणि अर्थात् परशुराम तो क्षत्रियों का नाश करनेवाला था और यह परेसी (शस्त्र विशेष) हाथ में रखनेवाला होकर भी क्षत्रियों को रखनेवाला है स्वर्णकाय होकर भी चक्री का शत्रु नहीं है अर्थात् स्वर्णकाय गरुड़ तो चक्री [सर्प] का शत्रु है और उम्मेदसिंह स्वर्ण सदृश शरीरवाला होकर चक्री [विष्णु] का शत्रु नहीं है शुचि होकर भी आश्रय का नाश करनेवाला नहीं है अर्थात् शुचि [अग्नि] तो आश्रय का नाश करता है और यह शुचि [पवित्र] आश्रय की रक्षा करता है भोगी होने पर भी अजिह्म (सरल) है अर्थात् सर्प भूमि का पति नहीं होने पर भी वक्रगति [टिढ़ा चलनेवाला] है और यह सीधा होने पर भी भूमि रूपी वेश्या को भोगनेवाला पति है [वेश्या के पति का नाम भुजंग है] ॥ २५ ॥ शास्त्र विहित उचित भयंकर दंड से शत्रुपक्ष को जीतने वाला सन्धिबिग्रहादि छहों गुण और प्रभुशक्ति, मंत्र शक्ति, उत्साह शक्ति इन तीनों शक्तियों के समर्थ में निपुण, अपराध करनेवाले दुष्टों

कृतापराधान्विनियम्य दुष्टान् राज्यं चकारापरकार्तवीर्यः ॥ २६ ॥

व्यतीत्य वीरः शिशिरं१ वसंतं२ तथैव चोष्णोपगमं३ गुणज्ञः ॥

प्राप्तासु वर्षासु४ परोपकारी व्यघत्त बुन्द्यां विविधान्विनोदान् ॥ २७ ॥

अनोकुहैरंकुरितैस्तृणौघैस्तत्राडशैलो रुचिगे बभूव ॥

जाताः समस्ता हरिता हस्तिकाः शृंगारशालिन्यवनी रराज ॥ २८ ॥

अलंकृतोदग्दिगुदारधारा कादम्बिनीकालहरित्कडारा ॥

ववर्ष वातोच्छतदम्बुवागननल्पकल्पप्रकटप्रसारा ॥ २९ ॥

चिरायम्भूविरहोपघाती पानीयपानीयपुरःप्रपाती ॥

तापं तडित्वास्नपनस्य तज्जर्जन्नप्तावयद्भूमिमतीव गर्जन् ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे सहायीभूतमहारावनयनपुरबुन्द्युद्धरणापत्रप्रेषणादाल्लिकुष्णाऽनुनयननदनुमल्लारम्पद्भिर्गामचंद्रोपयोगिकरणाप्राप्ततत्पत्रराणाऽऽदिसम्पत्तनोद्यमनबुंदीद्वर्षतुविनोदविहरणामेकत्रिंशो मयूखः

को विशेषता से दमन करके सानों दूसरे कार्तवीर्य ने राज्य किया ॥ २६ ॥ उस वीर ने शिशिर, वसन्त और उसी प्रकार निश्चय ही ग्रीष्म को बिनाकर परोपकारी वर्षा के प्राप्त होने पर गुणों को जाननेवाले उस [उम्मेदसिंह] ने बुन्दी में नाना प्रकार के विलास किये ॥ २७ ॥ तहां वृक्षों के अंकुरों से और तृणों के सत्रुहों से आडायला नामक पर्वत मनोहर हुआ सब दिशा हरी होकर शृंगार युक्त भूमि शोभायमान हुई ॥ २८ ॥ जिसने उत्तरदिशा को भूषित की है ऐसी काले, हरे और पीले रंग की और पवन से उछलते हुए जल के सत्रुहवाली प्रलय के समान अधिक है प्रत्यक्ष विस्तार जिसका ऐसी उदार धारावाली भवनाला वर्षा ॥ २९ ॥ बहुत समय से पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले विरह का नाश करनेवाले आगे आगे अत्यन्त पानी गिरानेवाले, ग्रीष्म के संवार को डरानेवाले मेघ ने बहुत गर्जना करके भूमि को डूबाई ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में महाराय का सहायक होकर नैणयापुर में बुन्दी दिलाने का पत्र भेज कर दल्लसिंह के पुत्र कृष्णसिंह से प्रार्थना करना १ जिस पीछे मल्लार की धराधरी करनेवाले रामचन्द्र को उपयोगी करना और उसका पत्र पाकर राणा आदि को मिलाने का उपाय करना २ बुन्दीन्द्र का वर्षा क्रतु में विनोद प्रकट

॥ ३१ ॥

आदितः ॥ ३१२ ॥

प्रायोज्ञजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हम पाउस आगम उदित, अतुल अंघ्र आसार ॥

अंकूरन भुव अच्छदियै, किय पूरन कासार ॥ १ ॥

यँहँ अगँ गुनगोरि दिन, होतो उच्छव पूर ॥

बुद्ध सद्दोदर जोधके, बूढत वह हुब दूर ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अब सावन अवदात तीज ३दिन, उच्छव किय विख्यात हड्डु ईन ॥

रानीजनन सुघाट सुहाई, पारवती प्रतिमा बनवाई ॥ ३ ॥

बहुविधि भूखन बसन बनाये, प्रीति उपेत ताहि पहिराये ॥

दै पटु संग अलंकृत दासी, नाम तीज वह प्रकट निकासी ॥ ४ ॥

गई जैतसागर तड़ाग तट, भूपहु पत्त तैत सब लौ भट ॥

इक ओर देवी संसेद जँहँ, भूप सभा इक ओर बनी तँहँ ॥ ५ ॥

वारसुंदरिने नटन बनायो, अतुल मेघ आलाप उठायो ॥

बैलि तँहँ घटिका दोयरे बिताई, पुनि देवी महलन पधराई ॥ ६ ॥

तदनु नरेस सेवकन हित हिय, मादक वस्तु मँद्य बिनु बंटिय ॥

त्पोहँ कुपुर्भन द्वार किलंगी, सोभित अतर पान तिन संगी ॥ ७ ॥

दै इम सवन चढयो बुंदीपति, आयो महलन मन प्रसन्न अति ॥

विहार करने का इकतीसवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे तीनसौ पारह ३१२ मयूख हुए ॥

१ सेवकारों से २ भूमि को छाई ३ तलाव ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह के सगे छोटे भाई

५ जोधसिंह के रूपने से गुनगोरि का चत्मच मिटगया ॥ २ ॥ ६ शुकलपक्ष की

७ हाडा क्षत्रियों के पति ने ८ अष्ट डोळ (आकृति) की ॥ ३ ॥ ९ सहित १० भूप-

गों से युक्त ॥ ४ ॥ ११ तलाव के किनारे १२ तहाँ प्राप्त हुआ १३ देवी की सभा

॥ ५ ॥ १४ वेश्याओं ने नृत्य किया १५ तुलना रहित सेवराग का १६ पुनि ॥ ६ ॥

१७ नशे की वस्तु १८ बिना मद्य (दारु) के बुन्दी के राजाओं में वर्तमान महाराज

गुजरसिंह के सिवाय केवल बुधसिंह ने ही मद्य पिया था १९ फूलों के ॥ ७ ॥



दूजे दिनहु यहै बिधि ठानी, पच्छे चढत परयो धन पानी ॥ ८ ॥  
 पहुँच्यो निठि निजालय संभर, फुटि तड़ागं चलयो इहि अंतर ॥  
 विक्रम सक खट नभ बसु बसुमति १८०६, अतुल विराव अचानक  
 भो अति ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सावन बिसद चउत्थि ४ तिथि, रत्ति घटिय दुवर जात ॥  
 जल न जैतसागर किलयो, उडिय सेतु अररात ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अति जैव फुटिय सेतुं मनहुं तोपन गन छुटिय ॥  
 के लगगत सैतकोटि कूट पव्वय जनु तुटिय ॥  
 बुरजन ब्राज उडाय फोरि कोसन फटकारे ॥  
 मगबिच बिटंप मिले सु हीन बलकल करि डारे ॥  
 निर्मनहु निवान मुंदिय सकल विकल नैक रुकि रुकि रहै ॥  
 प्राकार पृथुल अटकै न जल तो पतन बहु जन बहै ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम फुटत सर सेतुको, सुन्यो अचानक स्वान ॥  
 कछुक काल अचिरज रह्यो, पुनि किथ सबन प्रमान ॥ १२ ॥  
 प्रात ताल असो लख्यो, हुव सब बैभव हानि ॥  
 मानहु बनिक धनाढ्य घर, लुट्यो रंकन आनि ॥ १३ ॥  
 जोधसिंह जिहि मध्य थित, बूड्यो अगग प्रमत्त ॥  
 जो सब अंग उपांग जुत, कढ्यो तरडैक तत्त ॥ १४ ॥

१ मेघ का तथा अत्यन्त ॥ ८ ॥ २ अपने महल में ३ तालाव फूटा  
 ४ शब्द ॥ ६ ॥ ५ अरड़ाट शब्द करके पाळ तूटी ॥ १० ॥ ६ अत्यन्त बेग से  
 ७ पाळ = मानों वज्र लगने से पर्वतों के शिखर तूटे ९ समूह १० मार्ग में  
 जो वृक्ष आये उन्हें त्वचा ११ (छाल) हीन करदिये सब १२ गहरे जलाशयों  
 को १३ मगर १४ बड़े कोट से १५ नगर के ॥ ११ ॥ १६ शब्द ॥ १२ ॥ १७ मानों ध-  
 नवान बनिये के घर को ॥ १३ ॥ १८ दनाय ॥ १४ ॥



लिन्नी बुंदिय जानि इत, उदयनैर जगतेस ॥  
 पठये पत्र उमेद प्रति, लिखि हित बिहित बिसेस ॥ १५ ॥  
 अकखी हमहु प्रसन्न अति, अब हहुन अधिराज ॥  
 अरेहि इहाँ सुन आयहै, टाँकाके सब साज ॥ १६ ॥  
 कोऊ कोबिद सचिव निज, भेजहु सत्वर अथ ॥  
 हिय उपज्यो कछु पुच्छि हम, संसय तजहिँ समथ ॥ १७ ॥  
 नृपति पुरोहित मुक्कल्यो, दयाराम सुनि एह ॥  
 पहुँचि बिप्र तब दुव२ नृपन, संध्यो सरस सनेह ॥ १८ ॥  
 अभयसिंह मरुभूपको, इत आयउ अवसान ॥  
 निज भट सब बुल्ले निकट, होत कलेवर हान ॥ १९ ॥  
 अकखी अब मम जात असु, इत सोदर बखतेस ॥  
 मोछतही होवन लग्यो, अगँ धँव नरेस ॥ २० ॥  
 सो सठ अब मेरे मरत, नागोरहिँ रक्खै न ॥  
 मारि बिडारहिँ मम सुतहिँ, लइहिँ जोधपुर अँन ॥ २१ ॥  
 रामसिंह मम पुत्र यह, है कुपुत्र मति हीन ॥  
 यासौं तुम सब पलाटिहो, रहिहो नाँहिँ अधीन ॥ २२ ॥  
 कुल कुठार कंटक यहै, पापी खल पहिचानि ॥  
 तुमहु कदाँतक रक्खिहो, कूर नृपहिँ मम कानि ॥ २३ ॥  
 तातैं जो अवरहि तक्रहु, तो पहिलैं कहि देहु ॥  
 याहि दिवावहु ईतर कछु, वाहि जोधपुर एहु ॥ २४ ॥  
 नहिँ तो जो अब ईहिँ मिलैं, पिच्छैं सोहु मिलैं न ॥  
 पुच्छन यह बुल्ले तुमहिँ, अब मुहि बहुत अचैन ॥ २५ ॥

१ उचित ॥ १५ ॥ २ शीघ्र ही ॥ १६ ॥ ३ चतुर ४ शीघ्र ॥ १७ ॥ १८ ॥ ५ अन्त ६ शरीर का नाश होते  
 समय ॥ १९ ॥ ७ प्राण ८ समाश्वा ९ मेरे होते ही आगे मारवाड़ का पति होने  
 लगे था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ १० खल राजा को ११ मेरी अदब से ॥ २३ ॥ १२ इ-  
 स को कोई अन्य परगना दिला दो १३ खलसिंह को ॥ २४ ॥ १४ रामसिंह को  
 इस समय मिलता है सो भी पीछे नहीं मिलेगा १५ बुलाये हैं ॥ २५ ॥

मेरतिया उपटंकि इक, दूदाउत रठोर ॥  
 बुल्लयो सुनि रय्याँपुरप, सेरसिंह भट मोरें ॥ २६ ॥  
 हम हत्थिन ठिल्लैं भुजन, धल्लैं अद्रिन बत्थ ॥  
 खंडैं दक्खिन खग्ग बत्त, मंडैं रन बिनु मत्थ ॥ २७ ॥  
 तिन जीवत कातर बचन, नन अक्खहु नरनाह ॥  
 कुलकुठार भवदीय सुत, तदपि करहि निरबाह ॥ २८ ॥  
 अधम तऊ यह कुमर पै, जो यह कन्या होय ॥  
 सोपै भुग्गहिँ जोधपुर, हम छत त्रास न होय ॥ २९ ॥  
 यह सुनि नृप बुल्लयो बहुरि, ईतर भटन सन एस ॥  
 कैसी भासत सबनकाँ, अक्खहु मोहि असेस ॥ ३० ॥  
 चंपाउत रठोर तहँ, नगर आउवा ईस ॥  
 कुसलसिंह बुल्लयो, सुनहु, इक मम धन्व अधीस ॥ ३१ ॥  
 ऐसी भासत कुमरकी, करिहै नीचन संग ॥  
 उचितनको आदर घटैं, रंगैं अनुचित रंग ॥ ३२ ॥  
 सोतो हम सहिहैं रुक्लि, पै डेरन परवाय ॥  
 दुर्दुकारि रु कहैं हमहिँ, ततो रहो नहिँ जाय ॥ ३३ ॥  
 यह उदंत हुव जोधपुर, सुनहु भूप चहुवान ॥  
 अभयसिंह तजि तनु तंदनु, कियउ महाप्रस्थान ॥ ३४ ॥  
 रामसिंह बैठो तखत, कुलहिँ कलंकित कौर ॥  
 जानतहे ताकाँ जगत, वहहि लयो आचार ॥ ३५ ॥  
 इक ठँही अंत्यज अधम, अभी नाम अधरूप ॥  
 वह बाँदक कंडोलको, मित्र कियउ मैरुभूप ॥ ३६ ॥

१ रियाँपुर का पति २ मौड़ (मुकुट) ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ कायर वचन ४ आप का पुत्र  
 ॥ २८ ॥ ५ परन्तु ॥ २९ ॥ ६ दूसरे उमरावों से ७ कैसी दीखती है ॥ ३० ॥  
 ८ हे मारवाड़ के पति ॥ ३१ ॥ १२ ॥ ९ धिक्कार देकर निकालदेवें तो ॥ ३३ ॥  
 १० जिस पीछे शरीर छोड़कर ११ स्वर्ग गया ॥ ३४ ॥ १२ करनेवाला ॥ ३५ ॥  
 १३ दाढ़ी विशेष १४ ढोली १५ मारवाड़ के पति ने ॥ ३६ ॥

भगिनी ताकी भाँवैती, नाम सुरूपाँ नारि ॥

रानिन पर पटराँगिनी, करि रखी गृह डारि ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिन विपरीत जोधपुर केरे, ताँतें बिधि अैसे नृप हरे ।

सूरिनको सतकार न रख्यैं, सूरन सैन अनुनित जड़ अकख्यैं ॥ ३८ ॥

नहिँ सचिवन दासन सनमानैं, अरु बालिस नीचन हित आनैं ॥

मरुपति मित्र मृत्यु जब पायो, सुनि टाँका जल्लार पठायो ॥ ३९ ॥

गो तिहिँ संग मत्त इक शरारनँ, परिष्ठात प्रवल श्रवत मद धारन ॥

अभयसिंह सुत कोतुक आयो, सो गज निज गज संग लारायो ४०

हुल्लकरके इभतैं निज हारयो, तब सठ तारन ताहि बिचारयो ॥

तोप दगाय हनहु इहिँ अकखयो, जगू विप्र निडि कहि रखयो ॥ ४१ ॥

बखतसिंह नागोर धराधनँ, निज धाँत्रो पठई कछु कारन ॥

बुल्लि रु तास बसन उतराये, बुल्लि धरि सेकिँम छँगल चराये ॥ ४२ ॥

चंपाउत वह कुसल इहँ १ दिन, आयउ सभा जानि रामहिँ ईन ॥

तास पिठि इक दास पठायो, अनेक करि सैन कढायो ॥ ४३ ॥

तू बपु खँब कछो पुनि तासों, बहैं न तव विक्रम लघु स्वासों ॥

सो पै दुस्सह कुसल रह्यो सहि, अभयसिंह आदेशँ चित्तचहि ॥ ४४ ॥

बहु अनुचित इम अधम बनावैं, कवि लोलैहु कहत अलसावैं ॥

सुनहु राम संभर असुरस्वामी, विथरी इम मरुपति बदनामी ॥ ४५ ॥

बखतसिंह सुनि मोद बढावैं, लैन जोधपुर दाव लगावैं ॥

१ उसकी बहिन २ रुचिकारक (रूपवती) ३ पटरानी ॥ ३७ ॥ ४ पंडितों का वीरों ५ से

॥ ३८ ॥ ६ सूर्य ॥ ३९ ॥ ७ हाथी ८ तिरछी घात करनेवाला अथवा पकी हुई जमर का

॥ ४० ॥ ९ अपना हाथी ॥ ४१ ॥ १० नागोर का राजा ११ अपनी धाय को १२

घोनि में १३ नूला धरकर १४ उस मूले के पत्ते बकरे को चराये ॥ ४२ ॥ १५

रामसिंह को स्वामी जानकर कुशलसिंह सभा में आया १६ घोवती ॥ ४३ ॥

१७ तू छोटे लिंगवाला है १८ कुत्ते से भी छोटा १९ कुशलसिंह २० अभयसिंह का

हुकम ॥ ४४ ॥ २१ कवि की जिन्हा भी २२ प्राणनाथ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ ४६ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तराखण्डे सप्तम ७ राशावुम्मे-  
दसिंहचरित्रे पितृव्यकल्पवनगतगुणगौरीमहोबुन्दीन्द्रश्रावणश्रा-  
मशुक्लपथमशिवादिनोत्सवस्थापनतदपरदिवससङ्घट्टपात्राऽनन्त-  
रजैतमागरमहातडागजलसेतुतोदनराणाजगत्सिंहविहितवर्णादूतबु-  
द्याऽऽगमनाऽवगतदलोदन्तरावराट्पुरोहितदयारामोदयपुरप्रेषणाध-  
न्वधरेशाऽभयसिंहमहापरिणामव्याधिवर्द्धनस्वकुपुत्रसमयसामन्त-  
स्वीकरणाऽकरणा निश्चयनसेरसिंहसर्वसहनाऽङ्गीकरणाकुशलसिं-  
होचिताऽनुचितनिवेदनकाबन्धराजकायत्यजनतत्तनुजरामसिंहपट्टपा-  
पणातदुचिताऽनादरणांत्यजनसहचरीभवनपरिभावकपीलुमारणा-  
विचारपितृव्यकधात्रेयीविवस्त्रीकरणाकुशलसिंहाऽधोवस्त्रकर्तनप्रति-  
पुरुषतन्निन्दाप्रसरणां द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥ ३१३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तराखण्डके सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरि-  
त्र में, काका के मरने से गये हुए गुणगौर के उत्सव को बुन्दी के पाति का सा-  
थन मास की शुक्लपक्ष की तीज के दिन उत्सवस्थापन करना १ उसके दूसरे  
दिन समूह के गये पीछे बड़े तलाब जैतमागर के जल का पाल को तोड़ना २  
राणा जगत्सिंह के उचित पत्र का बुन्दी में आना जानकर पत्र के उत्तर में  
रावराजा का पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना ३ मारवाड़ के पाति अ-  
भयसिंह को कालरोग के बढ़ने पर अपने छुपुत्र के समय (राजापन के समय)  
का स्वीकार, न करने के विचार से अपने उमरावों को बुलाकर निश्चय करना  
४ शेरसिंह का सब सहन करने को स्वीकार करना और कुशलसिंह का उचि-  
त अनुचित निवेदन करना ५ राठोड़ों के राजा का शरीर छोड़ना और उस  
पुत्र रामसिंह का पाट पाना ६ उसका उचित खोगों के अनादर का करना और  
अन्त्यज लोगों का साथ करना ७ अनादर करनेवाले हाथी को मारने का वि-  
चार और काका की धाय को नग्न करना ८ कुशलसिंह की धोती (धोवती) काट-  
ने से मनुष्य २ प्रति उस की निन्दा फैलने का चलीसवां ३२ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से तीसरी तरह ११३ मयूख हुए ॥

## ॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुन्दीस मंल इक धारयो, सहर सितारा गमन विचारयो ॥  
 संग लयो निज दीपे सहीदर, भजनेरीपति सेर सुभट वर ॥ १ ॥  
 इडा पुनि नाहर ३ हरदाउत, अरु दलेल ४ हरजन अमात्य सुत ॥  
 इत्यादिकन सहित नृप हंक्रिय, सुनि प्रपान दिस दिस अरि संक्रिय २  
 नृपहिं चलत कोटेस निवारयो, तउ न रुक्यो छल तास निहारयो ॥  
 सक खट नभ धुति १८०६ भद बिंसद तँहँ, बुंदिय रक्खि सचिव  
 हरजन कँहँ ॥ ३ ॥

पति संभर चल्यो दक्खिन प्रति, रहि वेधम इक १ रति मंहामति ॥  
 दरकुंचन इम पत्त अवंतिय, आद्व अपरपत्तग तत्थहि क्रिय ॥ ४ ॥  
 हंके पुनि लगगत नवरत्ते ९, अष्टमि ८ दिन रेवा तट पत्ते ॥  
 तँहँ दक्खिन पति चोकीदारन, मंग्यो कर वह सरित उतारन ॥ ५ ॥  
 सुनि नृप कहिय हम न कर दैहँ, जब उन अक्खिय पार न जैहँ  
 तव तिन्ह भूप पिटाय बिडारे, पोतन करि निजतंत्र पधारे ॥ ६ ॥  
 श्रीआँकार १ ईस दरसन करि, मांभावा २ जुत पूजि पयन परि ॥  
 रेवा नदि पुनि लंधि बडे रँय, पत्त नगर बुरहानपुरावँदय ॥ ७ ॥  
 जोतिजिंग सिव १ अरचन मंडिय, विश्वकर्म प्रतिमा २ दरसन क्रिय ॥  
 पुर अवंगवाइ गये पुनि, गोदावरी बहुरि न्हाये धुनि ॥ ८ ॥  
 आद्व १ अपन २ उपवास ३ विहित सब, विरचि अगग बुन्दीस चलिय तव  
 उज्जै असित इम गय धरि नँय धुर, बापगाँव नामक हुलकरपुर १  
 पुण्यपुर मल्लार हुतो तव, खंडू नृप सतकार क्रियो सब ॥

१ दीपसिंह ॥ १ ॥ २ कामदार का पुत्र ॥ २ ॥ ३ मना क्रिया ४ सुदि ॥ ३ ॥ ५  
 बुलिमानुदेद्वारे पत्त में गयेद्वारे "ज्योतिष में शुक्लपक्ष को द्वितीय मानते हैं"  
 ॥ ४ ॥ ७ नर्मदा के किनारे ८ नदी उतारने का ॥ ९ ॥ ६ निकाल दिये १० नावों  
 का १ १ अपनेआधीन करके ॥ ११ १ २ वेग से १ ३ बुरहानपुर नाम का ॥ ७ ॥ १४ नदी में  
 ॥ ८ ॥ १ ५ बुन्दन १ ६ कातिक चदि में १ ७ नीति के धुरको धारण करके ॥ ९ ॥ ८ पुना में

सम्मुह जाय वधाय रु लिनै, हय सिरुपाव निवेदन किन्नै ॥१०॥  
 मुदित रचा दिन प्रति मदिमानी, दुलभ सिकार अनेक दिखानी ॥  
 ग्रह कति रहन मलारहु आयो, विविध हेत मिलि दुहुँन खवायो ॥  
 बुंदिय खवरि गई नृपपै तव, सचिवन अगौं दुखित प्रजा सब ॥  
 हरजन धन छिन्वत नन हारै, धनिकन दे अभिषाप विगारै ॥१२॥  
 चौरनतै मिलि द्रव्य चुगावै, खोसि खोसि सबको वसु खावै ॥  
 सुनि उदघोस कियो नृप निउचय, निकस्यो सरय तबहि मंड्या नय ॥  
 भजनेरीपति सेरसिंह भट, हरजनको पकरन पठयो भट ॥  
 तिहि आय रु गाढुंन पत्तन, हठा घेरिलयो वह हरजन ॥ १४ ॥  
 कांठराहि तिहि तबहि कहाई, भजनेरी पै गहत मुहि भाई ॥  
 अप्पहि दये संग इनके हम, करहु सहाय स्वदासन हे छम ॥१५॥  
 कोटापति सुनि करि त्वरिताई, पृतनीं देन सहाय पठाई ॥  
 जो पहुँच न इते द्वेष करि जय, गहि हरजनहिं सेर बुंदिय गय ॥  
 तारागढ कैरागि व डारयो, बंधन लहि तव दर्प विसारयो ॥  
 बापगाँव मल्लार बुद्धजित, निज कन्या उपयम मंठिय इत ॥१७॥  
 बुन्दीसहु बहुधन खरच्यो जहँ जगनकाल, इक वत्त सुनी तहँ ॥  
 अगहन मास निसद गह, तज्यो छत्रपति साहू विघेह १८  
 हुनकर घर अति सोक तास दुव, सुता विवाहि चलन चित्यो धुव ॥  
 अहुँन बापगाँवहि नृप रक्खिय, हरजन पुत्र अरज यह अक्खिय १९  
 द्वेदिन मिलि लोहि नृप दीजे, त्वरित आनि मिलिहों दिन तीजे २०  
 द्वेदिन गिरख ताहि तव दिनी, कछु न संक भजिजावन किन्ती २०  
 इत नहु २० हुनकर २० अंतुरते, पहिलीं दुव २ पुनयापुँर पत्ते ॥

राजा और हुलकरका सितारे जाना] सप्तमराशि-तयार्द्धशमयूख (३१८६)

होतहैं सचिवसदासिव हितमय, नन्ह पितृव्यक सीमा जित नैय२१  
संभरपति सम्मुह वह आयो, दिन दस१० रक्खि सनेह दिखायो ॥  
इन हरजन सुत बापगाँव रहि, जनकहिँ सुनि पकरयो विरोध चहि२२  
नृप अनुजहिँ फोरन किय दुर्नय, फुट्यो नहिँ तब भजि कोटा गय ॥  
इत संभर१ हुलकर१ पुण्या सन, पत्ते उभय२ सितारा पत्तन ॥ २३ ॥  
हड्डिँ आत सुनत हरखायो, सम्मुह नन्ह कोस इक१ आयो ॥  
डेरा काफरखोह दिवाये, पुनि महिमानी साज पठाये ॥ २४ ॥  
साहू भूप मरयो बिनु संतति, पृथुल राज्य किम रहैं बिनाँ पति ॥  
साहू पितामही तारा तहैं, अरु प्रधान श्रीमंत नन्ह जहैं ॥ २५ ॥  
मंत्र बिचारि पनालागढ सन, राम बुलायउ संभा नंदन ॥  
अगँ नृप सिवराज कर्ण निभ, भूखन कविहिँ दये बावन५१ ईभ२६  
संभा हुव ताको लघु सोदर, दिन्नाँ जाहि पनालागढ बर ॥  
ताकै सुत यह रामनाम हुव, सो अब कियउ सितारापति धुव २७  
राजाराम१ बहुरि संभरपति१, मिलिवाये दुव२ नन्ह महामति ॥  
बैठे दुव२ इक१ तखत बरब्बर, चले दु२ओर मोरछल१चामर२८  
डोले त्रय३पुनि नन्ह मँगाये, राजाराम विवाह रचाये ॥  
साहू पट राम इम बैठो, इत इक लरन घूसल्या पैठो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कहि अगँ श्रीमंत द्विज, बाजेराय प्रधान ॥

रघू नाम भट घुंसल्या, पठयो हिंदुस्थान ॥ ३० ॥

तिहिँ जनपद गुड़वान१ अरु, खानदेस२ लिय जिति ॥

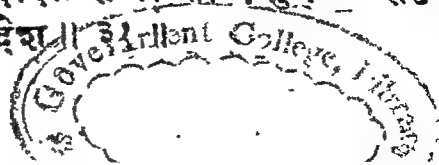
हाकिम पंडित भासकर, रक्खयो तहैं करि किति ॥ ३१ ॥

पच्छो पुनि दक्खिन गयो, मृत सुनि बाजेराय ॥

१काका २ नीति से ॥ २१ ॥ ३ राजा के छोटे भाई सेरासिंह को ॥ २२ ॥ २३ ॥

॥ २४ ॥ ४ बड़ा ॥ २५ ॥ साहू की ५ दादी. संभा का ६ पुत्र ७ सदश ८ हाथी

॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ९ देश ॥





साव रह्यो श्रीमंत सुत, नन्ह न जानैं न्याय ॥ ३२ ॥

नन्ह हुकम लौ छन्न तब, कतिक पिसुन भट ओर ॥

खानदेस गुड़वानमें, आये बनि बरजोर ॥ ३३ ॥

तत्थ रघू भट भासकर, माख्यो इन करि जंग ॥

अप्पन थानाँ रक्खि तँहँ, पारयो द्वेस प्रसंग ॥ ३४ ॥

बत्त यहै सुनि घुंसल्या, तबतैं धरत विरोध ॥

अब आयउ श्रीमंतसाँ, जुह रचन संजि जोध ॥ ३५ ॥

हुलकर पति तँहँ बीच परि, दोउरन बैर मिटाय ॥

आनि रघू श्रीमंतकै, दिन्नों पयन लगाय ॥ ३६ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पू के उत्तरायणो सप्तमराशा उम्मेदसिंह चरित्रे बुन्दीन्द्रसितारापूः प्रस्थानतिरस्कृतमहाराष्ट्रमहिममेकलजोल्लङ्घन प्रतितीर्थस्नानप्रत्यर्चार्चनविहितविधेयसम्भरेशमल्लाराधिष्ठानवाप ग्रामप्रविशनखण्डूसन्मुखामगमनाऽऽदितत्सत्करणाश्रुततदुदन्तहुलकराऽऽगमनहृद्वेन्द्रहरजनाऽमात्यदेशदुःखश्रवणप्रेषिततत्सनाभिसेर सिंहवश्यवेष्टनहरजनाऽऽहूतकोटाकटकपूर्वभजनगरीभर्तृनिगृहीतबुंदीपुटभेदनतारादुर्गप्राकारप्रवेशनोम्मेदसिंहहुलकरसुताविवाहबहुव सुवितरणातत्रत्यम्लेच्छमण्डलमर्दकशीर्षोदसितारास्वामिसाहूश्म-

१ बालक ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दीन्द्र का सितारा नगर को प्रस्थान करना, मरहटों की महिमा का तिरस्कार करके नर्मदा को उल्लंघन करना, करने योग्य हरेक तीर्थ में स्नान और हरेक मूर्ति का पूजन करके रावराजा का मल्लार के स्थान वापगाँव में प्रवेश करना, खंडू का सन्मुख आने आदि से उसका सत्कार करना, राजा के समाचार सुनकर हुलकर का आना, हृद्वेन्द्र का हरजन के दिये देश के दुःख को अमात्यों से सुनकर अपने भाई सेरसिंह को भेजकर हरजन को पकड़ने के लिये घेरना, हरजन की बुलाई कोटा की सेना के आने से पहिले भजनेरी के पति (सेरसिंह) से पकड़ेहुए (हरजन) को बुन्दी नगर के तारागढ़ के किले में कैद करना, उम्मेदसिंह का हुलकर की बेटी के विवाह में



शानसदनसमासादनश्रवणपैत्र्यर्णव्यपकरणाव्याजनीताऽवसरहार  
जनिकोटाऽऽगमनप्रदृष्टपुण्यापुरसदाशिवसत्कृतमल्लारोऽम्मेदरसिता  
रासम्प्रापणश्रीमन्तसन्मुखाऽऽगमनपनालापतिरामराजाऽधिपत्याऽ  
भिषेचनतहुन्दीन्द्रसम्मिलनतदेकाऽऽसनसन्निविशननन्हरासराव-  
विवाहनमहाराष्ट्रमण्डनसितारेशसुभटरणारसिकरघूपूर्वाऽपमानसूच  
नतत्कुपिततद्योधनाऽऽगमनमल्लारतद्विग्रहपरासनरघूश्रीमन्तचरणपा  
तनं त्रयस्त्रिंशोऽत्रमयूखः ॥ ३३ ॥ आदितः ॥ ३१४ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—हरजन पुत्त दलेल इत, कोटा जाय प्रमत्त ॥

पठये लिखि नृप अनुज प्रति, बापगाँव इम पत्त ॥ १ ॥

अप्प रहहु मम संग अरु, कोटा आवहु दीप ॥

तो बुंदिय पुर तखत धरि, मन्त्रै तुमहिँ महीप ॥ २ ॥

दीपसिंह ए पत्र हुतै, पठये अग्रज पास ॥

लिखि तिन्ह मंद दलेलको, सुपहु तज्यो बिसवास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगर सितारा नीच दह नाहर हरदाउत्त ॥

निज नृप सम्मति बिनुहिँ जानि अप्पहिँ सु बुद्ध जुत ॥

बहुत द्रव्य देना, वहाँके मुसलमानों के मंडल को मारनेवाले सीसोंदिया सि-  
तारा के स्वामी साहूका मरघट में घर करना (मरना) सुनना, पिता के ऋण  
को दूर करने के मिस से अवसर पाकर हरजन के पुत्र का कोटे आना, सदा-  
शिव से सत्कार किये हुए मल्लार और उम्मेदसिंह का पूना देखकर सितार-  
रे जाना, श्रीमन्त का सन्मुख आना, पलाना के पति रामराजा का राज्या-  
भिषेक होना, उससे बुन्दी के राजा का मिलना, मरहटों के मंडन सितारा के  
स्वामी के सुभट रणारसिक रघूके पूर्व अपमान को सूचित करना, उसका कु-  
पित होकर युद्ध करने को आना, मल्लार का उसके वैरको मिटाना, रघूको  
श्रीमन्त के चरणों में गिराने का तेतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥३१४॥

॥ १ ॥ १ हे दीपसिंह ॥ २ ॥ १ शीघ्र ॥ ३ ॥

हुलकर प्रति किय अरज अग्न नभ बसु सत्रह १७८० सक ॥

टोडा लिय जयसिंह डारि मिच्छन पर ओदक ॥

आवाँ १ पुरी रु दुन्नी १ उभय २ थान लये हमरेहु तब ॥

टोडा सु दिन्न तुम माधवहिँ तो बखसहु मम भुवहु अब ॥४॥

॥ दोहा ॥

कुप्यो हुलकर सुनत यह, सोर रहयो पुर छाये ॥

अकखी नृप कहते हमहिँ, तो बनतोहु उपाय ॥५॥

हम सन भिन्न प्रबुद्धहैं, बिगराई निज बत ॥

भनि इम नाहरतँ भयो, बुंदियभूप विरतँ ॥६॥

अगँ नन्ह अमात्य इत, रामचंद्र अघरत ॥

रानहि सम्मलि लैनकोँ, पठये कोटा पत्त ॥ ७ ॥

हुत विश्वेश्वरनाम द्विज, निज वकील कोटेस ॥

उदयनैर पठयो तबहि, फोरन रान नरेस ॥ ८ ॥

तानैँ मिलि जगतेसको, लिन्नोँ मन पलटाय ॥

दक्खिन देस प्रधानपैँ, दिय इम पत्र लिखाय ॥९॥

दै बुंदिय उम्मेद हित, अनुचित हुलकर कीन ॥

करहु कथित कोटेसको, तो हम सर्व अधीन ॥ १० ॥

जोलाँ ए दल दूत लै, निकसैँ नैर बिहाय ॥

तोलाँ अक्खिय रान प्रति, दयाराम द्विजराय ॥ ११ ॥

कोटेसहिँ जानहु कुदक, मिल्यो सु जैपुर माँहि ॥

सुनिहो रंचक दिननमँ, है तुमतैँ हित नाँहि ॥ १२ ॥

सु सुनि रान चलमति कहिय, कछु दिन परख बिधाय ॥

दक्खिन पत्र पठायहँ, तोलाग देहु धराय ॥ १३ ॥

भैसरोर पति स्वसुरहो, चुंढाउत भट लाल ॥

१ भय ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ सप्तभक्त होकर ३ विरक्त ॥ १॥ ४ पट्टवा ॥ १॥ ५ ॥ २५ कहना  
॥ १० ॥ ६ पत्र ॥ ११ ॥ ७ कपटी ८ थोड़े दिनोंमें ॥ १२ ॥ ९ करके ॥ १३ ॥

बखतसिंका जोधपुर पर जोर देना] सप्तमराशि-चतुर्विंशमशूख (३९९१)

ता पँहँ कृष्ण दलेल सुत, इत दिय पत्र उँताल ॥ १४ ॥

पत्र रावराजोपपद, रानाँको लिखवाय ॥

सो ममडिग भेजहु स्वसुर, प्यारे अवसर पाय ॥ १५ ॥

इम लिखि पठयो उदयपुर, अप्पन बनिक बकील ॥

सोहु मिलायो रान सन, करि हट लाल कुँसील ॥ १६ ॥

लघुमँति पत्र लिखाय दिय, कृष्ण कथित परिमान ॥

जल कुँल्लया जिम रान मन, फेरयो फिरत अजान ॥ १७ ॥

बखतसिंह नागोर पति, इत सठ मंडि मरोर ॥

दिल्ली दल बुल्लयो बहुरि, दैन जोधपुर जोर ॥ १८ ॥

अरजी अहमदसाह सुनि, पुनि पठयो बल पुर ॥

जवन सलावतखान जहँ, सेनानी करि सूर ॥ १९ ॥

कूरम ईश्वरिसिंहकी, तनयाँ सन विख्यात ॥

रामसिंह मरुजाजको, पहिलैँ सगपन जाँत ॥ २० ॥

यातैँ आवत जोधपुर, सुनि दिखिय दल सोर ॥

कुम्महिँ मरुपति भीरकाँ, बुल्लयो मिनि बरजोर ॥ २१ ॥

तब कूरम आमैर पति, उत्तर पठयो एह ॥

फौज खरच भेजहु ततो, आवहिँ भीर सनेह ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

अगँ नृप करते सहाय सुनि विपति परस्पर ॥

फौजखरच लेते न जदपि होतो भर संगैर ॥

जामाँता सन कुम्म मेटि रोति सु धन मंगिय ॥

तब मरुभूप सनेमँ लकख १५००००० दम्मन भरनाँ दिय ॥

१ कृष्णसिंह २ शीघ्र ॥ १४ ॥ १५ ॥ ४ सुरे स्वभाववाला ॥ १६ ॥ ४ तुच्छ  
बुद्धिवाले (षट्माश) ने ५ नहर ॥ १७ ॥ ६ सेना ७ बुलाई ॥ १८ ॥ ८ सेना  
९ सेनापति ॥ १९ ॥ १० बेटी-से ११ हुआ था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ १२ युद्ध  
का भार १३ जमाई से १४ आधे सहित एक लाख अर्थात् डेढ़ लाख

सजि तब अनीक जयसिंह सुव कोटा भेजिय कंगरहिं  
 हम संग होय जवनन इनहु तो बुंदिय तुम बस करहिं २  
 यह कहाय करि कुंच चल्पो मरुपति सहाय पर ॥  
 मरुपतिसौं अति मोद मिल्यो तीरथगुरु पुंखर ॥  
 नगर मेरता तदनु जाय दोउन २ मिलान दिय ॥  
 इत दिल्ली दल ईस उदयपत्तन दल भेजिय ॥  
 हम संग होहु जगतेस नृप सह माधव सेवानुरंत ॥  
 अग्रजहिं मारि अप्पहिं हमहु तो अनुजहिं जैपुर तखतार  
 यह सुनि सज्जिय रान होन दिल्ली दल सम्मलि ॥  
 इत कोटा अधिराज कुम्म कंगर बंचिय बलि ॥  
 हुव तयार तब हड्ड करन कूरम किंकर पन ॥  
 बुंदिय लोभ विधाय रचन दिल्ली दलतैं रन ॥  
 पुरजन कितेक कछु काम तैंहँ कोटाके गय उदयपुर ॥  
 तिन कहिय जात कोटेस सजि जैपुर सम्मलि दल पंचुर २५  
 दयाराम द्विज तबहि रान यह सुनत सिराह्यो ॥  
 अकिखय हम सन हेत नाहि कोटेस निबाह्यो ॥  
 यह सुनाय वे पत्र लिखे दकिखन पहुँचावन ॥  
 दित्रैं ते द्विज हत्थ प्रीति बुंदियपर लावन ॥  
 द्विज दयाराम ते दल सैकल सहर सितारा मुकलिय ॥  
 तब उभय हड्ड हुलकर तैमकि कंगर बंचत कोप किय ॥२६॥

॥ दोहा ॥

पुनि मलार खिजि नन्ह पर, रुठि चल्पो निज देस ॥  
 सुनत नन्ह अहो फिरथो, बुल्पो विनय बिसेस ॥२७॥

१ पत्र ॥ २३ ॥ २ पुष्कर में ३ जिसपीछे ४ पत्र भेजा ५ सेवा में प्रीति करके  
 ६ ईश्वरीसिंह को ७ माधवसिंह का ॥ २४ ॥ ८ पति ९ बुन्दी का लोभ करके  
 १० बहुत सेना ॥२५॥ ११ सय पत्र १२ खिजकर १३ पत्र वाचते ही ॥२६॥२७॥

छमहु कोप मल्लार छमै, सुनहु बत मम एक ॥

सचिव अट्ट ८ यह मुख्यहे, अगगै विहित विवेक ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

श्रीपतिराव १ हुते सबमैं इनै, प्रतिनिधिको उपपद पायो जिन ॥

तिन मुख अगगै मम प्रपितामह, विश्वनाथ १ बितये अनेक अह २९

बाला २ हुव पुनि विश्वनाथ सुत, तेहु रहे मुख अगग विनय जुत ॥

श्रीपति संग पेसै रहिबे सन, तिनहिं पेसवा कहन लगै जन ॥ ३० ॥

बाजेराय ३ भये बालासुत, मामक जनक पेसवा नय जुत ॥

श्रीपतिराव मरे प्रतिनिधि जब, तुम पंचन हमरो जस किय तब ३१

श्रीपतिकी तब मुख्य सचिव गति, बाजेरायहिं दई छत्रपति ॥

अंक छाप जिम खनित उधारे, सो तुम सुनहु गर्वकरि सारे ॥ ३२ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान बाजेराय बालाजी पंडितप्रधान  
ए अंक छापमैं खुदाय हमारे पिता पेसवा बाजेराय छत्रपतिनैं मुख्य  
प्रधान कीनैं ॥

अरु उनके देहांतके अनंतर श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान  
नन्हौजीबाजेराय पंडितप्रधान ए अंक सितारेश्वरनैं छापमैं खुदाय  
दीनैं ॥

तदनंतर जब छत्रपति साहू परलोक गये ॥

तब पनालागढसों पितृव्यक संभाके पुत्र राजाराम आयकैं सि-  
ताराके अधीस भये ॥ ३३ ॥

अब वेही अंक नईछापमैं राजारामके नाम सहित खनाये ॥

सो सब इत्यादिक अर्थयुदयके फल तुम पंचननैं प्रसंसापूर्वक

१ समर्थ ॥ २८ ॥ २ पति १ कायम मुकाम का ४ दिन ॥ २९ ॥ ५ आधीन

११ से ॥ ३० ॥ ३ मेरे पिता ॥ ३१ ॥ ७ खुदाकर ८ आगेवाले गय छन्द

से ॥ ३२ ॥ ६ पीछे १० जिसपीछे ११ काका ॥ ३३ ॥ १२ खुदाये १३ पेशवर्ष

मिलाये ॥

तुमहीनै हैदराबादके नवाब निजामनमुलककों जेर करि रूप-  
 ध्येमैं सिका अपने अंकको खुदाय जागीरी पटामें हैदराबादही  
 पच्छो उनकों दिवाय बंदगी सितारेकी कराई ॥

अरु गुजरातको मालिक दामा गायगवाल् साठहजार ६००००  
 सेनाको सिरदार फिराऊ भयो ताकों कैदकरि बंडलै रु गुजरात  
 कों अपनै अधीन बनाई ॥ ३४ ॥

तुमारे प्रतापतैं इत्यादिक अभ्युदय देखि सबननै सितारेकों  
 कुंमारिकेश्वर कह्यो ॥

तिनके रूठि गयें रामराजाके राज्यमें स्वामिधर्मी सचिव कोन  
 रह्यो ॥

असो आदेस श्रीमंतको सुनि हुलकरनें दयाराम द्विजके पठा-  
 ये दैल दिखाये ॥

अरु कही कोटादिक कूर बुंदीससों बैर करैं सो पापिष्ठ पंडि-  
 त रामचंद्रके सिखाये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत पत्र श्रीमंत करि, रामचंद्र पर रीस ॥

सज्जित हिंदुस्थानपर, किन्नों हुलकर ईस ॥ ३६ ॥

कछुदिन पहिलैं नन्हसों, रामचंद्र कहि बत ॥

संध्याको अधिकार सब, छिन्नों पिसुन प्रमत्त ॥ ३७ ॥

निंदा बहुरि मल्लारकी, कहि कहि कितव कुदरै ॥

अप्पहिं हिंदुस्थानपर, हुव मालिक हुसियार ॥ ३८ ॥

१ इस शब्द का अपभ्रंश गायकवाड़ हुआ है अर्थात् ये लोग पहिले  
 गवर्नों के चराने से गायकवाले कहाते थे ॥ ३४ ॥ २ जिस देश में वर्ण व्यव-  
 स्था है उसका नाम कुमारिका है ३ पत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४ शुगल ॥ ३७ ॥  
 ५ बुरी भांति ॥ ३८ ॥

अब ताको यह कपट लखि, नन्ह दयो सु निवारि ॥

किप तयार मल्लार कँहँ, दँलि बिस्वास बधारि ॥३९॥

राजोरा सटवा १ तबहि, हुलकर निज उमराव ॥

दस हजार १०००० दल संगदै, पठयो अग्न सचाव ॥ ४० ॥

अकखी तुम पहिलैं चलहु, दबहु हिंदुसथान ॥

चातुरनास विताय हम, आवहि कटक अमान ॥ ४१ ॥

तब सटवा दरकुंच करि, लंघि नगर उज्जैन ॥

आपो सुनि दिस दिस उठिय, ओदैक भूपन अैन ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुस्मेद सिंहचरिते कोटागतहारजनिदलेलसिंहबुन्दीन्द्रसोदरदीपसिंहभेदन पत्रलिखनदृष्टाऽनुजप्रेषितपत्रसितारासंस्थितरावराडमात्यविश्वासत्य जननिजपुराऽऽवा १ दूग्यु २ दरगाहरदाउत्तनाहरसिंहमल्लारविज्ञा पनकोपतत्तदनूरीकरणाश्रुतैर्नद्वेन्द्रस्त्रभटकुत्सनसमवगतश्रीमन्ता ऽमात्यपण्डितरामचन्द्रराणाभेदनपत्रकोटेशविप्रविश्वेश्वरोदयपुरप्रे- पणविभित्सुमायामूढराणाबुन्दीदुर्जनशल्यदापनपत्रलिखनप्रस्थित- तद्विजदयाराशमनिवारणादालेतिश्वशुरचूडाउत्तलालसिंहजामातृ-

१ पुनि ॥ ३६ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ भय ३ राजाओं के घरों में ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरि- त्र में, कोटा में गये हुए हरजन के पुत्र दलेलसिंह का बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह को फोड़ने का पत्र लिखना १ छोटे भाई के भेजे हुए उसके पत्र को देखकर सितारा में ठहरे हुए रावराजा का अमात्य का विश्वास छोड़ना २ अपने पुर आँवाँ और दूगी के निकालने की हरदाउत नाहरसिंह का मल्लार से अरज करना और उसका क्रोध सहित अस्वीकार करना सुन कर ह्वेन्द्र का अपने उस उमराव की निन्दा करना ३ श्रीमन्त के अमात्य रामचन्द्र का राणा को फोड़ने का पत्र प्राप्त करके कोटा के पति का ब्राह्मण विश्वेश्वर को उदयपुर भेजना और उसकी साया में मूर्खराणा का दुर्जनशल्य को बुन्दी देने की सम्मति का पत्र लिखकर भेजने में ब्राह्मण दयाराश का रोकना ४ दलेलसिंह के स्वशुर-चूडा लालसिंह का जमाई के अर्थ राणा से रावराजा

हितराणाशदराट्पदपत्रलेखननागोरपुरेशरठोड़बखतसिंहस्वसहायदि  
ल्लीसैन्याऽऽवहयन्तदगीतयोधपुरेशरठोड़रामसिंहस्वीयश्वशुरकर्म  
राजाऽऽवहानानीतसाऽर्हलक्ष १५०००० मुद्रासितजामातृद्वयसमाहू  
तमहारावप्रस्थितजायसिंहिपुंकरक्षेत्रजामातृमिलननृपद्वय २ मेर  
तापुरपृतनापातनप्राप्तदिल्लीशसेनानीपत्रराणाजिगमिषुभवनश्रुत-  
कोटेशशत्रुभावराणापूर्वलिखितदयारामाऽर्पणपुरातत्सिताराप्रेषण-  
श्रीमन्तश्रुतैतदुदन्तकुपितपियासुहुलकर १ हठेन्द्रा २ अनुनयनज्ञात  
रामचन्द्रकौहक्यनन्हतदधिकारमल्लाराऽर्पणमल्लारस्वभटसटवाहिंदु  
स्थानागमनं चतुस्त्रिंशो ३४ मयूखः ॥ आदितः ॥३१५॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत कोटापंतिको बढिकायो, बुंदिय लरन कृष्णा वह आयो ॥  
दै घेरा तोपन रन मंडिय, खोमै बरणा कपिसिर कछु खंडिय ॥ १ ॥  
लग्गे कहन सेस दिग्गज गन, बिरचहु बाहुज नास बिरंचन ॥

के पदका पत्र लिखाना ५ नागोर पुर के पति राठोड़ बखतसिंह का अपनी  
सहायको दिल्ली की सेना को बुलाना और वह सुनकर जोधपुर के पति राठोड़  
रामसिंह का अपने श्वसुर कछवाहा राजा (ईश्वरीसिंह) को बुलाना ६ जमाई से  
डेढ़ लाख रुपये लेकर कोटा के महाराव को बुलाकर जयसिंह के पुत्र का पु-  
ष्कर क्षेत्र में जमाई से मिलना ७ दोनों राजाओं का मेड़ता नगर में सुकाम  
करना और दिल्ली के सेनापति का पत्र पाकर राणा का जानेकी इच्छा  
वाला होना और कोटा के पति का शत्रु भाव सुनकर पहिले लिखे पत्रों का  
दयाराम को देना ८ उसका उन पत्रों को सितारापुर भेजना और श्रीमन्त का  
उस वृत्तान्त को सुनकर कोप से जानेवाले हुल्लकर और उम्मेदसिंह को नहीं  
जाने देना ९ रामचन्द्र का छल जानकर नन्ह का उसका अधिकार मल्लार  
को देना और मल्लार और अपने उमराव सटवा का हिंदुस्थान में आने का  
प्रातीक्षवां मयूख सत्पास हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से तीन सौ पन्द्रह  
मयूख समाप्त हुए ॥ ३१५ ॥

१ कृष्णसिंह २ चोम (वुरज) ३ कोटकांगुरे ॥ १ ॥ ४ चत्रियों का नाश करो ५ हे ब्रह्मा



इनको बीज रहैं छिति जोलों, रंचक चैन हमे नहिं तोलों ॥२॥  
दिस दिस यह कोलाहल अद्भुत, बुंदिय इम बिटिय दलेल सुत ॥  
नहिं नृप\*तदपि कव्यो अंतर दल, चालुकः कायथरहत्थ चलाचल

॥ षट्पात् ॥

सोलंखी संग्रामसिंह १ जोराउर नंदन ॥  
कायथ मोजीराम २ कळे अरि करन निकंदन ॥  
मारे के रन अपर भारि निर्भर समसेरन ॥  
देर न किय दालेलिं भज्यो भीरुक तजि डेरन ॥  
नैनवा मग्ग लिय रुक्मि इन तब सु जाय कोटा रहिय ॥  
कोटेस हितु दै हुत कटक करहु भीर अब इम कहिय ॥४॥

॥ दोहा ॥

गो बुंदिय तुमरे कहैं, आयो रखत लुटाय ॥  
बल बिनु बैर न बाहुरत, संत्वर देहु सहाय ॥ ५ ॥  
दुजनसल्ल उत्तर दयो, दिवस भीरुके ए न ॥  
कछुक काल छनै रहहु, सटवा आत ससेन ॥ ६ ॥  
राजोरा दरकुंच रचि, कोटा सन लहि दंड ॥  
हुत पहुँच्यो अजमेर दिस, मंडत अमल अखंड ॥ ७ ॥  
खत्री केसवदासकै, पठये सटवा पत्र ॥  
बखतसिंह सन बैर तुम, अनुचित करहु न अत्र ॥ ८ ॥  
कूरम प्रति केसव कहिय, बरजत तुमहिं सलार ॥  
जो चाहिहैं अब जंग तो, डहिहैं सब डुंढार ॥ ९ ॥  
बरज्यो इत बखतेसहु, मरहठन भय मानि ॥  
लौ बहु धन मरुपालसाँ, बुल्लयो न लारन वानि ॥ १० ॥

॥ २ ॥ \* उम्मेदसिंह नहीं था तोभी १ भीतर की सेना निकली २  
चपल ॥ ३ ॥ ३ नाश ४ निर्भर (बहुत) ५ दलेलसिंह के पुत्र ने ॥ ४ ॥ ६ सामग्री  
७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ सेना सहित ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ मारवाड़ के राजा से

सुनि तन ईश्वरिसिंहहु, सैटवा नीति सुनाय ॥  
 कपो पुनि पुनि दिखिय कटक, नौकिस कोत बुलाय ॥ ११ ॥  
 हुलकरको यह सुनि हुकम, तब नवाव दरि तत्त ॥  
 सव्यद खान रात्तावतहु, पच्छो दिखिय पत्त ॥ १२ ॥  
 कुम्हहिं जानि सदाय कर, रामसिंह मरुनाय ॥  
 केसव हठि रोक्यो कलहु, इहिं कारन अकुलाय ॥ १३ ॥  
 सम्मति हरगोविंदकी, लो कबंध नृप राम ॥  
 कुम्हहिं अखिय केसवहु, हे यह स्वामि हराम ॥ १४ ॥  
 गाधव१ अरु उम्मेद२ सो, पाको प्रीति अजल ॥  
 छनै आवत जात छदं, घनें गने हम धम ॥ १५ ॥  
 कोउक पत्र फेर कनि, लिपि तार्की लिखवाय ॥  
 तैसोही लिखि कुम्हको, दिन्नों विदित दिखाय ॥ १६ ॥  
 सु लखि पत्र जयसिंह सुध, मन्नी सत्पहि मुंह ॥  
 सुलि सभा अंतर वनों, केसव उपर कुद ॥ १७ ॥  
 केसव अखिय जोरि कर, इतरनको छल गृह ॥  
 अमु काजे तनु अंतरित, निकसैं जो सम लोहें ॥ १८ ॥  
 नत्री तदपि न मालुपुंस, सुनहु राम नृप हाय ॥  
 करि दृष्ट दिन्नों केसवहिं, पापो गैरल पिदाय ॥ १९ ॥  
 सुल्लपो तैंहें जयसिंह सुव, हे पौमर मतिहीन ॥  
 गिनि तैंहा मल्लारमें, शर जपूर किय खान ॥ २० ॥  
 न्यारिद परगन सोदसहिं, दृष्ट हिं सुंदिय देस ॥  
 किंतव दिनाये पाँदग तारि, वाको फल मति लय ॥ २१ ॥

जैपुरके राजाका मंत्री केशवको मारना] लक्ष्मराशि-पंचांगशतवृत्त (३६०१)

कहाँ सहायक तब कुमति, मूरख वह मल्लार ॥  
वाहि बचावन प्राण अब, बुल्लहु क्यों न लवार ॥ २२ ॥  
सुनि अकिखय केसव सुमति, स्वामि हनै जब दास ॥  
नाता कोन द्वितीय२ तँहँ, गिलत सिंह गज आस ॥ २३ ॥  
केसव केसव ध्यान करि, पुनि पुनि बिरचि प्रनाम ॥  
गहि भोजन पिन्नों गरल, रटि अच्युत हरि राम ॥ २४ ॥  
लेत जहर आवत लहर, नील नहर यह भाखि ॥  
बिनु आगस जो देत बिख, सो पावत श्रुति साखि ॥ २५ ॥  
इम कहि इकश्घटिका अवधि, केसव छोरयो काय ॥  
बहुल छिनि ताको बिभव, लाई कूरम लाय ॥ २६ ॥  
आपो जैपुर कुम्भ इम, मंत्री पटु निज मारि ॥  
सटवा यह बदनीति सुनि, बिबिध लिखिय बिसतारि ॥ २७ ॥  
सुनि हुलकर श्रीमंतसों, अकरयो यह अपराध ॥  
हठ पूरव लिन्नो हुकम, बिरचन जैपुर बाध ॥ २८ ॥  
हुलकर१ दड्ड २ रु नन्ह ३ पुनि, तजिग सितारा तत्त ॥  
सक हय नभ धृति १८०७ चैत्र सित, पुण्यापत्तन पत्त ॥ २९ ॥  
तनय स्वीय उपवीत तँहँ, बलि निज अनुज विवाह ॥  
पुण्या क्रिम श्रीमंत प्रभु, अति हित उभय उछाह ॥ ३० ॥  
महिमानी उम्मेदकी, बहु श्रीमंत बनाय ॥  
प्रीति सहित अनुकूल पन, दिन दिन अधिक दिखाय ॥ ३१ ॥  
रामचंदके कथित करि, संध्याको अधिकार ॥

॥ २२ ॥ १ रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ केशवदास ने २ श्रीकृष्ण का ध्यान  
करके ३ पात्र लेकर विष पीगया ॥ २४ ॥ ४ उस नीले नखोंवाले ने यह कहा  
“जहर खानेवाले के नख नीले होजाते हैं” ५ अपराध ६ वही पीछा पाता है  
यह वेद की सच्ची है ॥ २५ ॥ ७ बहुत दकछवाहे ने लाय लगाई ॥ २६ ॥ २७ ॥  
॥ २८ ॥ ८ पूना नगर में प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

भयो खालसै किन्न अब, ताकी अरज मलार ॥ ३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनहु नन्ह हम अगग लियउ मालव जवनन सन ॥

तब पत्तन उज्जैन महाकालेस निकेतन ॥

परमार सु आनंद १ मै २ रु संध्या रागांजिय ३ ॥

तीनन ३ तजि हिय गंठि सत्य इहिं रीति सपथ किय ॥

इकश्चित्त स्वामि कारिज करहिं अरु जो होवहिं काल बसि ॥

तो तास सुतन जीवै सु जन हिय लगाय पालहिं हुलासि ३३ ॥

॥ दोहा ॥

यह करार जो भुल्लि अरु, चलिहै कुमति कुचाल ॥

ताहि महाकालेश्वरहु, प्रगट करहिं पैमाल ॥ ३४ ॥

हमरे हुव संधा यह सु, जानत तुमहु अजेय ॥

रामचंदके कथित करि, संध्या नहिं अपमेय ॥ ३५ ॥

रूपय पैसठि लक्ष ६५००००० तब, दै मलार बिच रक्खि ॥

संध्या सन श्रीमंत लिय, सेनापति तिहिं रक्खि ॥ ३६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकरको श्रीमंत कथित किय, संध्या जया लगावन निज हिया ॥

नाम चमारगोंद तस पत्तन, आयउ ताहि मनावन अप्पन ॥ ३७ ॥

लौ तिहिं संग गये पुराया जब, रचिय मंत्र हुलकर १ संध्या २ तब ॥

हिन्दुसथान माँहिं अप्पन दुव २, स्वामी नन्ह तयार करे धुव ॥ ३८ ॥

रहयो परंतु उहाँको बहुतर, वित्त हायानिक रामचंदकर ॥

जो न रहै अप्पन बस यह धन, तो करैहि वह दुष्ट दुष्टपन ॥ ३९ ॥

१ मंदिर में २ सोगन किये थे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३ प्रतिज्ञा ४ अपमान (अनादर)

करने योग्य ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ कहना ६ जया नामक सिन्धिया का ७ सिन्धिया

के पुर का नाम चमारगोंदा था ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ अत्यन्त ९ वार्षिक (सालाना)

धन ॥ ३९ ॥

यह तब दुहुँन २ नन्हप्रति अक्खिय, आब्दिक कर अपनेँ कैर  
रक्खिय ॥

श्रीमंतहु यह अरज मन्नि लिय, हिंदुसथान अधीन दुहुँन २किय ४०  
॥ दोहा ॥

तबतैं हिंदुसथानकी, खरनीको कर सर्व ॥

हुलकर संध्याऽधीन हुव, आब्दिक बित्त अँखर्व ॥ ४१ ॥

सिक्खदैँ श्रीमंत पुनि, संभर डेरन आय ॥

तरल निवेदे दस १० तुरग, करंटी दुव २ अतिकाय ॥

भूखन मनिन अनर्घ दुव २, दस १० सिरुपाव उदार ॥

दिग्नी बुंदिय सिक्ख इम, करि संभर सतकार ॥ ४३ ॥

सक सुनि नभ वसु इंदु १८०७ संम, सावन पंचमिऽस्याम ॥

बुंदिय आयो करि विजय, धरनीपति निज धाम ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेद  
सिंहचरित्रे कोटेशपेरिरितदालेलिकृष्णसिंहबुन्दीवेष्टनरावराट्सुभ-  
टसोलंखिसंग्राम १ कायस्थमोजीराम २ तदभिभवनकृष्णसिंहको  
टासहायप्रार्थनदुर्जनशाल्यतदनङ्गीकरणराजोरासटवावखतसिंहे २  
श्वरीसिंह २ युद्धवारणाश्रुतपैशून्यकूर्मराजखलिकेशवगरलदापनजा

१ सालाना खिराज २ अपने हाथ में ॥ ४० ॥ ३ आधीन ४ बहुत धन ॥ ४१ ॥

५ हाथी ॥ ४२ ॥ ६ असूल्य ॥ ४३ ॥ ७ विक्रम के शक का सम्बत् ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में  
कोटा के पति की प्रेरणा से दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का बुन्दी घेरना और  
रावराजा के भट सोलंखी संग्रामसिंह और कायस्थ मोजीराम का उस  
के सम्मुख होना १ कृष्णसिंह का सहाय के अर्थ कोटा के पति की प्रार्थ-  
ना करना और उसका अस्वीकार करना २ राजोरा सटवा का खलतसिंह  
और ईश्वरीसिंह का युद्ध रोकना और चुगली सुनकर कछवाहों के राजाका  
केशवदास को जहर देना ३ यह वृत्तान्त जानकर हुलकर का जयपुर को

ततदुदन्तहुलकरजयपुरध्वंसिनीनन्हाऽऽज्ञानयनतदनुश्रीमन्त १ हड्ड  
 २ हुलकर ३ पुण्यापुराऽऽगमनकृततनयोपवीता १ऽनुजविवाहो २  
 सवनन्हमल्लारवचनाऽनुकूलसन्ध्याजयासेनाऽधिकाराऽर्पणमल्लार  
 जया २ हिंदुस्थानप्रेषणोरीकरणनन्हबुन्दीन्द्रशिविरागमनतुरगदश  
 क १० करटियुग २ मणिभूषणद्वया २ ऽऽदिनिवेदनरावराट्बुन्द्या  
 ऽऽगमनं पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ आदितः ॥ ११६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापति संकल्प सब, करे नियति प्रतिकूल ॥

रामचंद्र सन हित रच्यो, मोघ भयो सु समूल ॥ १ ॥

पलटायो जगतेस पुनि, सावधान हुब सोहि ॥

खुंदी पठयो कृष्ण बलि, भजि सु पराजित मोहि ॥ २ ॥

जैपुर सम्मलि पुनि जुरन, लग्गो करन प्रमान ॥

वरज्यो सटवा कुम्भ तब, थकि बैठो निज थान ॥

असो अनुचित ईरखा, किन्नों जड़ कोटेस ॥

न फल्यो उद्यम नीचको, सोक रह्यो अवसेस ॥ ४ ॥

उदयनैर सन रान इत, दयाराम द्विज संग ॥

पठयो टींका उपकरण, अनुसरि प्रीति उमंग ॥ ५ ॥

नाश करने की नन्हकी आज्ञा लेना और जिसपीछे श्रीमन्त, उम्मेदसिंह और  
 हुलकर का पूना नगर से आना ४ पुत्र की जनेज और छोटे भाई का विवाह  
 करके नन्ह का मल्लार के वचनों के अनुकूल सिन्धिया को जया नामक सेना  
 का अधिकार देना और मल्लार व जया को हिन्दुस्थान में भेजना मंजूर  
 करना ५ नन्ह का बुन्दी के राजा के डरे आना और दश घोड़े, दो हाथी, दो  
 जड़ाऊ भूषण आदि भेट करना और रावराजा का बुन्दी आने का पैंतीसवां  
 मयूख समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और आदि से तीन सौ सौलह मयूख हुए ॥ ३११ ॥

१ आग्य ने उलट कर दिये २ निरर्थक ॥ १ ॥ ३ कृष्णसिंह को ॥ २ ॥ ३ ॥

४ घाती ॥ ४ ॥ ५ सामग्री ॥ ५ ॥ ३

हाटक साखति उभय२ हय, भैदकल इक१ भातंग ॥

सूचीमुख सिरपेच इक१, दुवर सिरुपाव सुरंग ॥ ६ ॥

टीकाको यह साज दिष, दयाशम द्विज सत्थ ॥

परंपरा दसतूर पुनि, सुनिये राम समत्थ ॥ ७ ॥

अगैं सुपहु सुगांड सुत, नृप नाराय नदास ॥

रन राना संग्रामकी, टारी दुस्सह त्रास ॥ ८ ॥

मंडूपुरप नबाबको, इक्का भट लिष मारि ॥

संभरको सीसोद तब, बहु आसान बिचैरि ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम रान संग्राम भीर करि, बाबरको बहु कटक हन्यो लरि ॥

च्यारि अग चालीस४४घाय सहि, विजय कियो बुंदीस धर्म बहि१०

इक्का मुगल यहै पुनि मारयो, अपने सिर उपकार बिचारयो ॥

भटन सहित यह मंत्र रान किय, बिनई पुनि बुंदीसहि बुल्लिय ११

तुम हमतैं कछु भेट अब्द प्रति, इच्छत लेहु रक्खि निज उन्नति ॥

रचि तब नर्म कछो संभर पहु, पट्टिस१खग१ कोस दुवरप्रेसहु१२

बैर तीन३ हायन बिच लैहैं, तब तुम पर इहुन हित व्हैहैं ॥

भेजहु प्रथम बिजयदसमी१० दिन१, पुनि गुनगोरि३ दिवस२ आ-

हुंठ इन ॥ १३ ॥

वरसगंठि दिन३ बहुरि पठावहु, तो हमहेत गिनैं तुमरो बहु ॥

यह नृप नर्म रान स्वीकृत किय, अवरहु प्रीति रीति इम बांधिय१४

दाटर्क साज उपेत इक१ हय, इक१ तरवारि मुठि तिहिं मनिय ॥

इक१ निखंग इक१ बिसिखासन, चीरा इक१ मूल मिति जास न१५

१ सुवर्ण की २ मस्त हाथी ३ हीरों का ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ धर्म धारण

करके ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ हंसी करके ६ कटार और खड्ग के दो स्थान भेजो

॥ १२ ॥ ७ हे आहड़ नगर के पति अथवा अहाड़ा क्षत्रियों के पति "आहड़

पुर में राज्य रहने के कारण शीषोदिया क्षत्रियों को अहाड़ा तथा आहड़ा कह-

ते हैं" ॥ १३ ॥ १४ ॥ ८ सुवर्ण के साज ९ सहित १० धनुष ॥ १५ ॥

असि? पट्टिस? के कोस? सहित चहि, इक? सिरुपेच इते? भेजन  
कहि ॥

तवतैं चली रीति वह आई, सो रानहिं नहिं मिटत सुहाई ॥१६॥

दयाराम द्विज तत्थ रान अब, टाँका संग एहु पठये सब ॥

बुंदिय रान सचिव? द्विज ? लाये, विजयदसमि १० दिन नजरि  
कराये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उज्ज अमावसि निस तदनु, चोकीदारन फोरि ॥

तारागढ सन कहि गयउ, हरजन वह छल जोरि ॥ १८ ॥

इत दक्खिन अब वे उभय?, मुनि नभ धृति १८०७ इसमास ॥

हुलकर संध्या सज्ज हुव, लागि दिगविजय हुलास ॥ १९ ॥

॥ पट्टषात् ॥

विजयदसमि १० दिन बीर सेन हंकिष सागर सम ॥

संध्या तैं हुलकरहिं कहिष कछु काम गेह मम ॥

मैं चमोरगौदा प्रवेशि वह करि हुत आवत ॥

अप्प चलहु इत अगग अबनिं सन्नुन अपनावत ॥

यह कहि जया सु गय निज नगर इत सलारहंकिष कटक

दिस विदिस वत्त फुट्टिय दुसह रचहिं कोन दक्खिन रटक २०

हुलकर सुत जुत हंकि लंघि चम्मलि इत आयउ ॥

एत सुनत बुंदीस जाय सम्मुह गृह लायउ ॥

अरु हय नभ धृति १८०७ अब्द मास अगहन पख उज्जल ॥

हुँन नैनवा जाय विटि तोपन किय कंदल ॥

तव सठ दलेल सुत कृष्ण वह अंतहपुर तजि भाजि गय ॥

हह? रु मलार? ताकी तियन पठई पीहर बिरचि नय ॥२१॥

१६१॥ अश्विनी मास की २जिसपीछे ॥१८॥ ३आश्विन मास में ॥१९॥ ४सिन्धु-  
या के पुर का नाम है ५भूमि ॥२०॥ ६वृत्तान्त ७युद्ध किया ८जनाने को छोड़कर ११



हुलकरकाराजामहितजैपुरपरचढ़ना] सप्तमराशि-सप्तत्रिंशमयूख (३६०७)

॥ दोहा ॥

नगर समीधी१ नैनवा२, करउर३ ए सब लिन्न ॥

तिनमें नृप बुन्दीस तब, अमल अप्पनों किन्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मे  
दसिंहचरित्रे कोटेशयत्ननिष्फलीभवनराणातिलकोपहारबुन्दीप्रेष-  
गाहर्जनकारानिष्कसनमल्लारहिंदुस्थानाऽऽगमननयनपुरयुद्धकरणा  
दालेलिपलायनबुन्दीन्दतद्रभूयुद्धरणां षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥  
आदितः ॥ ११७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ निःशास्त्री ॥

इम सुत भीरु दलेलका तजि तियन पलाया ॥

ताके देस असेसमैं नृप अमल बिंघाया ॥

पुनि हुलकर संभर सहित अमरख उफनाया ॥

खत्री केसव बैरपैं जयनैर चलाया ॥

फट्टी पन्नग संकुली फन पलाटि फिराया ॥

खुल्ले नैन महेसके नवैं माल लुभाया ॥

लगा बावन५२ संगही रन कोतुक आया ॥

॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कोटा के पति का यत्न निष्फल होना १ राणा का तिलक की सामग्री बुन्दी भेजना २ हरजन का कैद से निकलना ३ मल्लार का हिन्दुस्थान में आना "सामान्य रीति से सभी भारत वर्ष का नाम हिन्दुस्थान है परन्तु विशेष करके भारत वर्ष के पूर्वी प्रान्त को हिन्दुस्थान कहते हैं" नैखवा पुर में युद्ध करना और दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का भागना तथा बुन्दी के पति का उसकी भूमि लेने का छत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३६॥ और आदि से तीन सौ सत्रह ३१७ मयूख हुए ॥

१ भागा २ किया ॥ १ ॥ ३ शेषनाग की सांकल (पीठ की लंबी हड्डी) फटी शनधीन मुंडमाला का लोभ लगने से शिव के नेत्र खुले युद्ध का खेल देखने

जाल बनाया जुगिनी कर ताल बजाया ॥ २ ॥  
 गिद्धनि चिलहनि गैनेमें गन के गढ़काया ॥  
 धूरि विलगंगी भानुकैं सब भानु छिपाया ॥  
 शृंग लचकै मेरुके धर खंड धुजाया ॥  
 हाक नकीवनकी मची दल डाक लगाया ॥  
 सुनि आवत दक्खिन कटक कूरम अकुलाया ॥  
 हुत कर्मर वुंदीसपैं लिखवाय पठाया ॥  
 छंडी छोरिंद रावरी हम साम बनाया ॥  
 हुलकर सम्मलि होय क्यों अब दंड उपाया ॥ ४ ॥  
 किन्नों प्रथम करार जो नहिं नैक मिटाया ॥  
 अब कैसे अपराधपैं मल्लार कुपाया ॥  
 केसव आयस नाँ किया इम बारि गिराया ॥  
 दास तदपि आमेरका इनका न नसाया ॥ ५ ॥  
 अगैं रंचक दोसपैं अतिदंड न गाया ॥  
 समुझावहु तुम संभरी हुलकर हठ आया ॥  
 एकाँकी अब अप्पका अवलंब बनाया ॥  
 ए कर्मर आमेरका सुनसीन सुनाया ॥ ६ ॥  
 चिनय भरे सुनि बेन ए संभर सकुचाया ॥  
 मंत्र विरचि मल्लारतैं दिय गूढ खुलाया ॥  
 हुलकर अरुखी भूपतैं नहिं बैर सिवाया ॥  
 दक्खिन निंदा अहरी बलि दर्प बढ़ाया ॥ ७ ॥  
 मारत केसवदासको उन बेन लगाया ॥

यह पावन बार संग सब योगिनियों ने समूह बनाकर हाथ की लाली मजा  
 गिद्धनियों की चिलहनों के समूह १ लाहौर में २ प्रसन्नता की पोली में  
 ३ लुभी ४ लुगी की किन्नों के सुनि समूह सब ५ रूप को छिपा ॥  
 ६ मना की लोभ दिलाया ॥ ३ ॥ ७ पक्ष ८ भूति ॥ ४ ॥ ९ केसवदास ने  
 नहीं जाना इस काहल ॥ ५ ॥ १० लंकेश चापका ॥ ६ ॥ ७ ॥

जिहँ बलतैं बुंदी बहुरि चउ४ देस गुमाया ॥  
 सो हुलकर तेरो कहाँ अब अंतक आया ॥  
 असैं कहि अपराध बिनु पटु सचिव नसाया ॥ ८ ॥  
 ताहीके दड दोसपैं इत मैं चलि आया ॥  
 मारनका नहि मंत्र पै अति दर्प छकाया ॥  
 यातैं रूपय दंडका लैहैं मनभाया ॥  
 बुंदीपति सुनि बैन ए प्रतिबैन लिखाया ॥ ९ ॥  
 कूरम हम तुमरैं कहैं हुलकर समुझाया ॥  
 पै पिसुननकी मन्त्रिकैं तुम दप दिखाया ॥  
 यातैं आयस नन्हका लहि कटक चलाया ॥  
 केसवदास बिनासका इन ओगुन गाया ॥ १० ॥  
 मारनका नहि मंत्र पै धन लैन धकाया ॥  
 प्रत्यागत इच्छैं नहाँ एहू दठ आया ॥  
 यातैं अप्पहु अप्पहु दम दम्म सिवाया ॥  
 लै तिनकों टरिजाँहिगे दल खरच दुखाया ॥ ११ ॥  
 ए कग्गर कूरम सुनत इत मंत्र उपाया ॥  
 देनाँ दम्म न उचित करि लरनाँ चित लाया ॥  
 अक्खी हरगोबिंदसौं रनही मन भाया ॥  
 वीरन बुल्लहु बेगही दल सजवें सुहाया ॥ १२ ॥  
 कूरम याकी कन्यका रक्खी करि जाया ॥  
 यातैं हरगोबिंदहू अवसर यह पाया ॥  
 बुल्लयो मेरी जेवमें दल लक्ख १००००० सजाया ॥  
 जब चाहैं तब लीजिये भट संगर भाया ॥ १३ ॥

१काल॥=॥२उत्तर ॥१॥१चुगलों की४वमंड ५नन्ह का हुकम लेकर ॥१०॥१पीछा  
 जाना नहीं चाहता ८ आपभी ६ दंड के रुपये ७ दो ॥११॥ १०शीघ्र ॥१२॥ ११  
 हरगोबिन्द नाटानी श्री कन्या को १२छी ॥ १३ ॥

मरहठ्ठे मन भीरुहै जब बाजि उठाया ॥  
 तबही पायन लगिहै ओदक अकुलाया ॥  
 तुम आमैर अधीसब्है सिर छल धराया ॥  
 वे अनुचर द्विज दीनकी इत आत सिखाया ॥ १४ ॥  
 भिच्छा मंगनहारका जिन ओदन खाया ॥  
 ते प्रभुकोँ पहुँचै नहीं असि त्रास डराया ॥  
 कहाँ जेठ दिनकर कहाँ खद्योत खिसाया ॥  
 कहाँ सिंह गृजरिपु कहाँ किंखि दुबल काया ॥ १५ ॥  
 कहि कहि हरगोबिंद इम कूरम बहिकाया ॥  
 हरिनारायन पुत्र निज पंख १५ पुँब सिखाया ॥  
 सब जैपुर पतिके सुभट सुत संग दिवाया ॥  
 सेखावाटी मुलकमें पहिलैहि पठाया ॥ १६ ॥  
 अच्छे तोप तुरंग गन सब तथ चलाया ॥  
 कूरम जब मंग्यो कटक मंडी तब भाया ॥  
 मो ढिग लख १००००० अनीक है यह छँदा रचाया ॥  
 दक्खिनका उत पत्रदै बैल बेग बुलाया ॥ १७ ॥  
 आवैं जितनै अंतरँग इम दिवस गुमाया ॥  
 इततैं हुलकर हड्ड नृप दरकुंच चलाया ॥  
 जैपुरतैं तय३ कोसपैं निज दल उताराया ॥  
 भिँलि भिँलौनाँ कुंडपैं भंडाल भुकाया ॥ १८ ॥  
 नट्टानी तब सचिव निज कछुवाह बुलाया ॥

१भय से ॥१४॥ जिसने २भिच्छा मांगनेवाले (ब्राह्मण) का ३अन्न खाया ४ज्येष्ठ मास  
 का सूर्य ५गुगुनू (आगिया) ६दुर्बल शरीरवाला ७बन्दर ॥१५॥ ७एक पक्ष पहिले  
 ही ॥ १६ ॥ ८सेना ९इन्द्रजाल १०छल ११सेना ॥ १७ ॥ १२बीच में १३ठहर  
 कर (प्रसन्नता पूर्वक ठहरनेको ढिगल भाषा में भिलना कहते हैं) १४झलाना  
 नामक कुंड पर १५भंडे खड़े किये (ढिगल भाषा में अत्यन्त ऊंचा करने को अथ  
 वा खड़ा करने को भुक्ताना कहते हैं) ॥ १८ ॥ १९ नाटानी जाति का वैश्य

जैपुरके राजा का जहर खाकर मरना] सप्तमराशि—सप्तत्रिंशमयूख (३६११)

बुल्लयो तैं तव जेवमैं दल लख १००००० बताया ॥

वाकों कहुहु यार अब अरि अंतिक आया ॥

बिनु उद्यम तेरे कहैं दिन बीस बिताया ॥ १९ ॥

बुल्लयो हरगोबिंद तब तुम आखु लगाया ॥

तिन कट्टी भम जेब ओ बल सब बिखराया ॥

नट्टानी यह जंपिकैं निज गेह पलाया ॥

इत आमैर अधीसकों अब त्रास दवाया ॥ २० ॥

हय अंबर धृति १८०७ पोस बदि नवमी<sup>१९</sup> दिन पाया ॥

तास निसाके जाम जुगर नृप निहि गुमाया ॥

जानी बनिक बिरोधकैं भावी बिगराया ॥ २१ ॥

छुनैं गरल अमत्र इक मँतिमंद मँगाया ॥

सुतो ताको पान करि दुव<sup>२</sup> नैन मिचाया ॥

काहू नाहिं जानी यहै नृपनैं बिख खाया ॥

खात समैं इक पत्रमैं इम अंक लगाया ॥ २२ ॥

सुनिये संभर प्रात जे अनुचरन उठाया ॥

ईश्वर लेहैं मिटैं नहीं जुग जुग जे गाया ॥

प्याला केसवदासकों पीया सुहि पाया ॥

असैं लिखि आमैरपति इम बेर<sup>३</sup> बिहाया ॥ २३ ॥

जानी सचिवन प्रात जब पुर द्वार लगाया ॥

इत खंडू हुलकर तनय नृप डेरन आया ॥

अकखी चलि अप्पन चलैं भट लौ मन भाया ॥

बाहिरतैं लखि आयहै पुर सुनत सुहाया ॥ २४ ॥

१ सर्भाप ॥ १९ ॥ २ चूहे ३ भगा ॥ २० ॥ ४ उस दिन की रात्रि के दो पहर  
कठिनाई से बिताये ॥ २१ ॥ ५ जहर का ६ पात्र ७ मूर्ख ने ॥ २२ ॥ ८ हे  
चहुवाण रामसिंह सुनो ९ सेवकों ने १० लेख ११ जो विष का प्याला केशव-  
दास को पिलाया सो ही पीछा १२ भिला १३ शरीर छोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥

सह खंडू नृप संभरी चढि तबहि चलाया॥  
 संग लये भट तीन सत३०० निज परख गिनाया ॥  
 जैपुरके प्राकार ढिग रहि दुर्ग विहाया ॥  
 इक अटा चढिकै सकल पुर त्यों दग लाया ॥ २५ ॥  
 जैसेँ जैपुर सिलपमत जयसिंह बसाया ॥  
 भेदी कोउक अंग ते कहि भिन्न बताया ॥  
 यह कूरम सचिवन सुनी दुवर देखन आया ॥  
 तब पुर दक्खिन द्वारका हुत अरर खुलाया ॥ २६ ॥  
 सिबिका हरगोविंद१ चढि बाहिर कढि धाया ॥  
 विद्याधर१ त्योंही बहुरि दुवर समुख चलाया ॥  
 आय निकट बुंदीससों सब वृत्त कहाया ॥  
 जैसी बिधि गर रत्तिमें नृप गरल चढाया ॥ २७ ॥  
 दोहूर सचिवनकों सुनत इन संपथ कराया ॥  
 तब सच्ची गिनि सेनमें यह वृत्त पठाया ॥  
 सो सुनि हुलकर सैन लौ जैपुर ढिग आया ॥  
 करि मुकाम प्राकार तट निज थूल तनाया ॥ २८ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हुलकर१ हडेन्द्र२जयपुरप्रस्थानप्राप्तकूर्मराजपत्रावराशमल्लाराजनुनयनकथितकेशवदासवैरहुलकरजैपुरगमनमंत्रिहरगो-

१कोट के पास रहकर घोड़ों से उतरे २ छत पर चढ़कर सब नगर देखा ॥ २५ ॥  
 ३ नगर के उन अंगों को ४ कपाट ॥ २६ ॥ ५ पालखी पर राजा ने धिप खाया ॥ २७ ॥ ७ सौगन कराये ८ वृत्तान्त ९ डेरा ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में, हुलकर और हाडा चत्रियों के इन्द्र का जयपुर पर गमन करना १ कछवाहों के राजा का पत्र पाकर रावराजा का हुलकर से विनय करना २ कहे हुए केशवदास के वैर पर हुलकर का जयपुर जाना ३ मंत्री हरगोविन्द का पीठ पीछे सेना को निकाल कर जयसिंह के पुत्र को विश्वास देना ४ शत्रु

विन्दपरोक्षसैन्यनिष्कासनजायसिंहिविश्वसनज्ञातशत्रुसामीप्यसैन्य  
रहितपीतगरलकूर्मराजदेहत्यजनबोधसिंहि १ मल्लारि २ जयपुर  
बहिर्दर्शनजयपुरसचिवतत्सम्मिलनहुलकरा ऽऽव्हानप्राकाराऽधःपृत  
नापातनं सप्तत्रिंशो ३७ मयूखः ॥ ३७ ॥ आदितः ॥ ३१८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पोस असित दससी १० दिवस, इम जयपत्तन आय ॥  
पुनि प्रबंध अपनों करन, लिय बुंदीस बुलाय ॥ १ ॥  
अकखी तुम जावहु नृपति, लखि पुर राजनिकाय ॥  
अंतहपुर जुत अप्पनाँ, जागिक देहु जमाय ॥ २ ॥  
तव पुर अंतर जाय नृप, धरि चोकी सब ठाम ॥  
कहिय आय मल्लार प्रति, भये नृपहिँ खटव जाँम ॥ ३ ॥  
उचित दाह कछवाहको, अब न बिलंब विधेय ॥  
इते काल रंक न रहैं, श्रुति अकखत सुहि श्रेय ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकर्म ॥

सुनि हुलकरकछु सोक सहितहुव, जैपुर सचिव बुलाये वे हुव ॥  
हरगोविंद १ बहुरि विद्याधर १, तिनहिँ कखो दाहहु नृप सत्वर ५  
तब तिन अरज मल्लारहिँ किन्नाँ, चोकी तुम अप्पन धरि दिन्नाँ ॥  
कोस सबहि नहिँ हत्थ हमारैं, किहिँठाँसन उंपकरन निकारैं ६

को समीप जानकर सेना रहित कछवाहे राजा का जहर पीकर शरीर छोड़-  
ना ५ बुधसिंह के पुत्र और मल्लार के पुत्र का जयपुर को बाहर से देखना ६  
जयपुर सचिवों का उनसे मिलना और हुलकर को बुलाना और कोट के नीचे  
सेना का पड़ाव करने का सैंतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥ और आदि से  
तीन सौ अठारह ३१८ मयूख हुए ॥

१ यदि ॥ १ ॥ २ राजमन्दिर (महल) ३ जनाना सहित ४ अपने पहरायत  
॥ २ ॥ ५ राजा को मरे छः पहर होगये हैं ॥ ३ ॥ ६ वेद कहता है सो ही श्रेष्ठ  
है ॥ ४ ॥ ७ शीघ्र ॥ ८ खजाने ९ किस जगह से १० सामग्री ॥ ५ ॥

इन अकिखिय हमसन लै जावहु, नहिँ\*निदेस किम कोस खुलावहु  
 यह सुनाय निज कोसनतैं तब, सामग्री हुलकर पठई सब ॥७॥  
 ताहि संग बनिक१ रु बिद्याधर१, लै तब उभय२ गये पुर अंदर ॥  
 राज्य बडो कछु काम न आयो, हुलकरतैं खंपनै नृप पायो ॥८॥

॥ दोहा ॥

महलान बिच निष्कुट रुचिर, जयनिवास अभिधान ॥  
 किन्न दाह कछवाहको, तिहिँ ढिग विहित विधान ॥ ९ ॥  
 विगरी ईश्वरिसिंह मति, बरस इक१ पहिलैहि ॥  
 सुपहु राम सोपै सुनहु, नर कछे इम व्हैहि ॥ १० ॥  
 भक्त भयो जयसिंह सुव, जैपुर गद्विय पाय ॥  
 खान१ नाम इभपाल इक, किन्नौ सचिव बढाय ॥ ११ ॥  
 जवन व्है उनमत्त भो, नृपको हेत निहारि ॥  
 अति अनीति लग्गो करन, पर नारिन घर डारि ॥ १२ ॥  
 कूरम आसव पान करि, इकदिन बुल्लयो वाहि ॥  
 मंदिर श्रीगोबिंदके, चित कछु मंत्रन चाहि ॥ १३ ॥  
 बरज्यो इतरन तदपि तँहँ, किन्नो कुम्म अजान ॥  
 आधोरनके हत्थतैं, पानकरसँको पान ॥ १४ ॥  
 पुनि वासों गलबाँहँ करि, फिस्चो निरंकुस होय ॥  
 जब आसव मद उत्तरयो, सोच्यो तब सठ रोय ॥ १५ ॥  
 दिवाँकीर्ति इक दैधिषैव, बारी संभुवर नास ॥  
 सोहु बढायो सचिव करि, दै सिविका गज गाम ॥ १६ ॥

\*हुकम ॥ ७ ॥ १ खुरदे को ओढाने (ढकने) का वस्त्र ॥ ८ ॥ २ गृहवाटिका (घर का चगीचा) १ नाम ४ उचित विधि से ॥ ९ ॥ १० ॥ ५ महावत को ॥ ११ ॥  
 ॥ १२ ॥ १ मद्य पीकर ७ उस महावतको बुलाया ८ सलाह करने की इच्छा से  
 ॥ १३ ॥ ९ अन्य लोगों ने मना किया तो भी १० हाथी के महावत के हाथ से  
 उस मंदिर में ११ मद्य पान किया ॥ १४ ॥ १२ नाई १३ अविवाहिता (नातेवाली)



अंत्यज लोक अनेक इम, रक्खे ढिग पटु जानि ॥  
 मरयो सु कूरम लौ गरल, यँहँ दक्खिन भय आनि ॥ १७ ॥  
 \*बारनारि इक रूप बैसु, मन्नी तिय करि मेल ॥  
 सोहु जरी रचि सहगमन, जयनिवास भूहवेल ॥ १८ ॥  
 दूजेदिन हुलकर तनय, किन्नी खंडुव बत्त ॥  
 कूरम गृह सुंदर सुनत, पातुरि बहु गुन रत्त ॥ १९ ॥  
 लाखि अच्छो तिनमाँहिँसों, चुनि चुनि कलि मंगाय ॥  
 घर हम भुगगन रक्खिहँ, गिनत समर्थ न न्याय ॥ २० ॥  
 यह उदंत अवरोध गत, सुनि पातुरि भय पग्गि ॥  
 एकादसि बाँसर जरी, एकादस ११ लहि अग्गि ॥ २१ ॥  
 रानिनहू यह भय सुनत, इक गृह सोर बिछाय ॥  
 सबन विचारी उडनकी, करन प्रान बिजु काय ॥ २२ ॥  
 तब आतुर नाजर जनन, अक्खी बाहिर आय ॥  
 जो न बनै सँत्वर जतन, रानी जन उडि जाय ॥ २३ ॥  
 आये हुलकर संग यँहँ, माधवकेहु वकील ॥  
 बनिक कन्ह कोबिर्द बहुरि, कूरम प्रेम कुसील ॥ २४ ॥  
 तिन यह सुनि बुंदीस प्रति, अक्खो अनुचित कर्म ॥  
 भूप सुनत अति कोप भरि, धरयो लरन भट धर्म ॥ २५ ॥  
 ॥ पट्पात ॥

असनायित हरि अंग मनहुँ बिच्छिय अल मारिय ॥

साँगर सापन असह अखि जनु कपिल उधारिय ॥

स्त्री का पुत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ \*वेश्या रूप ही है १ धन जिल्लके २ घर (महलों)  
 के बाग में ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ३ वृत्तान्त ४ जनाने में गया ५ एकादशी के दिन  
 ॥ २१ ॥ ६ शरीर को बिना प्राण करने के लिये ॥ २२ ॥ ७ शीघ्र डपाय नहीं होवे-  
 गा तो ॥ २३ ॥ ८ चतुर ९ छोटे स्वभाववाला ॥ २४ ॥ २५ ॥ मानों १० शूल  
 सिंह के शरीर में ११ बीछ ने १२ डंक मारा किना १३ सगर के पुत्रों को आप  
 देने को १४ कपिलदेव ने नेत्र खोले, मानों कालिका ने लुंभ असुर के ऊपर

काली मनहुँ कराल सुभ उपर त्रिसूल लिय ॥  
 दलन जंभ दंभोलि पकरि पलट्यो कि सचीप्रिय ॥  
 श्रीवत्सधर कि सिसुपालके अंतिम आगसँ उज्झलिये ॥  
 इम भूप सुनत खंडुव अनय करखिँ मुच्छ बुल्लिय बलिय २६  
 सुनहु बत्त मल्लार सल्ल मिच्छन उर अप्पन ॥  
 पठये तुम पुण्येस धर्म हिंदुन दढ थप्पन ॥  
 अनय अज्ज इक सुनिय तनय भवदीय कहत यह ॥  
 नृप जैपुर पति नारि गेह डारहिँ करि अंगद ॥  
 सब ठाम लज्ज एकहि समुझि अब खंडुव बरजन उचित ॥  
 उनमाँहिँ हमहु नहिँतौ अबहि दडुन हिय तुमत्तै न हित ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

हैं हमरी बेटी वहिनि, उनके आलस्य माँहिँ ॥  
 त्योंही समझहु चतुर तुम, उनकी हम घर आँहिँ ॥ २८ ॥  
 अज्ज बिपत्ति जु एक बिच, सो दूजे बिच सोहि ॥  
 मनुजनको तब जब मरन, तो बैर अवसर कोहि ॥ २९ ॥  
 हम सिर तुम आसान किय, इन पर डारि चपेट ॥  
 जो समुझहु कृतघन हमहिँ, तो बुंदिय वह भेट ॥ ३० ॥  
 यह अनीति जो नीति करि, मन्नै हमहु प्रमत्त ॥

भयंकर त्रिसूल लिया, किना जंभासुर को मारने के लिये १ वज्र पकड़ कर  
 २ इन्द्र पलटा, किधुं ३ श्रीकृष्ण शिशुपाल के अंतिम ४ अपराध पर बदे  
 “श्रीकृष्ण ने शिशुपाल की माता को वरदान दिया था” कि शिशुपाल हमारे  
 सौ अपराध करेगा तबतक हम उसको नहीं मारेंगे सो युधिष्ठिर के यज्ञ में  
 एक सौ एक अपराध करने पर उसको मारा था इस प्रकार बुंदी का राजा  
 (उम्मेदसिंह) खंडू की अनीति को सुनकर मूढ़ ५ खेंचकर वह बलवान् बोला  
 ॥ २६ ॥ १ अपन यवनों के उर में साल हैं ७ पूना के पति ने ८ आज एक  
 अनीति सुनी है ९ आप का १० आग्रह ॥ २७ ॥ ११ घर में, हमारे घर में १२ हैं  
 ॥ २८ ॥ १३ मनुष्यों को, अवसर का मरना ही १४ श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अखिल दिखावैं अंगुलिन, विकस्य विकस्य कहि वत्त ॥ ३१ ॥

धरम चलावत नयधरन, तुम सहाय भुव लीन ॥

अधरम करि लैवो उचित, पाक दमन पदवी न ॥ ३२ ॥

सोदरतैंहु सखा अधिक, सो क्रूरम १ तुम १ सूर ॥

यातैं खंडुव मात वे, तिनको तक्रत क्रूर ॥ ३३ ॥

नृपति अखि सच्ची निरखि, जानी यह मरिजाय ॥

दित करि हुलकर हड्डको, लिन्नो हृदय लगाय ॥ ३४ ॥

काल देस आलोच करि, चित्त धरम दृढ चाहि ॥

तरज्यो अप्पन पुत्रको, संभर नृपहि सिराहि ॥ ३५ ॥

इतिश्रीवंशभारकरे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुस्मेद-  
सिंहचरित्रे कूर्मराजमरणज्ञानाऽनन्तरहृद्वेन्द्रपूर्वकमहाराष्ट्रजातिक  
जयपुरदत्तराजदत्तस्वोपहारहुलकरकूर्मराजदाहनतत्पूर्वाऽनाचारकथ  
नैकवारस्त्रीतत्सहगमनमालारिकूर्माऽन्तःपुरलुट्टनमननश्रुततदुदन्तै-  
कादश ११ भुजिष्याज्वलननिवसनसर्वराज्ञीजनवन्धिविशनविचार  
राज्ञाततद्वृत्तान्तहृद्वेन्द्रोपाऽरुणीभवनमल्लारशिक्षादानवाक्प्रतोदप्र

१ नकटा नकटा कहकर ॥ ३१ ॥ धर्मको चलाने और २ नीतिको धारण करने को खुंदी  
की भूमि पीछी ली है ३ बुढापा ४ बिगाड़ने की पदवी लेना उचित नहीं है ॥ ३२ ॥  
५ सगे भाई से भी मित्र अधिक होता है सो ईश्वरीसिंह और तुम पाप बदल  
कर सखा हुए हो ६ इस कारण ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ७ विचार कर ८ धमकाया ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभारकर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उस्मेदसिंहचरित्र  
में, कछवाहों के राजा के मरने का ज्ञान हुए पीछे हृद्वेन्द्र आदि का मरहटों के  
पहरायत रखना १ हुलकर का सामग्री देने से कूर्मराज का दाह होना और  
उसके पहिछे के हुराचारों का कहना २ उसके साथ एक वेश्या का संती होना ३  
मल्लार के पुत्र का कछवाहे के जनाने को लुट्टने का विचार करने का वृत्तान्त  
शुनकर ग्यारह पासवान स्त्रियों का अग्नि में प्रवेश करना और सब राक्षियों  
का अग्नि में प्रवेश करने का विचार करना ४ वह वृत्तान्त जानकर हृद्वेन्द्र  
का क्रोध में दाल होना और मल्लार को शिक्षा देने रूपी वचनों के चाबुक  
से समझाये हुए हुलकर का हृद्वेन्द्र को हृदय लगाना ५ अपने पुत्र खंडु को

बोधितहुलकरहड्डेन्द्रहृदयाऽऽश्लेषणस्वपुत्रखण्डूतर्जनमष्टत्रिंशो मयू-  
खः ॥ ३८ ॥ आदितः ॥ ३१९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि अक्खिय मल्लार प्रबिसि जैपुर बुंदियपति ॥

कूरम सचिवन कहहु मोद रक्खहु लासहु मति ॥

प्रकट जाय प्रच्छन्न कुम्म नृप तियन कहावहु ॥

धन्य सती तुम धरम सोहु हम तियन सिखावहु ॥

कछु बोधहीन खंडुव कहिय आगस बखसहु मोहि यह ॥

निजनाथ मित्र मम सिर निडर सासन करहु सखीन सह ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि हम हहु नरेस तब, बिस्वासे सब जाय ॥

अकखी डरहु न नैक अब, हम तुम संग सहाय ॥ २ ॥

तनहि पाय बिस्वास तिन, प्रतिउत्तर दिय एह ॥

उपकारहि अपकार पर, नृप तुम किन्न सनेह ॥ ३ ॥

स्वापतेय अब दंडको, मंगहि यह मल्लार ॥

कछुक घटावहु जतन करि, सोपै संभरवार ॥ ४ ॥

कोटि पंच५०००००००हुलकर कहे, लैन दम्म हठ लाय ॥

बुल्ल्यो तँहँ नृप करि विनय, जुलम सहयो किम जाया ॥

वहुत बेर दक्खिन दलनँ, कूरम दंडित कोन ॥

लखि श्रद्धा वसु लीजिये, इन्ह गिनि निबल अधीन ॥ ६ ॥

धमकाने का अड़तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३८ ॥ और आदि से तीन सौ  
छन्तीस ३१६ मयूख हुए ॥

१ डरो मत २ जनानी खोदी पर ३ बिना विचार से ४ अपराध ५ मैं तुम्हारे  
पति का मित्र हूँ सो निर्भय होकर मेरे मस्तक पर आज्ञा करो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥  
४ धन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ सेना ने द धन ॥ ६ ॥

जैपुरसे करोड़ रुपये दंडलेना] सप्तमराशि-एकोनचत्वारिंशमयुख (३६१६)

कारिज पर खरचत कलाँ, मूलहिँ रक्खि समग्राँ ॥

अर्थ पटुनकी रीति यह, अक्खी बृद्धन अगग ॥

कला बढत पुनि मूलकरि, मूल मिटै सु मिटाय ॥

जैसै रजका मूल जुत, लयो न पुनि लहराय ॥ ८ ॥

जातै पुनि बसु उप्पजहिँ, असो रक्खि उपाय ॥

अक्खहु दम अद्दा उचित, हठ तजि हुलकर राय ॥ ९ ॥

हम मन्त्रहिँ आसान यह, देखहु सकित उदार ॥

कुँल्लपा जल होय न कबहु, पूरन पारावार ॥ १० ॥

तब निहारि भूपति विनय, काल १ देस १ अरु काज १ ॥

दम्म कोटि इक १००००००० दंडके, रक्खे हुलकर राज ॥ ११ ॥

तीन ३ अंस श्रीमंतके, चोथो ४ निज करि चित्त ॥

अैसे क्रम आमैर सन, बंटन मंग्यो बित्त ॥ १२ ॥

कतिक दम्म मनि गन कतिक, भूखन कतिक नवीन ॥

करि किम्मति गज हय कतिक, दंड माँहिँ तब दीन ॥ १३ ॥

बारी संभुव १ खान २ बाँलि, पीलुँपाल पकराय ॥

दम्म घटे तिनमैँ दये, हरगोबिंद कहाय ॥ १४ ॥

कीलितै तब दोऊन २ करि; लै लक्खन हठ लागि ॥

कोटि अंक १००००००० पूरन कियउ, प्रकट लोभ बस पग्गि

इत माधव कछु अध्वमैव, खेद उदैपुर टारि ॥

पत्तो पत्तन रामपुर, पाय परगगन च्यारि ४ ॥ १५ ॥

निज पतनी रडोरि लिय, दोहँद लच्छन धारि ॥

१ कार्य पर २ व्याज (सूद) खरच करते हैं ३ समग्र ४ धन में चतुर लोकों की ॥ ७ ॥ मूल रहने से ही व्याज बढ़ता है और मूल के मिटने से व्याज (सूद) उसके साथ ही हंस तरह मिटजाता है जैसे ५ रजके (घास विशेष) को मूल सहित ले लेने से फिर ६ हरा नहीं होता ॥ ८ ॥ ९ नहर के पानी से ८ समुद्र नहीं भरता ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ कितनेक तो रुपये ॥ १३ ॥ १० पुनि ११ महावत को ॥ १४ ॥ १२ कैद करके ॥ १५ ॥ १३ मार्ग से पैदा हुआ ॥ १६ ॥ १४ गम

कूरम उद्धव तास किय, अष्टमऽ मास उतारि ॥ १७ ॥  
 याँत हुलकर संग इत, आयो नहिँ कछवाह ॥  
 कन्ह१ रु प्रेम१ वकील दुव२, लखनै पठाये लाह ॥ १८ ॥  
 ॥ षट्पात ॥

ईश्वरिसिंह निपात सुनत हुलकर दैल मुकलि ॥  
 बुल्लिय माधव बेग बंछि पत्र सु आयो चलि ॥  
 संगानेर समीप रह्यो कति दिन मुकाम करि ॥  
 बारह१२ दिवस बिताय गयो जयनैर गर्ब भरि ॥  
 सुनि आत कटक जयपुरसहित बुंदियपति१ हुलकर२ वल्लिय  
 जद्व नरेस३ खंडुव४ सजव इत्थिन चढि सम्मुह हलिया१९॥  
 ॥ दोहा ॥

जद्व नृप गोपाल जैहँ, नगर करोली नाह ॥  
 मंत्र करन मल्लार सन, आयो मिलन उछाह ॥ २० ॥  
 बह१ अरु खंडुव इक्क१ इभँ, बैठि चले तिहिँ बेर ॥  
 प्रथम कहे ते२ रहि पृथक, फैलत फोजन फेर ॥ २१ ॥  
 मिले परसपर मन मुदित, सबै बिहित सतकार ॥  
 इक्क१ अनेकैप आरुहे, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ २२ ॥  
 कुम्म कह्यो न मुहूर्त अब, प्रबिसै नहिँ पुर पोरि ॥  
 अब प्रबिसहु हुलकर कहिय, संध्या आत बहोरि ॥ २३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इम कहि नगर प्रवेस करायो, निज महलन माधव नृप आयो ॥  
 पहुँचावन मल्लार आदि सब, गये जलेवचोक लागि ए तब ॥ २४ ॥  
 चढे गजन डेरन पुनि आये, बलि उत्तरि कटिवंध विहाये ॥

१ उत्सव ॥ १७ ॥ २ लाभ देखने को ॥ १८ ॥ ३ पत्र भेज कर ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ एक-  
 हाथी पर ॥ २१ ॥ ५ उचित ६ एक हाथी पर माधवसिंह और मल्लार चढे ॥ २२ ॥  
 ७ फिर जया नामक सिंधिया आता है ॥ २३ ॥ २४ ॥ ८ कमरबंध खोले

जैपुरसे मरहठोंका दंड लेना] सप्तमराशि-एकोनचत्वारिंशमयूख (३६२१)

हुलकर निज बुद्धे जाँमिक जन, साधव अमल कियो जयपत्तन २५  
दोहा-संध्या पुनि राखांजि सुत, सजि दुद्धर बहु सैन ॥

जयपत्तन आयो जया, अति जव छेकत अैन ॥ २६ ॥

॥ गीतिका ॥

सुनिकैं जया जयनैर आवत दड्ड १ कूरम २ हू चढे ॥

दलमैं नकीवन दोरि आरव जान सम्मुहके पढे ॥

सह भूप जहव १ पुत्र खंडुव २ लै मलार १ हु संक्रम्यौ ॥

इम च्यारि ४ चक्कन चालतैं भय च्यारि ४ चक्कनमैं भ्रम्यौ २७

सुदपाय सुत्तियडुंगरी तक जाय सम्मुह ए मिले ॥

खव पुच्छि मंगल माँहि माँहि बहोरि पत्तन त्यों पिले ॥

अरु चंदपोरि मुकाम अप्पन दै जया तँहँ उत्तरयो ॥

पुनि मंत मितं मलारतैं दैम बित्त बंटनको करयो ॥ २८ ॥

तबही मलार पचीस लकख २५००००० लये ति' दोउरन बंटये

श्रियमंतके पुनि पंचसप्रति लकख ७५००००० दक्खिन प्रेरये ॥

अरु जैपुरेस दुहून २ सौं महिमानि जिम्मनकी कही ॥

सुनिये महीपति राम जो इक १ हाँ चही इक १ नाँ चही ॥ २९ ॥

दोहा-हुलकर १ बत्त सु अदरिय, पै संध्या १ किय नाँहि ॥

बुल्लयो जैपुर देत बिख, मिँठी कहि खिनमाँहि ॥ ३० ॥

देखि रीत बुंदीसकी, आरंभत तुम एह ॥

पै दड्डे अकपट प्रथितैं, गाढ कुहँक यह गेह ॥ ३१ ॥

हुलकर ने जयपुर के खजानों पर अपने १ पहरायत रक्खे थे सो बुलालिये  
२ जयपुर में ॥ २५ ॥ ३ मार्ग को ॥ २६ ॥ ४ सम्मुख जाने के ४ शब्द पढे ६ चला  
७ चतुरंगिणी सेना के चलने से ८ चारों दिशाओं में भय फैला ॥ २७ ॥ ९  
मंत्र. अपने १० मित्र मलार से जया ने ११ दंड के धन को बांट लेने के  
लिये कहा ॥ २८ ॥ १२ ते (वे) ॥ २९ ॥ १३ मीठी बातें कहकर ॥ ३० ॥ १४  
कपट रहित प्रसिद्ध हैं १५ जयपुर का घर बड़ा छली है ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सोदर १ कहँ जयसिंह अगग हँलाहल अप्पिय ॥

मारे पुत्र २ रु मात ३ तदपि पप्पिय नन तप्पिय ॥

मानँ हनिष मारुफ १ जलधि बिस्वास निमज्जत ॥

हुंढाहरके डोल बिदित याही गति बज्जत ॥

तातेँ न हमहि निश्चय तुलत स्वागत हम मन्न्योँ सकल ॥

कछु बित्त तुरग पुनि भेट करि कुंच कशवहु छोरि छला ॥३२॥

तदनंतर मरहट्ट दंग अंतर दूजे दिन ॥

कैय विक्रय कछु करन बहुत प्रबिसे संका विन ॥

तिनकी बंधन तोरि इक्क १ बड़वाँ पुर आई ॥

सो सेखाउत सठन छन्न यह बंधि छपाई ॥

लखि ताहि खुलि लानन लगे उन तव भारिय खग अर ॥

यह इक्क मचिग पत्तन अखिल अरु द्वारन लगे अर ॥३३॥

सुनत सोर गहि सजव लोक पत्थर असि लट्ठन ॥

पुरके मिलि मिलि मचुर लगे मारन मरहट्टन ॥

हे जन च्यारि हजारि ४००० च्यारि तिनके विभाग करि ॥

अंस तीन ३ असुहीन भये लवँ इक्क १ घाय भरि ॥

बाहिर गये ति पुरजन बहुत भजत इनँ दक्खिन भटन ॥

हुंदीस कटक आय रु वचे करि कितेक अतिजैव अटन ॥३४॥

॥ दोहा ॥

आनत बाँसी अप्पनी, दक्खिन लोक अदोस ॥

१ सगे भाई विजयसिंह को १ जहर दिया था ३ तो भी पापी ४ तृप्त नहीं हुआ ५ मान-  
सिंह ने ६ विश्वास रूपी समुद्र में ७ डूबते हुए को ॥३२॥ ८ जिस पीछे ९ नगर में  
१० लेन देन को ११ छोड़ी बंधन तुडाकर अहर में चली आई १२ शीघ्र तरवार  
चलाई १३ परवाजों के किवाड़ लगगये ॥ ३३ ॥ १४ तीन पांती के मारे गये १५ एक  
पांती के घायल हुए १६ शीघ्रता से भगकर ॥ ३४ ॥ १७ अपनी छोड़ी लाने में



जैपुरसे फिरसरहठोंका दंडलेना] सप्तमराशि-एकोनचत्वारिंशमयूख (३६२१)

अपराधी जैपुर जनन, रच्यो \*अलीकहि रोस ॥ ३५ ॥

मनुज समर्थनके मरत, तक्कयो माधव त्रास ॥

भावी निज चिंतत भयो, संतत डारि निसास ॥ ३६ ॥

हुलकरराज समीपहो, कुम्भ सचिव इहिं काल ॥

पान बचन पायन परयो, बनिक सु कन्ह बिहाल ॥ ३७ ॥

देखि ताहि हुलकर सद्यै, बुंदिय सचिव बुलाय ॥

अक्षी संभर पास इहिं, धरहु जिवावन जाय ॥ ३८ ॥

दक्खिन जन नहिंतो दुमन, अब आयसँ इच्छै न ॥

हुंढत जन हुंढारके, इनत फिरत रुकिहै न ॥ ३९ ॥

मयाराम<sup>१</sup> कायत्य तब, दयाराम<sup>२</sup> द्विजराज ॥

पत्ते लौं बुंदीस प्रति, कन्ह जिवावन काज ॥ ४० ॥

संध्या कुंपित एह सुनि, बिरचन जैपुर बाध ॥

बहु माधव थप्पिय बिनय, अप्पिय तब अपराध ॥ ४१ ॥

प्रचुर बित्त लिय दंड पुनि, अरु पठई कहि एह ॥

यहँ भेजहु घायल अखिल, दाह करहु सृत देह ॥ ४२ ॥

जन हजार<sup>१०००</sup> घायल जबहि, दर्ल पठाय सब दिन ॥

तिन्न सइसँ<sup>३०००</sup>कुष्माण्ड त्वरित, कर्म उचित विधिकिन्न<sup>४३</sup>

गढके गोलंदाज इक<sup>१</sup>, दिन्नी तोप दगाय ॥

निज रुचिसों कि निदेससों, जानी सो नहिं जाय ॥ ४४ ॥

फुरत बंन्हि पैर फोजमें, लग्यो गोलक लोलें ॥

बहुरि तास बिग्रह बढयो, क्रूरम चुक्यो कोल ॥ ४५ ॥

कुंच तबहि दुवर सेन करि, संध्या<sup>१</sup> हुलकर<sup>१</sup> सत्य ॥

\* झूठा क्रोध रचा ॥ ३५ ॥ १ निरंतर ॥ ३६ ॥ २ माधवसिंह का कामदार ॥ ३७ ॥ ३ दया सहित ॥ ३८ ॥ ४ हुकूम नहीं चाहते ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ सिधिया कोपित हुआ ॥ ४१ ॥ ६ नाश करने को ॥ ४२ ॥ ७ फिर दंड का बहुत धन लिया ॥ ४३ ॥ ८ सेना में भेज दिये ९ मुरदों का ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ १० अग्नि लगते ही ११ पराई (सरहठों की) सेना में १२ चपल गोला लगा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

भंकरोर जाय रु भये, संगर रचन समत्थ ॥ ४६ ॥

धुज्जि तबहि जयनैर धंव, संध्या१ हुलकर१ पास ॥

गोलंदाजहिं लौ गयो, आतुर नम्र उदास ॥ ४७ ॥

बुल्लयो इहिं किय हुकम बिनु, है मम दोस यहै न ॥

दोऊ२ तुम सांगस दमन, नमनै कियैं हित नैन ॥ ४८ ॥

बिनय पिक्खि दोउ२न बहुरि, दुव लक्ख२०००००हि लिपि दम्म ॥

आगसैं किन्नो माफ वह, करिय कुंच जय कम्म ॥ ४९ ॥

आयो तव करि सिक्ख इत, निजपुर संभर नाह ॥

टाँका जैपुर सुक्कलिय, रक्खि सनातन राह ॥ ५० ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशाबुम्मे-  
दसिंहचरित्रे बुन्दीशकूर्मशुद्धान्तत्रासध्वंसनकांठि १००००००० द्रम्म  
कूर्मदण्डदापनरामपुरेशमाधवसिंहपत्नीरठोडिदोहदलक्षणासीमन्तो  
त्सवकरणाप्राप्तमल्लारपत्रतज्जयपुराऽऽगमनराज्यप्रापणाऽनन्तरस-  
न्ध्याजयाऽऽगमनकूर्मगृहभोजनानङ्गीकरणवडवानिमित्तबहुलमहा-  
राष्ट्रजनवरणात्क्रुद्धहुलकर १ सन्ध्या२ पुनर्दण्डनयनकूर्मनिजना-  
लीयन्त्रप्रेरकतन्निवेदनपुनर्नीतलक्षद्वय २००००० द्रम्मदक्षिणसैन्य

१ जयपुर का पति ॥४७॥ तुम दोनों २ अपराधी को दंड देनेवाले हो ३ हित के  
नेत्रों से मैंने नमस्कार किया है ॥ ४८ ॥ ४ अपराध ५ जय करने को ॥४९॥ ५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र  
में बुन्दी के पति का कछवाहे के जनाने के त्रास को मिटाना और कछवाहे  
का दंड के क्रोध रुपये देना १ रामपुरा के पति माधवसिंह की स्त्री राठोड़ी  
का गर्भ के आठ मास का उत्सव करना २ मल्लार का पत्र पाकर उस (माध-  
वसिंह) का जयपुर आना और राज्य पाये पीछे जया नामक सिंधिया का आ-  
ना ३ कछवाहे के घर में भोजन करने का अस्वीकार करना और घोड़ी के का-  
रण घट्टन मरहटों का भरना, उस क्रोध से हुलकर और सिंधिया का फिर  
दंड लेना ४ कछवाहे का अपनी तोप को चलानेवाले को नजर करना, फिर दो  
लाख रुपये लेकर दक्षिण की सेना का गमन और रावराजा का बुन्दी आ-  
कर टीकाकी सामग्री जयपुर भेजने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३६॥

सनसूरअलीकाफुरकाबादपरचढ़ना] ससमराशि-चत्वारिंशमयूख (३१२५)

प्रस्थानरावराड्बुन्द्याऽऽगमनतिलकोपहारजयपुरप्रेषणमेकोनचत्वारिंशो ३९ मयूखः ॥ ३९ ॥ आदितः ॥ ३२० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत सनसूरअली अभिधानक, अहमदसाह बजीर अचानक ॥  
पठयो कटक रचन घमसानन, हनन फुरकाबाद पठानन ॥ १ ॥  
नवलराय कायथ सेनानी, तिहिं द्रुत जाय रारि तब तानी ॥  
बंगस खानसुहुस्मद बीबी, गज्जै उतहु धरै न गरीबी ॥ २ ॥  
अबलापन नहिं नैक उघारै, राज्य फुरकाबाद सम्हारै ॥  
नवलराय तिहिं सन किन्नौ रन, नारि सवल बस तदपि भई ननाश ॥  
कायथ तब करि सपथ संधि किय, दै बिसास दल तास लुटि लिय ॥  
बीबी तिहिं दुवर्मास टारि बलि, किन्नौ आनि बजीर हितु कलि ॥  
नवलराय कायथ हन्यौ तब, सहस पचास ५०००० कटक लुट्यो सब ॥  
लाखि यह भीरु बजीर पलायो, अति आतुर दिल्लिय पर आयो ॥ ५ ॥  
कछु रूपय तिहिं दैन कहाये, बलि सहाय मरहट्ट बुलाये ॥  
राजा जुगलकिसोर १ भट्ट जन, बहुरि दिवान रामनारायन १ ॥ ६ ॥  
ए दुवर् लैन दक्खिनिन आये, सन्ध्या १ हुलकर १ संग सिधाये ॥  
भूति अवेरि जानि बीबी भय, प्रविसी जाय कमाऊ पब्वय ॥ ७ ॥  
लहि बजीर सैन खरच एहु तब, बीबी बिटन उतहि गये सब ॥  
रामसिंह इत धन्वधरापति, इकदिन कहिय लैन सिर आपति ॥ ८ ॥  
भट्ट रठोर सभा जब आवत, तिनके लोचन मोहि डरावत ॥  
लगत बुरे मोकों सठ सारे, कैसी विधि अब जाय निकारे ॥ ९ ॥

और आदि से तीन सौ बीस ३२० मयूख हुए ॥

१ नामवाला २ युद्ध करने को सेना भेजी ॥ १ ॥ २ ॥ स्त्रीपन ४ तो भी ॥ ३ ॥ ४ सौगन करने ५ बजीर से युद्ध किया ॥ ४ ॥ ७ भागा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ पेश्वर्य अवेर कर कमाऊ का पर्वत ॥ ७ ॥ ९ बजीर से १० मारवाड का पति ॥ ८ ॥ ९ ॥

ढही अमिय कहाँ बनि सँकरी, तुमरे जनकें यहै इन्ह अकरी ॥  
 चंपाउत कुसलेस कह्यो तव, यह सुत अधम भयो तोहू अब १०  
 जब डेरन परवाय हमारे, दुदुकारहिँ तव कढहिँ निकारे ॥  
 सुहि इनको करि वेग बिडारहुँ, व्है बिलंब तो इन करि हारहु ॥११॥  
 अनुगँ पठास अनयँ सुहि धारयो, डेरन पारि कुसल दुदुकारयो ॥  
 और चढि तव नागोर गयो यह, मन्थ्यौ सुनि बखतेस महामह ॥१२॥  
 सम्पुह पठयो बिजयसिंह सुत, जिहिँ लिय कुसल वधाय बिनय जुत  
 कथन यहै बखतेस कहायो, आये तुम सु जोधपुर आयो ॥१३॥  
 बढयो तवहि दोहू दिस बिग्रह, चाँहँ करन परस्पर निग्रह ॥  
 रामसिंह सन सबहि रिसाये, इतर भटहु निज निज घर आये ॥१४॥  
 इक १ बदल्यो न सेर १ दूदाउत, रहयो अनादरहु लहि राउत ॥  
 सेना बहुरि उभय २ दिस सज्जिय, बंब पंगव आनक रन बज्जिय १५  
 चलत बेर मृत सेर तुरंगम, किय सब अरज देन हय नृप सैम ॥  
 बुल्लयो मरुप उचित तुमरे हय, हेरहु रँजक कुलालन आलय ॥१६॥  
 भीखैम धुर धोरी अँचत भर, सेर सुपै सहि भो अग्रेसर ॥  
 जान्यौ नृप मतिमंद न जानै, पै हम स्वामिधर्म पहिचानै ॥१७॥  
 चले उभय पुनि कटक खेत चढि, पटके वाजि भटन हरि हरि पाँढि  
 हल्लिय आँलुक भोग हजार, धुज्जिय पहुँचि तुरंगम धारा ॥१८॥  
 १ साची घनाकर तुन्हारे पिता ने ॥१०॥ २ निकालो ॥११॥ ४ नौकर को सेजकर  
 ५ वही जनीति की दुकुशलसिंह को धिक्कार दिया "हिंगल भाषा में धिक्कार देकर  
 अनादर पूर्वक निकालने को दुदुकारना कहते हैं" ७ शीघ्र चढ़कर परतसिंह से  
 ८ बड़ा उत्सव माना अथवा बड़ा उत्सव करके इसका मान किया ॥ ११ ॥  
 ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १० नगारे, मर्दल और ढोल बजे ॥ १५ ॥ ११ चलते समय  
 सेरसिंह का घोड़ा मर गया तब १२ राजा रामसिंह से घोड़ा देने की अर्ज की  
 इस पर १३ मारवाड़ का राजा बोला कि तुमारे उचित घोड़ा तो १४ घोषी  
 और कुम्हारों के घर में हेरो ॥ १५ ॥ १५ भीष्म की धुर को धारण करनेवाला  
 (सैन्यनेवाला) धोरी, और शेरसिंह उसको भी सहकर १६ आगे हुआ ॥ १७ ॥  
 १७ शोधनाग के कर्णों का हजार हिला अर्थात् हजार फग हिले १८ घोड़ों की

दसन लगे तुष्टन दिगदंतिन, तुमुल राग सिंधुव हुव तंतिन ॥  
 कंकट फटत बाढ करवाँलन, मुंडन खोजि रचत हर मालन ॥१९॥  
 रुंड नचत कति रविहिँ रिक्कावत, आयुध ताजि बथन कति आवत  
 कतिकन फटत हृदय कलेजे, भिदत माथ कहुत कहूँ भेजे ॥ २० ॥  
 अंखि तिरत सोनित कहूँ अच्छी, मनहु श्रोत विच रोहित मच्छी।  
 सायक कहूँ लागि नाभि सुहावत, पिहुँल लटि कलहुव छवि पा-  
 वत ॥ २१ ॥

एडी कटि कटि कहूँक उछटत, फाँक नागरंगक जनु फटत ॥  
 ओठ कहूँक कटि कटि भुव आवैं, विव मनहु असि घन बरसावैं २२  
 कहूँक दंत गिरि रोचि प्रकासैं, भूमि मनहु हीरैन गन भासैं ॥  
 नयन गडी कहूँ मुच्छ निहारैं, मीन वर्दन बनसी छवि मारैं ॥२३॥  
 इत कहूँ रीढँक भिन्न उलटत, कंदली छदन दंड जनु कटत ॥

कहूँक भरत करतै करभनै कुल, महिला जनन ऊरु जनु मंजुल २४  
 दौड़ से भूमि धूजी ॥ १८ ॥ दिग्गजों के दांत तृटने लगे, तांतों में भयंकर  
 सिंधवी रागिणी हुई २ तरवारों की धाराओं से १ कवच फटे, महादेव मुंडों  
 को खोज कर माला बनाने लगे ॥ १९ ॥ कई रुंड नचकर सूर्य को प्रसन्न कर  
 ते हैं और कई धीर शस्त्र त्याग कर बाहुयुद्ध करते हैं और कितनों ही के  
 हृदय और कलेजे फटते हैं एवं कहियों ही के मस्तक फूट कर भेजे निकलते हैं  
 ॥ २० ॥ कितने ही सुंदर नेत्र ३ रुधिर में तिरते हैं सो मानों जल के प्रवाह  
 में डलाल मच्छी तिरती है. कहीं पर नाभि में तीर लगकर शोभा देता है सो  
 मानों वक्रोल्ह (घाणी) में १ मोटी लाठ शोभा देती है ॥ २१ ॥ कहीं पर एडियां  
 फट कर उछलती हैं सो मानों ७ नारंगी की फाँकें फटती हैं, कहीं पर होठ कट  
 कर भूमि पर गिरते हैं सो मानों ६ तरवार रूपी मेघ दमंगे घरलाता है ॥२२॥  
 कहीं पर दन्त गिरकर १० प्रकाश करते हैं सो मानों भूमि पर १ हीरे दीखते हैं  
 नेलों में गडी हुई मुखें दीखती हैं सो मानों मच्छी के १ मुख में कांटा शोभा  
 देता है ॥ २३ ॥ कहीं पर कई धीर १३ पीठ कट कर उलटते हैं सो मानों १४  
 केल के दंठ पर से पत्र कटते हैं, कहीं पर हाथों से १५ गुदे फटते हैं "मणिवंधा-  
 दाकनिष्ठ करस्य करभो यहिः" इत्यमरः॥ सो मानों १५ स्त्रियों की सुंदर जंघायें

लोला कहूँक पुरीतति लोहित, सलिल अरुन अलगद कि सोहित  
 अवनि लसै धमनीगन ऐसे, कुवलय नाल घनात्पय कैसे ॥२५॥  
 अखि कतिक भुव लसतगिरी इम, रुचिर कोकनदकी पखुरी जिमा  
 विच तारार्चल असित विराजत, लखत मरंद मत्त अलि लाजत २६  
 भुव कहूँ क्लोमै १ कलेजा २ भासत, पाँउस जनु छत्राक प्रकासत ॥  
 लोटत सिर कहूँ छत्र विलाये, डवतन जनु नारेल दुराये ॥२७॥  
 उरझी कहूँक सिखा कटि असै, जालअसित रेसम भव जैसै ॥  
 भिरि कहूँ टोप बजत असि भारी, झल्लरि हरिमंदिर जनु झारी ॥२८॥  
 संचर छुरिका धसत सुहानी, पिचकारिन छुटत जनु पानी ॥  
 लोहित फलक तिरत कहूँ डोलत, कमठ बिसेस कि सलिल कि-  
 लोलत ॥ २९ ॥

पार निकसि पँटिस छवि पावत, दह मनुहुँ जम लँपन दिखावत ॥

हैं ॥ २४ ॥ कहीं पर रुधिर में १ चपलता युक्त २ आँतें पड़ी हैं सो मानों  
 लाल पानी में ३ जल के साँप शोभा देते हैं अथवा कटी हुई जीभ और आँतें  
 ही जल सर्प हैं भूमि पर ४ नाड़ियाँ ऐसी शोभा देती हैं मानों ६ शरद  
 ऋतु में ५ श्वेत कमल (गडूल, नीलोफर) की नालियाँ हैं ॥ २५ ॥ कटे हुए कई  
 नेत्र भूमि पर ऐसे शोभित होते हैं मानों सुंदर कमलकी पंखुडियाँ हैं उन कटे  
 हुए नेत्रों में ६ श्याम रंग की चपल ८ नेत्रों की पुतलियाँ विशेष शोभती हैं  
 जिनको देखकर १० पुष्परस से मस्त भँवरे लज्जित होते हैं ॥ २६ ॥ पृथ्वी पर  
 कहीं ११ तिल्ली और कलेजे पड़े हुए दीखते हैं सो मानों १२ छत्रोटे (वर्षा ऋतु  
 में उगनेवाली ढालें, छत्राक) दीखते हैं कहीं पर छत्रों का नाश होकर मस्तक  
 लुढ़कते हैं सो मानों लुढ़काये हुए नारियल १३ नहीं ठहरते हैं ॥ २७ ॥ कहीं  
 पर शिखाएं (चोटियाँ) कट कर ऐसी उलझी हैं मानों १४ काले रेशम की बनी  
 हुई जाली है कहीं पर टोप से भिड़ कर तलवार ऐसी बजती है जैसे विष्णु  
 के मंदिर में झालर बजे ॥ २८ ॥ पखुरी चलकर घुस कर ऐसी शोभती है मा-  
 नों पिचकारी से पानी छूटता है कहीं पर लोह में तैरती हुई १५ ढालें फिर  
 ती हैं मानों जल में कछुए आदि क्रीड़ा करते हैं ॥ २९ ॥ १७ कटारी पार निकल  
 कर ऐसी शोभा देती है मानों यमराज १८ अपने मुख में दाढ़ दिखाता है कहीं

सरपूरन कहूँ गिरत सराश्रय, उडत कि पिच्छ छोरि सिखि आश्र-  
य ॥ ३० ॥

खग कहूँक हहून खटकावैं, बढई तरु कि कुठार बजावैं ॥  
दंसन अटकत तेग दुधारी, कट्टैं बन जनु कूर कबारी ॥ ३१ ॥  
कहूँक देत सिरसौँ सिर टकर, दुवर उद्धत जनु भिरत पृथूदर ॥  
कहूँ गुटिका गन धसत कपालन, जनु सिरैघा प्रबिसत मधुजा-  
लन ॥ ३२ ॥

दमकत इल्लो तनुत्र बिदारैं, मृगपति बाल कला छबि मारैं ॥  
तोमर धसत कुंजरन तिकखे, सैलन वेध वेणु जनु सिक्खे ॥ ३३ ॥  
जुष्टे इम नागोर जोधपुर, धोरी कुसल सेरैं अँचत धुर ॥  
खोजन चंपाउतहिँ खिजायो, अरिदल मध्य सेर धसि आयो ॥ ३४ ॥  
इक १ जंवूर लग्यो याके उर, फारि कढ्यो सु दुसह रीठैंक १  
कूर २ ॥

इहिँ छैंत मोह लहत दूदाउत, आयउ कढि उततैं चंपाउत ॥ ३५ ॥

तीरों से भरेहुए १ भाधे ऐसे गिरते हैं मानों मयूर अपने आश्रय से १ पूछेंछोड़  
कर उडते हैं ॥ ३० ॥ कहीं हड्डियों पर तलवारें खटकती हैं सो मानों खाती  
घृज पर कुठार बजाता है, ३ कवचों में दुधारे खड्ग अटकते हैं सो मानों घर  
छाने के काष्ठों के पेचनेवाला मूर्ख बन काटता है ॥ ३१ ॥ कहीं पर जस्तक से  
जस्तक टकर मारते हैं सो मानों दो निरंजुश ४ मीठे भिड़ते हैं कहीं गोलियों  
के समूह कपालों में धसते हैं सो मानों ५ मधुमक्खियों ६ छत्ते में घुसती  
हैं ॥ ३२ ॥ कवच काटकर ७ तरवार चमकती है सो मानों द्वितीया का  
८ चन्द्रमा शोभा देता है ९ हाथियों के शरीरों में तीले आले घुसते  
हैं सो मानों १० बांस के घृज पर्वतों को फोड़ना छिड़ते हैं ॥ ३३ ॥  
इस प्रकार नागोर और जोधपुरवाले लड़े जिनमें धुर को खँचनेवाले मोरी  
कुशलसिंह और ११ सेरसिंह थे जिनमें शेरसिंह क्रोध करके चांपावत  
कुशलसिंह को हरने के लिये शत्रु की सेना में घुस आया ॥ ३४ ॥ जिसकी  
छाती में नहीं सहने योग्य एक जंवूर का गोला लगा सो १२ पीठ और १३  
हाल को फोड़कर निकलगया १४ इस घाव से दूदाउत शेरसिंह मूर्ख को  
प्राप्त होगया उस समय उवर से निकलकर चांपावत कुशलसिंह आया ॥ ३५ ॥



दाउत १ पाउत २ अन्त्यानुपासः १ ॥

\*सुज्जमल्ल तब सेर सहोदर, बुल्लयो कुसलहु आत भ्रात बर ॥

सावधान हुव सेर यहै सुनि, पकरि खगग सम्मुह हंको पुनि ॥३६॥

दुहुँन २ धीरता मिलत दिखाई, नागफेन मनुहारि बनाई ॥

तदहुँ सेर बुल्लयो रन तंडत, मुच्छ कंचन उद्धत कर मंडत ॥३७॥

अब इत आवहु कुसल अखारैं, जहर जरैं न तुमहिं वह जारैं ॥

बीज दुसइ अगैं तुम बाये, अब चक्खहु तिनकैं फल आये ॥३८॥

अपटिसेरै इम कहि असि आरिय, फारि टोप मस्तक सब फारिय

छोड़ित कुसल सँगि इत छुटिय, फवत सेर छत्तिय लागि छुटिय ॥३९॥

बेर दुहुँन २ तिहिं बेर बिहाये, पुंण्यलोक इच्छित तिन पाये ॥

सुभट मेर दुहुँधोर पंचसत ५००, घायल परे अट्टसत ८०० घुम्मत ४०

सेर कहिय अगैं मरुपति सन, प्रविश्यो त्रिदिवं निवाहि वह पन ॥

कैलि इम बखतसिंह जय किन्नौ, लागि इठ आनि जोधपुर लिन्नौ ॥४१॥

बैठि तखत जय-पटह बजाये, साज बहुरि रनकाज सजाये ॥

हुव यह रन नव नभ धृति १८०९ हॉयन, पाप रौम किय हारि प

लॉयन ॥ ४२ ॥

जिहिं डिग इक पुरोहित जग्गुव १, हठी द्वितीय २ खीमसर पति १

हुव ॥

मरदहन सन नृपहिं मिलावन, अब किय दुहुँन २ कमाऊं आवन ॥४३॥

तब शेरसिंह के छोटे बार्ह \* सूर्यमल्ल ने कहा कि हे अष्ट भाई । कुशल

सिंह आता है यह सुनकर शेरसिंह सावधान हुआ और खड्ग लेकर सम्मुख

चला ॥ ३६ ॥ १ जामल की २ जिसपीछे ३ युद्ध में गर्जना करता हुआ ४ मूर्छों

के केसों को हाथ से जंचे करता हुआ शेरसिंह बोला ॥ ३७ ॥ १८ ॥ यह कहकर

५ शेरसिंह ने दौड़कर तरवार चलाई ६ क्रोधित कुशलसिंह की ७ धरती ॥ ३९ ॥

८ उसी समय ९ दोनों ने तारीर छोड़े १० स्वर्ग ॥ ४० ॥ ११ स्वर्ग में गया

१२ युद्ध में ॥ ४१ ॥ १३ विजय के दोल १४ संवत् में २१ पापी रामसिंह

१६ भागा ॥ ४२ ॥ १७ पर्वत का नाम है ॥ ४३ ॥



जया१ मलार२ गये सम्मुह जब, आन्यौं\*सिविर रामसिंहहिं अब  
 संध्याकों तैंहें कुमति सुहाई, मूढ ँभरूपसन किय मित्राई ॥४४॥  
 पग्घ पलटि कहि तव सुख पैहैं, इतुत जब तुमहि जोषपुर दैहैं ॥  
 इत जगतेस रानको आमय, बढ्यो अतीव असाध्य जैराबय ॥४५॥  
 कुमर प्रताप हुतो कारा तव, इहिं ग्राहक अट च्यारि ४ मिले अब  
 नाथ१ रान जगतेस सहोदर, कल्ला राघवदेव२ पापपर ॥ ४६ ॥  
 भारतसिंह३ रान दैल स्वामी, देवगढप जसवंत४ हरामी ॥  
 बुल्लिय चउ४ अब मंत्र बिचारहिं, किय अप्पन तव कैदकुमारहिं  
 कारासैंहि प्रतापकैहु सुव, राजसिंह अभिधान कुमर हुव ॥  
 आयो रानकोहि अवसान न, पै संसय अपनैहू प्रानन ॥ ४८ ॥  
 सो नृप होय बैर अनुसरिहै, कुलजुत कैदन अप्पनो करिहै ॥  
 वौहि छन्न यातैं बिख अप्पहु, थिर यह नाथ भूप करि थप्पहु४९॥  
 बैर बिचारि यहै च्यारिन४ बलि, साहिपुरप५ पंचम५ लिय सम्मलि  
 सोचि रान जगतेस यहै सुनि, पठयो हुकम बिचारि नीति पुनि५०  
 जो तुम स्वामिधरम हित जानत, पंच५हि भट मम हुकम प्रमानत  
 जवजुत तो चढि चढि घर जावहु, रहि नहि अंत्य बिरोध रचावहु५१  
 कहन तिन पठयो दैल यह कहि, चढि चढि घरन गये तवपंच५हि  
 तदनु बसु ख धृति १८०० सक विक्रम कृत, मास जेठ जगतेस  
 रान मृत ॥ ५२ ॥

\* डेरे में † मारवाड़ के पति से ॥ ४४ ॥ ‡ श्रीघ १ रोग २ घृष्टावस्था  
 से ॥ ४५ ॥ ३ कैद में ४ पहिले कुमर प्रतापसिंह को पकड़ा था वे ५ राणा  
 जगतसिंह का सगा भाई नाथसिंह ६ परम पापी ॥ ४६ ॥ ७ सेनापति  
 ॥ ४७ ॥ ८ कैद में ही ९ सुत १० नाम ११ केवल राणा का ही अन्त नहीं  
 आया है परन्तु अपने प्राणों का भी सन्देह है ॥ ४८ ॥ १२ नाथ १३ कुमर  
 प्रतापसिंह को १४ नाथसिंह को ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १५ जल्दी से १६ यहा  
 ॥ ५१ ॥ इनको निकालने को १७ सेना भेजी १८ जिसपीछे ॥ ५२ ॥



## ॥ पादाकुजकम् ॥

यह सुनि बुंदिय सोक उपजिय, जामे च्यारि४नउबति न बजिय॥  
 इत भट सलूमरिप चुंडाउत, रानां करन कुमारहिँ राउत ॥ १ ॥  
 कारा जाय प्रतापहिँ कहिय, बहु भय सुनत आहकन बहिय ॥  
 सो अब रान उदैपुर स्वामी, नय जुत भयो छत्रधरि नामी ॥ २ ॥  
 जेर कियो परताप जनक जब, ताको खान पान सदन तब ॥  
 अमरचंद पूरबिया इक९ द्विज, निकट वहै रक्खयो सेवक निजा३।  
 सेवा जिहिँ तनमन धन सखी, अंतर किन्न घरी नहिँ अखी ॥  
 अब नृप होय प्रताप बिप्र वह, सचिव मुख्य किय अतुल प्रीति सह४  
 सिविका१ गज२ ताजीम३ समाप्पिय, थिर सु बिप्र ठाकुरकहि थप्पिय  
 मन्नत बंदि निर्लय सेवन मति, अमरचंद बसि रान भयो अति ।५।  
 बलि वे ग्राहक च्यारि४ बुलाये, लेस खिज्यो नहि हृदय लगाये ॥  
 इकदिन अंध अंध घुमडे अति, कहिय प्रताप तबहिकाकाँ प्रति६  
 सुनहु जनक सासन अनुसारी, मचक जाँनु जिहिँ दिन तुम मारी॥  
 सो रीढक संधिग अब सल्लत, घन जब होत तबहि दुख घल्लत ।७।  
 यह नृप सहज सरलपन अकखी, रिस गिनि नाथ हृदय धरि रक्खी  
 आतुर सठ नाहक अकुलायो, स्वीर्य नगर बंधोर सिधायो ॥ ८ ॥  
 सक नव नभ धृति १८०९ समय होत सठ, हिय भय धारि बिरचि  
 अनुचित हठ ॥

पुत्र भीम जुत नाथ पैलायो, अतिजब नगर सादही आयो॥९॥

१ पहर २ कुमार प्रतापसिंह को राणा करने के लिये ॥ १ ॥ ३ कैद में जाकर ४  
 कुमार को पकड़नेवालों को ५ नीति युक्त ॥ २ ॥ ६ प्रतापसिंह के पिता को कैद  
 किया तब ७ ब्राह्मण ॥ ३ ॥ ४ ॥ ८ कैद घर (जेलखाने) में सेवा की जिसको  
 मानकर ॥ ५ ॥ ९ पकड़नेवालों को १० आकाश में ११ मेघ १२ नाथसिंह ॥ ६ ॥  
 १३ पिता की आज्ञा के साथ चलनेवाले १४ बुढ़ने की १५ पीठकी सन्धि में  
 गई हुई ॥ ७ ॥ १६ सीधेपन से कही १७ शीघ्र १८ अपने नगर बागोर गया ॥ ८ ॥  
 १९ आगा ॥ ९ ॥

तैंहैं टिकयो न करि पुनि त्वरिताई, बेबलिपा पहुँचयो गरदाई ॥  
उम्मेद घर तबन्तर आयो, व्याहन सगपन तथ्य विधायो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

उम्मेदकी कन्या उभय, परनि पिता१ अरु पुत्र२ ॥  
बुंदी पुर आये बहुरि, तद्वत नृपहिँ तनुत्र ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक नव नभ धृति १८०९ समय श्रामँ आवन घँहँ आये ॥  
देवपुरा लग समुख जाय बुंदीस बधाये ॥

चलन दैम्स सत चारि ४०० दये संभर नृप दिनप्रति ॥  
बारह१२ बासरँ रक्खि बिधा क्रिय बखसि बाजि कति ॥  
तब नाथ१ भीम२ जनक रु तनय आये दुव२ दुंदार इत ॥  
माधव१ नरेस बखतेस२ जँहँ हे सम्मलि कछु काज हित ॥

॥ दोहा ॥

बखतसिंह१ मरुईस अरु, माधव१ जैपुर ईस ॥  
मरहठन मेटन अमल, उभय२ मिले अवनीस ॥ १३ ॥

मालपुरा सन इक१ मिजल, भूपोलाव तँडाग ॥  
पेहु कछवाइ१ कबंधपति२, जत्थ मिले जय लाग ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूनु सहित सीसोद नाथ तिन प्रति प्रयान क्रिय ॥  
सुनि माधव१ बखतेस२ जाय सम्मुह बधाय लिय ॥  
तदनु मरुप बखतेस छली तथ्यहि बपु छोख्यो ॥  
न्याय रहित सठ नाथ मिलत माधवँ मन मोख्यो ॥

१ श्रीप्रताप २ कुमार प्रतापसिंह को जहर देने की इच्छावाला ३ नरसिंह  
मह ॥ १० ॥ ४ उम्मेदसिंह को रक्तक देखकर ॥ ११ ॥ ५ आवण मास में  
बुंदी की चलन के ६ दिन ॥ १२ ॥ ११ ॥ ८ तलाव ९ प्रसु ॥ १४ ॥ १० पुत्र  
सहित ११ मारवाड़ के राजा छली बखतसिंह ने वहीं पर शरीर छोड़ा  
नाथसिंह ने १२ माधवासिंह के मनको मोड़ दिया

कछवाह कहिय सीसोव सन करहिं तुमहिं मेवार पति ॥  
 परताप नहिं नृपतां उचित गहहु ताहि तुम पुब्बगति ॥ १५ ॥  
 अग्न शन जगतेस अति, कूरम माधव काज ॥  
 कोटि १०००००००० दम्भ निज स्वरच किय, रोकन जैपुर राज १६  
 ऊरुजै हरगोबिंदके, कहैं सु उपेहत भुल्लि ॥  
 कूरम नृप कृतघन भयो, जैन उदैपुर छुल्लि ॥ १७ ॥  
 बरज्यो जदपि फलाय पति, कुसलसिंह कछवाह ॥  
 मन्त्री तदपि न मंदमति, अध दिय धारि अथाह ॥ १८ ॥  
 नाथ भीर कूरम नृपहिं, सुनि भारत जसवंत २ ॥  
 राघवदेव ३ उमेद ४ ए, मिले आनि हठ मंत ॥ १९ ॥  
 कनक छत्र धरि नाथ सिर, चामर बिसद दुराय ॥  
 मिलि इतनैं रानी सुलक, लूटन लगगे आय ॥ २० ॥  
 बखतसिंहके मरत इत, विजयसिंह अवनिसँ ॥  
 तखतजोधपुरको लह्यो, सुभग छत्र धरि सीस ॥ २१ ॥  
 याही बरस उमेद नृप, स्वीय सहोदर दीप ॥  
 परिनायो सावर नगर, मंडि उछाह महीप ॥ २२ ॥  
 सगताउत सगतेसकी, कन्या अनुप कुमारि ॥  
 दुलहनि दीप बिवाहि तव, आयो निलय पधारि ॥ २३ ॥  
 इत बुंदीस उमेदकी, सतत सुहागिनि नारि ॥  
 ऊदाउति रानिय लयो, दोहेंदलच्छन धारि ॥ २४ ॥  
 ताके अष्टम ८ भासको, उच्छव मंडि अनंत ॥  
 समरसिंह नृप कुल सकल, किय इकत मतिमंत ॥ २५ ॥  
 तदनंतर नव ख धृति १८०९ सक, माघ त्रयोदसि १३ सेतैं ॥

१ जैसे पहिले षकड़ा था तैले फिर षकड़ लो ॥ १५ ॥ १६ ॥ २ वैश्य ३ चकार  
 भूलकर ॥ १७ ॥ १८ ॥ ४ मारतसिंह और जसवंतसिंह ॥ १९ ॥ ५ सुवर्ग का  
 ६ स्वेत चमर ॥ २० ॥ ७ नृपति ॥ २१ ॥ ८ दीपसिंह को ॥ २२ ॥ ९ अपने  
 घर ॥ २३ ॥ १० निरन्तर ११ गर्भ ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२ शुक्ल पक्ष की

अजितसिंह नेपके कुमार, हुब सुभ अंक उपेत ॥ २६ ॥

जातकरम तव तास किय, निगम उक्त रचि न्याय ॥

नांदीमुख सुख श्राद्ध करि, लखखन दिन्न लुटाय ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तराध्याये सप्तम ७ राशानुम्मे-  
दासिंहचरित्रे कुमारप्रतापसिंहराणापट्टप्रापणनिजसेवकविप्राऽनरच-  
न्द्रसचिवीकराख्यनिघाहकसुभटचतुष्क ४ समाऽऽन्वासनराणाक-  
र्त्तकमृन्पुधान्तपलायितसप्तपितृव्यकनाथसिंहबुन्द्याऽऽगमनबुन्दी-  
शासन्कृतनाथसिंहजयपुरजनपदस्थकूर्मराजमाधवसिंह १ कवन्ध-  
गजवखतसिंहसम्मिलनकृतकुक्रुत्यमरूपाऽजितसिंहिमरराजायसिं-  
हिकृतधनीभवननाथसिंहसहायार्थोदयपुरदापनाऽभ्युपगमनश्रुतैतद्वार-  
तसिंहाऽऽदिचतुष्टय ४ नाथसिंहसहायीभवनच्छत्रचामराऽऽदितदर्पणा-  
गाराऽऽग्नेदपाटलुगटनवाखतसिंहिविजयसिंहपोधपुरगहिकोपविश-  
नबुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहसावरपुरेशशीपोधशक्तिसिंहकण्ठोद्धहनगवराट्  
१ राजा उम्मेदासिंह के ॥ २६ ॥ २ सादि ॥ २७ ॥

अनेकभास्कर महाचम्पूके उत्तराध्याये के सप्तमराशि में, उम्मेदासिंह के चरि-  
त्र में, कुमार प्रतापसिंह का राजा के पाद को पाना और अपने सेवक आश्रय  
परायणन्द को सचिव करना १ अपने पकड़नेवाले चारों उमरावों को बिरुदा  
मना और राजा ने मृन्पु का सन्देह करनेवाले काका नाथसिंह का पुत्र  
राजिभ भागकर बुन्दी जाना २ बुन्दी के पति से सत्कार किये हुए नाथसिंह  
का जयपुर के देश में स्थित कदमाहे राजा माधवसिंह और राजा  
राजा यमलसिंह से मिलना ३ पाव करनेवाले मारराट् के पति राजीतसिंह  
के पुत्र (विजयसिंह) का करना ४ जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) का सुलभनी  
होकर नाथसिंह की सहाय के लिये उदयपुर देने का रीतिरार अनुकर मानव  
सिंह आदि चारों का माधवसिंह की सहाय होना और उनको सप्त पसर आदि  
देकर राजा के राज्य सेराट् को लटना ५ यमलसिंह के पुत्र विजयसिंह का  
आपराध की गती पर बैठना और बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का  
आपराध के पति दीपोदया शक्तिसिंह की पुत्री से विवाह करना ६ राजराजा  
की दार्पण कदाचित् का गर्व धारण करना और उनके साथ साम (आगारकी)  
का मार्गमय विधि पीछे उड़ते राज कुमार राजीतसिंह के जन्म का इकनासी-

भाई दीपसिंहका कोटे जाना] सप्तमराशि-द्राचत्वारिंशमयूख (३६३७)

राइयूदाउत्तिदोइदलक्षणाधरगातत्सीमन्तमहोत्सवाऽनुष्ठानसमयान्त  
सदाजकुमाराऽजितसिंहोद्गमनमेकचत्वारिंशो ४१ मयूखः ॥ ४१ ॥  
आदितः॥३२२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तदनंतरं सक ख ससि धृति १=१०, बिसद चतुर्दसि राधे ॥  
सोदर दीप सिकार गय, बिरचि आत हित बाध ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

मृगयाँ मिस प्रच्छन्न प्रात कठि दीप सहीदर॥  
कोटा गय चल बुद्ध अप्प १ इक १ हय इक १ अनुचर ॥  
कोटापति सुनि सचिव झल्ल मदनस पठायो ॥  
लैबैकोँ नटि दीप नगर तबतो नहिँ आयो ॥  
कायत्य अखैराम सु बहुरि आय याहि पुर लैगयउ॥  
पुनि जाहि कुमर पदवी महल दुजन सल्ल रक्खत भयउ॥  
इत यह सुनि बुंदीस लैन निज सचिव पठाये ॥  
तबहु दीप नटि तिनहिँ तरजिँ पच्छे पहुँचाये ॥  
गागरनीपुर अभयसिंह रठोर सुता सुनि ॥  
परनि ताहि हुत जाय दीप आयउ कोटा पुनि ॥  
बुंदीस हिँतु नाइक बिमन कछु दिन तत्य अतीत करि ॥  
गो पुनि सबाम पुर इंदगळ देव कथितं दढ चित्त धरि ॥३॥

॥ दोहा ॥

अभयसिंह रठोरको, देवसिंह हो भौस ॥

सर्वा मयूख समाप्त हुआ ॥४१॥ और आदि से तीन सौ बाईस ३२२ मयूख हुए॥  
१ जिस पीछे २ बैशाख सुदि ३ भाई से विरोध करके ॥ १ ॥ ४ शिकार के  
मिल से ५ दीपसिंह ६ झाला मदनसिंह को भेजा ॥ २ ॥ ७ धमकाकर ८ पुत्री  
९ से १० उदास ११ बिलाकर १२ स्त्री सहित १३ देवसिंह का कहना ॥३॥ १४ बहिर्नोई



पतनीके परतल तिहिँ, किन्नों अनुचित काम ॥ ४ ॥  
 पत्तन कोटा दीप प्रति, पठये यागति पत्र ॥  
 तुमकों बुंदिय होंस जो, आवहु तो हुत अत्र ॥ ५ ॥  
 तुमरे उप्पर तनकहू, अग्रज अनुकंपा न ॥  
 संग करन हमसों मिलहु, थप्पहिँ ज्यों नृप थान ॥ ६ ॥  
 ए कग्गर सुनि इंदगढ, पहुँच्यो दीप प्रमत्त ॥  
 अग्रज हितु बिरोध इम, तक्क्यो बालिसँ तत्त ॥ ७ ॥  
 करि अनिष्ट बुंदीसको, देवसिंह धरि द्वेस ॥  
 पठयो जैपुर दीपकों, बिग्रह रचन बिसेस ॥ ८ ॥  
 सुनि माधव जैपुर सुपहु, आवत इहु उमाहि ॥  
 पठयो सम्मुह दीपके, सचिव मुख्य हरसाहि ॥ ९ ॥  
 कूरम गदिय कोन पर, बैठारयो सविनोद ॥  
 पटा हजार पचास ५०००० को, दयो नगर उकड़ोद ॥ १० ॥  
 आवत अंतरद्वारतक, चामर तास चलाय ॥  
 इम बुंदीपतिको अनुज, रक्ख्यो जैपुर राय ॥ ११ ॥  
 ॥ पट्टपात्र ॥

तदनंतर नभ चंद्र अह अचला १८१० मित हायन ॥

माधवँ दिल्लिय दंग पत्त बनि प्रीति परायन ॥

सासन अहमदसाह दयो करि सोहि दिखायो ॥

कछु बासर तँहँ कहि सिक्ख लाहि आलय आयो ॥

रघुनाथराय श्रीमंत सुत नन्ह अनुज जँवनेस जुत ॥

मग माँहिँ मिलत सम्मति रचिय हरगोविंदहिँ गहन हुता ॥ १२ ॥

१ श्री पराधीन ॥ ४ ॥ २ बुन्दो की चाहना है तो ॥ ५ ॥ ३ कृपा नहीं  
 है ॥ ६ ॥ ४ सुर्ख ने ५ तहाँ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ भीतर की डोही तक ॥ १२ ॥  
 ७ माधवसिंह ८ प्राप्त हुआ ९ दिन १० बादशाह सहित ११ जयपुर के  
 सचिव हरगोविन्द को शीघ्र पकड़ने के लिये ॥ १२ ॥



॥ पादाकुलकम् ॥

दिल्लिय गमन कुम्भ जब किन्नौ, बुंदियपुर कगगर तब दिन्नौ ॥  
कोऊ भट मम संग पठावहु, हितमें नृप अंतर जिन लावहु ॥१३॥  
तब भगवंतसिंह माधानी, पठयो भूपति प्रीति प्रमानी ॥  
वहै दिल्लिय माधव घर आयो, रक्खयो सचिव लोभ कहु छायो ॥१४॥

॥ दोहा ॥

सिद्ध भयो नहिँ लोभ सो, सिक्खदई खिजि साह ॥  
हरगोबिंद अमात्यहु, लग्गो जैपुर राह ॥ १५ ॥  
रक्षक ताकी संगहो, माधानी भगवंत ॥  
नन्ह अनुज मगमें मिलत, अमरख किन्न अनंत ॥ १६ ॥  
पकरन हरगोबिंदको, बिटयो कटक बिथारि ॥  
भूप सुनहु भगवंत भट, तहँ कारी तरवारि ॥ १७ ॥  
मारि बहुत मरहटु भट, जित्यो दुद्धर जंग ॥  
कुम्भ सचिव गहन न दयो, आन्यों जैपुर दंग ॥ १८ ॥  
इत संध्या १ हुलकर १ उभय २, अचल कमाऊ छोरि ॥  
जट्टनके कुंभेरगढ, लग्गो लरन बहोरि ॥ १९ ॥  
खंडू हुलकर पुत्रके, गोली लग्गिय मंथ ॥  
ततकालहि अकुलाय तिहिँ, लज्यो कलेवर तथ ॥ २० ॥  
लौ तब ताके बैरमें, कोटि इक्क दम दम्भ ॥  
दिल्लीपर दोऊ २ चढे, करन नन्ह जप कर्म ॥ २१ ॥  
जवनईसँ सत्वर जवहि, सुनि यह अहमदसाह ॥  
मरहट्टन सम्मुह चल्पो, सजि निज कटक सिपाह ॥ २२ ॥

१ पत्र ॥ १३ ॥ २ माधोसिंहोत हाडा ३ हरगोबिन्द को वहीं रक्खा ॥ १४ ॥  
॥ १५ ॥ ४ क्रोध ॥ १६ ॥ ५ सेना का विस्तार ॥ १७ ॥ १८ ॥ ६ पर्यंत ॥ १९ ॥  
७ मस्तक में द शरीर ॥ २० ॥ ८ दंड के रुपये १० नन्ह के विजय की कामना  
से ॥ २१ ॥ ११ बादशाह १२ क्रोध ॥ २२ ॥

## ॥ पट्टपात ॥

सक नभ सासि धृति१८१० समय प्रचुर लै दल दिल्लिय पति॥  
 सन्ध्या हुलकर समुख अनखि हंकयो संत्वर गति ॥  
 मिलात सेन दुव२ मचिग कलह दारुन करवाँलन ॥  
 लुत्थिन लुत्थि बिलागि ठंकि छोनिय गज ढालन ॥  
 चलि चउँ४प्रकार आयुध चपल बज्र अचल जिम रीठ बजि॥  
 दक्खिन अनीक जित्यो दुसह भीरु गयउ जवनेस भजि२३

## ॥ दोहा ॥

अहमदसाह पलाय इम, पच्छो दिल्लिय पत्त ॥  
 खानकलीज हराम खल, पकरयो स्वाँमि प्रमत्त ॥ २४ ॥  
 नयन फोरि जवनेसके, कारा पटक्यो कूर ॥  
 आलमगीर स नाम इक१, साह कियो बनि सूर ॥ २५ ॥  
 अगहि खानकलीज इहिँ, लिन्नौं नादर बुल्लि ॥  
 अंध बंध अहमद कियो, खल विरोध अब खुल्लि ॥ २६ ॥  
 मरहठे दब्बत मुलक, दिल्लिय पत्ते दोरि ॥  
 कछु दम दम्स कलीज दै, किन्नौं साम बहोरि ॥ २७ ॥  
 अंबर सासि धृति१८१०अब्द इम, कितव कलीज कुचाल ॥  
 गद्दी आलमगीरकों, बैठारयो मति बाँल ॥ २८ ॥  
 कछु सिवाय धन भेट करि, निलज कलीज नबाब ॥  
 मरहठे दुव२ मुकल्ले, जेर करन पंजाब ॥ २९ ॥  
 मारकें नादरसाहको, अहमदखान पठान ॥

१ बहुत सेना लेकर २ तरवारों से ३ हाथियों के निशानों से  
 अथवा हाथियों के गिरने से श्वाँमि ठकगई ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त, श्री  
 यन्त्रमुक्त, ये चारों प्रकार के चंचल आयुध चल कर ५ पर्वत पर ॥ २३ ॥  
 १ भगकर ७ अपने स्वामी (बादशाह) को ॥ २४ ॥ ८ कैद में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७  
 ६ छली १० बुद्धि में घालक ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ नादरशाह को मारनेवाला

उततैं वह उत्तरि अटक, आयो कटक अमान ॥ ३० ॥  
 जिहिं जनपद पंजाबमें, लिन्नो अमल जमाय ॥  
 हाकिम निज धरि बाहुरघो, इतको अमल उठाय ॥ ३१ ॥  
 तिनसों मरहठन तबहि, रची जाय हुन रारि ॥  
 उत किन्नो दिल्लिय अमल, थानाँ अपर बिडारि ॥ ३२ ॥  
 कतिक नगर पंजाबके, लुट्टि सहित लाहोर ॥  
 मरहठे जय मत्त मन, आये जैपुर और ॥ ३३ ॥  
 मिलन काज मल्लारसों, नय पटु हड्ड नरेस ॥  
 बुंदीसन करि कुञ्ज बलि, पत्तो जैपुर देस ॥ ३४ ॥  
 माधव१ हड्ड२मल्लार३ अरु, संध्या४बिडित बिबेक ॥  
 मिलि च्यारिन४ सम्मलि रहत, कहे दिवस कितेक ॥ ३५ ॥  
 हरजन पुत्त दलेल तहँ, हो जैपुरपति तत्थ ॥  
 लाय हृदय नृप१ ताहि लौ, आयो निलय समत्थ ॥ ३६ ॥  
 नृप माधव२ गो जयनगर, हुलकर३ दक्खिन देस ॥  
 रठोरन उप्पर चलयो, संध्या४ कुपित बिसेस ॥ ३७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुस्मेदसिंह  
 चरित्रे बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहनिष्कसनतत्कोटागमनगागरगणीशगुहो  
 डाऽभयसिंहकन्योद्वहनेन्द्रगढेशदेवसिंहभेदितचित्तदीपसिंहजयपुरप्रेष  
 णासत्कृतहड्डेन्द्राऽनुजदिल्लीगतकूर्मराजमाधवसिंहप्रत्यागमनाऽन-  
 ॥ ३० ॥ १ देश में ॥ ३१ ॥ २ अन्य थाने निकाल कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥  
 उचित ॥ ३५ ॥ ४ बुन्दी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उस्मेदसिंह चरित्र  
 में, बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का निकल कर फोटे जाना और गा-  
 गरणी के पति राठोड़ अभयसिंह की पुत्री से विवाह करना १ इन्द्रगढ के पति  
 देवसिंह का फोड़े हुए चित्तसे दीपसिंह को जयपुर भेजना और हाडों के पति  
 के छोटे भाई का सत्कार करके दिली गये हुए कछवाहे राजा माधवसिंह  
 का पीछा आना २ इस के पीछे आनेवाले सचिव हरगोविन्द को पकड़ने के

न्तराऽऽगच्छत्सचिवहरगोविन्दनिग्रहशानिमित्तश्रीमन्तनन्हांनुजरघुना  
 थराययुद्धकराजितयुद्धमाधाशिद्वड्भगवन्तसिंहहरगोविन्दजयपुरा-  
 नयनत्यक्तकमाऊगिरिहुलकर १ संध्या २ जट्टदुर्गकुम्भेरवेष्टनत-  
 त्समरमल्लारपुत्रखण्डूमरशानीतकोटिद्रुम्भ १००००००० तद्वैरोद्धर्तज  
 या १ मल्लार २ दिल्लीशाहमदशाहविजयकलीजखानस्फोटितनय  
 नयवनेशकाराक्षेपणातदगदिकाऽऽलमगीरोपवेशनदत्तदमदव्यदाक्षि  
 णासैन्यपञ्जावप्रेषणापरास्तीकृतनादरधनदिल्लीशाहधीनीकृतपञ्जा  
 बहलकर १ संध्या २ जयपुरजनपदाऽऽगमनद्वन्द्वेन्द्र १ कूर्ममेन्द्र २  
 तत्सम्मिलननीतिहारजनिदलेलसिंहरावराड्बुन्द्याऽऽगमनमाधवसिं  
 हजयपुरप्रविशनमल्लार १ दक्षिणागमनस्वमित्ररामसिंहसहायीभूत  
 संध्याजया २ तद्योधपुरदापनार्थसज्जीभवनं द्विचत्वारिंशो ४२ मयू-  
 खः ॥ ४२ ॥ आदितः ॥ ३२३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ षट्पाठ ॥

कारण श्रीमन्त नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराय का युद्ध करना और  
 युद्ध जीतनेवाले माधोसिंहोत हाडा भगवन्तसिंह का हरगोविन्द को जयपुर  
 खाना ३ कमाऊ पर्वत को छोड़कर हुलकर और सिन्धिया का जाट के कुम्भेर  
 गढ़ को घेरना और उस युद्ध में मल्लार के पुत्र खंडू का मरना ४ उस के वैर में  
 छोड़ रुपये लेकर जया और मल्लार का दिल्ली के पति अहमदशाह को विजय  
 करना ५ कलीजखां का बादशाह के नेत्र फोड़कर कैद करना और उसकी  
 गद्दी पर आलमशाह को पिठाना ६ दंड का धन देकर दक्षिण की सेना का  
 पंजाव में भेजना और नादरशाहके मारनेवाले को हराकर पंजाव को दिल्ली-  
 शा के अधीन करके हुलकर और सिन्धिया का जयपुर के देश में आना ७ हाडों  
 के इन्द्र और कछवाहों के इन्द्र का उनसे मिलना और हरजन के पुत्र दलेल  
 सिंह को लेकर रावराजा का बुन्दी आना और माधवसिंह का जयपुर प्रवेश  
 करना ८ मल्लार का दक्षिण में जाना और अपने मित्र रामसिंह का सहायक  
 होकर जया नामक सिन्धिया का उसको जोधपुर देने के अर्थ साजित होने का  
 बयालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४२ ॥ और आदि से तीन सौ तेईस मयूख हुए ॥

रूपनगर नृप राजसिंह जन देह त्याग किय ॥  
 सूनु ज्येष्ठ सामंतसिंह तब तास तखत लिय ॥  
 अनुज बहादुर बहुरि भ्रात सामंत निकारयो ॥  
 लिन्नी गहिय छिन्नि छत्र अप्पन सिर धारयो ॥  
 सिरदारसिंह निज सुत सहित नृप सामंत बिपत्ति सहि ॥  
 लिख तबहि आय संध्या सरन राम मरुप जिम दीन रहि ॥१॥

॥ दोहा ॥

सक नभ ससि धृति १८१० समयही, उदयनैर इत एह ॥  
 रान प्रतापहु रोगबस, तजत भयो निज देह ॥ २ ॥  
 तब जो कारामाँहिँ हुव, राजसिंह सुत तास ॥  
 सो नृप भो दस१० बरस वय, पै नहि नीति प्रकास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

रूपनगर नृप सँसुत संग सामंतसिंह १ अब ॥  
 त्योंहाँ मरुपति रामसिंह१ दोउन२ इस लै तब ॥  
 संध्या सेनहिँ सज्जि चल्पो इनके अरि मारन ॥  
 दोउन२ निज भुव दैन बिदित निज किति बिथारन ॥  
 सुनि एह बहादुरसिंह इत विजयसिंह सम्मलि गयउ ॥  
 मेरता नगर दुव२ दल मिलत सक सिव धृति संगर भयउ ॥४॥

॥ दोहा ॥

विजय बहादुर१ उभय२ उत, इत सामंत१ रु राम ॥  
 संध्या३ दुँहुँन२ सहाय कर, कलिँ मंडयो जय काम ॥ ५ ॥

॥ सारङ्गः ॥

संध्या जया ओ विजैसिंह रठोर, यों मेरता खेत जुट्टे बडे जोर ॥

१ पडा पुत्र २ छोटे भाई बहादुरसिंह ने ३ मारवाड़ के पति रामसिंह की भांति  
 ॥ १ ॥ २ ॥ ४ कैद में ॥ ३ ॥ ५ पुत्र सहित ६ युद्ध हुआ ॥ ४ ॥ ७ युद्ध रचा  
 ॥ ५ ॥ जया नामक सिंधिया और जोधपुर के राजा विजयसिंह राठोड़ ने

भारी मच्यो सेसके सीसपै भार, भो\*कुंडली सो फटा डारि फुंकार ६  
 वाराहकी दहमें पीरबहै पूर, होनै लग्यो कामठी पिठिको चूर ॥  
 कंपे सबै सिद्धिकरी ×चिक्करी पारि, धुज्जी ॥ धरित्रीहु भै कल्पको धारि ७  
 आदित्य आभा गई धूलितैं ढंकि, लोकेस अष्टों परे सोकमैं संकि ॥  
 घाँघाँ बह्यो धूमकी धार अंधार, उलंघिबे सेतु लग्यो अकूपार ८  
 यों सस्र संबाहिनी बाहिनी बेग, दोऊर मिली ओ चली उज्जली  
 तेग ॥

आकर्णा अँचे करै चाप टंकार, सन्नद संधा करै जुष्टि जुज्जार ९  
 फटै गिरै तुंड मूर्द्धा अलीकांऽऽलि, कटै कटै नेत्र ओ उच्छटै पौलि  
 भ्रूषक्ष्म ओ कूर्प जुष्टै मनों मेह, लोलैं करै के कटी नासिका लेह  
 छोनी छबै गैल ओ संखके तोम, सोहै गिरे रत्नमैं मासुरी लोम ॥  
 तुष्टै उडै तालु त्यों दह ओ दसैं, कटै कैंकाटी कहीं कंधरा अंस ११

मेड़ताक खेत में इस प्रकार बड़े बल से युद्ध किया और शेष के मस्तक पर बड़ा भार मचा, वह \* सर्प १ फणों को घारण करनेवाला, वाराह को दाढ़ में पूण पीड़ा होकर कामठी की पीठ का चूर्ण होने लगा और सिद्धि का सब हाथी × चीख मारकर धुजे, ॥ पृथ्वी भी १ प्रलय का भय करके धुजी ॥ ७ ॥ २ सर्प की क्रांति धूलि से ढक गई, आठों लोकपाल भय भीत होकर शोक में पड़े धुप की धारा ले ३ दिशा दिशाओं में अंधेरा बढगया और ४ समुद्र भी सीसा लांघने लगा ॥ ८ ॥ इस प्रकार ९ शस्त्रों से अंगों को मर्दन करनेवाली दोनों सेना ६ घटा के घेग से चली जहाँ उज्जली तरवार चलने लगी ७ कान तक खँचे हुए धनुष टंकार करते हैं और सज्जित हुए वीर युद्ध करके नहीं भगने की या विजय की प्रतिज्ञा करते हैं ॥ ९ ॥ मुख ९ मस्तक १० ललाटों की पंक्तिवाँ फट कर गिरती हैं, नेत्र कट कर निकलते हैं और ११ कानों के अग्र भाग उछटते हैं १२ भौंहें और १३ कुहनियाँ भेव के समान घर खती हैं, कितनी ही कटी हुई १४ जिह्वाएं नासिका को १५ चाटती हैं ॥ १० ॥ १६ गाल और १७ घीवा के १८ समूह से भूमि ढकती है और रुधिर में गिरे हुए १९ मूखों के केश आभा देते हैं इसी प्रकार तालुआ, दाढ़ और २० दांत तुटकर उड़ते हैं, कहीं पर २१ गले का मणिया (घाँटी) गर्दन और २२ कंधे कटते हैं ॥ ११ ॥

केते चिरै कंकटी खगकी धार, जुझार केते करै पार कटार ॥  
 कहैं कहां बीर मातंगके दंत, फटैं कहां पेट ओ उच्छटैं अंत ॥ १२ ॥  
 नचैं कहां विफुरे घुमि के रुंड, जचैं कहां धुंजटी मालकाँ मुंडा ॥  
 डोलैं कहां डाकिनी रक्तसौं मत्त, माँडैं कहां जुगिनी गंतसौं गत्त ॥ १३ ॥  
 जुहैं कहां जोध के मल्ल संग्राम, फुटैं कहां फीलमें कुंत उदाम ॥  
 कुहैं कहां भीरुहै सेस कंकाल, हुहैं कहां हायकें घाय बेहाल ॥ १४ ॥  
 दगैं कहां खोपकाँ तोप बंदूक, लगैं कहां उच्छलैं फाल मंडूक ॥  
 चखैं कहां गोद गिद्धी बड़ी चाह, अखैं कहां साकिनी वाह  
 वाह ॥ १५ ॥

कुहैं कहां एकही पायतैं रुंड, मुहैं कहां नैन के भू गिरे मुंड ॥  
 बजैं कहां माधुरी नारंदी बीन, पुजैं कहां कालिका लौ बपा  
 पीन ॥ १६ ॥

फेरैं कहां भूप है छत्रकी छाँह, गेरैं कहां अच्छरी कंठमें बाँह ॥

कितने ही १ कवच धारण करनेवाले खज्ज की धारा से चिरते हैं और कई घोधा कटारों को पार करते हैं, कहीं पर बीर लोग हाथियों के दंत निकालते हैं और कहीं पर पेट फटकर आंते उछलती हैं ॥ १२ ॥ कितने ही क्रोधित रुंड घूम कर नचते हैं और कहीं पर मुंडमाला बनाने को ३ शिव मस्तक मांगते हैं कहीं पर डाकिनियां रक्त से मत्त होकर फिरती हैं और कहीं पर योगिनियां ४ शरीर से शरीर को रगड़ती हैं ॥ १३ ॥ कितने ही बीर कहीं पर मल्लयुद्ध करते हैं, कहीं पर ५ हाथियों में ६ रुकावट रहित आले फूटते हैं, कितने ही कायर ७ अस्थि पंजर बाकी रह कर कूकते हैं और कहीं पर हाय हाय कहके व्याकुल होकर कूकते हैं ॥ १४ ॥ कहीं नाश करने को बंदूकें और तोपें चलती हैं जिनके लगने से कहीं पर ८ मंडक की छलांग के समान उछलते हैं कहीं पर गिद्धनियां बड़ी चाह से मांस खाती हैं और कहीं पर साकिनियां प्रशंसा करती हैं ॥ १५ ॥ कहीं पर रुंड एक पैर से कूदते हैं, कितने ही मुंड ९ भूमि पर गिरते हुए नेत्र बंद करते हैं, कहीं पर १० नारद की मधुर वीणा बजती है और कहीं पर पुष्ट मज्जा लेकर बीर लोग काली को पूजते हैं ॥ १६ ॥ कहीं पर राजा छत्र की छाँह में ११ घोड़े फेरते हैं, कहीं पर अप्सराएं बीरों के कंठ में भुज डालती हैं, कहीं पर बीर आगे बढ़कर तलवार नारते हैं और कहीं पर



मारैं कहीं अग्गव्हे खग्ग सामंत, हारैं कहीं उच्चरैं हंत हाहंत ॥ १७ ॥  
 भूमैं कहीं कुम्भिके कंठसों जाय, घुम्भैं कहीं वीर के तीरके घाय  
 रंगैं कहीं जोध के रंतमें मुच्छ, मंगैं कहीं प्रेतनी गोदके गुच्छ ॥ १८ ॥  
 गैमत्थैं चोफार फटैं कहीं तत्त, मानो जगन्नाथके भक्तके पैत्त ॥  
 वज्रैं कहीं वृत्त सारंग विरफार, उहैं कहीं सोरके जोर अंगार ॥ १९ ॥  
 खज्जूरिसे तुट्टि भंडे झुकैं लोलै, जंगो वजे गोभुंका भेरिका ढोल ॥  
 हुल्ले फिरैं निट्टिकैं भिन्न वेतंडै, फल्ले फिरैं फेरैंवी कौक फेरंडै ॥ २० ॥  
 वानेत केते भैरैं भूतको बत्थ, सोहैं धनै मारते संकुलो सत्थ ॥  
 कहैं कहीं उच्छटैं चौर ओ छत्र, पापी छकैं भैरवी लौहिताऽमत्र ॥ २१ ॥  
 यों मेरता खेत मंडयो महाजुद्ध, जुट्टे भलो दक्खिनी कालसे क्रुद्ध ॥  
 संध्या जैया आत यों दत्त गो दोरि, नक्खी विजैसिंहकी फोज सं-  
 स्कारि ॥ २२ ॥

वै मार रहोर डारे धनै कुट्टि, ओ तोपखाना खजाना लये लुट्टि ॥

संध्या यहै जंग जित्ते बडे जोर, भज्जयो विजैसिंह गो दुंग नागोर ॥ २३ ॥

हारहण ! खंद से हाहाकार करते हैं ॥ १७ ॥ कहीं पर और लोग रहाधियों के  
 कंठ से जा लगते हैं, कहीं पर जागों के घायों से घूमजाते हैं, कहीं पर ३ कधिर  
 ने लूधें रंगते हैं और कहीं प्रेतनियां ४ चरपी के समूह मांगती हैं ॥ १८ ॥ उत्त  
 युद्ध में कहीं पर ५ हाधियों के मस्तक चार फांक होकर फटते हैं सो मानो जग  
 न्नाथ के भान के ६ पात्र फूटते हैं, कहीं पर गोलाकार धुएँ ७ धनुष का ८  
 जलद होता है और कहीं पर दाखद के वक्त्र से अंगारें उड़ते हैं ॥ १९ ॥ कहीं  
 पर गजूर के समान ९ लपक करे लूटते हैं और कहीं युद्ध संबंधी १० गोभु  
 ने (घान्गपिछोय) ११ नौषन और दोल पकते हैं १२ फटेहुए छापी हुलाने से भीट  
 फिरते हैं और १३ मोदट्टनियां (स्वान्नियां) १४ हुक (भेड़िये) और १५ मोदक  
 फल्लेहुए फिरते हैं ॥ २० ॥ जितने ही आनापस (युद्ध से नहीं भगने की) मतिज्ञा  
 का निम्न स्थानेवाले) मृतों को पापों में भिरते हैं और १६ भैरव (अथवा  
 रजिग) लहून साथ ही मारतेहुए घोडा पाते हैं, कहीं पर चौर और छत्र फटकर  
 गिरते हैं और १७ यों से बरालुका पात्र पीकर लूट होता है ॥ २१ ॥  
 १८ दूना नामक जया स्थानिया का भाई मारता हुआ गया ॥ २२ ॥ १९ विज  
 नसिंह नागोर के गढ़ में आगमया ॥ २३ ॥



॥ दोहा ॥

विजयसिंह मरुभूप भजि, गयो नगर नागौर ॥

जाय बहादुरहू दुख्यो, रूपनगर रह्यो ॥ २४ ॥

प्रथम विजयसिंहहिं दमन, जया तबहि बरजोर ॥

तोपन जाल कराल रचि, गढ बिंध्यो नागौर ॥ २५ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिंह  
चरित्रे रूपनगराऽधिराजसामन्तसिंहस्वाऽनुजबहादुरसिंहरविग्रहविस्त  
रणा कलुषिकुहककनिष्ठनिष्कासितससून्वग्रजसन्ध्याजयाशरणाऽऽ  
सादनमेदपाटेशरणाप्रतापसिंहनरणातत्सुतराजसिंहोदयपुरपट्टपाप  
णासरामसिंह १ सामन्तसिंह २ जया ३ जोधपुर १ रूपनगरी २ छर  
णाऽर्धप्रस्थानश्रुतैतत्सबहादुरसिंह १ मरुपविजयसिंह २ सन्मुखाऽऽ  
गमनमेरुतानगरमहाऽऽयोधनविरचनलुण्ठितवैरिविभवजयाजयाऽनु  
ष्ठानपत्तापितविजयनागौरदुर्गप्रविशनम्लानमुखबहादुरसिंहरूपनग  
राऽऽगमनप्रस्थितपार्ष्णीपीडनजयानागौरकोट्टाऽऽवरणीभवनं त्रिच  
त्वारिंशो ४३ मयूखः ॥ ४३ ॥ आदितः ॥ ३२४ ॥

॥ २४ ॥ १ दंड देनेको ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरि  
त्र में, रूपनगर के पति सामन्तसिंह और छोटे भाई बहादुरसिंह का विग्रह बढ  
ना और पापी छलीछोटे भाई के निकालेपुत्र सहित बड़े भाई का सिन्धिया जया  
का शरण लेना १ सेवाड के पति राणा प्रतापसिंह का मरना और उसके पुत्र  
राजसिंह का उदयपुर का पाट पाना २ रामसिंह और सामन्तसिंह सहित  
जया का जोधपुर और रूपनगर के निकालने के अर्थ गमन सुन कर बहादुर  
सिंह सहित मारवाड के पति विजयसिंह का सिन्धुल आना ३ मेड़ता नगर में  
बड़ा युद्ध करना और शत्रु के वैभव को लूटकर जया के जय करने से भागकर  
विजयसिंह का नागौर के गढ में प्रवेश करना और मलीन मुख बहादुरसिंह  
का रूपनगर में आना ४ एही द्वाते हुए जया का गमन करके नागौर को  
घेरने का तियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से तीन सौ  
चौहत्तर ३२४ मयूख हुए ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा-बुंदी नृप उम्मेद इत, रामानुज मत धारि

देस बिथारी रीति दृढ, संप्रदाय अनुसारि ॥ १ ॥

प्रतिमा इक १ श्रीरंगकी, दक्खिन हिंदु मंगाय ॥

सिव धृति १८११मित सक सुक्र बदि, एकादसि ११तिथि पाय २

मंदिर महलनमौहिं रचि, सिल्प बिबिध मत संकत ॥

बिरचि प्रतिष्ठा निगम बिधि, वह थप्पी अति भक्त ॥ ३ ॥

तबतै यह श्रीरंगको, अतुल पट्ट उच्छाह ॥

जेठ असित एकादसी ११, होत राम नरनाह ॥ ४ ॥

याहि बरस १८११ को उज्जै सित, छठी द्वासर पाय ॥

भूप भुजिष्याहू जन्पो, सुत गुमानजुत रांप ॥ ५ ॥

नाम तास सिवसिंह दिय, जातकं द्विजन बिचारि ॥

तदनंतर जो दृत्त हुव, सुनहु भूप हित धारि ॥ ६ ॥

सक जगती धृति १८१२माघ सित, सुक्र बार संमर दीह १३ ॥

ऊदाउति रानिय जन्पौ, कुमर बहादुरसीह ॥ ७ ॥

अजितसिंह १ अरु यह कुमर, सोदर दुवर सु कुमार ॥

बाल छँपाकर जिम बढत, दिन दिन अधिक उदार ॥ ८ ॥

बिजयसिंह मरुपाल इत, रुंढ नगर नागोर ॥

संध्याको संकट सहत, कछु न जनावत जोर ॥ ९ ॥

बरस इक १ घेरा रह्यो, तोपन लग्गो ताप ॥

संध्या नहिं जावत सह्यो, दुपहर जेठ दिवाप ॥ १० ॥

व्याकुल तब बखतेस सुत, चूक बिचारिय चित्त ॥

॥ १ ॥ १ से २ प्रमाणवाले सम्वत् में ३ ज्येष्ठ यदि ॥ २ ॥ ४ नाना प्रकार के समर्थ मतों से ॥ ३ ॥ ५ यदि ॥ ४ ॥ ६ कार्तिक सुदि ७ दिन ८ राजा की पत्नी सधान स्त्री ९ गुमानराय ॥ ५ ॥ १० जन्म ॥ ६ ॥ ११ ज्येष्ठ मास १२ कामदेव के दिन (तेरस के दिन) को ॥ ७ ॥ १३ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ १४ नागोर में धिरकर ॥ ९ ॥ १५ सूर्य ॥ १० ॥

दुवर \*इंदे पड़िहार दुत, बुल्ले दे बहु वित्त ॥ ११ ॥

अगँ सन इंदे रहत, मरु जनपदके माँहि ॥

चूक करनमँ जे चतुर, न करँ मरतहु नाँहि ॥ १३ ॥

पावँ मरुपतिके पटा, बिजु सेवा रहि गेह ॥

काम परँ जब चूकको, अप्पै तब निज देह ॥ १३ ॥

करँ यहहि सेवा कठिन, जब तब संभव होय ॥

इंतर काल कहँ घरन, खिजे देत असुँ खोय ॥ १४ ॥

अगँ जिन सुमियाणगढ, बिजड जवन लिय मारि ॥

मरत डरे नहिँ नैक मन, बिरच्यो चूक बिचारि ॥ १५ ॥

अभयसिंह मरुईसको, पुनि निज आयस पाय ॥

पीलू लखपति दक्खिनी, दुवर दिय मारि गिराय ॥ १६ ॥

कोलों हम या गति कहँ, इंदनको आचार ॥

जे रचि बाजी जीवकी, खेलहे अजब खिलहार ॥ १७ ॥

तिहिँ कुलके दुवर बीर तब, इंदे बुल्लिय अर्थ ॥

कह्यो हनहु संध्या कुटिल, तिन प्रति धत्वपँ तैथ ॥ १८ ॥

सुनत जयाकी सेनमँ, उभय बनिक् बनि आय ॥

बनिज बिथारयो बंचकनँ, बिपणि बजार बनाय ॥ १९ ॥

दुवर हि लरे पुनि इक्क दिन, समुझत क्रीत हिसाब ॥

कल्पित कह्यु अपराध करि, खिजि खिजि होत खराब ॥ २० ॥

बकत परस्पर जैन बनि, उभय तित्थगर आन ॥

पलटत पायन धौतंपट, होत पदवन हान ॥ २१ ॥

सिथिल पैघ सिरतँ सरकि, उरभी कंठन आय ॥

\* ईंदा शाखा के पड़िहार क्षत्रिय वं धन ॥ ११ ॥ † मारवाड़ देश में ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ § अन्य समय १ प्राण ॥ १४ ॥ २ सुमियाणा में ॥ १५ ॥ ३ हुकम

॥ १६ ॥ १७ ॥ ४ यहाँ बुलाये ५ मारवाड़ के पति ने ६ तहाँ ॥ १८ ॥ ७ ठगों

ने ८ दुकान ॥ १९ ॥ ९ क्रय करने (मोल लेने) का हिसाब समझने को ॥ २० ॥

१० धोवती ११ जूतियों का दान (प्रहार) ॥ २१ ॥ १२ दीली १३ पघड़ी

कलम गई गिरि कानतैं, मुख गल स्वास न माय ॥ २२ ॥

इक कहैं कहिहों अबहि, गिनि नखी मैं गूढ ॥

\* मोदक खावत मात तब, मारयो उँदुरु सूढ ॥ २३ ॥

जपैं इतर तेरे जनक, छली ऽजिनोदित छोरि ॥

नखी दस १० घृत माँहिँतैं, नखी जियत निचोरि ॥ २४ ॥

गहत इक पत्थर गडयो, दैवेकौं करि दाव ॥

खैचत बिटपन इक खिजि, घल्लत गालिन घाव ॥ २५ ॥

जिम तिम विरचत करि जतन, अधोबाँत उतसर्ग ॥

लखि इत उत बिहसन लगे, बल दक्खिन भट बर्ग ॥ २६ ॥

इक मारत मुठी उछरि, खिजि इक दंतन खात ॥

संध्याकी डोढी गये, लरत प्रहारत लात ॥ २७ ॥

धौतबसन अंतर दुहुँन २, कछि कूछि दढ कोपीन ॥

दुव २ असिंधेनु दुँराय तँहँ, लरन भये इम लीन ॥ २८ ॥

लरत बनिक कौतुक लखत, उलटयो कटक अपार ॥

प्रहसन रूपक जिम प्रचुर, प्रकटयो हास्य प्रचार ॥ २९ ॥

स्मित १ कति जन कति जन हसित २, बिहसित ३ कतिक बनात

॥ १२ ॥ \* लइइ खाते समय † चूदे को ॥ २३ ॥ ‡ दूसरा कहता है कि तेरे पिता ने ऽजिन (अर्हन्त) के कहने को छोड़कर अर्थात् अर्हन्तों के कहेष्टु अहिंसा धर्म को त्यागकर ॥ २४ ॥ ? वृजों को ॥ २५ ॥ २ अपशब्द (गुदा के पवन) का निकालना ३ दक्षिण की सेना के ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ धोती के भीतर ५ छुरियें ६ छुपाकर ॥ २८ ॥ ७ हास्य के नाटक के समान बहुत ॥ २९ ॥ रसतरंगिणी में हास्य रस के बारह भेद लिखे हैं सो हम भी रसतरंगिणी के सातवें तरंग के अनुसार लिखते हैं कि हास्य रस दो प्रकार का है जिन में एक तो स्वनिष्ठ (अपने आप हसना) और दूसरा परनिष्ठ (दूसरे का हसना) जो उत्तम मध्यम अधम पुरुषों में रङ्कर छः प्रकार का है। जिनमें छः प्रकार का स्वनिष्ठ और छः प्रकार का परनिष्ठ मिलकर बारह भेद हुए हैं। उत्तम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ दोनों में स्मित और हसित होता है। और मध्यम पुरुषों में स्वनिष्ठ, परनिष्ठ, बिहसित और उपहसित होता है।

सिन्धिया का कपटी धनियों को बुलाना] सप्तमराशि-चतुश्चत्वारिंशमयूज (३६५?)

कतिक करत बक्रोष्टिका४, कति अतिहास५ जनात ॥ ३० ॥  
 अट्टहास६ कतिकन उदित, आच्छुरितक७ कति अंग ॥  
 कतिकन अवहसित८ रु कतिन, परि उपहसित९ प्रसंग ॥ ३१ ॥  
 कहूँ दग विकसन संकुचन, ओठ फुरकनहु उपि ॥  
 बढ्यो प्रेमथे देवत दिसैद, रस संध्या दल रुपि ॥  
 करत दंतधावन करम, जया पँटालय जत्थ ॥  
 कोतुक यह अकख्यो कतिन, तासौ जाय रु तत्थ ॥ ३३ ॥  
 बनिक लरत देखे बहुत, मुठी मल्लक मार ॥  
 पै इक रारि अपुव्व प्रभु, दरसनीय निज द्वार ॥ ३४ ॥  
 देखत जन पकरत उदर, दुस्सह हसन दुखात ॥  
 कोतूहल यह लखनको, जुरे छुरै नहिँ जात ॥ ३५ ॥  
 संध्याके सिर यह सुनत, अंतक छायो आय ॥  
 बुल्यो तब बुल्लहु बनिक, निराखि निवेरै न्याय ॥ ३६ ॥  
 इम भाखत सँहसन अनुर्ग, दंभिन लाये दोरि ॥

तथा अधम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ, अपहसित और अतिहसित होता है इनमें थोड़े से कपोल फूलने, दन्त नहीं दीखने और नेत्रों के प्रान्त से अच्छी तरह देखने को स्मित कहते हैं कपोलों का फूलना और थोड़े से दांतों का दीखना, इस हास्यको हसित कहते हैं। समय के अनुसार जिस हास्य में उत्तम शब्द होवे, सुख का सुकड़ना और सुख पर लाली दीखे, उसको विहसित कहते हैं नासिका फूलना, टेढ़ी दृष्टि होना गरदन का सुकड़ना और स्पष्ट शब्द होना इसको उपहसित कहते हैं। उद्धत होवे, नेत्रों से अश्रुओं का उदय होवे, मस्तक हिलता होवे, अत्यन्त स्पष्ट शब्द होवे, उसको अपहसित कहते हैं। अत्यन्त उद्धत, बहुत आँसु आवे, बहुत अत्यन्त शब्द होता होवे पासमें होवे उसको पकड़लेवे, हाथ से ताल बजावे जिसको अतिहसित कहते हैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ यहाँ कहीं तो लक्ष्य से हास्य को चलाया है और कहीं लक्ष्य से चलाया है सो पाठक लोग जान लेवें-१ शिव है देवता जिसका और २ श्वेत है रंग जिसका ऐसा हास्य सिन्धिया की सेना से खड़ा हुआ ॥ ३२ ॥ ३ दातण (दलून) करता था ४ डेरे में ॥ ३३ ॥ ५ दन्त मारकर ६ देखने योग्य ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ७ काल ॥ ३६ ॥ नौकर ॥ ३७ ॥

लातन नख दंतन लारत, झुकत गये भंभोरि ॥ ३७ ॥  
 अति समीप जावत अटक, प्रतिहारन किय पूर ॥  
 शरि तदपि अदभुत रचत, दंभी न रहे दूर ॥ ३८ ॥  
 कहत इक अपराध करि, मारत यह पुनि मोहि ॥  
 इतर कहत संध्या अधिप, करत न्याय सबकोहि ॥ ३९ ॥  
 तू सठ तोलत छद्म तकि, लुटि अजानन लेत ॥  
 धटिकादिक मनके धरत, दानन ऊनित देत ॥ ४० ॥  
 पुनि कहि इम दंतन पयन, लरे नखन रिस लाय ॥  
 तालिन दै संध्या तकै, गालिन देत गिनाय ॥ ४१ ॥  
 कटि छुरिन जावत निकट, दई जया उर दोरि ॥  
 गटकत हिप कालिक गई, फोरी पंजर फोरि ॥ ४२ ॥  
 देत समय बुल्ले डुवरहि, होत अचानक हाक ॥  
 कहिये संध्या न्याय करि, को हममाँहिँ कँजाक ॥ ४३ ॥  
 भाखि यह रु सत्वर भजत, मारयो इक असि मार ॥  
 कटिगो इक रोवत कुहँक, इक्खहु यह अंधार ॥ ४४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कोलाहल हुव कटक मरत संध्या कुल इनके ॥

भये रुदनके राग छिपे दुंदुभि छत्तिनके ॥

बिजैसिंह मरुईस सुनत किय मोद सिवायो ॥

अभयसिंह सुत अधम पिहुँल आतुर दुख पायो ॥

सक दुव मृगांक बसु इक १८१२ समय धिठन इम छल बेस धरि ॥

मरुपाली साल संध्यामय सु कह्यो इंदन जतन करि ॥ ४५ ॥

१ द्वारपालों ने निकट जाने से बहुत रोका २ तोभी ॥ ३८ ॥ ३ अन्य ॥ ३९ ॥  
 ४ छल ५ पंचसेरी आदि ६ कमती ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ७ हृदय और फलेजे को  
 निगल कर शरीर को हलकेपन से फोड़कर गई ॥ ४२ ॥ ८ युद्ध करनेवाला  
 छली हममें कौन है ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र १० छली ॥ ४४ ॥ ११ शीघ्र १२ बहुत  
 १३ मारवाड़ के पति को १४ ईदा छत्रियों ने ॥ ४५ ॥

विजैसिंहकासिन्धियासेसंधिकरना] सप्तमराशि-पंचमत्वारिंशमयूख(३५५३)

॥ बोधां ॥

जया तनय जनकू जबहि, पढ़ जनकको पाष ॥

बिंदि रह्यो नागोर बलि, तोपन सारि, रचाय ॥ ४६ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावु-  
म्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीश्वरनिजाऽऽलयरचितसुमन्दिरश्रीरङ्गप्रतिष्ठाप-  
ननिजराइयूदाउत्थौरसराजकुमारबहादुरसिंहोद्गमनकुमारशिवसिंहसु-  
जिष्याजठरजन्मप्रापणानागोरदुर्गस्थरहोडविजयसिंहव्याकुलीभवन-  
तत्प्रोषितकृतवाणिग्वेशेन्दोपटङ्गिप्रतिहारद्वय २ जयामारणाप्राप्तजन-  
काऽधिकारतत्पुत्रजनकूनागोररगारचनं चतुश्चत्वारिंशो ४४ मयूखः  
॥ ४४ ॥ आदितः ॥३२५॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ शेजा ॥

बिजयसिंहको बिटि कैलह जनकू व्याकुल किय ॥

करि तब संधि कबंध दसुम दसलकख१००००००दंडदिय ॥

जनक क्षयो अजमेर अथ सु पच्छो हरि अप्प्यो ॥

बलिं संभरपुर घंट आन कायादीहिं थप्प्यो ॥ १५॥

निलय जयाके नाम विविध मंजुल बनवाये ।

मेरुता२ रु नागौर२ लैराजि बहु दम्भ लगाये ॥

१ फिज नाणोर को घेरा ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचन्द्र के उत्तरायण के उत्तम राशि में, उस्मेदसिंह के च-  
रित्र में, बुन्दी के पति का अपने महलों में बनाये हुए श्रेष्ठ मंदिर में, श्रीरंग की  
प्रतिष्ठा करना और अपनी राणी जदावति के बदर से राजकुमार बहादुरसिंह  
का जन्म होना १ कुसर शिवसिंह का दासी के पेट से जन्म पाना ४ नागौर  
के महल में शिवत राठोड़ विजयसिंह का व्याकुल होना और उस के भेजे  
मन्त्रियों के प्रेषवाले ईश पदवीवाले दो पड़ोहारों का जया को मारना ३ पिता  
का अधिकार थाकर उसके पुत्र जगन्मू का नागौर में युद्ध करने का चमालीसवां  
बहुल समाप्त हुआ॥४४॥ और आदि से तीन सौ पच्चीस १२५ मयूख हुए ॥

रघुल मेश भारी(दायभाग पानेवाले) रामखिर को ॥१॥४मकामः सुन्दर विद्वज्जनकर

करि जनकू अब कुंच अनखि पच्छो मुरि आयो ॥

रूपनगर सन रारि बिरचि रहोर दवायो ॥ २ ॥

सकुचि बहादुरसिंह मन्नि अतिबल मरहइन ॥

आनि मिल्यो डर आनि प्रकट दिखराय नम्रपन ॥

रूपनगर खाली कराय सामंतहिं दिन्नो ॥

याहि कृष्णगढ अपि कुंच जनकू पुनि किन्नो ॥ ३ ॥

काका दत्ता संग बहुरि समतेरबहादुर ॥

सुत बाजेरायसौ एह जनम्यो जवनीउर ॥

इन दोउनर जुत उलटि धूप्यो जनकू दक्खिन धर ॥

हुंदिअ आवत भूप जाय सम्मुह लायो घर ॥ ४ ॥

सबको करि सतकार मंडि मंजुल महिमानी ॥

संभर दिय पुनि सिक्ख बिहित हित मय कहि बानी ॥

कोटापति ईत कुमति अधिक चक्खी आकूती ॥

बाजीकरण विनोद आनि मंडन रत ऊती ॥ ५ ॥

तास नसा करि तबहि खेदहुव देह खपावन ॥

अतिजगती धृति १८१३ अब्द आसँ दरखा कृतु आवन ॥

बेलाक कृष्णविलास व्याधि करि देह बिहायो ॥

सचिव भल्ल मदनेस बेग तब अजित बुलायो ॥ ६ ॥

द्विज इक दानतिराय दंग अनता पठयो हुत ॥

विष्णूसिंह नांती सु अजित बुल्लयो पित्थेल सुत ॥

याको तब द्विज एह लैघुहि अनता सन लायो ॥

अब्द पचास५० अवस्थ वृद्ध गहिय बैठायो ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ २ ॥ १ बहादुरसिंह को ॥ ३ ॥ २ सुसक्तमानी के वदर से शदीड़ा (शीघ्रता से गया) ॥ ४ ॥ ४ सुन्दर ५ घोड़े के समान मैथुन करने को बैचक में बाजी करण कहते हैं ६ लीड़ा ॥ ५ ॥ ७ आवण मास ८ कृष्णविलास नामक बाग में ९ अजितसिंह को ॥ १० ॥ १० पोता ११ पृथ्वीसिंह का पुत्र १२ शीघ्र ही ॥ ७ ॥



इत सन्ध्या उज्जैनतैं, यह सुनि दत्ता आय ॥

कोटा बिंदिय अनख करि, सेना अयुत १०००० सजाय ॥ ८ ॥

बुल्लयो हमरे हुकम बिबु, अजितसिंह हुव ईस ॥

अप्पहु यातैं दंड अब, श्रीमंतहि गिनि सीस ॥ ९ ॥

मुदा बारह लख १२००००० मित, दिन्नी तब सहि दंड ॥

दखिनको फैल्यो दुसह, असो तहर अखंड ॥ १० ॥

आयो इत उत्तरि अटक, उदत कटक अमान ॥

मारक नादरसाहको, अहमदसाह पठान ॥ ११ ॥

सक अतिजगती धृति १८१२ समा, व्यापत समय बसंत ॥

किन्नी जिहिं मथुरा कतल, हत्या पर सठ हंत ॥ १२ ॥

आतप कातर पुनि गयउ, ग्रीखम लगगत गेह ॥

बनुज हजारन मारिकैं, ओतु सुनन जुत एह ॥ १३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुर मकसूदाबाद १ ललामक, सुहि मुरसिदाबाद १ जुगर नामक ॥

बंगदेस अंतर तदासक, जवन सिराजुदौला सासक ॥ १४ ॥

जिहिं अंग्रेज जमत इत जानैं, पुनि करि अमल बढते पहिचानैं ॥

सचिव कोहु तंस पुर ढाका सन, धुत अछुत लौ भज्यो बहु धन १५

सुपै रह्यो अंग्रेजन सरनैं, बल जिनको सब सिर जग दरनैं ॥

इत्यादिक हेतुन नवाव यह, सजि पैठो कलकत्ता साग्रह ॥ १६ ॥

जिति पुर सु सहसन सेनायुत, दुर्ग फोर्टबिलियम १ लिन्नी दुत ॥

पुर जिहिं रस चउ ससि १४६ मित पाये, जे अंग्रेज प्रबलपकराये १७

अति संकट कारा ते अटके, पे माये न तदपि तह पटके ॥

॥ ८ ॥ ६ ॥ १ प्रताप ॥ १० ॥ २ अमाव ॥ ११ ॥ ३ परम हिंसा  
४ दुःख ॥ १२ ॥ ५ शरमी (धूप) से कायर ६ चिल्ली ७ कुत्तों सहित ॥ १३ ॥ ८  
वहाँ का रहनेवाला ९ हाकिम ॥ १४ ॥ १० उसका फोर्ड सचिव ११ यह धूर्त  
अछूता धन लेकर भगा ॥ १५ ॥ १२ आग्रह सहित ॥ १६ ॥ १३ कलकत्ते के किले  
का नाम है ॥ १७ ॥ १४ बड़े सकड़े (तक) कैद घर में डाले, परन्तु उसमें नहीं

इहिँ\*संकट कौदी व्याकुल अति, गुन रवि १२३ मित दवि  
कौटगति ॥ १८ ॥

जियत बचे तेईस२३ प्रात जिम, मंदराज यँहँ सुँदि सुनी इम ॥  
तब कर्नेल छेत्र साहब तह, सज्जि लारन नदसत १०९ गोरनसह १९  
सत पंदह १५० मित अवर सिपाहन, हुत आयो अहिँतन हियदाहन  
आश्रम ससि बसु ससि १८१४ सक आगम, समर रच्यो सुँचि ४  
गिम्ह २ समागम ॥ २० ॥

कलकता जिति सु अरि काढे, बलि नवाब उत्तर दँल बाढे ॥  
सत अयुत ७०००० बल सह अंग्रेसर, सज्यो नवाब पैलासी संगर २१  
भिरत भज्यो सु कँल तोपन करि, लखो विजय अंग्रेज अतुल लरि  
अमल कंपनीको तादिनँ उत, देस बंगँ बिच कछुक जम्पो हुत २२  
॥ दोहा ॥

इंदगढाधिप देव इत, पाप कुमाय प्रमत्त ।

नृपके सोंदर दीप पँहँ, पठये जैपुर पत्त ॥ २३ ॥

यह उँदंत तिनमँ लिख्यो, अब डरि भूप उमेव ॥

अँप्पहिँ लैन अभात्यकों, भेजहिँ लखि हुत भेव ॥ २४ ॥

मनहु सनायें मति सुँमँति, रक्खहु धीरज रंच ॥

बिन्नति इम दक्खिन बिखँय, पठई नीति प्रपंच ॥ २५ ॥

कछु बँसु नजरि निवेदिकँ, लौ श्रीमंत निदेस ॥

अप्पहिँ इम करिहँ अँरँहिँ, छुदीनगर नरेस ॥ २६ ॥

जाये तो भी उसमें जवरी से डाले \* इस सकड़ाई में १ एक सौ तेईस अंगरेज  
कीड़ों की तरह दूबकर मरगये ॥ १८ ॥ २ प्रभात समय ३ खपर ॥ १९ ॥ ४ शत्रु-  
ओं के हृदय जखाने को ५ आपाठ वक्रुणपच, यह मरुभापा के मेम से गिम्ह  
हुआ है जिसका अर्थ पाप है और पाप का रंग श्याम है ॥ २० ॥ ७ सेना उत्तर  
दिशा में बढ़ाई ८ आने होकर ९ पैलासी नामक नगर में ॥ २१ ॥ १० काक रूपी  
तोपों से ११ उस दिन १२ बंगाले में ॥ २२ ॥ २३ ॥ ११ वृत्तान्त १४ आपकी ॥ २४ ॥  
१५ हे बुद्धिमान् १६ देश में ॥ २५ ॥ १७ घन १८ शीघ्र ही ॥ २६ ॥

भावी बसि ए भूपके, पाये दूतन पत्र ॥

नृप उमेद देवहिं गिन्यों, ए सुनि पाप \*अमल ॥

॥ गीतिका ॥

इत सकरी धृति १८१४ अब्द लगगत सेन दक्खिनतें चली ॥

रघुनाथ १ मालिक नन्ह सोदर ओ मलार २ बडे बली ॥

दल आत बुंदियके समीप नरेस सम्भुद जातभो ॥

महिमानि दे इक १ रति रक्खि रु देव पत्र दिखातभो ॥ २८ ॥

रघुनाथ पल्ल मलार संजुत बंचिकें नृपकें कहयो ॥

तुम ईस मारहु देवसिंहहि पाप पापिय ज्यो चहयो ॥

करि कुंच यों कहि दक्खिनी जयनैर छोरि नैय संचरे ॥

गढ भोज नामक बिंदि कोपन जाल तोपनके जरे ॥ २९ ॥

कछवाहके भट ते भजे सब भोमदुर्गहिं छोरिकें ॥

इन आन मंडिय अप्पनी ततकाल जो गढ तोरिकें ॥

पुनि टोंक पत्तन घेरि यत्तन देस जैपुरको दल्यो ॥

कछवाह माधव भूप सो सुनि आजिकों नहिं उज्जल्यो ॥ ३० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे साम ७ राशावुम्मे-  
दसिंहचरित्रे जयानैरनिमित्तजनकूदगिडतविजयसिंहदमद्रम्मल्लद  
शक १०००००० सहिताऽजमेरद्रङ्गमहाराष्ट्रनिवेदनसम्भरपुरविभाग  
रामसिंहाऽर्पणमेरता १ नागौर २ सन्ध्यासद्यनिर्माणप्रस्थितजनकू  
रूपनगरभारत्तेपणतत्पुरसामन्तसिंहीयकरावहादुरसिंहाऽर्थकृष्ण

\*पाप का पात्र ॥ २७ ॥ २८ ॥ १ मालिक, हो सो २ जयपुर की भूनि में गये  
॥ २९ ॥ ३ युद्ध को ४ नहीं बढा ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, वम्मेदसिंह के चरित्र  
में, जया के वैर के कारण विजयसिंह को दंड देकर जनकू का दंडके दश छात्र  
रुपयों सहित अजमेर नगर मरहठों की भेट करना और रामसिंह को घंट में  
सांभर पुर देना १ मेड़ता और नागौर में सिंधिया के सहान बनाकर गमन कर  
के जनकू का रूपनगर पर भार डालना और उस पुर को सामन्तसिंह कह

गढदापनबुन्दीदक्षिणायियासुससैन्यसन्ध्याभोजनकोटेशदुर्जनशाल्य  
मातुल्लानीमत्तसृत्युपापणसचिवाऽऽदितत्पट्टाऽनतेशाऽजितसिंहबन्धन  
तन्निमित्तसन्ध्यादत्तद्वादशलक्ष १२००००० कोटादण्डदम्समुद्धर  
शालाङ्कितकरतोयानादरषाहमारकपठानाऽहमदषाहकुमारिकागमन  
मथुरामहापुरीप्राण्णिमात्रप्राणवियोजनसोदरदीपसिंहसम्बन्धिदेवसिं  
हविरचितवर्गादूतबुन्दीन्द्रदर्शनसमल्लारनन्दाऽनुजरघुनाथरायोदगाग  
मनदर्शितदेवसिंहदलसम्भरेशतत्सन्मनननीतभौमदुर्गमद्वाराष्ट्रजयपु  
रदेशदलनं पंचचत्वारिंशो ४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः ॥ ३२६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नृप उमेद करउर नगर, इत गय अवसर पाय ॥

देव१ रु दोलतसिंह१ दुव२, इहाँ जैनक सुत आय ॥ १ ॥

नैति जुत लग्गे नृपति पप, बैठे मिसल बिचारि ॥

कहयो भूप तुम हित करत, स्वामि धरम अनुसारि ॥ २ ॥

इंदगडेश्वर देव इह, बुल्लयो अनृत बनाय ॥

करके बहादुरसिंह को कृष्णगढ देना १ दक्षिण की इच्छावाले सिन्धिया का  
सेना सहित बुन्दी में भोजन करना और कोटा के पति दुर्जनसाल का भांग  
(माजुम) में मत्त होकर मरना ३ सचिव आदि का उसका पट्ट (सिरपेच)  
“प्राचीन काल में पांच आमली के सरपेच को राज्य चिन्ह मानते थे” ३ सचिव  
आदि का उसका पट्ट भणता नगर के पति अजितसिंह के बांधना और उसके  
कारण सिन्धिया के दिये दंड के बराबर लाख रुपये कोटा से लेना ४ अटक नदी  
छांघ कर तादरशाह के मारनेवाले पठान अहमदशाह का आर्यावर्त में आकर  
मथुरा में प्राणी मात्र के प्राणों का वियोग करना (मारना) ५ छोटे सगे भाई  
दीपसिंहके सम्बन्धी देवसिंह के रचेहुए पत्रों को बुन्दी के पति का देखना और  
मछार व नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराय का उत्तर दिशा में आना ६ देवसिंह  
के पत्र दिखाकर बहुवाणों के पति का व्रतका सम्मान करना और भोमगढ  
को लेकर मरहठों की सेना का जयपुर के देश को पीसने का पैतालीसवां  
मयूख समाप्त हुआ ॥ ४५ ॥ और आदि से तीन सौ छहस १२६ मयूख हुए ॥

१ पिता और पुत्र ॥ १ ॥ २ नम्रता सहित ॥ २ ॥ ३ झूठ बोला

सेवक हम प्रभुके सकल, करैं हुकम मन काय ॥ ३ ॥

॥ मनहंसः ॥

सुनिकैं इतैक मरैस वे देल बुल्लिकैं,  
 उनको दये उनके लिखे सब खुल्लिकैं ॥  
 तिन्ह बंघि देव सिटाष नाँ कछु बुल्लये ॥  
 तव भूप कुप्पि निदेस मारनको दयो ॥ ४ ॥  
 रु कही दयो हय नाँहि सो हम भुल्लये ॥  
 तुमनै तथॉपि बिरोध बीज इते बये ॥  
 कहि यौ हन्यौ वह देव सोक संहारतैं ॥  
 पकरयो सु दोलतसिंह खगग निकारतैं ॥ ५ ॥  
 करि कैद बुंदिय दुग ताकैंहँ प्रेसयो ॥  
 अरु अप्प इंद्रगढारुय पत्तनमैं गयो ॥  
 निज आन मंडिय रक्खि हाकिम वहाँ भले ॥  
 उनके वंधूजन नैनवाँ सब मुकल्ले ॥ ६ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

नृपनै इम पत्तन इंद्रगढारुय लयो, रहिकैं कछु बासर कैतन गडि  
 दयो ॥  
 पुनि लैन परगनको पृतना पठई, भट ता बिच सुख्य सु तोक  
 भयो बिजई ॥ ७ ॥  
 ध्वजिनी यह बुंदिय आन रचंत फिरैं, भट कोउ न तासन सत्रु  
 दकालि भिरैं ॥  
 सुनिकैं यह खतउली पति आतभयो, नृपके दलपै सहसा रतिवा  
 ह दयो ॥ ८ ॥

वजि दक ललक वढी धमचक मची, निसमैं चउसटि ६४ अचानक

॥३॥ १ पत्र मंगाकर २ हुकम ॥४॥ पहिले ३ घोड़ा नहीं दिया था सो तो ४ तोभी  
 प्रशोक करते हुए को ॥ ५ ॥ ६ इन्द्रगढ नामक पुर में ७ स्त्रीजन ॥ ६ ॥ ८ कुछ  
 दिन रहकर ९ ध्वजा रोप दी १० सेना ॥ ७ ॥ ११ सेना १२ अचानक ॥ ८ ॥

आय नची ॥

तजि निंद रु तोकहु लै समसेर चलयो, सु मनौ बड़वानल सागरपै  
उमल्यो ॥ ९ ॥

उमल्यो जनु कन्ह कुसरथलके रनपै, पटक्यो वैपु सत्रुनकी सम  
सेरनपै ॥

इनुमंत किलंकहि लैन मलंगि बढयो, कपिलेश्वरके मुखतै जनु  
साप कढयो ॥ १० ॥

इम तोक रजोगुनमें छकि रंग रूप्यो, लखिकै तिहिं खंजवली  
दल जात लुप्यो ॥

बखतावर त्यों मुहुकम्म कुलीन बली, भट सम्मुह जाय रची धम  
चक्र भली ॥ ११ ॥

बिनु घोटक दोउनर की तरवारि बही, कबलों सु कही नृप राम  
न जात कही ॥

तरकै समसेर विदारि बकतरकौ, उछटै सिर तुटि निरंतर अंबरको  
फटि टोप गिरे बिखरे दसतान दिपै, लागि लोहित छुटि छुटन  
छांनि लिपै ॥

बरछीन कितेक बहावल बेध करै, कमनैत कितेक कलंबन मान  
हैं ॥ १३ ॥

तरवारि तैनुवनमांहिं दुरै दमकै, चुभि भद बलाहकै ज्यों जहाजिनो  
चलकै ॥

उछटै गल गाल रु भाल कपाल कटै, बिनु मस्तक केक कबंध  
कराल अटै ॥ १४ ॥

भिरिकै इम सहरि सत्रुनके भट के, बखतावर १ तोकर २ वनै बट-  
के बटके ॥

॥९॥ १ कन्वोज के २ शरीर को शङ्खों की तरवारों पर पटका ॥१०॥ ३ कुल में  
४ लाली की सेवा ५ कुजबाले ॥११॥ ६ बिना घोड़ों के ७ आकाश में ॥१२॥  
जखिर की ८ भूमि १० वायों से ॥१३॥ ११ कबलों में १२ बादल के मेघ में १३ बिजुली

राजाका इंद्रगढ पर किले आदिवनाना] ससमराशि-षट्चत्वारिंशमयूख (३६६१)

गिरितैं दुव२ बुंदियकी पृतना बिगरी, पहुँची भजि संभर भूपति पै  
सिगरी ॥ १५ ॥

पुनि हड्डनके पति सेन घनी पठई, हुतही तिहिँ बुंदिय आन फिरा  
य दई ॥

कर लैन लगे फिरि हाकिम बुंदियके, हठ मोघ भये सब सत्रुन  
के हियके ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

अनघोरा१ अरु ढीपरी२, लै रु अमल निज कीन ॥

ग्राम इंद्रगढके सकल, किय इत्यादि अधीन ॥ १७ ॥

ग्राम ढीपरी माँहिँ गढ१, बंध्यो नृप रन बट्ट ॥

त्योहिँ इंद्रगढ अद्रिपर, रच्यो दुर्ग चतु४रँदृ२ ॥ १८ ॥

कृत्रिम इक१ आयत कियउ, महलन मध्य निवान ॥

बलि बिम्बासनि देविगिरि, सुभग रचे सोपान४ ॥ १९ ॥

सँदानित पुनि देव सुत, दोलतसिंह जु कीन ॥

तारागढ तँहँ असु तजे, आमय कछुक अधीन ॥ २० ॥

नृपति पठाई नैनवा, याकी मात रु नारि ॥

याकै तँहँ हुव पुत्र इक१, सोहु मरयो गँद धारि ॥ २१ ॥

हुत नृप बुँल्लयो देवको, भक्तराम तब आत ॥

दयो कृपाकरि इंद्रगढ, जाहि अब्द त्रय जात ॥ २२ ॥

कछु यह हम भावी कह्यो, बलि क्रमतैं अब बत ॥

इम नृप लीनों इंद्रगढ, घलि घँत पर घत ॥ २३ ॥

वेद इंद्र धृति१८१४ अब्द बिच, माधव माधव मास ॥

खतोली पतिहू दयो, इम नृप दल सिर त्रास ॥ २४ ॥

१ सेना ॥ १५ ॥ २ व्यर्थ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पर्वत पर ४ चौ बुरजा  
(चार बुरजवाला) ॥ १८ ॥ ५ यनाया हुआ मोटा १ पगथिये (सीढिये) ॥ १९ ॥ ७ कैद  
८ प्राण ९ रोग के अधीन ॥ २० ॥ १० रोग ॥ २१ ॥ ११ शीघ्र बुलाया ॥ २२ ॥  
१३ घात पर घात ॥ २३ ॥ १४ सन्त क्रतु १४ वैशाख मास में १५ सेना पर ॥ २४ ॥

तोक महासिंहोत तँहँ, जैतगढाधिप जोध ॥

तिल तिल तेगन तुट्यो, रचि बहु सत्रुन रोध ॥ २५ ॥

अपराधीकोँ मारि इम, नृप आयो निज नैर ॥

जैपुर पर मल्लार इत, बंध्यो दुद्धर बैर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मेद-  
सिंहचरित्रे बुन्दीशकरउरदंगगमनसमाहूतदर्शिततत्पत्रेन्द्रगढेशदेव-  
सिंहमारणातदीयतनुजदोलतसिंहदुर्गकाराक्षेपणातत्पत्रीजननयन -  
पुरप्रेषणरावराजेन्द्रगढगमनतद्भूमिशासनाऽर्थससैन्यतोकसिंहप्रेष-  
णाखतोलीशतत्सौप्तिकरचनतोकसिंहवखतावरसिंहमरणाबुन्दीपुत-  
नापलायनपुनःप्रेषितभटदेवसिंहदेशस्वीकरणाढीपरी १ इन्द्रगढ २ च-  
तुर्दुर्गनिपानाऽऽदिविन्ध्यवासिनीगिरिसोपानादिसमनुष्ठानसन्दी-  
नितदोलतसिंहकाराकलेवरहानजाततत्पुत्रनयनपुरमरणावराड्बु-  
न्द्याऽऽगमनमल्लारजयपुरबैरबन्धनं षट्चत्वारिंशो ४६ मयूखः ॥४६॥  
आदितः ॥ ३२७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

१ जैतगढ का पति ॥ २५ ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में  
बुन्दी के पति का करवर नगर में जाना, मंगायेहुए उसके पत्र दिनाकर इन्द्र  
गढ के पति देवसिंह को मारना १ उसके पुत्र दोलतसिंह को गढ में कैद करना  
और उसकी स्त्रियों को नैणवा पुर में भेजना २ रावराजा का इन्द्रगढ जाना  
और उसकी भूमि को आधीन करने के अर्थ अपनी सेना सहित तोकसिंह  
को भेजना ३ खातोली के पति का उस पर रतिबाह देना और तोकसिंह व  
वखतावरसिंह का मरना ४ बुन्दी की सेना का भागना और फिर भेजेहुए  
धीरों का देवसिंह के देश को लेना, ढीपरी और इन्द्रगढ में चार बुरजोंवाला  
गढ, जलाशय, विन्ध्यवासिनी के पर्वत पर सिंढिये आदि करना ४ कैद किये  
हुए दोलतसिंह का कैद में मरना और उसके जन्मेहुए पुत्र का नैणवानगर में  
मरना ५ रावराजा का बुन्दी आना और मल्लार का जयपुर से बैर करने का  
छियालीखवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और आदि से तीन सौ सत्तराईस  
मयूख हुए ॥३२७॥



## ॥ पट्पात् ॥

अकखी माधव अगग हमहु जैपुरपति व्हैहैं ॥  
 तबहि रामपुर तुमहिं दुवैर हि हुलकरपति दैहैं ॥  
 बरस सत्त७ गय बित्ति द्रंगर कूरम नहि दिन्नै ॥  
 यातैं हुलकर सज्ज कटक जैपुर पर किन्नै ॥  
 माधव नरैस सुनि भीत मन दम्भ लकख ग्यारह११००००००दये  
 बनि नम्र परगान जुत बहुरि ए दुवैर पत्तन अप्पये ॥

## ॥ दोहा ॥

पत्तन चन्द्राउतनको, रामपुरा१ सह देस ॥  
 जो लित्रों जयासिंह सो, किन्नौ हुलकर पेस ॥ २ ॥  
 टोंक नगरके प्रांत ढिग, दूजो२ रामपुरा१ सु ॥  
 कहियत रायबसंतको, वह दिन्नौ डरि आसु ॥ ३ ॥  
 दुवैर पुर जनपद सहित दै, तब मेढयो इम त्रास ॥  
 दक्खिनको दल टारि दिय, माधव माधव मास ॥४॥

## ॥ हरिगीतम् ॥

सक बान चन्द्र भुजंग भू १८१५जयनैर यों जनकू बढयो ॥  
 सन्ध्या जया सुत सेन सज्जि रु देस दक्खिनतैं चढयो ॥  
 गोदावरी नदि लंघि त्यों अवरंग पत्तन लंघयो ॥  
 बुरहान पत्तन लंघि बेग मिलान मेकलजा दयो ॥ ५ ॥  
 ओंकार ईसहिं पुज्जि यों जनकू अवंतिय उत्तरयो ॥  
 गढ भैंसरोर मुकाम दै दरकुंच हंकत जो परयो ॥  
 सुनि एह बुंदिय भूप तत्थहि जायकैं हित मंडयो ॥  
 महिमानी जिम्मत जाहु यों कहि नैर लावनको भयो ॥६॥  
 तैंहैं इंद्रगढपति देवकी तिय पत्र विन्नति सुकली ॥

अरु यों लिखी तुम अद्व छोनिय लेहु पिकैखहु जो भली ॥  
 तिहिं बंचिकैं जनकू कहे कटुबैन बुंदिय भूपसों ॥  
 हमरो सहाय बनायकैं तुम निक्खसे दुख कूपसों ॥ ७ ॥  
 हमरो निदेस लयैं विनां तुम ईष्ट अप्पन नां करो ॥  
 उनकों ब अप्पहु इंदगढ निज राज्य प्रभुपन जो धरो ॥  
 सुनि हहु बुल्लिय पेसवा तुमरे जु प्रानन ईसहै ॥  
 तिनकों सुनाय करी कही सुनि रावरी इत रीसहै ॥ ८ ॥  
 करनों तुम्हैं हितमाहिं अहितहि तो ब हम घर जायहैं ॥  
 तुम सज्जि आवहु जंगकों अब हहु हव्य दिखायहैं ॥  
 आयो यहै कहि भूप बुंदिय साज संगरके भये ॥  
 सुनि यों मलार<sup>१</sup> रु नन्ह भ्रात<sup>२</sup> निवारि दोउन<sup>३</sup>कों दये ॥  
 जनकू जया सुत कुंच कैं तव पत्त जैपुर बेगही ॥  
 कछु दम्म माधव दंड दै डरि नम्रता गति के गही ॥  
 पुनि सुक्रतालन जीवखाँ सन जायकैं जनकू लरयो ॥  
 नहिं तथ्य मिच्छ रहिलसों मरहहु भार सहो परयो ॥ १० ॥  
 लय<sup>३</sup> अब्दसों रनथंभ गिरि इत फोज दक्खिनकी लरैं ॥  
 बिच साहके भट सज्ज ते नहिं दुर्ग छोरन अदरैं ॥  
 लरैतें परंतु छतीस<sup>३६</sup> मास विताय व्याकुल वे भये ॥  
 खंडारि जैपुर दुर्ग ही डिग तथ्य कैगगर पेसये ॥ ११ ॥  
 कछवाह सेवक साहको इम ताहि हम गढ अप्पिहैं ॥  
 मरिजाहिं पै मरहहुकों रनथंभमैं नहिं थप्पिहैं ॥  
 तुम छन्न आवहुँ रत्तिमैं हम दुर्गते कडि जायहैं ॥  
 पचरंग केतन कुम्म भूपतिकोहि अथ्य रुपायहैं ॥ १२ ॥

१ आधी भूमि २ अच्छी देखो सो लो ॥ १॥ ३ अपना चाहा हुआ (भला) ४ अपने राज्य का स्वामीपना चाहते हो तो ॥ ८ ॥ १० ॥ ५ पत्र भेजा ॥ ११ ॥ ६ कछवाहा बादशाह का सेवक है इस कारण ७ रात्रि में छुप कर आओ ८ ध्वजा ॥ १२ ॥

रतथंभमंजैपुरकाअधिकारहोना] सप्तमराशि-सप्तचत्वारिंशमयूख (३६६५)

खंडारि मुख्य अनोपसिंह हुतो पचेवरिको धनी ॥  
खंगार बंसिय बंचि जो दैल रत्ति गो सजिके अनै ॥  
लखि साह सेवक ताहि तब रनथंभ अंतरं लैगये ॥  
तिहिं भारि खगन नन्ह बीर भजाय बाहिरके दये ॥ १३ ॥  
कढि साहके भट बगं दिल्लिय जाय छैत निवेदयो ॥  
इम बान भू धृति १८१५ पोस सित रनथंभ कूरमकै गयो ॥  
संभार खान १ रु पान २ के तैंहें कुम्भ संचित के करे ॥  
बारूद १ सीसक २ बित्त ३ रक्खि तड़ाग जीरणा उबरे ॥ १४ ॥  
॥ दोहा ॥

बहुरि दुग्ग रनथंभ ढिग, जयपुर छवि अनुसार ॥  
निज नामक माधव नगर, रच्यो विविध विसतार १५ ॥  
हुलकर पैंहें पठ्यो हुकम, सुनत एह श्रीमंत ॥  
दुर्ग लेहु रनथंभ हुंत, अब करि जैपुर अंत ॥ १६ ॥  
तेंते बह पठ्यो तबहि, दै हुलकर दैल संग ॥  
गंगाधर दरकुंच गति, जित्तन आयो जंग ॥ १७ ॥  
जनपद नागरचाल जिहिं, कैंमि पत्तन कक्कोर ॥  
कीनों जैपुर कटकसों, जुद तुमुल बरजोर ॥ १८ ॥  
॥ षट्पात ॥

अतिजव हयन उठाय धरयो पैरदल गंगाधर ॥  
मंडयो आयुध मेह दुरयो बढि खेह दिवाँकर ॥  
खुंदि पहुमि हय खुरन दुरन लग्गे सागर जल ॥  
लग्गे पैंवय गुरन मुरन अतलादि महीतल ॥  
काहुको भयो नहिं जय कलहैं पै बहु भट कटि कटि परिग

१ खंगारोत १ पत्र ३ सेना सजकर ४ भीतर ॥ १३ ॥ ५ यह वृत्तान्त (हाल) अरज कि या  
६ सामग्री ॥ १४ ॥ ७ सहश ॥ १५ ॥ ८ शीघ्र ॥ १६ ॥ ४ सेना ॥ १७ ॥ १० देश ११  
जाकर ॥ १८ ॥ १२ शत्रु की सेना में १३ सूर्य १४ पर्वत १५ युद्ध में

इम पहुमि लुत्थि छादित मनहु बनिजकार टंडा ढरिग ॥१९॥

॥ दोहा ॥

सुभट मरे रन पंचसत ५००, इत उतके अनुरत्त ॥

घाय दुसह लग्गे घने, गंगाधरके गैत ॥ २० ॥

जैपुर बड उमराव जुग२, परे भिन्न तजि प्रान ॥

सत्पासी ८७ तिनके सुभट, मरे ईतर छकि मान ॥ २१ ॥

जोधसिंह १ अभिधान इक १ नाथाउत कछवाह ॥

मिसल दाहिनीको मुकुट, चोमू पत्तन नाह ॥ २२ ॥

बगरूपति दूजोर बहुरि, कूरम चतुरभुजोत ॥

रन गुलावसिंहहु रझो, बाम मिसल उद्योत ॥ २३ ॥

ए२ उमरावन अग्रणी, जैपुरके गिरि जात ॥

भये न सम्मुह इतर भट, दुर्मन भाव दिखात ॥ २४ ॥

इत तंते गंगाधरहु, घन खगल सहि घाय ॥

तव मुररघो दक्खिन तरफ, करेन अनारमय काय ॥ २५ ॥

समा अष्टि धृति १८१६ प्रमित सैंक, लगगत ऋतु हेमंत ॥

अगहनमें ए कुम्म दुव२, हुव गतमान लरंत ॥ २६ ॥

इत गंगारधकाँ मुरघो, सुनि हुलकर मल्लार ॥

जैपुर पर हंकयो जबहि, पहु रचि कटक प्रसार ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दक्खिनधरको थैम चढयो हुलकर जैपुरपर ॥

दरकुंचन कारि दोर अँवनि दब्बत डारत डर ॥

जैनपद नागरचाल प्रथम बिंठयो उनियारा ॥

भयो चकित भोगीसँ धरनि फुटत हय धारा ॥

मानों १ बनजारों को याद रख पड़ी है ॥ १६ ॥ २ प्रीति युक्त देशरीर में ॥ २० ॥ ४ अन्य  
५ इज्जत में छक कर ॥ २१ ॥ ६ नाम ॥ २२ ॥ २३ ॥ ७ उदासीनता ॥ २४ ॥ ८  
शरीर को नैरोग्य करने को ॥ २५ ॥ ९ सम्यत १० विक्रम के शक्त का ॥ २६ ॥  
११ प्रभु ॥ २७ ॥ १२ लुमि १३ नागरचाल देश में १४ शेषनाग १५ घोड़ों की दौड़ से

सिरदार सिंह \* नारव नमित असयन जोरि लग्गो पयन ॥  
 तिहिँ दंडि गमन अगँ कियउ हुलकर लागि जैपुर अयन २८  
 कुसथल मृत फतमल तास हुव रतन सिंह सुत ॥  
 साको इक लघुपुत्र नाम बिक्रम साहस जुत ॥  
 जगत सिंह रठोर हितुँ सहसा रचि संगर ॥  
 छिन्नि नगर बरवाड़ भयो पति अप्प बंधि घर ॥  
 इहिँ हेतु आय मल्लार इत तोपन ताप चलायकँ ॥  
 रठोर अमल पच्छो रचिय गो कछवाह पलायकँ ॥ २९ ॥  
 ॥ दोहा ॥

दक्खिन १ जैपुर २ नैर सुनि, जगत सिंह अभिधान ॥  
 सुत कबंध सिव सिंह को, बैठो लौ निज थान ॥ ३० ॥  
 तब कूरम रतनेस सुत, राजा उत करि रारि ॥  
 छिन्नि नगर बरवाड़ लिय, दिय रठोर निकाशि ॥ ३१ ॥  
 यातँ हुलकर भीर कगि, वह कछवाह भजाय ॥  
 जगत सिंह बरवाड़ पुर, बहुरि दयो बैठाय ॥ ३२ ॥  
 सक रस ससि बसु ससि १८१६ बरस, आर्म बल चँछ सहस्य ॥  
 हुलकर सन बुंदीसहू, गो कछु करन रहस्य ॥ ३३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेद  
 सिंहचरित्रे माधव सिंह पूर्वप्रतिजात रामपुरद्वय २ मल्लारोपायनीकरण  
 सन्ध्याजनकूदग्निगमनसम्मुखप्रस्थितरावराट् तन्मिलनप्राप्तदेवसिं-  
 हपत्नीविज्ञप्तिपत्रसन्ध्याहृन्दकुत्सनतत्कुदबुन्द्यागतबुन्दीशसमिदीह

\* नरुका † हाथ जोड़ कर १ मार्ग ॥ २८ ॥ २ से ३ इच्छ कारण ४  
 आग गया ॥ २९ ॥ ५ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ६ मास ७ सुदि ८ पौष ॥ ३३ ॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेद सिंह के चरित्र  
 में, माधव सिंह का पहिले के दिवेहुए दोनों रामपुरों को मल्लार की भेट कर-  
 ना और जनकू नामक सिंधिया का उत्तर दिशा में आना १ सम्मुख जाकर राव  
 राजा का उस से मिलना और देव सिंह की स्त्री की अरजी पाकर सिन्धिया का

नश्रुतैतद्रघुनाथराय १ मल्लार २ युयुत्सुद्वय २ निवारणानीतजयपुरद  
मद्रम्मजनकूशुकताल युद्धविजयनरुहिल्लनजीवखानपलायनदिल्लीश  
हुर्गेशदुर्गरास्थम्भकूर्मराजनिवेदनजयपुरदक्षिणाविरोधवर्धनश्रीम  
न्तशासितहुलकरगङ्गाधराऽऽदिपुरतःप्रेषणातज्जैपुरसैन्यसमायोधन-  
माधवसिंहमुख्यसुभटनाथाउतयोधसिंह १ चतुर्भुजोतगुलाबसिंहा २  
ऽदिमरणक्षतक्षुण्णगंगाधरदक्षिणाऽदिगमनश्रुतैतहुलकराऽगमनत  
न्नारवसरदारसिंहदमनराजाउत्तविक्रमोद्धृतवरवाड़पुररठोड़जगतसिंहा  
ऽऽर्पणासम्मतमल्लारमन्त्रणाबुंदीन्द्रवरवाड़पूर्णमनं सप्तचत्वारिंशोऽ७  
मयूखः ॥ ४७ ॥ आदितः ॥ ३२८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पञ्चटिका ॥

लिय अजितसिंह १ पट्टप कुमार, लघु पुत्र बहादुर २ बहुरि लार ॥  
बुंदीस मिल्यो बरवाड़ जाय, सम्मुद्ध मल्लार आयो सुभाय ॥ १ ॥  
करि उभय २ रहे दिन दुव २ मुकाम, तँहँ सुनिय सुद्धि पंजाव धाम ॥

हाडों के पति को धमकाना १ उससे कुछ होकर बुन्दी में आये बुन्दी के पति  
को युद्ध की इच्छावाला सुनकर रघुनाथराव और मल्लार का युद्ध की इच्छा  
वाले उन दोनों को रोकना २ जयपुर से दंड के रुपये लेकर जनकू का  
शुकताल के युद्ध में विजय करना और रुहिल्ला नजीवखान का भागना ४  
दिल्ली के बादशाह के गढ़ के पति कारणतभैवरको कुछवाह राजा (माधवसिंह)  
को देना और जयपुर और दक्षिण का विरोध बढ़ना ५ श्रीमन्त के हुक्म  
पाये हुए मल्लार का गंगाधर आदि को आगे भेजना और उसका जयपुर की  
सेना से युद्ध करना ६ माधवसिंह के मुख्य सुभट (उमराव) नाथाउत योधासिंह  
और चतुर्भुजोत गुलाबसिंह आदि का भरना और घावों से घीण गंगाधर का  
दक्षिण आदि में जाना ७ यह सुनकर हुलकर का आना और उसका नरुके  
सरदारसिंह को दंड देना ८ राजाउत विक्रमसिंहके लिये बरवाड़ पुर को राठोड़  
जगतसिंह को देने और मल्लार से सलाह करने को बुन्दीन्द्र का बरवाड़ जाने  
का सैतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४७ ॥ और आदि से तीन सौ अठ्ठाईस  
मयूख हुए ॥ ३२८ ॥

१ श्रेष्ठ रीति से ॥ १ ॥ २ खबर

मल्लारकापंजाबसेदिल्लीआना] सप्तमराशि-अष्टचत्वारिंशमयूख (१६६६)

सजि सेन खानअहमद पठान, उल्लंघि अटक आयो \*अमान॥२॥  
पंजाब अमल अप्पन जमाय, दक्खिनके हाकिम दिय उठाय ॥  
यह सुनत किन्न हुलकर प्रयान, चढि संग भयो नृप चाहवान॥३॥  
सिसु जानि सिखावन सुतन नीति, लायो सु दिखावन राजनीति  
वय सप्त७ बरस जेठो कुमार, लघु पुत्र अब्द चउ४ बेस धारा॥४॥  
तिनको पुनि बुंदिय सिक्ख दिन, मल्लार संग नृप गमन किन्न ॥  
मल्लार चट्सू आदि नैर, लुट्टे जैपुरके बिरचि बैर ॥ ५ ॥  
पंजाब अमल मंडत पठान, जयनैर छोरि किय उत प्रयान ॥  
इक बंधु महासिंहोत तत्थ, किय तुपक आरि निस बिच अनत्था॥६॥  
सुहरनिपति दसरथसिंह सुप्त, किन्नो प्रयागसुत प्रान लुप्त ॥  
खोज्यो वह मारक सुनत भूप, सु मिल्यो न भज्यो परित्तासकूप७  
करि तदनु हड्ड१ हुलकर२ प्रयान, पुर कोटपुतली दिय मिलान ॥  
किय सेन पठानन सोस सज्ज, श्रीमंत बिजय रन करन कज्ज ॥८॥  
गाजुदीखाँ इत ठै हराम, मारयो प्रभु आलमगीर नाम ॥  
यह सुनत मुलक पंजाब छोरि, इत नादर्रदन आयो सु दोरि ॥ ९ ॥  
तब त्रास निजामनमुलक पाय, मरदद सकल बुल्ले सहाय ॥  
जित तित हुतो सु दक्खिन अनीक, सब दिल्लिय आयो चहिसमोके  
उततै सु खानअहमद पठान, आयो सबेग दिल्लिय अमान ॥  
सुनि हुलकर अक्खिय नृपहिँ एह, भुव करत रंग तुम जाहुगेह११  
गो बुंदिय तब संभर नृपाल, आयो मलार दिल्लिय उताल ॥  
संकरदा पतन लट्ठ ठानि, सज्ज्यो पठान सन जंग जानि ॥ १२ ॥

\* प्रमाण रहित ॥ २ ॥ ३ ॥ १ वालक जानकर अपने पुत्रों को नीति  
सिखाने के लिये ॥४॥ ५ ॥ १ जयपुर को छोड़कर २ भाई ३ अनर्थ ॥ ६ ॥  
४ सोतेहुए को ५ मारनेवाले को ॥ ७ ॥ ६ जिसपीछे ७ मुकाम किये ॥ ८ ॥  
८ नादरशाह को मारनेवाला ॥ ९ ॥ ९ यह पदवी है १० सेना ११ युद्ध  
॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

जनकू३ हु जयासुत सुनत आय, दत्ता३ हु सैन आयो सजाय ॥  
 संभासुत४ आयो बहुरि सूर, \*जव मंडि लरन संध्या जरूर ॥ १३ ॥  
 अरु सठ कलीज निज धर्म हीन, आलीगोहर दिल्लीस कीन ॥  
 दै पुनि मरहठन कोटि १००००००० दैम्म, किय तिन सहाय निज  
 बिजय कैम्म ॥ १४ ॥

दिल्ली दल१ दक्खिन दल२दुरंत, मिलि इक१ सज्यो अब बिरनिमंत  
 वज्जिग निसान जिततित बिसेस, सज्जिग प्रवीर दल दक्खि देस१५  
 हुव बिबिध तोप सज्जित हरोल, लहरात धुजा फहरात लोल ॥  
 मृगराजमुखी कति लंबमान, बाराहमुखी कति बर बिधान ॥ १६ ॥  
 बिखंधारमुखी कति तैति बिसाल, करिराज मुखी कति अति  
 कराल ॥

सिंदूर लैपन लोहित मुहात, दगि प्रलय काल ततखिन दिखात१७  
 कति कांत लोहमय पृथुलकाय, सुभ रीति सुल्वमय कति सुहाय  
 किय सबल धातुमय सज्ज केक, इम पुनि गुबार संचय अनेक१८  
 आरूढ निर्डूर चरखन असेस, बिकराल ज्वाल जैनु काल बेस ॥  
 अंगार बमत खिन खिन अपार, हुव सज्ज छार गढ करनहारा१९  
 मिलि दगत दिसा दैवत मिटाय, सैतकोटि नाद सज्जित सिटाय ॥  
 दुवसत २०० हरोल जिन्ह बेलदार, कुदाल हथ मग सुंदकार२०  
 सत दुव२०० कुठारधारक सु अगग, मेटत तरु रोधैकर चत मगग ॥

\*वेग रचकरा ११। मूर्ख कलीजखा १ दिल्ली का पति किया २ रूपये ३ काम ॥ १४।  
 ४ दूर है अन्त जिसका ५ मंतनगारे ॥ १५ ॥ ७ चपल दसिहमुखी ९ लंबे प्रमाणवाली  
 ॥ १६ ॥ १० सर्पमुखी ११ लंबी पंक्तिवाली १२ हस्ती के मुखवाली १३ सिंदूर से  
 जो भायमान लाल मुखवाली ॥ १७ ॥ १४ सुन्दर लोहे की १५ घड़े शरीरवाली  
 १६ तांघे की १७ तोप विशेष (गुबारा) ॥ १८ ॥ १९ कठोर चरखों पर १६ मानों  
 ॥ १९ ॥ २० दिक्पालों सहित दिशाओं को मिटाती है; अथवा दिशाओं की मूर्ति  
 को मिटाती है २१ घज्र का शब्द २२ मार्ग साफ करनेवाले ॥ २० ॥ २३ रोकन



ते तोप खिनहु अटकन न देत, लैजात \*अद्रिसिर†मलप लेता॥२१॥  
भुव धसत चक्र चरखन भयार, त्रिसती३०० इम तोपन हुव तयार  
दुवर दलन लक्ख १००००० घोटक दूरुह, सत्वर फिराक भति  
भति समूह ॥ २२ ॥

जरजाल सज्ज पँखराल जीन, नखराल चाल रँय फाल लीन ॥  
नतगोधि चपल चपल समान, केतक कलीन उपमान कान॥२३॥  
खुर रजतपत्त कृत नटन खेल, मनु ससि कलंक खुरतार मेल ॥  
प्रतिक्रमन खेह उठत अनूप, धरनी कि रच्छकन देत धूप ॥ २४ ॥  
जे वैद्य पँराजय रोग जाल, अरु विजय सिद्धि साधन उताल ॥  
अरि पवन पिक्खि जिच्यो असेस, पँयालहु जिन सेवत यात्वबेस॥२५॥  
धुनि सीस लखत जिन फांद धाप, प्राकार रचन छोरत धँराप ॥  
लाखि जिन मलंग तिरछी लजंत, कुलटा कटाच्छ डारन तजंत॥२६॥

वाले घुत्तों को \* पर्वत के ऊपर † कूदते हुए ॥ २१ ॥ ‡ भयङ्कर दोनों सेनाओं  
में १ कटिनाई से तर्कना में आवें ऐसे लाख घोड़े तयार हुए जिन घोड़ों  
के समूह शीघ्रता के साथ २ भांति भांति से फिरते हैं ॥ २२ ॥ १ जरी की  
जालियों और ४ पावरोंवाले जीनों से सजे हुए नखरावाली चाल में और  
५ वेग के साथ फांदने में लीन ६ झुके हुए ललाटवाले और ७ विजली के  
समान चपल और केतकी की कली के समान कानवाले ॥ २३ ॥ ८ चांदी के  
पत्रोंवाले खुरों से नाचने का खेल करते हुए और जिनके खुरों से खुरताल का  
मेल है सो मानों ९ चंद्रमा से कलंक का अथवा राहु का मेल है १० उन घोड़ों के  
चलने से उपमा रहित खेह उठती है सो मानों भूमि अपने ११ रत्नकों (घोड़ों)  
को धूप देती है ॥ २४ ॥ जे (घोड़े) १२ पराजय (हार) रूपी रोग समूह के वैद्य  
और विजय रूपी सिद्धि के शीघ्र साधनेवाले १३ शत्रु देखकर सम्पूर्ण पवन  
को जिन्होंने विजय किया है १४ सर्प भी घाल (केसवाली) के बेस में जिन  
की सेवा करते हैं ॥२५॥ १५ मस्तक धुनकर जिसको देखते हैं उसीको दौड़कर  
फांद जाते हैं १७ वे भूमि के पति (घोड़े) १६ कोट की रचना को छोड़कर फांद  
जाते हैं जिनकी मलंग देखकर कुलटा ली तिरछी कटाच्छ डालने में लज्जित  
होकर छोड़ती है अर्थात् तिरछी कटाच्छ की शीघ्रता छोड़ती है ॥ २६ ॥

छेकत दयाल उड्डान आनि, जावत सहयो न भुव कंप जानि ॥  
 कसि कसि अराल कोदंड कंध, व्यर्थी करंत ज्या जैरबंध ॥२०॥  
 बिच ग्रीव हेम शृंगल विराजि, सोदत सुहि लैस्तक छबिहिं साजि  
 मिलि यालन जूग लंबमान, बहु भल्ल अजब सुहि इक १ वान २८  
 गुन होत सिथिल ज्यो गति गहीर, त्योत्योहि खिचत यह जानि  
 तीर ॥

हृद छबि कलाप पृथु बालहस्त, सोदत हय धन्वी इम समस्त २९  
 वर नेत्रेच्छादिनी दिय बखानि, जैवनी जजि सालिग्राम जानि ॥  
 वजि प्रोथेन प्रविसत गंधैवाह, दुरिजात पगाजित जनु सैदाह ॥३०॥  
 स्वचरन समेटि मलपत सुदात, जनु टारि मेदिनी मर्मजात ॥  
 आवर्त फिरत कति अति उताल, जलनिधि अनीक सुहि भ्रमन जाल

१ भूमि का कंप (धूजना) सहन नहीं होने के कारण मानों दया करके उड़ने जाते हैं, धनुष रूपी २ टेढ़े कंधे को खींच खींच कर जैरबंध रूपी ३ प्रत्यंगा को व्यर्थ करते हैं ॥ २७ ॥ गरदन के बीच में ४ सुवर्ण की सांकल शोभा देती है सोही उस धनुष की ५ मूठ शोभायमान है और याल का लंबा ६ जूड़ा (केसपास) है सो बहुत भालोंवाला अपूर्व वाण है ॥ २८ ॥ गंभीर गति में ज्यों ज्यों ७ प्रत्यंगा ढीली होती जाती है त्यों त्यों ही ८ मानों वह तीर खिचता है ९ बड़ा बालछा (पूंछ) है सो ही उस धनुष का पूर्ण शोभावाला १० भाधा है ११ इस प्रकार के धनुषवाले सब वे घोड़े शोभायमान हैं ॥ २९ ॥ प्रशंसा करके ओष्ठ १२ जाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) "यथार्थमें इस का नाम अंधारी है परन्तु विरुद्ध लक्षणासे लौकिक में उजाली कहते हैं" लगाई है सो मानों सालिग्राम की पूजा में १३ कनात लगाई है, उन घोड़ों के १४ फुरणों (नासिकाओं) में घुसकर १५ पवन यजता है सो मानों वह पवन पराजित हो कर १६ दाह युक्त छिपता है "यहां वजने के कारण सदाह लिखा है अर्थात् कृता हृद्या छिपता है" ॥३०॥ १७ अपने चरणों को सिमेदकर झलांग लेंते हुए ऐसे शोभा देते हैं मानों १८ भूमि के मर्म स्थानों को चचाकर जाते हैं कि कहीं इस के चोट नहीं लगजावे कितने ही घोड़े शीघ्रता पूर्वक १९ गोलकुंडा (चक्राकार) फिरते हैं सो ही २० सेना रूपी समुद्र में अमियों का समूह है ॥ ३१ ॥

पलटत दराज गति बाज पूर, जम जनक दर्प दारक जरूर ॥  
 आहत बपु रोमन छवि अखर्व, सेवत कि चित्त रय पढन सर्व ॥३२॥  
 दिल्ली१रु सितारा२मिलि दुरुह, जिन किय तयार इम वाजि जूह  
 सतदोष२००द्विर्द किय सज्ज संग, अँदुक प्रलंब अँचत अभंग ३३  
 बरिधि जिहाज जिम लगत बात, हंके इम पयपय भुव हलात ॥  
 गतिमंद भरत मद अवर गात, बिजयाऽभिसिद्ध कटकाहिबिनात  
 पृथुकुंभ सिरी करि पिहित पीन, कंचुकि उरोज जनु थगित कीन  
 रन नगर उच्च अँटाल रूप, अतिसय बिसाल उच्छ्रय अनूप ॥३५॥  
 दुव२कुंभ कुंभ सिखरक दिपंत, मंजुलध्वज लंबित केतुमंत ॥  
 जिन रक्खि बाम दक्खिन जरूर, सँतहि सिखाय टरिजात सूर ३६  
 घुम्मत घुमंडि घन सघन घोर, जावत मिटात पँवमान जोर ॥  
 सुंडा फटकारत नभ सुहात, जिहिँ त्रास संकि सिसुमार जात ३७  
 भननंकि भ्रमर कुंभन भ्रमंत, किय पँत्रभंगि तिय कुच कि कंत ॥

पूर्ण लंबी गति से घाड़े पलटते हैं सो अवश्य १ यमराज के पिता का घमंड  
 मिटाते हैं २शरीर के केशों की भ्रमरियों की ३बड़ी शोभा है सो मानों सब के  
 कथन में वे चित्त के वेग को धारण करती है अर्थात् चित्त का वेग घोड़े से  
 आगे नहीं बढ़ता इसीकारण भ्रमरी रूप से उसी शरीर में गोलाकार फिरता  
 है ॥ ३२ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे ५ घोड़ों का समूह ६ हाथी ७  
 लंबी जंजीरें ॥ ३३ ॥ पवन लगने से ८ जैसे समुद्र में जहाज हिलै तैसे पग पग  
 प्रति भूमि को हिलाते हुए चले ९ अधम अथवा पिछले शरीर से मंद मंद  
 मद (जल) भरता है सो मानों सेना का १० विजय होने का अभिप्रेक करता  
 है ॥ ३४ ॥ ११ बड़े और पुष्ट कुंभस्थलों को सिरी (मस्तक भूषण) से १२ ढके  
 हैं सो मानों कांचली से कुचोंको १३ढके हैं युद्ध रूपी नगरकी १४दुरजें अत्यन्त  
 लंबी और उपमा रहित १५ऊंची हैं ॥३५॥ दोनों कुंभ फलक हैं सो तो सुमेरु  
 पर्वतके शिखर हैं और सुंदर १६ध्वजा है सो ही उसके ऊपर का केतुमान नाम-  
 क खंड विशेष है १७सारथिको सिखाकर १८सूर्य वायां दहिना रखकर टलजाता  
 है ॥३६॥ १९पवनका ॥३७॥ २०मानों पति ने स्त्री के कुचों पर कस्तूरी आदि लेपन

पच्छिम हटात बमथून पूर, गज्जत गुमैल मंडत गूर ॥ ३८ ॥  
 आटोप रचत अंगुलि उठाय, काकोदर भोग कि काल काय ॥  
 भासत कैलाप ग्रीवा प्रभान, मंदरगिरि बासुकि घेर मान ॥ ३९ ॥  
 दोलायमान श्रवर्नन दिखात, गिद्ध कि जटायु पच्छिम हलात ॥  
 अंदुक प्रलंब जो व्है न अंग, मारै मलंगि बाजिन मलंग ॥ ४० ॥  
 जंजीर जबर जिनके सुहात, पद्धति हल पद्धति रचत जात ॥  
 साजि डार्कदार हुव बिंदि संग, मारत बहु बेगुन रचि मलंग ॥ ४१ ॥  
 दुति स्याम मुक्त कैच दरस देत, पब्बय रहेकि गरदाय प्रेत ॥  
 बारूद बिहित चरखी बिसाल, जे करत डरत मग चित्त जाल ॥ ४२ ॥  
 मग मत चरन डारत मरोर, अदभुत दिखात गति ओर ओर ॥  
 बारूद पूर्ण जिम चलत बान, इम चलत रवैर जिततित अमान ॥ ४३ ॥  
 इकनिमिख निवर्तन अंतराय, दूजोरन बनत निकटदि दिखाय ॥  
 पच्छिम सन पूरव पलटि जाय, व्है बायु लेत नैर्ऋत निरौय ॥ ४४ ॥  
 सत दुव २०० इम जंगम अदि सज्जि, बैल हुव तयार रगतूर बज्जि  
 की रचना की है १ सुंड के जल कणों से २ गुस्से (क्रोध) में होकर ॥ ३८ ॥  
 ३ सुंड के अग्रभाग को उठाकर मस्तक पर टोप वा छत्र करते हैं सो मानों  
 ४ काले शरीरवाला सर्प फण करता है ५ गरदन पर कलावा दीखता है सो  
 ६ मंदर नामक पर्वत के बासुकि सर्प के घेरे के समान है ॥ ३९ ॥ ७  
 हिलते हुए ८ कान दीखते हैं सो मानों जटायु पक्ष हिलाता है जिन के शरीर  
 पर लंबी ९ जंजीर नहीं होवे तो मलंग लगाकर १० घोड़ों की मलंग को दबादे-  
 वें ॥ ४० ॥ जिनके बड़े जंजीर, हल (लांगल) के मार्ग के समान ११ मार्ग करते  
 जाते शोभा देते हैं १२ सांडमार सज्जित होकर उनको घेर कर साथ हुए सो  
 मलंग लगाकर १३ भाले मारते चले ॥ ४१ ॥ उन सांडमारों की १४ केश रहित  
 काली क्रांति दीखती है सो मानों पर्वत को प्रेत १५ घेर रहे हैं १६ बारूद की  
 बनी बड़ी चरखियों से डरकर मार्ग में १७ आश्रय करते हैं ॥ ४२ ॥ जैसे बारूद  
 का १८ भरा हुआ घाण स्वतंत्र होकर जाता है तैसे १९ स्वतंत्र होकर इधर  
 उधर जाते हैं ॥ ४३ ॥ २० पलटने में वे हाथी एक निमेष से २१ दूसरा निमेष (क्षण)  
 नहीं होने देते और समीप ही दीखते हैं २२ वायु दिशा में होकर नैर्ऋत दिशा  
 को २३ समीप लेते हैं ॥ ४४ ॥ २४ सेना में तयार हुए ॥ ४५ ॥

जवनन कुरान पढि किय निमाज, जुरिहं किय आरुहि बाजिराज  
स्व बजीर निजामनमुलक सत्थ, सब साह सेन सज्जिगं समत्थ ॥  
इत हुव मल्लार १ दत्ता २ तदार, संभा ३ सुत जनकू ४ रन सिंगार ॥ ४६ ॥  
जल गंग न्हाय करि दान जत्थ, पढि बिष्णुकवचदस नाम पैत्थ ॥  
साजि यों बनि दिल्लिय दल सहाय, लहि काल चले कर मुच्छ  
लाय ॥ ४७ ॥

इततैं दरकुंचन भरि उडान, पहुँच्योहि आय दिल्लिय पठान ॥  
दलकों पुर बाहिर कढत देर, नहिँ मिलत भई दल अपर नेर ॥ ४८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमधराशावुम्मेद  
सिंहचरित्रे स्वसुतद्वय २ सन्धि १ यान २ विग्रहा ३ ऽऽदिशिशिल्ल  
यिषुबुन्दीन्द्रवरवाड़पुरगमनसम्मुखसमागतमल्लारसम्मिलनश्रुतप  
ठानअहमदशाहप्राप्तपंजाबप्रस्थितहुलकरसम्मतपस्त्यप्रेषितपुत्रराव  
राट्सहप्रयाणन्यक्कृतजयपुरजनपदलुण्टनहुलकरसहायीहड्डेशसुप्त  
शिविरस्थसुभटसुहरणीशदशरथसिंहसनाभिशस्त्रमरणकोटपुतलीसै  
न्यशिविरस्थापननवाबगाजुद्दीखानस्वामिदिल्लीशाऽऽलमगीरमारण

१ सजी ॥ ४६ ॥ २ अर्जुन के दश नाम ॥ ४७ ॥ सेना को नगर से कढते  
देर लगी परन्तु ३ सेना रूपी दूसरे नगर में मिलते देर नहीं लगी ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र  
में, अपने दोनों पुत्रों को सन्धि, यान, विग्रह आदि सिखाने की इच्छावाले  
बुन्दीन्द्र का घरवाड़ पुर में जाना और सामने आये हुए मल्लार से मिलना १  
अहमदशाह पठान को पंजाब में आया हुआ सुनकर, हुलकर की सलाह से  
पुत्रों को घर भेजकर रावराजा का हुलकर के साथ जाना और जयपुर देश  
का अनादर करके लूटना २ हुलकर के सहाई हड्डे के डेरे में सोते हुए अपने  
उमराव सुहरणवाले दशरथसिंहका अपने सापेंडाभाईके स्त्रयसे मरना और कोट  
पुतली में सेना का डेरा होने पर नवाब गाजुद्दीखांका दिल्ली के स्वामी बादशाह  
आलमगीर को मारने की खबर सुनना ३ इस कारण से पंजाब को छोड़कर  
अहमदशाह का दिल्ली के मार्ग को लेना ४ बुन्दी के पति बुन्दी भेजकर

समाकर्णितैतत्पुस्तकपञ्चाभाऽहमदपाददिल्लीसरणि समासरणाबु-  
न्दीप्रेषितबुन्दीन्दलुगिटतसङ्गरदापुरमल्लार १ जनकू २ दत्ता ३ ऽऽ  
दिदिल्लीसहायीभवननिवेदितमहाराष्ट्रोपायनीभूतद्वन्द्वम्कोटिगाजु  
दीखाना ऽऽजीगोहरदिल्लीगढिकोपविशनसज्जितसकलपुरप्राकार  
पिस्पर्शयिषुपठानपुतनाप्रश्लेषणमष्टचत्वारिंशो ४८ मयूखः ॥ ४८ ॥  
आदितः ॥ ३२९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतो मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लहलहमजनूँको ललित, तकिया बाहिर तत्थ ॥  
मंडि मरन दुव दल मिले, सस्त्रन झारि समत्थ ॥ १ ॥  
सक रस ससि बसु ससि १८१६सिसिर, आगम उदित अनेह  
संकरैपँहँ पठयो समर, न्यूँता नूतन नेह ॥ २ ॥  
पुतना इम मिलतैँ प्रथम, लग्गी तोपन लाय ॥  
रसनाँ इक १ सततीन ३०००रँव, जे किम बरने जाय ॥ ३ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दग्यो तोप संदोह छोनी दरारी, वढयो धूम आवाज घाँघाँ बिथारी ॥  
फँचैँ लोल गोला करी कुंभ फुटैँ, पताकानके पुंज टुटैँ बिछुटैँ ॥ ४ ॥

और संकरदा पुर लूटकर मल्लार, जनकू, दत्ता आदि का दिल्ली का सहाय  
होना, मरहटों की भेट के दंड के क्रोड़ रुपये नजर करके गाजुदीखों का आली  
गोहर को दिल्ली की गादी पर बिठाना ५ सब का सज कर पुर के कोट से  
पठानकी सेना को पीसने की इच्छावालोंका सेनासे मिलने का अड़तालीसवाँ  
मयूख समाप्त हुआ ॥ ४८ ॥ और आदि से तीन सौ उनतीस ३२९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ शिव के पास ३ युद्ध का ४ नवीन स्नेह से ॥ २ ॥ ५ सेना.  
ग्रंथकर्ता कहते हैं कि मेरी एक वज्रिवा से ७ तीन सौ तोपों के शब्द क्योंकर  
कहे जायें ॥ ३ ॥ तोपों के ८ समूह के चलने से भूमि फटी और उन तोपों का  
धुआँ बढ कर ९ दिशा दिशाओं में आवाज फैली शोभायमान चपल गोलों  
से १० हाथियों के कुंभस्थल फूटते हैं और ध्वजाओं के समूह तूटकर गिरते हैं ॥ ४ ॥

बनै फेरपै फेर ज्यों बाक्यबादी, गिरै चोटसैं लोट सादी निसादी ॥  
उडैवाजि आयास धारा बिसारै, बिमानावली बीच आयास डारै ॥५॥  
जगैं घोर अंधारमें सोर ज्वाला, मनौ भद्रके अद्वैतमें बिज्जुमाला ॥  
हलैं सेसको ज्यों फटाको हजार १०००, सिंदै त्यों मही कान्त  
कल्पामिसारा ॥ ६ ॥

लगैं चोटपै चोट मातंगें लोटै, उडै पंक्ति जोटै बचै कोन ओटै ॥  
घनै घुमि घाँघाँ भुकेँ हथि घोरे, बनै ज्वालमाला अकूपार दोरे ७  
कछू काल दै तोप यों रारि किन्नी, लरे फेरि लै खग है बग लिन्नी ॥  
धमकी धरा बाढकैं बाढ बज्ज्यो, बढयो बीरको भीरुको नीर लज्ज्यो ८  
मिले दुग्ध पानीय ज्यों जोध मत्ते, कला ऐंदवीसे चले काल कत्ते ॥  
कटै कुंभ बाह्ति सुंडा कलावा, कहां रुंड घुमै अटै देत कावा ९

१ शास्त्रार्थ करनेवाले के वा नैयायिक के वचनों के समान तोपों के फेर होते हैं जिनकी चोट से २ घोड़ों के सवार और ३ हाथियों के सवार छुटकते हुए गिरते हैं घोड़े अपनी पांचों धाराओं (गतियों) को झूलकर ४ आकाश में उड़ते हैं सो ५ विमानों की पंक्ति में अम पटकते हैं ॥ ५ ॥ उस भयंकर अंधारे में बारूद की झाल जलती है सो सानों भादों (भादवे) के ६ सजल मेघ में बिजुली का समूह चमकता है "यहां सामान्य तथा आर्द्र वायु के कहने पर भी बिजुली के संबंध से मेघ का ग्रहण है" ज्यों शेषनाग के ७ फणों का हजार (हजार फण) हिलता है त्यों भूमि = भीजती है और १० प्रलय के समान ६ लोह (शस्त्र) चलता है अर्थात् खड्ग चलने हैं ॥ ६ ॥ चोट पर चोट लगने से ११ हाथी लोटते हैं और १२ पैदलों के जोड़े उड़ते हैं सो जिसकी आड़ में बचें, बहुत घूम कर ठाम ठाम हाथी घोड़े भुक्त हैं और १३ अग्नि रूपी समुद्र में डूबोए हुए बनते हैं अर्थात् जलते हैं ॥ ७ ॥ कुछ समय तोपों से इस प्रकार युद्ध करके फिर तरवारें लेकर वीरों ने घोड़ों की पागें उठाई जिससे भूमि धूजनेलगी और बाढ़ पर बाढ़ बजनेलगा वहां वीरों का पराक्रम पहनेलगा और कायर लज्जित होनेलगे ॥ ८ ॥ मस्त वीर पानी और दूध के समान मिलगये और १४ इन्द्र संबंधी (वज्र वा बिजुली) की भांति काल रूपी खड्ग चले अथवा द्वितीया के चन्द्रमा की कलावाले (उज्ज्वल और टंठे) काल के समान खड्ग चले हाथियों के १५ कुंभस्थल, ललाट के अधोभाग रुंड और कलावे कटते हैं और कहीं पर रुंड घूमते और फिर कर गोलकुंडा लगाते



छिकें \*कंधरा जीन बाजीन छुट्टें, फबैंलीन जालीनमें †संगि फुट्टें॥  
 उडैं अस्थि †संघाल के ओर ओरें, छले मेघ मानों घनैऽप्राव छेरें१०  
 कटैं उच्छटैं टोप जाली करकैं, फटैं पेट नागोद फैलैं फरकैं ॥  
 कटैं नैन छोरैं न लग्गी कनीनी, लसैं पैट्पदी फूल ज्यों संगलीनी११  
 बरककैं झरैं कंधरा अंस बाहा, उडैं मूर्द्ध मज्जा दहीसार आहा ॥  
 दिपैं बीर सुंडिउज जुज्मैं दिखावैं, परैं सस्त्रमें सस्त्र छेटी न पावैं१२  
 व्यवच्छेद धन्वीनके दंस बेधैं, नमंती जरैं कोटि द्वैधार् निसेधैं ॥  
 तकैं सूरहू दूरवेधी तमासा, उडैं बाँज के बाँजके प्रान आसा॥१३॥  
 गिनैं लैरतकैं सत्रु व्है दूर गंव्या, लहैं अँचि नीरैं सुपैं मन्नि लँव्या  
 निहारो यहै चापमें रीति नँव्या, सुनैंही बनें भोरु सँव्याऽपसव्या१४  
 बजैं पैगशा सोक त्यों भे बिथारैं, मैहातूशाकी पूर्णाता दीप्ति मारैं  
 हैं ॥ ६ ॥ \* घोड़ों के कंधे कटकर जीन खुलते हैं और कवचों में लीन होकर  
 फूटीहुई † चछियां शोभती हैं. कितने ही ‡ हड्डियों के ससृह चारों ओर  
 उड़ते हैं सो मानों मेघ बढकर बहुत § पत्थर (ओले) बरसाता है ॥ १० ॥  
 टोप कट कर उछलते हैं और कवच कड़कते हैं, १ पेट का कवच (पेटी) फटकर  
 पेट फैलता और फुरकता है. नेत्र की पुतली को नहीं २ छोड़कर नेत्र निकलते  
 हैं सो फूल के साथ में ३ भ्रमर की शोभा लेती है ॥ ११ ॥ ४ गरदन ५ कंधा  
 और बाहु कटकर गिरते हैं ६ मस्तक का भेजा उड़ता है सो ही अप्रशंसा योग्य  
 ७ मक्खन है धीर लोग ८ पराक्रम को युद्ध करके दिखाते और प्रकाशित होते  
 हैं और छेटी नहीं पाकर शस्त्र पर शस्त्र पड़ते हैं ॥ १२ ॥ १० धनुषधारियों  
 के छोड़े हुए बाण ११ कवचों को काटते हैं और धनुष की दोनों कोटियों  
 (नोकें) जम कर मिलती हैं जो १२ दो होने (जुदायगी) का निषेध करती हैं शूर  
 लांक १३ दूर से बेधन करने का तमाशा देखते हैं और १४ कितने ही घोड़े १५  
 सिकरे (पत्नी विशेष) के बलकी आशासे उड़ते हैं ॥ १३ ॥ १६ धनुष की मूठ तो  
 शत्रु को दूर मानती है और १७ प्रत्यंचा उनको खँच कर १८ छेदन करने के  
 योग्य मानकर समीप लेती है. धनुष में यह १९ नवीन रीति देखो कि २० सुनते  
 ही कायश बाधे दाहिने होजाते हैं अर्थात् सम्मुख नहीं ठहर सकते ॥ १४ ॥ ज्यों  
 २१ बाणों की खगसनाहट बजती है त्यों भय फैलता है और २२ बड़े भाधे



हसैं कर्त्तरी सिंजकों आनि ज्यौंज्यौं, तितिच्छूटैरैदुष्टतैसाधु त्योंत्यों  
नछोरै तऊ तामसी वृत्ति धारै, ज्यका कुपि ताकों तबैं दूर डारै ॥  
परैं हीन संग्राह के चर्म पंती, भली जो बिनां अंग्रि दौलेय भंती १६  
वहैं सूल १ छूरी २ इली ३ त्यों बरच्छी ४, छबैं सालभी पंति ज्यों  
तीर ५ पच्छी ॥

दिपैं भू खैलूरी बनी कोस द्वैरद्वैर, हलैं मत्त घाँघाँ खरैं रुंड व्हैव्है १७  
महा तीरमें प्रेत आलाप मारैं, नचैं जोगिनी लोन भैरों उतारैं ॥  
हसैं डाकिनी साकिनी घुम्मि हलैं, घनी रासमें घुम्मरी घेर घलैं १८  
जगी ज्वाला ज्यों कंठके दंत जारैं, मरी पों डरी दिग्गजी चीह मारैं  
अमों इंदुको रूप आदित्य धारयो, चिके चँक्क चक्कीन हाहा  
उचारयो ॥ १९ ॥

फवैं खरग लगै वजे टोप कोरैं, घरघारी मनो प्रातकी घात घोरैं ॥  
पूर्णता प्रकाश करती है ज्यों ज्यों १ तरवारें आकर २ प्रत्यंचा को काटती हैं त्यों  
त्यों दुष्ट से ३ क्षमाशील साधु टलै इस प्रकार वे धनुषवाले तरवारवालों से  
टलते हैं ॥ १५ ॥ तोभी ४ तमोगुणी वृत्ति को धारण करके वे तरवारोंवाले  
धनुषवालों को नहीं छाड़ते तब ५ प्रत्यंचा साधु के समान क्रोध करके उनको  
कूर डाल देती है. सृष्ट से हीन होकर ६ ढालों की पंक्तियां षड़ी हैं सो मानों  
बिना ७ पैरोंवाले सुंदर ८ कछुओं की तरह हैं. जिस प्रकार शूल, छुरा,  
तरशार और बछी चलती है विसी प्रकार ९ दिक्षियों की पंक्ति के समान बाण  
रुनी पछी छाते हैं. वह भूमि दो दो कोस तक १० शस्त्राभ्यासकी श्रुति (अखाड़ा)  
बनकर शोभती है जहां पर दिशा दिशाओं में मसन होकर खड़े हुए रुंड  
चलते हैं ॥ १७ ॥ प्रेत ११ बड़े उच्च स्वर से गाते हैं, योगिनिषां नाचनी हैं  
और भैरव उन पर नौन (निमक) उतारते हैं. डाकिनियां और साकिनियां  
घूमकर हसी के साथ चलती हैं और नृत्य में बहुतेरी घुमर का घेर घालती हैं  
॥ १८ ॥ जली हुई ज्वाला ज्यों ज्यों १२ जिनियों के दंतों को जलाती है त्यों त्यों  
डरी हुई दिशा की हथनियां मरी मरी कड़कर चीखें मारती हैं. सूर्य ने १३  
अमावास्या के चंद्रमा का रूप धारण किया अर्थात् सूर्य नहीं दीखा जिससे चक्र  
(भूल) कर १४ चक्रवा चक्रवियों ने हाहाकार किया ॥ १९ ॥ तरवारें लगने से  
फटे हुए टोप बजकर ऐसे शोभा देते हैं मानों घड़ियाल बजानेवाला प्रभातकी

मचे कोप १ उच्छाह २ थापी न मावैं, तथाहास ३ वीभेच्छ ४ सोभावतावैं २०  
 विधाता बढी सृष्टितैं दर्प छंढ्यो, मनो मोति विक्रय बाजार मंढ्यो  
 कुंहु रत्तिमें अंपि गिद्धी किलोलैं, डुने सिंधु अंधार जे भोर डोलैं २१  
 घनें वान जोधानके उद्ध चारैं, मनो पूजिवे अच्छरी फूल डारैं ॥  
 बहैं मारपैं मार बिस्फार बानी, भयंकार आचार मंडैं भवानी ॥ २२ ॥  
 वनै बावरीकुंभ बानैत बुल्लैं, सतीकेरं नारेर ठहै खीज खुल्लैं ॥  
 अनी प्रान के जानके होत सूनी, पुकारैं बढो रे बढो यों चैमूनी २३  
 मरे रे मरे भीरु कुक्कैं पैलावैं, खरे रे खरे वीर अक्खैं टिकावैं ॥  
 अरैं संगि के संगितैं अग्र अरैं, जुरे वैदुषी कोटि द्वै रतिकख जैसैं २४  
 घनें वीर सुत्तेनकों भीरु घावैं, बकैं जीत भोरे बनीमें वनावैं ॥  
बिदू दारि दंतीनैं बेधैं बरच्छी, अंधो ठहै चलैं अस्त्रकी रेल अच्छी २५

घड़ियाल पजाता है। वीर रस भचकर उसका स्थायी उत्साह नहीं समाता इसी प्रकार हास्य और श्वीभत्स रस भी शोभा दिखाते हैं ॥ २० ॥ १ ब्रह्मा ने बड़ी हुई सृष्टि का ३ घण्टा छोड़ा और मृत्यु के ४ बेचने का बाजार रचा प्रनष्टचंद्रा अमावास्या की रात्रि में अंप लेकर गिद्धनियां किलोलें करती हैं और १ अंधेरे रूपी समुद्र में डुलकर अग्नि रूप फिरती हैं ॥ २१ ॥ बहुत से वीरों के बाण ७ ऊपर चलते हैं सो मानों उन वीरों का पूजन करने को अप्सराएं फूल डालती हैं, मार पर मार होकर ८ घनुष के शब्द की वाणी बढती है अर्थात् धनुष का शब्द होता है और देवी रक्त पीने का भयंकर आचार रचती है ॥ २२ ॥ वानाबंध ६ पागल स्त्री के घड़े के समान होकर बोलते हैं और १० सती के हाथ के नारियल रूप होकर क्रोध करते हैं "पागल स्त्री भटका और सती का नारियल ये दोनों शीघ्र नष्ट होजाते हैं" सेना के प्राण जाने से वह सूनी होती जाती है और ११ सेनापति 'बढो बढो' पुकारते हैं ॥ २३ ॥ कायर 'मरे मरे' कहकर १२ भगते हैं और वीर लोग 'खड़े रहो खड़े रहो' कहकर उन्हें टिकाते हैं। १३ एक बरछी का अग्रभाग दूसरी के अग्रभाग से ऐसे मिलता है जैसे शास्त्रार्थ करनेवाले तीव्र १४ पंडितों की दो कोटि जुड़े ॥ २४ ॥ कई सोते (कटे) हुए वीरों को भगनेवाले कायर छेदते हैं और अपनी बनी हुई आपत्ति में भोले स्वभाववाले चक्रकर जीत बनाते हैं १५ हाथियों के १५ पीतवानों (कुंभस्थलों के मध्यभागों) को विदारण वारके बरछियां बेधती हैं सो १७ नीचे का १८ रुधिर की उत्तम धार बढती है ॥ २५ ॥

सुही नारि वक्षोज द्वै२ मैं विसाला, मनो बिथरी लंब मानिक्य  
माला ॥

लगे सुडिपैं स्याह के सैलहलैं, किधों कन्ह कालीयपैं घूमै घलैं२६  
भये रंग१ कुल्हू१ भये लँडि२ भाले२, बलीबंद३ भो बीर३ जी ४  
इच्छु४ जाले ॥

किते पति घोरनकों मुंड मारैं, मनो धेनु ऊधन्य बच्छा अहारैं२७  
कहों अच्छरी सूरकों मंडि माली, बनावैं गरैं बाँह गावैं विसाली॥  
कहों भिन्न कुंभीनैं लोही छछक्कैं, किधों तिंदुतैं फाल फुल्लिग  
तक्कैं ॥ २८ ॥

मनंकार भैकार 'भेरी बिथारैं, घटा भदकी जानि निर्घोस डारैं ॥  
कहों टोपकों खंडि खंडौ खटककैं, गुलाबी कली प्रात मानों च  
टककैं ॥ २९ ॥

छिदे केक कुंभीनतैं कँश्या छुटैं, ति ज्यों बाततैं तालतैं पग्यां तुटैं॥  
कहों कुब्ज बुक्केनकों 'मौंडि तोरैं, मनो सूपमें सूँद निंबू निचोरैं३०  
सो ही स्त्री के १ कुंभों के भीतर मानों मानिककी लंधी माला फैली है. हाथी की सुंड  
पर कितने ही कालेरंग के २ भाले हिलते हैं सो मानों कालीनाग पर श्रीकृष्ण  
३ घूमर लगाते हैं ॥ २६ ॥ यह ४ युद्ध ही कोल्हू (घाणी) हुआ जिसमें भाले तो  
५ लाठ हैं और धीर रस इस कोल्हू में चलनेवाला ६ बैल और ७ जीव ही इच्छु  
(गध्रों) के समूह हुए कितने ही पैदल घोड़ों के मस्तक की टक्कर मारते हैं सो  
मानों ८ गौ के स्तनों को बछड़ा पीता है ॥ २७ ॥ कहीं पर शूरों को अप्सराएं माला  
युक्त बनाकर गलवाही डाल कर लंबे स्वर से गाती हैं और कहीं कटेहुए १०  
हाथियों से लोहू का पिचकारियां उड़ती हैं सो मानों ११ तीव्र वृक्ष से अग्निकण  
उड़ते हुए देखते हैं ॥ २८ ॥ १२ नौबत भयकारी शब्द फैलाती है सो मानों  
भादों का घटा गालती है कहीं पर टोप को काट कर १३ खांडा (सीधी तलवार)  
खटकता है सो मानों प्रभात समय में १४ गुलाब की कली चटकती है ॥ २९ ॥  
कई हाथियों से कटेहुए १५ जान छूटते हैं सो मानों पवन से ताड़वृक्ष के १६ पत्ते  
तूटते हैं कहीं पर क्रोधित हुए वीर वृकों गुरदों को तोड़कर १७ मसलते हैं सो  
मानों १८ दाल में १९ रसोईदार नींबू निचोड़ता है ॥ ३० ॥ कहीं पर घेठेहुए  
पीर बहुत धाघों से घूमरहे हैं और कहीं पर दौड़ कर लोथ से लोथ लगती है

कहीं वीर बैठे घने घाय घुम्में, भूपट्टे कहीं लुत्थितें लुत्थि भुम्में  
 अहारें कहीं औचि गोमायु अंती, प्रहारें मनो पन्नगी मार पंती ॥३१॥  
 कटैं डाकिनी लिप्त लोही कलोजी, रंगे पट्ट ज्यों मट्टतें रंगरेजी ॥  
 हबककैं कहीं घाय बुल्लैं हजारैं, मनो तेगके ताप आक्रंद मारैं ॥३२॥  
 बिनोदैं कहीं कंक बुल्लैं बनावैं, मनो बंदि ईरानको जै मनावैं  
 तमंकै ईत संग दिल्ली सितागै, उमंगे उतैं मिच्छ ईरानवारै ॥३३॥  
 दुहँओर यों हत्थ अच्छे दिखाये, घने हत्थि त्यों सति ओ पति घाये  
 सितारा रु दिल्ली थके दैव सारैं, मची आन ईरानकी भान मारैं ॥३४॥  
 छक्यो लोह संभा तैनैं १ देह छुट्यो, तथा वीर दत्ता २ परयो तेग  
 तुट्यो ॥

जयानंद ३ कै जोरकैं घाय लग्गे, भिदे दक्खिनी ए३ घने हारिभग्गे ३५  
 अछूती अनी डकक मल्लार १ कट्यो, बली देस ईरानको जोर बढ़्यो  
 दुरयो भजिजकैं खान गाजुदि दिल्ली, पराजै भयो जुद्धकी हौंसपिल्ली  
 ॥ दोहा ॥

पुनि तजि खान कलीज तजि, आलीगोहर साह ॥

दुव सरनागत जट्टको, लगि भरतपुर राह ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मिले अवर दिल्लीपतिके तब, सत्रुनमाँहिँ नबाव सुभट सब ॥

इक हाफिज रहमुल्ला १ सठ, बिरचि हराम सुजाहोला २ हठ ॥३८॥

कहीं पर १ गीदड़ आंत को खँषकर खाते हैं सो मानों मयूर २ सपों की पंक्ति  
 को मारता है ॥ ३१ ॥ कहीं डाकिनियाँ लोहू से लिपे हुए कलोजे ऐसे निकाल  
 ती हैं जैसे रंगरेज रंगे हुए वस्त्रों को माट से निकालता है कहीं पर हजारों  
 घाव 'हबक हबक' बोल रहे हैं सो मानों तरवार के ताप से ३ कूटते हैं ॥ ३२ ॥  
 कहीं ४ चिलास करते हुए कंक पची बोलते हैं सो मानों ५ भाट लोग ईरा-  
 न का जय मनाते हैं इधर दिल्ली और सितारा के १ साथियों ने क्रोध किया  
 और धर ईरान के यवन वत्साह युक्त हुए ॥ ३३ ॥ ७ सति घोड़े ८ पैदल ९  
 भाग्य के आधीन होकर १० अंति ॥ ३४ ॥ ११ संभा का पुत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

ईरानी अहमद खान का जयपाकर बंदना] सप्तमराशि-पंचाशमयूख (३९८३)

बहुरि नजीमुद्दौला ३ वालिस, पुनि सादुल्लाखान ४ मिलन मिस ॥  
अहमदखान पठान माँहिं इम, जुझमी मिलि सब भये दास जिम ३९  
इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण सप्तम ७ राशावुस्मेद  
सिंहचरित्रे अहमदशाहखान विजयनसम्भासुत १ दत्ता २ वीरशय्याशय-  
नजनकू ३ क्षतपापणासपरिकरमल्लार ४ निकसनकान्दिशीकक-  
लीजखान भरतपुर जट्टशरणाग्रहणाहाफिजरहमुत्तुल्ला १ नबाबसुजाउ-  
दौला २ नजीमुद्दौला ३ सादुल्ला ४ अदिदिल्लीशपरिकरसपत्नपठा-  
नशाहभेदोपायविषयीभवनमेकोनपंचाशत्तमो ४९ मयूखः ॥ ४९ ॥  
आदितः ॥ ३३० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दल बिगरयो दिल्लीसको, मरइठन गत मान ॥

बच्यो इक १ हुलकर बली, जित्यो अहमदखान ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जित्यो अहमदखान साह नादरको मारक ॥

दिल्ली दक्खिन ढंडि बढ्यो निज जय विसतारक ॥

अंतरवेदी आदि बिखय मंडत अप्पन बस ॥

प्रबिरयो पूरवमाँहिं रचत स्वाधीन हुकम रस ॥

गंगा रु जमुन बिच गयउ जब कलह बिजय कोतुक करत ॥

१ मुख ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उस्मेदसिंह के चरित्र में अहमदशाह का युद्ध में विजय होना और संभा के पुत्र दत्ता का मारा जाना १ जनकू का घायल होना और परगह सहित मल्लार का निकलना २ कलीजखां का भाग कर भरतपुर में जाट का शरण लेना ३ हाफिजरहमुत्तुल्ला, नबाब सुजाउदौला, नजीमुद्दौला, सादुल्ला आदि दिल्ली के पति की परगह का शत्रु पठान अहमदशाह के भेद उपाय से उसके वश में होने का उनचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४९ ॥ और आदि से तीन सौ तीस १३० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ मारनेवाला ३ देश

मूपाल प्राच्य हाजिरि भये सब अधीन हित अनुसरत ॥२॥

॥ दोहा ॥

आलीगोदर साह इत, तुरकन पति हत तोर ॥

आहवै जय ईरानको, जानि भयो गत जोर ॥ ३ ॥

संध्याको संग्रामतैं, इत मल्लार उठाय ॥

भिसंकनको आचरि भनित, दिनें घाय दवाय ॥ ४ ॥

पठयो कग्गरै नन्ह प्रति, दुते लिखि दक्खिन देस ॥

इहाँ पराजय अप्पनो, सबविधि भयउ असेस ॥ ५ ॥

॥ पट्टपात् ॥

सुनत तमकि श्रीमंतसेन पठयो बहोरि सजि ॥

सेनानी निज सूनुरच्यो विश्वासराव १ रजि ॥

निज काका पुनि निडर धीर चीमा १ अभिधानक ॥

भट दोउनर सिर भीर अरपि दिय हुकम अचानक ॥

अँर जाहु पुत्र काका उभयर दलहु जंग ईरान दल ॥

सतरि हजार ७०००० तुम संग भट खंडहु गाढ असेस खल ॥

सुनि चीमा १ विश्वासराव १ दुवर लै दल दुद्धर ॥

सुदित चले मरदठ अवनि मिच्छन भैर उद्धर ॥

नाना रंग निसान उदित बज्जिग ध्वनि आयत ॥

कुंभिन नाना केतु खुल्लि हंकि य खेटौयत ॥

पक्खर प्रसार छादित पहुमि प्रैचुर कुंत अंवर पिहित ॥

आवाज मुल्लक फुटिय असह बढत सेन संगर बिहित ॥७॥

नागराज फन फटत कमठ दढ पिष्टि करकत ॥

गिरन सार तजि गह्व दह्व बाराह वगकत ॥

शुभदिग्ग के राजा नाना युद्ध में जैयों का लक्ष्य करते ॥१॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

डरि दिग्गज डगमगत लगत बेपथु लोकेसन ॥  
छुट्टिग छितिपेन महल दहल फट्टिग सब देसन ॥  
मेवास त्रास संकित दुमद हेरत सब आलोचि हिय ॥  
चतुरंग प्रचुर दक्खिन चढत किहिं सिर कोप कृतांत किय ८  
गिरिन चूर मिलि आव धूरि अंबर संकुलि थट ॥  
मिटि दुग्गम मेवास बनत पद्धर बट उब्बट ॥  
अति अलात भरि अग्निं लगि फैलत हय नालन ॥  
तरु तालन तुंगेत्व दह्यो जावत गज ढोलन ॥  
बजि मैडु १ बंबर प्रतिबादका ३ पटह ४ बिजय मर्दल ५ पंखाव ६ ॥  
रस बीर बढत सिंधुद रुचिर राग अतुल आलाप रव ॥ ९ ॥  
फोजन लगि लगि फेट मुरत प्रतिहत रघ मारुत ॥  
मिच्छन थर थर मुलक होत घरघर डर हारुत ॥  
बन्ध सैव दल बीच रहत थकि थकि हत रंहंस ॥  
मैहुरै सलिल मिलाप तकत चंदोल पंकै तस ॥

पीठ तूटी, भार पड़ने से गाढ़ छोड़कर बाराह की दाढ़ तूटी, दिशा के हाथी डरकर हिलने लगे, लोकपालों को १ कंप होने लगा २ राजाओं से महल छूटने लगे, दशों दिशाओं में ३ भय फैल गया, इस सेना की त्रास से शंका होकर ४ लुटेरों के घरों में उदासीनता हुई और अपने हृदय में सब लोग यह बिचारने लगे कि दक्षिण की बहुत सेना बढ़ती है सो ५ यमराज ने किस पर कोप किया है ॥ ८ ॥ पर्वतों का चूर्ण होकर ७ पत्थर पिसकर उनकी धूलि के समूह से आकाश ८ भर गया, चारों ओर लुटेरों के ९ दुर्गम घरों का नाश होकर मार्ग और अमार्ग खींचे होगये, घोड़ों की नालें लगकर अत्यंत १० अग्नि भट्टी, तालवृक्षों की ११ उंचाई के समान १२ हाथियों के झंड़े गिरने लगे १३ घाघ विशेष, नगारे, १४ पांगलिक थाजे, पटह नामक थाजे, मर्दल और १५ ढोल बजकर बीर रस बढ़ा और सुंदर सैधवी रागिनी के बड़े आलाप का १६ शब्द हुआ ॥ ९ ॥ फौजों की फेट लगने से १७ पधन का घेग रुकने लगा, म्लेच्छों का मुलक धूजकर भय से घर घर में १८ हाहाकार शब्द हुआ वन के १९ जीव २० हतवेग होकर धकधक कर सेना के बीच में रहने लगे जिस २१ सेना के आगेवालों को पानी मिलता है उसी के पीछेवालों को २२ कीचड़



संतनुतनूज रन तल्प सम नभ सुहात तोमर निकरै ॥  
 के नभ निखंग रक्खिय कुपित श्रीमंतहिँ रन करन सर ॥१०॥  
 ॥ दोहा ॥

मरहठन दल इम अमित, मत्थ घसत ब्रह्मंड ॥  
 हिंदुस्थान प्रविष्ट हुव, अरिगन हनन अखंड ॥ ११ ॥  
 अहमदखान पठान इत, बढिगो अंतरवेद ॥  
 दिल्लिय पहुँचे दक्खिनी, खलन प्रसारन खेद ॥ १२ ॥  
 दिल्लियपुर प्रविसे दुसह, मरहठे छक मत्त ॥  
 आलीगोहरकाँ अटकिँ, छितिप भये धरि छत्त ॥ १३ ॥  
 नन्ह पिँतुव्यक ११ नूनुरसन, मिल्यो आनि मल्लार ॥  
 अक्खिय दिल्लिय करहु अब, सुद्ध धरम अनुसार ॥ १४ ॥  
 मुगलनके तब सब महल, धीरन लिन्न धुपाय ॥  
 गँवपंच ५ जल गंग करि, दिय दिल्लिय छिरकाय ॥ १५ ॥  
 बाँस्तुकर्म अरु हँवन बलि, सूरपूजन करि सूर ॥  
 धारि निर्गम हिंदुन धरम, प्रेरयो दिल्लिय पूर ॥ १६ ॥  
 ग्रीखम ऋतु सुनि ससिधृति १८१७ग, इम बनि दिल्लिय ईस ॥  
 दल सज्जित किय दक्खिनिन, रचि सत्रुन सिर रीस ॥ १७ ॥  
 अहमदखान पठान उत, बहुदिन अंतरवेद ॥  
 रह्यो अमल अप्पन रचत, भूपन डारत भेद ॥ १८ ॥  
 दिल्लीपति इत दक्खिनी, हुव सो सुनि हुसियार ॥

मिलता है १ भीष्म की शरशय्या के समान भालों के रसमूह से आकाश  
 शोभित होता है किधौं वह आकाश भालों से ऐसा दीखता है कि  
 मानों श्रीमन्त ने क्रोध करके आकाश को ३ भाधा बनाकर उस में भाजे  
 रूपी बाण रक्खे हैं ॥ १० ॥ ४ सब ॥ ११ ॥ १२ ॥ आलीगोहर  
 बादशाह को ५ रोककर ६ आप दिल्ली के राजा हुए ॥ १३ ॥ नन्ह के  
 ७ भाका के ८ पुत्र से ॥ १४ ॥ ९ पंचगव्य से ॥ १५ ॥ १० नांगल (वास  
 करने का मुहूर्त) ११ होम १२ देवपूजन १३ वेद के अनुसार ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥



पलटयो अहमदखान पुनि, कुल हिंदुन खय कार ॥ १९ ॥  
 सप्त चंद्र धृति १८१७ मान सक, माघ सिसिर लहि मेल ॥  
 मकर अरोहत अहिमकर, आये तुरुक अठेल ॥ २० ॥  
 घुननालकख १००००० पठानकी, दिल्लीकी दुव २००००० लकख  
 जाय मिली सब इकजुरि ३०००००, तमकि उठावन तैकख २१  
 ॥ पादाकुलकम् ॥

बढि इततैं बिस्वासराव १ बलि, चीमार २ अरु जनकू ३ मलार ४ चलि ॥  
 नैन मिलत असिबर करि नगगे, लरन खान अहमद सन लगगे ॥ २२ ॥  
 ॥ प्लवङ्गमम् ॥

मिलि इततैं मरहट ब्रातैं रन बिथरयो, उततैं अहमदखान नकिख  
 हय उप्परयो ॥  
 बादी प्रतिवादी कि व्याकरण १ न्याय २ के, कल्पक रचि रचि को  
 टि भिरे पटु भायके ॥ २३ ॥

॥ चञ्चला ॥

यों इरान १ दक्खिनी १ मिले चलाय द्वै २ अनकि ॥  
 सखके प्रहार घोर बिथरे मचपो समोके ॥  
 उतमंग उछटैं कटैं कपाल भूरि भाल ॥  
 केक भिन्न व्है गिरैं सिपाह के भिरैं करात ॥ २४ ॥  
 अच्छरीनके छये बिंतान रूप लै विमान ॥

॥ १९ ॥ १ मकर संक्रान्त पर चढ़ा २ ठंड नहीं करनेवाला (सूर्य) ॥ २० ॥  
 ३ ताखे (घोड़े) उठाते हुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ इधर से मरहटों के ४ समूह  
 ने मिल कर युद्ध फैलाया और उधर से अहमदखां घोड़े उठाकर चला  
 सो मानों ५ व्याकरण और ६ न्याय के चादी और प्रतिवादी ७ कल्पना की  
 हुई कोटि रचरच कर द्वाचतुरता की रीति से भिड़े ॥ २३ ॥ इस प्रकार ईरानी  
 और दक्षिणी दोनों सेनाओं को चलाकर मिले शास्त्रों के घोर प्रहार फैलकर  
 ९ युद्ध हुआ जिसमें १० मस्तक उछटनेलगे कपाल और ११ बहुत ललाट कटनेलगे  
 कितने कट कर गिरने लगे और कई सिपाही भयंकर युद्ध करनेलगे ॥ २४ ॥  
 अप्सराओं के विमान १२ चंडू की तरह छागये, चीलहें, गिद्ध और सिंघान

चायसों रहे किलोलि चिल्ह १ गिद्ध २ त्यों सिचान ३ ॥  
 जुगिनीनकी जमाति आनि कै नची जरूर ॥  
 साकिनीनके समूह उल्लसे सिराहि तूर ॥ २५ ॥  
 सिंहकों अरोहि कालिका रु बैलकों महेस ॥  
 आय संगही खरे बनें तमासगीर बेस ॥  
 दान सुक्कि विकैरी करंत चिकरी पुकारि ॥  
 सेस ओ बराह कुम्भ होसकों रहे बिसारि ॥ २६ ॥  
 रतमें भरे कबंध मत्त के फिरैं उताल ॥  
 भूमिके तनूज जानि आनि ए नचैं विसाल ॥  
 काचकी चुरी समान होत खंड खंड केक ॥  
 उल्लटैं प्रहार भीरु ही फटैं हटैं अनेक ॥ २७ ॥  
 कालखंज १ उच्छटे कटे गिरंत प्लीह २ ह्योम ३ ॥  
 होत खगग अंगिमैं सुमार दीन प्रान होम ॥  
 जी तजैं अनेक भीरु भजिबो विचारि जंग ॥  
 ज्यों निर्मग्न बारि प्रान व्रानकों गहैं तरंग ॥ २८ ॥

पत्नी बरसाह से किलोलें करने लगे. योगिनियों की जमात निश्चय ही नाचने लगी और शाकिनियों के समूह वीरों की प्रशंसा करके हर्ष युक्त हुए ॥ २५ ॥ कालिका सिंह पर और महादेव बैल पर १ चढ़कर आये और साथ ही अधिक तमासवीन बनकर खड़े रहे २ दिशाओं के हाथी मद सुखकर चीख मार कर पुकारने लगे. शेषनाग, घाराह और कच्छप चेत प्रवृत्त गये ॥ २६ ॥ ३ रुधिर में भरे हुए कई मस्त ४ कबंध (विना माथे के क्रियावान् धड़) शीघ्रता से फिरने लगे सो मानों कई ५ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) आकर नाच करते हैं और कई वीर काच की चूड़ी के समान दूर दूर होते हैं और ६ कई कायर प्रहारी से उल्लटते हैं और हृदय फट कर छूट जाते हैं ॥ २७ ॥ ७ कल्लेजे उल्लटते हैं और कटे हुए ८ तिखी और ९ फेकरे गिरते हैं १० खड्ग रूपी अग्नि में ११ गणना रहित प्राणों का होम होता है अनेक कायर युद्ध से भगना विचार कर १२ जीव छोड़ते हैं जैसे १३ पानी में डूबता हुआ प्राण की रक्षा के लिये १४ उसी पानी की लहर को पकड़ता है ॥ २८ ॥

\*प्रोथ१ त्यों हय िच्छटा२ कटैं िनिगाल३ िकश्य४ पीन ॥  
 होत अंग हीन है गिरैं ॥बिभंग तंग१ जीन२ ॥  
 खगगघात द्वार ठहै चलैं अनेक रत्त खाल ॥  
 बप्प माप उच्चैरैं फिरैं अनेक भै विहाल ॥ २९ ॥  
 मंद् केक भीरु भजिज यों टरैं सह न मार ॥  
 ज्यों कपीस मालकोसमैं कैंकार१ ओ पैकार२ ॥  
 केक बीर हथकों भले दिखात खगग आनि॥  
 पड्जैं अंत्य मूर्च्छना विलावली बनात जानि ॥ ३० ॥  
 टंकैरैं अमाप चाप बानको बनैं बिर्तान ॥  
 कालको निदान लैन जंया लगैं प्रबीर कान ॥  
 के चलैं कृपान१ संगि२ कुंत३ त्यों छुरी४ कटार५ ॥  
 कैंकटी कराल सूर छिन्नठहै गिरैं कुडारैं ॥ ३१ ॥  
 हथदै मंही कितेक घुमिक्कैं उठैं हकंत ॥  
 छाक कापिसायनी मनो गमार लौ छकंत ॥  
 कालसे कराल खात के फिरैं छुटे कलंबैं ॥  
 वैक विंव चक के चलैं मनो कि सक संवैं ॥ ३२ ॥

\*फुरने।गरदन।कंठ और िपुष्ट कमर, इन अंगों से हीन होकर कटेहुए घोड़े और  
 ॥विशेष भंगदृष्ट तंग और जीन गिरते हैं तरबारों के घावों के द्वारा रथिग के  
 अनेक नाले चलते हैं तहां भय से अनेक लोग बेहाल होकर 'वा१' 'मा' ऐसे  
 उचारते फिरते हैं ॥२९॥ इस प्रकार कई शूर्व और कायर भगकर ऐसे दण्डजाते  
 और मार नहीं सहते हैं जैसे रहनुमान के मत के मालकोष राग में ३ ऋषभ  
 और४पंचम स्वर दण्डजाते हैं कई बीर तरबार के अच्छे हाथ ऐसे दिखाने हैं  
 मानों५पड्ज स्वर की अंतिम मूर्च्छना विलावली रागिनी को बनाती है ॥३०॥  
 प्रमाण रहित धनुषों की ७ टंकार होकर बाणों का ८ विनान बनाता है और  
 इसमय का कारण पूछने को १० प्रत्यंचा वीरों के कानों से लगती है किनने ही  
 तलवार, वरछी, भाला, छुरी और कटार चलते हैं जिनसे ११कवच धारण क-  
 रनेवाले भयंकर वीर कटकर १२ छुरी भांति गिरते हैं ॥ ३१ ॥ कितने ही वीर  
 १३ भूमि पर हाथ देकर घूमते हुए उठकर चलते हैं सो मानों १४मय की छाक  
 लेकर गवार छकते हैं कई १५बाण छूटकर काल के समान भयंकर होकर खाते  
 फिरते हैं और कई१६टंके विंववाले चक्र चलते हैं सो मानों इंद्र का१७वज्र है॥३२॥

उत्तमंग १ कंधारा २ गिरैं अतीव बाहु ३ अंस ४ ॥

बंसपिष्टि पंसुली लगी मनौ कि पत्र बंस ॥

तेगके प्रहार केक रत्तके २ रचंत ताल ॥

सीसवहै सरोज तत्थ कुंतलावली सिवाल ॥ ३३ ॥

धीर के करीनतें मलंगि रूप यौ धरंत ॥

कूटतें कि केहरी नटी कि तेहरी करंत ॥

बख्खहीन व्है किते दुरैं करीन पाय बीच ॥

नाथ श्रावकीनके मनौ कि थंभ भोन नीच ॥ ३४ ॥

व्यंजनावली पिसाच सेंद के करैं बिसाल ॥

पाहुनी बुलात न्योति जुगिनीन खेत्रपाल ॥

छुट्टिजात केनके गुमान बान पोन छेहि ॥

लैब्धवर्णा अंग ज्यो कैंकाव्य छिन्न भिन्न व्हैहि ॥ ३५ ॥

होत सूर सोगुनै उछाहमाँहि दै प्रहार ॥

देन लौन भिन्न पै बहैं कि बावनावतार ॥

होत अंग हानि पै कितेनके रुकै न पानि ॥

बहुत १ मस्तक २ गद्दन, भुज और ३ कंध गिरते हैं और पीठ की हड्डी के लगी हुई पंसुली गिरती है सो मानों ५ बांस के हुआ प्रता गिरता है तलवार के प्रहार से कई ६ रुधिर के तालाव बनते हैं जिन में मस्तक तो ७ कमल और ८ केशों की पंक्ति शैवाल (सैवाल) है ॥ ३३ ॥ कई धीर लोग ९ हाथियों से ऐसे कूदते हैं जैसे १० पर्वत से सिंह और तीन छलांग मारती हुई नटी कूदती है कई बख्ख हीन होकर ११ हाथियों के पैरों में छुपते हैं सो मानों १२ जैनियों के देवता १३ मकानों के थंभों के नीचे स्थित हो रहे हैं ॥ ३४ ॥ १५ रसोई पकानेवाले कई पिशाच १६ भोजन के पदार्थों की बड़ी पंक्ति बनाते हैं खेत्रपाल न्योता देकर योगिनियों को पाहुनी बुलाते हैं बाणों के पवन को १७ छूते ही १८ कड़्यों के घमंड ऐसे छूट जाते हैं ज से १९ पंडित के आगे १६ छोटा काव्य छिन्न भिन्न हो जाता है ॥ ३५ ॥ प्रहार देने में धीर लोग सोगुने उछाहवाले हो जाते हैं जैसे देने और लेने में बा अवतार के २० पैर बढ़ते हैं अंग की हानि होने पर भी कितनों ही के २१ हाथ ऐसे नहीं रुकते जैसे युग (जुग) के खिलाड़ी हारने में भी मिटास

जानि द्वारिमैं मिठास द्यूतके खिल्हार जानि ॥ ३६ ॥

अदफार व्है गिरैं किते तुखार खगग ऊँति ॥

बंदि लेत भ्रात द्वैर मनौं कि बप्पकी विभूति ॥

केतु रत्त लिप्त के करीनपैं करें प्रकास ॥

लाखरंग भास राधमासमैं मनौं पलास ॥ ३७ ॥

डाकिनी कितीक बीर अंत्र लेत कंठ डारि ॥

मालिनी बिडारि ज्यों प्रमत्त लेत माल धारि ॥

के प्रवीर धीर कटि सत्रुकों नये प्रकार ॥

चित्रकार बुद्धिमैं करें ति चित्र चित्रकार ॥ ३८ ॥

प्रकार १ त्रकार २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

के गदा प्रहारकैं हनैं सकोप मत्थ ईड्ड ॥

लोहंकार कूटपैं मचैं मनौं कि लोह रिड्ड ॥

प्रेत के प्रेतस गोदकों सिरात वंक्क पोत ॥

लेत के प्रवीर व्याहि अच्छरी उतारि लोन ॥ ३९ ॥

रंगमाँहि 'बंदि के अनंदि' बंदि देत रंग ॥

पिक्खि जंग जो रहयो अनूरु रुक्कि कैं पतंग ॥

खिलन से नहीं रुकत ॥ ३९ ॥ १ कितने ही घोड़े तलवार का २ क्रीडा में ऐसे आगे कटका गिरते हैं जैसे पिता के शिष्य को दो भाई बाँट लेते हैं कई हाथियों पर ४ रुधिर से पुती हुई ध्वजाएं प्रकाश करती हैं सो मानों ५ वैशाखमास में लालरंग से ढाक प्रकाशित होता है ॥ ३७ ॥ कितनी ही डाकिनियां धीरों की आँतें कंठ में ऐसे डाललेती हैं जैसे मत्त मालिनियां फूलों की माला ६ नि काल कर धारण करलेती हैं कई धीर वीर शत्रु को नवीन रीति से काटते हैं सो ७ चितरे की बुद्धि में द्विचित्रा म करने का आश्चर्य कराते हैं ॥ ३८ ॥ कितने ही मदा का प्रहार ९ हच्छानुसार मस्तक पर करते हैं सो मानों १० लुहार की ११ ऐतन पर १२ लोह सुद्धों का निरंतर प्रहार होता है कई प्रेत १३ तपे हुए मांस को १४ मुख के पवन से ठंडा करते हैं और कई वीरों को अप्सराएं नौन (निमक) उतार कर व्याह लेती हैं ॥ ३९ ॥ १५ युद्ध में कई १६ भाट्यसन्न होकर १७ नमस्कार करके शावासी देते हैं अर्थात् प्रशंसा करते हैं, जिस युद्ध को १८ सूर्य १९ अरुण नामक सारापि को रोक कर देख रहा है. कई तरवार

केक तंग मारदे हरे करीन उत्तमंग ॥  
 तोरि शृंग मेरुके चलै मनो कि धारगंग ॥  
 के प्रसन्न गूँदतैं अघाय होत गिद्ध कंक ॥  
 त्यों प्रच्छन्नद्वारके प्रवेस खर्व वदै निसंक ॥  
 हाथि घाय फारमें दुरैं कितेक भीरु हंत ॥  
 ब्रह्मको उगान जानि चोर ज्यों दूरी बसंत ॥ ४१ ॥  
 कुब्ज १ अंध २ खंज ३ वहै नचै पिसाच दास काज ॥  
 साकिनी बढाय दंत के करै बिरूप साज ॥  
 ईसके हिपे गपेहु सीस के कहैं उतारि ॥  
 नौथ लेहु धारि नैक जुद्धदंतकों निहारि ॥ ४२ ॥  
 संध स्वीय रत्त डारि टोपमें कितेक सूर ॥  
 होय नम्रगाँत आत मात कालिका हजूर ॥  
 होत सैत्व छोरि एकवारके किते महीप ॥  
 दीपिका करै न तैलहीन ज्यों दसा प्रदीप ॥ ४३ ॥  
 दोष २ प्रेत अंतलै फिरै कडोंक घेर देत ॥

मारकर हाथियों के मस्तक काटते हैं सो मानों सुमेरु का १ मस्तक तोड़ कर  
 गंगा की धारा चलती है ॥ ४० ॥ कितने ही शिक और कंक २ मांस से तृप्त  
 होकर प्रसन्न होते हैं जैसे खिड़की के द्वार में ४ छोटे शरीर वाला शंका  
 रहित प्रवेश करता है तैसे वे मांसभोजीपक्षी मुनक हाथी आदि के शरीरों में  
 प्रवेश करते हैं कई कायर घायल हाथियों के प्रभावों में ऐसे छुपते हैं जैसे सूर्य  
 का उदय होना जानकर चोर ७ गुफाओं में छुपते हैं ॥ ४१ ॥ कई पिशाच  
 हास्य करने को कुपड़, अंग्रे और ६ खोडे होकर नाचते हैं कितनी ही शाकि  
 निया दांत बढाकर बिरूप साज बनाती हैं, १० शिव के हृदय पर (मुंडमाला में)  
 गपेहु भी कई मस्तक कहते हैं कि ११ हे नाथ हमको उतार कर कुछ १२ दांतों  
 का मुक्त भी देख लो "क्योंकि खाली मस्तक केवल दांतों का ही युद्ध कर सक  
 ता है" ॥ ४२ ॥ कई चोर अपना १३ तुर्न का रुधिर टोप में डालकर १४ मुककर  
 कालिका माता के सामने आते हैं कई राजा एक ही बार में १५ पराक्रम छो  
 ड देते हैं जैसे तैल से हीन १६ दीपक में १७ बत्ती प्रकाश नहीं करती ॥ ४३ ॥

खेतकार लट्टिये लगैं जरीब जानि खेत ॥  
 जंगमैं मलंग केक मल्ल व्है लगात जोध ॥  
 रंग माँहिं रंग लै करै कितेक जोध रोध ॥ ४४ ॥  
 सत्रुकंठ दंत दै पिबंत रक्त केक मूर ॥  
 गड्ढरी पछारि सारदूल ज्यों धनें गरूर ॥  
 मेघव्है मिले अनीक द्वैर प्रकोप बार्त मेल ॥  
 खगग त्यों कटार२ कुंत३ संगि४ बान५ बुंद खेल ॥ ४५ ॥  
 के करीन अंग लीन सखके करै प्रकास ॥  
 भानु अंधकारमैं करै अनेक जानि भांस ॥  
 सोरकी सिखा सिलगि जोरकी सु गज्जि जात ॥  
 ओरकी कहौ फितीक घोरकी घटा दबात ॥ ४६ ॥  
 होत जंग यौ लही समस्त दक्खिनीन हारि ॥  
 उद्यमो कहा करै न दैवें भद्र आनुसारि ॥  
 वित्थरे घुमंडिकै इरान मिच्छ जै बनाय ॥  
 खीजमैं भये गये धनें अरीन प्रान खाय ॥ ४७ ॥

### कुण्डलिका

५ कहीं पर आंत लेकर दो घेत घेरा देते फिरते हैं सो मानों ? खेतों करनेवाले  
 लाटने के लिये खेत में जरीब लगाते हैं कई युद्ध में मल्ल होकर कूदते हैं और  
 २ युद्ध में ३ प्रशंसा पाकर कई वीर दूसरों को रोकते हैं ॥ ४४ ॥ कई वीर शत्रु  
 के कंठ में दांत लगाकर ऐसे रक्त पीते हैं जैसे ४ सिंह बड़े घमंड से भेड़ को  
 पछाड़ कर रक्त पीता है. क्रोध रूपी ६ पवन के मिलने से मेघ रूप होकर  
 जैसे दोनों ५ सेना मिली तैसे ही ललवार, कटार, भाला, बरछी और बाणों  
 की ओंठों से खेलते ॥ ४५ ॥ फितने ही ८ हाथियों के अंगों में लीन हुए शस्त्र  
 प्रकाश करते हैं सो मानों अंधकार में अनेक ९ सूर्य १० प्रकाश करते हैं,  
 धारुदसे अग्नि लगकर जोरकी गर्जना करती है सो और की क्या कहें ११ भयं-  
 कर घटा की गर्जना को दबाती है ॥ ४६ ॥ इसप्रकार होते हुए युद्ध में दक्षिणियों  
 की हार हुई सो १२ भाग्य शुभ नहीं हो तो उद्यमो क्या करे १३ इरान के म्लेच्छ  
 जीतकर घुमंड कर १३ कैले और क्रोध में होकर बहुते शत्रुओं के प्राण खागये ॥ ४७ ॥

पानिप करि जुझके प्रबल, इम दक्खिन ईरान ॥  
 कैरन अजय दूरीकैरन, करन विजय मतिमान ॥  
 कैरन विजय मतिमान, रंग कुरुखेत जंग रुचि ॥  
 रुचिधर अहमदखान, जयो हुत अरि कृपान सुचि ॥  
 न सुचि भजे मरहठ, न सुचि भज्जे स्यानिप करि ॥  
 निप करि लये बधाय, गये अच्छरि पानि पकरि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

चीमाके सिरको चटके, खोजि कँटक रन खेत ॥  
 हारयो करि आयास हर, हारयो तैदपि न हेत ॥ ४९ ॥  
 जया तनय संध्या जिमहि, जनकू अमरख जगि ॥  
 न मिल्यो रंचक पँलचरन, गो तरवारिन लगि ॥ ५० ॥

॥ पट्पात् ॥

तनय नन्हके तिमहि बीर बिस्वासराव बढि ॥  
 नकखे तुरग निसंक पाने पकरहु पठान बढि ॥

\*ऊपर कहीहुई रीति से पराक्रम करके १ हाथों से पराजय को दूर करने और ४ विजय करने को दक्षिणी और ईरानी दोनों बुद्धिमान प्रबलता पूर्वक ऐसे लड़े जैसे बुद्धिमान धर्म्म और अर्जुन ने कुरुक्षेत्र के युद्ध क्षेत्र में दक्षिण पूर्वक युद्ध किया था ६ ज्ञान्ति को धारण करनेवाले अहमदखान ने तरवार खी १० अग्नि में शत्रुओं को होम करके जय किया, इधर मरहठों ने भी ११ जंगार रस का सेवन नहीं किया और १ बुद्धिमान करके १ मृत्यु से नहीं भगे "माघ काव्य के टीकाकार ने शुचि शब्द का अर्थ मृत्यु लिखा है" जिनको स्वर्ग में १४ कलश बंधाकर देवताओं ने बधा लिये और वे मरहठे अप्सराओं के १५ हाथ पकड़कर गये ॥ ४८ ॥ चीमा के मस्तक के १६ टुकड़े को १७ सेना के युद्धक्षेत्र में डेरकर शिव १८ परिश्रम करके थक गये १९ तो भी उस (मस्तक के टुकड़े) से स्नेह नहीं छोड़ा अर्थात् उसके नहीं मिलने पर भी डेरते ही रहे ॥ ४९ ॥ २० मांस खानेवालों को कुछ नहीं मिला ॥ ५० ॥ २१ घोड़े डाले अर्थात् शत्रु की सेना में घोड़े उठाये, यहाँ विरुद्ध लक्षणासे घोड़े उठाये ऐसा अर्थ होता है १२ हाथों में

\* ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल) के मत से कुण्डलिना बन्द में दोहे के अन्तिम चरण को पठाने में अर्थरहित नहीं होते तो उसको पुनरुक्ति मानते हैं जिसका ही उदाहरण वह कुण्डलिनी है ॥ ४८ ॥



होरी जिम हुरिपार निडर आशी असि नागिनि ॥

करी बहुत लारि कुमार दुजन तिय दुसह दुहागिनि ॥

सुरलोक संव्य अच्छरि सहित गंधर्वन गीत सु गयो ॥

श्रीमंत सुवन हारि न समुक्ति तरवारिनि तिल तिल भयो ५१

॥ दोहा ॥

रामराव १ नारुव २ रघुव ३, बाला ४ अंबक ५ बीर ॥

रामचंद्र ६ अंबा ७ रतन ८, सखाराम ९ हमगीर ॥ ५२ ॥

इत्यादिक उमराव सब, दक्खिनके तजि देह ॥

नाक गये बंधन नवल, नाक कलत्रन नेह ॥ ५३ ॥

इतिश्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशिवुम्मे  
दसिंहचरित्रेलब्धजया अहमदखानसमस्थलीसंविशाननिवारितजनकू  
क्षतमल्लारपराजयपलदक्षिणप्रेषणश्रीमन्तनन्हपुत्रविश्वासराव १ पि-  
तृवपकचीमा २ मुख्यसप्ततिसहस्र ७०००० सैन्यप्रेषणतदालीगोह  
रनिग्रहणादिल्लीशुद्धसंस्करणश्रुतेतदहमदखानाऽऽगमनदिल्ली १ रान  
२ सेनैक्यमहाराष्ट्रसैन्यमहारणभवनससामन्तविश्वासराव १ चीमा  
२ जनकू ३ मरणापवनजयसंवर्द्धनं पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥५०॥  
आदितः ॥ ३३१ ॥

पठानों को पकड़ा ऐसा कहकर ? डोली के दिनों में फाग (जेंहर) खेले  
तैसे २ नागणी लगी तरवार १ शत्रुओं की छियों को ४ अप्सरा को पाई  
तरफ-लेकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ स्वर्ग में ६ नवीन ७ स्वर्ग की छियों से ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महानम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के च-  
रित्र में जय पाकर अहमदशाह का अन्तरवेद में जाना और जनकू के घाव  
मिटाकर मल्लार का हारने का पत्र दक्षिण में भोजना १ श्रीमन्त नन्ह का पुत्र  
विश्वासराव और काका चीमा को मुख्य करके सत्तर हजार सेना को भोजना और  
उसका आलीगोहर को पकड़कर दिल्ली को शुद्ध काना सुनकर अहमदखां का  
आना २ दिल्ली और ईरान की सेना का एक होकर मरहटों की सेना से बड़ा-  
पुद्ध करना और उमरावों सहित विश्वासराव, चीमा, जनकू का मरना ३ य-  
वनों की जय होने का पचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥५०॥ और आदि से तीन

॥ प्रायो वज्रदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं जिम हुलकर प्रथित, वच्यो आयु बल एक ॥  
जाय भरतपुर जट्टकै, किन्नों घायन सेक ॥ १ ॥  
छोगि कलीजहु भरतपुर, सुनि मल्लारहिं आत ॥  
गयो हैदराबाद भजि, आलये निज अकुलात ॥ २ ॥  
किय स्वागत मल्लारको, सुदित जट्ट रविमल्ल ॥  
रखत द्रव्य सब नजरि करि, ठग्यो दक्खिन ढल ॥ ३ ॥  
तव हुलकर कछु दिवस तँहँ, रहि रचि कटक नवीन ॥  
भंडाटेरपुरादि सब, लूटि भदावर लीन ॥ ४ ॥  
पुनि मगके गुरु लघु नृपन, दंडत विजय दिखाय ॥  
गागरनो अभमल्ल गढ, जव करि बिंध्यो जाय ॥ ५ ॥  
कहुक शरि रठौर करि, दयो उचित पुनि दंड ॥  
परि पायन मल्लारके, सख्यो हुकम अखंड ॥ ६ ॥  
हुलकर बहुरि प्रपान करि, कोटा जनपद आय ॥  
दिन कछु घाँटे मुकुंददर, रह्यो मुकाप रचाय ॥ ७ ॥  
अहमदखान पठान इत, दक्खिन जिति दुरंत ॥  
आलीगोहर साह पुनि, किय दिहिय तिय कंत ॥ ८ ॥  
मुख्य वजीर नवाव कारे, लखनेऊ नगरेसँ ॥  
मुगजन राज्य जमाय गो, लंघि अटक निज देस ॥ ९ ॥  
इत दक्खिन श्रीमंत सुनि, स्वीय पराजय सोर ॥  
चढि सत्वर अप्पुन चलयो, जवननै डारन जोर ॥ १० ॥

सौ दफतीस ३३१ मयूख छप ॥

१ प्रथित ॥ १ ॥ २ अपने घर ॥ २ ॥ ३ सूर्यमल्ल जाट नें ४ सामर्थी ५ दक्षिण की  
ढाँच को रक्ता ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६ घटे होते ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ कोटा के देश में ८ मुकु  
दर के घाँटे में ॥ ७ ॥ ८ दिह्यो रूपी स्त्री का यनि ॥ ८ ॥ १० लखनेऊ नगर का  
पति ॥ ९ ॥ ११ ययनों पर ॥ १० ॥

पट्टपात् ॥

संध्या जनकू पट्ट दयो कंदारराव १ कँहँ ॥  
अरु दत्ताके पट्ट धरयो माहजि२ प्रवीरतँडँ ॥  
क्रम सन नाती१ पुत्र२ अडर राखीजीके ये ॥  
दासी औरैस दुव२ हि सचिव धन मन कारि सेये ॥  
सजि संग सुभट इत्यादि सब क्रम प्रणव जितन करयो ॥  
श्रीमन्त नन्ह बिरचन विजय दिल्ली उप्पर उप्परयो ॥११॥

॥ दोहा ॥

दक्खिनके बिपरीत दिन, हुकम बिगारन हार ॥  
दैइव इंगरेजन उदित, करत अवहि करतार ॥ १२ ॥  
करत मिजल श्रीमंत कछु, बढि वपु रोग बिसेस ॥  
प्रानन तजि परलोक गत, साहू सुत सचिवेस ॥ १३ ॥  
तब मरहठन सुरि तखत, निज प्रभुके सिर नाय ॥  
सुत जेठो श्रीमंतको रक्खयो माधवराय ॥ १४ ॥

॥ रुचिरा ॥

बुल्लयो इत बुंदीस नृपति निज दीप अनुज जयनैर रह्यो ॥  
अपकृत तास सकल बिस्मृत करि होय सदय अति हेत चह्यो ॥  
रूपय लक्ख१००००००पटा जुत रंनरस रसिक कापरनि नगर दयो  
परिखंद विरचि बुलाय बचन पट्ट अप्पि अभय हिम लाय लयो ॥१५॥

॥ हीरकम् ॥

जैपुर नृप माधव इत वारित कर जानिकै ॥  
नौरव सिरदारसिंह बिंठिय द्रुत आनिकै ॥

१ पोता २ पहला तो दासी (पासवान) का और दूसरा विवाहिता स्त्री का पुत्र ॥ ११ ॥ ३ भाग्य ॥ १२ ॥ ४ सचिवों का पति ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ बुलाया ६ दीपसिंह को ७ अपकार सब प्रभुलकर ८ युद्ध के रसका रसिक १० सभा करके ११ दृष्ट से लगा लिया ॥१५॥ १२ खिराज नहीं देना जानकर १३ नरु का

कारन रनथंभ अगग दक्खिन जयनैर ए ॥  
 हमरो हमरो उचारि कुप्पिग रचि बैर ए ॥१६॥  
 जैपुर उमरावन सन माधव तब यों कहीं ॥  
 दक्खिन सन मेल कोउ मम भट न करो सही ॥  
 नारव सिरदार तदपि हुलकर पति भिंटयो ॥  
 सम्मुह कर जोरि गो रु रक्खन निज भू नयो ॥ १७ ॥  
 मन्नि सु अपराध कुप्पि कूरम अव आयकै ॥  
 बिटिय उनिपार मार तोप मचकायकै ॥  
 संबत धूति अह अवनि १८१८ पाउस गत कालमै ॥  
 बिबल हुव नारव इम संगर विकरालमै ॥ १८ ॥  
 रन करि कछु काल बहुरि नारव भय संधिकै ॥  
 माधव महिपालके पय लगिय सैय बंधिकै ॥  
 दै कछु दम दम्म स्वामि आयस सिर रक्खयो ॥  
 हो तुम असुनाथ दास हैं हम इम अक्खयो ॥ १९ ॥

॥ चुलियाला ॥

उदयनैर नृप रान रान इत, राजसिंह दिय छोरि कलेवर ॥  
 सह अंतहपुर पुर सकल, तैंहैं संहसा हुव त्रास घोरतर २०  
 सोलह आदिक तब भुंभट, अंतहपुर प्रच्छेन्नद्वार गत ॥  
 रानिन प्रति विन्रति रचिय, मंडि उचितव्यवहारधर्म मत २१  
 अक्खिय नृप परतापको, अन्वैय किय ईकलिंग नष्ट अब ॥  
 पुच्छत हम यातैं प्रकट, सोलह १६ अरु बत्तीस ३२ प्रमुख सब २२

१ रणथंभ (रणतम्वर) के कारण ॥ १६ ॥ २ से ३ तोभी ४ अपनी भूमि रखने  
 को नमा ॥ १७ ॥ ५ उणिपारा को घेरा ॥ १८ ॥ ६ हाथ बांधकर ७ दंड के रूप में  
 आज्ञा ९ प्राणनाथ ॥ १९ ॥ १० अचानक ११ अत्यन्त घोर ॥ २० ॥ १२ उमराव  
 १३ जनानी छोड़ी पर जाकर ॥ २१ ॥ १४ वंश १५ मेवाड़ के राजा के इष्टदेव  
 का नाम एकलिंग महादेव है १६ आदि "मेवाड़ में घड़े दरजे के उमरावों  
 की गणना सोलह और दूसरे दरजे के उमरावों की गणना बत्तीस है" ॥ २२ ॥

जो रानिय आधान जुत, हो कोडक तो कैल निहारिहिं ॥  
 यह नहि तो अरिसिंहकोँ, बैठारन हम पट्ट विचारहिं ॥२३॥  
 उत्तर तब अवरोध सन, प्रकट सुनि रानीन पठायउ ॥  
 नहि दोहँदलच्छन छिपत, क्यों तुम यह संदिग्ध कहायउ२४  
 सुभटन यह उत्तर सुनत, रान प्रताप कनिष्ठ भ्रात तब ॥  
 गहिय पति अरिसिंह किय, परिपाटी व्यवहार सद्धि सब२५  
 अरिसिंहहु तब अरज यँहँ, पठई नृप परताप तियन प्रति ॥  
 तुम धारत आधान तो, रंचक नहिं मम राज्य माँहिं रँति२६  
 राज्यसिंह संतति रहत, ओहि मात सब दासहि जानहु ॥  
 नृपता यह मम जोग्यनहिं, पट्ट अँप्पहु नहिं छँद प्रमानहु२७  
 पठई रानिन अक्खि पुनि, अब तुम नृप अरिसिंह उदयपुरा॥  
 करहु नाँहिं संदेह कछु, धरहु राज्य अधिकार भार धुर २८  
 इत माधव जयपुर अधिप गिनि बिगरे मरहट्ट लोभ गहि ॥  
 उनको हो निज छिग अमल, किय सु देस स्वाधीन उचित कहि२९  
 संत्वर यह कैटु बत्त सुनि, जयपुर सिर मरहट्ट सजे जब ॥  
 पठयो बुँदिय पत्त लिखि, त्वरित दँरित कछुवाह भूप तब ३०  
 करन भीर यह कैलहै, पृतना निज मम पास पठावहु ॥  
 मरहट्टन सन मंत्र रचि, वा उनको यह कोप उठावहु ॥३१॥  
 संभर पति इम पत्र सुनि, अजितसिंह निज पुत्र भेजिदिय॥  
 सहँसपंच५०००दल संग करि, कुम्भ कथित स्वीकारसकल किय३२  
 सक बिक्रम धृति १८१८समय, कुमर अजित इम बीर सिलह करि ॥

१ गर्भ सहित २ समय देखे ॥२३॥ ३ जनाने से ४ गर्भ छिपा नहीं रहता ५ संदेह युक्त ॥ २४ ॥ ६ राणा प्रतापसिंह का छोटा भाई ७ परस्पर का ॥२५॥ ८ प्रीति ॥ २६ ॥ ९ हे माताओ १० आप भी चतुर हो सो ११ छल मत जानो ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १२ शीघ्र १३ कहुँ बात सुनकर १४ डरकर ॥ ३० ॥ १५ समय है ॥ ३१ ॥ १६ कछुवाहे (माधवसिंह) का कहना ॥ ३२ ॥

जव ९ हायन बय बिच निडर, भीर गयो जयनैर हरख भरि ॥ ३३ ॥  
 सुनि माधव अति जव समुख, अगग रीति सब लंघि रु आयउ ॥  
 मुत्तिय डुंगरि वार मिलि, विविध सद्धि सतकार बधायउ ॥ ३४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमः । शशावुम्मेद-  
 सिंहचरित्रे आगुर्वलाऽवशिष्टमल्लारभरतपुराऽऽगमनतद्भीतकलीज-  
 खानहैदराबादपलायनस्वीकृतजट्टोपायनलुण्ठितभदावराऽऽदिदेशद-  
 शिडतगागरणीशाऽभयसिंहहुलकरकोटाजनपदमुकन्ददरघट्टपतनप-  
 ठानाऽहमदखानाऽलीगोहर्दिल्लपर्वणासुजाउहोलावजीरभिवनाऽहमद-  
 खानैरानगमनश्रुतस्वपराजयजनकू १ दत्ता ९ स्थानाऽऽपन्नकेदाररा-  
 व १ माहजी २ सहितदिल्लीविजयाऽर्थप्रस्थितश्रीमन्तमरणात्तत्सुतमा-  
 धवरायपितृपट्टपापणलुन्दीन्द्रसमाहूतसोदरदोपसिंहाऽर्थकापरणिनग-  
 रदानकूर्मराजभाधवसिंहमल्लारमिलनसाऽऽगसनाश्वसरदारसिंहनग-  
 रोणियारावेष्टनतञ्चरणपतनदगडद्रव्यनिवेदनशीर्षोद्वराजोदपुरेशराणा-  
 राजसिंहमरणापितृव्यकाऽरिसिंहतद्वीनिविशानज्ञातनिर्वलमहाराष्ट्र-

१ वर्ष ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशिमें उम्मेदसिंह के चरित्र-  
 में आगुर्वल के बाकी होने से मल्लार का भरतपुर आना और उसके भय से  
 कलीजखां का हैदराबाद भागना १ जाट की दो हुई भेट को स्वीकार करके  
 भदावर आदि लूटकर गागरनी के पति धमयसिंह का दंड देकर हुलकर का कोटा के  
 देश, मुकन्दरा के घाटे में मुकाम करना ७ पठान अहमदखां का आलीगोहर  
 को दिल्ली देना और सुजाउहोला का वजीर होना २ अहमदखान का ईरान  
 में जाना और अपना पराजय सुनकर जनकू और दत्ता के स्थानापन्न केदार  
 राव और माहजी सहित दिल्ली को विजय करने के अर्थ प्रस्थान किये हुए  
 श्रीमन्तका मरना और उसके पुत्र माधवराय का पिता का पाट पाना ४ बुन्दीश  
 के बुलाये हुए सगे भाई दीपसिंह के अर्थ कापरण नगर का देना और कछवाहे  
 राजा माधवसिंह का हुलकर से मिलने के अपराध से नरुके सरदारसिंहके नगर  
 उणियारा को घेरना और उसके चरणों में पड़कर दंड का धन नजर करना ५  
 शीर्षोद्वरा के राजा उदयपुर के पति राणा राजसिंह का मरना और उसके  
 काका अरिसिंह का गद्दी बैठना ६ मरहठों को निर्वल जानकर जयपुर के पति

जैपुरके राजा का कुमर को लिखत देना] सप्तमराशि-द्विपंचाशमयूख (३७०१)

जयपुरेशतद्देशस्वीकरणश्रुतैतत्सज्जदक्षिणसेना ऽऽगममाधवसिंहबुन्दी  
सहायप्रार्थनरावराणामहाराजकुमाराऽजितसिंहजयपुरप्रेषणसंमुख  
ऽऽगतजीयसिंहितत्सन्मननमेकपञ्चाशत्तमो ५१ मयूखः॥ ५१ ॥  
आदितः॥ ३३२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह मिलि कुमर इम, माधव सन सह मौद ॥  
पहुँच्यो डेरन आनि पहु, विरचत लरन बिनोद ॥ १ ॥  
किय अपुब्बे माधव कहिय, बुंदिय पति यह बत ॥  
सुनि रन पट्टप स्वीये सुत, यहँ पठयो अनुरत्त ॥ २ ॥  
कारन पायं बिसेस कछु, दक्खिन दल किय देर ॥  
माधव सुनि रक्खयो मुदित, कुमर हड्डु नृप केर ॥ ३ ॥  
क्रीड़ा बहु आखेट कंम, दिन दिन सहल दिखाय ॥  
सम्मुह रक्खखो तखत सिर, पुनि महलन पधराय ॥ ४ ॥  
दयाराम तँहँ हड्डु द्विज, किय विन्नति करजोरि ॥  
जयहरि लिय लिखवाय जब, नृप सन लिखित निहोरि ॥ ५ ॥  
सुत वहेहँ जु समप्पिहँ, हम तुमको कछवाह ॥  
धरहिँ अंक दायाद धुव, चिति रावरी चाह ॥ ६ ॥  
लयो जनक तुमरे लिखित, उचित दैन अब एह ॥  
नृप संभर अनुकूल गिनि, सद्धु बिहित सनेह ॥ ७ ॥

का उनका देश लेना यह सुनकर सज्जकर दक्षिण की सेना को आना ७ माधव-  
सिंह का बुन्दी से सहाय की प्रार्थना करना और रावराजा का राजकुमार  
अजितसिंह को जयपुर भेजना ८ जयसिंह के पुत्र का उसके रान्मुख आकर  
सन्मान करने का इकावनवां ५१ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से  
तीनसौ बत्तीस ३३२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अर्घ्व २ अपने पाटवी पुत्र को ३ प्रीति करके भेजे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ शि-  
कार ५ तखत के ऊपर सम्मुख ॥ ४ ॥ ६ जयसिंह ने ७ राजा बुधसिंह से ॥ ५ ॥  
८ किसी भाई को गोद रख लेवेंगे ॥ ६ ॥ ९ तुम्हारे पिता ने १० उचित ॥ ७ ॥

हो मुहुकमसिंहोत तैंहँ, गिठर हड्ड नगराज ॥

आश्रित कूरम ईसके, कारग स्वाधि अज काज ॥ ८ ॥

लुल्लयो सोहु बिलंब अय, न करहु हित पहिचानि ॥

जैपुरपति यह पुनि सजय, अप्प्यो लिखित सु आनि ॥ ९ ॥

दक्खिन कटक बिलंब लखि, जानि सदन बिनु जोर ॥

राजकुमारहिं सिक्ख दिय, माधव कूरम मोर ॥ १० ॥

जाय पटालयै जैनक जिम, किय कुमार सतकार ॥

अक्खिय हित बिच अंतर न, इत उत गिनहु उदार ॥ ११ ॥

इम कहि इक१ गज दुवर अरव, दुवर सिरुपाव सु साज ॥

नग भूखन इक१ रुचिर नव, किन्न नजरि हित काज ॥ १२ ॥

अरु दलेल उमराव निज, धूलापुरप समथ ॥

लछमन ताको पुत्र लघु, पहुँचावनि दिय सत्थ ॥ १३ ॥

दयाराभ तैंहँ अरज किय, कूरम प्रति पटु प्यार ॥

किय तुम भेट कुमारकी, संभरपति सतकार ॥ १४ ॥

नियम गिन्यो हित माँहिं नहिं, यातैं यह दुव एह ॥

पै अब संभर भूपतैं, अर्द्धलिखावहु लेह ॥ १५ ॥

जयपुरके दफतर जयहि, लिय भाभव लिखवाय ॥

सुनहु राम छितिपाल सो, सुनिबे योग्य सुभाय ॥ १६ ॥

॥ सोला ॥

संभरपतिके समुह कोस इक१ आवहिं कूरम ॥

कुमर समुख अधकोस सु पुनि आवहिं सनेह सँम ॥

कूरम डेरन हड्ड जात तोरन लग आवहिं ॥

कुमरहि पायंदाज अंत रहि मिलि लै जावहिं ॥ १७ ॥

नृपति परस्पर द्वैरहि मिलत मस्तक कर आनैं ॥

॥ ८ ॥ १ शीघ्र ॥ ९ ॥ १० ॥ २ डेरे जाकर ३ पिता के जैसे ॥ ११ ॥ ४ घोड़े ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ बुन्दी के राजा को देने का सत्कार कुमारको दिया ॥ १४ ॥ ६ लेख में, राजा से कुमार के आधा लिखवाओ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ से द्वाार तक ॥ १७ ॥



खितबुधसिंहलेखप्रत्यर्पणबुन्दीन्दसत्काराऽर्द्धरीतिराजकुमारसत्कार  
रलेखजयपुरलेखमन्दिरलेखनप्रीतिपूर्वककृतस्वसुभटसार्थाऽजितसि  
हबुन्दीप्रतिप्रस्थापनं द्विपञ्चाशत्तमोऽंशमयूखः ॥ ५२ ॥ आदितः ३३३

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

संवत् नव ससि धृति १८१९ समय, माधव कौडक काज ॥  
आयो गढ रनथंभ तैंहैं, बुल्लयो संभरराज ॥  
सचिव तास आये समुक्ति, गो बुंदियपति तत्थ ॥  
पुर खंडारि समीप दुबर, सुपहु मिले हित सत्थ ॥ २ ॥  
संभरनृपके कुस्म सन, सुभट मिले इकसहि ६१ ॥  
उभय२ मिलत नृप अरिनको, नूर गयो सब नट्टि ॥ ३ ॥  
दिय लिय गज तुरगादि सब, किय कछु दीह मुकाम ॥  
इत बुंदिय नृप अंगनां, मुख गई सुरधाम ॥ ४ ॥  
पहिलें सक खट ख धृति १८०६ पर, लहि प्रतिपद १ बैसाख ॥  
ईंडरपतिजा भोगिनी, मरी सु मेचक पाख ॥ ५ ॥  
पुनि सत्रह धृति १८१७ साल पर, अगहन मेचक पाय ॥  
उदाउति गतअसुं भई, छट्ठी ६ दिन गर्द छाया ॥ ६ ॥  
अब बसु ससि धृति १८१८ अब्दके, पुणिणाम १५ चैत अनेह ॥  
मंहिषी इहु महीपकी, दिय भल्लिय तजि देह ॥ ७ ॥  
खबरि तास खंडारिही, पहुँची संभर पास ॥  
नृप हुव लखि अनुचित नियैति, अंतर कछुक उदास ॥ ८ ॥

सत्कार से आधी रीति राजकुमार के सत्कार की जयपुर के दफ्तर में लिख  
वाना २ प्रीति पूर्वक अपने उमराव को साथ करके, बुन्दी के कुमर अजितसि  
ह को पीछा बुन्दी भेजने का वाचनवां ५२ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि  
से तीन सौ तेतीस ३३३ मयूख हुए ॥

१ माधवसिंह २ बुल्लया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सुपहु दुहुँन२ तत्थहिं सुन्पौं, अब दक्खिन दैल आत ॥  
 केदार१ रु माहजि२ क्रमिग, घल्लन संघ्या घात ॥ ९ ॥  
 सुनि माधव जयपुर गयउ, आयउ स्वपुर उमेद ॥  
 दिस दिस मचि दक्खिन दहल, भूपन सिखवत भेद ॥१०॥  
 ॥ रोला ॥

इत संघ्या उज्जैन आय मालव निज बस किय ॥  
 अयन दोय२ रहि तत्थ दाव मरुधर जित्तन दिष ॥  
 चिंति जयाको बैर चंड सजि कटक चलाये ॥  
 यँहँ सब नृपन वकील ईष्ट सखन द्रुत आये ॥ ११ ॥  
 इम सबेग अजमेर पत रन खुलि पंताकन ॥  
 बिजयसिंह सन बिजय लैन किय मंत्र कैजाकन ॥  
 यह सुनि मरुधर ईस भीरु बुंदिय पुर भूपति ॥  
 बुल्लयो दै दैल बिहित मडि मंत्रन जुज्झन मति ॥ १२ ॥  
 इत अति धृति धृति१=१९अब्द, असित सुचि छट्टि६अरक जुत  
 भूप भुजिष्यां बहुरि जनिंग संग्रामसिंह सुत ॥  
 बलि मरुपति दल बीच हड्ड हंकिय सहाय हित ॥  
 मम्मूह आयउ बिजयसिंह चाहत प्रमोद चित ॥ १३ ॥  
 दिप डेरा बुंदीस सूरसागर तड़ागँ तट ॥  
 दक्खिन दलकी देर भनत भूपाल तिमहि भट ॥  
 यँहँ वकील अजमेर भेजि मरुज साम सन ॥  
 अठलकख दै दम्म द्रोह मिट्टयो मरहइन ॥ १४ ॥  
 तव दब्बन दुंदार चलयो दक्खिन दैल सत्वर ॥  
 लुट्टिय पुर मोजाद चारु आपन धन चैत्वर ॥

१ सेना २ चले ॥१॥१०॥ ३ बांझित साधने के लिये ॥१॥ ४ युद्ध की पताका  
 खोलकर ५ युद्ध करनेवालों ने ६ पत्र देकर बुलाया ॥ १२ ॥ ७ आपाद यदि ८  
 अदीतवार सहित ९ दासी (पासवान स्त्री) १० जना ११ पुनि ॥ १३ ॥ १२  
 तड़ाव के किनारे ॥१॥ ११ सेना शीघ्रचली १४ विकी का यजार १५ चौहदा

स्वीय पितृव्यक सुता बुल्लि ईडरपुर सन यँह ॥  
 उदयकुमारि अभिधाने मरुप व्याहन संभर कँह ॥ १५ ॥  
 अतिधृति धृति १८१६ आषाढ नवमि ९ अवदता लग्न पर ।  
 बुंदीसहिँ सबिनोद दई दुलहनि बिवाहि वर ॥  
 रक्खपो निज आवास नृपहिँ सनमानि पक्ख त्रय ३ ॥  
 हुव प्रतिदिन मुद दुहुँन २ दोजि २ सितपक्ख चँद्रोदय ॥ १६ ॥  
 पुँटभेदन मोजाद इत सु कोटेस सचिव गय ॥  
 अखैराम कायत्य मिलन मरहवन अघ मय ॥  
 संध्या माहजि श्रवर्न पिसुन पूरे अवसर लहि ॥  
 संभर मरुप सहाय दोन कारन अनेक कहि ॥ १७ ॥  
 दै कछु छुन्नै दम्म मोरि जित तित माहजि मन ॥  
 बुंदिय उप्पर वेग प्रथित आन्योँ कराय पन ॥  
 कटक अचानक सुररि चाहि हहुन दंडन चित ॥  
 अनी बिबिध उम्महिय हुँदिर भदव लहरु मित ॥ १८ ॥  
 द्रंग आत दक्खिनिन सुनत मरुधर तजि संभर ॥  
 आयो बुंदिय अरहि सज्यो दुदर चहि संगर ॥  
 पुटभेदैन प्राकार सज्जि चाहत अरि आगम ॥  
 मानहु चातक मत्त सघन घन भद समागम ॥ १९ ॥  
 चित माहजि लहि चाह दोरि इत बँपु दक्खिन दल ॥  
 बुंदिय सँहसा बिँटि कियउ तोपन कँलकलकल ॥  
 अखैराम दँल अपि सजव बुल्लपो कोटेसहिँ ॥

- १ अपरे काका की पुत्री को बुलाकर २ नाम ३ मारवाड़ के राजा ने ॥ १५ ॥  
 ४ सुदि ५ अपने महलों में ६ शुक्लपक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा के उदय के  
 मान ॥ १६ ॥ ७ मोजाद नामक पुर में ८ उस चुगल ने माहजी सिधिया  
 कान भरे ॥ १७ ॥ ९ विदित १० भादवे के मेघ की लहरों के समान ॥ १८ ॥  
 ११ शीघ्र १२ नगर के कोठ को ॥ १९ ॥ १३ दक्षिण की सेना रूपी शरीर  
 दौड़कर १४ अचानक १५ अत्यन्त कोलाहल १६ पत्र देकर कोटा के पति को

सनुसल्ल दल सुनत चलयो दब्बत दुत देसहिं ॥ २० ॥

अनतापुरपति अजित प्रथम जो हुवकोटापति ॥

पट्ट तास यह पाय आय बुंदिय रन किय अति ॥

संध्याके भरि श्रवण बन्यो जयकार तास बल ॥

जिहंग लहि दुखा जानि आखु मारत मारत अल ॥ २१ ॥

इम माद्वजि अपनाय बेढि माधवहर बुंदिय ॥

संध्याको साबात सौरको कुंल ज्वलन किय ॥

दक्खिन १ पूरब २ दुव २हि तरफ तापन मचि तोपन ॥

कुल गोलन प्राकार लगे कोपन रंय लोपन ॥ २२ ॥

थाल सलिल गति थरकि मही डुंगर डगमगत ॥

अतल बितल बसवान लज्जि सुतल प प ल गत ॥

बनि बनि प्रानन पिमुन बीररस बाढत नारद ॥

धमि धमि तोपन धूम सहज छावत घन सारद ॥ २३ ॥

तुटत निज सिर त्वरित सूर न चहैं रु चहैं सिव ॥

इत मारन अरि अतुल उत सु हिंसन अनिच्छ इव ॥

शीघ्र बुलाया १ पत्र सुनते ही ॥ २० ॥ २ अजितसिंह ३ इस (शत्रुशाल) ने उस (अजितसिंह) का पाट पाकर उस सिन्धिया के बल से ४ जय करनेवाला हुआ ५ मानों सर्प को चूहे को पकड़ा हुआ जानकर ६ बिच्छू उड़क मारता है सर्प के मुख में चूहा होने के कारण अपने मरने का भय छोड़कर बिच्छू उस सर्प के डंक मारता है" ॥ २१ ॥ ७ माधवसिंह हाडा के वंशवाला बुन्दी को घेर कर ९ सिन्धिया रूपी बारूद के १० किनारे में आग लगाई "यहां सिन्धिया की अति प्रबलता दिखाने को वीप्साय में साबात और सौर दोनों एकाधवाची शब्दों का प्रयोग किया है" गोलों के समूह ११ कोद का १२ को ध के वेग से लोप करने लगे ॥ २ ॥ थाल में भरे हुए १३ जल की भांति १४ वा स करनेवाले लाजित होकर १५ सुतल के पति के पैरों लगते हैं १६ प्राणों की चुंगली करके १७ शरद ऋतु के बदल ॥ २३ ॥ १८ शीघ्र तूटे हुए अपने मस्तकों को बीर नहीं चाहते और मुंडमाल करने को शिव चाहते हैं, इधर (बुन्दीवासी) शत्रुओं को मारने में तुलना रहित हैं और उधर हिंसा करने में १९ इच्छा रहित की भांति हैं.

काली खप्पर कतिन गोद गत तदपि नैटन गहि ॥  
 पीवनदेत न पलल करहु उपवास पचन कहि ॥ २४ ॥  
 सुरभि पराग समान खेद रवि मधुप दगन खिणि ॥  
 अंधी करत अनूरु सहित कर्दम बिधाप किरि ॥  
 तारागढ सिर तोप लौन कचमाल उतारत ॥  
 बंदी गिदनि बुलि सूर गति गिरिहि सिंगारत ॥ २५ ॥  
 अंक गलिज जिम अटत तिमिर फारत गोले तिम ॥  
 तोप अदिके तनुज करहि संख्या पावन किम ॥  
 देत निसैनिन दोरि सूर आरोहत कपिसिर ॥  
 इतके अरि आघात बहि डारत तिन्ह बाहिर ॥ २६ ॥  
 तकि तवि छिदन तोपदार बेधत अगु गोलन ॥  
 पवधं तिनके पात भुकत घुम्त भुक भोलन ॥  
 धमकि खनकत धूजि पृथुल बलाभिन पर खप्पर ॥  
 बिथुरत जरि बाजार छार टप्पर कठछप्पर ॥ २७ ॥  
 भीरुन मुख छवि भाँति नटत जल दंग निवानन ॥

१ कालिका के खप्पर में गया हुआ चारों का मांस २ नृत्य करके  
 उसको रुधिर नहीं पीने देता है सो मानों उससे कहता है कि यह  
 रुधिर पाचन (हजम) नहीं होवेगा सो उपवास कर ॥ २४ ॥ ३ वसन्त ऋतु के  
 पुष्प रज के समान धूलि सूर्य रूपी ४ अमर के नेत्रों में खिरकर ५ सूर्य के सा-  
 रथिको अंधा करता है और कांधर है सो चराह को ६ कीचड़ सहित ७ क-  
 रता है = केसों की माला को काटती है "लुब्धेदने" इस धातु से, लोभ  
 का अर्थ काटना है ॥ ८ ग्रीधों रूपी भाटों को बुलाकर १० बुन्दी के पर्वत तक  
 चारों की तरह शृंगार कराता है ॥ २५ ॥ ११ जैसे सूर्य १२ अन्धे को फाड़ता है तैसे  
 गोले गतिजों में फिरते हैं १३ तोप रूपी अदिती के पुत्र (देवों रूपी गोलों) की  
 संख्या को कैसे १४ पास करे हैं अर्थात् जैसे देवताओं की गणना नहीं हो सकती तैसे ही  
 गोलों की गणना भी नहीं हो सकती १५ कुंगुरों पर चढ़ते हैं १६ नरवारों के प्रहारों  
 से ॥ २६ ॥ १७ पर्वत १८ उन गोलों के पड़ने से १९ बड़ी मियालों (घर के छाने के  
 धक काष्ठ) पर ॥ २७ ॥ २० कायरों के मुख की शोभा नष्ट होवे तैसे नगर के  
 निवाशों का जब नष्ट होता है

सोदागर रसबीर रच्यो बिक्रय इम प्रानन ॥  
 विरहिनि के उर विविध भये तपि तपि भुवमंडल ॥  
 कै जिस मनि रविकांत फरस ग्रीखम दाहक फल ॥ २८ ॥  
 अंड रु गोपुर उडत थंभ मंडप थहरावत ॥  
 गगन गिह गति प्राँव लोल चढत रु लहरावत ॥  
 माघ त्रयोदसि १३ असित अंक ससि धृति १८१९ सक अंतर ॥  
 माहजिकौ मिलवाय सज्यो बुंदिय इम संभर ॥ २९ ॥  
 सुनि यह दैन सहाय कटक पठयो कूरमपति ॥  
 कहयो हड्ड जय करहु हेतिबल करहु सत्रु हति ॥  
 पामंडहेडापुरप होय कूरम सेनानी ॥  
 राजाउत द्वारकादास आयो अभिमानी ॥ ३० ॥  
 साहिपुरप उम्मेद त्योंहि पठयो सहाय दल ॥  
 सुत लघु मालिमसिंह बिरचि सेनेस महाबल ॥  
 बिजयसिंह मरुराज जदपि बुंदिय रन जान्यो ॥  
 भेजी तदपि न भीर मूढ कृतघन पन मान्यो ॥ ३१ ॥  
 अठ ८ पहर इत हड्ड भूप कटिवंध न खोलत ॥  
 पलपल बिच प्राकार भटन ललकारत डोलत ॥  
 सुत हुव पृथ्वीसिंह भूप जैपुरपतिके जह ॥  
 तास बधाई जंग होत आई बुंदिय तह ॥ ३२ ॥  
 उच्छव ताको अतुल सुनत संभर नरेस किय ॥  
 मरन मंडि रन तुमुल बहुत दिन किय निसंक हिय ॥

१ बीर रस रूपी सोदागर ने इसप्रकार प्राणों का २ व्यापार रचा ३ विरहिणी  
 लियों के हृदय के समान भांति भांति से ४ अथवा जैसे ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकान्त  
 मणि का फल फर्थ (बिछोना) दाहनेवाला होवे तैसे ॥ २८ ॥ ५ दुरज और  
 शहर के दरवाजे ६ आकाश में ग्रीधों की भांति चपल पत्थर चढकर लहराते  
 हैं ७ कृष्ण पक्ष ॥ २९ ॥ ८ जयपुर के राजा माधवसिंह ने ९ शत्रुओं के बल से  
 ॥ ३० ॥ १० उम्मेदसिंह ने ११ सेनापति करके ॥ ३१ ॥ १२ कोट पर ॥ ३२ ॥ १३ भयकर

जान्योँ तुटत नाहिँ नैर बुंदिय माहजि जब ॥  
 अहारि साम उपाय पत्र पठयो नृप प्रति तब ॥ ३३ ॥  
 कोटापतिको कैथित मन्नि संगर यहँ मंडयो ॥  
 अप्प मिलहु अब आय छुद साँदस हम छंडयो ॥  
 सुनि नृप अरि कृत साम चिति नय मिलन बिचारिय ॥  
 माधानी भगवंत दुग रक्ख्यो रक्खवारिय ॥ ३४ ॥  
 अक्खिय हमको मारि नगर अरि लैन विचारहिँ ॥  
 तो भाई मरि तुमहु देहु पुनि सूबेदारहिँ ॥  
 माहजि हितु मिलाप कियेँ नृप निकसि यहै कहि ॥  
 आयउ तौरन अवधि समुख संध्याहु तौर सहि ॥ ३५ ॥  
 हथजोरी करि हुलसि जाय बैठे परिख ॥ दुवरे ॥  
 सांपराध संध्या समेत हड्डन विनोद हुव ॥  
 करन जोरि तब कहिय नम्र माहजि आगस निज ॥  
 सुनि हित जुत संभरहु बिकंच कियेँ दग बैरिज ॥ ३६ ॥  
 अक्खिय तुम कोटेस कुटिलको क्योँ न इष्टं किय ॥  
 सुनि जोरे तस सयन पिक्खि पुनि नृप लुल्लिय प्रिय ॥  
 खरनीके कछु दम्म चढे आदिक गिनि दिन्ने ॥  
 हित अन्योन्ध बढाय बिदा मरहड्डन किन्ने ॥ ३७ ॥  
 याहि बरस १८१९ बुंदीसकेर सिरदारसिंह सुव ॥  
 ईडरपतिजा उदयकुमारि रानी औरस हुव ॥  
 चैत्रमास मुख असित पक्ख संगत अष्टमि दिन ॥  
 उच्छव तिहिँ दिन अतुल बहुरि बिरचिय इड्डन ईन ॥ ३८ ॥

युद्ध ॥ ३३ ॥ १ कहना मानकर २ तुच्छ हठको शत्रु के किये हुए मिलाप की नीति से विचारकर ॥ ३४ ॥ ४ द्वार पर्यन्त ५ प्रताप को सहकर ॥ ३५ ॥ ६ सभा में ७ अपराधी ८ सान्निध्य सहित ९ अपना अपराध १० प्रकुल्लित किये ११ नेत्र कमल ॥ ३६ ॥ १२ अनुकूलता (चाहादया) अर्थात् भलाई १३ दोनों हाथ जोड़े १४ परस्पर ॥ ३७ ॥ १५ ईडर के पति की पुत्री के १६ ईडर से १७ कृष्ण पक्ष १८ बहुत १९ हाडाओं के पति ने ॥ ३८ ॥

कोटेसहु आनन बिगारि अतिसय सिटाय हिय ॥  
 अखैराम सठ सचिव सहित कोटा प्रवेस किय ॥  
 बिजयसिंह मरु ईस बुल्लि इत हड्ड भहीपति ॥  
 दीपकुमरि निज बहिनि ताहि व्याहिय मंजुल मति ॥३९॥  
 सक कृति धृति १८२० मित समा रांध अवदात दसमि १० दिन  
 अति हित करि उच्छाह लगन सद्धिय कबंध ईन ॥  
 साल प्रकृति धृति १८२१ समय तीज ३ फगुन सुदि बासर ॥  
 ईडरपति लघु सुता दीप सोदर व्याहो वर ॥ ४० ॥  
 जोधपुरहि यह बिजयसिंह मरुपाल व्याह किय ॥  
 नाम भवानकुमरि बहिनि उच्छव करि व्याहिय ॥  
 याहि बरस १८२२ श्रीमंत माधवहु देह बिहायो ॥  
 पट्ट नरामनराव अनुज ताको तब पायो ॥ ४१ ॥  
 तिहि काका रघुनाथराव पर बैर बिथारिय ॥  
 तानै भजि तब सरन इंगरेजन द्रुत धारिय ॥  
 सक इहि १८२१ कथित समीप साह आलम ४९।१ दिल्ली पति  
 दिय इंग्रेजन अर्थ तीन ३ सूबा सहाय मति ॥ ४२ ॥  
 बंगाला १ रु बिहार २ तथा उड़ीसा ३ ए त्रय ३ ॥  
 इनमें तब अंग्रेज भये हाकिम जमात जय ॥  
 सूबा त्रय ३ सिर साह रुद्ध निज गति जब जानी ॥  
 इस्तमरारी अंकि दई इनको दीवानी ॥ ४३ ॥  
 प्रथम रुहेला सचिव नजीबुद्दोलाके भय ॥  
 दिल्लीतैं भजि साह बंग अंतर बचिबे गय ॥  
 कछु हापन तैं कष्टि मरयो सुनि कथितैं रुहेला ॥

१ मुख बिगाड़कर २ अंष्ट दुखिवाली ॥ ३६ ॥ ३ सम्बत् ४ वैशाख सुदि ५  
 राठौडों के पति ने ६ दिन ७ लम्मेदासिंह का लगा भाई दीपसिंह ॥४०॥४१॥  
 मइस कहेहुए सम्बत् के समीप ॥४२॥ अपनी गति रुकीहुई जानी जब ॥४३॥  
 १० बंगाले में ११ कुछ वर्ष १२ नजीबुद्दोला रुहेला को सरा सुनकर



लहि मरहट्ट सहाय बिहंयो दिल्लिय लाखि बेला ॥ ४४ ॥  
 नजफखान जिहिं नाम जवन सो किय वजीर जब ॥  
 सक लिपि अंतर ननहु अधिक प्रभु राम २०३४ इहाँ अब ॥  
 सिवप्रसाद सुनसी जु आहि अधुना अंग्रेजन ॥  
 जिहिं दुव २ ग्रंथ बनाइ बिदित किन्ने छापा सन ॥ ४५ ॥  
 जिनमें इक भूगोल आदि हस्तामल १ जानहु ॥  
 तहँ इन्ह सूबा तीन ३ मिलन सूचित १८२१ सक मानहु ॥  
 ताहीनँ इतिहासतिमिरनासकर प्रबंध किय ॥  
 तामें पावन पट्ट साह आलम ३९१४को सक लिय ॥ ४६ ॥  
 सो हय दुव वसु सोम १८२७ कितो अंतर अब इकखहु ॥  
 ओरनमें इहिं रीति परत अंतर प्रभु पिकखहु ॥  
 मुद्रित किय इक १ ग्रंथ बिदित पंडित बंसीधर ॥  
 सो भारतवर्षीय आदि इतिहास ३ नाम पर ॥ ४७ ॥  
 तामें बैठन तखत साल आलम ४९११ सक सूचिय ॥  
 सो हय दुव वसु सोम १८२७ प्रमित जानहु पुहवीपिय ॥  
 बहि १ घटि २ अंतर बिबिध लेखकारहि इम लावत ॥  
 है तँस दोस न हमहिं लेख अनुसार लिखावत ॥ ४८ ॥  
 परि इम बत प्रसंग अन्यठामहु कहि आये ॥  
 वर्तमान अब वृत्त सुनहु प्रभु सबन मुहाये ॥  
 जट्ट जवाहिरमल्ल याहि छायन १८२१ प्रकुप्ति अब ॥  
 लुट्टी दिल्लिय जाय साह धन कोस सहित सब ॥ ४९ ॥  
 अगग जैनक रविमल्ल मरयो दिल्लिय रन अंतर ॥

१ प्रवेश हुआ २ समय देखकर ॥ ४४ ॥ ३ सम्बन्धों के लेख का अन्तर सुनो ४ है  
 ५ इस समय में अंगरेजों का ॥ ४५ ॥ ६ भूगोल है आदि में जिसके ऐसा हस्तामल  
 अर्थात् भूगोलहस्तामल ७ ग्रन्थ ॥ ४६ ॥ ८ देखो ॥ ४७ ॥ ९ है भूपति १० लिखनेवाले  
 ११ इसका दोष हमको नहीं है क्योंकि हम लिखे हुए के अनुसार लिखते हैं  
 ॥ ४८ ॥ १२ वृत्तान्त १३ इसी वर्ष में ॥ ४९ ॥ १४ इसका पिता सूर्यमल्ल १५ युद्ध में

ताको बैर बिधाय करिय यह जट्ट जवाहर ॥  
 इत मेवारे भटन सठन तसकरपन धार्यो ॥  
 बुंदिय जैनपद बीच बिबिध बसु हरन बिथारयो ॥ ५० ॥  
 कुप्पि तबहि बुंदीस सेन सज्जिय तिन उपपर ॥  
 लये पकरि सीसोद आरि असिबर निज तसकर ॥  
 निबसथ टहला १ मंगटला २ टिटहरा ३ के पति ॥  
 कन्हाउत ए कैद किये अवरहु सांगस कति ॥ ५१ ॥  
 मुंडित डह्यो मुच्छ करि रु डारे काराघर ॥  
 परयो पयन सगताउत स्पामपुरेस जोरि कर ॥  
 सु सुनि रान अरिसिंह सचिव पठयो निज बुंदिय ॥  
 कन्हाउतन छुरान काज उपाय सन तिन किय ॥ ५२ ॥  
 सुनि नृप तिनकी अरज चोर काश बाहिर किय ॥  
 श्रद्धामित सबसौहि दम्म दमके अलुब्ध लिय ॥  
 यह राना अरिसिंह कथित करि दुष्कर कीनी ॥  
 नतो नृपहि नहि लोभ धर्म रीतिहि चित चीनी ॥ ५३ ॥  
 अंभोली १ बीखरनि २ नैर बैकरपुरा ३ दि सब ॥  
 सदन लागे संभरेस आदेस नमू तब ॥  
 इम संभर उम्मेद मुलाक तसकर सब मेटिय ॥  
 कलिजुग बिच नैय धर्म कर्म पांडेव नृप ज्यो किय ॥ ५४ ॥  
 दोहा-अमरगढप १ बकरपुरप २, कन्हाउत इन्ह आदि ॥  
 सगताउत पुरबीखरनि १, अंभोली २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥  
 तदनंतर खइराडके, मैनन किय अति मान ॥  
 लुटन बुंदिय देस लागि, थिर उज्जर किय थान ॥ ५६ ॥

१ बैर करके २ चौरपन ३ बुन्दी के देश में ४ धन ॥ ५० ॥ ५ अपने चौरों को  
 ६ आम ७ अपराधी ॥ ५१ ॥ ८ कैद में ॥ ५२ ॥ ९ कैद से १० दंड के रूपसे ११  
 लोभ रहित ॥ ५३ ॥ १२ पाकरा १३ नीति १४ युधिष्ठिर के समान ॥ ५४ ॥  
 ॥ ५५ ॥ १५ खैराड प्रदेश के मीलों ने १६ कजड़ (शून्य) ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

हिंडोलीपुर आनि किय, मिलि मैनन अति रारि ॥

चैनसिंह हम्मीरहर, नत्थू सुत लिय मारि ॥ ५७ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे  
दसिंहचरित्रे निजदुर्गरास्तम्भगतकूर्मराजमाधवसिंहहृद्वेन्द्राऽऽह  
यनप्रीतिजिगमिषूम्मेदसिंहविपदमित्रसम्मिलनकौर्मसृगयाऽदिखेल  
द्रावरागिनजमहिषीभल्लीराज्ञीष्टयुश्रवणश्रुतागच्छदक्षिणसैन्यमा-  
धवसिंहजयपुरप्रविशनबुन्दीन्दबुन्द्यागमनसन्ध्याकेदारराव १ माह  
जि २ मालववशोकरणाविचारितयोधपुरेशविजयसिंहविजितकर-  
णाऽजमेरद्रङ्गाऽऽगमनसहायार्थाऽऽहूतहृद्वेन्द्रगमनधन्वेशसन्ध्यादण्ड  
द्रम्माऽष्टलक्ष ८००००० निवेदनजयपुरजनपदाऽऽगतमाहजिमोजाद  
नगरलुण्टनरावरागमरूपतिपितृव्यकेडरपुरेशरडोडरायसिंहसुतोदयकु-  
मारीयोधपुरविवाहनकोटेशसचिवकायस्थाऽल्लयराममोजादपुराऽऽगम-  
नश्रावितमरूपतिसहायकारणाबुन्दीन्द्रदत्तप्रच्छन्नद्रव्यकायस्थमाह-  
जिवुन्द्यानयनश्रुतेतत्सज्जीभूनबुन्दीन्द्रस्वपुराऽऽगमनसमागतकोटेश  
शत्रुशल्यसहितसन्धेशहृद्वेशसङ्ग्रामसुखाऽनुभवनकूर्मराजस्वसुभ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र-  
में, अपने गढ़ रणस्थंभ में गये हुए कछवाहों के राजा माधवसिंह का हाडों के  
पति को बुलाना और प्रीति की इच्छावाले उम्मेदसिंह का आपदा के समय  
मित्र से मिलना १ कछवाहे का शिकार आदि खेलना और रावराजा का अप-  
नी पाटनी राणी भाली का मरना सुनना २ दक्षिण की सेना का आना सुनकर  
माधवसिंह का जयपुर में प्रवेश करना और बुन्दी के पति का बुन्दी आना ३  
सिन्धिया केदारराव, माहजी का मालवा देश को आधीन करना और जोधपुर  
के पति विजयसिंह को जीतना विचार कर अजमेर नगर में आना ४ सहाय के  
अर्थ यत्नायेहुए हृद्वेन्द्र का जाना और मारवाड़ के पति का सिन्धिया को दंड  
के आठ लाख रुपये देना ५ जयपुर के देश में आयेहुए माहजी का मोजाद  
नगर को लूटना और रावराजा का मारवाड़ के पति के काका ईडरपुर के पति  
राठौड़ रायसिंह की पुत्री उदयकुमारी को जोधपुर में विवाहना ६ कोटा के पति  
के सचिव कायथ अल्लयराम का मोजादपुर में आना और मारवाड़ के पति  
की सहाय जाने का बुन्दीन्द्र का फारण सुनाकर छाने धन देकर कायथ का  
माहजी को बुन्दी लाना सुनकर सज्ज होकर बुन्दी के पति का अपने पुर में

टटारकादाससाहिपुरेशोम्मेदसिंहस्वकनिष्ठसुतमालिमसिंहबुन्दीसहा  
 यार्थप्रेषणाकृतधनमरूपतिकिमप्यप्रेषणायुध्यद्रावराड्जयपुरेशपुत्रपृथ्वी  
 सिंहोद्भवश्रवणाज्ञातदुर्गदुर्गत्वमाहजिसमाहूतबुन्दीन्द्रसम्मिलननीता  
 ऽऽब्दिकद्रव्यतत्प्रस्थानहहेन्द्रभोगिन्यौरसकुमारसरदारसिंहोद्भवनस  
 म्भरराजस्वभगिनीदीपकुमारीरठोडराजविजयसिंहविवाहनसम्भर-  
 दीपसिंहस्वाऽग्रजराड्यनुजाभवानकुमारीयोधपुरोद्वहनश्रीमन्तमाधव  
 रायमरणातदनुजनारायणारावश्रीमन्तीभवनपितृव्यकरघुनाथरावनि  
 ष्काशनतदिंगरेजशरणभरतपुरेशजट्टजवाहरमल्लदिल्लीलुगटनसी  
 मासमीपस्थराणासामन्तबुन्दीदेशविरोधनरावराट् तत्सर्वनिग्रहणारा-  
 णाऽरिसिंहप्रार्थनामुक्तदुष्टस्वाधिनीकरणमैशागणबुन्दीदेशलुगटन  
 हिंडोलीशहम्मीरवंशीहृद्वैनसिंहमारणां त्रिपञ्चाशत्तमो५३ मयूखः॥

अना७ आयेष्टए कोटा के पति अनुशाल सहित सिन्धिया के पति और हाडों  
 के पति का संग्राम के सुख को अनुभव करना ८ कछवाहों के राजा का अपने  
 उमराव द्वारकादास और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का अपने छोटे पुत्र  
 मालमसिंह को बुन्दी की सहाय में भेजना और किये उपकार को भूलनेवाले  
 मारवाड़ के पति का कुछ नहीं भेजना ९ उस युद्ध में रावराजा का जयपुर के  
 पति के पुत्र पृथ्वीसिंह के जन्म को सुनना और गढ़ का नहीं मिलना जानकर  
 माहजी का बुन्दी के पति को बुलाकर मिलना १० सालाना खिराज लेकर उस  
 का जाना और हहेन्द्र की छोटी राणीके उदर से कुमार सरदारसिंह का जन्म  
 होना १० चहुवाणों के राजा का अपनी बहिन दीपकुमारी को राठौड़ों के रा-  
 जा विजयसिंह को व्याहना और चहुवाण दीपसिंह का अपने बड़े भाई की  
 राणी की छोटी बहिन भवानकुमारी से जोधपुर में विवाह करना ११ श्रीम-  
 न्त माधवराव का मरना और उस के छोटे भाई नारायणराव का श्रीमन्त  
 होना, काका रघुनाथराव को निकालना और उसका अंगरेजों की शरण लेना  
 १२ भरतपुर के पति जाट जवाहरमल्ल का दिल्ली लूटना और सीमा के समीप  
 रहनेवाले राणा के उमरावों का बुन्दी के देश में विरोध करना, रावराजा का  
 उन सबको पकड़ना और राणा अरिसिंह की प्रार्थना से उन दुष्टों को छोड़कर  
 स्वाधीन करना १३ मैणों के समूह का बुन्दी के देश को लूटना और हिंडोली  
 के पति हम्मीरसिंह के वंशवाले चैनसिंह को मारने का तिरपनवां ५३ मयूख  
 समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥

॥ ५३ ॥ आदितः ॥ ३३४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

तब संभर नृप तमकि सेन सैनन सिर सज्जिय ॥

बैरिन आरन बाढ गाढ रव पशाव गरज्जिय ॥

हरिणा निजकवि ग्राम लांघि घेरयो द्रुत ऊनर ॥

मैने द्वैसत २०० मारि थान किन्नों तरऊपर ॥ १ ॥

पुनि खेड़ा लिय घेरि दुष्ट तैंहँ हनिय इक्कसत १०० ॥

बहुरि लुहारी बिंटी अडर लुट्टी रन उद्धत ॥

सैजव कुपि च्यारिसत ४०० मारि मैने जय मंडिय ॥

गढ़ोली पुनि ग्राम खुंदि खगन सब खंडिय ॥ २ ॥

दारिम रंग दुँकूल मत्थ धवपत्त किलंगिय ॥

दुवर गव्याँ कोदंड जुरत दुँडू करि जंगिय ॥

बंसुरि भयदं वजात पिठ्ठि दुवर धरत निखंगन ॥

डारत फोजन फारि मारि कट्टार तुरंगन ॥ ३ ॥

इम मैने रन करत हनिय द्वै सत २०० गड़ोलिय ॥

आयो बुंदिय बिजय मंडि बाँदियँ जस बोलिय ॥

मैननके सिर मैनिनके सिर दये करंडेन ॥

बधाई गवावत लायो पुरलग तिन रंडेन ॥ ४ ॥

और आदि से तीन सौ चौतीस मयूख ३३४ हुए ॥

१ पडे शब्द से ढोल बजा २ आप के कवि (सूर्यमल्ल) का ग्राम ॥ १ ॥ ३ शाप्र  
४ गाढोली ॥ २ ॥ ५ दाड़िम के रंग के वस्त्र ६ मस्तक पर धोकड़ा वस्त्र के पत्ता  
की किलंगी ७ दो प्रत्यंचा के धनुष ८ मैयाँ के लड़ाई करने का साकेतिक  
शब्द है ९ भयंकर १० भाये ११ घोड़ों को कटारियों से मारकर ॥ ३ ॥ १२  
भाटों की यश की घोली करवाकर उन मैयाँ के मस्तकों को १३ मैंगियों के म-  
स्तकों पर १४ टोकरी (छपलियों) में भरवाकर १५ उनकी रांडों को बुंदी लाया ॥ ४ ॥

करंडन१ नरंडन२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

सक आकृति धृति समय१८२२ भयो यह रन \*सरदागम॥

सेवन सब सीमार लगे रचि सनति समागम ॥

याहि बरस१८२२के माघ मास द्वादसि१२मेचक जुत ॥

दीपसिंहकै भयो नाम सुरताणसिंह सुत ॥ ५ ॥

करि अगै कोटेस कथित माहजि यह रन किय ॥

नाथाउत उद्योतसिंह तब अरिन मिलन किय ॥

रनकिय१ लनकिय२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

नगर पगाराँ छोरि स्वामि मन्नै मरहठन ॥

सत्रु होय किय समर लूटि लीनै कछु रंठन ॥ ६ ॥

याको काका बखतसिंह मन्न्याँ तब भूपति ॥

दयो पगाराँ ताहि मंडि सनमान महामति ॥

अब सु विकृति धृति१८२३ अब्द माँहिँ उद्योत सु आयो ॥

नगर पगाराँ लैन भूप प्रति कथन कहायो ॥ ७ ॥

बुंदीपति तब कुप्पि सुभट पठये तिहिँ मारन ॥

मारयो आनि बजार मध्य कहि तिन अघ कारन ॥

याहि विकृति धृति१८२३ अब्द माँहिँ हुलकर बपु छोरिय ॥

तब तस नाती मालराव इंदोर तखत लिय ॥ ८ ॥

सुनि यह टाँका साज भूप पठयो तह हित घन ॥

हुव२ हय दुव२ सिरुपाव इक१ गज इक१ मनि भूखन ॥

संकृति धृति१८२४ मित साल मालरावहु हुलकर मृत ॥

तब ताको दायद नाम तक्कू गहिय धृत ॥ ९ ॥

रूपय अतिकृति लखख२५००००००दये श्रीमंत अरथद्रुत ॥

\* शरद ऋतु के आने पर १ नम्रता सहित सुख से आना २ कृष्णपक्ष सहित ॥ ५ ॥ ३ राष्ट्रों (देशों) को ॥ १ ॥ ७ ॥ ४ पाप करनेवाला ५ उसके पोते ॥ ८ ॥ ६ पुत्र ॥ ९ ॥

इस गहिय इंदोर लही तक्कुव सु मंत्र जुत ॥  
 रूपनगरपुर सुता भूप सामंतसिंह घर ॥  
 नाम किसोरकुमारि इत सु व्याहो नृप सोदर ॥ १० ॥  
 संकृति धृति १८२४ मित साक बिरचि उच्छव बहु दिन तक  
 व्याह बहादुरसिंह कियउ यह दुलहि पितृव्यक ॥  
 याहि साल १८२४ बिच नृप सपत्न जननी कछु गद लहि ॥  
 बंसबहाला पतिजा वपु दिय छोरि व्याधि सहि ॥ ११ ॥  
 बुंदीपति मासुरि बिहीन बनि प्रेत करम किय ॥  
 द्विजन सु भोजन दान दै रु निर्गमोक्त सहि लिय ॥  
 संकृति धृति मित याहि साल इत जट्ट जवाहर ॥  
 जैपुर ऊपर जोर दैन मंडयो डारन डर ॥ १२ ॥  
 याको भ्रात सु अग्न नाम नाहर कछु कारन ॥  
 आयो जैपुर सरन नारि निर्ज विपति निवारन ॥  
 याकै ही इक १ युवति रूप गुन अधिक अपूरब ॥  
 ताहि जवाहर जट्ट लैन तक्कयो कामुक जब ॥  
 इहि तब जैपुर आय सरन कूरम पतिको लिय ॥  
 माधव नगर निवाई को परगना ताहि दिय ॥  
 नाहरसिंह बिताय काल कछु तथ गयो मरि ॥  
 तबहि जवाहर कहिय लैन ताकी वह सुंदरि ॥ १४ ॥  
 सो सुनि माधव ताहि भरतपुर लग्यो पठावन ॥  
 बुझी तब जट्टनिय उचित है नहि मम जावन ॥  
 मोकों वह गृह डारि कूर रक्खहि बनितो करि ॥

१ राजा का सगा भाई दीपसिंह ॥ १० ॥ २ दुलहन के काका ने ३ रोग ४  
 बंसबाड़ा के पति की पुत्री ॥ ११ ॥ ५ डाही मूछों के बालों बिना (चौर) होकर  
 ६ वेद का कहाहुआ ७ भय डालने को ॥ १२ ॥ ८ अपनी स्त्री की ९ यौवन  
 वती स्त्री १० कामी ॥ १३ ॥ ११ माधवसिंह ने ॥ १४ ॥ १२ स्त्री करके रक्खेगा



जवाहरमल्ल और विजयसिंह का पुष्करमें मिलना] सप्तमराशि चतुःपंचाशमयूख (१७१६)

यातैं भेजहु नाहिँ सती जानहु हित अनुसरि ॥ १५ ॥  
तबहि भरतपुर मंडि पत्र माधव पठवायो ॥  
याको आवन उहाँ ईष्ट नहिँ नैक सुहायो ॥  
जहु जवाहरमल्ल सु सुनि पठयो प्रतिउत्तर ॥  
मम बंधव मैहिलाहिँ तुम सु चाहत रखन घर ॥ १५ ॥  
यह सुनि जैपुर ईस मन्नि अभिसाप असह मति ॥  
निकसाई वह नारि गई बिख खाय उचित गति ॥  
इहिँ कारन अब अतुल बैर गहि जहु जवाहर ॥  
जैपुर उपपर जोर दैन सज्जे दल दुद्धर ॥ १७ ॥  
विजयसिंह यह जानि जहु जैपुर चडि आवन ॥  
आयो पुष्कर अरहिँ मिलन अरु मंत्र बनावन ॥  
उदयपुर रु आमैर ज्यौहिँ बुदिय मंडौजिम ॥  
समता गिनि सतकार रूँकर लिखि दल पठयेइम ॥ १८ ॥  
जहु जवाहरमल्ल अडर अति बल हो तुम जब ॥  
लियउ आगरा १ छिन्नि दब्बि दिल्लिय प्रदेसर सब ॥  
अब हमसौं तुम आय मिलहुं पुष्कर बिधाय बल ॥  
इक्क तखत बैठिहैं जेर करिहैं अरि मंडल ॥ १९ ॥  
इम संकृति धृति १८२४ अब्द बंघि दल जहु जवाहर ॥  
उंज पुणिणामा १५ दिवस मिलन आयो हुत पुष्कर ॥  
मरुपति ताके सिविर प्रथम पहुँच्यो लहि सासन ॥  
सिर कर धरि समकाँल उभयर बैठे एकासन ॥ २० ॥  
चमर मोरछल छत्र लगे होवन दोउनर पर ॥  
पुनि मरुपतिके सिविर जहु दौर्पित गय दुद्धर ॥

॥१५॥ १प्रिय रसनी को ॥१६॥ ३झूठा दोष ॥१७॥ ४जाट का प्रतीकवयरावर का  
७अपने हाथ से दपत्र ॥१८॥ ८सेना रचकर ॥१९॥ १०कार्तिक की पूर्णिमा को ११  
एक समय में दोनों भागों के हाथ लगाकर १२एक गद्दी पर बैठे ॥२०॥ १३घमंड से



\*समताको सतकार कियउ पूरब जिम मरुपति ॥  
 पल्लटि पग्य रठोर जट्ट हुव सुदद कुसंगति ॥ २१ ॥  
 तदनु जोधपुर नाह पत्र पठये जयपत्तन ॥  
 मित्र याहि गिनि तुमहु मिलहु बैठहु इक आसन ॥  
 तब कूरमपति तमकि एह पठयो प्रतिउत्तर ॥  
 मित्र होय किम मुद जट्ट जैपुरको किंकर ॥ २२ ॥  
 सेवन आत सदैव पिक्खि हमरे परवानाँ ॥  
 मम समताके मित्र रावराजा१ तुम२ रानाँ३ ॥  
 सु सुनि जट्ट दिय पत्र ओलि जैपुर लिखि आडी ॥  
 दोय२ परगना देहु हमहिँ खोहरी१ पहाडी२ ॥ २३ ॥  
 रचहु न तो अब रारि तुमहिँ दंडन हम तककत ॥  
 सुनि पठयो निज सेन कुम्म अक्कहिँ रज ढकत ॥  
 तब माउंडा खेत मिले जट्ट रु जैपुर दल ॥  
 फैलिय हेतिन फाग राग सिंधुन कोलाहल ॥ २४ ॥

इति श्रीविंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे  
 दसिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमैणाविजयप्रस्थानतदग्रामोमर १ खेडा २ लु  
 हारी ३ गडोल्या ४ऽऽदिविध्वंसनहतनवशत ९०० मैणागगापुनःस्व  
 पुरा ५विशनसोदरदीपसिंहकुमारसुरतागासिंहोद्भवसंभरराजचाल  
 क्यनाथाउतोद्योतसिंहमारगातत्पितृव्यकबखतसिंहपगारापुराऽर्पण

\*धरावर का पल्लटि के माफिक १ मित्र २ खोटी संगति से अर्थात् जन्मियों से जा  
 टों के मित्र होने की संगति नहीं है ॥२१॥२२॥३ आडी ओली (पत्रकी आयुर्वा)  
 में ॥२३॥ ४सूर्य को ५ सेना ६ शस्त्रों का फाग ७सिंधवी (बड़ा) राग का ॥२४॥

श्रीपंचभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में  
 बुन्दी के पति का मैनों को विजय करने को गमन करके उन के गाम ऊमर,  
 खेडा, लुहारी, गाडोली, आदि का नाश करना और जो सौ मैनों के  
 को मारकर अपने पुर में प्रवेश करना १ सगे भाई दीपसिंह के कुमार सुरताग  
 सिंह का जन्म होना और चहुवाण राजा का सोलंखी नाथावत उद्योतसिंह

हुलकरमल्लाररावदेदत्यजननप्तृमालरावतदधिकारप्रापणबुन्दीन्द्र -  
टीकोपाख्यतत्सत्कारप्रेषणमालरावमरणाऽनंतरदत्ताऽतिकृतिलक्ष  
२५०००००० द्रम्मतदायादहुलकरतक्कूहलकरपुरेन्दोरगदिकोपविशन  
बुन्दीन्द्राऽनुजदीर्पासिहरूपनगराऽधिराजरठोड़सामन्तसिंहसुताकिशो  
रकुमारीविवाहनरावराट्सपत्नजननीमरणात्प्रेतक्रियाऽनुष्ठानपूर्वोद  
न्तविवृद्धवैरजट्टेन्द्रजवाहरमल्लजयपुरजिगीषुभवनपुष्करक्षेत्राऽगत  
मरुपतिविजयसिंह १ समाहूतजवाहरमल्लसजातीयनृपसमसत्का  
रसम्मिलनकृतजट्टतिरस्कारजयपुरसैन्य १ जट्टसैन्य २ माउण्डाग्रा  
मरङ्गसम्मिलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४ मयूखः ॥५४॥ आदितः३३५॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कैटक ईस कछवाहको, धूलापुर पै दलेल १ ॥

लघु सुत लछमन २ जुत लग्यो, खंडन मंडव खेल ॥ १ ॥

दल बखसी गुरुसाहि १ द्रुत, सचिव बीर हरसाहि २ ॥

का मारना २ उस के काका बखतसिंह को पगारां पुर देना, हुलकर मल्लारराव  
का मरना और पोते मालराव का उस का अधिकार पाना ३ बुन्दीन्द्रका उस  
को टीका नामक सत्कार भेजना और मालरावके मरे पीछे पच्चीस लाख रुप  
ये देकर उसके पुत्र तक्कू का हुलकर के पुर इंदोर कीगद्दी पर बैठना ४ बुन्दी  
के पति के छोटे भाई दीर्पासिंह का रूपनगर के पति राठोड़ सामन्तसिंह की  
पुत्री किशोरकुमारी से विवाह करना और राघसजा की सौतेली माता का  
मरना, उस की विधि पूर्वक क्रिया करना ४ पहिले वृत्तान्त के कारण वैर बंध  
कर जाटों के पति जवाहरमल्ल का जयपुर को जीतने की इच्छावाला होना  
और पुष्कर क्षेत्र में आये हुए मारवाड़ के पति विजयसिंह का जवाहरमल्ल  
को बुलाकर अपनी जाति के राजाओं के धरावर सत्कार करके मिलना ६  
जाट का तिरस्कार करके जयपुर की और जाट की सेनाओं का माउण्डा ग्राम  
के युद्ध क्षेत्र में मिलने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५४॥ और आदि से  
तीन सौ पैंतीस ३३५ मयूख हुए ॥

१ सेनापति १ पति ॥ १ ॥ ३ फौजबखशी

एहु खरे खत्री उभय२, चंडे करन रन चाहि ॥ २ ॥

इततै जट्टहु उप्परयो, तोपन बिरचत ताप ॥

भट फिरंगि डारत भयो, समरु कापिल साप ॥ ३ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

करकि करकि कोप तरकि तरकि तोप,

लरकि लरकि लोप करनलगी ॥

करखि करखि कति परखि परखि पति,

हरखि हरखि सति हरन लगी ॥

समर लखन आय अमर गगन छाप,

भ्रमर सुमन भाय निकर जुरे ॥

सरजि सरजि सोक लरजि लरजि लोक,

बरजि बरजि ओक दिगन दुरे ॥ ४ ॥

बढिग त्वरिते वीर पढिग दैरित पीर,

चढिग सरिते सीर रुहिर रची ॥

सिलत उरन सेल मिलत फुरन मेल,

ठिलत खुरन ठेल मलप मची ॥

पिलत धुरन पेल मिलत छुरन भेल,

खिलत सुरन खेल लखन लगे ॥

१ भयंकर युद्ध करने की चाह से ॥२॥ शकपिलदेव का आप ॥ ३ ॥ कोप सहित गर्जना कर करके तोपें चल चल कर शेरगिरा गिरा करलोप करने लगी ४ तलवारें खेंच खेंच कर ५ पैदलों की परीक्षा कर करके प्रसन्न हो हो कर ६ शक्ति हरने लगी ७ देवता ८ युद्ध देखने को आ आ कर और आकाश में छा छा कर ९ पुष्पों पर अमरों की भांति उनके १० समूह जुड़ गये ११ लोग धूज धूज कर १२ शोक उत्पन्न कर करके १३ घर छोड़ छोड़ कर दिशाओं में घुस गये ॥४॥ वीर १४ शीघ्र बड़े और १५ हरनेवाले पीड़ा के बचन बोले १६ चढ़ी हुई नदी के समान १७ रुधिरकी धारा चली भाले छातियोंको फोड़ते हैं १८ घोड़ोंके फुरने मिलते हैं और खुरों की टक्कों से हटाते हुए मलंग लेते हैं १९ आगे (धुर) वालों की मदद पर भेजते हैं और २० छुरियों से भिलजाते हैं सो प्रसन्न होकर २१ देवता

हरखि हरखि हूर परखि परखि पूर,  
 करखि करखि सूर रखन लागे ॥ ५ ॥  
 गहत गँवरि गैल बहत गिरिस बैल,  
 सहत भरन सैल कहत फटें ॥  
 चहत भटन चैल दहत मनु कि तैल,  
 महत फँवत फँल अगनि अटें ॥  
 त्रि३कसि लि३कसि तेग बि३कसिं बिकसि बेग,  
 निकसि निकसि नेगं असुन लहैं ॥  
 रपटि रपटि रौजि भपटि भपटि औजि,  
 दपटि दपटि बाँजि गजन गहैं ॥ ६ ॥  
 सँरत जहर सूक टरत अँहर टूक,  
 करत कँहर कूक ककुपँ करी ॥  
 खिसकि खिसकि हत्थ चिसकि चिसकि मत्थ,  
 सिसकि सिसकि सत्थ दुरत दर्री ॥  
 छलत बिसिखँ छाँय धलत त्रिसिखँ घाय,

खल देखते हैं "देवता शब्द स्त्री लिंग है परंतु लांक रुढ़ि से पुल्लिंग लिखा जाता है" अप्सराएं प्रसन्न हो हो कर १ पूर्ण परीक्षा कर करके वीरों को खैंच खैंच कर रखने लगीं ॥ ५ ॥ २ पार्वती को साथ में लेकर ३ महादेव बैल पर चढ़ते हैं जो वीरों के ४ भाले सहते हैं और अपना फटना कहते हैं फिर मरे हुए वीरों के ५ वस्त्र तैल के समान जलते हैं और बड़े फैलाव से ६ शोभित होकर ७ अग्नि फिरती है ८ तीन तीन तलवारें कस कर ९ प्रफुल्लित हो हो कर और १० भाले शीघ्र पार निकल निकल कर प्राण छेते हैं वीरों की ११ पंक्तियां दौड़ दौड़ कर १२ युद्ध में शीघ्र शीघ्र १३ घोड़े दौड़ा दौड़ा कर हाथियों को पकड़ते हैं ॥ ६ ॥ १४ शेषनाग चलायमान होकर टलता है और १५ अघरों (औंठों) को काटता है १६ इस जुलम से १७ दिशाओं के हाथी कूक मारते हैं. हाथ फिसल फिसल कर, माथे दूख दूख कर साथवाले कई सिसक सिसक कर १८ गुफाओं में घुसते हैं कई १९ वाणों को खाकर घटते हैं और २० त्रिशूलों का घाव

कलत निसिख काय भटनकिते ॥  
 पकरि पकरि पाय जकरि जकरि काय,  
 नकरि नकरि हाय जपत जिते ॥ ७ ॥  
 भचकि भचकि मुंड लचकि लचकि मुंड,  
 मचकि मचकि रुंड उछटि कटै ॥  
 भरकि भरकि भेट खरकि खरकि खेटै,  
 धरकि धरकि पेट फलक फटै ॥  
 खटकि खटकि खग चटकि चटकि अगगं,  
 लटकि लटकि भगग मुखन भूरै ॥  
 अटकि अटकि इड गटकि गटकि गिड,  
 छटकि छटकि बिड बिसिख धरै ॥ ८ ॥  
 भटकि भटकि घुमि भटकि भटकि भुमि,  
 पटकि पटकि भुमि घुटन घसै ॥  
 बटकि बटकि गुंड मटकि मटकि तुंड,  
 रटकि रटकि मुंड हुलसि इसै ॥  
 बिरचि बिरचि बान मिरचि मिरचि मान,

घालते हैं जो १ तीखे अशूल कई वीरों के शरीरों में घुसते हैं तहां कई वीर  
 औरों के पैरों को पकड़ पकड़ कर और २ शरीरों को बांध बांध कर हाथ  
 से नहीं करके चालते हैं ॥ ७ ॥ मस्तकों की टकर लगा लगा कर, हाथियों की  
 शृंखों को नमा नमा कर रुंड मचक मचक उछलते फिरते हैं मिलने से चमक  
 चमक ४ ढालों पर कड़के (शब्द) होकर पेट में धकधकी लगकर ५ ढालें वा  
 आकाश फटता है ६ तरवारों के खटके हो हो कर और ७ अग्रभागों के टुकड़े  
 हो हो कर दभाग लटक लटक कर मुखों से झड़ते हैं गिड ८ बहुत अटक अटक  
 कर खाते हैं ९ वेधे हुए कई गिर गिर कर भी ११ बाणों को धारण करते हैं ॥ ८ ॥  
 घुमते हुए घृथा फिर फिर कर कई बहुतों को खेंच खेंच कर लगते हैं और एक  
 दूसरे को भूमि पर पटक पटक कर १२ छुटनों से रगड़ते हैं १३ तरवार आदि के म्यान  
 टूट टूट कर १४ मुख को मटका मटका कट दौड़ दौड़ कर वा टक्करें लगा लगा  
 कर प्रसन्न हो हो कर वीरों के कई १५ समूह हंसते हैं १६ बाणों को रचरच (चला  
 चला) कर मिरची मिरची के १७ समान कानों के टुकड़े टुकड़े गिराने लगे वा

जवाहरमल्ल और जैपुर के राजा का युद्ध] सप्तमराशि-पंचपंचाशमयूत (३७२५)

किरचि किरचि कान किरन लगे ॥

ललकि ललकि लाल भलकि भलकि हाल,

खलकि खलकि खाल फिरन लगे ॥ ९ ॥

भनकि भनकि भौर सनकि सुरभि सौर,

भनकि गुठिन भौर भनन लगे ॥

तरस खँयद खेत परस रँयद प्रेत,

दरस भँयद देत दमन लगे ॥

॥

॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जयपुर दल अरु जट्ट दल, रचि कछु तोपन रारि ॥

अँचि मिले पुनि अँसिन इम, भुकि भुकि धारन भारि ॥ ११ ॥

॥ प्रकृतिः ॥

सचिव मुरूप खत्री हरमाहि १, अरु बखसी गुरुसाहि ९ उँमाहि ॥

मिलि अधिबीर ३ जट्ट बहुमारि, तूटि गिरे भारत तरवारि ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

धूलापुरप दलेल ३ सुपहु कूरम सेनानी ॥

अति जँव हयन उठाय मिल्यो जट्टन बिच मानी ॥

सिक्किा दंड समान करे बहु अरि नारिन कर ॥

१ गिरनेलगे और २ क्रोध में लाल हुए ललकारें कर करके ३ वर्तमान में (युद्ध में) बढ बढ कर ४ नाले बहा बहा कर वा बह बह कर कई बीर फिरने लगे ॥ ९ ॥ ५ गुच्छों पर भनकार कर करके ६ वसंत ऋतु में अमरों के उदने का शब्द होवे तैसे ७ गोली रुपी अमर अमने लगे और युद्ध क्षेत्र में ८ नाश को देनेवाले प्रेत स्पर्श करने से धुजा धुजा कर ९ वेग के साथ १० भयङ्कर दर्शन देकर दंड देनेलगे ॥ १० ॥ ११ तलवारों को खँचकर ॥ ११ ॥ १२ उत्साह करके १३ वीरों के पति ॥ १२ ॥ १४ धूला पुर का पति दलेलसिंह १५ सेनापति १६ वेग से १७ बालूखी के डांडे के समान (चूड़ियों रहित)

सिर ताको लहि सुभग हुलासि किन्नों भूखन हँर ॥  
 संक्रमि निसंक तोपन समुख कातर बैच रंच न कछो ॥  
 भल भल दलेल जयनैर भट रन विच बनि तिल तिल रह  
 ॥ दोहा ॥

लक्ष्मन४ याको पुत्र लघु, राजाउत रचि रीस ॥  
 अधिक उथपिय अरिन असु, सिवहिँ समापिय सोस ॥  
 ॥ पादाकुलकम् ॥

साँवलदास बंसि सेखाउत, नाम गुमान५ बंदि बिरुदन नुत ॥  
 सो बढि नगर पचाहर स्वामी, निडर लरयो मस्तक बिनु ना ॥  
 सीकरपति सिवको कनिष्ठ सुत, जुरयो तिनहिँ बुधसिंह६हरख  
 उरँ हुँदुमि करि बहु अरि नारिन, लून गिनि बँपु लग्गो तरवारि  
 सेखाउत झुंझु पत्तन पति, नवलसिंह७ भज्यो दिखात नति  
 सेखाउत सिवदाससिंह८ पुनि, भानुंती पति परयो खग धुनि १  
 सेखाउत मुंडरा गाम ईन, रघुनाथ९हु तुट्यो तरवारिन ॥  
 इटावा पति तिम नाथाउत, नाहरसिंह१० परयो रन राउत ॥१६॥  
 महासिंह११ कलमंडा नायक, सुरतानोत परयो घन घाँपक ॥  
 जयपुरके इत्यादि सुभट बहु, परे बिदाय देह संगर पहुँ ॥ १९ ॥  
 खगन अमित जट्ट भट खाये, भीरु बचे तिन्ह मारि भजाये ॥  
 छिज्जत कटक जट्ट पय छुट्टे, तेगँन पिक्ख सिपाहन तुट्टे ॥ २० ॥  
 समरू रहयो फिरंगी सम्मुह, तोप तडितँ आरत अरि भूरुह ॥

१शिव ने प्रसन्न होकर २चलकर ३कायर वचन ॥२॥ १४॥ ४ यादों के विरुद्धों  
 स्तुतिघों योग्य ॥१५॥ ५शिवसिंह का ६आतियों रूपी नगरे ७आरि को ॥१६॥  
 नज्जता दिखाकर ॥ १७ ॥ ८ पति ॥ १८ ॥ १० बहूतों को मारनेवाला ११  
 के प्रभु ॥ १९ ॥ १२ तरवारों से सिपाहों को लूट्टे हुए देखकर जाट  
 ॥२०॥ १३ समरू को सामान्य रीति से फिरंगी लिखा है नहीं तो यह फरास  
 था १४ तोप रूपी बिजुली से १५ शत्रुओं रूपी वृक्षों को भिराकर

॥ जैन कूरम कटक गिरायो, प्रभुहिं भरतपत्तन पहुँचायो ॥२१॥

॥ पट्टपात ॥

तखत १ छत्र २ अरु तोप ३ कोस ४ लुट्टे कछवाहन ॥

भरतनैर गय भजिज जट्ट मरवाय सिपाहन ॥

जिते कूरम जोध नाग जट्टन गिनि नाहर ॥

समरू ठहै न जु संग जाय पकरैहिं जवाहर ॥

संकृति भुजंग ससि १८२४ मान सक हेमंतक यह जंगहुव

जयनैर बिजय जट्टन भजन भई बिदित आवाज भुवा ॥२२॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-  
दसिंहचरित्रे जयपुरसैन्य १ जट्टजवाहरमल्ल २ माउण्डामालाऽभि-  
सम्पाताऽनुष्ठानमाधवसिंहसेनानीसपुत्रदलेख १ सचिवखज्रिहरसा-  
हि २ गुरुसाहि ३ सुभटसेखाउतगुमानसिंह ४ बुधसिंह ५ऽऽदि-  
मरणजहेन्दपलायनहतश्रीसामन्तफिरङ्गिसमरूसमायोधनकूर्मराज-  
विजयवर्द्धनच्छत्रकोशाऽऽदिजट्टवैभवलुण्टन पञ्चपञ्चाशत्तमो ५५  
मयूखः ॥ ५५ ॥ आदितः ॥ ३३६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया माकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा

१ कछवाहे की सेना को गिराकर अपने स्वामी को भरतपुर पुगाया ॥ २१ ॥  
२ खजाना ३ भरतपुर ४ जाट को हाथी जानकर, सिंह रूपी कछवाहे लड़े ५  
हेमन्त ऋतु में ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरि-  
त्र में जयपुर की सेना और जाट जवाहरमल्ल का माउण्डा के क्षेत्र में युद्ध करना १  
माधवसिंह के अनापति पुत्र सहित दलेखसिंह, सचिव खज्री हरसाहि और  
गुरुसाहि, सुभट सेखाउत गुमानसिंह, बुधसिंह आदि का सरना २ जाटों  
के पति को हतश्री होकर भागना फिरंगी सैन्य का युद्ध करना ३ कछवाहे  
राजा का विजई होना और छत्र, खजाना आदि जाट के वैभव को लूटने का  
पपातवांमयूख समाप्त हुआ ॥ ५५ ॥ और आदि से तीन सौ छत्तीस १३६ मयूख हुए ॥



इहिँ रन दैन सहाय इत, बडो तनय बुंदीस ॥

पठयो जैपुर \*पुब्बही, मारन जट्ट महीस ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

राजकुमर रनमाँहिँ नाँहिँ माधव जावन दिय ॥

जात भई पुनि जानि काल अवसर उच्छव किय ॥

नाहरगढ आमैर आदि निज दुर्ग दिखाये ॥

नाना सहल सिकार विरचि अति लाड बढाये ॥

पुनि माघ विसद पंचमि<sup>५</sup> दिवस सट्टि<sup>६</sup> गजन आरुहिँ संभट

बुंदीस कुमर जुत फाग बिधि मंडिय डारि गुलाल थट ॥२॥

कूरम नृप पुनि कहिय बुद्धि बुंदीस पुरोहित ॥

राजकुमारहिँ रक्खि चहत व्याहन मेरो चित ॥

अंक भलाय अधीस सुता लैलगन दिखावहिँ ॥

बनि हम स्वसुर बिबाहि चतुर कुमरहिँ पहुँचावहिँ ॥

द्विज दयाराम सुनि किय अरज है अतुलित भवदीय हित ॥

पै इम न होय उपयर्म प्रथम बुंदिय सैन व्याहन उचित ॥३॥

॥ दोहा ॥

रहि तदनंतर सिसिर ऋतु, फगुन खेलत फाग ॥

कूरमपति संभर कुमर, अति मंडिय अनुंराग ॥ ४ ॥

बैलि मधु मास बसंत बिच, बहुविध हरख विधाय ॥

कुमरहिँ लाड अनेक करि, रक्ख्यो कूरम राय ॥ ५ ॥

अतिकृति धृति<sup>१८</sup> २५ हाँयन लगत, पुणिगाम<sup>१५</sup> चैत्रिक पाय ॥

\* पहिले ही ॥ १ ॥ १ समय "यहाँ समयवाची दो शब्द बीप्सा अर्थ में है. अर्थात् समय समय पर वा बहुत बर उत्सव किया है" रजयपुर के गढ का नाम है १ सुदि ४ चढकर ५ उमराओं सहित ॥ २ ॥ ६ गोद लेकर ७ आप का स्नेह ८ पहला विवाह ९ से ॥ ३ ॥ १० प्रीति ॥ ४ ॥ ११ पुनि १२ चैत्र १३ करके ॥ ५ ॥ १४ वर्ष १५ चैत्र मास की

कुमारअजितसिंहकाकृष्णगढमेंविवाह] सप्तमराशि-षट्पंचाशमयूख (३७२६)

कूरमपति लहि राग कछु, \*बिग्रह दिन बिहाय ॥ ६ ॥

ताको सुत जेठो तबहि, पितृल बैठो पट्ट ॥

अजितसिंह हित सिक्ख अब, दिन्नाँ तिहिँ बिधि बट्ट ॥ ७ ॥

इक१ नग भूखन द्विरद इक, दुवर हय दुवर सिरुपाव ॥

करि इम नजरि कुमारकी, मन्यौ गिनहु हित भाव ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अजितसिंह बुंदीसकुमार इम चलिय सिक्खकरि ॥

संगानैर सिकार खिलिह हंकि य रहसँ धरि ॥

राहिय चठसुध रति बहुरि दरकुंच बिरचि द्रुत ॥

बुंदी आयउ बीर समर पंडित भट संजुत ॥

परि जनक पयन मंडिय प्रनति कुसल पुच्छि आसिख कहिय

अभिमन्यु लाखत हरिभाम इम गुरु प्रमोद भूपहु गहिय ९

॥ दोहा ॥

तदनु कुमार उपयम उचित, लखि नृप लगन लाखाय ॥

पठयो व्याहन कृष्णगढ, बहुल बरात बनाय ॥ १० ॥

अतिकृति धृति१८२५ सक आगमन, सद्यो लगन सुद्वारा ॥

तीज३ राध अवदात तिथि, उदित बार अंगारं ॥ ११ ॥

सुपहु बहादुरसिंहकी, कन्या सुज्जकुमारि ॥

अजितसिंह बुंदीस सुत, नवल बिवाहिय नारि ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दंपति नल१ दमयंति२ पुं१ पाँटलि२ निर्तांत प्रिय ॥

\*शरीर छोड़ दिया ॥ १ ॥ ७ ॥ १ कहा ॥ ८ ॥ २ वेग (शीघ्रता) से ३ चादस  
में रात को रहा ४ पितृ के पैरों में पड़कर ५ श्रीकृष्ण के वहिनोई (अर्जुन)  
की भांति ॥ ९ ॥ ६ जिस पीछे ७ विवाह के उचित ८ बहुत ॥ १० ॥ ८ वैशाख  
सुवि १० मंगलवार ॥ ११ ॥ १ सूर्यकुमारी १२ नवीन ॥ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति  
और स्त्री) १४ जैसे पुत्र नामक राजा १५ पादकी नामक रानी १६ निरन्तर

मनहु सचीर मघधान १ कन्है १ रुक्मिनि २ मिलाप किय ॥  
 बासवदत्ता २ वैच्छराज १ गिरिजा २ गंगाधर १ ॥  
 अर्धनिसुता २ १ छुइंद १ दुलहि संज्ञा २ रु दिवाकर १ ॥  
 रोहिनि २ सुधागु १ पंचेबु १ रति १ पिलिपिंला २ वैकुण्ठपति १ ॥  
 रठोरि २ हह २ रमनि १ रमन इम मंडिय अनुराग अति ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

आत भुजिष्या जठर भव, स्वीय नाम संग्राम ॥  
 सोहु सुता सिरदारकी, व्याहो संगहि बाम ॥ १४ ॥  
 अभयकुमारि अभिधान यह, जननि भुजिष्या जात ॥  
 इम बिबाहि आये उभय २, बुंदिय विदित बरात ॥ १५ ॥  
 ॥ षट्पात् ॥

याहि १८२५ बरस इत सुक्रे मास मरुपति जेठो सुत ॥  
 फतेसिंह अभिधान गयो व्याहन कोटा हुत ॥  
 महाराव तनया सु रान जगपति तनयाजा ॥  
 हड्डी दुलहनि हथ रुचिर गहि दुलहैराजा ॥  
 आयो सु तदनु बुंदिय नगर नृप रक्खिय अति लाड करि ॥  
 बासर बिताय पंदह १५ प्रमित बिदा करिय हित अमित धरि १६  
 याहि बरस १८२५ आसाठ विसैंद अष्टमि ८ रविवासरी ॥  
 सुपहु भुजिष्या भूनु नाम सिवसिंह बीरवर ॥

१ इन्द्र और इन्द्राणी २ श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ३ राजा वत्सराज और उसकी  
 राणी वासवदत्ता ४ शिव और पार्वती ५ सीता और ६ रामचन्द्र ७ सूर्य और  
 सूर्य की स्त्री संज्ञा ८ चन्द्रमा और रोहिणी ९ पांच बाणोंवाला (कामदेव)  
 और रति ११ श्रीविष्णु भगवान् और १० लक्ष्मी का मिलाप हुआ तैम  
 राठोड़ी और हाडा १२ दुलहन १३ दुलहे की १४ प्रीति रची ॥ १३ ॥ १४  
 पासवान के छदर से जन्म पानेवाला ॥ १४ ॥ १५ नाम ॥ १५ ॥ १७ ज्येष्ठ  
 मास में १८ राणा जगतसिंह की पुत्री की पुत्री १९ बीर राजा ॥ १६ ॥ २०  
 छत्रपति की २१ आदित्यवार २२ राजा की पासवान का पुत्र

राणा राजसिंह के कृत्रिम पुत्र रतन सिंह] सप्तमराशि-षट्पंचाशो मयूख (३७३१)

मरुपति विजय खवासि सुता आव्हय पद्यावति ॥

जाय नगर जोधपुर परनि आयो जिम रतिपति ॥

मेवार मुलक इत दंड मचिलैन दुरित फल समय जाहि ॥

अरिसिंह रान सैन भट अखिल फुट्टे कछुक फरेब कहि १७

॥ दोहा ॥

उद्धत गिनि अरिसिंहको, मिलि सुभटन किय मंत्र ॥

काहूको इक १ आनि सिसु, सो किय रान स्वतंत्र ॥

रानी झल्लियके उदर, राजसिंह सन जात ॥

रतनसिंह अभिधान यह, किहो इम बिरुपात ॥ १९ ॥

झल्ला भट जसवंत १ निज, गोघुंदा पुर नाह ॥

तनया व्याहिय अग तस, राजसिंह हित राह ॥ २० ॥

सुत ताको यह थपि सिसु, रतनसिंह रचि नाम ॥

मार्तामह जसवंत १ हुव, करन मूढ अर्थ काम ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

गोघुंदापति झल्ल मिल्यो जसवंत १ मंदमति ॥

सगताउतन सैमेत पाप मुहुकम २ भिंडर पति ॥

देवगढप जसवंत ३ सूनु राघव १ निज संजुत ॥

१ नाम २ कामदेव ३ उपद्रव ४ पाप का फल ५ राणा अरिसिंह से ६ सप्त  
उमराव ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ राणा राजसिंह से हुआ ८ (\*) नाम ॥ १९ ॥  
९ पुत्री ॥ २० ॥ १० नाना ११ पाप का कार्य ॥ २१ ॥ १२ मूर्ख १३ सगताउतन सहित  
१४ पुत्र १५ राघवदेव सहित

(\*) मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में लिखा है कि राणा राजसिंह का देहान्त हुआ तब राणा भाली  
को गर्भ था परन्तु अरिसिंह के भय से उसने गर्भ होने से नहीं फरदी, जिसपरिधि रतनसिंह का जन्म हुआ  
तब उसको गुप्त रखकर रतनसिंह का नाना गोघुंदा का राजा जसवंतसिंह गोघुंदा लेगया और मेवाड़ के कई  
उमराव सरदार उन में मिलगये, यहां तक उन सरदारोंका कोई अघर्म नहीं था परन्तु वह रतनसिंह बालपन  
में ही मरगया तब उन सरदारों ने अरिसिंह की क्रूरता के कारण किसीके बालक को लाकर रतनसिंह के  
नाम से रखदिया और रतनसिंह का मरना प्रसिद्ध नहीं किया यह मेवाड़ के उन सरदारों का अघर्म हुआ।

फतैसिंह चहुवान ४ दंग कुठार ईस हुत ॥

वेधम पुरेस भट मेघ ५ बलि अत्रेसर ए पंच ५ हुव ॥

वय बाल जाय किन्नौ अधिष धरि गढ कुंभिलमेरु धुव २२

॥ दोहा ॥

देवपुरा हो तँहँ बनिक, किल्लादार वसंत १ ॥

सोहु मिल्यो सिसु माँहिँ सठ, हानि धरम करि हंत ॥ २३ ॥

समरसिंह राउल नृपति, बिल्लिय जाय उदग्ग ॥

भंगिनी पृथ्विराजकी, पृथा विवाहयो अग्ग ॥ २४ ॥

तब ताके दायज दिये, एहु बनिक चहुवान ॥

रहे हुकम अनुगत सदा, अब पलटे अघवान ॥ २५ ॥

जँहँ रानाँ अरिसिंहनैँ, धरे दम्म कृति लकख २०००००० ॥

तेहु न दिन्नैँ द्रोह तकि, प्रबल बंधि परपक्ख ॥ २६ ॥

रायसिंह १ भल्ला सुभट, नगर सादड़ी नाह ॥

देववाड़ पति भल्ल पुनि, राघवदेव २ सचाह ॥ २७ ॥

पत्रन सन ए दुव २ मिले, भट लहि कछु सिसुं भेट ॥

उभय २ रहे अरिसिंहमैँ, सलूमरि १ रु आमेट २ ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

उदासीन भट ईतर रहे प्रकटन अनिमिख वसि ॥

कपटवाल लै संग सुभट उतके आयुध कसि ॥

१ फोठारिया नगरका पति ॥ २२ ॥ २ उस वैश्य की जाति है इच्छेद है ॥ २३ ॥

४ (५) पृथ्वीराज की बहिन ॥ २४ ॥ ५ हुकम के आधीन (पापी) ॥ २५ ॥ ७ धनु

का पञ्च ॥ २६ ॥ ८ भाला ॥ २७ ॥ ९ पक्षों से १० रत्नसिंह से भेट (नजराना

अर्थात् कौज खरच) ॥ २८ ॥ ११ अन्य समराध तटस्थ रहे १२ समय के बंध होकर

साधना निरंतर देखते रहकर

(५) हम ऊपर लिख प्रायः हैं कि राउल समरसिंह और पृथ्वीराज चौहान के समयमें ही वर्ग का अन्तर

है इसकारण समरसिंह का पृथा से विवाह करना संया किया है, यह मिथ्या कथा कपोलकल्पित नवीन

रुचिग पृथ्वीराजराजा के कारण प्रसिद्ध हुई है ॥

उदयनैर दिय आनि घेर तोपन कराल घन ॥

फैरन पर रचि फैर ज्वाले व्याकुल किय पुरजन ॥

तुटत निपान फुटत निलय गढन गाढ छुटत गहन ॥

प्राचीनवरहि पुत्रन मनहु तजिय बन्हि बिटपन दहन ॥२९॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायण सप्तम ७ राशावुम्मे  
दसिंहचरित्रे जट्टराक्षकूर्मविजयसहायार्थबुन्दीन्द्रपूर्वप्रेषितराजकुमा-  
राऽजितसिंहजैपुरनिवसनयुयुत्सुतन्माधवसिंहाऽवरोधनजट्टजयाऽन-  
न्तरनानाविलासविलासन द्विजदयारामकुमारवर्यश्वशुरीभावितुकाम  
जायसिंहिसम्बोधनसमनन्तरतत्रैत्रपूर्णमास १५ माधवसिंहमरणपृथ्वी  
सिंहजयपुरगढिकोपविशनविहितव्यवहारौम्मेदसिंहबुन्द्यागमनराधा  
ऽवदाततृतीया ३ सदासेविभ्रातृसंग्रामसिंहमहाराजकुमाराऽजितसिंह  
कृष्णगढविवाहनशुक्रमासलग्नमरुराजविजयसिंहकुमारफतहसिंहको

१ अग्नि से २ उपजलाशय (खेली आदि निवान) ३ मकान ४ प्रचेताओं ने मा-  
नों वृक्षों को जलाने को अग्नि छोड़ी (यह कथा भागवत में इस प्रकार है कि  
प्राचीनवर्हि के पुत्र प्रचेता तप करने को गये थे तब पीछे से नारद के उपदेश  
से प्राचीनवर्हि भी वन में तप करने को चलागया इस कारण देश में अरा-  
जकता होकर संपूर्ण पृथ्वी को वृक्षों ने ढक ली, तदनंतर प्रचेता जब तप  
करके पीछे आये तब अग्नि फैलाकर उन वृक्षों को जलाया) ॥२९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के  
चरित्र में, जाट के युद्ध में सहाय देने के अर्थ बुन्दी के पति के पहिले भेजे  
हुए राजकुमार अजितसिंह का जयपुर में रहना और उस युद्ध की इच्छावाले  
को माधवसिंह का रोकना १ जाट से विजय हुए पीछे अनेक प्रकार के विस्वा-  
स करना और ब्राह्मण दयाराम का कुमार के श्वशुर होने की कामनावाले ज-  
यसिंह के पुत्र (माधवसिंह) को समझाना २ उस समय के पूर्ण हुए पीछे चैत्र  
मासकी पूर्णिमा को माधवसिंह का मरना और पृथ्वीसिंह का जयपुर की गद्दी  
पर बैठना ३ उचित व्यवहार के साथ उम्मेदसिंह के पुत्र का बुन्दी आना और  
वैशाख सुदि तीज को सदैव सेवा करनेवाले भाई संग्रामसिंह और महा-  
राज कुमार अजितसिंह का कृष्णगढ विवाह करना ४ ज्येष्ठ मास के लग्न पर  
मारवाड़के राजा विजयसिंह के कुमार फतहसिंह का कौटा के पति की पुत्री से

देशसुताविवाहनभौजिष्येयबुंदीन्द्रकुमारशिवसिंहभौजिष्येयीधन्वेश  
 बाखतसिंहिसुतोद्वहनमेदपाटदेशस्वामिसामंतविग्रहवर्द्धनराणाराज  
 सिंहव्याजपुत्ररत्नासिंहकुम्भिलमरेदुर्गप्रकटीभवनगोघुन्देशभल्लाजस  
 वंतसिंह १ स्वकुलसहितभिण्डरेशसगताउत्तमुहुःकर्म्मसिंह २ सपुत्र  
 देवगढेशचुण्डाउत्तजसवन्तसिंह ३ कुठारेशचाहुवाणफतेसिंह ४ बेघ  
 मेशचुंडाउत्तमेघसिंह ५ दुर्गाऽध्यक्षवणिग्वसन्तरामा ६ ऽऽदिच्छद्वा-  
 शिशुप्राकट्यसेवनसादड़ीशभल्लारायसिंह १ देलवाड़ेशभल्लाराघवदे  
 व २ प्रच्छन्नशिशुस्वामित्वस्वीकरणोदयपुरचमूवेष्टनततोपरणाराणा  
 रिसिंहव्याकुलीभवनं षट्पञ्चाशत्तमो ५६ मयूखः ॥ ५६ ॥  
 आदितः ॥ ३३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत हुलकर तक्कू अडर, आयो हिंदुस्थान ॥

आगम पख फग्गुन असित, सक अतिकृति धृति १८२५माना ॥

तक्कू पहुँ बुंदीस तब, सब टौंका बिधि साजि ॥

विवाह करना और बुन्दी के पति के दासीसुत शिवसिंहका भारवाड़के पति  
 बाखतसिंह के पुत्र (विजयसिंह) की पासघान की पुत्री को विवाहना ५ अेवाड़  
 देशमें स्वामी और उमरावोंमें विरोध बढ़ना, राणा राजसिंहके भूडे पुत्र रत्न-  
 सिंह का कुंभलमेर के किले में प्रसिद्ध होना १ गोछुंदा के पति भाला जसव-  
 न्तसिंह, अपने कुल सहित भीखर पुर के पति सगतावत खुदकुमासिंह, पुत्र  
 सहित देवगढ के पति चुंडाउत जसवन्तसिंह, कोठारिया के पति बहूवाण  
 फतहसिंह, बेघम के पति चुंडाउत मेघसिंह, और किलेदार बनिया वसन्तरा-  
 म आदि का छलवाले बालक को प्रकट करना ७ सेवा करने को सादड़ी के  
 पति भाला रायसिंह, देलवाड़े के पति भाला राघवदेव का छिपेहुए बालक  
 का स्वामीपन स्वीकार करना ८ सेना से उदयपुर को घेरना और उस तोप  
 युद्ध से अरिसिंह के व्याकुल होने का छप्पनवां ५६ मयूख समाप्त हुआ ॥५६॥  
 और आदि से तीन सौ सैंतीस ३३७ मयूख हुए ॥

१ फागण वदि ॥ १ ॥

राजाका अपने सन्तानोंको बिशाहना] सप्तमराशि-सप्तपंचाशमयूख (१७३१)

पठई कुल पहिरावनी, \*बलि भूखन? गजर बाजि३॥ २ ॥

॥ षट्पात ॥

याहि बरस १८२५ बिच अजितसिंह बुन्दीस कुमारहु ॥

सुनि जनपद निज सोर बित्त लुट्टन मैनन बहु ॥

चढ्यो कुपित चहुवान जनक आदेस पाय जँहँ ॥

बारह १२ खेटँन बिंदि ताप दिय अतुल उग्र तँहँ ॥

करि कैद अखिल तैसकर कुमति काराबिच डारिय कुमर  
जय द्विरु बंधि आलान भुज धन्य धन्य हुव सकल धर ३

॥ दोहा ॥

इंद्रकुमरि? अरु ब्रजकुमरि२, जननि भुजिष्या जाँत ॥

दुहिता निज बुन्दीस दुव२, व्याहिय इत बिख्यात ॥ ४ ॥

अजितसिंह मरु ईसको, सुत लघु हो जु किसोर ॥

सुभमति तास खवासि सुत, जैतसिंह१ रन जोर ॥ ५ ॥

बुल्लि राजगढसन बिदित, वाहि अतुल उच्छाह ॥

दुहिता ब्रजकुमरि सु दई, रचि बिबाह हित राह ॥ ६ ॥

नगर करोली नृप तनय, कुसलसिंह दासेय ॥

सुत ताको जयसिंह२ सो, पुनि बुल्लयो प्रभु प्रेय ॥ ७ ॥

इंद्रकुमरि ताकँहँ दई, अखिल सिद्धि अवधान ॥

दायज द्रव्य अनेक दिय, चित्त उदधि चहुवान ॥ ८ ॥

बहुरि बहादुरसिंह१ अरु, स्वीय कुमर सिरदार ॥

गंगराँड व्याहे उभय२, लगन रीति इक १ लार ॥ ९ ॥

\*पुनि ॥ २ ॥ १ अपने देश में २ मैनों के बहुत धन लेने का ३ पिता के हुकम से  
४ खेडों को घेरकर ५ चोरों को ६ कैद में ७ जय रूपी हाथी का ८ भुजों रूपी  
हाथी बांधने के खंभे से बांधकर ९ सब भूमि में ॥ ३ ॥ पासवान माता से १०  
उत्पन्न ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ पुत्री ॥ ६ ॥ १२ दासी का पुत्र १३ स्वामी का प्यारा  
॥ ७ ॥ १४ सब मनोयोग्य (वांछित) साधकर ॥ ८ ॥ १५ गंगराट ॥ ९ ॥



विक्रम सक पंचीस धृति १=२५, पंचमि५ माघ \*बलच्छ ॥

†दन्तुजपुरोहित दीर दिन, उदय रासि लिय अच्छ ॥१०॥

बखतसिंह रावत सुता, चंद्रकुमरि१ अभिधान ॥

परनि बहादुरसिंह१ लिय, तिय भल्लिय मतिमान ॥ ११ ॥

जोराउर राउत सुता, अभयकुमरि२ गुन फार ॥

दुलहनि अंचल गंठि दै, सो व्याहिय सिरदार ॥ १२ ॥

कुमर बहादुरसिंह१ हित, दयो तदनु नृप दाय ॥

नगर गोठड़ा जुत पटा, असी सहँस ८०००० मित आय १३

सुत कनिष्ठ सिरदार हित, दिय तदनंतर दाय ॥

पुरी दुधारी जुट पटा, अग्र लिखित ८०००० मित आय १४

सक अतिकृति धृति १=२५ प्रमित सम, पिक्खि उचित नृप पास ॥

थंभायत छठो६ कियउ, मानिकराम सु व्यास ॥ १५ ॥

प्रथम पुरोहित१ व्यास२ पुनि, ए उत्तम दुवर जानि ॥

त्योही चारन३ भट्ट४ ए, दुवर मध्यस्थ बखानि ॥ १६ ॥

बारिय५ तिम द्रुम्मामि६ बलि, उभय२ अधम ए आहि ॥

बहत वृत्ति बुंदीसकी, थंभायत खट६ चाहि ॥ १७ ॥

॥ पट्टपात ॥

रान भटैन इत राबि फरेब रतनेस रान किय ॥

सजि प्रचंड निज सेन उदयपुर आनि बिटि लिय ॥

अधिक रान अरिसिंह जंग सन हुब व्याकुल जब ॥

जालम१ भल्ला करि वकील पठयो अंवंति तब ॥

अरु अग्रचंद२ सहता बनिक इन दोउन२ हुत जाय तित ॥

\* शुक्लपत्र † शुक्रवार ॥ १० ॥ ११ ॥ १ शुणों की सखूह २ बख्त की गांठ देकर (गंठजोड़ा करके) ॥ १२ ॥ ३ दायभाग (भाईवंद) ४ आमद ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ सम्बत ६ नेगी (नेग पानेवाला) ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ होली में हंसाते हैं ॥ १७ ॥ १० राणा के उमरावों ने ११ भाला जालमसिंह को १२ उज्जैन भेजा

शतला जालमसिंहकाराणाकी मददमेसेनालाना] सप्तमराशि-सप्तपंचाशमयूच (३७३७)

पठवाये अरज श्रीमंत पैहँ लिख आदेश सहाय हित ॥ १८ ॥

दोहा-सुनत अरज श्रीमंत लिखि, दिय कगगर उज्जैन ॥

राघव१ दोलार रानकी, करहु भीर सह सैन ॥ १९ ॥

पायगिया मरहट्ट तव, राघव१ लिखि पैहु पत्त ॥

जिमहिँ बार दोलार जवन, ते हुवर सजिय तत्त ॥ २० ॥

पंद्रह सईस १५००० अनीक पति, दोउनर सुँकर दिखाय ॥

अल्ला जालमसिंह ले, हंकिय रान सहाय ॥ २१ ॥

॥ पट्टपात् ॥

अगँ नृप अनिरुद्ध समय अल्ला भट माधव१ ॥

तजि जनपद गुजरात इत सु आयो चलि अति जव ॥

सब कुटुंब निज संग द्विरद१ सिविकार रथ३ जेवर४ ॥

बुँदिय आवत बेर गयो सम्मुह नृप संभर ॥

सिर कर लगाय मिलि प्रीतिसन रक्खिय तव कछुदिन रहिय

पुनि जान अरज किय तव सुपहु डेरा जाय रुसिक्ख दिय२२

॥ दोहा ॥

कोटा माधव अल्ला गय, तदनु दिष्ट अनुसार ॥

रामसिंह कोटेस यह, रक्खिय सह सतकार ॥ २३ ॥

रामसिंह जाजव मरयो, भीम भयो जव भूप ॥

वानैहू माधव यहै, रक्खयो हित अनुरूप ॥ २४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

माधवके सुत मदनसिंह२ हुव, दुज्जनसल्ल सु सचिव किन्न धुव ॥

दुज्जनसल्ल मिच्छु जव पायो, तिहिँ अनतासन अजित बुलायो२५

१ हुकम लिखा ॥ १८ ॥ २ पत्र ॥ १९ ॥ ३ स्वामी का पत्र देखकर

॥ २० ॥ ४ अपने श्रेष्ठ हाथ दिखाकर ॥ २१ ॥ ५ माधवसिंह ६ देश ७ शीघ्र ॥ २२ ॥

८ भाग्य के अनुसार ॥ २३ ॥ २४ ॥ ९ मृत्यु १० अजितसिंह को ॥ २५ ॥

पृथ्वीसिंह ३ मदन भल्ला सुत, सन्नुसल्ल मन्व्यो सु मोद जुत  
सन्नुसल्ल विनु सुत वपु तजि दिय, तब तस अनुज गुमान  
लिय ॥ २६ ॥

पृथ्वीसिंह भल्ल सुत जालम ४, यह वहाँ जाहिर अब आलम  
ताकै कुछ कोटापतिसौ तब, अनख भई सु रह्यो न तथ अब २  
छोरि गुमानसिंह कोटा पति, उदयनैर आयो प्रपंच मति ॥  
सु अरिसिंह रानहु सनमान्यो, अतिहित जाय समुख पुर आन्यो २  
तखतसिंह जयसिंह रान सुव, ताके सुत अज्ञात नाम हुव ॥  
ताकी सुता व्याहि जालम कहँ, इम सनमानि रान रक्खिय तँह २  
दयो राज्य उपटंक मुदित मन, पुनि पर चित्ताखेड़ परगगन ॥  
सो जालम यँह रान सहायक, लौ मरहठ कटकरन लायक ॥ ३०  
छोरि अवंति स्वामि हित छायो, अगरचंद महता जुत आयो ॥  
अगरचंदको जैनक अगग जब, बीकानैर नृपहिँ बिंख दै तब ॥ ३१  
मंडिलगढ तिय जुत भजि आयो, ताको सुत यह रान बधायो ॥  
इत रानहु रन हित कंठि बंधी, रक्खे जवन सहँस खट ६००० संव  
॥ दोहा ॥

आये दैल उज्जैनतै, सुनि मरहठ सहाय ॥

पुरतै रानहु पिल्लयो, दल निज जितन दाय ॥ ३३ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राश १ बु  
सिंहचरित्रे हुलकरतकूदगागमनबुन्दीन्रतत्सत्करणामह ० कु  
अजितसिंह १ मैणागणविध्वंसनरावराड्भौजिष्येयीसुताद्वय २ भौ-

१ छोटा भाई ॥ २६ ॥ २ संसार में ॥ २७ ॥ २ ॥ ३ जिसका नाम मालूम नहीं हुआ ॥ २८ ॥  
४ राज की पदवी ५ श्रेष्ठ ॥ ३० ॥ ६ पिता ७ जहर ॥ ३१ ॥ ८ मंडलगढ में  
९ कमर बांधी १० सिन्ध देश के यवन ॥ ३२ ॥ ११ सेना १२ सेना भेजी ॥ ३३ ॥  
श्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, हुलकर तक्कू का उत्तर दिशा में आना और बुन्दी के पति का उसका सत्कार करना । महाराज कुमार अजितसिंह का युद्ध में भैनों को मारना

रतनसिंहको लेकर उमरावोंका चित्तौड़ जाना] सप्तमराशि अष्टपंचाशमयूख (७३३६)

जिष्येयरठोड़ जैतसिंह १ यादवजयसिंह २ विवाहनराजकुमारबहा  
दुरासिंह १ शरदारसिंह २ गर्गराटोद्वाहनाऽनन्तरकुमारद्वय २ दाय  
विभाजनव्यासमाणिक्यरामपरस्परभिक्षुकपञ्चक ४ समानसन्मन  
नच्छलबालसेनावेष्टनव्याकुलराणाऽरिसिंहश्रीमन्तसहायप्रार्थनभ  
ल्लाजालमसिंह १ वशिष्ठगगरचन्द्र २ प्रेषणाज्ञाततद्विज्ञापिपत्रश्रीमन्त  
महाराष्ट्रराघव १ यवनदोला २ ऽरिसिंहसहायप्रस्थापनभल्लाजाल  
मसिंहप्रपितामहाऽऽगमाऽऽदिपूर्वोदन्तवर्णनवशिष्ठगगरचन्द्रजनकम-  
हापापत्वसूचनसमाप्तश्रीमन्तसहायराणाऽरिसिंहस्वसैन्यप्रेषणां सप्त-  
पञ्चाशत्तमो ५७ मयूखः ॥ ५७ ॥ आदितः ॥ ३३८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पुर सलूमरि पति भीम भ्रात पहाड़ १ लै दल निखस्यो ॥

अरु फतैसिंह २ हु चोडहर आमेठपुर पति उल्लस्यो ॥

घाणोर पति रठोर बीरभदेव ३ संगहि सज्जयो ॥

रठोर अक्खयसिंह ४ तिम बधनोर पुर पति गज्जयो ॥ १ ॥

और रावराजा की दो पासवान की पुत्रियों को पासवानिये राठोड़ जैतसिंह  
और जादव जयसिंह को विवाहना २ राजकुमार बहादुरसिंह और सरदा-  
रसिंह को गर्गराट पुर में विवाह करने पीछे भाईवंट देना और व्यास माणि-  
कराम को परस्पर पांच पाचकों में बराबर मानना ३ झूठे (फरेबी) बालक  
की सेना से घिर कर राणा अरिसिंह का श्रीमन्त से सहाय के अर्थ प्रार्थना  
करना और भाला जालमसिंह और महता अगरचंद को भेजना ४ इन की  
अरजी जानकर श्रीमन्त का सर हठा रघू और दोलामियां को अरिसिंह की  
सहाय में भेजना ५ भाला जालमसिंह के प्रपितामह के आने आदि पहिले वृत्ता  
न्त का कहना और बानिये अगरचन्द के पिता के महापाप की सूचना करना  
७ श्रीमन्त की सहाय पाकर राणा अरिसिंह का अपनी सेना भेजने का स-  
त्तावनवां ५७ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५७ ॥ और आदि से तीन सौ अड़तीस ३३८  
मयूख हुए ॥

१ पहाड़सिंह ॥ १ ॥

वनहड़ापति नृपरायसिंहहु ५ रानबंसिय उज्जल्यो ॥  
 उम्मेदद साहिपुरेस भूप सुजानबंसिय उज्जल्यो ॥  
 विंकोलि पति सुभकर्ण ७ त्यों परमार असिंवर संग्रह्यो ॥  
 बलि चोंडबंसिय भैंसरोर पुरेस मानहु ८ उम्महयो ॥२॥  
 इत्पादि सूर सिपाह संधिन लौ उदैपुरतैं कडे ॥  
 सह झल जालमसिंह दक्खिन बीर वे उततैं बडे ॥  
 दुहुँ ओर आत अनीक लाखि सिसुंकोँ सहायक लौ भजे  
 चित्तोरकोँ कछु भेद सौ लहि दुग्गमें दड व्है सजे ॥ ३ ॥  
 दोला मियाँ १ मरहट्ट राघव २ ए उदैपुरमें रहे ॥  
 छलबालके प्रतिपाल जे तिनके न नैक भये चहे ॥  
 इहिँ बीच माहजि संधिया पहुँच्यो अवंतिप आनिकैं ॥  
 तिहिँ जानिकैं सिसु पँच्छके भट भीरैं लैन प्रमानिकैं ॥४॥  
 चित्तोर ऊँरुज सुरतसिंहहि दै रु लौ सिसुंकोँ चले ॥  
 सुनि आय सम्मुह संधिया इन्ह लोग्यो सु चहे फले ॥  
 तिन बाल माहजि अँकमें धरि हो सरस्य यहै कही ॥  
 सुनि यों उदैपुर दैनकी इहिँ बत्त माहजिहू चही ॥ ५ ॥  
 दोला १ रु राघव १ हे उदैपुर वहाँ यहै तिनमें सुनी ॥  
 सिसुपर्कल लग्निय संधिया अब सेन सज्जहु सोगुनी ॥  
 हम जायकैं छल मंत्रमें तिहिँ लै रु सत्वर मारिहैं ॥  
 गहि बाल जो अरि रावरो तिहिँ कैद आलस्य डारिहैं ॥६॥  
 दड मंत्र राघव १ रान १ के इत यों उदैपुरमें भयो ॥

१ श्रेष्ठ तरवार पकड़ी २ मानसिंह भी ॥ २ ॥ ३ सेना ४ रत्नसिंह को ॥३॥  
 छल से बनाये हुए बालक रत्नसिंह की ५ पालना करनेवाले ६ उल्लेख में ७  
 रत्नसिंह के पक्ष के सम्राट = सहायता ॥ ४ ॥ ६ चैत्र १० रत्नसिंह को ११  
 गोद में रखकर ॥ १ ॥ १२ बालक (रत्नसिंह) के पक्ष पर १३ माधजी को क्षीप्र  
 मारेंगे ॥ ६ ॥

सब दच्छ दूतन भेजिकै यह जानि माहजिहू लयो ॥

दोला १ रु राघव २ के कुटुंब हुते अवंतियमैं जहाँ ॥

कारि कैद पुत्र कलल कोपित संधियाहु सज्यो तहाँ ॥ ७ ॥

यह जानि ये अरिसिंहको दल लै उदैपुरतैं चले ॥

शुरतार बाजिन मार मत्थ हजार आलुकेके हले ॥

फहरात लोहित रंग केतन मत्त हथिनपैं धरे ॥

बट १ अंब २ जंबु ३ कदंब ४ ज्यों कुंमुदादि अदि ४ नपैं खरो ८ ॥

डगमगि सैलन शृंग त्यों भैर भंग तुटन के लगे ॥

सब अैनैं संकत सैन हंकत नैन संकरके जगे ॥

चढि सिंह कालिय संग चालिय गैन गिद्धनि बित्थरी ॥

पहुँची अवंतिय यों चमू अरु हल्ल कित्तनकाँ करी ॥ ९ ॥

उततैंहु माहजि सज्ज व्है सिंसुपच्छके भट लै चढयो ॥

जिम जेठ सूरज ताव यों तरकाव तोपनको बढयो ॥

हुहुँ ओरको रन बाजि कुँजर अँभमैं उडनैं लगे ॥

खिल्ल सोक गोलेन तोकें घायल घुम्म लैन घनैं लगे १० ॥

डनैंलगे १ घनैंलगे २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अतलादि भू पुट व्है थरत्थर नीर सिंधुनतैं छल्यो ॥

दिग्धेनुँ च्यारि ४ हु एँनलों चिकि फेन आननमैं फल्यो ॥

१ दक्ष (चतुर) २ वज्रैन में शस्त्रियों को ॥ ७ ॥ ४ ये (रघु और दोला) दोनों अरि-  
सिंह की सेना लेकर ५ सर्प (हजार फलों के सम्बन्ध से यहाँ शेषनाग जानना  
चाहिये) ६ लाल रंग की ७ ध्वजायें ८ जैसे ये चारों वृक्ष सुमेरु के शिखर ९  
कुमुद आदि पर खड़े हैं तैसे ॥ ८ ॥ १० पर्वतों के शिखर ११ भार से १२ स्थान  
॥ ९ ॥ १३ रत्नसिंह के पक्ष के वमरावों को लेकर १४ हाथी १५ आकाश में  
१६ बाकी के गोठों की शोक से १७ बालक (रत्नसिंह) के बहुत घायल वा घा-  
यलों के समूह घूमने लगे ॥ १० ॥ १८ दिशा की हथिनियें (दिग्गजों की स्त्रियें)  
“यह युद्ध दक्षिण में हुआ इससे चार दिशाकी हथिनियों को कष्ट होना लिखा  
और उत्तर आदि चार दिशा की हथिनियें इस कष्ट से बाहर रहीं” १९ हरिण

चउसठि६४ जुगिनि जंग चत्वर रास मंडत रंगमें ॥

महती बजावनहारहू कलिकार धुम्मत संगमें ॥ ११ ॥

आखाढ मारुत खेह सम्मित धूम छादित लोक भो ॥

तम थोक रोकन ओक ओकन कोक कोकिन सोकभो ॥

जल बाँत पोमिन पात ज्यों भुव सेसके सिरपै नचै ॥

कालीय पन्नग भोगपै जदुनाथ तंडव ज्यों रचै ॥ १२ ॥

इनुमान पावक लंक ज्यों दिष ज्वाल ज्यों नभ बित्थरै ॥

नगरी अवंतियमें हु मानव जूह रक्खस ज्यों जरै ॥

सिंघा नदी लागि तोप तुटन नक्र कख मन आवटे ॥

जिम लोह कंप्पर तैलमें गन पूँपके खग लाँवटे ॥ १३ ॥

इम होत लोलन जंग गोलन सेन माइजिकी लँची ॥

छैलबालकी तब फोज होय दोगज रारि भली रची ॥

कलुकाल तोपन ज्वाल यों रचि बग्न बाजिनकी लई ॥

दुहुँ२ और धीर प्रवीर मिलि भट भीर सस्त्रनकी भई ॥ १४ ॥

के समान चकित होकर, युद्ध में भाग होने लगे, चौसठ ही योगिनियों ने १८ स युद्ध के रजौक (क्षेत्र) में युद्ध में आकर शेरव रचा महती नामक बीणा को ४ बजानेवाला और ४ युद्ध करानेवाला नारद छुनि उसके साथ में घूमने लगा ॥ ११ ॥ आषाढ के ९ पवन से रज बड़ जिलक ७ सहस्र धूम से लोक छागदा ॥ उस अंधेरे के समूह ने ९ घर घर को रोक दिया जिससे १० बक्रवा चक्रियों को शोक हुआ जैसे पानी में ११ पवन लगने से १२ पद्मिनी (कुमोदनी) हिले, तैसे शेष के मस्तक पर श्रुति नची अथवा कालीनाग के १३ कर्णों पर १४ श्रीकृष्ण ने नृत्य किया त्यों नची ॥ १२ ॥ जिसप्रकार इनुमान ने लंका में १५ अग्नि लगाई तिसप्रकार आकाश में अग्नि फैली उस अग्नि से उज्जैन में राजसों के समान मनुष्यों का १६ समूह जलने लगा और १७ सफरा नदी का पानी तूटकर मगर मच्छ ऐसे उबले जैसे तेल से भरे लोहे के १८ कड़ाह में, १९ पुर्वों का समूह अथवा २० लावा पक्षी उबले ॥ १३ ॥ इसप्रकार २१ चपल गोलों से युद्ध होते माहजी (माधोराव) सिंधिया की सेना २२ भागी तथा २३ रत्नसिंह की सेना ने आगे होकर अच्छा युद्ध किया २४ घोड़ों की बाँ

ललबाज को देल संधिया लहि दीये सजुन के भयो ॥  
 बरमाल लौ ततकाल अंबर जाल अछरि को छयो ॥  
 कटि मुंड १ तुंड २ कलाप ३ कंठ ४ ललाट ५ के किरने लगे ॥  
 बलि मत्त पीवन रत्त फेरव फेरवी फिरने लगे ॥ १५ ॥  
 भट औचि कानन देत बानन लेत प्रानन सोधिकै ॥  
 अति कोप छुटत रोप फुटत टोप संजुत गोधिकै ॥  
 तरवारि बाहुल लगि होत उपेद मंदिर झल्लरी ॥  
 नस जाल लुंगत देह दारित जानि अंबर बल्लरी ॥ १६ ॥  
 उलटै तुखारि प्रहारतै असवार ऊरध उछटै ॥  
 फरकै कलेज रु फिफ फलतै द्वार छत्तिन के फटै ॥  
 घंट के बने बट के लगे झट के उडै भट के नये ॥  
 लट के परै अट के रकावन रूप के नट के भये ॥ १७ ॥  
 कटि धार मारन भद्र वारन मत्थ सुत्तिय उछलै ॥  
 घन कल्प के घर का मडा जर का मनो कर का चलै ॥

उठाई ॥ १४ ॥ १ रत्नसिद्ध की लेना का लेकर सिन्धिया शत्रुओं के बीच में  
 हुआ उस समय तुरंत वरमाला लेकर अप्सराओं का समूह २ आकाश में  
 छागया वहाँ कितने ही मस्तक ३ मुख, हाथियों का कलावा, कंठ, ललाट ४  
 गिरने लगे ५ फिर मस्त होकर रुधिर पीने को ६ स्थान (गीदड़) ७ स्थानियां  
 (गीदड़ानियां) फिरने लगीं ॥ १५ ॥ वीर लोग कान तक खँचकर बाण छोड़ते हैं सो  
 घेर कर प्राणों को घेरते हैं अत्यन्त कोप से छूटे हुए ८ बाणों से दोष सहित  
 ९ ललाट फूटते हैं १० इस्तानों पर लगकर तलवार ११ विष्णु के मंदिर की झाल  
 र के समान बजती हैं १२ कटे हुए शरीरों से १४ आकाश की बेल के समान १२  
 नसों का समूह लटकता है ॥ १६ ॥ प्रहार होने से १५ घोड़े उछलते हैं और सवार  
 १६ ऊपर उछलते हैं छाती के फाट फट कर कलेजे और फेफरे फैलते हैं कितने  
 ही वीरों के १७ खड्ग लगकर १७ शरीरों के टुकड़े होते हैं रकावों में लटक कर  
 कई वीर नट के रूप के समान होते हैं ॥ १७ ॥ तलवारों की धार से भद्र  
 १८ जातिवाले हाथियों के मस्तक कट कर मोती उछलते हैं सो मानों २०  
 मलय के मेघ के घर से मोटी झड़ी के २१ आले गिरते हैं गोशियों के



भदनात गोतिन ब्रात के ऋतुराजमें अलिंराज ज्यों ॥  
 असि केक मारत भुंड भारत दबि तित्तिर बाज ज्यों ॥ १८ ॥  
 छिकि पार तोमर लार लोहित धार हत्थिनतैं परैं ॥  
 अरुनोदका रसकी नदी जनु मंदराचलतैं ढरैं ॥  
 ध्वजदंड खंड उडैं अनेक मयूर सावन मास ज्यों ॥  
 हय जीन ज्वालनमें जरैं दैव जेठ पब्बय घास ज्यों ॥ १९ ॥  
 फटि घाय सोनित गैनमें चढि जात जावक जंत्र ज्यों ॥  
 भखि प्रेत बीरनके बँसा गल औचि डारत अंत्र ज्यों ॥  
 अति जोरतैं दुश्हुँ ओर घोर कटार कंकटपैं बजैं ॥  
 हमगीर धीरनको बडैं तहँ नीर भीरुनको लजैं ॥ २० ॥  
 असवार केक उडाय अब्बनैं हत्थि होदनपैं अरे ॥  
 पवमानके रँय भानके हय मानसोत्तर ज्यों खरे ॥  
 प्रसरैं फुलिंग भरैं सु पावक हेति हेतिनसों घसैं ॥  
 लागि अंत लुबत पंसुली जनु नाग चंदनपैं लसैं ॥ २१ ॥

१ समूह २ वसंत ऋतु में ३ अमरों की भांति चलते हैं और कई तलवार मारकर  
 समूहों को गिराते हैं और बाज पक्षी तीतर को दबावै तैसे दबाते हैं ॥ १८ ॥  
 ४ भाले पार फूट कर हाथियों से रुधिर की धारा गिरती है सो मानों मंद-  
 राचल से ५ अमरस की नदी चलती है. कई ध्वजा दंड कटकर आवण मास  
 के मयूरों के समान उड़ते हैं और ६ ज्येष्ठ मास की अग्नि में जैसे ७ पर्वत  
 का घास जलै तैसे घोड़ों के जीन अग्नि में जलते हैं ॥ १९ ॥ घाव फटकर १०  
 जावक के फुहारे के समान ११ आकाश में ८ रुधिर उछलता है, वीरों की ११  
 चरवी खाकर मृत गले में आंति डालते हैं दोनों ओर से घड़े बल से भयंकर  
 कटार १२ कवचों पर पजते हैं जहां हमगीर और धीरों का पराक्रम बढ़ता  
 और कायरों का छडिजत होता है ॥ २० ॥ कई सवार १३ घोड़ों को उड़ाकर  
 हाथियों के होदों पर अड़ते हैं सो मानों पवन के १४ घेगवाले १५ सूर्यके घोड़े  
 सुमेरु पर्वत पर खड़े हैं १७ शस्त्रों से शस्त्र घिस कर अग्नि गिरकर १६ अग्निकण  
 फैलते हैं आंत पंसुलि के खगकर ऐसी लटकती है जैसे चंदन पर १८ सर्प  
 शोभते हैं ॥ २१ ॥

गिरि ढाल लोहित ताल चक्र कुलाल के निभ के भ्रम ॥  
 तिनपै परै फटि तुंड के कटि मुंड जे कुट ज्यों जमै ॥  
 निकसै अलोहित सान लोढक लंब रीढक तोरिकै ॥  
 मनु फारि सैवल मंजरी सफरी उडै जल छोरिकै ॥ २२ ॥  
 भट सत्य के दुवद्वत्थलै अरि मत्य यों पटकै गदा ॥  
 सुँ मकी निकारन लड्ड मारनकी गँवारनकी अँदा ॥  
 भट प्रान छुटत स्वास तुटत के गिरे हिचकीभरै ॥  
 तुतरात बैन फिरात नैन किराँततै मृग ज्यों करै ॥ २३ ॥  
 कति भारि कतिनैकों निराय भिराय छत्तिनकों भिलै ॥  
 मनु मित्र हंतै हँवाल के चिरकाल के विछुरे मिलै ॥  
 गुटिका १ रु गोलक २ सिल्प कौबिद केक मंडत चातुगी ॥  
 बिसिखा बजार बनायकै विधिसौ बसावत जैपुरी ॥ २४ ॥  
 बिडैरात गात डरात दंतन हूँत भूत हसे परै ॥

ढालें गिरकर १ रुधिर के तलाव में २ कुम्हार के चाक के ३ स-  
 दस भ्रमती हैं जिन पर कई फटे हुए ४ मुख और कटे हुए ५ मस्तक गिरते  
 हैं सो ६ घड़ों के समान जमते हैं ७ सान से चाटी हुई तरवारें ८ लंबी  
 पीठ को तोड़कर ९ बिना लोहू लगे साफ निकलती हैं सो मानों १० शैवाल  
 की मंजरी को फाड़ कर जल को छोड़कर ११ मच्छी उड़ती है ॥ २२ ॥ कई ची-  
 रों के समूह दोनों हाथों से शत्रुओं के मस्तकों पर गदा पटकते हैं १२ सो ग्रामीण  
 लोगों के मकी (धान्य विशेष) निकालने में लड्ड मारने की १३ तरह दीखते हैं  
 वीर लोग श्वास तूटकर प्राण छूटते समय गिरकर हिचकियां लेते हैं और  
 तुतलाते हुए बचन बोलकर १४ शिकारी के आगे मृग के समान नेत्र फेरते हैं  
 ॥ २३ ॥ कितने ही १५ तलवारें चलाकर १६ समीप लेकर छानियां भिड़ाकर  
 भिलते हैं सो मानों १७ मिलने के हर्ष के अथवा वियोग के खेद के १८ वृत्तान्त से  
 १९ बहुत समय के विछड़े हुए मित्र मिलते हैं कई गोखियां और गोले शिल्प  
 विद्या के २० पंडित होकर चतुराई रचते हैं और २१ गलियां और बाजार  
 बनाकर २२ विधि पूर्वक विजय की पुरी बसाते हैं अथवा जयपुर के समान पुरी  
 बसाते हैं ॥ २४ ॥ २३ डरावने शरीरों से और दांतों से डराकर २४ बुझाये

पटु स्वाद हेरत क्षेत्रपालक नेत्र जे निकसे परै ॥

उडिजात के बिनु पगध मस्तक लंब \*मान सिखा धरै ॥

खनि मालिनी जनु गैद खेल सपत्र सूरनके करै ॥ २५ ॥

सर ईतिकारक सालभी तति रूप अंबर उल्लसै ॥

भर भीतिकारक कालभी तति जंग गोलनकों ग्रसै ॥

कति बंधप जानन पुंख बानन बात काननतैं करै ॥

अपसव्य हथ संगव्यकों तहँ सव्य कातर उच्चरै ॥ २६ ॥

गज गीत ठेलन संगि सेलन गीत पैठत यों लसै ॥

जनु वज्र संगहि बीजुरी धकि स्याम बहलमें धसै ॥

अरिसिंह १ माहजि २ के उभै २ दल यों अवंतिप आहुरे ॥

बल जानि सत्रुनको उदैपुरके लजे अब बाहुरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

चम उदैपुरकी चली, जीवनतैं हित जानि ॥

संग लगे माहजि सुभट, प्रबल दिखावत पानि ॥ २८ ॥

मेवारे दल माहिंसों, तुरग सुरे तहँ नोएन ॥

हुए वा ह हू करके भूत हंसत हैं चतुर क्षेत्रपाल स्वाद हेरते फिरने हैं जिनके नेत्र निकले पड़ते हैं कई मस्तक लम्बे \* माप की (लंबी) चौड़ीको धारण किये हुए पगड़ी बिना होकर उड़ने हैं सो मानों मालिन १ पत्रों सहित ३ सुरण [कन्द विशेष] को १ खोदकर गैद खेलती है ॥ २५ ॥ २ ईति करनेवाली वीरिणी यों की पंक्ति के रूप से आकाश में ४ बाण उड़ते हैं ७ चीरों को ८ भय देनेवाले ९ काल की पंक्ति के समान गोले युद्ध में उन्हें असते हैं कई १० मारने योग्य जानने के लिये बाणों के ११ पंख कानों से बात करते हैं और १२ प्रत्यक्षा सहित १२ दाहिने हाथ को १४ बायाँ हाथ [यामे हाथ] पीछे रहने के कारण कायर कहता है ॥ २५ ॥ हाथियों के १५ शरीर को ठेलने के लिये १६ चर छियों और भाषों के १७ समूह घुसते हुए ऐसे शोषा देते हैं कि मानों वज्र के साथ बिजुली चलकर काले बहलमें घुसती है १८ उज्जैन में इस कारण माहजी और अरिसिंह की सेना लड़ी तहां उदयपुर की सेना लडिजत होकर १९ भागी ॥ २७ ॥ २० हाथ ॥ २८ ॥ मेवाह की भगी हुई सेना में से

जिम भैचक्र पच्छिम चलत, गङ्गा यन प्राब मोन ॥ ३९ ॥

॥ पट्टपात् ॥

इक राघव<sup>१</sup> मरहठ जवन दोला<sup>२</sup> द्वितीय जहँ ॥

अल्ला जालमसिंह<sup>३</sup> चौड बंसिय पहाड़<sup>४</sup> तहँ ॥

साहिपुरप उम्मेद<sup>५</sup> सान<sup>६</sup> भट भैसरोर पति ॥

अकखैय<sup>७</sup> बीरमदेव<sup>८</sup> उभय<sup>९</sup> रठोर मरन मति ॥

परमार सुभट सुभकर्या<sup>९</sup> पुनि ए मुररे दल भजत सन ॥

नव<sup>९</sup>सफर जानि अतिबल निडर गहरश्रोत किय प्रतिगमन<sup>३०</sup>

साहिपुरप उम्मेदसिंह<sup>१</sup> असिवर हद आरिय ॥

खूब बिरचि रन खेल मचुरं मरहठ महारिय ॥

करि उज्जल सीसोद कुलहिं तिल तिल मितं तुष्टिग ॥

रविमंडल बिच होय लाह सुरपुरं सुख लुष्टिग ॥

तिमही पहाड़<sup>२</sup> भट चौड हर ईसंहिं दैन न अहरिय ॥

बल फारि मारि मरहठ बहु कलह सीस रज रज करिय ३१

॥ दोहा ॥

दोला<sup>१</sup> राघव<sup>२</sup> एहु दुव<sup>२</sup>, सत्रु बहुत संहारि ॥

पृथुल रारि बिच कटि परे, अतुल मारि तरवारि ॥ ३२ ॥

इक<sup>१</sup> परमार कबंध उभ<sup>२</sup>, टरे कलुक छैतवान ॥

मरहठन लिन्ने पकरि, जालमसिंह रु मान ॥ ३३ ॥

नौ (\*)घोड़े इस तरह पीछे सुड़े जैसे संपूर्ण तारा मंडल तो पश्चिम को जाता है और उनमें से (†)नौ ग्रह पीछे पूर्व को जाते हैं ॥ २६ ॥ २ पहाड़सिंह उम्मेदसिंह ४मानसिंह ५अक्षयसिंह ६ मच्छ ७ गहरे श्रोते में = उलटे चले ॥ ३० ॥ ८ बहुत १०तिल तिल माफिक ११स्वर्ग का १२शिव को मस्तक देना स्वीकार नहीं किया १३युद्ध में ॥ ३१ ॥ १४बड़े युद्ध में ॥ ३२ ॥ १५घायल १६मानसिंह को ॥ ३३ ॥

(\*)यहां अजहस्वार्या लक्षणा से घोड़ों के सवार जानने चाहिये ॥

(†) नौ ग्रहों की सामान्य गति तो संपूर्ण तारा मंडल के साथ पश्चिम में जाने की है परंतु विशेष गति से नौ ही ग्रह प्रतिदिन पूर्व की ओर दृश्य होते हैं ॥

विगारणो अरिसिंहको, जित्यो माहजि जंग ॥

सिसु पैखवी दरखे सुभट, आवन राज्य उमंग ॥ ३४ ॥

दम्म लखख १००००० अरु बीस २० गज, तोप छतीस ३६ नवीन  
लूटमाँहिँ माहजि लये, तुरग सहँस पुनि तीन ३००० ॥ ३५ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मे-  
दसिंहचरित्रे ज्ञातससहायसमागताऽरिसिंहसैन्यछलबालसहिततत्प-  
क्षसुभटभेदोपायचित्तोड्ढुर्गप्रविशनमाहज्यवन्त्यागमनश्रुतैतच्छलप-  
क्षसन्ध्याशरणाग्रहणमाहजिदोला १ राघव २ पुत्रकलत्राऽऽदिनिग्र-  
हणतत्सहायराणाऽरिसिंहसैन्य १ सन्ध्यासहायच्छलशिशुसैन्य २  
शिप्रातटमहारणकरणासाहिपुराऽधिराडुम्मेदसिंह १ सलूमरीशभी-  
माऽनुजपहाड़सिंह २ यवनदोला ३ महाराष्ट्राघव ४ मरणापरमार  
१ कबन्ध २ ३ सक्षतीभवनभल्लाजालमसिंह १ चुंडाउतमानसिंह  
२ कारान्यसनराणासैन्यपलायनच्छलपक्षसहायीभूतमाहजिविजय

१ रत्नसिंह के पक्षवाले ॥ ३४ ॥ २ रुपये ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंहके चरित्र  
में सहाय पर आईहुई और अरिसिंह की सेना को जानकर छलवाले बालक  
सहित उसके पक्ष के उमरावों का भेद उपाय से चित्तौड़ के गढ़ में घुसना १  
माहजी का उज्जैन आना सुनकर उन छल पक्षवालों का उसकी शरण लेना २  
माहजीका दोला और रघु के पुत्र और स्त्रियों आदिको कैद करना और उनकी  
सहाय पर राणा अरिसिंह की सेना और सिंधियाकी सहायता से रत्नसिंह की  
सेना का शफरा नदी के किनारे महा युद्ध करना ३ शाहपुरा के पति उम्मेद-  
सिंह, सलूमर के पति भीमसिंह के छोटे भाई(\*)पहाड़सिंह, यवन दोला और  
मरहटा राघव का मरना और पैवार और राठोड़ का घायल होना, भाला  
जालमसिंह और चुंडाउत मानसिंह का पकड़ा जाना, राणा की सेना का  
भागना ४ छलपक्ष की सहाय करनेवाले माहजी का विजय पांना और शत्रु के  
ढेरों का वैभव लूटने का अठावनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३८ ॥ और आदि से

(\*)सलूमर के रावत भीमसिंह को महाराणा अरिसिंह ने जहर देकर नाहरमगरे में मार डाला तब उसका  
छोटा भाई पहाड़सिंह भीमसिंह के पाट बैठ गया इसकारण इस समय वह सलूमर का ही रावत था यहां  
सलूमर के पति भीमसिंह का छोटा भाई लिखा सो अनुचित है ॥

अरिसिंहकासिन्धियासेमिलजाना]सप्तमराशि-नवपंचाशमयूख (१७३६)

प्रापणापरशिविरवैभवलुगटनमष्टपञ्चाशत्तमो ५८ मयूखः ॥ ५८ ॥  
आदितः ॥३३९॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा-बदलै जालमसिंहकै, सठि सहँस ६०००० दै दम्भ ॥

मित्र इक्क मरहठनै, टारयो कैद कुकम्भ ॥ १ ॥

चुडाउत छुट्यो न वह, भैसरोर पति मान ॥

छलसिसु जान्यो छिप्रही, रहिहौं व्है अब रान ॥ २ ॥

दोला१ राघव१ दुहुँशनके, लीनै सीस कटाय ॥

रोपे नगर अवंति बिच, सेलन अग्र चिपाय ॥ ३ ॥

उदयनैर उप्पर बहुरि, सज्जिय माहजि सैन ॥

उतकृति धृति १८२६ आखाढ बिच, लग्यो पत्तन लैन ॥४॥

रसना जिम संकट रँदन, जरि इम तोपन जाल ॥

संध्या खिजि बिंठिय शहर, करि रन दँमन कराल ॥ ५ ॥

भैसरोर पति मान तँहँ, बिधि कछु कैद बिहाय ॥

जामिकँ दिहि बचायकै, दुरयो उदैपुर जाय ॥ ६ ॥

बहुत काल घेरा रह्यो, भयो उदयपुर त्रस्त ॥

संध्याको घन बुँधि करि, बिगरयो बिभव समस्त ॥ ७ ॥

सेन खरच छलबालसौं, मंग्यो माहजि तत्थ ॥

देहु उदयपुर उन कहिय, लेहु उचित तुम अर्थ ॥ ८ ॥

सुनिय रान अरिसिंह यह, अनख परस्पर होत ॥

कथितँ दंड स्वीकरि कहिय, पकरि लेहु छलपोतँ ॥ ९ ॥

तीन सौ उनचालीस ३३६ मयूख हुए ॥

१ रुपये २ कुकर्म ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ही ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ दाँतों के घेरे में ५ दंड देने  
को ॥ ५ ॥ ६ पहरायतों की नजर बचाकर ॥ ६ ॥ ७ मेघ की वृष्टि से ॥ ७ ॥ ८  
रत्नसिंह से ९ अर्थ (धन) ॥ ८ ॥ १० सिन्धिया ने कहा जितना ११ छलबाल  
(रत्नसिंह) को ॥ ९ ॥

जब माहजि पकरन जतन, किय सो सुनि तत्काल ॥  
 किल्ला कुंभिलमेरु गय, सह परिंकर वह बाल ॥ १० ॥  
 दंड रान अरिसिंह दिय, भूखन दम्भ तुरंग ॥  
 अवैसेसन हित ओलि दिय, झल्ला जालम संग ॥ ११ ॥  
 जालमकों माहजि जवहि, आयउ लौ उज्जैन ॥  
 बरस याहि १८२६ ऋतु सरद बिच, सज्जित अतुलित सैन १२  
 महाराव कोटा पुरप, नृप गुमान यह जानि ॥  
 मोच्यो जालम दम्भद्वै, परिंकर स्वीय प्रमानि ॥ १३ ॥  
 इत रक्खे अरिसिंहनै, संधी जवन तिपाह ॥  
 चपारि लक्ख ४००००० तिनके चढे, ढंक रूपय नय राह १४  
 फोरे कुंभिलमेरु के, फुट्टे संधिप नाहिं ॥  
 पै हक मंगन दंड किय, मुलक उदैपुर माहिं ॥ १५ ॥  
 दम्भ भये नहिं दैनकों, तब अरिसिंह सिटाय ॥  
 आयो व्याहन रीति कछु, संधिनकों समुझाय ॥ १६ ॥  
 सुता बहादुरसिंहकी, परनि कृष्णागढ दंग ॥  
 रान संकिं तत्थाहि रहयो, संधिन दंड प्रसंग ॥ १७ ॥  
 तदनंतर सुनि नेत्र धृति १८२७, बुंदिय नगर नरेस ॥  
 भयो उदास प्रवृत्ति सन, बढि वैराग्य बिसेस ॥ १८ ॥  
 रांध बिसद द्वादसि १२ रुचिर, रविबासर सुभ रूप ॥  
 अजितसिंह जेठो कुमर, किन्नो बुंदिय भूप ॥ १९ ॥  
 प्रथम पुरोहित किय तिलक, निज कर भितुवराम ॥

१ परगह सहित ॥ १० ॥ २ बाकी रहे जिनमें जालमसिंह को ओल (रुपयों के एवज की कैद) में दिया ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ छुड़ाया ४ अपनी परगह वाला जान कर ॥ १३ ॥ ५ तनखाह के ६ नीति के मार्ग से ॥ १४ ॥ ७ यहां लच्छा से कुंभिल मेरुवाकों को जानना चाहिये ८ लपटव ॥ १५ ॥ १६ ॥ ९ डरकर ॥ १७ ॥ १० जिसपीछे ११ कर्म मार्ग से ॥ १८ ॥ १२ वैशाख सुदि ॥ १९ ॥

पुत्रको राजदेराजा कावान प्रस्थ होना] सप्तमराशि-नवपंचाक्षमयूख (३७५?)

बहुरि व्यास आसिख बिहित, रचि किय मानिकराम ॥ २० ॥

निज कटिको असिखर नृपति, बंधायउ निज हत्थ ॥

नृपता दे निज पुत्रकों, हुव बिरैत मन तत्थ ॥ २१ ॥

रक्खयो नगर बड़ोदिया, निज परिकर व्यर्थ काज ॥

श्रीजित पद अप्पुन गहिप, तजिदिय पद नरराज ॥ २२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जाके काज बिपति बिताई बहु कष्ट सहि,

द्वैर द्वैर दिन माँहिं मेटे जाठर दुसह दाह ॥

मरन बिचारि मारि मारि तरवारि झारि,

भंडे पचरंग जंग भंडे चहुवान नाह ॥

जैपुरकों जीति नीति दुलभ दिखाई सब,

भूपन दिखाई भूप आदि रजपूती राह ॥

श्रीजित सहर बुंदी अष्टम = उमेद मनु,

कासी जानि लीनी तँनुकासी जानि लीनी वाह ॥ २३ ॥

दोहा-इंद्रगढय उमराव तँहँ, भक्त राम अभिधान ॥

पुनि खतोली नगर पति, रतनसिंह चहुवान ॥ २४ ॥

बलवनपति मालम ३ बहुरि, बैरिसल्ल भव बंस ॥

जपोही भरतसिंह ४ जँहँ, खेड़ानगर वतंस ॥ २५ ॥

दुर्गसिंह ५ मुहुकम कुलज, अंतरदा नगरस ॥

महासिंह गजसिंह ६ जिहिं, पुर जज्जाउर पेसँ ॥ २६ ॥

तिमहि भवानीसिंह ७ तँहँ, धोवड़ पत्तन नाह ॥

॥ २० ॥ १ अपनी कमर का २ राजापन देकर ३ विरक्त ॥ २१ ॥

४ खर्च के लिये ५ अपना पद श्रीजित रक्खा ६ राजा का पद छोड़ दिया ॥ २२ ॥

७ पेट की = उस्मेदसिंह रुपी आठवें मनु ने ८ बुन्दी को ही काशी जान ली

और राज्य छोड़ने में उस बुन्दी को ९ वृण के समान जान ली सो प्रशंसा है

॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ११ आधीन ॥ २६ ॥



भगवंत८ सु सीलोर पति, माधानी हित चाह ॥ २७ ॥  
 सेरसिंह९ सामंत हर, भजनैरी पुर भान ॥  
 महासिंह हर बीर पुनि, थानाँ पुर प खुमान१० ॥ २८ ॥  
 तिम समुद्रसिंह११हु सुभट, सुहरनि पति वरबीर ॥  
 नगर जैतगढ नाह पुनि, बाघसिंह१२ रन बीर ॥ २९ ॥  
 भट खुसाल१३ सामंत हर, नगर नादनाँ ईस ॥  
 मिसल दाहिनीके मिले, भट इत्यादि बलीस ॥ ३० ॥  
 वाम मिसल उमराव बलि, सोलंखी जयसीह१ ॥  
 नाथाउत निम्मान पति, पित्थल सुत नय लीह ॥ ३१ ॥  
 नाथाउत वखतेसर बलि, नगर पगाराँ मोर ॥  
 अभयसिंह३ अमरेस सुत, पति अलोद रठोर ॥ ३२ ॥  
 इत्यादिक सुभटन नजरि, किन्नै हय सिरुपाव ॥  
 पठये टाँका नृपन पुनि, सुनि यह वत्त सचाव ॥ ३३ ॥  
 उदयनैर अरिसिंह१ नृप, पित्थल२ जयपुर ईस ॥  
 विजयसिंह३ रठोर बलि, जनपद धन्व अधीस ॥ ३४ ॥  
 कोटापुर प गुमान४ नृप, छन्न कितव छल जाल ॥  
 इमहि करोली पुर अधिप, जहव मानिकपाल५ ॥ ३५ ॥  
 बीकानैर अधीस बलि, सुरतसिंह६ नरनाह ॥  
 रामसिंह७ नैपथ अधिप, नरउस्पति कछवाह ॥ ३६ ॥  
 भूप बहादुरसिंह८ तिम, कृष्णागढप रठोर ॥  
 गोरवंस अवतंस पुनि, सोपुर नृपति किसोर९ ॥ ३७ ॥  
 हत्यादिक सब नृपनके, टाँको गज१ हयराज२ ॥  
 मनिभूखन३ सिरुपाव४ मिलि, सह आये सुभ साज ॥ ३८ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ नीति के मार्ग में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ २ उमरावाँ  
 ने ॥ ३३ ॥ १ मारवाड़ देश का पति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ४ निपथ देश का पति  
 ॥ ३६ ॥ ५ मुकुट ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सुनि टौंका श्रीमंतहू, दयो नरायनराव१ ॥

हुलकर तछू१ संधिया, माहजिरहू भल भाव ॥ ३९ ॥

इम श्रीजित उम्मेद पैहँ, किय नृप ज्येष्ठ कुमार ॥

लयो महाराजोपपद, बहादुर१ रु सिरदार ॥ ४० ॥

रक्खे कछु निज ढिग सुभट, नाम सुनहु जिन नाह ॥

इक१ थाँनाँपतिको अनुजँ, विक्रम१ सुमनँ सिपाह ॥ ४१ ॥

वैरिसल्ल कुल उद्धरन, सुभट नाम सोभाग२ ॥

भट किसोर३ नाथाउत सु, अति जिहिँ रन अनुराँग ॥ ४२ ॥

दयानाथ४ रासू५ दुव२हु, महासिंह कुल जात ॥

वीर खुसाल६ निहाल७ वर, हर सामंत सुहात ॥ ४३ ॥

भल्ला वीर दल्ले सुन, चंद्रसिंह८ जयँ चोर ॥

वीर सिवाईसिंह९ बलि, अमरचंद रठोर ॥ ४४ ॥

हहु खजूरीको बहुरि, दोलतसिंह१० स नाम ॥

ए निज ढिग रक्खे सुभट, श्रीजित बिहित विरामँ ॥ ४५ ॥

बुंदिपतँ ईसान दिस, कोस इकक१ मतिमान ॥

सिव केदार निकेत तँहँ, रहन विचारयो थान ॥ ४६ ॥

महलनमँ उम्मेद २०० नृप, मंदिर उभय२ बनाइ ॥

श्रीरंग१ रु आनंदघन२, प्रभु दिन्निँ पधराइ ॥ ४७ ॥

तिनके ढिग उत्तर४७ तरफ, नाना छुंकर निकेत ॥

रुचिर चित्रसाला३ रची, सब सुभ चित्र समेत ॥ ४८ ॥

प्राची१ दिस तस हिउँ पुनि, नाना दुँमन निवास ॥

॥ ३६ ॥ १ महाराजकी पदवी बहादुरसिंह और सरदारसिंह ने ली ॥ ४० ॥ २ छोटा भाई  
३ श्रेष्ठ मनवाला ॥ ४१ ॥ जिसको युद्ध से बहुत प्रीति थी ॥ ४२ ॥ ४ ॥ ५ विजय को  
चारेनेवाला ॥ ४४ ॥ ६ उचित ७ प्रशस्ति के उपराम में ॥ ४५ ॥ ८ केदार नामक  
शिव का मंदिर ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ९ काचमहल ॥ ४८ ॥ १० उस के नीचे ११ नाना  
भांति के वृक्षों का

क्रीड़ा उपवन नाम करि, बिरच्यो रंगबिलास ४ ॥ ४९ ॥

ताके उत्तर ४१७ प्रांत पर, तीन ३ निलय किय तत्थ ॥

अच्छवाट १५ अरु असनघर २६, मुंकर महल ३१७ तिन मत्थ ५०

तारागढ बिच हरि सदन १८, आयत कोसर २९ निवान ३१०

विष्णुसिंह २०१२२ नृप चरित बिच, रचित कहे त्रय ३थान ५१

कृत गनेसघंटी १४११ कहिय, चोथी ४ ताहि चरित्र ॥

नैव्य अंधो महलन निलय, बरनत सुनहु बिचित्र ॥ ५२ ॥

राजमहल प्रासाद सन, दक्खिन २३ दिसा थिर थान ॥

तीन बनाये भूप तिन्ह, अब जानहु अभिधान ॥ ५३ ॥

रुचिर निबकोराउला ११२१ इक बहु महल उपेत ॥

तस दक्खिन २३ दूजो २ अतुल, जँहँ कुलदंवि निकेत २१३ ॥ ५४ ॥

कहत राउला कूपको ३११४, तासों दक्खिन २३ तत्थ ॥

तीन ३नमें प्रासाद तँति, सब अति उन्नति सत्थ ॥ ५५ ॥

तिन्ह तोरँन बाहिर तहाँ, गोलहाबापिय पास ॥

तीरथिया हयकी रची, प्रतिमा ११५ अँट्ट प्रकास ॥ ५६ ॥

सिव केदार समीप किय, तीजे ३ आश्रम वास ॥

तँहँ बिरच्यो उत्तर ४१८ तरफ, उपवन देवबिलास ११२६ ५७

तास ढिगहि सिखिको २ तँहँ, रचित कुंड २१७ अभिराम ॥

तासों लागि आवाँच २३ तट, धवल तुंग निज धाम ॥ ५८ ॥

जो सिकारबुरज ३१८हि वजत, आलय प्रचुर उपेत ॥

१ यगीचा ॥ ४९ ॥ २ मकान ३ काचमहल इनके ऊपर है ॥ ५० ॥ ४ मोटा

॥ ५१ ॥ ५ गणेशघाटी ६ नवीन ७ नीचे के महलों में ॥ ९२ ॥ ८ उन के नाम

॥ ५३ ॥ ९ मंदिर ॥ ५४ ॥ १० महलों की पंक्ति ११ ऊंचेपन सहित ॥ ५५ ॥ १२

उनके दरवाजे के बाहर १३ बुरज पर चौड़े ॥ ५६ ॥ १४ वानप्रस्थ १५ याग ॥ ५७ ॥

१६ अग्नि कोण में १७ दक्षिण के किनारे १८ इवेत रंग का ऊँचा अपना महल

॥ ५८ ॥ १९ बहुत मकानों सहित

उम्मेदसिंहकेवनायेस्थानोंकावर्णन] सप्तमराशि-नवपंचाशमयूख (१७५५)

आमति१ जीवन२ अप्प इह, निबस्यो रुचिर निकैत ॥५९॥  
तँहँ गुलाबवाटी११९ तिमहिँ, मारुति छत्री२।२० मंजु ॥  
कुल्पा३।११यावन जटित किय, कुंड मिलित चित कंजु६०  
बहुरि मंदुरा४।२२आदि बहु, थप्पे कति लघु थान ॥  
वैखानस३तँहँ वास करि, बिलस्यो निर्गम बिधान ॥ ६१ ॥  
जो खवासि नृपकै निपुन, कही रूपरसराय ॥  
तस नामहु इक१ बाग तँहँ, चतुर रच्यो जस चाय ॥ ६२ ॥  
सिव केदार समीप सो, बज्जहिँ रूपबिलास१।२३ ॥  
नदी बानगंगा निकट, इत दक्खिन२।३ तट आस ॥ ६३ ॥  
बेघम नृप बुधसिंह१९९को, चौंरा१।२४ रुचिर रचाइ ॥  
किन्नौ जस व्यय अतुल करि, मँह१सह दान२मचाइ ॥ ६४ ॥  
बुंदीतँ चहुँ४घाँ बिदित, मृगया बुरज महीप ॥  
बिरची तिनमँ सुभ बुरज१।२५, दिस प्रौची सब दीप ॥ ६५ ॥  
बहुरी२।१६ कोठा३।२७ आदि इम, बहु पुर निकट१बनाइ ॥  
दूरहु भीमलता२।२८ दि भुव, पटु मृगया रस पाइ ॥ ६६ ॥  
सत्रुसल्ल१९६।१ तजिकँ सुपहु, व्यय औसी करि बित्तँ ॥  
काहूँनँ न रचे निँलाय, इम उदार चहिँ चित्त ॥ ६७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे

१ बुद्धि पर्यन्त और जीवन पर्यन्त आप यहाँ २ सुन्दर मकान में (\*) रहा  
॥ ५९ ॥ ३ गुलाबवाड़ी ४ पत्थरों की जड़ी हुई नहर, ५ बहते हुए जलवाला  
॥ ६० ॥ ६ हथवाला ७ उस वानप्रस्थ ने ८ वेद विधि से बिलास किया  
॥ ६१ ॥ ९ ६२ ॥ १० छुआ ॥ ६३ ॥ १० उत्सव साहित ॥ ६४ ॥ ११ शिकार की  
१२ पूर्व दिशा में सब को प्रकाश करनेवाली है ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ १३ धन खरच  
करके १४ मकान ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशि में, उम्मेदसिंहके चरित्र

(\*) रावराजा उम्मेदसिंह अंत समय में केदारेश्वर में ही मूर्छित होगये थे जिस के बाद उनको महलों में लेगये परंतु जब तक बुद्धि(होस)रही तब तक वे केदारेश्वर में ही रहे इसी कारण यहां आगति जीवन कहा है.

दसिंहचरित्रे मित्रमहाराष्ट्रभल्लाजालमसिंहकोरामोक्षणमाहजिवा-  
 हिन्दुदयपुरवेष्टनचुण्डाउत्तमानसिंहकौहकपान्तःपुरप्रविशनज्ञातलु-  
 लुप्सारुष्टमाहजिसपक्षच्छलडिम्भकुंभिलमेरुदुर्गगमनराणाऽरिसिंह  
 माहजिदण्डद्रम्माऽर्पणखिलद्रम्माऽवधिभल्लाजालमसिंहसार्थीक  
 रणावत्तद्रम्भकोटेशगुमानसिंहतन्मोक्षणसंधिभृत्याद्रव्यशङ्किताऽरि-  
 सिंदबहादुरसिंहसुतोद्वाहनिमित्तकृष्णगढनिवसनरावराडुम्मेदसिंह  
 महाराजकुमाराऽजितसिंहाऽर्थराज्याऽर्पणस्वयंश्रीजिदुपटङ्गधारण  
 सर्वभूभृद्दीकोपाख्यव्यवहारप्रेषणस्वल्पसार्थसहितश्रीजित्केदारेश्वर  
 स्थाननिवसनमेकोनपञ्चाशत्तमो ५९ मयूखः ॥ ५९ ॥  
 आदितः ॥ ३४० ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिंद  
 मुखरितचरणाचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवा  
 णाचूडामणिभारतीभागधेयहृष्टोपटङ्गिमहाराजाऽधिराजमहागवगजे-  
 में, मरहठे मित्र का भाला जालमसिंह को कैद से छुड़ाना और माहजी का  
 सेना से उदयपुर को घेरना ? चुंडाउत मानसिंह का छल से पुर के भीतर  
 जाना और लोभ से माहजी को कुछ जानकर पक्ष सहित छलबालक का कुं  
 भलमेरु के गढ में जाना २ राणा अरिसिंह का माहजी को दंड के रुपये देना  
 और बाकी के रुपयों की अवधि पर्यन्त भाला जालमसिंह को साथ देना ३  
 फोटा के पति गुमानसिंह का रुपये देकर जालमसिंह को छुड़ाना ४ सिन्धियों  
 की तनखाह के द्रव्य से डरकर अरिमिंह का बहादुरसिंह की पुत्री के विवाह  
 के कारण से कृष्णगढ में निवास करना ५ रावराजा उम्मेदसिंह का महाराज  
 कुमार अजितसिंह के अर्थ राज्य देना और अपना श्रीजित् को पदवी धारण  
 करना ६ सब राजाओं का दीक्षा नामक व्यवहार भेजना और थोड़े साथ  
 सहित श्रीजित् के केदारेश्वर स्थान में निवास करने का उनसठवां ५९ मयूख  
 समाप्त हुआ ॥ ५९ ॥ और आदि से तीन सौ चालीस ३४० मयूख हुए ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संघंधी मकरंद (पुष्प  
 रस) रूप मद्य से मस्त हुए अमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये  
 हैं शब्दों के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के  
 शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले

श्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगीरादिषड् ६ भाषावेशमुभूभुजङ्ग-  
काव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-  
कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणमुकविसूर्यमल्ल  
विहितवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे रावराजुम्मेदसिंहचरित्र  
समयसमानाधिकरणकोदन्तवर्णनं सप्तमो ७ राशिस्समाप्तः॥ ७ ॥

इति श्री नीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभ-  
क्तिपरायण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदाचारदृढ-चारणकुलावतंस  
शाहपुराप्रतोलीपात्र-सुयोग्यपितुरवनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः  
गुणारनामजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैरा-  
ज्ञाकारिभिरात्मजैः केशरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगत-  
भाषाधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्त-  
काव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवै

अर्थात् पूर्ण विद्वान् हाडा पदवीवाले, महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री-  
रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के  
पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिए) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के च-  
रणारविन्द के अमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारण गण के सूर्य, चण्डी  
दान के पुत्र, मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभा-  
स्कर नामक महाचम्पू के उत्तरायण में रावराजा उम्मेदसिंह के चरित्रके समय  
के वरावर है अधिकार जिनका ऐसे वृत्तान्तों के वर्णन का सातवां राशि  
समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

श्रीयुतनीतिनिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्म  
मूर्ति-वीर-उदार-सोदाचारदृढ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोळ  
पात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता  
मोनाड (अनन्न) सिंह के पुत्र ने, पंडिता शृंगार बाई नामक माता से पाया है  
जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पाये हुए आज्ञाकारी  
पुत्र केशरिसिंह, किशोरसिंह, जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में  
लेनेवाली मानसिक विन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज  
श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त



गुणव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽबद्धपगुरोरासा-  
दितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोज्ज्व-रघुवंशीय-राखोत्त-शाहपुराधिप-  
राजाधिराजोपटंकिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-  
रघुवंशीयगुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद-  
गुणासम्पन्न-महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि महारा-  
णा-फतहसिंहवर्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप  
जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्मभयो लब्धाऽतीव  
दान-मान-स्वर्णारचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेणा, तथा तदुत्तराधिका-  
रि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्मा-  
श्रितेन, अधीतविद्यां सफलमितुं प्राप्तावसरेणा, विद्वद्भिर्निजमित्रै-  
र्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिं-  
हेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां सप्तमो राशिः समाप्तः ॥७॥

विद्वानोंके शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम  
गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणा  
उत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंहवर्मा, और आर्यों के  
सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेदाड़ देश के  
पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा  
सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा,  
और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के सुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर  
के स्वामी राजराजेश्वर महाराजाधिराज जशवन्तसिंह वर्मा से पाया है  
दान, यज्ञपत्र (पूज्यपत्र) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने,  
तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश  
श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ी हुई विद्या को सफल कर-  
ने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह  
जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई  
उदधिमन्थनी नामक टीका में सप्तम राशि समाप्त हुआ ॥७॥